UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182930

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 820.9 H88 A Accession No. H 3472

Author हडसन, विलियम् हेनरी

Title अंग्रेजी साहित्य का इतिहास 1963

This book should be returned on or before the date last marked below.

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला—६७

अंग्रेजी साहित्य का इतिहास

लेखक
विलियम हेनरी हडसन

अनुवादक
जगदीश विहारी मिश्र, एम० ए०

प्रकाशक
हिन्दी समिति, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण, १९६३

मूल्य रु० ७.०

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

अंग्रेजी भाषा से हमारा सम्पर्क लगभग डेढ़ सौ वर्षों से चला आ रहा है। वह आज विश्व की अत्यन्त समुन्नत एवं सुप्रचलित भाषा है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक विषय का प्रभूत साहित्य उसमें विद्यमान है, जिसके अध्ययन से प्रत्येक ऐसा देश, जो उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहता है, लाभ उठा सकता है। इसकी संक्षिप्त जानकारी हिन्दी के पाठकों को उपलब्ध करा देने की दृष्टि से ही यह ग्रन्थ हिन्दी समिति द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

इसके लेखक (स्वर्गीय) श्री विलियम हेनरी हडसन अंग्रेजी के प्रसिद्ध मर्मज्ञ, प्रमुख विश्लेषक और उद्‌भट विद्वान् थे। इसमें उन्होंने अंग्रेजी के प्रमुख निर्माताओं और उनकी बहुमूल्य सेवाओं, कृतियों, प्रभावों आदि का विवेचनात्मक परिचय ही नहीं दिया है वरन् उनकी तुलनात्मक आलोचना के साथ-साथ थोड़े में उन विचारधाराओं और परिस्थितियों का भी वर्णन किया है, जिन्होंने समय समय पर अंग्रेजी साहित्य को परिमार्जित और उन्नति की ओर अग्रसर करने में हाथ बँटाया। इसकी भाषा अत्यन्त सरल और वर्णन-शैली बड़ी सुलझी हुई है। मूल की यह विशेषता हिन्दी रूपान्तर में भी विद्यमान है, जिसका श्रेय इसके अनुवादक श्री जगदीश विहारी मिश्र को है। आपने मूल के भावों को अक्षुण्ण बनाये रखने की ही भरपूर चेष्टा नहीं की है वरन् हिन्दी-प्रेमियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए बीच-बीच में अपनी ओर से कितनी ही ऐसी टिप्पणियाँ भी दे दी हैं जिनसे प्रसंग-विशेष का आशय समझने में यथेष्ट सहायता मिलती है। "सोने में सुगंध" की तरह इस विशेषता ने इसका महत्त्व बढ़ा दिया है, इसमें सन्देह नही।

ठाकुरप्रसाद सिंह
सचिव, हिन्दी समिति

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ
	प्राक्कथन	–९–
१.	प्रारंभिक	१
२.	चॉसर के पहले का अंग्रेजी साहित्य (५००–१३४०)	१०
३.	चॉसर-युग (१३४०–१४००)	१८
४.	चॉसर से टॉटेल की 'मिसलैनी' तक (१४००–१५५७)	३३
५.	नाट्य साहित्य का विकास (१५६१ तक)	४३
६.	शेक्सपियर-युग (१५५८–१६२५)	४९
७.	शेक्सपियर-युग (नाट्य-साहित्य)	५९
८.	शेक्सपियर-युग (गद्य-साहित्य)	७६
९.	मिल्टन-युग (१६२५–१६६०)	८९
१०.	मिल्टन-युग (अन्य कवि तथा गद्य-लेखक)	१०१
११.	ड्राइडेन-युग (१६६०–१७००)	१०७
१२.	ड्राइडेन-युग (गद्य तथा नाट्य-साहित्य)	११७
१३.	पोप-युग (१७००–१७४५)	१२९
१४.	पोप-युग (गद्य एवं नाट्य-साहित्य)	१४२
१५.	जान्सन-युग (१७४५–१७९८)	१५६
१६.	जान्सन-युग (उपन्यास)	१६९
१७.	जान्सन-युग (पद्य)	१८६
१८.	वर्ड्सवर्थ-युग (१७९८–१८३२) (पुरानी पीढ़ी के कवि)	२१५
१९.	वर्ड्सवर्थ-युग (नयी पीढ़ी के कवि)	२३२

२०. वर्ड्सवर्थ-युग (सामान्य गद्य) २४३
२१. वर्ड्सवर्थ-युग (उपन्यास) २५३
२२. टेनिसन-युग (१८३२–१८८७) (पद्य) २६४
२३. टेनिसन-युग (सामान्य गद्य) २८४
२४. टेनिसन-युग (उपन्यास) २९८
२५. हार्डी-युग ३१३
२६. वर्तमान-युग ३४५

प्राक्कथन

इस पुस्तक के उद्देश्य तथा योजना की जानकारी प्रारंभिक अध्याय से सरलता-पूर्वक हो सकती है। अतएव प्राक्कथन के कुछ ही शब्द यहाँ आवश्यक है।

मेरे विचार से अंग्रेजी साहित्य का कोई इतिहास कितना भी संक्षिप्त क्यों न हो, उसे नाम और यथार्थ दोनो मे ही अंग्रेजी साहित्य का इतिहास होना चाहिए; तथा एक इतिहास के लिए लेखको और उनकी पुस्तको की सूची और यहाँ तक कि जीवनी-संबधी रेखाचित्रो एव आलोचनाओ के कालक्रमानुगत संग्रह से भी अधिक किसी वस्तु की आवश्यकता होती है। यह सत्य है कि किसी राष्ट्र के साहित्य का निर्माण व्यक्तिगत लेखको की रचनाओ द्वारा होता है, तथा यह भी कि अध्ययन के साधारण उद्देश्यो के लिए इन लेखको को उनके वातावरण से पृथक् किया जा सकता है तथा उनके ऊपर अलग से विचार किया जा सकता है। परन्तु हमे ऐसे साहित्य का इतिहास तब तक नही प्राप्त हो सकता जब तक कि प्रत्येक लेखक को सब वस्तुओ के क्रम मे उसका सही स्थान नियत न किया जाय। साथ ही यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक लेखक का विचार उस विशालकाय साहित्यिक उत्पादन के प्रसंग मे ही किया जाय जिसमें उसका अपना साहित्य केवल एक अश के समान होगा। अतएव अंग्रेजी साहित्य के इतिहास की रुचि प्रमुख रूप से समग्र अंग्रेजी साहित्य मे होनी चाहिए। उसका प्रधान उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह केवल क्रमानुसार आनेवाले महान् लेखकों की कृतियो का ही स्पष्ट एव व्यवस्थित वर्णन न करे, बल्कि राष्ट्रीय परिवर्तनो और विकास का चित्र प्रस्तुत करे।

इसका आशय यह नही है कि वैयक्तिक अश की उपेक्षा हो। बल्कि इसके विपरीत इससे वैयक्तिक गुण को और भी प्रमुखता प्राप्त होती है, क्योंकि यदि प्रत्येक लेखक का विचार समग्र साहित्य के सदर्भ मे ही होना है तो अध्ययन का एक प्रमुख विषय यह होना चाहिए कि उस समग्र साहित्य मे उस लेखक के विशिष्ट योगदान का स्वरूप एव महत्त्व क्या था। परन्तु इसका यह तात्पर्य अवश्य है कि वैयक्तिक गुण के साथ ही साथ एक युग से दूसरे मे होनेवाले महान् साहित्यिक आन्दोलन का भी परीक्षण होना आवश्यक है, तथा यह भी कि प्रत्येक लेखक की

व्याख्या उस सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए करनी है जो उसने इस सामान्य आन्दोलन से स्थापित किया। वास्तव में तो इतिहासकार के कर्तव्य का एक मूलभूत अंश यह है कि वह इतिहास के निर्माण में वैयक्तिक और अवैयक्तिक गुणों के पारस्परिक महत्त्व व प्रभाव का प्रदर्शन करे; और क्योंकि सही अर्थों में इतिहास जितना तथ्यों से सम्बंधित है उतना ही तथ्यों की व्याख्या से भी, इसलिए यह बात स्वाभाविक ही है कि अंग्रेजी साहित्य के इतिहास मे उन शक्तियों का भी कुछ वर्णन शामिल रहना चाहिए जिन्होने प्रत्येक युग मे संयुक्त होकर साहित्यिक प्रतिमानो एव रुचियो को परिवर्तित किया।

इन विचारो को मैने अपने प्रारभिक अध्याय मे इससे भिन्न, और कदाचित् कुछ सरलतर, भाषा में प्रस्तुत किया है। अतएव यहाँ मुझे केवल इतना कहना है कि यह रेखाचित्र अग्रेजी साहित्य के एक वास्तविक इतिहास (वास्तविक उस अर्थ मे जो मै 'इतिहास' शब्द से सम्बद्ध करता हूँ) की दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। इस पुस्तक के एक विशिष्ट गुण का उल्लेख यहाँ किया जा सकता है; बहुत से आलोचक इस सिद्धान्त को मानते है कि साहित्य की रचना मानो शून्य में तथा ऐसे व्यक्तियों द्वारा होती है जो समय एव स्थान की समस्त परिस्थितियो से बाहर रहते है, और इसलिए सब से उत्तम यह होगा कि साहित्य को अपने मे पर्याप्त मानकर स्वयं उसी का अध्ययन करना चाहिए। इसके विपरीत मेरा विश्वास यह है कि किसी युग का साहित्य उन सभी तत्त्वो के द्वारा गढ़ा और सँवारा जाता है जो उस युग की सभ्यता के अंग थे। अतएव स्थान की कमी होते हुए भी जहाँ तक सभव हो सका है वहाँ तक मैने अंग्रेजी साहित्य एव अग्रेजी जीवन के बीच के महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध को दर्शाने का प्रयत्न सदैव किया है।

विलियम हेनरी हडसन

अध्याय १

प्रारंभिक

१. अंग्रेजी साहित्य का इतिहास क्या है––इस प्रश्न का उत्तर इतना स्पष्ट है कि इसे उठाना कदाचित् व्यर्थ ही है। एक क्षण भी हिचके बिना हम उत्तर देते है कि अंग्रेजी साहित्य का इतिहास केवल उन पुस्तकों का कालक्रमानुगत वर्णन है जो अग्रेजी भाषा में लिखी गयी है। साथ ही यह उन व्यक्तियों का भी वृत्तात है जिन्होने इन पुस्तकों की रचना की। इसका कारण यह है कि किसी पुस्तक के विषय में विचार करना तब तक संभव नही है जब तक हम पुस्तक के साथ-साथ उसके लेखक का भी विचार न करें।

ऊपरी तौर से यह उत्तर बिलकुल ठीक है। परन्तु यह अत्यधिक अस्पष्ट है और विषय की गहराई तक भी नही जाता। अतएव हमारे लिए यह उचित होगा कि पुस्तक के प्रारंभ में थोडा सा रुक जायँ और जरा विस्तार से विचार करें कि अग्रेजी साहित्य के सक्षिप्त से सक्षिप्त इतिहास में कौन-कौन से तत्त्व निहित होते है।

सर्वप्रथम हमें वैयक्तिक तत्त्व पर जोर देना है। यह बात हमारे उपर्युक्त उत्तर से ही स्पष्ट है। जैसा कहा जा चुका है, किसी पुस्तक का विचार करते समय उसके लेखक का विचार करना आवश्यक है। दूसरे शब्दों मे, प्रत्येक पुस्तक हमें तुरंत उस व्यक्ति की ओर ले जाती है जिसकी प्रतिभा से उसकी सृष्टि हुई और जिसके विचार और भावनाएँ उसमें निहित है। अतएव अग्रेजी साहित्य के किसी भी इतिहास मे हमें अपना ध्यान उन लोगों के व्यक्तित्व पर केन्द्रित करना चाहिए जिन्होने इस साहित्य की रचना की है। यह आवश्यक है कि किसी सक्षिप्त वर्णन में उनकी जीवनी, अनुभवों एवं चरित्र का विस्तृत परीक्षण नही हो सकता। ऐसे परीक्षण को तो विस्तृत अध्ययन के लिए छोड देना चाहिए। तथापि जो भी व्यक्ति हमारे सामने आवे उनमें से प्रत्येक की प्रतिभा के विशिष्ट गुण को समझने का प्रयत्न हमें अवश्य करना चाहिए। उसका कारण स्पष्ट है। प्रतिभा से तात्पर्य अनेक गुणों से है, परन्तु मूल रूप से इसका अर्थ है व्यक्तित्व का बल और मौलिकता

जो कि बलशाली व्यक्तित्व का ही परिणाम है। यह बात ठीक ही कही गयी है कि प्रत्येक महान् लेखक ससार में एक बिल्कुल नवीन वस्तु लेकर आता है और यह वस्तु होती है वह स्वयं। क्योंकि वह इस नवीन वस्तु का समावेश अपनी रचनाओं मे करता है, इसलिए उसका साहित्य एक ऐसी विशिष्टता से सम्पन्न होता है जो उसे अन्य समस्त लेखकों के साहित्य से पृथक कर देती है। किसी भी महान् लेखक के विस्तृत अध्ययन मे वैयक्तिकता के इस महत्त्वपूर्ण तत्त्व का विचार करना सबसे प्रधान बात है। ऐतिहासिक समीक्षा में भी, चाहे वह कितनी ही सक्षिप्त क्यों न हो, सावधानीपूर्वक इसका निर्देश होना आवश्यक है, क्योकि अन्य किसी प्रकार से हम यह नही जान सकते कि अपने देश के साहित्य मे किसी महान् लेखक का अपना एक विशिष्ट स्थान क्यों है। अस्तु, अग्रेजी साहित्य के इतिहास का उद्देश्य प्रत्येक लेखक द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिये जाने वाले विशिष्ट योगदान का मूल्याकन करना है।

परतु यह उसके कर्तव्य का केवल अल्पाश है। साहित्य के इतिहास का तात्पर्य केवल लेखकों और उनकी पुस्तकों की सूची से नही है। साहित्य अपने समग्ररूप मे पीढी-दर पीढ़ी परिवर्तित और विकसित होता रहता है और इस विकास क्रम का अध्ययन करते समय इतिहास का कार्य यह निर्धारित करना होता है कि प्रत्येक लेखक का इस क्रम में क्या विशिष्ट स्थान है तथा उसका अपने पूर्ववर्ती व परवर्ती लेखकों से क्या सबध रहा है। जिस लेखक का व्यक्तित्व असाधारण रूप से शक्तिशाली होता है वह अपने युग पर अपनी छाप अवश्य छोड़ जाता है और उसका अनुसरण करने वालों मे ऐसे अनेक लेखक सदैव पाये जाते है जिनके विचारों एवं शैली में उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, चाहे उन्हे स्वय इसका ज्ञान हो या न हो। फिर, जब कोई लेखक किसी विशेष प्रकार की रचना में लोकप्रिय हो जाता है तो स्वभावतः उसका अनुकरण होने लगता है और जब किसी विशेष प्रकार की रचना एक बार सफल हो जाती है तो कुछ समय तक उसकी पुनरावृत्ति होती रहती है। इस प्रकार साहित्य में विभिन्न 'सप्रदाय' (अध्ययन-शाखा या पथ) स्थापित हो जाते है और अनेक प्रवृत्तियाँ प्रारभ हो जाती है। ये सप्रदाय व प्रवृत्तियाँ कुछ समय तक चलते है और फिर जैसे ही लोगो की रुचियों मे परिवर्त्तन होने के कारण नये सप्रदाय व आदोलन उठ खड़े होते हैं, ये लुप्त हो जाते है। उदाहरणस्वरूप जब हम पोप के 'सप्रदाय' की बात करते है तो हमारा आशय उन तमाम लेखकों से होता है जिन्होंने उस शैली में अपनी रचनाएँ लिखी जिसको पोप ने पूर्णता पर

पहुँचाकर प्रचलित कर दिया था। इन लेखको ने पोप का अनुसरण करते हुए जिस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया उसे काव्य में 'क्लासिक' की सज्ञा प्रदान की गयी है। इसी प्रकार स्कॉट के उपन्यासों द्वारा गद्य कथा-साहित्य में जिस प्रवृत्ति की स्थापना हुई उसे 'रोमाण्टिक' नाम से अभिहित करते है। ये 'सप्रदाय' (या 'प्रवृत्तियाँ') साहित्य के उत्थान में महान योगदान देते है और बहुधा साहित्य के विद्यार्थियों के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण होते है जितने स्वय व्यक्तिगत लेखकों के लिए। फिर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि पूर्णरूपेण मौलिक प्रतिभा वाले लेखकों की भी अपनी बौद्धिक वशपरम्परा होती है और प्रेरणा एव आदर्श के सबध मे वे बहुधा दूसरों के महान् ऋणी होते है। अभी मै पोप की विशिष्ट शैली की बात कर रहा था, परन्तु यह उसकी कोई स्वतत्र सृष्टि नही थी। यद्यपि उसके हाथों में यह शैली पूर्णता को प्राप्त हुई, परतु वास्तव मे यह दीर्घकाल से चली आ रही उस प्रवृत्ति का अतिम परिणाम थी जिसका एक अन्य महान् प्रतिनिधि ड्राइडेन था जो पोप के पहले ही अपना कार्य कर चुका था। 'रोमाण्टिक' सप्रदाय मे दीक्षा लेने के उपरान्त ही स्कॉट इस सप्रदाय में ऐसा श्रेष्ठ लेखक बन सका। शेक्सपियर के विषय में प्रायः हम यह सोचते है कि मानो वह अपने समय के साहित्य से बिल्कुल पृथक व अछूता रहा हो, परतु यथार्थ मे जब उसने नाटक लिखना प्रारभ किया उस समय तक अंग्रेजी नाट्य-साहित्य एक विशेष अवस्था तक पहुँच चुका था और शेक्सपियर ने अपने पूर्ववर्ती लेखकों द्वारा निर्दिष्ट किये हुए मार्ग का ही अनुसरण किया। इसीलिए साहित्य के इतिहास मे इन सब बातों का ध्यान रखना नितांत आवश्यक है। विभिन्न लेखकों व वर्गो के बीच क्या और कैसा सबध था इसका निर्धारण तथा विभिन्न 'सप्रदायो' और 'प्रवृतियों' के उद्भव, विकास एव ह्रास का अध्ययन—यही साहित्य के इतिहास के उद्देश्य है। साथ ही इस बात का भी विचार करना नितात आवश्यक है कि जब कभी इन प्रवृत्तियों के विकास मे किसी लेखक का प्रमुख स्थान रहा है तो उसने साहित्य को प्राचीन रूढ़ियों में सीमित रखकर अथवा उसमे नयी दिशाएँ इगित करके साहित्य के निर्माण को किस प्रकार प्रभावित किया है।

परतु हमारा कर्तव्य यही पर समाप्त नही हो जाता, वरन् हमें इससे भी आगे जाना है। मैं कह चुका हूँ कि अपने समग्र रूप मे साहित्य पीढ़ी दर पीढी से परिवर्तित और विकसित होता रहता है। इसका आशय यह है कि क्योंकि प्रत्येक युग की अपनी विशिष्ट रुचियाँ, विशिष्ट विचार-पद्धति और विभिन्न वस्तुओं के विषय

में विशिष्ट अनुभूतियाँ होती है, इसलिए प्रत्येक युग मे लिखा गया साहित्य कुछ प्रचलित रुचियों द्वारा शासित होता है। ये रुचियाँ थोडे समय ही रहती है और एक युग की रुचियाँ अन्य समस्त युगों की रुचियों से भिन्न होती है (कभी-कभी तो यह भिन्नता बड़ी ही अपरिमित होती है)। यद्यपि हम महान् विक्टोरियन युग के बहुत ही निकट है[१]—यह केवल एक पीढ़ी पहले का ही युग तो था—तथापि तत्कालीन साहित्य में बहुत सी बाते ऐसी है जो हमें उतनी ही विदेशी लगती है जितनी उस समय की वेशभूषा। हम सभी जानते है कि पोप के समय में न तो लेखक स्पेन्सर के समय जैसी कविता लिखते ही थे और न जनता वैसी कविता पसन्द ही करती थी। स्कॉट के समय में यही हाल पोपकालीन कविता का था। स्पेन्सर के समय में जनता में 'दि फ़ेयरी क्वीन' के लिए असीमित उत्साह था। ऐसा ही उत्साह पोप के समय मे 'एसे ऑन मैन' तथा स्कॉट के युग मे 'दि लेडी आव दि लेक' के लिए था। अस्तु, साहित्य के इतिहास का सबसे प्रधान उद्देश्य, जिसके सामने और सारी बातें गौण व अप्रधान है, उस परिवर्तन का स्पष्ट व पूर्ण वर्णन करना है जो साहित्य में एक से दूसरे युग में हो जाता है। साथ ही जहाँ तक सभव हो उन कारणों का भी निर्देश हो जाना चाहिए जिनके सयोग से यह परिवर्तन सभव हुआ। जैसा मैं पहले ही कह चुका हूँ, इन कारणो में हमे विशेष व्यक्तियों के प्रभाव का तो समावेश करना ही है, क्योकि महान् लेखक प्रायः एक नयी रुचि का निर्माण कर देते है और अपने युग के साहित्य को नये मोड व नयी दिशाएँ प्रदान करते है। फिर भी, व्यक्तिगत उपक्रम एव आदर्श पर पूरा जोर देना आवश्यक होते हुए भी हमे यह सावधानी रखनी है कि कही इनके महत्त्व पर इतना जोर न दिया जाय कि अन्य सब कारणो का बहिष्कार हो जाय। महान् से महान् लेखक की प्रतिभा भी उसके युग की सस्कृति, आदर्श एव बौद्धिक व नैतिक प्रवृत्तियों द्वारा ढाली जाती है और बहुत अशों मे वह जो कुछ लिखता है उसका रूप उन्ही के द्वारा निर्धारित होता है। जैसा मै कह चुका हूँ, यदि शक्तिशाली व्यक्तित्व वाला कोई व्यक्ति अपने युग पर अपनी छाप छोड़ता है तो उस पर भी उसके युग की छाप पड़ती है। इसी कारण उसकी रचनाएँ चाहे जितनी मौलिक प्रतीत हों उनकी सफलता प्रायः इस बात पर निर्भर करती है कि वे कहाँ तक जनता की सामा-

१. यह पुस्तक सर्वप्रथम १९१२ में प्रकाशित हुई थी।—अनु०

न्य रुचियों के अनुसार है अथवा उनका पूर्वाभास देती है। इस अर्थ में हमें प्रत्येक लेखक को उसके युग की देन मानना है और इसीलिए हमें उन प्रभावों का अध्ययन करना है जिन्होंने उसके विचारों को गढ़ा, उसकी अभिरुचि निर्देशित की, और जो उसकी रचनाओं को एक विशिष्ट रूप प्रदान करने मे सहायक हुए। स्पष्ट है कि ऐसे परीक्षण का क्षेत्र बड़ा विस्तृत होगा। कभी-कभी ऐसे प्रभाव शुद्ध रूप से "साहित्यिक" होते है अर्थात् उनका संबध पुस्तको एव विद्वत्ता से ही होता है। उदाहरणस्वरूप एलिजावेथ-युग के साहित्य के पीछे जो प्रधान शक्तियाँ थी उनमें से एक थी यूनानी और लैटिन रचनाओ के लिए लोगो का अत्यधिक उत्साह। ये रचनाएँ 'पुनर्जागरण' ('रिनेसाँ') के साथ आयी थी। उसी युग मे लेखक व पाठक दोनों समान रूप से इटालियन साहित्य द्वारा भी अत्यधिक प्रभावित हुए, सत्रहवी शताब्दी के अन्त में फ्रांसीसी साहित्य व सौ वर्ष पश्चात् जर्मन साहित्य ने यह स्थान ले लिया। एक और उदाहरण हमे उस "मध्ययुगीन पुनरुत्थान" मे मिल सकता है जिसका चरमोत्कर्ष कोलरिज व स्कॉट में हुआ और जिसका कारण यह था कि जनता लगभग १७५० के बाद से मध्ययुग के दीर्घकाल से उपेक्षित साहित्य और कला मे फिर से दिलचस्पी लेने लगी थी। ऐसी परिस्थितियो मे हम देखते है कि साहित्यिक प्रभाव किस प्रकार नयी रुचियो एव प्रवृत्तियों का प्रवेश करा देते हैं जो अपने साथ स्वतत्र से स्वतत्र प्रतिभावाले लेखकों को भी बहा ले जाती है। परतु साहित्य पर सबसे गहरे पडनेवाले प्रभाव प्रायः साहित्यिक नही होते; वे ऐसे प्रभाव होते है जिनका सबंध पुस्तकों व विद्वत्ता से न होकर सामान्य जीवन, राजनीति या समाज से होता है। जो भी वस्तु किसी युग में नवीन रुचियों एव विचारों का सर्जन करती है अथवा मनुष्यों व पदार्थो के प्रति उस युग के विचारो को परिवर्तित करती है वह अवश्य ही साहित्य के निर्माण मे भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन जाती है। किसी पुस्तक के विषय में हमें ऐसा कभी नही सोचना चाहिए मानों वह देश-काल की परिस्थितियों के बाहर लिखी गयी हो, बल्कि हमे यह सोचना चाहिए कि यह ऐसे व्यक्ति की रचना है जो एक विशेष युग में रहते हुए एवं अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के अनुरूप उस युग के वातावरण एवं आंदोलनों से प्रभावित हुआ था। साहित्य के इतिहास व सामान्य इतिहास के बीच का घनिष्ठ संबध प्रकट करने के लिए केवल निम्नलिखित इतिहास-वस्तु का उल्लेख ही पर्याप्त होगा—'रिफार्मेशन' (धर्म-सुधार आंदोलन), प्युरिटनवाद (धार्मिक कट्टरतावाद), फ्रांसीसी राज्यक्रांति व उन्नीसवी शताब्दी में विज्ञान की अत्यधिक उन्नति।

आशा है, अब हम यह समझने की स्थिति में है कि अग्रेजी साहित्य के इतिहास में हमें क्या करना चाहिए। उसका प्रधान उद्देश्य है एक युग से दूसरे युग मे जो परिवर्तन होते गये उनको दृष्टिगत रखते हुए अग्रेजी साहित्य की प्रगति का वर्णन करना तथा साथ ही निरतर परिवर्तित होते रहनेवाले इस प्रगति-पथ का अनुसरण करते हुए उन क्रमिक परिवर्तनो की व्याख्या करना जो उसके विषय-वस्तु, रूप एव आत्मा मे होते रहे है। अतएव इसका उद्देश्य उन प्रभावो पर विचार करना भी है जिनके कारण ये परिवर्तन सभव हुए। इस प्रकार यह व्यक्तिगत लेखकों और साहित्य मे उनके विशिष्ट योगदान का इतिहास तो है ही, साथ ही उन वैयक्तिक व अवैयक्तिक शक्तियो का भी इतिहास है जिन्होने उन लेखकों की रचनाओ का रूप निर्धारित किया।

२. अंग्रेजी साहित्य और अंग्रेजी इतिहास––इससे एक बात जो ध्वनित होती है वह इतनी महत्त्वपूर्ण है कि मुझे विश्वास है कि इन पृष्ठों का पाठक स्वय उसके विषय में सावधानीपूर्वक विचार करेगा। प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट जाति व युग में प्रादुर्भूत होता है और उसका व्यक्तित्व चाहे जितना प्रभावशाली हो, उसकी जाति व उसके युग की आत्मा की अभिव्यक्ति उसके द्वारा होती ही है। अतएव अग्रेजी साहित्य के इतिहास का स्वरूप और उद्देश्य वैयक्तिक के साथ ही साथ राष्ट्रीय भी है। यह न केवल उन रचनाओं का वर्णन है जो विभिन्न अग्रेजी लेखकों ने पृथक-पृथक लिखी है, बल्कि उस सपूर्ण साहित्य का भी वर्णन है जो अपने समग्र रूप में समूची अग्रेज जाति की प्रतिभा की सृष्टि है। प्रत्येक अच्छी व बुरी बात जिसका प्रवेश हमारे राष्ट्रीय जीवन में हो गया है, वह हमारे साहित्य के ताने-बाने में प्रविष्ट हो गयी है। साधारण अग्रेजी इतिहास यदि हमारे राष्ट्र की जीवन-गाथा है, तो उसका साहित्य उसकी आत्मकथा है; यदि एक में हम उसके क्रिया-कलापों व व्यावहारिक सफलताओं की कथा पढते है, तो दूसरे मे उसके बौद्धिक व नैतिक विकास का आख्यान। अतएव जब हम समस्त परिवर्तनों सहित अपने साहित्य का इतिहास पढते है तो प्रत्येक पीढी के आतरिक जीवन की प्रेरक शक्तियो से हमारा सीधा व जीवित सबध स्थापित हो जाता है और हम बड़े निकट से यह जान जाते है कि प्रत्येक पीढी का जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण एव मत था, ऐसी कौन सी चीज़े थी जिनमें उसकी सबसे अधिक रुचि थी और जिनके द्वारा उसका सबसे अधिक मनोरजन होता था, किस प्रकार के भाव उसे सबसे अधिक और गहराई के साथ उद्दीप्त करते थे, व्यवहार व अभिरुचि के किन मापदण्डों

से वह अनुशासित होती थी तथा किस किस प्रकार के चरित्र को वह सर्वाधिक प्रशसा के योग्य समझती थी। कालक्रमानुगत विधि के अनुसार अध्ययन करते समय हमें अग्रेजी साहित्य को सदैव इस दृष्टि से देखना है कि वह अग्रेज जाति की आत्मा व मस्तिष्क का निरतर उत्कर्षकारी प्रकाशन रहा है।

३. अंग्रेजी साहित्य के युग––अब हमें यह समझने में कोई कठिनाई नही होनी चाहिए कि अग्रेजो साहित्य के इतिहास को सदा युगों मे क्यों विभाजित किया जाता है। यह सत्य है कि यह विभाजन मुख्य रूप से सुविधा के लिए किया जाता है क्योंकि किसी विस्तृत विषय के अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि उस विषय को हिस्सों मे बॉट दें; परतु उसके लिए एक वास्तविक औचित्य भी है। सच्चे अर्थो मे किसी युग से तात्पर्य एक विशिष्ट काल से होता है जिसमे एक विशिष्ट प्रकार की अभिरुचि का प्रसार होता है और परिणामस्वरूप जिसके साहित्य में विषय-वस्तु, विचार, भाव व शैली की कतिपय सामान्य विशेषताएँ पायी जाती है। यह आवश्यक है कि जहाँ तक व्यक्तित्व-सबधी विशिष्ट गुणों की बात है, ऐसे युग के लेखकों मे एक दूसरे के बीच अत्यधिक अतर होगा, परतु साथ ही ये सामान्य विशेषताएँ भी उनकी रचनाओ का अत्यन्त स्पष्ट लक्षण होगी। फिर अभिरुचि में कोई निश्चयात्मक परिवर्तन होने के कारण जैसे ही दूसरा युग प्रारभ होता है, यह युग समाप्त माना जा सकता है।

हमें इस बात की सावधानी रखनी होगी कि हम इन युगों को ऐसा न मान लें मानों वे दृढता से स्थिर कर दिये गये है और अपने आप में पूर्ण है अथवा उनमें एक दूसरे के बीच वास्तविक दीवारे खड़ी है। इतिहास केवल एक अविच्छिन्न प्रवाह को स्वीकार करता है; उसमें पूर्ण आरंभों एव समाप्तियों के लिए स्थान नही है। यथार्थ में विभिन्न युग एक दूसरे मे अर्तनिहित होते है और कालक्रम में किसी व्यक्ति की साहित्य-रचना एक युग मे प्रारभ होकर दूसरे में समाप्त हो सकती है। अतएव सभी प्रस्तावित विभाजनों के सबध में कुछ न कुछ स्वेच्छाचारिता अवश्य रहती है। इस बात की सत्यता तब प्रकट हो जायगी जब हम यह याद रखे कि मिल्टन की मृत्यु के समय ड्राइडेन तैंतालीस वर्ष का था और मिल्टन के बाद केवल छब्बीस वर्ष और जीवित रहा, तथापि हम उन्हें समकालीन न मानकर विभिन्न युगों का प्रतिनिधि मानते है। फिर भी साहित्यिक युगों की सीमाएँ पर्याप्त मात्रा में सुनिश्चित होती है तथा व्यवहार मे वे युग बडे महत्त्वपूर्ण होते है। जैसा कि हम जान चुके है, साहित्य के इतिहास का प्रमुख उद्देश्य उस क्रमिक

परिवर्तन का अध्ययन करता है जो विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है। इन क्रमागत अवस्थाओं में जो सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व रहे हैं उन पर अपना ध्यान केन्द्रित करने मे हमें इन युगो से बडी सहायता मिलती है।

इन युगों के विन्यास में कई विधियाँ प्रयुक्त की जा सकती है। इतिहास से लिये गये नामों से उन्हे पुकारना अत्यन्त सामान्य बात है, जैसे एलिज़ावेथ-युग, पुनसंस्थापन युग और विक्टोरियन युग। परतु कदाचित् यह ज्यादा अच्छा होगा कि हम स्वयं साहित्य से ही अपने शब्द ले और प्रत्येक युग को उसके सबसे प्रतिनिधि-लेखक के नाम से पुकारें। यहाँ मैं यही रास्ता अपनाना चाहता हूँ। यदि हम चॉसर के पहले और उसकी मृत्यु के लगभग डेढ़ सौ वर्ष बाद के साहित्य को अभी छोड़ दे तो इस प्रकार हमारे अध्ययन के प्रमुख व्यापक विभाग निम्न-लिखित होंगे—चॉसर-युग, शेक्सपियर-युग, मिल्टन-युग, ड्राइडेन-युग, पोप-युग, जॉनसन-युग, वर्ड्सवर्थ-युग तथा टेनीसन-युग। साथ में दी गयी तालिका से इन युगों की स्थूल सीमाएँ एवं साधारण इतिहास के युगो से उनका सबध स्पष्ट हो जायगा।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि क्योकि यह छोटी-सी पुस्तक एक अत्यन्त विस्तृत विषय पर लिखी गयी है, इसलिए इसमे उन विभिन्न समस्याओ का अत्यन्त संक्षिप्त अध्ययन ही हो सकता है जिनका अध्ययन अग्रेजी साहित्य के इतिहास में चाहिए। स्थान की कमी के कारण हमें अपना ध्यान लगभग पूर्ण रूप से उस साहित्य पर केन्द्रित करना होगा जिसे साधारणतया सामान्य साहित्य (जनरल लिटरेचर) कहा जाता है। अतएव उन असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर जहाँ विशेष विषयों, जैसे विज्ञान, धर्मशास्त्र व दर्शनशास्त्र के साहित्य के विवेचन के लिए कोई विशेष कारण हों, हम सामान्यतया ऐसे साहित्य को अपने परीक्षण में स्थान नही देगे।

अंग्रेजी साहित्य के युग

साहित्यिक युग	निकटतम तिथियाँ	ऐतिहासिक युग
१. चॉसर के पूर्व का युग।	५००—१३४०	ऐंग्लो-सैक्सन व ऐंग्लो-नार्मन युग।
२. चॉसर-युग (चॉसर, १३४०-१४००)	१३४०—१४००	मध्य प्लैण्टाजिनेट (अथवा ऐजिविन) युग।
३. चॉसर से 'टॉटेल्स मिसलैनी' तक।	१४००—१५५७	उत्तर प्लैण्टाजिनेट (ऐजिविन) युग। प्रारंभिक ट्यूडर-युग।
४. शेक्सपियर-युग (शेक्सपियर, १५६४-१६१६)	१५५८—१६२५	एलिजाबेथ-युग; जैकोबियन (जेम्स) युग। (पुनर्जागरण-युग)
५. मिल्टन-युग (मिल्टन, १६०८-१६७४)	१६२५—१६६०	चार्ल्स-युग (कैरोलीन-युग)
६. ड्राइडेन-युग (ड्राइडेन, १६३१-१७००)	१६६०—१७००	पुनःसंस्थापन-युग
७. पोप-युग (आगस्टन-युग) (पोप, १६८८-१७४४)	१७००—१७४५	ऐन-युग; प्रारंभिक जार्जियन-युग
८. जॉनसन-युग (जॉनसन, १७०९-१७८४)	१७४५—१७९८	मध्य जार्जियन-युग
९. वर्ड्सवर्थ-युग (वर्ड्सवर्थ, १७७०-१८५०)	१७९८—१८३२	उत्तर जार्जियन-युग अथवा क्रांति-युग
१०. टेनीसन-युग (टेनिसन, १८०९-१८९२)	१८३२—१८८७	विक्टोरियन-युग
११. हार्डी-युग (हार्डी, १८४०-१९२८)	१८८७—१९२८	
१२. वर्तमान-युग	१९३०—१९५५	

अध्याय २

चॉसर से पहले का अंग्रेज़ी साहित्य (५००-१३४०)

४. हमारे अध्याय में प्राचीन अंग्रेज़ी साहित्य का स्थान--अंग्रेजी भाषा के इतिहासकार पहले 'ऐंग्लो-सैक्सन' और 'अंग्रेजी' के बीच एक कठोर विभाजक रेखा खीचा करते थे। उनके मतानुसार अंग्रेजी एक नयी भाषा थी और 'ऐंग्लो-सैक्सन' तथा उस 'नार्मन-फ्रेंच' के सयोग से उत्पन्न हुई थी जिसे विजेता विलियम अपने साथ लाया था। आधुनिक लेखक इस विभाजक रेखा को नहीं मानते क्योंकि उनका मत है कि अंग्रेजी मूल रूप से एक 'ट्यूटानिक' भाषा है तथा चौंदहवी शताब्दी की अंग्रेज़ी का जन्म पाँचवी शताब्दी की ऐंग्लो-सैक्सन से एक नियत विकास-क्रम मे ही हुआ था जिसकी निरतरता को भंग करनेवाली कोई बात किसी भी समय नहीं हुई। इस कारण अब सामान्यत: 'ऐंग्लो-सैक्सन' शब्दो का प्रयोग नही किया जाता, वरन् इनके स्थान पर 'प्राचीन अंग्रेजी' का प्रयोग करते हैं।

स्वाभाविक रूप से साहित्य के इतिहास के निरूपण मे भी तदुनुरूप परिवर्तन हो गया है। यहाँ भी अटूट निरतरता के विचार पर बल दिया जाता है, और जिस प्रकार पहले जिस भाषा को 'ऐंग्लो-सैक्सन' कहते थे उसे अब अंग्रेजी भाषा का ही एक प्रारभिक रूप मानते है, उसी प्रकार जिस साहित्य को हम कभी 'ऐंग्लो-सैक्सन' साहित्य कहते थे वह अब अंग्रेजी साहित्य का ही एक प्रारभिक रूप माना जाता है। पहले कहा जाता था कि अंग्रेजी साहित्य चॉसर से प्रारभ होता है। परतु इस मत के अनुसार ऐसा नही है। इसके अनुसार अंग्रेजी साहित्य का प्रारंभ यूरोप के महाद्वीप पर अंग्रेजी जाति के इतिहास के प्रारभ के साथ ही हुआ जब कि उन लोगों के झुण्ड उस द्वीप मे बसे भी नही थे जो शीघ्र ही उनकी जाति का निवास-स्थान बननेवाला था।

आधुनिक वैज्ञानिक मत की सत्यता के सम्बन्ध मे कोई शंका प्रकट नही करना चाहता, फिर भी हमें यह मानना होगा कि प्राचीन मत जिसका स्थान नवीन मत ने ले लिया है, वैज्ञानिक रूप से ठीक न होने पर भी व्यावहारिक दृष्टि से अत्यन्त

सुविधाजनक था। यह सत्य है कि केडमन द्वारा सात शताब्दी पूर्व प्रयुक्त की हुई भाषा से ही चॉसर की भाषा की क्रमशः उत्पत्ति एक धीमे परन्तु अटूट विकास-क्रम के रूप मे दिखाई जा सकती है। फिर भी चॉसर और केडमन की अंग्रेजी में एक मौलिक अन्तर रह ही जाता है। हमें केडमन की प्राचीन अंग्रेजी विदेशी भाषा की भाँति सीखनी पड़ती है। दूसरी ओर, यद्यपि चॉसर की मध्ययुगीन अंग्रेजी ऐसे शब्दों और प्रयोगों से भरी हुई है जो हमे कठिन प्रतीत होते है, फिर भी हम ठीक ही यह अनुभव करते है कि यह उसी भाषा का एक प्राचीन रूप है जिसका हम आजकल प्रयोग करते है। यही बात साहित्यिक शैली के सबध मे में भी लागू होती है। केडमन की शैली ऐसे सिद्धातो पर आधारित है जो हमारे सिद्धातों से अत्यन्त भिन्न है, जब कि चॉसर की शैली उन सिद्धातों पर आधारित है जो बहुत अशों मे हमारे अपने काव्य के ही है।

अस्तु, यद्यपि अंग्रेजी साहित्य का इतिहास पाँचवी से बीसवी शताब्दी तक अविच्छिन्न रहा है, फिर भी हम यह मान सकते है कि चॉसर के पहले का साहित्य विशेष अध्ययन का क्षेत्र है और आधुनिक अग्रेजी साहित्य निश्चित रूप से चॉसर से ही प्रारभ होता है। यहाँ यही मत ग्रहण करके हम चौदहवी शताब्दी के मध्य से पूर्व के साहित्य के विकास का वर्णन अत्यन्त सक्षेप मे करेगे और चौदहवी शताब्दी के मध्य से ही वास्तव मे अपने अध्ययन का प्रारभ करेगे।

५. नार्मन विजय के पहले का अंग्रेजी साहित्य—'ऐंग्लो-सैक्सन' काव्य अभी काफी बडी मात्रा में अवशिष्ट है जिसमे 'बेवुल्फ' नामक महाकाव्य भी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एव मनोहारी है। इसके लेखक के विषय मे कुछ भी ज्ञात नही है और इसका इतिहास अभी तक मतभेद का विषय है। परतु सभावना इस बात की है कि डेनमार्क व दक्षिणी स्वीडेन में यह अग्रेजों के पुरखो के बीच गाथाओ के रूप मे विकसित हुआ। बाद मे आक्रामक इसे इसी रूप मे इस देश मे लाये और यहाँ आठवी शताब्दी के लगभग सभवतः नार्थम्ब्रिया के किसी कवि द्वारा इसे महाकाव्य का रूप दिया गया। यद्यपि मूल रूप मे यह मूर्ति-पूजा-प्रधान काव्य था, परतु अपने वर्तमान रूप मे यह एक ईसाई लेखक की रचना है। इसमें नायक बेवुल्फ़ के अद्भुत कार्यों का शक्तिशाली एवं ओजपूर्ण वर्णन किया गया है; किस प्रकार पहले उसने ग्रेंडेल नामक दैत्य को, जो कि बारह वर्ष से डेनमार्क के राजा का राज्य चौपट कर रहा था, युद्ध मे मारा; फिर किस प्रकार उसने ग्रेंडेल की माँ का वध किया; और किस प्रकार अत में अत्यन्त वृद्धावस्था में वह एक आग्नेय सर्प का वध करने गया

जहाँ सर्प को मारते समय उसे भी प्राणातक घाव लगा। यह एक सुन्दर प्राचीन काव्य है, तथा हमारे प्राचीन पुरखों के युद्ध और शातिकालीन जीवन के सजीव चित्रों ने इसका महत्त्व और भी बढा दिया है।

'बेवुल्फ' के अतिरिक्त हमारे प्राचीनतम अंग्रेजी काव्य के सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण केडमन व किनीवुल्फ की रचनाओ में मिलते है। दोनों ही कवि उत्तर के रहने वाले थे और उस समय हुए थे जब ऐग्लो-सैक्सन लोग ईसाई धर्म ग्रहण कर चुके थे। ऐग्लो-सैक्सनों का यह धर्म-परिवर्तन छठी शताब्दी के अन्त मे प्रारभ हुआ था।

केडमन, जिसकी मृत्यु ६८० के लगभग हुई, यार्कशायर मे ह्विटबी के मठ में नौकर था। 'वेनरेबुल' बीड द्वारा लिखित एक सुन्दर कथा के अनुसार उसको काव्य-रचना की शक्ति दैवी वरदान के रूप में अचानक प्राप्त हुई। जब कभी लोग मठ के सभा-भवन में किसी उत्सव के सम्बन्ध में एकत्र होते थे, वह दूसरों की भाँति वीणा के साथ गा नही पाता था, और जब उसकी बारी आती वह सदैव अपमानित होकर चला जाता था। एक रात, जब वह घोड़ों की देखभाल करने के लिए घुडसाल में गया हुआ था, उसे नीद आ गयी। नीद में एक देवदूत ने उसे दर्शन दिये और उससे गाने के लिए कहा। उसके यह पूछने पर कि "मैं क्या गाऊँ?" देवदूत ने उत्तर दिया, "सृष्टि के प्रारभ के गीत गाओ।" जब वह जागा तो बड़े आश्चर्य के साथ उसने अपने को काव्य-प्रतिभा से सम्पन्न पाया। दसवी शताब्दी की एक हस्तलिखित प्रति में धर्मग्रथों के जो तीन स्वतत्र अनुवाद हमें प्राप्त हुए है वे केडमन के ही कहे जाते है। पहली कविता का विषय है सृष्टि की रचना तथा आदम और ईव का स्वर्ग से निष्कासन। दूसरी मे मिस्र से प्रस्थान तथा तीसरी में डेनियल की कथा है। प्रचलित मत के अनुसार ये तीनों कविताएँ एकमात्र केडमन की ही रचना नही है वरन उनका एक भाग उसके अनुकरणकर्त्ताओ ने लिखा है। सर्व-प्रथम १६५० में मिल्टन के एक मित्र ने ये कविताएँ मुद्रित की। यद्यपि इस बात का कोई प्रमाण नही है, फिर भी लोगों की धारणा है कि मिल्टन ने 'पैराडाइज़ लॉस्ट' लिखने में केडमन की 'जेनेसिस' से सहायता ली होगी।

किनीवुल्फ़ के जीवन में भी एक अलौकिक घटना घटित हुई। अनुमान किया जाता है कि उसका जन्म ७२० और ७३० के बीच हुआ। जैसा वह स्वयं अपने 'ड्रीम आव दि रूड' में बतलाता है, प्रारंभ में वह एक घुमक्कड़ चारण व आमोद-प्रमोद का प्रेमी था परन्तु जब उसे एक बार 'क्रास' के दर्शन हुए तब से वह बिल्कुल

बदल गया और उसने धार्मिक विषयों पर ही कविता लिखने का संकल्प कर लिया। उसके काव्यों में प्रमुख है 'क्राइस्ट', 'इलीन' और जूलियाना'। 'क्राइस्ट' का विषय है ईसा का जन्म, नरक की यात्रा, स्वर्गारोहण व प्रलय के समय अंतिम न्याय होते समय उनके द्वारा की जाने वाली सहायता। 'इलीन' में कान्सटैण्टाइन की माता हेलेना द्वारा सच्चे 'क्रास' की प्राप्ति का वर्णन है। 'जूलियाना' में ईसाई शहादत की एक कथा है।

यद्यपि ऐंग्लो-सैक्सन काव्य सामान्यतः धार्मिक विषयों एव अत्यन्त गभीर भावना से परिपूर्ण है, तथापि इसमे साहसिक कार्य एवं युद्ध के प्रति आकर्षण का भाव भी अत्यन्त स्पष्ट रूप मे व्यक्त हुआ है। कभी-कभी तो ऐंग्लो-सैक्सनों की लड़ाकू वृत्ति शुद्ध वीर-काव्य के रूप मे फूट पड़ी है, जैसे कि 'दि बैटिल आव ब्रुननबर्ह' (९३७) में, जिसका टेनीसन ने बड़ा ओजपूर्ण अनुवाद किया है। इस काव्य की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता समुद्र के प्रति अनुराग है जो अंग्रेजों के राष्ट्रीय चरित्र का एक अनिवार्य अग है। शैली के क्षेत्र मे यह काव्य-रचना के जिन सिद्धांतों पर आधारित है वे, जैसा मै पहले ही कह चुका हूँ, उन सिद्धांतों से बिल्कुल भिन्न है जिनसे आधुनिक अंग्रेजी छन्द-विधान शासित है। इस काव्य मे हमारे तुकात के स्थान पर अनुप्रास का प्रयोग हुआ है, अर्थात् एक ही अक्षर की बार-बार और निश्चयात्मक आवृत्ति हुई है। साथ ही साथ ह्रस्व पदों की सख्या के विषय मे पद्धियाँ बिल्कुल अव्यवस्थित है। इस सबध मे सामान्य नियम इस प्रकार था—ऐंग्लो-सैक्सन कविता की प्रत्येक पक्ति के दो भाग होते थे; पहले भाग में दो दीर्घ पद होते थे और दूसरे में कम से कम एक, परतु दोनो ही दशाओं में दीर्घ पद एक ही अक्षर से प्रारभ होते थे। ऐंग्लो-सैक्सन छन्द का यही सामान्य रूप था, उदाहरण के लिए 'बेवुल्फ़' से उद्धृत निम्नलिखित पक्ति मे,

Grendel gongan, Godes yree baer
(Grendel going God's anger bore)

एक और उदाहरण आगे चलकर चौदहवी शताब्दी की कविता से दिया जायेगा, जिसमे पुराना अनुप्रास-विधान बनाये रखा गया है। (देखो § १३)

ऐंग्लो-सैक्सन काव्य की उन्नति सबसे अधिक उत्तर मे हुई; गद्य का विकास बाद में दक्षिण में हुआ। सामान्य रूप से जो गद्य-रचनाएँ हमे आजकल प्राप्त है वे भाषाविज्ञान व ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है, किन्तु साहित्य के रूप में उनका कुछ भी मूल्य नही है। यद्यपि राजा अल्फ्रेड (८४९–९०१) ने अधिकतर

अनुवाद ही लिखे हैं, फिर भी वह एक महत्त्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है क्योंकि सर्वप्रथम उसी ने मातृभाषा का व्यवस्थित व नियमित प्रयोग किया। उसने स्वयं लिखा है कि उसने अपने अनुवाद "हम सब लोगों की समझ में आने वाली भाषा" में लिखे है। उसने जिन पुस्तकों का अनुवाद किया उनमें 'वेनरेबुल' बीड अथवा बीडा (६७३–७३५) द्वारा लैटिन भाषा में लिखित 'इक्लीजियास्टिकल हिस्ट्री' भी है। बीड ने अपनी रचनाएँ नार्थम्ब्रिया राज्य मे जैरो नामक स्थान मे लिखी। परतु प्राचीन अग्रेजी गद्य का सबसे महान् स्मारक है 'ऐंग्लो-सैक्सन क्रानिकल'। यह ऐतिहासिक वृत्तात राजा अल्फ्रेड के पहले से ही विद्यमान था परन्तु उसके सरक्षण मे इसे एक राष्ट्रीय इतिहास का रूप दे दिया गया। ११५४ तक यह इसी रूप में लिखा जाता रहा जब कि राजा स्टीफ़ेन की मृत्यु के वृत्तात के साथ यह समाप्त हो गया।

६. नार्मन-विजय से चॉसर तक––नार्मन-विजय से लेकर चौदहवी शताब्दी के प्रारभ तक अग्रेजी भाषा को अपने को लिखित भाषा के रूप मे बनाये रखने के लिए कठिन सघर्ष करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी साहित्य, जिसमे विलियम के आगमन के २०० वर्ष पहले से ही जीवन का बहुत कम चिन्ह दिखाई दे रहा था, पुनः १५० वर्ष के लिए लगभग समाप्त प्राय हो गया। उसका पुनरुज्जीवन राजा जॉन के काल मे प्रारभ हुआ। इस समय तक आदि निवासियों और आक्रामकों की पुरानी शत्रुता बहुत अशों मे समाप्त हो गयी थी और, जैसा 'मैगनाकार्टा' की घटना से स्पष्ट है, दोनों तत्त्व एक राष्ट्र के रूप में सयुक्त हो गये थे। जब अग्रेजी राजाओं के फ्रासीसी प्रदेश उनके हाथ से निकल गये तो राष्ट्र की बढ़ती हुई एकता और भी सुदृढ हुई। इन परिस्थितियों मे अग्रेजी अपनी प्रतिपक्षी भाषा का दृढ़ता से सामना करने लगी जो कि पहले से ही निर्बल पड़ रही थी। इसके साथ ही अग्रेजी साहित्य का ऐतिहासिक महत्त्व भी बढ़ गया। अब यह स्पष्ट हो गया कि इस बीच मे अनेक दिशाओ से नवीन सामग्री इकट्ठी हो जाने से कितना लाभ हुआ। पुनरुज्जीवन-काल की प्रथम महत्त्वपूर्ण कृति 'ब्रूट' मे यह बात स्पष्ट दिखाई देती है। यह ग्रंथ १२०५ के लगभग लेयामन ने, जो वूर्सटरशायर में पादरी था, पूरा किया था। तीस हजार पक्तियों के इस विशाल काव्य में प्राचीन ब्रिटेन के पौराणिक इतिहास का वर्णन है। यह इतिहास ईनियस से प्रारंभ होता है जिसका वंशज ब्रूटस ब्रिटिश जाति का पूर्वज माना जाता था, तथा इसका अन्त कैडवैलेडर से होता है, जो देशी राजाओं में अंतिम था। साथ

मे अन्य असख्य घटनाएँ है, जिनमें लियर और राजा आर्थर की कहानियाँ भी है। परतु इस संबंध मे विशेष महत्त्व की बात यह है कि यह काव्य ऐग्लो-नार्मन कवि वेस के पद्यात्मक वृत्तांत 'ब्रूट दॉग्लेतेयर' का अनुवाद है जिसमें अनुवादक ने अपनी ओर से भी बहुत कुछ जोड़ दिया है। 'ब्रूट दॉग्लेतेयर' स्वय 'हिस्ट्री आव ब्रिटेन' (११३२) पर आधारित था जो कि मानमथ-निवासी वेल्श इतिहास-लेखक जेफ्रे द्वारा लिखा गया था। इस प्रकार लेयामन की कविता मे केल्टिक, फ्रांसीसी व अग्रेजी, तीन प्रभाव एक साथ दिखाई देते है। जहाँ तक छद-विधान का प्रश्न है, यद्यपि इसमें ऐग्लो-सैक्सन कविता के अनुप्रास-सिद्धातों का अनुसरण किया गया है, फिर भी कभी-कभी तुकात के भी दर्शन हो जाते है जिससे फ्रासीसी रुचि का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। कुछ समय उपरात १२१५ के लगभग 'ऑर्मूलम' की रचना हुई। यह पुस्तक लिंकनशायर के पादरी 'ऑर्म' ने लिखी थी। इसमें छोटी-छोटी पक्तियो मे, जो तुक और अनुप्रास दोनों से रहित है, छंदबद्ध प्रवचन दिये गये है। इसके अतिरिक्त १२२५ के लगभग एक गद्य-प्रबध की भी रचना हुई जिसका शीर्षक है 'ऐनक्रेन र्यूल, अर्थात रूल आव ऐन्कोरेसेज़', और जिसे धार्मिक जीवन अगीकार करने वाली तीन स्त्रियो के लिए किसी अज्ञात लेखक ने लिखा था। तेरहवी शताब्दी के देशी साहित्य की केवल एक ही कृति और है जो यहाँ उल्लेख करने योग्य है। यह है १२२० के लगभग लिखा गया एक सवाद-काव्य जिसका नाम है 'दि आउल ऐण्ड दि नाइटिगेल' जिसमे उल्लू और बुलबुल दोनो अपने-अपने गुणों का बखान करते है। यह कविता ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योकि इसमें अनुप्रास का त्याग करके तुकात को अपनाया गया है। चौदहवीं शताब्दी के आरभ की प्रमुख कृतियाँ ये है—फ्रासीसी भाषा से अनुवादित राबर्ट मैनिग की 'हैण्डलिंग सिन, अर्थात् मैनुअल आव सिन्स' (१३०३); 'ऐन-बाइट आव इनविट, अर्थात् रिमोर्स आव कान्शेन्स' (१३४०); तथा कर्सर मण्डो' (लगभग १३२०)। इसमे से दूसरी पुस्तक गद्य मे है; तीसरी एक छन्दबद्ध धार्मिक इतिहास है जिसमे सतो की अनेक पौराणिक कथाएँ भी है। परन्तु ये रचनाएँ सामान्य साहित्य नही बल्कि धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत आयेगी।

७. अंग्रेजी भाषा का निर्माण—नार्मन विजय और चॉसर के बीच का समय अग्रेजी साहित्य की अपेक्षा अग्रेजी भाषा की दृष्टि से कही अधिक महत्त्वपूर्ण है। इन तीन सौ वर्षो में गद्य या पद्य मे ऐसी साहित्य-रचना तो बहुत ही थोड़ी हुई जिसका कुछ अधिक स्थायी मूल्य हो, परंतु विरोधी भाषाओं के संघर्ष के फलस्वरूप आधुनिक

अंग्रेजी धीरे धीरे विकसित होकर समग्र राष्ट्र की भाषा के रूप में राष्ट्रीय स्थान प्राप्त करती जा रही थी। यह सत्य है कि साहित्यिक इतिहास की किसी प्रारंभिक पुस्तक में इस विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन नहीं हो सकता। हमारे लिए यही कहना पर्याप्त होगा कि इस विकास का अंतिम परिणाम हुआ एक मिश्रित भाषा का जन्म जिसका व्याकरण-विन्यास तथा शब्द-समूह उस प्रक्रिया से उत्पन्न हुए थे जो प्राचीन ऐंग्लों-सैक्सन सामग्री पर पड़ रहे नार्मन-फ्रेंच प्रभावों का परिणाम थी। इसी नयी भाषा ने विजेताओं की भाषा को हटाकर उसका स्थान ले लिया। यह अवश्य है कि नार्मन-फ्रेंच बहुत दिनों तक एकमात्र सरकारी भाषा तथा कुछ अंशों मे फैशनेबुल लोगों की भाषा रही। परन्तु चौदहवी शताब्दी के प्रारंभ तक अंग्रेजी जीवन पर से उसका अधिकार पूर्णतया समाप्त हो गया था। और १३६२ में तो अंग्रेजी की पूर्ण विजय हो गयी जब एक कानून द्वारा यह घोषणा की गयी कि अब से अदालतों में सारा काम फ्रांसीसी मे न होकर अंग्रेजी में होना चाहिए। इसके पहले सौ वर्ष से भी अधिक समय तक फ्रांसीसी कहानियों के जो बहुसंख्यक अंग्रेजी अनुवाद हुए थे उनसे यह प्रकट हो गया था कि फ्रासीसी न जानने वालों के बीच भी एक साहित्यिक वर्ग का विकास हो रहा था।

परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि जहाँ इस प्रकार फ्रासीसी भाषा का लोप हो रहा था, वहाँ उसका स्थान लेने के लिए नयी भाषा के किसी मानक (स्टैंडर्ड) रूप का विकास अभी नही हुआ था। अंग्रेजी अनेक बोलियो मे बँटी हुई थी। अंग्रेजी के तीनों रूप—उत्तरी, मध्यदेशीय व दक्षिणी—एक दूसरे से मूलतः भिन्न थे और उनमें से प्रत्येक के स्वय भी अनेक गौण भेद थे। इस अस्तव्यस्तता में धीरे-धीरे पूर्व मध्यदेशीय अंग्रेजी शीर्ष स्थान प्राप्त करने लगी क्योंकि यह राजधानी तथा विद्या के दोनों केन्द्रों ऑक्सफ़र्ड और कैम्ब्रिज की भाषा थी। फिर जब चॉसर ने काव्य-रचना प्रारंभ की तो उसने इसी भाषा को अपना माध्यम चुना, और बहुत अंशों में उसी के प्रभाव के कारण जो भाषा अभी तक केवल अनेक प्रातीय बोलियो में से एक थी, उसे राष्ट्रीय भाषा होने का सम्मान प्राप्त हो गया।

इस प्रकार हम चॉसर तक आ गये जो हमारे वास्तविक रूप से राष्ट्रीय कवियों में सर्वप्रथम था।

चॉसर से पहले के अंग्रेजी साहित्य की सारिणी

जूट, सैक्सन तथा ऐंगल्स लोगों का ब्रिटेन मे बसना, ४४९-५४७. सेण्ट आगस्टोन द्वारा केण्ट में ईसाई धर्म का प्रचार, ५९७. तथा नार्थम्ब्रिया में, ६२७-६३५.	
	केडमन की 'पैराफ्रेज़ेज़', ६७०-८०. किनीवुल्फ़ का जन्म, ७२० और ७३० के बीच! 'बेवुल्फ' का महाकाव्य के रूप मे रूपातर? आठवी शताब्दी।
वेसेक्स का राजा अल्फ़ेड, ८७१-९०१.	अल्फ़ेड के अनुवाद, नवी शताब्दी।
नार्मन-विजय, १०६६.	
राजा जॉन, ११९९-१२१६.	अंग्रेजी पुनर्जागरण (रिनेसॉं); लेयामन की 'ब्रूट', लगभग १२०५. ऑर्म की 'ऑर्मुलम', लगभग १२१५. 'दि ऐन-क्रेन र्यूल, लगभग १२२५. 'दि आउल ऐण्ड दि नाइटिंगेल,' लगभग १२२०. मैनिंग की 'हैण्डलिंग स्निं,' १३०३ 'कर्सट मण्डी', १३२०-२५.
एडवर्ड तृतीय, १३२७-१३७७.	'ऐनबाइट आव इनविट', १३४०. चॉसर का जन्म, १३४०?

अध्याय ३

चॉसर-युग (१३४०-१४००)

८. **चॉसर-युग**—जेफी चॉसर का जन्म एडवर्ड तृतीय के शासन काल मे हुआ था और रिचर्ड द्वितीय के पूरे शासन भर जीवित रह कर हेनरी चतुर्थ के सिहासनासीन होने के एक वर्ष उपरात उसकी मृत्यु हुई। इस प्रकार उसका जीवन-काल सुस्पष्ट सामाजिक विषमताओ एव तीव्र राजनीतिक परिवर्तन का युग था। एडवर्ड के शासन में इग्लैण्ड मे मध्ययुगीन सभ्यता अपने चरम शिखर पर पहुँच गयी। यह अग्रेजी क्षात्रधर्म के भी उत्कर्ष का युग था। एडवर्ड के दरबार की भावना रोमाण्टिक आदर्शवाद की भावना थी जिससे स्वय चॉसर की 'नाइट्स टेल' परिपूर्ण है। फ्रायसॉर्ट के 'क्रानिकल्स' मे वर्णित फ्रास के साथ उसके लगातार युद्धो एव क्रेसी और प्वायटियर्स की प्रसिद्ध विजयो की कथा तो किसी उपन्यास की भाँति अद्भुत लगती है, न कि इतिहास की भाँति सयत। अपनी नयी नयी स्थापित एकता की शक्ति पाकर इग्लैण्ड उल्लसित उत्साह से पूर्ण हो विदेश-विजय के अभियान पर बढ़ चला और प्रत्येक नवीन विजय राष्ट्रीय महत्त्वाकाक्षा एव स्वाभिमान के लिए नवीन प्रोत्साहन का कारण बन गयी। परतु इस चित्र का एक और पक्ष भी था। राजा और उसके सरदारों का जीवन अत्यत सुखी व सस्कृत था, व्यापार में वृद्धि हुई और व्यापारी वर्ग मे सपत्ति भी बढी। परतु साथ ही जनसाधारण दयनीय निर्धनता के गर्त मे गिर गया। एक के बाद दूसरे प्लेग ने देश का नाश कर दिया, और फिर १३४८–४९ मे 'ब्लैक डेथ' नामक महामारी आयी जिसने एक ही वर्ष मे पूरी आबादी का तृतीयाश समाप्त कर दिया और जो १३६२, १३६७ तथा १३७० मे पुनः प्रकट हुई। प्लेग के साथ ही दुर्भिक्ष भी आया; चोरों और उचक्कों की संख्या बढ़ गयी; मजदूरों में व्यवस्था स्थापित करने के लिए जो निरकुश कानून लागू किये गये उनसे स्थिति और भी शोचनीय हो गयी। फ्रास के युद्ध, जिन्होने एडवर्ड और उसकी सेना को एक अस्थायी प्रसिद्धि दिला दी थी, उसके उत्तराधिकारी के लिए बड़े अनर्थकारी सिद्ध हुए। इन युद्धों के विशाल व्यय की पूर्ति के लिए भारी टैक्स लगाये

गये जो वाट टाइलर, जैक स्ट्रा तथा जॉन बाल के नेतृत्व मे हुए जन-विद्रोह के लिए तात्कालिक कारण सिद्ध हुए। यद्यपि इस विद्रोह का दमन शीघ्र कर दिया गया, तथापि इससे व्यापक सामाजिक अशाति का पता चलता है। रिचर्ड के मूर्खता-पूर्ण तथा निरकुश शासन मे राजनीतिक सकट भी बहुत बढ गये और राजा व उसकी प्रजा के बीच हुए वैधानिक सघर्षों के परिणामस्वरूप अनवरत विरोध-वैमनस्य व अशाति को जन्म मिला। इसलिए चॉसर के अतिम वर्षो के इग्लैण्ड की मानसिक स्थिति उस इग्लैण्ड की स्थिति से बिल्कुल भिन्न थी जिसमे उसका जन्म हुआ था। जीवन का मोहक वैभव अधिकांश मे लुप्त हो चुका था और लोग जीवन की कठोर वास्तविकताओं के प्रति अधिक जागरूक थे।

चॉसर के युग की बढती हुई बुराइयों के लिए जो कारण उत्तरदायी थे उनमें चर्च का भ्रष्टाचार भी था। देश मे आध्यात्मिक उत्साह व बल की बहुत कमी हो गया थी। बडे पादरी लोग सपत्ति इकट्ठा करने मे लगे थे तथा उनका जीवन पूर्णतया सासारिक एव अधार्मिक था; साधारण पादरी लोग अज्ञानी और लापरवाह थे तथा भिक्षुक 'फ्रायर' लोग तो अपने लोभ और दुराचार के लिए कुख्यात थे। जैसा हम अभी देखेंगे, सामाजिक सुधार मे चॉसर की अधिक रुचि नही थी, फिर भी उसने मोटे-ताजे, विलासी मठाधीश, प्रफुल्लित एव कामुक 'फ्रायर' तथा क्षमा-पत्रों एव प्राचीन अवशेषों को बेचते फिरने वाले उस धूर्त बदमाश 'पार्डनर' के जो चित्र खींचे है उनसे यह स्पष्ट है कि वह अपने समय के धार्मिक जगत् की शोचनीय स्थिति के प्रति जागरूक था। इसी स्थान पर आकर हमे जॉन विक्लिफ़ (लगभग १३२०–८४) के कार्य के महत्त्व का ज्ञान होता है। विक्लिफ़ को "धर्म सुधार आदोलन (रिफार्मेशन) का शुक्र" कहा जाता है। इस निर्भय एव गभीर व्यक्ति ने अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग इंग्लैण्ड में आध्यात्मिक ईसाईयत को पुनरुज्जीवित करने के महान् कार्य मे लगा दिया। अपने ध्येय की पूर्ति के लिए उसने धार्मिक' 'पैम्फलेट' लिखे और अपने "दीन पादरियों" अर्थात् पर्यटक उपदेशको को दूर-दूर भेजा जिससे वे लोगों को ईश्वर की वाणी का सदेश दे सके। अपने शिष्यो की सहायता से उसने 'बाइबिल' का एक पूर्णतया अग्रेजी सस्करण भी तैयार किया जो किसी आधुनिक जनभाषा मे धर्मग्रथों का पहला अनुवाद था।

इस प्रकार चौदहवी शताब्दी के अतिम भाग मे सामाजिक अशाति तथा एक नवीन धार्मिक आंदोलन का श्रीगणेश, ये दो प्रधान सक्रिय शक्तियाँ थी। उनके अतिरिक्त एक तीसरा प्रभाव भी था जिसका स्रोत था नवीन ज्ञान जिसने बौद्धिक

रुचियों की धारा परिवर्तित करने में बडा योग दिया और इस प्रकार साहित्य को बिल्कुल सीधे तौर से प्रभावित किया। अभी तक विद्या और पाडित्य मुख्य रूप से चर्च से ही सबधित थे, तथा लोगों के विचार और भावनाएँ स्वय अपने तथा ससार दोनों के विषय मे लगभग पूर्णतया धर्मशास्त्र द्वारा शासित रहे थे। चॉसर के युग में भी धार्मिक विचार तथा सोच-विचार की मध्ययुगीन पद्धति ही नियामक तत्त्व थे, परतु एक नवीन और अत्यत भिन्न भावना के प्रवेश के कारण उनका प्रभुत्व कुछ अशो में समाप्त हो चला था। यह भावना इटली मे उत्पन्न हुई थी। इसका प्रमुख स्रोत था प्राचीन काल के साहित्य का अध्ययन जिसके परिणामस्वरूप लोगो मे प्राचीन यूनान व रोम की कला और साथ ही नैतिक विचारो के लिए बडा उत्साह जाग्रत हो उठा। यह उत्साह इस नवीन भावना का दूसरा स्रोत था। इस प्रकार बौद्धिक विस्तार तथा धर्मशास्त्रीय श्रृखलाओ से मुक्ति पाने के लिए किये जा रहे प्रयत्नों को बडा भारी प्रोत्साहन मिला। इस महान् पुनर्जागरण के नेता पेट्रार्क (१३०४-७४) तथा बोकैशियो (१३१३–७५) नामक दो प्रसिद्ध इटालियन लेखक थे। कालातर मे इस नयी सभ्यता को 'मानवतावाद' की सज्ञा प्रदान की गयी। मुख्य रूप से इन्ही दोनों लेखको की रचनाओ के द्वारा मानवतावाद का प्रभाव इग्लैण्ड पर पडा जहाँ शीघ्र ही उसका परिणाम उद्‌बुद्ध सौदर्य-भावना, भौतिक जीवन में आनदानुभूति, तथा उस स्वतत्र इहलौकिक ('सेकुलर') भावना के रूप मे दृष्टिगोचर हुआ जो हमारे साहित्य मे प्रकट होने लगी। इसी स्थल पर हमे उस विशाल तथा जटिल आंदोलन का उत्थान भी देखने को मिलता है जिसका उत्कर्ष शीघ्र ही 'पुनर्जागरण' के रूप मे होने वाला था और जिसके विषय मे आगे बहुत कुछ कहा जायगा। वास्तव में हम यह देखेंगे कि इग्लैण्ड मे प्रतिकूल परिस्थितियों ने बहुत समय तक इस आदोलन को आगे नही बढने दिया तथा धार्मिक क्षेत्र की भाँति बौद्धिक क्षेत्र में भी इस देश को चौदहवी शताब्दी में उठी हुई आशाओ के फलीभूत होने के लिए सोलहवी शताब्दी तक प्रतीक्षा करनी पडी। परंतु मानवतावाद की शक्ति बहुत कम होने पर भी चॉसर-युगीन साहित्य के रचनात्मक प्रभावो मे उसकी गणना करनी ही होगी।

९. चॉसर का जीवन-वृत्त––अपने सभी समकालीनों को पूर्णतः अंधकार मे छोड़े देने वाले, चोदहवी शताब्दी के अग्रेजी साहित्य के महानतम लेखक जेफ्री चॉसर का जन्म १३४० में लंदन मे हुआ था जहाँ उसके पिता शराब-विक्रेता के रूप में बडा समृद्ध व्यापार करते थे। उसके बचपन के विषय में हमे प्रायः कुछ भी ज्ञात नही है,

परतु उसकी रचनाओ मे हमें जिस विस्तृत और विविध ज्ञान के दर्शन होते है उससे यह स्पष्ट है कि उसे यथेष्ट और उच्च शिक्षा से लाभ उठाने का अवसर अवश्य मिला होगा। सत्रह वर्ष की उम्र मे एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र ड्यूक आव क्लैरेस की पत्नी के बालसेवक के रूप मे उसे राजदरबार मे नौकरी मिल गयी। १३५९ मे वह अग्रेज सेना के साथ फ्रास गया जहाँ वह बन्दी बना लिया गया; परतु शीघ्र ही उसके उद्धार का मूल्य अदा कर दिया गया और वह इग्लैड लौट आया। इसके कुछ समय उपरात उसका विवाह हुआ और वह राजा के निजी कक्ष में परिचारक नियुक्त हुआ। इसके बाद अनेक वर्षों तक राजदरबार से उसका बहुत ही निकट का सबध रहा। उसे अनेक बार दौत्य-कार्य के सबध मे यूरोप भेजा गया। इनमे से दो बार उसे इटली जाना पड़ा। इस प्रकार वह पुनर्जागरण के आरभ-काल मे इटालियन सस्कृति के सीधे सपर्क मे आया और सभव है वह पेट्रार्क तथा बोकैशियो से मिला भी हो। 'क्लार्कस टेल' के आमुख में तो उसने पेट्रार्क का स्पष्ट उल्लेख किया है। इन वर्षों मे वह राजा का अत्यत कृपापात्र रहा और कुछ समय तक केण्टशायर के 'नाइट' की हैसियत से पार्लिमेण्ट का सदस्य भी रहा। परन्तु लकास्टर-दल की पराजय तथा अपने विशेष आश्रयदाता जॉन आव गॉण्ट के निष्कासन के उपरात उसके बुरे दिन आ गये और बुढ़ापे के साथ साथ उसे निर्धनता के कष्टों का भी सामना करना पडा। सौभाग्यवश जॉन आव गॉण्ट के पुत्र हेनरी चतुर्थ के सिंहासनासीन होने पर उसकी दशा सुधर गयी तथा राजकीय पेशन मिल जाने से तो वह सारी चिताओ व अभाव से मुक्त हो गया। १३९९ के क्रिसमस मे उसने वेस्टमिन्स्टर में एक घर लम्बे पट्टे पर ले लिया। इससे स्पष्ट है कि उसे अभी बहुत वर्षों तक जीने की आशा थी। परन्तु अगला साल बीतने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी और उसका शव वेस्टमिस्टर-एबी (विहार) के उस भाग मे दफनाया गया जो कालातर में 'कवियों का कोना' नाम से विख्यात हुआ।

चॉसर की रचनाओं का अध्ययन करते समय यह बात याद रखना आवश्यक है कि उसका साहित्यिक प्रशिक्षण द्विपक्षीय था। उसकी शिक्षा के एक भाग का सबध साहित्य से था, परतु दूसरा स्वयं जीवन से सबधित था। वह एक अच्छा विद्यार्थी था, और 'दि हाउस आव फ़ेम' के एक आत्मकथात्मक अश में उसने बताया है कि किस प्रकार दिन भर हिसाब-किताब करने के बाद वह रात मे घर पहुँचता था और वहाँ तब तक अपनी प्रिय पुस्तकों को ध्यानपुर्वक पढा करता था जब तक निद्रा के पूर्ण वशीभूत न हो जाता था। परन्तु वह केवल पुस्तक-प्रेमी न था और न वह

किंचिन्मात्र स्वप्नद्रष्टा ही था। बल्कि इसके विपरीत वह शेक्सपियर और मिल्टन की भाँति इस यथार्थ जगत् का ही प्राणी और व्यावहारिक व्यक्ति था। उसने खूब देशाटन किया था और जीवन को निकट से देखा था। देश-विदेश में अपने काम के सबध मे वह हर प्रकार के लोगों के निकट सपर्क मे आया था। फिर मानव-चरित्र मे उसकी अतर्दृष्टि बहुत तीव्र थी, तथा प्रत्येक नाटकीय, रमणीय और हास्यात्मक वस्तु के लिए भी वह बड़ी पैनी दृष्टि रखता था। इन समस्त गुणो से सम्पन्न होने के कारण अपने विविध अनुभवो से लाभ उठाने के लिए वह एक आदर्श कवि था। उसकी रचनाओ मे बहुत सा अश ऐसा है जो उसके पुस्तक ज्ञान का ही परिचायक है, परतु उसकी सर्वोत्तम रचनाओं मे हमे सदैव इस बात का आभास होता है कि वह केवल अपने अध्ययन का ही सहारा नही ले रहा है वरन् उसकी प्रतिभा वास्तविक जीवन के विस्तृत एव गहन ज्ञान पर आधारित है।

१०. चॉसर की रचनाएँ––सुविधा के विचार से चॉसर का साहित्यिक जीवन सामान्यता तीन कालो मे विभाजित किया जाता है। इन कालो को क्रमश उसका फ्रासीसी, इटालियन तथा अग्रेजी काल कहा जाता है। प्रारम्भ में उसकी प्रतिभा का पोषण फ्रासीसी काव्य तथा कथा साहित्य के द्वारा हुआ जो उसकी युवावस्था मे राजदरबार तथा शिष्ट समाज के अध्ययन के प्रिय विषय थे। स्वभावत उसने भी प्रचलित फैशन का अनुसरण किया और अपनी प्रारभिक रचनाएँ फ्रासीसी आदर्शों के आधार पर ही लिखी। इस प्रकार उसने 'रोमाँ दला रोज' के कुछ अशों का अनुवाद किया जो उस समय काफी लोकप्रिय रहा। इसके अतिरिक्त फ्रासीसी कविताओ के अनुकरण मे कुछ रचनाएँ लिखी। जॉन आव गॉण्ट की पत्नी बलॉश की मृत्यु पर उसने एक दृष्टात-रूपक भी लिखा जिसका नाम उसने 'दि बुक आव दि डचेज' (१३६९) रखा और जो पूर्णत फ्रेच सप्रदाय की शैली मे ही लिखा गया है। इसके उपरात फ्रासीसी प्रभाव समाप्त हो गये और उनका स्थान इटालियन प्रभावो ने ले लिया। यह प्राय: निश्चित है कि वह अपनी इटली की यात्राओं के परिणाम स्वरूप ही इटालियन साहित्य के प्रभाव मे आया। इस द्वितीय काल (१३७०–८४) में चॉसर महान् इटालियन लेखको के शिष्यत्त्व मे रहा। इसी कारण 'दि हाउस आव फेम' पर दॉते का प्रभाव स्पष्ट है तथा 'ट्रायलस एण्ड क्रिसीड' जो उसकी सबसे लम्बी रचना है, बोकैशियो की 'फिलॉसट्रैटो' पर आधारित है और कुछ अशो में तो उसका अनुवाद ही है। इस काल की समाप्ति के समय ही 'लीजेण्ड आव गुड वीमेन' भी लिखी गयी जो अपूर्ण रह गयी। अंत में, जैसे वह फ्रासीसी प्रभाव से मुक्त हो

गया था, उसी तरह इटालियन प्रभाव से भी मुक्ति पाकर वह पूर्णतः अंग्रेज हो गया। इसका यह अर्थ नहीं है कि उसने फ्रांसीसी और इटालियन साहित्य से प्रचुर सहायता लेना बंद कर दिया, बल्कि यह सहायता तो वह अंत तक लेता रहा। इसका अर्थ केवल यह है कि मात्र अनुकरण करना बंद कर वह अब स्वतंत्र हो गया और जो विषय दूसरों से ग्रहण किये गये है उनका क्या और कैसा उपयोग करना चाहिए इस विषय मे भी वह अब पूर्णरूपेण स्वयं अपने पर ही विश्वास करने लगा। इस अंतिम काल मे ही उसने अनेक छोटी-छोटी कविताओं के अतिरिक्त 'कैण्टरबरी टेल्स' की रचना की जो उसकी सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्रतिनिधि-रचना है।

११. कैण्टरबरी टेल्स——यह कुछ ऐसी कथाओं का संग्रह है जो एक सामान्य योजना से बँधी हुई हैं, और यही योजना इन कथाओं को परस्पर संबद्ध करती है। इन कथाओं मे से कुछ तो निश्चय ही पहले लिखी जा चुकी थीं जब इस योजना की कल्पना भी नहीं की गयी थी; परंतु पूरी 'कैण्टरबरी टेल्स' को चॉसर के तीसरे काल मे इसलिए रखा जाता है क्योंकि उनमे से अधिकांश इसी समय लिखी गयी तथा इसी समय कवि के मस्तिष्क मे पूरी योजना का रूप भी निश्चित हुआ। पुस्तक के नाम की व्याख्या इसी योजना के द्वारा हो सकती है, जो इस प्रकार है। कुछ तीर्थ यात्री प्रस्थान से पहले वाली शाम को साउथवर्क मे टैबर्ड नामक सराय मे एकत्र होते है जहाँ भाग्यवश चॉसर खुद भी ठहरा हुआ था, क्योंकि उसे भी उसी काम से जाना था इसलिए वह आसानी से उस दल मे शामिल होना स्वीकार कर लेता है। चौदहवीं शताब्दी मे तीर्थयात्राएँ बड़ी लोकप्रिय थी तथा लोग इसी प्रकार प्रायः दल बना कर यात्रा पर जाया करते थे—कुछ तो रास्ते में लोगों का साथ हो जाय इसलिये और कुछ राह के खतरों के कारण। साथ ही यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इन दलों के तीर्थ-यात्रियोंका मुख्य भाग शुद्ध रूप से धार्मिक कभी नहीं होता था। कभी-कभी तीर्थयात्री रोम और यरूशलम तक की यात्रा करते थे; चॉसर की वाइफ आव बाथ खुद इन स्थानों की यात्रा कर चुकी है। परन्तु देश के भीतर के प्रिय स्थानों मे एक था कैण्टरबरी मे स्थित सेण्ट टामस ए बेकेट का देवालय जहाँ उनकी हत्या की गयी थी। ये तीर्थयात्री वहीं जा रहे थे। टैबर्ड का विनोद-प्रिय रखवाला, हैरी बेली, उनका हार्दिक स्वागत करता है और उन्हें अपना सर्वोत्तम 'सपर' (अर्थात् रात्रि का भोजन) खाने को देता है जिसमे बढ़िया भोजन और तेज शराब दोनों ही है। जब तीर्थयात्री खा-पीकर संतुष्ट हो जाते है तब वह यह प्रस्ताव रखता है कि यात्रा की थकान तथा एकरसता को दूर रखने के लिए दल का प्रत्येक यात्री दो कहानियाँ

कैण्टरबरी जाते समय और दो लौटते समय कहे और वह स्वयं इस बात का निर्णय करे कि किसने सबसे अच्छी कहानी कही। फिर जो इस प्रतियोगिता में प्रथम रहे उसे सब लोग लौटकर टैबर्ड सराय में दावत दें। इस सुझाव की सभी लोगों ने प्रशसा की और ये 'कैण्टरबरी टेल्स' उसी का परिणाम है।

'प्रोलॉग' अर्थात आमुख में यह सब समझाने के उपरात चॉसर अपने सहयात्रियों का परिचय कराता है। यद्यपि यात्रियो का यह दल उसी वर्ग तक सीमित है जिसे हम साधारणतया मध्यम वर्ग कह सकते है, फिर भी वह बहुत बड़ा है और उसमे समाज के प्रायः सभी वर्गों के प्रतिनिधि शामिल है। 'नाइट', 'स्क्वायर' और 'योमैन' सैनिक व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करते है; धार्मिक व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करने वाले कई लोग हैं, यथा, 'प्रायरेस' (स्त्रियों के मठ की अधिपति), 'नन' (भिक्षुणी) जो 'प्रायरेस' की सेक्रेटरी है, 'माँक' (मठाधीश), 'फ़ायर' (पर्यटक साधु), 'समनर' (धार्मिक न्यायालयों द्वारा अपराधी घोषित किये जाने वाले व्यक्तियो के लिये सम्मन निकालने वाला), 'पार्डनर' (क्षमा-पत्रों का विक्रेता), एक दीन पादरी तथा आक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय का एक 'क्लर्क' जो धर्मशास्त्र का विद्यार्थी है। इनके अतिरिक्त एक वकील और एक डाक्टर भी है। फिर सामाजिक सीढ़ी मे क्रमशः नीचे उतरते हुए अनेक विविध चरित्र है जिनका ठीक-ठीक वर्गीकरण करना सभव नही है, यथा, 'फ्रैंकलिन' (जिसको भूमि नि शुल्क मिली हुई हो), व्यापारी , नाविक, 'मिलर' (आटा पीसने वाला), रसोइया, 'मैसिपुल' (कालेजों मे भोजन-व्यवस्था करने वाला), बिसाती, बढ़ई, जुलाहा, 'रीव' (दूसरो की जमीन-जायदाद का प्रबध करने वाला, मुख्तार), रगसाज, रगीन चित्रमय पर्दे बनाने वाला, हलवाहा (जो दीन पादरी का भाई है), तथा पश्चिम की ओर की एक सपन्न बुनकर महिला जिसका नाम है एलिसन और जो 'वाइफ आव बाथ' के रूप मे अधिक प्रसिद्ध है। इन चरित्रो मे जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है उनके चित्रण में चॉसर की प्रतिभा अपने सर्वोच्च रूप में प्रदर्शित हुई है तथा पैनी अतर्दृष्टि, निश्चयात्मक सूक्ष्मचित्रण, सुन्दर विवेकबुद्धि तथा मार्मिक हास्य की दृष्टि से यह 'प्रोलॉग' अत्यन्त उत्तम रचना है। सभी चरित्र बडे यथार्थ और वैयक्तिक है परतु साथ ही साथ वे अपने अपने वर्ग के इतने सच्चे और पूर्ण प्रतिनिधि है कि उनकी इस विशेषता के कारण चॉसर ने अपने समय के इग्लैण्ड का—मनुष्यो और उनके तौर-तरीके दोनों का—जो चित्र खीचा है उसका महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक तीर्थयात्री को चार कहानियाँ कहनी थी, अतः कवि की योजना बड़ी विशाल थी। परतु वह इस योजना का केवल एक छोटा सा भाग ही पूर्ण कर सका क्योकि अपने वर्तमान रूप मे इस काव्य में मात्र चोबीस कहानियाँ ही है। फिर भी अपने वर्तमान रूप मे उसके द्वारा प्राप्त होने वाले आनन्द में आश्चर्यजनक विविधता है, क्योंकि चॉसर ने सदैव नाटकीय औचित्य को ही अपना निर्देशक सिद्धांत माना है। इसी कारण जिस प्रकार कहानियाँ कहने वाले एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है, उसी प्रकार उनके द्वारा कही गयी कहानियों में भी भिन्नता है। उदाहरणस्वरूप, जहाँ एक ओर 'नाइट' का क्षात्रधर्म विषयक वीर रस से पूर्ण काव्य और 'क्लर्क' द्वारा कही गयी धैर्यवान् ग्रिसेल्डा की पतिभक्ति की कथा है, वहाँ दूसरी ओर अपनी विलक्षण भिन्नता से दोनो के बीच सतुलन-सा स्थापित करती हुई, 'मिलर' और 'रीव' की अशिष्ट व भोडे हास्य से पूर्ण कहानियाँ है। ध्यान देने की बात यह है कि कोई भी कहानी विषय-वस्तु की दृष्टि से मौलिक नही है। चॉसर ने अपनी सामग्री विभिन्न स्थानों से ली है। उसके अध्ययन का क्षेत्र बड़ा विशाल था। फिर इधर-उधर, पचासो जगह से मिली हुई कौन सी चीज आगे कब काम की सिद्ध होगी इसके लिए उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। यह तथ्य इस बात से प्रकट होता है कि उसने पाडित्यपूर्ण एव लोकप्रिय तथा लैटिन, फ्रांसीसी एव इटालियन सभी प्रकार के साहित्य की सहायता ली है। परन्तु उसने जो कुछ भी सामग्री दूसरे स्थानो से ली है उसे पूर्णरूपेण अपना बना लिया है। आज भी उसकी गणना अग्रेजी के सबसे मनोहर और मनोरजक पद्य-कथाकारों मे होती है।

कथाकार के रूप में उसकी सर्वोत्तम रचना 'नाइट्स टेल' है। यह कथा नाटकीय औचित्य के नियमानुसार विषयवस्तु की दृष्टि से वीर रसपूर्ण, भावो की दृष्टि से क्षात्रधर्म से ओतप्रोत और भावना में रोमाण्टिक है। बोकैशियो की 'टिसीड' पर आधारित इस कविता मे राजवश के दो युवा चचेरे भाइयो पैलेमन और आर्काइट की कथा है। जब ड्यूक थीसियस उनके नगर थीबिस पर आक्रमण करता है तो वे उसके द्वारा बदी बना लिये जाते है और उसके महल की एक मीनार मे कैद कर दिये जाते है। मई की एक सुबह सयोगवश उन्हें अपनी खिड़की से ड्यूक की पत्नी की सुन्दर बहन एमिली के दर्शन हो जाते है, जो नीचे बाग मे टहल रही थी। इस पर एक क्षण में ही उनकी जीवन भर की मित्रता का अन्त हो जाता है और वे प्रेम में एक दूसरे के प्रतिद्वद्वी बन जाते है। आर्काइट के उद्धार का मूल्य शीघ्र ही चुका

दिया जाता है, परन्तु एमिली का विछोह सह पा सकने में अपने को असमर्थ पाकर वह वेष बदलकर एथेंस लौट आता है और ड्यूक के यहाँ नौकरी कर लेता है। फिर, कई वर्ष उपरात पैलेमन भी कैद से निकल भागता है। दोनों भाई द्वन्द्व-युद्ध के लिए इकट्ठे होते है परतु शिकार के लिए बाहर निकले हुए ड्यूक और उसके दल के अचानक उपस्थित हो जाने से वे आश्चर्य मे पड़ जाते है और उनका द्वद्व -युद्ध बद हो जाता है। थीसियस दोनों को उसी समय मृत्यु-दण्ड सुना देता है परन्तु साथ ही स्त्रियों के प्रार्थना करने पर वह द्रवित हो जाता है और उन्हे इस शर्त पर छोड देता है कि दोनों सौ-सौ सरदारो को इकट्ठा करें और फिर एक बडे युद्ध मे मामले का फैसला हो। इस युद्ध मे आर्काइट मारा जाता है और एमिलो तथा पैलेमन के विवाह के साथ कहानी का अत हो जाता है। यह सुन्दर कथा स्वय तो इतनी कलात्मक है ही, परतु इसका महत्त्व इस बात से और भी बढ़ जाता है कि यह उस रोमाण्टिक भावना का मूर्त रूप है जो चॉसर की युवावस्था में राज-दरबार मे बडी ही प्रबल थी। नाम से तो यह यूनान के वीरतापूर्ण युग की कथा है, परतु हम जिसे ऐतिहासिक सत्य कहते है उसका उस समय अस्तित्त्व तक न था। इसी कारण इसके पात्र, भाव और वातावरण भी सभी प्राचीन यूनानी इति-हास से सबधित न होकर पूर्णतया मध्ययुगीन है। वास्तव मे यह शीघ्रता से समाप्त हो रही मध्ययुगीन सभ्यता का एक आदर्शवादी चित्र है तथा क्षात्रधर्म की भावना से ओतप्रोत है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका अध्ययन करते समय हमे जिन बातो का विशेष ध्यान रखना है वे है इसका युद्ध-वर्णन, मध्ययुगीन सरदारों ('नाइट्स') के नैतिक सिद्धातों का प्रस्तुतीकरण तथा वह स्पष्टता जो मध्ययुग मे प्रचलित प्रेम विषयक मत के चित्रण मे प्रदर्शित हुई है।

१२. चॉसर के काव्य की सामान्य विशेषताएँ––चॉसर को किसी भी अर्थ में जनता का कवि नही कहा जा सकता। वह एक दरबारी कवि था और उसने शिक्षित, सभ्य पाठकों तथा सस्कृत समाज के लिए ही अपनी रचनाएँ लिखी है। उसके काव्य को उस युग को महान् जीवत समस्याओं से कभी कोई प्रेरणा नही मिली। उसने कुछ चुने हुए पाठको के लिए ही अपने काव्य की रचना की है जो यह चाहते थे कि प्रहसन उन्हें आनदित करे, करुण रस उनके हृदय को स्पर्श करे और रोमाण्टिक भाव उनको द्रवित करे, परतु दूसरी ओर वे यह कभी नही चाहते थे कि प्लेग, दुर्भिक्ष और जनता के असंतोष की कष्टदायक याद दिलाकर कोई उनके सुखमय जीवन मे विघ्न डाले। इसी कारण यद्यपि उसकी रचनाओं में हमे

तत्कालीन जीवन के दर्शन होते है, परंतु उसका अधकारमय पक्ष कही भी परिलक्षित नही होता। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि किसान-विद्रोह का प्रसग उसके सम्पूर्ण साहित्य मे केवल एक बार मुर्गे और लोमड़ी की कहानी 'नन्स प्रीस्टेस टेल' मे आया है, और यह प्रसग भी गभीर न होकर हास्यजनक ही है। यह सत्य है कि वह अपने चारों ओर फैले हुए धार्मिक भ्रष्टाचार का अनुभव करता था तथा विक्लिफ के कुछ विचारों के साथ सामान्यत. उसकी सहानुभूति भी अवश्य थी। यह बात न केवल अयोग्य पादरियों के उन व्यग्यात्मक चित्रों से स्पष्ट है, जिनका उल्लेख पहले ही हो चुका है, बल्कि उनके साथ ही साथ दीन पादरी का जो सुन्दर चित्र खीचा गया है उससे भी। परन्तु सामान्यतया उसने महत्त्वपूर्ण समस्याओं को बिल्कुल छोड दिया; उन पर विचार नही किया है। बड़ी निश्चिन्त, आनदी तथा सहिष्णु प्रकृति का व्यक्ति था और उसके स्वभाव मे सुधारक का लेशमात्र भी नही था। कभी-कभी उसके काव्य में गभीरता के भी दर्शन हो जाते है, उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पक्तियो में—

> "That thee is sent receyve in buxomnesse
> The wrastling of this world asketh a fal;
> Here is no hoom, here is but wildernesse.
> Forth, pilgrim, forth ! forth, best out of they stal !
> Look upon hye, and thonke God of al."[१]

परतु यह उसका प्रतिनिधि स्वर नही है। उसके काव्य का प्रतिनिधि स्वर है इस जीवन की अच्छी वस्तुओं मे ही निष्कपट आनद की अनुभूति। इस प्रकार अपने युग से चॉसर का जो सबध था वह उसके स्वभाव के द्वारा स्पष्ट हो जाता है। तत्कालीन धार्मिक अथवा सामाजिक आदोलनों से वह अधिक प्रभावित नही हुआ,

१. "ईश्वर ने जो तुझे दिया है, उसे ग्रहण कर प्रसन्न हो तू,
सांसारिक संघर्ष यहाँ पर, इसमें पतन अवश्यम्भावी;
यहाँ नहीं तेरा घर है रे ! यह तो बस निर्जन अरण्य है।
ऐ यात्री ! ऐ पशु ! मत रुक, बस आगे-आगे बढ़ता चल,
ईश्वर का ही कर विचार और देख उसी को।"

परतु इटालियन मानवतावाद का प्रभाव उसके ऊपर अत्यधिक पड़ा। इस वाद की स्वतत्र पार्थिव भावना की अभिव्यक्ति अग्रेजी काव्य मे सर्वप्रथम उसी के द्वारा हुई। यदि विक्लिफ "धर्म-सुधार (रिफार्मेशन) का शुक्र" था तो चॉसर को "पुनर्जागरण (रिनेसॉ) का शुक्र" कहा जा सकता है।

चॉसर की कविता का एक विशेष मनमोहक गुण है उसका अभिनव प्राकृतिक वातावरण। यह सत्य है कि उसने देहात का जैसा वर्णन किया है वह प्रायः उस समय की रूढ़ शैली में है, तथा उसने वाटिकाओ के जो दृश्य खीचे या वसत के पुष्पों का जो उल्लेख किया है वह भी कुछ सीमा तक परपरा के निर्वाह के लिए ही है। परतु प्रकृति और विशेषत. वसत के प्रति उसका अनुराग यथार्थ था और जब कभी वह इनका वर्णन करता है, यथा 'प्रोलॉग' और 'नाइट्स टेल' में, तो उसका व्यक्तिगत स्वर स्पष्ट सुनाई पड़ता है।

अग्रेजी भाषा के इतिहास मे चॉसर का जो महत्त्व है उसके विषय मे पहले ही कह चुके है। उसकी चौदहवी शताब्दी वाली (अथवा 'मध्यवर्त्ती'–'मिडिल इगलिश') अग्रेजी पहले तो बडी कठिन लगती है परतु उसका पूर्णज्ञान प्राप्त करने के लिए थोड़े समय और दृढाग्रह की ही आवश्यकता है। फिर तो एक बार ज्ञान हो जाने पर हमें उसकी भाषा के लालित्य तथा उसके छदो की मधुरता मे जो आनद प्राप्त होगा उससे हमारा सारा परिश्रम व समय सार्थक हो जायगा। इसके साथ ही यह भी प्रकट हो जायेगा कि उसने प्राचीन अग्रेजी काव्य की अनियमित पक्तियों तथा अनुप्रास का, जिसे वह मजाक मे "रिम, रैम, राफ" कहा करता था, पूर्ण परित्याग कर दिया और उसके स्थान पर नियमित छद एव तुकात की फ्रासीसी शैली को अपनाया। उसी के प्रभाव के कारण अग्रेजी काव्य से अनुप्रास शैली का धीरे-धीरे अन्त हो गया और उसका स्थान तुकात ने ले लिया।

१३. चॉसर-युग के अन्य कवि––काव्य-रचना में चॉसर का प्रमुख प्रतिद्वद्वी था जॉन गोअर (१३३२?––१४०९)। दोनों कवि बडे पुराने मित्र थे और एक दूसरे का सम्मान करते थे। इसका पता इस बात से चलता है कि चॉसर ने अपनी 'ट्रायलस ऐण्ड क्रिसीड' कविता गोअर को समर्पित की है जिसे उसने "सदाचारी गोअर" कहा है; दूसरी ओर गोअर ने अपने 'कन्फ़ेशियो अमैण्टिस' के अन्त में चॉसर का उल्लेख बड़े उत्साहपूर्वक किया है। परतु आगे चलकर उनमे ईर्ष्या और वैमनस्य का भाव उत्पन्न हो गया। गोअर बड़ा परिश्रमी और सदुद्देश्यपूर्ण लेखक था, तथा उसका साहित्य बहुत ही विशाल और विद्वत्तापूर्ण है। उसने

अपने साहित्य की रचना बडी सावधानी से की है। परंतु उसमें चॉसर की प्रफुल्लता तथा मनोहरता का लेशमात्र भी न था, और उसकी रचनाएँ अधिकांश में बड़ी नीरस हैं। जहाँ चॉसर ने प्रारभ में ही अग्रेजी भाषा की सभावनाओं को समझ लिया था, वहाँ इसके विपरीत वह यही निश्चय न कर सका कि कौन सी भाषा उसके काव्य के लिए सबसे उपयुक्त व उत्तम रहेगी। उसकी तीन लबी कविताओं में से एक 'स्पेकुलम मेडिटैण्टिस' फ्रांसीसी में, दूसरी 'वॉक्स क्लेमैण्टिस' लैटिन में, तथा तीसरी 'कनफेशियो अमैण्टिस' अग्रेजी में है। इस तीसरी रचना में ही चॉसर से उसकी तुलना करने का प्रश्न सबसे स्पष्ट रूप से उठता है, क्योकि यह उन दोषों को समझाने के लिए लिखी गयी कहानियों का सग्रह है जो 'सप्त पापों'[1] के फलस्वरूप उत्पन्न होते है। दोनों कवियों का स्वभाव तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण अत्यन्त भिन्न था। गोअर ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति के प्रति बडा विषादपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया। उसकी 'वॉक्स क्लेमैण्टिस' अधिकांश मे वाट टाइलर के विद्रोह से संबंधित है तथा जगह-जगह उसने पादरियो की कठोर आलोचना की है। इतना होते हुए भी उसका दृष्टिकोण कठोर रूढिवादी का ही था तथा विक्लिफ के उपदेशों और उसके अनुयायी 'लौलार्डो' के प्रति चॉसर की ही तरह उसकी भी सहानुभूति न थी।

यद्यपि चॉसर और गोअर में तीव्र व्यक्तिगत मतभेद था, तथापि वे दोनों ही दरबारी कवि थे। इसके विपरीत एक तीसरा लेखक भी इस युग में था जो चॉसर और गोअर दोनों से बिल्कुल ही भिन्न था। विलियम लैंगलैंड (१३३०-१४००) यथार्थ रूप मे जनता का कवि था। उसके व्यक्तिगत जीवन के विषय मे हमारा ज्ञान बहुत कम है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक फ़्रैंकलिन' (अर्थात् जिसे भूमि नि शुल्क प्रदान की गयी हो) का पुत्र था तथा मैलवर्न के आस-पास कही उसका जन्म हुआ था। उसका जीवन निर्धनता एवं सघर्ष से पूर्ण था। हाँ, उसके चरित्र का स्पष्ट ज्ञान उसकी रचना 'दि विजन आव विलियम कन्सर्निंग पियर्स दि प्लाउमैन' के द्वारा अवश्य होता है। यह एक विशाल दृष्टात-रूपक

१. ये सप्त पाप हैं—काम (Lechery), क्रोध (Anger), मद अथवा अहंकार (Pride), लोभ (Covetousness), ईर्ष्या अथवा मत्सर (Envy) अतिभक्षण (Gluttony) और आलस्य (Sloth)।—अनु०

है जो अपने वर्तमान रूप में १५,००० पक्तियों से भी अधिक लबा है। यह 'विज़न' एक कलापूर्ण साहित्य-रचना तो नही मानी जा सकती क्योंकि यह एक असगत अस्तव्यस्त और क्रमहीन रचना है, परतु इसके ओज व नैतिक गांभीर्य के कारण इसके कला सबधी समस्त दोष छिप जाते है। स्वप्नों की परपरागत युक्ति का अवलबन लेकर कवि ने तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक दोषों की साहसपूर्ण आलोचना की है। पादरियो के दभ और लोभ, तथा ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन व्यक्तियो के अत्याचार व लोलुपता को उसने अपनी कठोर आलोचना का विषय बनाया। यदि हम तत्कालीन समाज के अधकारमय पक्ष को लेकर चॉसर द्वारा खीचे गये चौदहवी शताब्दी के इग्लैण्ड के चित्र को पूरा करना चाहते है तो हमे इस 'विज़न' की ही सहायता लेनी होगी। लैगलैग की भावना आश्चर्यजनक रूप से प्यूरिटन तथा प्रजातात्रिक थी। यह अवश्य है कि वह न तो विक्लिफ के ही समान था, और न राजनीतिक क्षेत्र मे वह क्रातिवादी ही था। परतु साधारण जनता के कष्टो ने उसे अत्यधिक द्रवित किया था और उसके हितो की रक्षा उसने बड़े उत्साहपूर्वक की। उसने इसके लिए बड़ा प्रयत्न किया कि इग्लैण्ड मे धर्म ईश्वरी सत्य की सादगी और शुद्धता मे पुन. पूर्ण हो जाय। क्योंकि यह काव्य दरबारियों के लिए नही बल्कि जनता के लिए लिखा गया था इसलिए इसकी भाषा और शैली चॉसर की भाषा-शैली से कही अधिक असस्कृत तथा प्राचीन है। यही बात सपूर्ण काव्य के विषय में भी सत्य है। इसकी भाषा मे दक्षिणी और मध्यदेशीय अग्रेजी का मिश्रण है, तथा इसमे ऐंग्लो-सैक्सन काव्य की अनुप्रास-शैली का ही अनुसरण किया गया है। इस दृष्टि से यह अतिम महत्त्वपूर्ण काव्य है। यह बात निम्नाकित प्रथम दो पक्तियों से ही स्पष्ट हो जाती है—

"In a somer season when soft was the sonne
I shope me in shroudes as I a shepe were"[1]

चौदहवी शताब्दी के एक और कवि का उल्लेख करना आवश्यक है। स्कॉटलैण्ड-निवासी जॉन बारबर (१३१६-९५) कुछ समय तक एबर्डीन का आर्च-

१. गर्मी की ऋतु में, जब सूर्य में प्रखरता नहीं आ पायी थी, मैंने गड़रिये के समान वस्त्र धारण किये।—ले०

डीकन था। स्कॉटिश काव्य के वास्तविक जन्मदाता के रूप मे साहित्य मे उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसकी प्रसिद्धि का आधार उसकी लबी कविता 'दि ब्रूस' है जिसमें राबर्ट ब्रूस के महान् कार्यो का अत्यन्त ओजपूर्ण वर्णन किया गया है।

१४. चॉसर-युग का गद्य——चॉसर-युग मे गद्य-रचना बहुत कम हुई। चॉसर ने स्वय कुछ रचनाएँ गद्य में लिखी थी, उदाहरणस्वरूप बीथियस का अनुवाद तथा 'ट्रीटीज ऑन दि ऐस्ट्रोलेब'। परतु ये रचनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण नही है। विक्लिफ़ की बाइबिल ओजपूर्ण, अकृत्रिम अग्रेजी का सुन्दर उदाहरण है। इसके अतिरिक्त उसने अनेक पैम्फ्लेट भी लिखे। उस समय जब केवल लैटिन भाषा को ही शास्त्रीय वादविवाद के उपयुक्त समझा जाता था, उसके इन विवादास्पद पैम्फ्लेटो ने लोगों को देशी भाषा की सामर्थ्य का ज्ञान कराने मे बड़ी सहायता की। परतु इस युग की महान् गद्य-रचना वह अपूर्व पुस्तक है जो 'दि ट्रैवेल्स आव सर जॉन मॉनडेविल' के नाम से प्रसिद्ध है। जैसा पुस्तक की प्रस्तावना मे स्पष्ट कहा गया है, इस मॉनडेविल का जन्म सेण्ट अलबान्स मे हुआ था और वह १३२२ मे अपनी यात्रा पर निकला। पवित्र भूमि फिलस्तीन तथा सुदूर पूर्व की वर्षो की यात्रा मे उसने जो कुछ सुना और देखा उसका सविस्तार वर्णन करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है। परन्तु अब यह सिद्ध हो चुका है कि इस नाम से किसी व्यक्ति का कभी कोई अस्तित्व भी न था, तथा यह पुस्तक जीन द बूर्ज़ान नामक एक फ्रासीसी लेखक की रचना का अनुवाद मात्र है। साथ ही यह भी निश्चित हो चुका है कि यह किसी वास्तविक यात्रा का वर्णन नही बल्कि प्लिनी, फ़ायर ओडरिक, मार्कोपोलो तथा अद्भुत घटनाओ एव वस्तुओं के अन्य लेखकों की काल्पनिक कथाओ का सग्रहमात्र है। इस काल्पनिक यात्री मॉनडेविल ने जिन अद्भुत वस्तुओ का वर्णन किया है, उनमे से कुछ इस प्रकार है——अपने पजों मे हाथी पकड़कर उड सकने वाली चिड़िया, 'फीनिक्स' (प्राचीन मिस्र मे पूजी जाने वाली एक काल्पनिक चिड़िया जो हर ५०० वर्ष बाद अपने को जलाकर फिर से जीवित हो जाती थी), रोता हुआ मगर, एक घाटी जिसमे राक्षस पतगों की भाँति कूदते थे, तथा वज्र की चट्टानें जो पास से निकलते हुए जहाजों से कीलें निकाल लेती थी। इन बातों से इतना तो स्पष्ट है कि मॉनडेविल की पुस्तक कम से कम मनोरजक अवश्य है। फिर, यद्यपि यह केवल अनुवाद मात्र है, तथापि इसमें सदेह नही कि यह अंग्रेजी की सर्वप्रथम श्रेष्ठ गद्य-रचना है।

चॉसर-युगीन साहित्य की सारिणी

एडवर्ड तृतीय, १३२७-१३७७.	जॉन बारबर का जन्म, १३१६ ?
	विलियम लैंगलैंड का जन्म, १३३२ ?
फ्रांस के साथ शतवर्षीय युद्ध का प्रारंभ १३३८.	
	चॉसर का जन्म, १३४० ?
क्रेसी का युद्ध, १३४६.	
'ब्लैक डेथ', १३४८-४९.	
प्वायटियर्स का युद्ध, १३५६.	
	'दि रोमांस आव दि रोज', १३६०-६५.
	'बुक आव दि डचेज' १३६९.
	लैंगलैंड की 'विजन', १३६२-९०.
	बारबर की 'ब्रूस', १३७५.
रिचर्ड द्वितीय, १३७७-९९.	
	'स्पेकुलम मेडीटैण्टिस', १३७८ ?
	विक्लिफ की बाइबिल, १३८०.
	'ट्रायलस ऐण्ड क्रिसीड', १३८०-८३.
वाट टाइलर का विद्रोह, १३८१.	
विक्लिफ के विचारों की सरकारी रूप से निंदा, १३८२.	'वॉक्स क्लेमैण्टिस', १३८२ ?
	'हाउस आव फेम', १३८३-८४.
	'लीजेण्ड आव गुड वीमेन, १३८४-८५.
	'कैण्टरबरी टेल्स', १३८५ से आगे।
	'कनफ़ेशियो अमैण्टिस', १३९३ ?
हेनरी चतुर्थ का सिंहासनारोहण, १३९९.	
	चॉसर की मृत्यु, १४००.
	लैंगलैंड की मृत्यु, १४००.
	मॉनडेविल की 'ट्रैवेल्स', १४००.
	गोअर की मृत्यु, १४०८.

अध्याय ४

चॉसर से टॉटेल की 'मिसलैनी' तक (१४००-१५५७)

१५. पंद्रहवीं शताब्दी––चॉसर की कविता से अंग्रेजी साहित्य का बड़ा शानदार प्रारंभ हुआ था, परंतु यह केवल प्रारंभ होकर ही रह गया। चॉसर की मृत्यु के उपरांत हम अंग्रेजी साहित्य के इतिहास के एक लम्बे अनुर्वर युग में प्रवेश करते हैं। पंद्रहवी शताब्दी की अनुर्वरता के कारण खोजते समय हमें यह बात तो ध्यान में रखनी ही होगी कि जब तक महान् प्रतिभाशाली व्यक्ति न उत्पन्न होंगे तब तक महान् रचनाओं की सृष्टि किसी भी परिस्थिति में संभव नहीं है, और हो सकता है कि चॉसर के उपरांत सौ वर्ष से भी अधिक समय तक महान् रचनाओं का जो अभाव रहा वह साहित्यिक प्रतिभा के अभाव का ही परिणाम हो। यह कदाचित् ध्यान देने योग्य बात है कि इंग्लैण्ड में पंद्रहवीं शताब्दी में किसी भी क्षेत्र मे महान् व्यक्ति नहीं हुए। परंतु इसके साथ ही हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि प्रतिभा होने पर भी उसकी अभिव्यक्ति अनुकूल परिस्थितियों पर निर्भर होती है, और पंद्रहवीं शताब्दी में परिस्थितियाँ अनुकूल न होकर बिल्कुल प्रतिकूल थीं। विक्लिफ़ ने जो इतना परिश्रम किया उससे धर्म बिल्कुल अप्रभावित रहा और उसका निरंतर ह्रास होता रहा। सुधार के लिए जितने भी प्रयत्न किये गये उनका कठोरतापूर्वक दमन कर दिया गया। इस प्रकार विचारों के स्वतंत्र आदान-प्रदान में बाधा पड़ी। राजनीतिक संघर्षों के कारण सारा देश त्रस्त था। इन सघर्षों की पराकाष्ठा यार्क और लंकास्टर वंशों के बीच प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए हुए तीस वर्षीय युद्ध (१४५५-८६) में हुई। गुलाबों के इन युद्धों[1] में बहुत

१. दोनों दलों द्वारा भिन्न रंगों–लाल और सफेद–के गुलाब प्रयुक्त किये जाने के कारण इस तीस वर्षीय युद्ध को 'गुलाबों का युद्ध' (war of the Roses) कहा गया है।––अनु०

से बड़े-बड़े सरदार मारे गये तथा प्राचीन सामंतवादी व्यवस्था की जड़ें हिल गयी। शिक्षा की जो शोचनीय दशा थी उस पर भी जोर देना आवश्यक है। विश्वविद्यालयों में जो बौद्धिक क्रियाशीलता अब भी देखने में आती थी वह मध्ययुगीन दर्शन के नीरस सिद्धांतों के ऊपर अनवरत चल रहे निष्फल विवाद में व्यर्थ जा रही थी। ज्ञान के इन केन्द्रों के बाहर और विशेष रूप से शीघ्रता से उन्नति कर रहे मध्यम वर्गों में एक प्रकार की तुच्छ धन-लिप्सा की भावना का प्रसार हो रहा था जो सभी प्रकार के बौद्धिक कार्यों की शत्रु थी। इस प्रकार इग्लैण्ड मे पद्रहवीं शताब्दी में साहित्यिक प्रतिभा को प्रेरणा देने वाली तो कोई चीज नही थी, परतु उसके दमन के लिए बहुत-कुछ था। यह अवश्य है कि जैसा हम अभी देखेगे, शताब्दी के समाप्त होने के समय नवजीवन के लक्षण उत्तरोत्तर स्पष्ट होने लगे। परंतु सुविधा की दृष्टि से हम इन लक्षणों का विचार तब तक के लिए स्थगित रखेगे जब तक हम सोलहवी शताब्दी के प्रारंभिक काल के पुनरुज्जीवन तक नही आ जाते।

१६. पंद्रहवीं शताब्दी की कविता--पद्रहवीं शताब्दी के पद्य के निम्न स्तर तथा उसकी सामान्य निर्जीवता का आभास इसी बात से हो जाता है कि उसका अधिकांश अनुकरणात्मक है। लगभग सभी कवियों ने चॉसर के पद-चिन्हो का अनुसरण करने का प्रयत्न किया और उसकी प्रतिभा से रहित केवल उसकी शैली और भावो की नकल उतारते रहे। यदा कदा वास्तविक बौद्धिक सहानुभूति तथा यथार्थ प्रतिभा के कारण ऐसी रचनाएँ भी लिखी गयी, जो स्वयं विशिष्ट गुणों से सम्पन्न है, उदाहरण के लिए 'दि फ्लावर ऐण्ड दि लीफ' जो बहुत दिनो तक चॉसर की ही कृति समझी जाती रही, परन्तु अब उसी के सम्प्रदाय के किसी अनाम लेखक की रचना कही जाती है। परन्तु, जैसा कला मे सभी अनुकरणात्मक वस्तुओं के साथ होता है, सामान्यतः इन रचनाओ का स्थायी महत्त्व बहुत कम है। चॉसर के इन बहुसख्यक अनुयायियों मे सबसे अधिक प्रसिद्ध है टॉमस ऑक्लीव अथवा हॉक्लीव (१३७०?—१४५०?) तथा जॉन लिडगेट (१३७०?-१४५१)। इन दोनो का साहित्य बड़ा विशाल है। हॉक्लीव ने चॉसर के सात पंक्तियो वाले पद्यांश में (जिसमें तुक का विधान इस प्रकार है—क ख क ख ग ग) 'दि गवर्नेल आव प्रिसेज़' नामक एक लंबी कविता की रचना की जिसके आमुख में उसने स्वयं अपने बारे में बहुत कुछ लिखा है और अपने गुरु चॉसर की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए उसकी प्रशंसा गायी है। उसकी कम महत्त्वपूर्ण रचनाओं में से एक है 'मदर आव गॉड' जो पहले चॉसर की रचनाओं के साथ ही छापी जाती थी। लिड-

गेट ने, जो बरी सेण्ट एडमंड्स का एक बेनिडिक्ट-पंथी 'मॉन्क' था, पद्य-रचना अत्यधिक मात्रा में की है। 'स्टोरी आव थीबिस' (जो एक नवीन 'कैण्टरबरी टेल्स' के रूप मे लिखी गयी है), 'ट्राय बुक' तथा 'फाल्स आव प्रिसेज़' उसकी अपेक्षाकृत लम्बी रचनाएँ है। इनमे से अतिम कृति बोकैशियो की एक लैटिन रचना के एक फ्रांसीसी अनुवाद पर आधारित है।

पद्रहवी शताब्दी की सर्वोत्तम कविता स्काटलैण्ड मे लिखी गयी। यद्यपि वहाँ भी चॉसर का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था, फिर भी मौलिकता की भावना दक्षिण की अपेक्षा कही अधिक प्रबल थी। स्काटलैण्ड के राजा जेम्स प्रथम (१३९४-१४३७) ने ड्यूक ऑव सॉमरसेट की पुत्री लेडी जेन ब्यूफोर्ट, जो बाद मे उसकी रानी बनी, के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिए 'दि किग्स क्वेअर' ('क्वायर', अर्थात् पुस्तक) नामक एक लम्बी कविता लिखी। इस कविता में मौलिकता तो अधिक नही है परंतु व्यक्तिगत अनुभूति की यथार्थता के कारण इसके पद्य मे सजीवता बहुत है। यह चॉसर के सात पक्तियों वाले पद्याश में लिखी गयी है जिसका अभी-अभी उल्लेख हो चुका है, तथा जिसको इसी कारण प्राय "राजकीय छद" के नाम से पुकारा जाता है। विलियम डनबर (१४६५?–१५३०?), जो चॉसर और स्पेन्सर के बीच का महानतम ब्रिटिश कवि था, यह व्यक्तिगत गुण अत्यधिक स्पष्ट है। इंगलैण्ड के राजा हेनरी सप्तम की पुत्री मारगरेट से स्काटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ के विवाह की स्मृति में रचित उसका सुन्दर दृष्टांत-रूपक 'दि थिसिल ऐण्ड दि रोज' बिल्कुल चॉसर की प्रारभिक कविता की शैली मे है। परंतु उसकी अनेक उत्तरकालीन रचनाओ मे, उदाहरणार्थ उसकी व्यग्यात्मक गाथाओ तथा 'डान्स आव दि सेविन डेडली सिन्स' मे, ओज, असकुचित हास्य तथा सरल अकृत्रिम करुणा का ऐसा सम्मिश्रण है जो पूर्ण रूप से कवि के चरित्र तथा उसकी मातृभूमि से ही सबधित है। इस सच्ची स्काटिश भावना का स्वर रॉबर्ट हेनरीसन (१४३०?-१५०६) में भी स्पष्ट सुनाई पड़ता है। हेनरीसन ने अपने 'टेस्टामेण्ट ऑव क्रिसीड' मे तो चॉसर के आदर्श का ही अनुसरण किया, परन्तु उसकी 'रॉबिन ऐण्ड मैकाइन' नामक कथा मे बर्न्स की 'डंकन ग्रे' का पूर्वाभास मिलता है। यह स्वर डकेल्ड के पादरी गैवेन अथवा गैविन डगलस (१४७४-१५२२) में स्पष्ट सुनाई देता है। उसकी 'पैलिस ऑव ऑनर' तो चॉसर की शैली में ही है, परंतु 'अनेइड' का जो अनुवाद इसने किया उसके विभिन्न भागों के जो मौलिक आमुख उसने लिखे है, उन पर उसके मस्तिष्क एवं शैली की छाप स्पष्ट है। इन स्काटिश कवियों का प्रकृति-चित्रण विशेष रूप

से महत्त्वपूर्ण है। चॉसर की मई की सुबह और उसके वाटिकाओं के दृश्य एक प्रकार की रूढ़ि बन गये थे और उसके अंग्रेज अनुयायी इस रुढ़ि का अनुकरण करके ही संतुष्ट थे। स्काटिश कविता में भी हमें इस रूढ़ि के दर्शन तो अवश्य होते हैं, परंतु दूसरी ओर वास्तविक स्काट दृश्यों के चित्र भी अक्सर मिल जाते है जो स्पष्ट रूप से ऐसे लोगों द्वारा खीचे गये है जिन्होने केवल एक साहित्यिक परम्परा का पालन ही न करके अपने चारों ओर की प्रकृति का स्वयं अध्ययन किया था। उदाहरण-स्वरूप , अभी-अभी उल्लिखित डगलस के तीन आमुखों में वसंत, पतझड़ और जाड़े मे देहात के दृश्यों का वर्णन है। उनमें बहुत-सी बातें केवल परंपरा के पालन के लिए ही आयी है, फिर भी यह स्पष्ट है कि ये चित्र वास्तविकता पर आधारित हैं तथा आश्चर्यजनक सावधानी एव सूक्ष्मतापूर्वक खीचे गये हैं। प्राकृतिक दृश्यों के यथार्थ चित्रण का यह गुण हमें स्मरण रखना चाहिए क्योकि, जैसा हम आगे चलकर देखेगे, परवर्ती अंग्रेजी साहित्य मे प्रकृति-प्रेम का समावेश कराने मे स्काट कवियों ने अत्यधिक योग दिया।

इन स्काट कवियो के विषय में बात करते हुए हमने चॉसर की परंपरा का अनुसरण सोलहवी शताब्दी तक किया है। इस प्रकार ये कवि उस समय भी अपनी रचनाएँ लिखते रहे जब काव्य के क्षेत्र मे नवीन विचारों का प्रवेश होने लगा था। अतः समय की दृष्टि से उन्हें सोलहवी शताब्दी में रखना चाहिए परंतु उनके साहित्य की सामान्य विशेषता ऐसी है कि हमें उनको पंद्रहवीं शताब्दी के लेखकों के साथ ही रखना पड़ता है।

एक बात और। यद्यपि पंद्रहवी शताब्दी काव्य-संबंधी अन्य बातों मे तो अनुर्वर रही परंतु एक विशिष्ट प्रकार के अप्रधान पद्य के विषय में बड़ी ही सम्पन्न प्रतीत होती है। यह अवश्य निश्चित नहीं है कि 'दि बैटिल ऑव ऑटरबर्न' तथा 'नटब्राउरन मेड' जैसी कविताएँ और राबिन हुड चक्र की अनेक गाथाएँ कब लिखी गयी, परंतु यह विश्वास करने के पर्याप्त कारण है कि चॉसर की मृत्यु के बाद की शताब्दी में गाथा-साहित्य अधिकाधिक लोकप्रिय होता गया। इन गाथाओं की शैली अधिकतर असंस्कृत है परंतु वे प्रायः आश्चर्यजनक सरलता, ओज और वास्तविक भावना से पूर्ण है तथा उन्होने अंग्रेज लोगों मे कविता के प्रति प्रेम उत्पन्न करने में अत्यधिक योग दिया।

१७. पंद्रहवीं शताब्दी का गद्य––इस बीच पद्य की अपेक्षा गद्य के क्षेत्र में अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा था, क्योंकि शिक्षा तथा मनोरंजन के विभिन्न उद्देश्यों

की पूर्ति के लिए अंग्रेजों ने अपनी असंस्कृत भाषा को साहित्यिक रूप देना प्रारंभ कर दिया था। सेण्ट ऐसफ़ तथा बाद मे विचेस्टर के बिशप रेजिनाल्ड पीकॉक (१३९५?–१४६०) ने इस दिशा मे बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अपने समय के धार्मिक वादविव द में उसने सक्रिय भाग लिया, यद्यपि वह न तो लौलार्डो को संतुष्ट कर सका और न कट्टरपंथियों को ही। जहाँ एक ओर लौलार्ड लोग उसे अत्यधिक रूढ़िवादी मानते थे, वहाँ दूसरी ओर कट्टरपंथियो के लिए वह अत्यधिक क्रांतिकारी था। लैटिन के बजाय अंग्रेजी मे अपने तर्कों को प्रस्तुत करके उसने उस प्राचीन परंपरा से साहसपूर्वक संबंध-विच्छेद कर लिया जिसको विक्लिफ़ हिलाने मे भी असमर्थ रहा था। उसकी 'रिप्रेसर ऑव ओवरमच ब्लेमिंग फॉर दि क्लर्जी' तथा 'बुक ऑव फेथ' नामक रचनाओं का अंग्रेजी गद्य के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। सर जॉन फॉर्टे स्क्यू (१३९४?–१४७६?) के राजनीतिक निबध 'दि डिफरेस बिटवीन ऐन ऐब्सोल्यूट ऐण्ड ए लिमिटेड मॉनर्की' तथा विलियम कैक्सटन की विविध रचनाओ का भी काफी महत्त्व है। परतु पंद्रहवी शताब्दी की महान् गद्य-रचना सर टॉमस मेलोरी की 'मॉर्ट डार्थर' (अर्थात् 'आर्थर की मृत्यु') है जो वास्तव मे इस युग की अकेली महान् रचना है। लेखक (मेलोरी) के विषय में निश्चित रूप से सिवाय इसके और कुछ भी ज्ञात नही है कि वह एक नाइट था तथा, कैक्सटन के कथनानुसार, उसने अपनी पुस्तक राजा एडवर्ड चतुर्थ के नवे वर्ष, अर्थात् १४७०, मे समाप्त की। राजा आर्थर और उसके 'नाइट्स ऑव दि राउण्ड टेबिल' के विषय में जो अनेकानेक दतकथाएँ प्रचलित थी उनके विभिन्न भागों का वर्णन करने वाले अनेक फ्रासीसी आख्यानों का संग्रह इस पुस्तक मे किया गया है। मेलोरी का उद्देश्य इधर-उधर फैली हुई कथाओं को परस्पर सयुक्त करके उनका एक परस्पर-संबद्ध सार प्रस्तुत करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अपनी सामग्री का उपयोग बड़ी स्वच्छंदतापूर्वक किया। अपने ध्येय की पूर्ति के लिए उसने कुछ कथाओं को ग्रहण किया तो कुछ को अस्वीकृत कर दिया, कुछ को संक्षिप्त कर दिया है, कुछ में संशोधन कर लिये हैं और कुछ के क्रम को बदल दिया है। उसके आख्यान में न तो एकता है और न अनुपात, परन्तु यदि उसके कार्य की भीषण कठिनाइयों का विचार किया जाय तो जो सफलता उसे निश्चय ही मिली है उसके लिए उसे पूरा श्रेय देना होगा। ऐसे समय में जब मध्ययुगीन भावना का लोप अत्यन्त तीव्रता से हो रहा था तथा प्राचीन सामंतवादी व्यवस्था बड़ी शीघ्रता से भूतकाल की वस्तु बनती जा रही थी, अतीत-द्रष्टा मेलोरी के लिए अतीत भावुकतामय

अनुताप का विषय हो रहा था। कैक्सटन के शब्दों में उसकी पुस्तक उन "उत्कृष्ट कार्यों एवं वीरतापूर्ण अद्‌भुत कर्मों" तथा उस "पराक्रम, दृढ़ता, मानवता, प्रेम, शालीनता तथा सज्जनता" से परिपूर्ण है जो कम से कम प्राचीन क्षात्र-धर्म के आदर्श तो थे ही, चाहे व्यवहार मे उनका पालन न होता हो। उसके पृष्ठो मे ऐसे अनेक स्थल है जिनसे यह प्रकट होता है कि बहुत-सी बातो में उसके नैतिक मापदंड हमारे मापदण्डों से अत्यन्त भिन्न थे, परंतु सामान्यतः उसकी रचना एक स्वस्थ नैतिक भावना से परिपूर्ण है। साहित्यिक इतिहास मे 'मॉर्ट डार्थर' का जो उच्च स्थान है वह केवल उसकी आभ्यतर रससिद्धि के कारण ही नही है बल्कि इस कारण भी है कि वह मैथ्यू आर्नल्ड, स्विनबर्न, विलियम मॉरिस तथा प्रमुख रूप से टेनीसन प्रभृति अनेक आधुनिक कवियो के लिए प्रेरणा का श्रोत रहा है। टेनीसन की 'इडिल्स ऑव दि किग' तो अधिकाश में इसी पर आधारित है। इसकी शैली बड़ी अकृत्रिम व सरल है क्योकि मेलोरी ने व्याकरण के प्रति अधिक ध्यान नही दिया है तथा उसका वाक्य-विन्यास प्रायः दोषपूर्ण है। परंतु उसकी शैली आश्चर्यजनक रूप से सरस और मनोहारी है तथा उपयुक्त स्थलों पर अत्यन्त प्रभावोत्पादक भी है।

१८. **ज्ञान का पुनरुज्जीवन**––हम कह चुके है कि यद्यपि साहित्यिक क्षेत्र में पद्रहवीं शताब्दी अनुर्वर रही तथापि अन्य क्षेत्रों मे नवजीवन के चिन्ह उत्तरोत्तर अधिकाधिक स्पष्ट होते गये। साहित्य-रचना की दृष्टि से न सही, पर उसके लिये किये जाने वाले आयोजन की दृष्टि से अग्रेजी साहित्य मे इस शताब्दी का जो महत्त्वपूर्ण स्थान है उसे समझने के लिए उन प्रभावों के विकास पर विचार करना होगा जिन्होने अगली शताब्दी मे होने वाले महान् बौद्धिक जागरण में अपना योग दिया।

इन प्रभावों का उद्‌गम इटालियन पुनरुज्जीवन में ढूँढ़ना चाहिए। जैसा हमें ज्ञात हो चुका है, यह पुनरुज्जीवन चौदहवी शताब्दी में पेटार्क व बोकैशियो के साथ प्रारंभ हुआ। परन्तु इटालियन मानवतावाद के महान युग मे हम पद्रहवी शताब्दी में ही प्रवेश करते है जब फ्लोरेंस के बैंकर कॉसिमो द मेदिची तथा उसके पौत्र लोरेंजो दि मैग्नीफिशेण्ट जैसे धनाढ्य व्यक्ति विद्वत्ता और कलाओं का मुक्त-हस्त संरक्षण करने लगे, जब मठों के पुस्तकालयों का सावधानीपूर्वक अन्वेषण करके यूनानी व लैटिन साहित्य की दीर्घकाल से विस्मृत असंख्य निधियो को प्रकाश में लाया गया, और जब संपूर्ण शिक्षित समुदाय में प्राचीन साहित्य के अध्ययन के प्रति असीमित उत्साह फूट पड़ा। इस पुनरुज्जीवन ने साहित्य के विकास को दो रूपों मे प्रभावित किया। एक तो उसने उदार भावना तथा प्राचीन यूनानी सभ्यता

के आदर्शों का उद्धार करके मानव-विचार को मध्ययुगीन धर्म-शास्त्रीय बधनों से मुक्त कर दिया, और दूसरे उसने लेखको के लिए ऐसी उत्तम रचनाएँ सुलभ कर दी जिनको वे अपनी रचनाओ के लिए आदर्श मान सकते थे। इन्ही दो बातों के कारण पुनर्जागरण को आधुनिक यूरोपीय साहित्यो के निर्माण मे एक प्रमुख प्ररक शक्ति माना जाता है, तथा ऐसा मानना उचित भी है। इसी कारण यह बात भी महत्त्व की है कि अब इग्लैण्ड ने भी इन आदोलनो मे भाग लेना प्रारभ कर दिया जो लोगों के दृष्टिकोण को उदार एव विस्तृत बना रहे थे। अग्रेज विद्वान् आल्प्स पर्वत को पार करके अध्ययन के हेतु पैडुआ , बोलोना तथा फ्लोरेस तक गये और सस्कृति के इन महान् केन्द्रो में उन्हे जो प्रेरणा प्राप्त हुई उसे अपने साथ लेकर आये। इस प्रकार पद्रहवी शताब्दी की समाप्ति से पूर्व ही ऑक्सफर्ड तथा कैम्ब्रिज दोनो स्थानो में नवीन ज्ञान की दृढ स्थापना हो चुकी थी। उच्च वर्गो के अग्रेज युवक इटली की यात्रा को अपनी शिक्षा का आवश्यक अग मानने लगे और इस प्रकार इग्लैण्ड मे इटालियन मानवतावाद के प्रवेश के लिए एक और मार्ग खुल गया। साथ ही हमें यह भी नही भूलना चाहिए कि नवीन ज्ञान के उत्थान तथा उससे उत्पन्न विभिन्न प्रभावो के प्रसार मे छपाई के आविष्कार ने भी बडा योग दिया। छपाई की मशीनो ने पुस्तको की सख्या में वृद्धि करके, ज्ञान को जन-प्रिय बनाकर तथा विचारो के प्रसार द्वारा बौद्धिक सीमाओ को तोडने और विश्व भर की भावना के बदलने मे अन्य सभी वस्तुओ से अधिक योग दिया। इस दृष्टि से विलियम कैक्सटन का जो १४७६ मे वेस्टमिन्सटर में अपना प्रेस स्थापित करके इंग्लैण्ड का सर्वप्रथम मुद्रक बना, सम्मान सोलहवी शताब्दी मे होने वाले बौद्धिक पुनरुत्थान के एक महान् अग्रदूत के रूप में होना चाहिए।

१९. इंग्लैण्ड का आदि-पुनर्जागरणकालीन साहित्य––इस पुनरुज्जीवन के परिणाम सर्वप्रथम आदि ट्यूडर-युग के साहित्य मे दिखाई पड़ते है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह युग बड़े महत्त्व का है, क्योकि यह सर्जनशक्ति के उस वैभवपूर्ण उद्भव की प्रस्तावना के समान था जिसके कारण एलिजाबेथ-युग की ख्याति होने वाली थी।

इस समय तक गद्य के क्षेत्र में ऐसी रचनाएँ बहुत कम थी जिन्हें सामान्य साहित्य के अन्तर्गत रखा जा सके, यद्यपि ऐसा साहित्य पर्याप्त मात्रा मे था जिसका महत्त्व उन विशिष्ट विषयों के संबंध मे है जिन्होंने उस समय तक लोगों के मस्तिष्क को उद्वेलित करना प्रारंभ कर दिया था। विलियम टिण्डेल के अंग्रेजी 'न्यू टेस्टामेण्ट'

(१५२५), माइल्स कॉवरडेल की संपूर्ण अंग्रेजी बाइबिल (१५३५) तथा क्रामवेल की 'ग्रेट' बाइबिल (१५३९) से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि धर्मसुधार ('रिफॉर्मेशन') से एकदम पहले के वर्षों में जनता में धर्मग्रंथो के प्रति रुचि बराबर बढ़ती जा रही थी। साथ ही इन पुस्तको ने स्टैण्डर्ड अंग्रेजी गद्य के विकास मे भी महान् योग दिया। सर टॉमस मोर (१४७८-१५३५) की 'यूटोपिया' इस युग की सबसे प्रतिनिधि रचनाओं में से है। कारण यह कि इसमे जिस आदर्श सामाजिक परिस्थिति का वर्णन किया गया है वह एक ओर तो प्लेटो की 'रिपब्लिक' पर आधारित है, परंतु दूसरी ओर उसका श्रेय जीवन, शासन प्रबंध तथा धर्म संबंधी उन सामान्य विचारों को भी है जो बौद्धिक जागरण के साथ-साथ सहज ही आ गये थे। यद्यपि यह पुस्तक लैटिन मे १५१६ मे ही लिखी जा चुकी थी, परंतु १५५१ में अंग्रेजी साहित्य की निधि बनी जब रैल्फ़ रॉबिन्सन ने इसका अनुवाद किया।[१] रोजर ऐशम (१५१५–६८) मौलिक अंग्रेजी गद्य के सर्वप्रथम सिद्धहस्त लेखकों में से था। उसकी रचना 'टॉक्सोफिलस, अथवा स्कूल ऑव शूटिंग' (१५४५) स्वयं लेखक के शब्दों में "अंग्रेजों के लिए अंग्रेजी भाषा मे" लिखी गयी थी। उसका शिक्षाशास्त्र संबंधी प्रबध 'दि स्कूल मास्टर', जो 'टॉक्सोफिलस' से कही अधिक प्रसिद्ध है, उसकी मृत्यु के दो वर्ष उपरांत उसकी विधवा ने प्रकाशित करवाया।

तत्कालीन साहित्य के प्रमुख अंग अंग्रेजी काव्य के पुनरुत्थान में सबसे स्पष्ट प्रभाव इटली का पड़ा। हाँ, कुछ कवियों ने अवश्य या तो चॉसरीय परंपरा को ही आगे बढ़ाया, या फिर अपने लिए स्वतंत्र मार्ग खोज निकाले। ऐसे कवियों में दो नाम उल्लेखनीय है। एक तो स्टीफ़ेन हॉज़ (मृत्यु १५२३), जिसने अपने 'पैस्टाइम ऑव प्लेजर' में प्राचीन दृष्टांत-रूपक की परंपरा का अनुसरण किया तथा दूसरे, जॉन स्केल्टन (१४६० ?–१५२८ ?) जिसने पहले तो चॉसर का ही अनुकरण किया परंतु बाद में कार्डिनल वूल्जे की व्यंग्यात्मक आलोचना करने के लिए एक स्वतंत्र ओजपूर्ण और कर्कश शैली विकसित कर ली। परंतु काव्य में नये आंदोलन का श्रीगणेश वास्तव मे हेनरी अष्टम के राजदरबार में हुआ जो पूर्णरूप से इटली के रँग में रँगा हुआ था। इस नये आंदोलन में दो नाम विशेष उल्लेखनीय

१. 'यूटोपिया' नाम दो यूनानी शब्दों से बना है जिनका अर्थ है 'कहीं भी नहीं' तथा 'यूटोपियन' विशेषण के रूप में अंग्रेजी भाषा में खूब प्रचलित है।—लेखक

हैं—एक तो सर टॉमस वाएट (१५०३–४२) और दूसरे हेनरी हॉवर्ड, अर्ल ऑव सरे (१५१६ ?–१५४७)। ये दोनों ही व्यक्ति नवीन सभ्यता की भावना से ओत-प्रोत थे तथा दोनों ने इटालियन काव्य का गहरा अध्ययन किया था। इन्हीं दोनों प्रभावों के फलस्वरूप उन्होंने, पुटेनहम के शब्दों में, "हमारी देशी कविता की प्राचीन, अशिष्ट एवं अनलंकृत शैली को शिष्ट एवं लालित्यपूर्ण बना दिया।" इटली में पेट्रार्क और उसके अनुयायियों द्वारा लोकप्रिय बनाये गये प्रेम-काव्य (अथवा 'शृंगार-काव्य,' जैसा इसे उस समय कहा जाता था) का इंग्लैण्ड में प्रवेश भी इन्हीं दोनों के द्वारा हुआ। प्रेम-काव्य के साथ ही वे 'सॉनेट' नामक छंद भी लाये। सरे ने इटालियन लेखकों का अनुकरण करते हुए 'अनेइड' के दो भागों के अनुवाद में दस पदों वाले उस तुकविहीन छंद का सर्वप्रथम प्रयोग किया जिसे साधारण रूप से अतुकांत छंद ('ब्लैंक वर्स') कहा जाता है।

'सांग्स ऐण्ड सॉनेट्स' नामक पद्य-संग्रह के विभिन्न लेखकों में वाएट और सरे सर्वप्रमुख है। यह संग्रह प्रकाशक के नाम के आधार पर सामान्यतया 'टाटेल्स मिसलैनी' के नाम से प्रसिद्ध है। एलिजाबेथ प्रथम के सिंहासनासीन होने के एक वर्ष पूर्व १५५७ में, यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। अंग्रेजी साहित्य के किसी भी इतिहास में इसका उल्लेख होना आवश्यक है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अब नवीन युग बाकायदा शुरू हो चुका था। इस दृष्टि से यदि इसे नवीन युग का उषाकाल कहा जाय तो अनुचित न होगा।

अब तक हमने जिन युगों का अध्ययन किया है उनमें नाट्य साहित्य के विकास पर बिल्कुल ध्यान नही दिया है। इस महत्त्वपूर्ण विषय पर हम अगले अध्याय में विचार करेंगे।

चॉसर से 'टॉटेल्स मिसलैनी' तक के अंग्रेजी साहित्य की सारिणी (१४००-१५५७)

	हॉक्लीव की 'गवर्नेल ऑव प्रिंसेज', १४-१२. जेम्स प्रथम की 'दि किंग्स क्वेअर', १४२२. लिड्गेट की 'फ़ाल्स ऑव प्रिंसेज', १४३०. पीकॉक की 'रिप्रेसर', १४४९. फोर्टेस्क्यू की 'डिफरेंस बिटवीन ऐब्सोल्यूट ऐण्ड लिमिटेड मॉनर्की', १४५०?
हेनरी चतुर्थ की मृत्यु, १४१३.	
गुलाबों के युद्ध, १४५५–८६.	मेलोरी की 'मॉर्ट डार्थर', १४७०, प्रकाशित, १४८५.
ऑक्सफर्ड व कैम्ब्रिज में प्राचीन साहित्य के अध्ययन की प्रगति, १४७५ से आगे।	
कैक्सटन के छापेखाने की स्थापना, १४७६.	हॉज की 'पास्टाइम ऑव प्लेजर,' १५०६?
बॉसवर्थ का युद्ध, १४८५.	डनबर की 'डान्स ऑव दि सेविन डेडलीसिन्स, '१५०७.
हेनरी सप्तम, १४८५-१५०९.	
हेनरी अष्टम, १५०९-४७.	डगलस की 'अनेइड', १५१३.
	मोर की 'यूटोपिया'; लैटिन संस्करण, १५१६.
	अंग्रेजी संस्करण, १५५१.
	सर टामस वाएट, १५०३-४२.
	हेनरी हावर्ड, अर्ल ऑव सरे, १५१६-४७.
	टिण्डेल का 'न्यू टेस्टामेण्ट' तथा बाइबिल के अन्य भाग, १५२५-३६.
	कॉवरडेल की बाइबिल, १५३५.
एडवर्ड पंचम, १५४७-५३.	
मेरी, १५५३-५८.	'टॉटेल्स मिसलैनी', १५५७

अध्याय ५

नाट्य साहित्य का विकास (१५६१ तक)

२०. अंग्रेजी नाट्य का प्रारंभ--अलौकिक नाटक ('मिरैकिल प्लेज')-- अंग्रेजी नाट्य का इतिहास नार्मनो के आगमन के उपरान्त प्रारभ हुआ। इग्लैंड में किसी नाटकीय अभिनय का सर्वप्रथम उल्लेख एक लैटिन नाटक के रूप मे मिलता है जिसका अभिनय डन्स्टेबिल मे १११० के लगभग सेण्ट कैथरीन के सम्मान मे हुआ था। चर्च की अत्यधिक प्रतीकात्मक सामूहिक पूजा से जिस धार्मिक नाट्य का विकास हुआ था, वह फ्रास में नार्मन-विजय तक दृढ़ता से स्थापित हो चुका था और स्वभावतः उसका प्रवेश इग्लैंड मे भी हो गया। इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से उपदेशात्मक था, अर्थात् इसकी रचना धार्मिक लेखकों द्वारा होती थी जो इसका उपयोग अशिक्षित जनता को धार्मिक सत्यों का ज्ञान कराने के लिए करते थे। प्रथम इस नाट्य पर चर्च का पूर्ण नियंत्रण था, दूसरे, ये अभिनय हमेशा चर्च की इमारतों में ही हुआ करते थे, तीसरे, इनके अभिनेता स्वयं पादरी ही होते थे तथा चौथे, इनकी भाषा प्रार्थना-पूजा वाली लैटिन ही होती थी। परंतु जैसे-जैसे ये तथाकथित गूढ़ ('मिस्टरी प्लेज') अथवा अलौकिक नाटक[1] अधिक लोकप्रिय होते गये और विशेष अवसरों पर अधिकाधिक दर्शकों की भीड़ चर्चों में लगने लगी, यह आवश्यक हो गया कि रंगमंच को चर्चो के अंदर से हटाकर बाहर प्रागण मे

१. 'मिस्टरीज' अर्थात् गूढ़ तथा 'मिरैकिल' अर्थात् अलौकिक नाटकों को इस आधार पर परस्पर भिन्न बताने का प्रयत्न किया गया है कि 'गूढ़' नाटक बाइबिल से लिये गये विषयों से तथा 'अलौकिक' नाटक संतों के जीवन से संबंधित होते थे। यूरोप में तो यह भेद माना जाता है परंतु इंग्लैण्ड में इसे कभी मान्यता नहीं प्राप्त हो सकी। इंग्लैण्ड में सभी प्रकार के धार्मिक नाटकों का प्रचलित नाम 'अलौकिक नाटक' ही है।--लेखक

स्थापित किया जाय। इसके अनंतर रंगमंच को प्रांगण से हटाकर कब्रस्थान में ले जाया गया, और अंत मे तो यह चर्च की सीमा से बिल्कुल ही हटकर गाँवो मे खुले मैदान तथा नगरों में सड़कों में चला गया। साथ ही इन अभिनयो में जनसाधारण भी भाग लेने लगे, तथा शीघ्र ही उन्होने पुरोहितो को अभिनेताओ के पद से बिल्कुल हटा दिया। लैटिन का स्थान देशी भाषा, पहले फ्रांसीसी और फिर अंग्रेजी ने ले लिया। परंतु इंग्लैण्ड मे धार्मिक नाट्य का चरमोत्कर्ष चौदहवी शताब्दी में हुआ जब गर्मी के प्रारभ में 'कॉर्पस क्राइस्टी' के त्योहार के अवसर पर लगभग सभी बड़े शहरों में अलौकिक नाटकों का अभिनय होने लगा। ये अलौकिक नाटक अनेक घटनाओं को परस्पर संबद्ध करके लिखे जाते थे और इसी कारण बड़े लम्बे होते थे। इन नाटकों को कमी-सभी "सामूहिक गूढ़ नाट्य" भी कहा जाता है। इन "कॉर्पस क्राइस्टी" नाटकों में मानव के पतन एवं उद्धार का संपूर्ण इतिहास दर्शित किया जाता था। इसी कारण ये नाटक विभिन्न नगरों के व्यापारिक सघो मे बॉट दिये जाते थे और प्रत्येक संघ अपने-अपने नाटक का उत्तरदायित्व लेता था। इन नाटको का अभिनय कई दिनों तक चला करता था। इन नाट्य-परंपराओं अथवा चक्रों (साइकिल्स) मे से चार अपने पूर्ण रूप मे उपलब्ध है—चैस्टर-परंपरा जिसमे २५ नाटक है, कावेण्ट्री परम्परा जिसमे ४२ नाटक है; वेकफील्ड परम्परा जिसमे ३१ नाटक है तथा यार्क परंपरा जिसमे ४८ नाटक है। इनमें से प्रत्येक का प्रारभ सृष्टि के निर्माण तथा मानव के पतन से होता है, फिर प्रलय, आइज़क का बलिदान, मिस्र से निष्कासन आदि भविष्य सूचक घटनाओं का वर्णन करने के उपरान्त ईसा के जीवन के अतिम दृश्यों–शूलारोपण, पुनरुज्जीवन तथा स्वर्गारोहण-की विस्तृत मीमांसा होती है। इसके बाद प्रलय के दिन ईसा किस प्रकार अपने अनुयायियों की सहायता करेंगे, इसके वर्णन के साथ इनका अंत हो जाता है। साहित्यिक दृष्टि से तो वे अवश्य अत्यंत निम्न कोटि के है परंतु यदा-कदा उनमें करुण-रस का सुंदर परिपाक हुआ है, उदाहरणस्वरूप अब्राहम और आइजक की कथा मे तथा शूलारोपण के दृश्य में। परंतु जिस हास्य रस का समावेश इन नाटकों में यदा कदा हुआ है उससे नाटकीय विवेक के विकास का पता और भी स्पष्ट रूप से लगता है। इस हास्य रस के दर्शन वेकफ़ील्ड-परंपरा के उन पशुचारण संबंधी नाटकों में विशेष रूप से होते हैं जो वास्तव में केवल असंस्कृत देहाती प्रहसन है तथा अपने प्रसंग से उनका संबंध अत्यंत क्षीण है। ये धार्मिक अभिनय सोलहवीं शताब्दी में भी बहुत दिनों तक होते रहे और यह विश्वास करने के पर्याप्त कारण है कि शेक्सपियर

ने अपने बचपन में कावेण्ट्री में प्रतिवर्ष होने वाले अभिनयों को कम से कम एक बार तो अवश्य ही देखा होगा। जब हैमलेट घुमक्कड़ नाटक कंपनी के सदस्यों को यह परामर्श देता है कि वे अतिरेक पूर्ण अभिनय में हेरॉड को भी न पछाड दें, तब हमें प्राचीन अलौकिक नाटकों के एक प्रमुख चरित्र हेरॉड का स्मरण हो आता है जो सदा जोर-जोर से चिल्लाने वाला गपोड़ होता था।

२१. **नीतिनाट्य और विष्कंभक ('मोरैलिटीज़' और 'इण्टरल्यूड्स')**—नाटक के विकास में दूसरी अवस्था नीति-नाट्यों की है। अलौकिक नाट्य की ही भाँति नीति नाट्य भी शिक्षाप्रद था, परंतु इसके पात्र धार्मिक इतिहास अथवा संतों की कथाओं से नही लिये गये है, वरन् विभिन्न गुण-दोष ही मनुष्य रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। उस समय जब दृष्टांत-रूपक काव्य अत्यंत लोकप्रिय था, इस नाट्य-रूप का उत्थान अत्यंत स्वाभाविक था। इस प्रकार सभी प्रकार के बौद्धिक व नैतिक गुण रंगमंच पर प्रस्तुत किये जाते थे, यथा विज्ञान, दृढ़ प्रवृत्ति, विश्व, स्वतंत्र इच्छाशक्ति, पंचेद्रियाँ, सप्त पाप (अलग-अलग अथवा एक साथ), अच्छे व बुरे देवदूत, वर्तमान, युवा इग्लैण्ड, बली युवक, मनुष्य योनि, और प्रत्येक व्यक्ति ('एवरीमैन')। इन पात्रों में प्रायः शैतान भी हुआ करता था जिसका अलौकिक नाट्य में बड़ा प्रमुख स्थान था। आगे चलकर एक अन्य महत्त्वपूर्ण पात्र का समावेश किया गया जिसे दुराचार ('वाइस') कहते थे और जो दुष्टता की हास्यजनक मूर्ति होता था। इसी कारण वह नाटकों में हँसी-मजाक पैदा करने का काम करता था। वह कूद कर शैतान की पीठ पर बैठ जाता, उसके शरीर में काँटे चुभोता और उसे लकड़ी की तलवार से मारता। इस पर जब शैतान दर्द के मारे चिल्लाने लगता तो दर्शकों का बड़ा मनोरंजन होता था। इस प्रकार इस तथाकथित दुराचार को कभी-कभी महान् सफलता प्राप्त होती थी। एलिजाबेथीय रंगमच के विदूषक का अग्रदूत होने के कारण उसका महत्त्व और भी अधिक है। अलौकिक नाट्य की कथा पहले से निश्चित रहती थी, अतएव उसके लेखकों को उसी के अनुसार चलना पड़ता था; परंतु नीति-नाट्य मे ऐसा न होने के कारण कथावस्तु एवं पात्र दोनो के ही निर्वाह में अपेक्षाकृत अधिक स्वतत्रता रहती थी। धर्मसुधार के उत्तेजनापूर्ण वर्षों में तो दोनों ही धार्मिक दलों ने अपने अपने सिद्धांतों के स्पष्टीकरण तथा वाद-विवाद तक के लिए इसका खूब उपयोग किया। उदाहरण के लिए, 'एवरीमैन' नामक नाटक, जो आजकल विद्यमान नीति-नाट्यों में सबसे सुदर है, की रचना कैथलिक चर्च के संस्कार विषयक सिद्धांतों का उपदेश देने के लिए हुई थी। जैसे-जैसे अमूर्त गुणों की ये मानव-मूर्तियाँ वास्तविक

मनुष्यो के समान होती गयी, वैसे वैसे धीरे धीरे नीति नाट्य के सुखान्त (कामेडी) का रूप धारण कर लिया।

जिस नाट्य को हम विष्कंभक ('इण्टरल्यूड') के नाम से जानते है वह भी नीति-नाट्य के विकास से ही संबंधित है। वास्तव में इसकी उत्पत्ति नीति-नाट्य के विकास के कारण ही हुई। इस शब्द का वास्तविक अभिप्राय क्या है तथा इसका प्रयोग किस अर्थ में उचित होगा, इसके विषय मे कुछ भ्रम अवश्य है, क्योकि बहुत से तथाकथित विष्कंभक केवल नीति-नाट्य के परिवर्तित व संशोधित रूप ही है। परतु अपने विशिष्ट अर्थ मे इसका आशय किसी ऐसी लघुनाटिका से है जो स्पष्ट रूप से धार्मिक अथवा नैतिक न होकर व्यंग्यप्रधान हो और जिसकी प्रमुख भावना व उद्देश्य नीति-नाट्य की भाँति गभीर न हों। इस नाट्य का विकास सोलहवी शताब्दी के आदि काल मे हुआ तथा जॉन हेवुड (१४९७?—१५८०?) के नाम के साथ इसका अत्यंत निकट संबंध है। यह हेवुड कुछ समय तक दरबारी सगीतज्ञ रहा तथा हेनरी अष्टम के मनोरजन की व्यवस्था भी उसी के जिम्मे रहा करती थी। उसका 'फोर पीज' इस प्रकार के नाटको का सबसे मनोरजक उदाहरण है। यह एक संवाद है जिसमें एक परिव्राजक (पामर) एक क्षमा-पत्र विक्रेता (पार्डनर), एक औषधि-विक्रेता, (पाथिकैरी) तथा एक खोंचे वाला (पेडलर) मजेदार कहानियाँ कहते है और अत मे उनमे यह होड़ लगती है कि कौन सबसे बडा झूठ बोल सकता है। विष्कभको का प्रयोग उपदेश के लिए भी होता था, उदाहरण स्वरूप 'इण्टरल्यूड ऑव दि फोर एलिमेण्ट्स मे' दूसरी ओर 'थरसाइट्स' जैसे विष्कंभकों में घटनाओ का जो समावेश हुआ है उसने इनको एक प्रकार के प्रारंभिक सुखातों का रूप दे दिया है।

२२. सुखांत एवं दुखांत नाट्य का प्रारंभ—नाट्य-रचना के क्षेत्र मे किये गये ये प्रारंभिक प्रयोग ऐतिहासिक दृष्टि से बडे महत्त्व के है क्योकि वे अंग्रेजी नाट्य लेखको के लिए एक प्रकार से प्राथमिक पाठशाला सिद्ध हुए, और उन्होंने वास्तविक नाट्य साहित्य के लिए मार्ग तैयार करने में बड़ा योग दिया। परंतु अंग्रेजी सुखांत और दुखांत नाट्य दोनों के ही विकास की इन आरंभिक अवस्थाओं से निकल कर कला का रूप जो धारण किया वह ज्ञान के पुनरुत्थान के कारण ही संभव हो सका। प्राचीन यूनान और रोम की प्रत्येक वस्तु के प्रति उत्साह से पूर्ण होने के कारण लोगो ने साहित्य-रचना के अन्य क्षेत्रो की भाँति नाट्य-रचना में भी प्राचीन महान् वृत्तियों को अपना आदर्श बनाया। हाँ, इस क्षेत्र मे उन्होंने यूनानी नाटककारों का अनुसरण न करके लैटिन नाटककारों का अनुसरण किया। पहले तो प्लॉटस एवं टेरेंस के सुखांतों

('कॉमेडीज') तथा सेनेका के दुखांतों ('ट्रेजेडीज') का ही अभिनय विश्वविद्यालयों में तथा विशेष अवसरों पर अन्य स्थानों पर भी, विद्वानों के समक्ष होना प्रारंभ हुआ। फिर इन नाटककारों के अनुकरण पर लैटिन नाटक लिखे गये और कुछ समय उपरांत इन नाटककारों की रचनाओं के आधार पर अंग्रेजी में नाटक लिखने की चेष्टा की गयी। ये चेष्टाएँ करते समय अंग्रेज लेखकों ने नाट्य-विन्यास एवं टेकनीक के सिद्धांतों से संबधित अनेक महत्त्वपूर्ण बातें सीखी। अंग्रेजी का प्रथम वास्तविक सुखांत 'र्वा-एस्टर ड्वाएस्टर' निकोलस यूडल द्वारा १५५० के लगभग लिखा गया था। यूडल ईटन विद्यालय का प्रधानाध्यापक था तथा उसने प्रति वर्ष खेले जाने वाले लैटिन नाटक के स्थान पर छात्रों द्वारा अभिनय करने के लिए इस नाटक की रचना की थी। इसकी रचना तुकांत दोहा-छंद में हुई है तथा लैटिन शैली के अनुसार इसे अंकों और दृश्यों में विभाजित किया गया है। इसमें मिथ्यादंभी नायक के डेम कस्टैस के प्रति प्रणय एवं उसके विभिन्न संकटों, तथा विदूषक मैथ्यू मेरीग्रीक के मज़ाको का मनोरंजक वर्णन है। यद्यपि यह बहुत कुछ प्लॉटस तथा टेरेस के नाटकों की शैली पर ही निर्मित है, तथापि इसमें हमें प्राचीन अलौकिक एवं नीति-नाट्य के हास्य-विनोद की याद प्रत्येक स्थल पर आती है। इसके विपरीत हमारे प्रथम वास्तविक दुखांत मे सेनेका के दुखांत नाटकों की आत्मा एवं रूपों का अनुकरण मात्र करने की चेष्टा की गयी है। इसका शीर्षक है 'गॉरबुडक' (आगे चलकर इसका नाम 'फेरेक्स ऐण्ड पॉरेक्स' रखा गया) तथा यह जेफ्रे ऑव मॉनमाउथ की 'हिस्ट्री' (देखो § ६) मे वर्णित एक घटना पर आधारित है। इसकी रचना टॉमस सैकविल, लार्ड बकहर्स्ट (१५३६–१६०८) तथा टॉमस नार्टन (१५३२–८४) ने इनर टेम्पुल मे क्रिसमस के उत्सव के समय अभिनय करने के लिए १५६१ में की थी। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है कि नाटको के क्षेत्र में इस सर्वप्रथम अंग्रेजी दुखात में ही सबसे पहले अतुकांत छंद का प्रयोग हुआ है, जिसका प्रयोग अंग्रेजी काव्य मे कुछ ही वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ था (देखो§१९)।

(आगे देखिए)

नाट्य-साहित्य के विकास की सारिणी

(१५६६ तक)

हेनरी प्रथम, १११०—११३५.	इंग्लैंड में सर्वप्रथम नाटकीय अभिनय जिसका उल्लेख मिलता है, 'लूडस द सेण्ट कैथरिना', १११० के लगभग।
हेनरी तृतीय, १२१६—१२७२.	कॉर्पस क्राइस्टी का समारोह जिसके कारण अलौकिक नाटकों के अभिनय को बड़ा प्रोत्साहन मिला १२६४.
एडवर्ड तृतीय १३२७–७७	यार्क परंपरा, १३४० के लगभग।
	चेस्टर परंपरा, १४वी शताब्दी का मध्य-काल।
हेनरी षष्ठ, १४२२–१४७१.	वेकफील्ड परंपरा, १५ वीं शताब्दी का मध्यकाल।
रिचर्ड तृतीय, १४८३–१४८५.	कावेण्ट्री परंपरा, १५ वीं शताब्दी।
हेनरी सप्तम, १४८५–१५०९.	सबसे प्राचीन नीति-नाट्य जो आजकल विद्यमान है—दि कासिल ऑव पर्सी-वरेंस' १५वीं शताब्दी का मध्यकाल।
हेनरी अष्टम १५०९–१५४७.	विष्कंभक, १६वी शताब्दी का आदिकाल। 'दि फोर पीज', १५२० के लगभग।
एडवर्ड षष्ठ, १५४७–१५५३.	'र्‌वाएस्टर ड्‌वाएस्टर', १५५० के लग-भग।
	सेरेका के दुखांतों के अनेक अनुवाद, १६ वी शताब्दी का उत्तरार्ध।
एलिज़ावेथ प्रथम, १५५८–१६०३.	गॉरबुडक', १५६१.
	'गैमर गर्टन्स नीडिल' (दूसरा अंग्रेजी सुखांत, जॉन स्टिल कृत), १५६६.

अध्याय ६

शेक्सपियर-युग (१५५८-१६२५)

नाटकेतर-पद्य

२३. **शेक्सपियर-युग**––अब हम उस युग में प्रवेश करते है जिसको सामान्यतया शेक्सपियर-युग कहा जाता है और जिससे हमारा आशय उस पूरे युग से है जो १५५८ मे एलिजाबेथ के सिहासनारोहण से प्रारंभ होकर १६२५ में जेम्स प्रथम की मृत्यु के साथ समाप्त हुआ। ६७ वर्षो के इस लम्बे युग के स्वाभावतः तीन विभाग हो जाते है—एलिज़ाबेथ के राज्य-काल के प्रथम २१ वर्ष, स्पेन्सर के 'शेफ़र्डस कैलेण्डर' से लगाकर एलिजाबेथ की मृत्यु तक के २४ वर्ष; तथा जेम्स प्रथम के राज्य-काल के २२ वर्ष। हम पहले विभाग को आयोजना का समय अथवा एलिज़ाबेथीय साहित्य का वसंत, दूसरे को पूर्ण सिद्धि का समय अथवा एलिज़ाबेथीय साहित्य का ग्रीष्म, तथा तीसरे को अवनति का काल अथवा उस साहित्य का पतझड़ कह सकते है। वास्तव में तो केवल प्रथम दो विभाजनो को ही' एलिजाबेथीय' सज्ञा प्रदान की जा सकती है और तीसरे का सही नाम 'जैकोबियन'[1] होना चाहिए। परंतु साहित्यिक विकास की दृष्टि से उचित यही है कि एलिज़ाबेथीय तथा जैकोबियन दोनों युगों का समावेश शेक्सपियर-युग में ही किया जाय।

अपनी आश्चर्यजनक उर्वरता तथा अपने साहित्य की विभिन्नता एवं उत्कृष्टता के कारण इस युग की गणना विश्व-साहित्य के इतिहास के महानतम युगों मे की जाती है। इसकी महानता अनेक कारणो का परिणाम थी जो परस्पर संबद्ध है। इतिहास का अध्ययन करने से यह पता लगता है कि कभी-कभी तो किसी राष्ट्र का जीवन अत्यंत जड़ तथा उसकी गति अत्यंत मंद होती है, और कभी वह असाधारण रूप से प्रबल

१. जेम्स का लैटिन रूप 'जैकोबस' है, उसी से 'जैकोबियन' विशेषण बना है।––अनु०

एवं जागरूक हो जाता है। स्पेन्सर, बेकन और शेक्सपियर की भाँति जो लोग एलिज़ाबेथ के राज्य-काल के आरभिक वर्षों मे बालक से युवा हुए तथा सोलहवी शताब्दी के अतिम दशाब्दों मे परिपक्वता को प्राप्त हुए वे सौभाग्यवश ऐसे समय में उत्पन्न हुए थे जब जीवन की तरंगें अपने उच्चतम विंदु को स्पर्श कर रही थी। प्रत्येक क्षेत्र मे ऐसे प्रभाव कार्य कर रहे थे जो चितन का प्रसार एवं कल्पना का विस्तार कर रहे थे, तथा जो भावनाओ को उद्दीप्त कर रहे थे। साथ ही वे प्रतिभावान् लेखको के प्रोत्साहन तथा उनकी प्रतिभा के पोषण द्वारा साहित्य को विस्तृत एवं शक्तिवान् बना रहे थे। इंग्लैड अब ज्ञान के पुनरुत्थान के पूर्ण प्रभाव में आ गया था। यह प्रभाव अब केवल विश्वविद्यालय तथा राजदरबार के कुछ विद्वानों तक ही सीमित न रह गया था वरन प्राचीन साहित्यिक कृतियों के असंख्य अनुवादो ने प्राचीन ज्ञान की अनुपम निधि को सर्व-साधारण के लिए भी सुलभ कर दिया था जो इनके बिना उससे सर्वथा वंचित रह जाते। इस प्रकार, जैसा ठीक ही कहा गया है, "वायु का प्रत्येक झोंका यूनान, रोम व इटली के पराग से परिपूर्ण था"; यहाँ तक कि सामान्य वातावरण भी नवीन ज्ञान की भावना से पूर्ण था। इस प्रकार जनता में नवीन ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ी तथा लोगों की सौदर्य-भावना तथा जीवन को समृद्ध बनाने वाली प्रत्येक वस्तु के प्रति विकसित हो रहे प्रेम को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। जहाँ एक ओर पुनर्जागरण ने लोगों की प्रज्ञा तथा सौदर्य-चेतना को जाग्रत किया, वहाँ धर्म-सुधार ने उनकी आध्यात्मिक भावना को जागरूक बनाया। जिस मुद्रणयंत्र के द्वारा प्राचीन साहित्यिक कृतियो का प्रसार सभव हुआ उसी ने सर्वसाधारण के लिए अंग्रेजी बाइबिल को भी सुलभ कर दिया। फिर जब धर्म मे लोगो की रुचि बढ़ी तो उसके साथ ही नैतिक भावना मे भी वृद्धि होना अवश्यभावी था। समुद्र-पार नये प्रदेशो की खोज तथा हाकिन्स, ड्रेक, फ्रॉबिशर एव रैले जैसे साहसी अन्वेषको द्वारा इन सुदूर प्रदेशों से लायी गयी लोमहर्षक कहानियों ने सर्व-साधारण की उत्सुकता तथा साहसिक कार्यो के प्रति रुचि तीव्र कर दी, अनेकानेक वस्तुओ के विषय में नवीन विचारो को जन्म दिया, तथा लोगों के मस्तिष्क की सीमाएँ विस्तृत करने में बड़ा योग दिया। देश सभी क्षेत्रों में अधिकाधिक समृद्ध हो रहा था और जनता अनेक वर्षो के बाद प्रथम बार आंतरिक शाति का उपभोग कर रही थी। रोम से संबंध-विच्छेद करके इंग्लैण्ड ने विदेशी प्रभुत्व के जुए को उतार फेंका था; कैथलिकों और प्रोटेस्टेण्टों का प्रचण्ड वैर जिसके कारण देश लम्बे समय तक विक्षुब्ध रहा था, अब समाप्त हो गया था; विभिन्न विरोधी तत्त्व एक राष्ट्र के रूप में संयुक्त हो गये थे।

स्पेन से संघर्ष होने पर जो विपत्ति आयी उसमें थोड़े समय के लिये ही सही अंग्रेजों ने छोटे-छोटे पारस्परिक मतभेदों को भुला दिया और वे कंधे से कंधा भिड़ाकर समान शत्रु से देश की रक्षा करने को उद्यत हो गये। इस प्रकार उत्कट स्वदेश-भक्ति इस युग की एक प्रमुख विशेषता बन गयी। इस भावना की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में हुई, उदाहरण स्वरूप, इंग्लैंड के अतीत में अत्यधिक रूचि, इंग्लैंड की महानता पर गर्व, इंग्लैंड के शत्रुओं से घृणा तथा इंग्लैंड की रानी के प्रति अपरिमित भक्ति।

ये उन परिस्थितियों में से कुछ है जिनके संयोग से शेक्सपियर युग की आत्मा का निर्माण हुआ। यह युग ऐसा था जिसमें "मनुष्यों का जीवन, उनके विचार, तथा उनकी रचनाएँ सभी कुछ प्रगाढ़ था।" ऐसे समय जब भावनाएँ अत्यंत प्रबल थीं और कल्पना प्रचुर तथा जब प्रतिभावान् लेखकों की रचनाओं का स्वागत करने को उत्सुक जनता भी विद्यमान थी, किसी बात का अभाव न रहा। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के सर्वश्रेष्ठ अंश की अभिव्यक्ति कर सके इसके लिए बड़ा सुदर संयोग प्रस्तुत हो गया। फिर उसकी रचनाओ की व्यक्तिगत विशिष्टता चाहे जो हो, उसकी रचनाओं में उसके चारों ओर के जीवन की पूर्णता और अनेकता का परिलक्षित होना तो निश्चित ही था।

२४. स्पेन्सर के पूर्व एलिज़ाबेथीय काव्य—१५७९ मे स्पेन्सर के 'शेफ़र्डस कैलेण्डर' के प्रकाशन से एलिज़ाबेथीय साहित्य के "स्वर्ण-युग" का श्री गणेश माना जा सकता है। एलिजाबेथ के राज्यकाल के पूर्वार्द्ध मे यद्यपि काव्य-रचना तो बहुत हुई परंतु ऐसे पद्य की रचना नही के समान हुई जिसका कोई स्पष्ट महत्त्व हो। इस काल का सर्वोत्तम काव्य टॉमस सैकविल, लार्ड बकहर्स्ट (देखो §२२) की उन कविताओं में मिलता है जो उसने 'ए मिरर फार मेजिस्ट्रेट्स' नामक एक विशाल ग्रथ मे सगृहीत होने के लिए लिखी थी। वास्तव में प्रकाशक ने लिड-गेट की 'फाल्स ऑव प्रिंसेज़' (देखो §१६) को ही आगे बढाने के विचार से इस पुस्तक की योजना बनायी थी तथा योजनानुसार इसमें अनेक प्रसिद्ध अंग्रेजों की "करुण कथाओ" का सग्रह होने वाला था। इसमे बहुत से लेखको ने भाग लिया, परंतु सैकविल की दो कविताएँ (जो सबसे पहले १५६३ वाले सस्करण मे प्रकाशित हुई)—'इण्डक्शन' (अर्थात् संपूर्ण पुस्तक की प्रस्तावना) तथा 'कम्प्लेण्ट ऑव बकिंघम'—शेष समस्त रचनाओं से कही अधिक श्रेष्ठ है। इनमें से 'इण्डक्शन', जो उदात्त भावना से ओतप्रोत परंतु एक विषादपूर्ण कविता है, विशेष ध्यान देने योग्य है क्योंकि चॉसर और स्पेन्सर के बीच इंग्लैण्ड में लिखी जाने वाली यह सर्वश्रेष्ठ एकाकी

कविता है। जार्ज गैस्क्वायन (१५२५?—१५७७) की 'स्टील ग्लास' (१५७६) का भी कुछ महत्त्व है क्योकि वह अग्रेजी मे नियमित व्यंग्यात्मक कविता का सर्वप्रथम उदाहरण है।

२५. स्पेन्सर और उसका काव्य—एडमण्ड स्पेसर इस युग का महानतम नाटकेतर कवि था यद्यपि इस युग की सबसे स्वाभाविक साहित्यिक अभिव्यक्ति नाटक के क्षेत्र मे हुई। उसका जन्म लंदन में १५५२ में हुआ और उसकी शिक्षा-दीक्षा 'मरचेण्ट टेलर्स स्कूल' तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई। कैम्ब्रिज में उसने प्राचीन साहित्य तथा इटालियन साहित्य का अध्ययन किया और उस प्रबल प्रोटेस्टेण्ट भावना के प्रभाव मे आया जो उस समय विश्वविद्यालय मे व्याप्त थी। लंकाशायर मे सबधियो के यहाँ कुछ वर्ष बिताने के बाद उसे अर्ल ऑव लीस्टर के परिवार मे नौकरी मिल गयी जहाँ अपने स्वामी के भतीजे सर फिलिप सिडनी से उसकी प्रगाढ मित्रता हो गयी। १५८० में वह नये लार्ड डिपुटी, लार्ड ग्रे डि विल्टन का सचिव बनकर आयर्लैंड गया। उसके जीवन का शेष भाग आयर्लैंड में ही बीता, हाँ कभी-कभी थोडे दिन के लिए लदन अवश्य आ जाता था। आयर्लैंड के उच्छृखल लोगो से वह घृणा करता था। और इसी कारण उनके बीच मे निर्वासित होकर रहना उसके लिए अत्यन्त दु:खदायी था। राजदरबार में कोई स्थान प्राप्त करने और इस बहाने इग्लैंड लौटने के लिए उसने अनेक प्रयत्न किये परंतु वह उन सब मे असफल रहा। ऐसी दशा में उसे जो कुछ विश्राति मिलती थी वह केवल 'फेयरी क्वीन' की रचना मे मिलती थी। अक्टूबर, १५९८ में टाइरोन मे, जहाँ वह उस समय रह रहा था, विद्रोह हो गया; क्रुद्ध भीड़ ने उसके गढ़ पर गोले बरसाये और उसे लूट लिया; स्पेन्सर और उसका परिवार कठिनाईपूर्वक केवल जान बचाकर ही भाग पाये।

यद्यपि स्पेन्सर की प्रसिद्धि मुख्य रूप से 'दि फेयरी क्वीन' के कारण है, तथापि उसका गौण काव्य भी, जो अत्यन्त विशाल है, उसको तत्कालीन अग्रेजी कवियो में सर्वोच्च स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त है। उसकी 'शैफर्डस कैलेण्डर' (१५७९) उस कृत्रिम प्रकार की एक पशु-चारण संबधी कविता है जो सभी यूरोपीय साहित्यो मे लोकप्रिय हो गया था। इस लोकप्रियता का कारण वह जनरुचि थी जो ज्ञान के पुनरुज्जीवन ने प्राचीन साहित्य की प्रत्येक वस्तु के लिए उत्पन्न कर दी थी। इसमें स्पेन्सर ने उन आदर्शों का अनुसरण किया है जिनकी स्थापना उत्तरकालीन यूनानी कवि थियोक्रिटस, लैटिन कवि वर्जिल ('ब्यूकोलिका' में) तथा पुनर्जागरणकालीन उन फ्रांसीसी व इटालियन लेखकों द्वारा हुई थी जिन्होंने

इन दोनो कवियो के अनुकरण पर कविताएँ लिखी। यह काव्य बारह भागों में विभाजित है, वर्ष के बारह महीनों मे से प्रत्येक के लिए एक एक। पशु-चारण-काव्य की रूढ़िगत शैली—अर्थात् गड़रियो के वार्तालाप और गायन-के माध्यम से कवि ने किसी रहस्यपूर्ण रोजालिण्ड के प्रति अपने असफल प्रेम की चर्चा की है तथा साथ ही विविध नैतिक प्रश्नो पर विचार भी किया है। इसके अतिरिक्त कवि ने तत्कालीन धार्मिक समस्यायों पर भी कट्टर प्रोटेस्टेण्टवादी दृष्टिकोण से विचार-विमर्श किया है। सिडनी, जिसको उसने 'कैलेण्डर' समर्पित किया था, की मृत्यु पर उसने एस्ट्रोफेल' (१५८६) नामक जो शोकगीत लिखा उसमें भी पशुचारण-काव्य सबधी यही शैली प्रयुक्त की गयी है। प्रेम एव सौदर्य के सम्मान मे लिखी गयी 'फोर हिम्स' से कर्णमधुर पद्य लिखने की उसकी आश्चर्यजनक शक्ति का पता लगता है। अठासी सॉनेटो की माला 'ए मोरेटी' मे उसने एलिजाबेथ ब्वाएल के प्रति अपने प्रेम की प्रगति का वर्णन किया है। इसी एलिजाबेथ ब्वाएल से उसने १५९४ में विवाह किया। पेट्रार्क की शैली मे रचित इस प्रकार की सॉनेट-मालाएँ इंग्लैण्ड मे बडी लोकप्रिय हो गयी थं। इसका कारण वह प्रभाव था जो इटालियन साहित्य के प्रति चतुर्दिक फैले हुए उत्साह का परिणाम था। अपने विवाह से उसे 'एपीथलेमियन' लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई जो उसकी समस्त गौण कविताओ मे सबसे सुदर तथा "सर्वसम्मति से अग्रेजी भाषा का सर्वोत्कृष्ट विवाह-गीत" है।

२६. 'दि फ़ेयरी क्वीन'—'कैण्टरबरी टेल्स' की भाँति 'दि फेयरी क्वीन' भी अपूर्ण है क्योकि जिन बारह खण्डो की योजना स्पेन्सर ने बनायी थी उनमे से उसके जीवन-काल मे केवल छः तथा उसकी मृत्यु के उपरात सातवे के कुछ अंश प्रकाशित हुए। इस पर भी अपने वर्तमान रूप मे वह अग्रेजी की सबसे लबी और साथ ही महानतम कविताओ मे से है। स्पेन्सर के ही कथनानुसार उसकी योजना यह थी कि बारहो खण्डो मे से प्रत्येक अपने आप मे स्वतंत्र एव पूर्ण हो परंतु साथ ही वे एक विस्तृत, व्यापक योजना के अगो के रूप मे परस्पर-सबद्ध भी हों। अपने मित्र सर वाल्टट रैले को लिखे गये प्रस्तावनात्मक पत्र मे उसने अपनी योजना विस्तार से समझायी है। परियों की रानी लगातार बारह दिन तक अपना वार्षिक उत्सव मनाती है; इनमे से प्रत्येक दिन कोई सरदार उसकी आज्ञा से एक विशेष साहसिक कार्य करने का बीड़ा उठाता है, तथा इन्ही साहसिक कार्यो का वर्णन विभिन्न खण्डों में किया गया है। इसी बीच राजकुमार आर्थर परियों की रानी को स्वप्न में देखता है और उसकी खोज मे निकल पड़ता है। इसी आर्थर को कवि ने अपना प्रमुख पात्र चुना है

क्योंकि वह क्षात्रधर्म ('शिवैलरी') की महानतम ब्रिटिश उपाख्यान-माला का नायक था। रास्ते में उसकी भेंट उन विभिन्न सरदारों से होती है जो अपने-अपने साहसिक कार्यों की सिद्धि के लिए निकले थे। इस प्रकार प्रत्येक कथा मे संकट के समय आर्थर की उपस्थिति जो दिखायी गयी है वह एक विशेष उद्देश्य से पूर्ण है; कवि की विशाल योजना के विभिन्न भागों के बीच आर्थर की यह उपस्थिति उनको जोडने वाली कड़ी के समान है। 'दि फ़ेयरी क्वीन' में कवि ने प्रमुख रूप से इटालियन साहित्य के प्रेम विषयक महाकाव्यों का अनुकरण किया है तथा बाह्य रूप से विचार करने पर उन्ही की भाँति इसकी रचना भी क्षात्रधर्म संबधी साहित्यकी परंपरागत सामग्री के योग से हुई है। दैत्य, आग्नेय सर्प, बौने, जादूगर. अलौकिक बल एवं साहस वाले सरदार और आश्चर्य-जनक सुदरता से सम्पन्न संकटग्रस्त युवतियाँ ही इसके प्रमुख पात्र है, तथा इसका कथानक वशीकरणों, द्वंद्व युद्धों, प्रेमपूर्ण अशों एवं अनवरत युद्धो से परिपूर्ण है। परतु स्पेन्सर की प्रतिभा जहाँ एक ओर मध्ययुगीन प्रेमाख्यान साहित्य के प्रति अनुराग तथा पुनर्जागरण-कालीन-संस्कृति के द्वारा पोषित हुई थी, वहाँ इसके साथ ही उसके ऊपर धर्मसुधार का भी प्रभाव पड़ा था। इसी कारण जहाँ उसका प्रतिभावान् इटालियन गुरु एरियोस्टो केवल पाठकों के विनोद के लिए साहित्य-रचना करता था, वहाँ उसकी अपनी महान् रचना एक उच्च नैतिक व धार्मिक उद्देश्य द्वारा प्रेरित हुई थी। दूसरे शब्दों मे दि'फेयरी क्वीन' शुद्ध प्रेमाख्यान ही नही है बल्कि एक शिक्षाप्रद प्रेमाख्यान है। आदि से अंत तक कवि ने अपनी कथाओं का उन शिक्षाओं के माध्यम के रूप में प्रयोग किया है जिन्हे वह अपने पाठकों को देना चाहता था। इस उद्देश्य की पूर्ति उसने प्रेमाख्यान को दृष्टांत-रुपक का रूप देकर की है। उसके बारह सरदार अरस्तू के दर्शन के बारह प्रधान गुणो की मूर्ति है तथा प्रत्येक सरदार के साहसिक कार्यो का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि इसमे से प्रत्येक गुण को ससार के तुमुल कोलाहल में जिन संघर्षो और प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है तथा जो अनुभव होते है उनका ज्ञान प्रतीक रूप मे हो जाय। आर्थर उस दैवी शक्ति की मूर्ति है जिसकी सहायता से ये गुण अंत मे अपने समस्त शत्रुओ पर विजय प्राप्त करते हैं। इस प्रकार प्रथम खण्ड मे 'रेडक्रास वाले सरदार अथवा पवित्रता' की कथा है; दूसरे में 'सर गियान अथवा आत्मसयम', तीसरे मे 'ब्रिटोमार्टिस अथवा ब्रह्मचर्य', चौथे में 'कैम्बेल और ट्रायमंड अथवा मित्रता,' पाँचवें में 'आर्टेगाल अथवा न्याय-बुद्धि' तथा छठे मे 'सर कैलीडोर अथवा शालीनता' की कथा है। इस नैतिक-रूपक के साथ ही साथ स्पेन्सर की योजना में एक अन्य रूपक का भी समावेश हुआ है जिसे

हम ऐतिहासिक रूपक कह सकते हैं क्योंकि उस युग की राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं से इसका सीधा संबंध है। इस आख्यान के पात्र केवल नैतिक और बौद्धिक गुणों की मानव-मूर्तियाँ ही नही है बल्कि साथ ही साथ बहुधा उन संस्थाओं व व्यक्तियों का भी प्रतिनिधित्व करते है जो इन गुणों के प्रतिनिधि अथवा मूर्तिमान् स्वरूप थे। उदाहरण स्वरूप प्रथम खण्ड मे रेडक्रास वाले सरदार की कथा है जो लेडी यूना के माता-पिता को एक बड़े आग्नेय सर्प के बंधन से मुक्त करने के लिए निकलता है जिसने उन्हे वर्षों से एक पीतल के किले मे कैद कर रखा था। सामान्य-रूपक को दृष्टि से इसमें शैतान रूपी सर्प के हाथो से वास्तविक धर्म द्वारा मानवता की रक्षा किये जाने का वर्णन है, तथा सरदार को रास्ते में जो शत्रु और मित्र मिलते है वे उन शक्तियो के प्रतिनिधि है जो उद्धार के इस दैवी कार्य मे वास्तविक धर्म की सहायता अथवा विरोध करती है। परन्तु स्पेन्सर वास्तविक धर्म और अंग्रेजी प्रोटैस्टैण्टवाद को एकरूप मानता था। इसी प्रकार पोप तथा रोम के राजनीतिक मित्र, विशेषकर स्पेन तथा स्काटो की रानी मेरी जो इग्लैण्ड के शत्रु थे उन्हे वह वास्तविक धर्म का भी शत्रु मानता था। इस प्रकार दोनों रूपक साथ साथ चलते है। फलस्वरूप यह काव्य जहाँ एक ओर कवि के उपदेशों का माध्यम है वहाँ साथ ही साथ यह तत्कालीन घटनाओं एवं आन्दोलनो के प्रति कवि के दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करता है। क्योकि स्पेन्सर के समय की अनेक समस्याएँ अब जाग्रत समस्याएँ नही रह गयी है इसलिए यदि इस दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो उसकी कविता का बहुत-सा अंश केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकता है। उसका रूपक कभी-कभी अस्पष्ट, असगत तथा दुरूह हो गया है। बहुत से पाठक यह भी अनुभव करेगे कि इस रूपक के निरतर बलात्प्रवेश के कारण मस्तिष्क पर अनावश्यक एवं चिताजनक बोझ पड़ता है तथा इसके कारण काव्य का मानवीय महत्त्व कम हो जाता है। फिर भी, क्योंकि स्पेन्सर ने इस काव्य की रचना जीवन के अनेक महान प्रश्नों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए ही की थी इसलिए इस रूपक की पूर्ण रूपेण उपेक्षा कदापि नही करनी चाहिए।

'दि फेयरी क्वीन' के दोष अत्यंत स्पष्ट है। इसकी अत्यधिक कृत्रिमता इसका सबसे बड़ा दोष है। प्रेमाख्यान की प्राचीन शैली में जिन नये आध्यात्मिक अर्थो को व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है उनके बोझ के कारण स्थान-स्थान पर संपूर्ण ढ़ाँचा ही नष्ट होता हुआ सा प्रतीत होता है। फिर, स्पेन्सर का कहानी कहने का ढंग जरा शिथिल है तथा नाटकीय विवेक के अभाव के कारण वह अपने अवसरों का

पूरा लाभ नही उठा पाता। परंतु दूसरी ओर उसके गुण बहुसंख्यक और अत्यधिक चित्ताकर्षक है। उसका सौदर्य-ज्ञान आश्चर्यजनक है। उसकी चित्रण-शक्ति विस्मयकारी है। उसकी रचनाएँ एक श्रेष्ठ नैतिक-भावना से परिपूर्ण है। फिर प्राय: प्रत्येक पृष्ठ पर उस सर्वोच्च गुण का अनुभव होता है जिसे हम केवल काव्य-गुण कह सकते है––वह गुण जिसका विश्लेषण नही हो सकता परंतु फिर भी जिससे कोई भी सहृदय पाठक कभी अनभिज्ञ नही रह सकता। यही गुण है जिसके द्वारा हम यह समझ सकते है कि स्पेन्सर को "कवियों का कवि" क्यो कहा गया है और क्यो, जैसा कि हमें आगे चलकर मालूम होगा, उसने अठारहवी शताब्दी मे रोमाण्टिक पुनरुत्थान युगीन-साहित्य पर इतना उत्कर्षकारी प्रभाव डाला।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि वह केवल अपने युग का महानतम नाटकेतर कवि ही नही बल्कि अपने युग का सबसे प्रतिनिधि कवि भी था। वे सभी शक्तियाँ जिनके सहयोग से इंग्लैड एलिजाबेथीय युग मे महान् बना, उसकी रचना मे दृष्टिगोचर होती है। पुनर्जागरण और धर्मसुधार की भावना का मिश्रण, जो उस युग की प्रधान विशेषता है, जितना इस रचना मे मिलता हैं उतना अन्य किसी रचना मे नही। यह प्राचीन रचनाओ एव इटालियन साहित्य के मानववाद से तो ओतप्रोत है ही, साथ ही इसमे प्रत्येक स्थल पर प्रोटेस्टेण्टवाद के सुदृढ आदर्शवाद एव नैतिक गाभीर्य के भी दर्शन होते है।

इस युगातरकारी रचना को छोड़ने से पूर्व दो बातें स्पष्ट करना आवश्यक है। प्रथम यह, कि यह सोचना गलत होगा कि जिस भाषा मे यह लिखी हुई है वह स्पेन्सर के समय की वास्तविक अग्रेजी थी। चॉसर के साहित्य का उत्कट प्रेमी होने के कारण उसने अपनी एक स्वतंत्र बोली का प्रयोग किया है जिसको उसने जान बूझकर प्राचीनता का पुट दे दिया है। दूसरे यह, कि जैसे उसकी भाषा उसका अपना आविष्कार थी उसी प्रकार उसके द्वारा प्रयुक्त किया हुआ छंद भी उसका अपना आविष्कार था। यह छंद अब उसी के नाम से प्रसिद्ध है ('स्पेन्सेरियन स्टान्जा')। यह एक नौ पक्तियों का छद है जिसमे तुक का विधान इस प्रकार होता है—अ ब अ ब ब स ब स स। अंतिम पंक्तियों को 'अलेक्जेण्ड्राइन' कहा जाता है, अर्थात् वह पंक्ति जिसमे पाँच के स्थान पर छ 'आएम्बिक' पद हो। यह निश्चित रूप से नहीं ज्ञात है कि इस छद का जन्म किस प्रकार हुआ, परंतु संभव है, स्पेन्सर ने चॉसर द्वारा 'दि मॉक्स टेल' में प्रयुक्त किये गये आठ पंक्तियों वाले छंद (अ ब अ ब ब स ब स) मे केवल एक 'अलेक्ज़ेण्ड्राइन' जोड़कर इसको विकसित कर लिया हो।

२७. १५७९ से १६२५ तक के अन्य कवि—शेक्सपियर-युग के गौण कवियों की संख्या बहुत अधिक है। परंतु यहाँ उनकी नामावली देने से कोई लाभ नही होगा। हाँ, यह आवश्यक है कि हम उन विभिन्न काव्य-प्रकारों के विषय में कुछ जान लें जो उस समय लिखे जा रहे थे तथा उन कुछ लेखको के विषय मे भी जान ले जो एलिज़ाबेथीय साहित्य के कोष मे वृद्धि कर रहे थे।

'टॉटेल्स मिसलैनी' के उपरात उसी प्रकार के अनेक सग्रह प्रकाशित हुए जिनके शीर्षक बड़े ही विचित्र और कल्पनात्मक थे, उदाहरणस्वरूप, 'दि पैराडाइज ऑव डेण्टी डिवाइसेज' (१५७६), 'ए हैण्डफुल ऑव प्लेजेण्ट डिलाइट्स' (१५८४), ऐन आर्बर ऑव एमोरस डिवाइसेज़' (१५९७) तथा 'इग्लैड्स हेलिकॉन' (१६००) जो इन सबमें सबसे अधिक प्रसिद्ध है। गीतों की नियमित पुस्तको की भाँति, जो स्वंय भी बडी लोकप्रिय थी, इन सग्रहों में भी ऐसे बहुत से लेखको की अनेक मनोहारी कविताएँ है साधारण तौर से जिनके नाम तक भी न याद रहते। एक विशेष प्रकार का गीत, जिसका बहुत अधिक प्रचार था, सॉनेट था। वाएट और सरे के माध्यम से इटली से इसका प्रवेश होते ही यह तुरत अग्रेजी के प्रमाणित काव्य-रूपो मे माना जाने लगा। जैसा हम देख चुके है, बहुत से कवियो ने सॉनेट-मालाएँ लिखने की इटालियन प्रथा को भी अपना लिया। इस प्रकार को एक सॉनेट-माला-अर्थात् स्पेन्सर की 'एमोरेटी' का उल्लेख पहले ही हो चुका है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य सॉनेट-मालाएँ ये है—सिडनी की 'एस्ट्रोफेल ऐण्ड स्टेला, डेनियल की 'डिलाया,' ड्रेटन की 'आइडिया' तथा शेक्सपियर के 'सॉनेट्स'। ये सभी प्रेमसबधी कविताएँ है जिनमे इटालियन शैली मे प्रेम की प्रगति और उसकी अस्थिरताओ का वर्णन किया गया है। परतु जब कि कुछ कविताओ मे कवि के अनुभव व भाव वास्तविक है, अन्य मे वे केवल कल्पित है।

एक अन्य वर्ग जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है उन कविताओं का है जो राष्ट्रीय विषयों द्वारा प्रेरित हुई थी। इनका ऐतिहासिक महत्त्व इस कारण है कि इनमे उस समय की प्रबल देशभक्ति की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। विलियम वार्नर का 'ऐलबियन्स इग्लैण्ड' (१५८६–१६०६) दस हजार पक्तियो की कविता है तथा इसमे नोआ के समय से लेकर एलिजाबेथ प्रथम तक इग्लैण्ड का इतिहास दिया गया है। सैमुएल डेनियल ने 'दि सिविल वार्स बिटवीन दि टू हाउसेज ऑव लंकास्टर ऐण्ड यार्क' (१५९५–१६०९) नामक पद्यबद्ध इतिहास आठ भागों में प्रस्तुत किया। माइकेल ड्रेटन की आजकल जो प्रसिद्धि है वह सबसे अधिक 'दि बैटिल

ऑव एजिन कोर्ट' नामक भावपूर्ण गाथा के कारण है। परंतु उसने अन्य रचनाएँ भी की हैं जो इससे अच्छी तो चाहे न हो पर अत्यंत विशाल है, उदाहरणस्वरूप 'इंग्लैण्ड्स हीरोइकल एपिसिल्स' (१५९५), 'दि बैरन्स वार्स' (१६०३) तथा 'पॉलीयाल्बियॉन' (१६१२–२२) जो कि तीस भागों में इंग्लैण्ड का अत्यन्त विशाल काव्यमय वर्णन है तथा जिसको स्वयं ड्रेटन ने ठीक ही अपना "हरकुलीय परिश्रम" बताया है। हमे यह याद रखना चाहिए कि इस प्रकार की कविताएँ इंग्लैण्ड के प्रति उसी प्रगाढ़ रुचि एवं प्रेम का परिणाम थी जिसके कारण स्टो, हैरिसन तथा हॉलिनशेड जैसे विद्वानों ने कष्टसाध्य ऐतिहासिक अन्वेषण किये थे तथा जिसकी नाटकीय अभिव्यक्ति शेक्सपियर के इतिवृत्तात्मक नाटकों में हुई।

शेक्सपियर युग के जैकोबियन विभाग को हम पहले अवनति का काल कह चुके है। इससे हमारा तात्पर्य यह है कि उस समय एलिजाबेथकालीन प्रेरणा का ह्रास हो रहा था, उसका भाव-कोष समाप्त हो रहा था तथा उठती हुई पीढ़ी में अनुकरण की प्रवृति आरंभ हो रही थी। इस बीच में जॉन डन (१५७३–१६३१) द्वारा एक नयी प्रकार की कविता का सूत्रपात हो रहा था। एलिजाबेथ की मृत्यु के समय डन तीस वर्ष का था, परंतु उसका साहित्य मूल रूप से जेम्स के समय मे ही लिखा गया। डन ने जो एक प्रसिद्ध पादरी व उपदेशक था, गीतों, 'सॉनेटों', वैवाहिक-कविताओं, शोकगीतों एवं व्यंग्यात्मक-कविताओं की रचना की है। इन सभी रचनाओ की प्रधान विशेषताएँ है यथार्थ काव्यात्मक भावना, कर्णकटु छंद, तथा वे कृत्रिम और विलक्षण रूपक एवं भाषा के तोड़-मरोड़ जिन्हे "कल्पनाएँ" ('कन्सीट्स') कहा जाता है। डन का ऐतिहासिक महत्त्व इस बात में है कि उसने काव्य में आध्यात्मिक' ('मेटा-फिजिकल') सप्रदाय का श्रीगणेश किया जिसके विषय में हम आगे अभी और लिखेगे।

टिप्पणी––शेक्सपियर-युगीन काव्य की सारिणी देखो आठवे अध्याय के अन्त में।

अध्याय ७

शेक्सपियर-युग

नाट्य-साहित्य

२८. **एलिजबेथीय रोमाण्टिक नाट्य**––'गॉर्बोडक की रचना के उपरांत लगभग पचीस वर्ष का समय अंग्रेजी नाट्य में अत्यधिक अव्यवस्था का युग था। एक ओर वे विद्वान् थे जिनकी महत्त्वाकांक्षा थी कि इंग्लैण्ड में 'सेनेकन' अथवा 'क्लासिकल' नाट्य को अपनाया जाय जिसका एक उदाहरण सैकविल और नॉर्टन का दुखांत 'गॉर्बोडक' था। उनके प्रयासों का समर्थन सर फिलिप सिड्नी जैसे उन मानववादियों ने किया जिनका विश्वास था कि वास्तविक रूप से कलात्मक नाट्य-रचना का केवल एक ही मार्ग है और वह है प्राचीन नाटककारों का पूर्ण अनुकरण। दूसरी ओर वे लेखक और अभिनेता थे जो विविध प्रकार की अशिक्षित जनता को मनोरंजन प्रदान करते थे और जो यह जानते थे कि उनके दर्शक कला की सूक्ष्मताओ की परवाह कम और उत्तेजनापूर्ण कथानक एवं ओजस्वी अभिनय की परवाह ज्यादा करते है। इसी कारण उन्होंने 'सेनेकन' नाट्य की शिष्ट परंपराओं का पूर्ण बहिष्कार कर दिया तथा विभिन्न नवीन प्रयोग किये। ये सभी प्रयोग अत्यन्त अपरिपक्व थे तथा ऐसे नाट्य की दिशा मे हो रहे थे जो नाट्य-रचना के पूर्णतया भिन्न विचारो पर आधारित था। इन प्रयोगों को प्राचीन अंग्रेजी रंगमच के नाटकीय तत्त्वों का ही स्वाभाविक विस्तार माना जा सकता है। 'सेनेकन' शैली की विपरीत परिस्थितियों मे जिस प्रकार के नाट्य का विकास संभव था उससे अधिक स्वच्छंद एवं व्यापक नाट्य की प्राप्ति के लिए तत्कालीन लेखक अँधेरे मे मार्ग ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे थे। इस प्रकार मानववादियों और अंग्रेज जनता की प्रबल राष्ट्रीय रुचि के बीच थोड़े दिनों के लिए एक संघर्ष उठ खड़ा हुआ। जहाँ मानववादी 'क्लासिकल' परम्परा के पक्ष मे थे और उसे जनता के ऊपर लादना चाहते थे, वहाँ दूसरा पक्ष एक बिल्कुल भिन्न वस्तु की माँग कर रहा था। अंत में विजय राष्ट्रीय पक्ष की ही हुई, और शेक्सपियर के नाटय-रचना प्रारंभ करने के पर्व ही,' 'रोमण्टिक' नाट्य की

स्थापना निश्चित रूप से हो चुकी थी। इस 'रोमाण्टिक' नाट्य की स्थापना का कार्य शेक्सपियर के अत्यन्त पूर्ववर्त्ती लेखकों ने किया। इन लेखको की शिक्षा विश्वविद्यालय मे हुई थी तथा प्रशिक्षण प्राचीन रचनाओं रूपी विद्यालय में, जहाँ उन्होने नाट्य-रचना के विषय मे बहुत कुछ सीखा था। उन्होंने प्राचीन रचनाओं से जो कुछ सीखा था उससे लाभ तो उठाया परंतु उन रचनाओं के नाट्य-रचना सबधी सिद्धातो का बहिष्कार कर दिया तथा लोक-प्रिय रगमंच की स्वच्छद परम्परा को ही आगे बढ़ाया।

परन्तु उनके साहित्य पर विचार करने के पूर्व हमे निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिए कि तथाकथित "क्लासिक" और "रोमाण्टिक" नाटकों में क्या भेद है।

यहाँ जिन बातों से हमारा सबध है उन पर अपना ध्यान सीमित रखते हुए हम 'क्लासिक' नाट्य के सिद्धातों को सक्षेप मे तीन शीर्षको के अंतर्गत रख सकते है: (१) इसमे विषय एव भाव की एकता का कठोरतापूर्वक पालन किया जाता था, तथा फलस्वरूप इसमे सुखांत एव दुखांत के क्षेत्र पूर्ण रूप से पृथक रखे गये। किसी दुखात का आदि से अत तक दुखात होना आवश्यक था तथा करुण रस का एक उचित परिमाण भी बनाये रखना था। उसमे किसी हास्यात्मक घटना का समावेश नही हो सकता था। इसी प्रकार सुखात का भी आदि से अत तक सुखात होना आवश्यक था तथा उसकी रचना मे किसी करुण तत्त्व का प्रवेश नही हो सकता था। (२) नाटकीय क्रिया-कलाप या तो बिल्कुल नही होता था या फिर बहुत कम, क्योकि जिन घटनाओं के सयोग से कथानक की रचना होती थी वे सभी रगमच के बाहर घटित होती थी तथा दर्शकों के सामने सवाद एव इतिवृत्त के माध्यम से केवल उनका वर्णन किया जाता था। (३) कम से कम सिद्धात मे तो वस्तु, काल एव स्थल का सकलन-त्रय ही नाट्य-रचना को सदैव नियत्रित करता था चाहे व्यवहार मे ऐसा न हो पाये। अत्यंत सक्षेप मे इससे हमारा आशय यह है कि (अ) किसी नाटक की सपूर्ण कथा एक ही दिन और (ब) एक ही दृश्य (स्थल) तक सीमित रहना आवश्यक था तथा (स) यह भी कि उसमे केवल एक ही कथा हो अर्थात् किसी प्रकार के गौण कथानक अथवा अप्रधान घटनाएँ न हों। ये सिद्धात एथेंस के दुखात-लेखको की रचना शैली तथा महान यूनानी आलोचक अरस्तू की शिक्षाओं से नि:सृत हुए थे। वैसे सत्य तो यह है कि यह केवल लोगो का विचार ही था कि इन सिद्धान्तो का स्रोत उपर्युक्त था। परन्तु आधुनिक नाट्य मे ये लैटिन कवि सेनेका के नाट्कों के माध्यम

से आये जिनमें इनका प्रदर्शन अत्यंत दृढ़ रूप में किया गया था। इस प्रकार जिस विशिष्ट प्रकार के नाट्य का समारंभ करने का प्रयत्न मानववादी कर रहे थे उसका स्वरूप अब स्पष्ट हो गया होगा और अब हम इस स्थिति में भी है कि उस विरोधी प्रकार की सामान्य विशेषताओं को समझ सकें जिसको शेक्सपियर के पूर्ववर्ती लेखकों ने इसके स्थान पर स्थापित किया। रोमाण्टिक अर्थात् शेक्सपियरीय नाट्य में (१) कथाावस्तु एवं रस की विविधता का स्वच्छंद उपयोग होता है तथा बहुधा करुण और हास्यपूर्ण घटनाएँ एवं पात्र उसी नाटक में मिले हुए रहते है। (२) यह अवश्य है कि इसमें क्रिया-कलाप और इतिवृत्त दोनों की सहायता ली जाती है परतु मूल रूप से यह घटना-प्रधान नाट्य है क्योकि इसमें लगभग प्रत्येक घटना रंगमच पर प्रदर्शित की जाती है। (३) इसमे संकलन-त्रय का भी बहिष्कार कर दिया जाता है तथा (अ) कथा का विस्तार आवश्यकता पड़ने पर महीनों तथा वर्षो तक मे होता है, (ब) जब आवश्यकता हो तब दृश्य परिवर्तित हो जाता है, कभी-कभी तो एक शहर से दूसरे शहर में या एक देश से दूसरे देश मे भी दृश्य का स्थानांतरण हो जाता है तथा (स) प्रधान विषय से संबधित गौण कथानकों एवं अप्रमुख घटनाओं का भी उपयोग होता है।

२९. **शेक्सपियर के पूर्ववर्ती नाटककार**––इससे स्पष्ट है कि ऐतिहासिक दृष्टि से उन नाटककारों की रचनाओं का विशेष महत्त्व है जिन्होने शेक्सपियर के थोड़े ही समय पूर्व उस स्वच्छंद एवं मृदुल नाट्य की विजय निश्चित कर दी जिसको वह बाद मे स्वय अपनाने वाला था तथा जिन्होने इस प्रकार उसके लिये मार्ग तैयार कर दिया। एक प्रकार से ये लेखक एक ही वर्ग के है तथा सामान्यतः वे 'युनिवर्सिटी विट्स' (अर्थात् 'विश्वविद्यालय-शिक्षित विद्वानो') के नाम से विख्यात है। जैसा इस नाम से ही प्रकट है, इन सभी व्यक्तियों को विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त हुई थी तथा इस प्रकार विद्वत्ता और पांडित्य के दो महान् केन्द्रो मे से किसी न किसी मे वे नवीन ज्ञान के व्यक्तिगत सम्पर्क में आये थे एवं उसकी भावना को आत्मसात भी किया था। परंतु केवल एक को छोड़कर सभी ने अपनी प्रतिभा लोकप्रिय रंगमच की श्रीवृद्धि में लगायी तथा यह निश्चित है कि जो नाट्य उन्होने प्रस्तुत किया उसके रूप-निर्धारण में उनके दर्शकों की दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त रूचियों ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया। काल क्रमानुसार इन लेखकों के नाम इस प्रकार है:— जॉन लाइली (१५५४?–१६०६), टॉमस किड (१५५७?–१५९५?), जॉर्ज-पील (१५५८?–१५९७), टॉमस लॉज (१५५८?–१६२५), रॉबर्ट ग्रीन

(१५६० ?–१५९२), क्रिस्टफ़र मार्लो (१५६४–१५९३) तथा टॉमस नैश (१५-६७–१६०१)।

इन लेखकों के नाटकों की सूचीमात्र देने से अधिक लाभ नही होगा और उनकी रचनाओं का विस्तृत परीक्षण इस सक्षिप्त रेखाचित्र की योजना के प्रतिकूल होगा। अतएव हमें उनका विचार सामूहिक रूप से करना होगा और इस सामान्य कथन से ही संतोष करना होगा कि इनमे से प्रत्येक ने नाट्य-साहित्य के उन रूपों को विकसित करने में कुछ न कुछ योगदान अवश्य किया जिनको आगे चलकर शेक्सपियर ने ग्रहण किया। इनमें से केवल दो के संबंध में कुछ और बातें भी कहना आवश्यक है क्योकि एक तो साहित्यिक इतिहास में उनका एक विशिष्ट महत्त्व है और दूसरे उन्होंने स्वयं शेक्सपियर पर सीधा प्रभाव डाला। ये लेखक है लाइली और मार्लो।

लाइली की सबसे अधिक प्रसिद्धि 'यूफ्यूज़' नामक गद्य-आख्यायिका के लेखक के रूप में है। परंतु उसके विषय मे हम अगले अध्याय में बात करेंगे, यहाँ हमारा संबंध केवल उसके नाट्य-साहित्य से है जिसमे आठ सुखांत हैं। इनमे सर्वश्रेष्ठ है 'कम्पास्प', 'इण्डीमियन' और 'गलैथिया'। ये सभी राजदरबार में खेले जाने के लिए लिखे गये थे तथा इनका प्रधान आकर्षण न कथानक है, और न नाटकीय परिस्थितियाँ, यहाँ तक कि चरित्र-चित्रण भी नहीं, बल्कि उनका प्रधान आकर्षण है उनकी भाषा, अर्थात कथोपकथन की विदग्धता, प्रभावोत्पादकता, निपुणता एवं सौजन्य ही इनके आकर्षण है। ऐसे समय में जब सार्वजनिक रंगमंच का हास्य प्रायः असस्कृत और भोड़ा हो जाया करता था, लाइली ने सुखात नाट्य को एक बौद्धिक रूप देने मे सहायता की। चातुर्यपूर्ण प्रत्युत्तर में निपुणता तथा श्लेष, क्लिष्ट-कल्पनापूर्ण-रूपक और सभी प्रकार की शाब्दिक आतिशबाजियो के निरंतर प्रयोग की ही भाँति इस उपर्युक्त गुण मे भी उसने शेक्सपियर का पूर्वाभास दिया। शेक्सपियर के प्रारंभिक सुखांत, यथा लव्ज़ लेबर्स लॉस्ट तथा 'ए मिडसमर-नाइट्स ड्रीम' लाइली के उदाहरण द्वारा ही प्रेरित हुए है। लाइली से शेक्सपियर ने यह भी सीखा कि किसी राजदरबार से संबंधित प्रधान कथानक को अशिष्ट भूलों एवं विदूषकों की मूर्खता से संबंधित घटनाओं से किस प्रकार संयुक्त किया जाय। इसका उदाहरण हमें उपर्युक्त नाटकों मे मिलता है। इन बातों में लाइली ने एक परम्परा स्थापित कर दी जिसका अनुसरण शेक्सपियर व अन्य लेखकों ने किया। यह निर्विवाद है कि सुखांत के क्षेत्र में वह शेक्सपियर का प्रथम गुरु था।

मार्लो का ऐतिहासिक महत्त्व और भी अधिक है। वह देदीप्यमान कल्पना एवं अपरिमित शक्तियोवाला व्यक्ति था, यद्यपि उसकी ये शक्तियाँ अनियंत्रित थी। उसका जीवन अत्यंत अनियमित और उच्छृंखल था, तथा युवावस्था में ही वह शराबियों के एक झगड़े में मारा गया। स्वभाव से वह नाटककार की अपेक्षा गीतिकार अधिक था। इस पर भी उसके 'टैम्बरलेन दि ग्रेट', 'डॉक्टर फ़ास्टस', 'दि ज्यू ऑव माल्टा' तथा 'एडवर्ड दि सेकण्ड' के कारण शेक्सपियर के पूर्ववर्त्ती नाटककारों में उसका स्थान सर्वोच्च है, यद्यपि यह सत्य है कि ये नाटक गर्जन-तर्जन एवं अतिशयोक्ति से परिपूर्ण है जिसके कारण बहुधा उनका सौंदर्य नष्ट हो गया है। इन नाटकों मे उसने वास्तव में अपने आसन्न उत्तराधिकारियों के लिए दुखात एवं इतिवृत्त नाट्य का रूप निर्धारित कर दिया तथा इन्ही नाटकों के द्वारा उसने 'रोमाण्टिक' नाट्य एवं सार्वजनिक रंगमंच में अतुकात छंद का प्रवेश भी कराया जिसका प्रयोग अभी तक 'क्लासिक' और व्यक्तिगत रूप से अभिनीत नाटकों तक ही सीमित था। शेक्सपियर उससे भलीभाँति परिचित रहा होगा और संभवतः उसके सहयोग मे उसने नाट्य-रचना भी की। यह स्पष्ट है कि वह पहले-पहल मार्लो द्वारा अत्यंत प्रभावित हुआ। उसकी कथात्मक कविता 'वीनस ऐण्ड एडोनिस' कम से कम आशिक रूप में तो अवश्य ही मार्लो की 'हीरो ऐण्ड लियैण्डर" द्वारा प्रेरित हुई है। उसके 'रिचर्ड तृतीय' और 'रिचर्ड द्वितीय' स्पष्टतः इतिवृत्त नाट्य के उस आदर्श पर आधारित है जिसकी स्थापना मार्लो के 'एडवर्ड दि सेकण्ड' में हुई थी। 'दि मर्चेण्ट ऑव वेनिस' तक मे ऐसी बहुत सी बाते है जिनसे यह प्रकट है कि जब शेक्सपियर ने इस नाटक की रचना की उस समय उसके ध्यान में 'दि ज्यू ऑव माल्टा' था।

३०. शेक्सपियर का जीवन-वृत्त––विलियम शेक्सपियर का जन्म वारविक शायर के 'स्टैटफर्ड-ऑन ऐवन' नामक स्थान में १५६४ मे २३ अप्रैल को या उसी के लगभग हुआ था। वह नगर के एक सम्पन्न व्यापारी का पुत्र था जो थोड़े ही समय बाद उसी नगर का 'हाई बेलिफ़' अर्थात् 'मेयर' हो गया। यद्यपि इस बात का कोई लिखित प्रमाण नहीं है, फिर भी यह लगभग निश्चित है कि अपने वर्ग के अन्य लड़कों की भाँति वह भी स्थानीय ग्रामर स्कूल में पढ़ने गया जो कि अपनी तरह की संस्थाओं में अत्यंत उत्कृष्ट था और जहाँ उसे लैटिन और अंकगणित सिखायी गयी। यद्यपि वह कभी विद्वान् तो न बन सका, परंतु स्कूल में उसके इन कुछ वर्षों ने उसे यथासाध्य अच्छी शिक्षा प्रदान कर दी। शीघ्र ही उसके पिता आर्थिक संकटों में पड़ गये और

जब वह लगभग चौदह वर्ष का था उसे स्कूल से हटा लिया गया जिससे वह स्वयं भी धनोपार्जन करके परिवार की सहायता कर सके। उसका रोजगार क्या था, इस विषय में हमें कुछ भी ज्ञात नही है। उन्नीसवें वर्ष उसने ऐन हैथवे से विवाह किया जो उससे आठ वर्ष बड़ी थी तथा जो पड़ोस के एक गाँव शॉटरी के एक सम्पन्न किसान की कन्या थी। यह विवाह बड़ी जल्दबाजी में किया गया तथा विवेकशून्य था और ऐसा प्रतीत होता है कि उसका विवाहित जीवन सुखी नही था। उसके तीन बच्चे हुए--सूजाना, जूडिथ और हैमनेट जो कि जुड़वे थे। किंवदन्ती यह है कि इस बीच में वह बुरी संगत में पड़ गया तथा चार्लकोट हाल के वनों से हिरनो की चोरी करने के मामले में वह घर से भागने को विवश हुआ। यह नही कहा जा सकता कि इस किवदन्ती में सत्य है या नही, हो भी सकता है और नहीं भी। यह निश्चित है कि विवाह के कुछ वर्ष उपरांत १५८७ के लगभग अपने जन्मस्थान को छोड़कर वह लंदन में भाग्य आजमाने चल पड़ा। इस समय 'युनिवर्सिटी विट्स' की रचनाओ के कारण नाटक की लोकप्रियता बढ़ रही थी। शीघ्र ही शेक्सपियर रंगमंच की ओर मुड़ा। पहले वह अभिनेता बना और फिर नाटककार (यद्यपि बाद में भी उसने अभिनय करना छोड़ा नही)। ग्रीन द्वारा अपनी मृत्यु-शैया पर लिखे हुए पैम्फ्लेट में आये हुए एक कुविचार-पूर्ण प्रसंग से यह प्रकट है कि १५९२ में वह (शेक्सपियर) एक सफल लेखक के रूप में भलीभाँति विख्यात था। इसके अनंतर वह लंदन में बीस वर्ष से भी अधिक समय तक रहा जहाँ वह खूब परिश्रम करता और साल में औसतन दो नाटक लिखता था। इस प्रकार उसके धन और यश दोनों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। उस समय के दो अनुगामी थियेटरो--'ग्लोब' और 'ब्लैकफ़ायर्स' में वह हिस्सेदार बन गया तथा स्टैटफर्ड और लदन में जायदाद भी खरीद ली। परतु जो वर्ष सम्पन्नता लेकर आये वही पारिवारिक विपत्तियों के भी वाहक सिद्ध हुए। उसका इकलौता लड़का १५९६ मे मर गया; १६०१ मे उसके पिता का देहात हुआ; १६०७ मे उसके छोटे भाई एडमण्ड जो स्वय अभिनेता था, की मृत्यु हुई और १६०८ में उसकी माँ "ईश्वर को प्यारी" हो गयी। फिर १६१० और १६१२ के बीच किसी समय वह स्ट्रैटफर्ड चला गया जहाँ उसने एक घर खरीद लिया था जिसका नाम 'न्यूप्लेस' था तथा जो नगर का सबसे विशाल घर था। उसकी बड़ी लड़की १६०७ में ही डा० जॉन हाल से विवाह कर चुकी थी जो बाद में डाक्टर के रूप में काफ़ी प्रसिद्ध हुआ; १० फ़रवरी, १६१६ को जूडिथ का विवाह टॉमस क्विनी के साथ हुआ

जिसके पिता कवि के घनिष्टतम मित्रों में से थे। इस समय तक शेक्सपियर की तन्दुरुस्ती बिल्कुल चौपट हो चुकी थी और उसी वर्ष २३ अप्रैल को उसकी मृत्यु हो गयी।

शेक्सपियर की जीवनी निश्चित रूप से यह सिद्ध करती है कि चॉसर की भॉति वह भी स्वप्न-द्रष्टा न था, बल्कि पूर्णरूपेण व्यावहारिक व्यक्ति था। जब वह लदन पहुँचा, तब निर्धन और असहाय था, परंतु जब उसने लंदन छोड़ा, उस समय वह धनवान् हो गया था तथा सभी जगह उसका सम्मान होता था, और उसकी सारी सम्पत्ति उसके अपने ही हाथो की कमाई थी। इस प्रकार न केवल उसके व्यक्तिगत चरित्र पर बल्कि उसकी रचनाओ पर भी अत्यधिक प्रकाश पड़ता है जिनमें सर्जनात्मक कल्पना की महान् शक्तियों का संयोग, यथार्थ के प्रति आश्चर्य-जनक भावना, स्वस्थ व्यावहारिक बुद्धि एवं व्यावहारिक ससार से विस्तृत और विविध परिचय के साथ हुआ है। वास्तव में उसकी सर्जनात्मक कल्पनाशक्ति इन्ही गुणो पर आधारित है। जो विद्वत्ता उसके नाटकों में दिखाई देती है और जिसके विषय मे इतना अधिक लिखा जा चुका है, उसके संबंध मे यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह किसी प्रशिक्षित एव विशुद्ध विद्वान् या दूसरे शब्दो में, किसी बेकन या बेन जॉनसन, की विद्वत्ता नही है; बल्कि यह अनेक बातों का वह विस्तृत और विविध ज्ञान है जो एक असामान्यतः सर्वग्राही मस्तिष्क द्वारा पुस्तकों एवं मनुष्यो के साथ एक दीर्घकालीन सम्बंध के दौरान मे, ऐसे समय मे सहज ही संचित किया गया था जब समस्त सामाजिक संसर्ग तथा संपूर्ण साहित्य समान रूप से पुनर्जागरण की 'क्लासिक' भावना से ओतप्रोत था। अनुवादों के माध्यम से प्राचीन साहित्य की निधियों तक उसकी पहुँच आसानी से हो गयी। जिन परिस्थितियों में वह रहा और साहित्य-रचना कर रहा था उनका बौद्धिक-वातावरण नवीन विचारो से परिपूर्ण था तथा असीमित रूप से उत्साहवर्धक भी था। फिर शेक्सपियर सबसे अधिक ऐसी सुदर प्रतिभा से सम्पन्न था कि वह अपने सामने आने वाली प्रत्येक वस्तु से अधिकाधिक लाभ उठाना जानता था।

३१. शेक्सपियर की रचनाएँ--कुछ विविध तथा संदेहास्पद रचनाओं को छोड़कर शेक्सपियर के नाटकेतर-काव्य में 'वीनस ऐण्ड एडोनिस' तथा 'लुक्रीस' नामक दो कथात्मक कविताएँ तथा १५४ सॉनेटों की एक परंपरा है। प्रथम दोनों रचनाओं में उस युग की क्लासिक भावना अत्यत स्पष्ट है। सॉनेटों मे से प्रथम १२६ तो किसी पुरुष को संबोधित है, परंतु शेष या तो किसी स्त्री को संबोधित हैं अथवा

उनमें उस स्त्री का प्रसंग है। इन सॉनेटों के संबंध में अत्यधिक वाद-विवाद हुआ है और उनके विषय मे सभी कुछ अस्पष्ट है। उनका उद्देश्य अपूर्ण प्रेम एवं टूटी हुई मैत्री का भावनात्मक इतिहास वर्णन करना है, परंतु इस विषय में भी हमें इस बात का निश्चय नही है कि उनमे वास्तविक बातो का वर्णन है या काल्पनिक बातों का। निश्चित केवल यह है कि कुछ स्थलो पर उनमे उस युग के सर्वश्रेष्ठ गीति काव्य के दर्शन होते है।

शेक्सपियर की नाटकीय रचनाओं के विषय में साधारण रूप से जो सर्वसम्मत मत है उसके अनुसार उसने कुल मिलाकार ३७ नाटकों की रचना की, यद्यपि इनमें कई एक की प्रामाणिकता मे सदेह है और कम से कम कुछ के विषय में तो यह स्पष्ट है कि उसके द्वारा रचित कहे जाने वाले नाटको में उसका कार्य केवल प्राचीन सामग्री के सशोधन तक ही सीमित था। १५८८ के लगभग उसने नाट्य-रचना प्रारभ की और १६१२ के लगभग समाप्त की। इस प्रकार वह लगभग २४ वर्ष तक नाट्य-रचना मे व्यस्त रहा। अतएव हम कह सकते है कि साधारण रूप से उसकी नाट्य-रचना के १२ वर्ष सोलहवी शताब्दी मे बीते और १२ वर्ष सत्रहवी मे। शेक्सपियर के आलोचक एकमत से इन चौबीस वर्षो को चार कालो मे विभाजित करते है। यदि इन कालों के अतर्गत नाटकों को यथासंभव उनके अभिनय-क्रम के अनुसार रखा जाय तो हमे उसकी प्रतिभा एव कला के विकास का ज्ञान हो सकता है तथा साथ ही उन महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो का भी ज्ञान हो सकता है जो उसके विचारो और शैली मे आते गये। अतएव मै उसके नाटको के नाम यथासभव कालक्रमानुसार दूँगा तथा साथ ही उन विशिष्ट लक्षणो का भी सकेत करूँगा जो प्रत्येक काल की रचनाओ को विशेषता प्रदान करते है।

(i) १५८८–९३—प्रारंभिक एवं बहुत अशों मे प्रयोगात्मक रचनाओं का काल। शेक्सपियर का लेखनाभ्यास प्राचीन नाटकों के संशोधन से प्रारंभ होता है, उदाहरणार्थ, 'हेनरी षष्ठ' के तीन भाग तथा 'टाइटस ऐण्ड्रोनिकस'। उसके प्रथम सुखात भी इसी काल के है जिनमें लाइली का प्रभाव स्पष्ट है। ये है 'लव्ज लेबर्स लॉस्ट,' 'दि टू जेंटिलमेंन ऑव वेरोना', 'दि कॉमेडी ऑव एरर्स' तथा 'ए मिड्समर नाइट्स ड्रीम'। इतिवृत-नाट्य मे उसका प्रथम प्रयास,' 'रिचर्ड तृतीय' जो कुछ-कुछ मार्लो की याद दिलाता है, तथा 'रोमियो ऐण्ड जूलिएट' नामक दुखांत भी, जो इस काल का अकेला दुखांत है, इसी काल की रचनाएँ है। इस काल की रचनाओं की संगठन-व्यवस्था अत्यंत सामान्य तथा मानव जीवन का चित्रण

अत्यत स्थूल है। विचारों एव चरित्र-चित्रण मे गहराई की कमी है, तथा कला स्पष्ट रूप से अपरिपक्व है। इस काल की रचनाओं की शैली संबंधी प्रमुख विशेषताओं में से कुछ है कथोपकथन में तुकांत का आधिक्य, अतुकान्त छंद की कठोरता, तथा श्लेष, क्लिष्ट कल्पनाओं एव अन्य कृत्रिमताओ का निरंतर प्रयोग।

(ii) १५९४–१६००—महान सुखान्तो एवं इतिवृत्त-नाटको का काल। इस काल की रचनाएँ ये है :—'रिचर्ड द्वितीय', 'किग जॉन', 'दि मर्चेण्ट ऑव वेनिस', 'हेनरी चतुर्थ' (भाग एक व दो), 'हेनरी पंचम', 'दि टेमिग ऑव दि श्रू', 'दि मेरी 'वाइव्ज ऑव विडसर', 'मच एडू अबाउट नथिंग', 'ऐज यू लाइक इट' तथा 'ट्वेल्फ्थ नाइट'। इस काल तक शेक्सपियर अपने प्रारंभिक गुरुओ के प्रभाव से मुक्त हो चुका था, उसकी रचनाएँ अब स्वतंत्र हो गयी तथा उनमे रचना-शक्ति एव प्रविधि का अत्यधिक विकास दृष्टिगोचर होता है। ये रचनाएँ प्रारंभिक काल की अपेक्षा अत्यधिक वृहत है तथा संसार एव मानवीय मनोविकारों का जो ज्ञान उनमे प्रत्येक स्थल पर परिलक्षित होता है वह पहले की अपेक्षा असीमित रूप से अधिक गहन है। चरित्र-चित्रण और हास्य गंभीर एव सूक्ष्म हो गया तथा विचारो के भार में भी बडी वृद्धि हो गयी अर्थात् वे अब हल्के, निम्नकोटि के नही रहे। प्रारभिक शैली मे जो अपरिपक्वताएँ थी उनसे शेक्सपियर मुक्त हो गया है अथवा शीघ्रता से मुक्ति की ओर अग्रसर है। युवावस्था की अपूर्णता, उच्छृखलता एव परिश्रम का स्पष्ट आभास आदि दोष भी लुप्त हो गये। इन रचनाओ में शेक्सपियर ने तुकांत का भी त्याग कर दिया और उसके स्थान पर गद्य एवं अतुकांत पद्य का आधार लिया। अतुकात छन्द स्वय भी कठोरता से मुक्त हो कर निर्बाध एव मृदुल हो गया।

(iii) १६०१–१६०८—महान् दुखांतों तथा गंभीर अथवा निरुल्लास सुखातो का काल। इस युग मे शेक्सपियर की सभी शक्तियाँ—नाटकीय, बौद्धिक तथा अभिव्यंजनात्मक—अपने उच्चतम शिखर पर पहुँची। यह उसकी सर्वोत्कृष्ट रचनाओं का काल है। परन्तु जो बात सबसे महत्त्व की है वह है वह असामान्य परिवर्तन जो उसकी रचनाओं की पूर्ण आत्मा मे हो गया है। इस काल मे उसका ध्यान मानवीय अनुभव के अंधकारपूर्ण पक्ष पर केंद्रित था तथा इसके बाहर की किसी भी बात पर उसका ध्यान नही था। उसके नाटक उन विनाशकारी मनोभावों पर आधारित हैं जो संसार की नैतिक व्यवस्था की जड़े तक हिला देते हैं तथा अपराधी और निरपराध दोनों को समान रूप से विनष्ट करते हैं। उसके कथानकों के प्रमुख

आधार हैं मनुष्यों के पाप एवं उनकी दुर्बलताएँ। सिद्धांत की दृष्टि से जिन रचनाओं को सुखांत कहा जाता है उनमें भी जोर अशुभ पर ही है, तथा उनका प्रधान स्वर या तो गंभीर है या फिर दारुण, कोपपूर्ण। इस काल के, नाटक निम्नलिखित हैं:— 'जूलियस सीज़र', 'हैमलेट', 'आल्स वेल दैट एण्ड्स वेल,' 'मेजर फॉर मेजर,' ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिडा,' 'ओथेलो', 'किग लियर', 'मैक्बेथ,' 'ऐण्टनी ऐण्ड क्लियोपैट्रा', 'कोरियोलेनस' और 'टाइमन ऑव एथेन्स'।

(iv) १६०८–१२—उत्तरकालीन सुखांतों अथवा नाटकीय प्रेमाख्यानो का काल। हमे शेक्सपियर की रचनाओ की भावना मे पुन. एक अचानक परंतु स्पष्ट परिवर्तन के दर्शन होते है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके कल्पना-जगत् पर जो घने बादल छाये हुए थे वे जैसे हट गये हो और सूर्यास्त के समय आकाश निर्मल हो गया हो। इन अतिम नाटको मे भी आधार वही शोक के मनोविकार का ही है, परतु अब अशुभ की विजय नही होने पाती वरन् शुभ उसका नियंत्रण करता है तथा अत मे उस पर विजयी होता है। आदि से अंत तक उनका स्वर अत्यत मृदुल एवं सौम्य है। परंतु साथ ही उनमे शेक्सपियर की नाटकीय शक्तियों के ह्रास के भी पूर्ण दर्शन होते है। उनमे प्राय. कथानक के संगठन मे असावधानी पायी जाती है तथा चरित्र-चित्रण भी सतोषप्रद नही है। शैली एवं छंद के विषय मे भी उनकी तुलना इसके पूर्व के दस वर्ष की रचनाओं से नही हो सकती। इस काल के नाटकों में से 'सिम्बेलीन', 'दि टेम्पेस्ट' तथा 'दि विण्टर्स टेल' तो पूर्ण रूप से शेक्सपियर के ही लिखे हुए है, परंतु 'पेरिक्लीज' और 'हेनरी अष्टम' केवल आंशिक रूप से उसकी रचनाएँ है। इनमें से अंतिम नाटक फ्लेचर (देखो§३४) द्वारा पूर्ण किया गया, जो कि उसका समकालीन और मित्र था।

इस अत्यत विवादग्रस्त प्रश्न का पूर्ण उत्तर संक्षेप मे देना असंभव है कि शेक्सपियर की रचनाओ में उसके जीवन एव चरित्र की अभिव्यक्ति कहाँ तक हुई है। यह निश्चित है कि हम उन लोगो के निर्णय को नही मान सकते जो यह कहते है कि वह ऐसा पक्का नाटककार था कि उसकी रचनाओ मे उसके अपने विचारों और भावो का कोई चिन्ह नही मिलता। इसके विपरीत मेरा विश्वास यह है कि उसकी रचनाओं से लेखक के विषय मे बहुत कुछ ज्ञात हो सकता है। परतु हम यह नहीं जानते कि जो परिवर्तन हमे उसकी रचनाओ मे क्रमिक अवस्थाओ मे दिखाई देते है वे उसके अपने अनुभवो के परिणाम थे या नही। उदाहरणार्थ हमें इसका ज्ञान नही है कि क्या उसने दुखांत इसलिए लिखे कि उसका जीवन दुखी था तथा फिर सुखांत की

ओर क्या वह इसलिए मुड़ा कि उसकी आत्मा को पुन. शांति प्राप्त हो गयी थी। कम से कम इतना निश्चित है कि यदि उसके नाटक कालक्रमानुसार पढ़े जायँ तो उनसे उसके बौद्धिक एव कलात्मक इतिहास का पता तो चलता ही है।

३२. **शेक्सपियर के साहित्य की विशेषताएँ**––अपने समग्र रूप मे शेक्सपियर का नाट्य-साहित्य हमारे साहित्य को किसी एक लेखक द्वारा दिया गया सबसे बड़ा योगदान है। कदाचित् उनकी सबसे प्रमुख विशेषता उनकी आश्चर्यजनक विविधता है। अन्य व्यक्तियों ने कुछ बातों में उससे बाजी मार ली है – कोई किसी बात में तो कोई किसी और में; परन्तु जहां तक उसकी शक्तियो के विस्तार एवं उनकी बहुलता की बात है, उसका कोई प्रतिस्पर्धी नही हुआ। सुखात और दुखात दोनो मे वह कुशल था (यद्यपि समान रूप से नही) तथा दोनो के अनगिनती पहलुओ का वर्णन उसके द्वारा हुआ है। फिर वह न केवल नाटककार के रूप मे ही श्रेष्ठ था वरन् कवि के रूप मे भी। ऊँची कल्पना और सुमधुर भावना दोनो ही क्षेत्रो मे उसकी गति समान रूप से थी। यद्यपि स्वय तो वह कोई अधिक मौलिक अथवा गभीर विचारक न था, परतु उसमे वह गुण सर्वाधिक मात्रा मे था जिसके कारण उसने सम्पूर्ण विचार को आत्मसात् करके ऐसी स्मरणीय और आधिकारिक शब्दावली मे प्रस्तुत किया है जैसा कि हम सबको ज्ञात है, हमारे समस्त लेखकों में सबसे अधिक उसे ही उद्धृत किया जाता है। उसमे किसी प्रकार का दुराग्रह लेश-मात्र भी नही था, तथा उसकी सहिष्णुता उतनी ही व्यापक थी जितना उसका दृष्टिकोण। विशेष रूप से चरित्र-चित्रण की सजीवता मे तो वह अद्वितीय है; अन्य किसी लेखक ने इतने अधिक स्त्री-पुरुषो की सृष्टि नही की जिन्हे हम न केवल कवि के मस्तिष्क की कल्पना के रूप मे स्वीकार करते है बल्कि ऐसे मानव चरित्रों के रूप में जो कि पूर्ण रूप से सजीव है। भाषा पर जो अनोखा अधिकार उसे प्राप्त है उस पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उसके द्वारा व्यवहृत शब्दो की सूची लगभग १५००० की संख्या तक पहुँच गयी है जब कि मिल्टन की शब्द-सूची मे कठिनाई से इसके आधे से कुछ ज्यादा शब्द होंगे।

शेक्सपियर की रचनाओ की महानता के कारण आलोचकों द्वारा उसके दोषों एवं उसकी सीमाओं की उपेक्षा करना स्वाभाविक है, परंतु उसके किसी भी मूल्याकन में इन दोषों और सीमाओ का विचार करना आवश्यक है, अन्यथा हम उसके समुचित महत्त्व को नहीं जान पायेगे। यद्यपि उसका दृष्टिकोण बड़ा विस्तृत और व्यापक था, फिर भी वह मूल रूप से अपने युग का ही व्यक्ति था; और यद्यपि

मानव-स्वभाव के स्थायी तत्वों का सामान्यत. यथार्थ चित्रण होने के कारण उसके नाटक महत्त्वपूर्ण है, तथापि मानव स्वभाव की जो व्याख्या उसने की है वह एक ऐसे युग की है जो बहुत सी बातों में हमारे युग से अत्यंत भिन्न था। वह जल्दबाजी में लिखता था, तथा जल्दबाजी और अव्यवस्थित लेखन के चिह्न प्रायः स्पष्ट रहते है। फिर रंगमच के ही लिए लिखने के कारण तथा अपनी इस चिता के कारण कि उसके नाटक रंगमंचीय अभिनय की तत्कालीन परिस्थितियो मे भी सफल रहे, प्राय. उसे किसी मर्मस्पर्शी थियेट्रिकल प्रभाव की सिद्धि के लिए चारित्रिक दृढ़ता एव कला की सुंदरतर आवश्यकताओ का भी बलिदान कर देने मे कोई हिचक नही होती थी। स्थल-स्थल पर उसमे जो अशिष्टता पायी जाती है उससे जमीन पर खड़े होकर नाटक देखने वाले निम्न-वर्ग के दर्शको की निम्न रुचियों का पता चलता है। उसे इन दर्शको की रुचियों का भी ध्यान रखना पडता था। कुछ स्थलो पर उसका मन.वैज्ञानिक चित्रण निराशाजनक रूप से अप्रौढ एव अनिश्चयात्मक, उसकी शैली दोषपूर्ण, उसका वाग्वैदग्ध्य अस्वाभाविक एव अशक्त तथा उसकी करुणरसोत्पादक भाषा वागाडबर से पूर्ण है। यदि कोई व्यक्ति जरा भी आलोचनात्मक दृष्टि से उसकी रचनाओं को पढे तो उसे ये तथा अन्य दोष स्पष्ट दिखाई देगे। परतु फिर भी ये दोष उन स्थायी गुणों की तुलना में कुछ भी नही है जिनके कारण संसार भर के नाटककारो मे उसका स्थान सर्वप्रथम है।

३३. **बेन जॉन्सन**––शेक्सपियर का युग विशाल नाट्य-रचना का युग था तथा इस क्षेत्र मे उसके समकालीन लेखको की सूची बड़ी लम्बी है। इन लेखकों मे उसका मित्र बेन जॉन्सन सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसका कारण केवल यही नही है कि प्रतिभा की प्रबलता और विशालता की दृष्टि से वह उन सबसे महान् था, बल्कि यह भी है कि उसकी नाट्य-रचना के उद्देश्य व सिद्धात शेक्सपियर के सिद्धातों व उद्देश्यो से मूलत. भिन्न थे। उसका जन्म १५७३ मे लदन मे हुआ था। उसकी शिक्षा वेस्टमिन्स्टर ग्रामर स्कूल में हुई जहाँ उसने प्राचीन साहित्य के अपने प्रगाढ ज्ञान की नींव रखी। १५९२ मे वह अभिनेता बन गया। १५९८ में उसने 'एवरीमैन इन हिज ह्यूमर' नामक व्यग्यात्मक सुखांत की रचना द्वारा नाट्य-रचना के क्षेत्र में प्रवेश किया। अनेक वर्ष तक उसने राजदरबारी-रंगमच एव लोक-रंगमंच दोनों के ही लिए नाटको की रचना की। फिर चार्ल्स प्रथम के सिहासनारोहण के समय से उसका भाग्य-सूर्य मद पडने लगा। निरतर बढते हुए अस्वास्थ्य के अतिरिक्त वह उपेक्षा और निर्धनता का भी शिकार हो गया। लम्बे समय तक पक्षाघात से पीड़ित

रहने और बिस्तर पर पड़े रहने के उपरांत १६३७ में उसकी मृत्यु हुई। इस प्रकार वह शेक्सपियर के बाद इक्कीस वर्ष अधिक जीवित रहा। नाट्य-रचना के अतिरिक्त भी बेन जॉन्सन ने पर्याप्त कार्य किया, उदाहरण स्वरूप उसने अनेक अनुवाद लिखे और विविध प्रकार की बहुसख्यक कविताओ की भी रचना की। उसके नाटक तीन वर्गो में रखे जा सकते है, यथा राजदरबार के लिए लिखे गये छद्मवेषीय नाटक ('मास्क'); 'सिजैनस' तथा 'कैटिलीन' नामक ऐतिहासिक दुखात जो बड़े विद्वत्तापूर्ण तथा परिश्रम से लिखे हुए परतु अत्यंत नीरस है; तथा उसके बहुसख्यक सुखांत जिनमे से सर्वश्रेष्ठ है 'दि अल्केमिस्ट', 'वॉलपोनी ऑर दि फॉक्स' तथा 'एपिसीन ऑर दि साइलेण्ट वुमन'। उसकी रचनाओ का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग यही अतिमवर्ग है। इन सुखातों का अध्ययन करने से हम तुरन्त यह समझ जायेगे कि जॉन्सन की प्रतिभा और कला के विशिष्ट गुण कौन-कौन से है। हम यह भी समझ जायेगे कि जब हम यह कहते है कि उसने शेक्सपियर से भिन्न क्षेत्र मे कार्य किया तथा उसकी कार्यविधि पूर्ण रूप से उसकी अपनी थी, तो इस कथन से हमारा क्या आशय होता है। सर्वप्रथम, वह एक यथार्थवादी था—अर्थात् उसके सुखातों का ससार काल्पनिक नही बल्कि तत्कालीन लदन-जीवन का ससार है जिसमे लदन के तौर-तरीके, प्रतिनिधि-चरित्र, दोष-दुर्बलताएँ एव मिथ्यादंभ दिग्दर्शित किये गये है। उसने इस ससार का चित्र खूब बढ़ा चढाकर खीचा है। परतु उसका उद्देश्य केवल इस चित्रण तथा इसके द्वारा दर्शको का मनोरजन करने तक ही सीमित नही था; उसने अपनी कला को गभीरता से लिया तथा रगमच के नैतिक कर्त्तव्यो मे विश्वास करने के कारण मनोरंजन के साथ-साथ सुधार और शिक्षण को भी अपना उद्देश्य बनाया। इस प्रकार उसकी रचनाओ मे एक विशिष्ट नैतिक उद्देश्य सामान्यतः स्पष्ट रूप से दर्शनीय है तथा बहुधा उसकी प्रकट घोषणा भी की गयी है। अतएव उसके यथार्थवाद की परिभाषा शिक्षाप्रद-यथार्थवाद के रूप मे होनी चाहिए। अपने नाट्य-रचना के सिद्धातो मे उसने 'रोमाण्टिक' नाट्य की उच्छृखलता का प्रतिरोध किया तथा लैटिन सुखात-नाट्य को अपना आदर्श बनाया। अत मे, उसका चरित्र-चित्रण इस सिद्धात पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति मे किसी एक विशिष्ट गुण अथवा 'अधिकारी मनोविकार' का स्वामित्व मे होता है तथा वह इसी गुण के द्वारा शासित होता है। कम से कम रगमच के लिए तो यह गुण अथवा मनोविकार उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण तथा आधार माना ही जा सकता है। इसी सिद्धांत के अनुसार जॉन्सन के इस अधिकारी मनोविकार अथवा "चित्तप्रकृति"

(उसने इसे 'ह्यूमर' नाम दिया है) का आधार लेकर उसी पर एक पूर्ण चरित्र का निर्माण किया है जिसके परिणामस्वरूप उसके पुरुष व स्त्री चरित्र शेक्सपियर के चरित्रो की भाँति जटिल व्यक्तित्व वाले नही बल्कि प्रतिनिधि चरित्र है। फिर, प्राचीन नीति-नाट्य की शैली के अनुकरण पर उसने बहुधा इन चरित्रो को ऐसे नामो से विभूषित किया है जो उनकी विशिष्ट "चित्तप्रकृति" को एकदम स्पष्ट कर देते है, उदाहरण के लिए, 'डाउनराइट' (सरल हृदय), 'मोरोज़' (विमनस्क), 'वेलब्रेड' (सुशील), 'सटिल' (कुशाग्र), 'पर्टिनैक्स सर्ली' (अविनीत, रूक्ष), 'सर एपिक्योर मैमन' (विषयासक्त)। जॉन्सन के सुखातो मे बुद्धि की प्रधानता है; वे लेखक की सर्जनात्मक शक्ति की सृष्टि न होकर उसके पाडित्य, कौशल एवं सत्प्र त्न की सृष्टि है। इसी कारण यद्यपि तत्कालीन जीवन के विस्तृत चित्रो की दृष्टि से उसके सुखात आश्चर्यजनक रूप से दक्ष एव समृद्ध है तथापि सहजोद्रेक एवं मनोहारिता का अभाव होने के कारण उनमे सहज प्रवाह न होकर भारीपन है। हाँ, ऐतिहासिक दृष्टि से वे अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योकि 'कॉमेडी ऑव मैनर्स' अर्थात् सामाजिक चित्रण-प्रधान सुखांत-नाट्य का वास्तविक संस्थापक जॉन्सन ही था तथा परवर्त्ती नाटककारो पर उसका अत्यधिक प्रभाव पडा।

३४. **शेक्सपियर-युग के अन्य नाटककार**––जिन गौण नाटककारो ने शेक्सपियर के उत्कर्ष काल से लेकर इस युग के अत तक नाट्य-रचना की उनकी संख्या बहुत बड़ी है। इस भीड़ मे से मै केवल कुछ का ही नामोल्लेख करूँगा जिनके विषय मे यह कहा जा सकता है कि उनका स्थान द्वितीय पक्ति मे सबसे आगे है। जॉन वेब्सटर (१५८०?–१६२५?) एक गभीर और निरुल्लासपूर्ण प्रतिभा एवं महान शक्ति-सम्पन्न नाटककार था, यद्यपि आवेशपूर्ण तथा भयावह विषयो के प्रति उसमे एक प्रकार की जो दूषित आसक्ति थी उसके कारण बहुधा उसकी रचनाओ में शुद्ध विस्मयोत्पादन और कुतूहलवर्धन के ही दर्शन होते है। उसके 'व्हाइट डेविल' तथा 'डचेज अॉव माल्फी' मे करुण रस से पूर्ण ऐसे अनेक दृश्य हैं जिनका सानी शेक्सपियर के नाटको के अतिरिक्त और कही नही मिलता। जॉन फ़ोर्ड (१५८६?–१६३९) मे भी अरुचिकर विषयो एव अप्राकृतिक सवेगों के प्रति इसी प्रकार की प्रवृत्ति वर्तमान है, परतु उसका करुण रस 'दि ब्रोकेन हार्ट' की भाँति उसकी सर्वश्रेष्ठ कृतियो को एक प्रकार की विशिष्टता प्रदान कर देता है। फ्रांसिस बोमॉ (१५८४–१६१६) तथा जॉन फ्लेचर (१५७९–१६२५) के नाम सदैव संयुक्त रहते हैं, और उन्होने परस्पर सहयोग से अनेक रचनाएँ लिखी

भी है, यद्यपि फ्लेचर अपने मित्र की मृत्यु के उपरात अपने जीवन के नौ वर्षो मे भी काफी तेजी से लिखता रहा। उनके नाटको का नैतिक स्वर शिथिल एव मद, भावपक्ष अप्राकृतिक तथा चरित्र-चित्रण अशक्त है; परतु उनमे अनेक ऐसे गुण भी है जो इन दोषो का परिहार कर देते है। उनके 'फिलास्टर' तथा 'दि मेड्स ट्रेजेडी' जैसे नाटको की तुलना तो शेक्सपियर की रचनाओ के बाहर रोमाण्टिक नाट्य की किसी भी कृति से सफलतापूर्वक की जा सकती है। फिलिप मैसिन्जर (१५८३–१६४०) ने, जिसको विविध शैलियो में दक्षता प्राप्त थी, अपने सुखात 'ए न्यू वे टु पे ओल्ड डेटस' (अर्थात् 'पुराने कर्जो की अदायगी का नया तरीका') मे काफी ऊँचे स्तर की रचना प्रस्तुत की है। जेम्स शर्ले (१५९६–१६६६) चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल के अंतर्गत आता है परतु चार्ल्स लैम के शब्दो मे, "एक महान् वंश के अंतिम व्यक्ति" के रूप मे हम उसका समावेश यही कर सकते है। इन सभी लेखको मे नाट्य-साहित्य का ह्रास स्पष्ट है। यह ह्रास उन छोटे लेखको की रचनाओं मे और भी स्पष्ट है जिनके नामोल्लेख के लिए रुकने की कोई आवश्यकता नहीं है। युग के अंत तक पहुँचते-पहुँचते यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्माण की पुरानी सारी शक्ति लुप्त हो गयी है तथा रगमच तीव्रता से बढती हुई युग की अनैतिकता का शिकार हो चुका है। इस व्यापक अवनति का एक और लक्षण उस अनियमितता एवं अव्यवस्था मे उपलब्ध होता है जो इन लेखको द्वारा प्रयुक्त अतुकांत छंद में दिखाई पड़ती है।

३५. शेक्सपियर युग की नाट्यशालाएँ––नाट्य साहित्य के विद्यार्थी के लिए यह उचित होगा कि वह उन परिस्थितियो के विषय मे भी कुछ जान ले जिनके अंतर्गत शेक्सपियर और उसके समकालीनो ने अपनी रचनाएँ लिखी। नाट्य-रचना के आरम्भिक काल मे नाटको का अभिनय सरायो के अहातो तथा अन्य खुली जगहों मे हुआ करता था जहाँ मच बनाया जा सके तथा दर्शको को स्थान भी सुलभ हो सके। १५७६ मे दो स्थायी नाट्यशालाएँ 'थियेटर' और 'कर्टेन'– उस स्थान पर बनायी गयी जहाँ उस समय शोरडिच के खुले मैदान थे। जिस समय शेक्सपियर लंदन पहुँचा उस समय राजधानी मे केवल यही दो नाट्यशालाएँ थी; परन्तु एलिजाबेथ के शासनकाल के अंत तक कम से कम ग्यारह नाट्यशालाएँ हो गयी थी। क्योकि नगरअधिकारी नगर की सीमा के भीतर नाट्यशालाएँ बनाने की अनुमति नही देते थे, इसलिए ये नाट्यशालाएँ लंदन के भीतर तो नही थी, परन्तु सीमा के बिलकुल बाहर ही थी और विशेष करके टेम्स नदी के सरे की तरफ वाले किनारे पर।

जैसा हम देख चुके है, इन नाट्यशालाओ में से दो से शेक्सपियर का अत्यन्त घनिष्ठ सबध था। इनमे से एक 'ग्लोब' साउथवर्क मे थी तथा दूसरी 'ब्लैकफायर्स' उस स्थान के निकट थी जहाँ अब 'टाइम्स' का कार्यालय स्थित है। नाटकीय अभिनय का पेशा पहले बहुत बदनाम था, तथा उससे सबधित व्यक्तियों के साथ "आवारों और बदमाशो" जैसा बर्ताव किया जाता था। इससे बचने के लिए अभिनेताओ को बड़े बड़े सरदारो व अन्य प्रभावशाली सरक्षको से लाइसेस लेने तथा उनकी कम्पनियों में उनके "सेवको" के रूप में नाम दर्ज कराने के लिए विवश होना पडा था। इस प्रकार हम 'लार्ड लीस्टर के सेवक' (जो बाद मे 'लार्ड चैम्बरलेन के सेवक' कहलाये), 'लार्ड एडमिरल के सेवक', 'रानी के अभिनेता' इत्यादि कम्पनियो के बारे मे पढ़ते है। शेक्सपियर इनमे से पहली कम्पनी का सदस्य था। नाट्यशालाएँ बहुत छोटी तथा मुख्यत. लकडी की होती थी। वे या तो वृत्ताकार अथवा षष्ट्भुजाकार होती थी। उनमे विलासिता या शानशौकत का चिह्न भी न था, न उनकी शिल्प कला मे और न अदर की व्यवस्था मे ही। रगमच तथा 'बाक्स' जो 'कमरे' ('रूम्स') कहलाते थे, फूस से छाये रहते थे परन्तु भवन के शेष भाग के ऊपर खुला आसमान होता था। बाक्सो मे धनाढ्य एवं उच्चकुलीन दर्शक बैठते थे। उनमें से कुछ ने तो स्वयं रंगमच पर ही बैठने का अधिकार ग्रहण कर लिया था। 'यार्ड' अथवा 'पिट' मे जमीन पर खड़े होकर या बैठकर देखने वाले 'ग्राउण्डलिग्स' के लिए सीटो का प्रबध नही था। रगमच , जो केवल एक साधारण प्लेटफार्म होता था, बिल्कुल इस 'यार्ड' के अदर तक चला आता था। इस मच की लम्बाई-चौड़ाई इतनी सीमित होती थी कि सैनिक अभियान करती हुई सेनाओ या जमकर होने वाले युद्धो के वे दृश्य जिनसे एलिजावेथ-युगीन दर्शको का इतना मनोरजन होता था हम लोगों को बिलकुल मूर्खतापूर्ण प्रतीत होते है। रगमच की व्यवस्था से कुछ बड़ी ही महत्त्व-पूर्ण बातो का पता चलता है। चल दृश्यावली लगभग नही के बराबर थी। यद्यपि शेक्सपियर युग का अत होते-होते इसका प्रयोग होना प्रारभ हो गया था, तथापि कामनवेल्थ[1] शासनोपरान्त नाट्यशालाओ की पुनः स्थापना होने के बाद से इसका

१. पार्लिमेण्ट और राजा चार्ल्स प्रथम के बीच हुए गृह-युद्ध में राजा की सेनाओं की पराजय व उसके वध के उपरांत १६४८ से १६६० तक के पार्लि-मेण्ट के शासन-काल को 'कामनवेल्थ' कहा जाता है।--अनु०

नियमित उपयोग होना आरभ नही हुआ। रंगमचीय साज-सज्जा, जैसे फर्नीचर की चीजों का उपयोग स्वतन्त्रतापूर्वक होता था तथा दर्शको को यह बताने के लिए कि अमुक दृश्य कहाँ घटित हो रहा है दफ्ती के टुकडों पर यह लिखकर टॉग दिया जाता था कि यह 'एथेन्स है', 'यह जगल है' इत्यादि। चित्रित दृश्यावली के इस अभाव से शेक्सपियर के नाट्य-साहित्य की दो प्रमुख विशेषताओ का सीधा सबंध है। ये विशेषताएँ है नाटक के कार्य-व्यापार के घटनास्थल मे निरंतर परिवर्तन तथा वर्णनात्मक अंशों की बहुलता जिनमें दर्शकों की कल्पना को जाग्रत करने का प्रयत्न किया जाता था। रगमच पर पीछे की ओर एक छोटा सा भवन भी बना रहता था जिसमे ऊपर एक छज्जा और नीचे खुली जगह होती थी। अभिनय-व्यवस्था में इस भवन का महत्त्वपूर्ण स्थान था। छज्जा किसी भी ऊँचे स्थान का काम देता था, जैसे किसी नगर की प्राचीरे अथवा किसी भवन का ऊपरी भाग। जब किसी भीतरी दृश्य की आवश्यकता होती थी तब नीचे वाला खुला स्थान, जिस पर पर्दा भी डाला जा सकता था, विविध उपयोगों मे लाया जाता था। साधारणतया अभिनय तीन बजे दिन में आरम्भ होते थे तथा दो घण्टे के लगभग चलते थे। इस विश्वास के अनेक कारण है कि अभिनय कला बड़े उच्चस्तर पर थी। परन्तु शेक्सपियर-युगीन रंगमंच पर अभिनेत्रियाँ नही होती थी, वरन् स्त्रियों का अभिनय लडके तथा युवा पुरुष किया करते थे जो इस कार्य के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किए जाते थे। स्त्रियो का अभिनय करनेवाले ये लड़के अवश्य ही बडे निपुण रहे होगे, और जब राज्यतंत्र की पुन स्थापना के उपरात अग्रेजी रंगमंच पर अभिनेत्रियो के दर्शन होने लगे तो पेपीज की भाँति ऐसे बहुत-से लोग थे जो इस परिवर्तन से दुखी हुये। परन्तु हमारे लिए यह सोचना तो कठिन है कि ये पुरुष अभिनेता शेक्सपियर की नायिकाओं को कभी भी सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर सके होगे।

(**टिप्पणी**—शेक्सपियर-युगीन नाट्य-साहित्य की सारिणी के लिए देखो अगले अध्याय के अन्त मे)।

अध्याय ८

शेक्सपियर-युग

गद्य-साहित्य

३६. लाइली तथा गद्य कथा-साहित्य के अन्य लेखक––यद्यपि शेक्सपियर-युग में कल्पना की अभिव्यक्ति का प्रधान स्रोत नाट्य-साहित्य ही था तथापि गद्यकथा-साहित्य के क्षेत्र मे भी पर्याप्त कार्य हुआ। यह अवश्य है कि जिस साहित्य-रूप को हम विशेष रूप से उपन्यास की संज्ञा प्रदान करते है तथा जिससे हमारा आशय तत्कालीन जीवन एवं आचार-विचार से सवधित लम्बी कहानी से होता है, उसकी रचना इस युग में नही हुई। शेक्सपियर की मृत्यु के एक शताब्दी से अधिक काल तक इसकी स्थापना अंग्रेजी साहित्य मे नही हुई । परन्तु काल्पनिक आख्यान के अन्य क्षेत्रों में पर्याप्त प्रगति हुई।

इस दिशा मे कुछ प्रोत्साहन अनुवादको की रचनाओं से मिला जिन्होने पाठकों को स्पेनिश व इटालियन प्रेमाख्यानों एवं इटालियन 'नावेल' अर्थात् लघुकथाओं की जानकारी करा दी। इनमे से अन्तिम अर्थात् इटालियन लघुकथाओ का एक अन्य गौण महत्त्व यह है कि शेक्शपियर समेत एलिजबेथ-युग के नाटककारो ने प्रायः अपने कथानको की सामग्री इन्ही से ली है। इनके रूपांतर एवं अनुकरण भी किये गये तथा कहानियो के विविध सग्रह प्रकाशित हुए, उदाहरणस्वरूप, विलियम पेण्टर का 'पैलेस आफ प्लेजर' जिसको बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हुई।

जॉन लाइली, जिसके सुखांतो के विषय में पहले ही लिखा जा चुका है, की रचना 'यूफ्यूज, दि अनाटमी आफ विट' तथा इसी का उत्तर भाग 'यूफ्यूज ऐण्ड हिज इंग्लैण्ड' इस युग का सबसे महत्त्वपूर्ण गद्य आख्यान है। प्रथम भाग १५७९ में प्रकाशित हुआ तथा इस प्रकार 'शेफर्डस कैलेण्डर' का बिलकुल समकालीन था; दूसरा भाग अगले वर्ष प्रकाशित हुआ। पहले भाग मे एथेस के यूफ्यूज नामक एक धनाढ्य सुन्दर एवं चतुर युवक का वर्णन है जो अपनी यात्राओं पर निकलता है। जब वह नेपुल्स पहुँचता है तब वहाँ वह फिलाटस नामक एक व्यक्ति का घनिष्ठ

मित्र बन जाता है जिसके साथ दार्शनिक एवं नैतिक विषयों पर अनेक लम्बे-लम्बे वार्तालाप करता है। कई बार वह प्रेम का शिकार होता है परन्तु फल किसी का भी नही निकलता। अंत में वह एथेंस लौट जाता है तथा अपने पीछे अपने मित्र के नाम एक 'पैम्फ्लेट' अथवा पत्र छोड़ जाता है जिसका वर्णन वह "फिलाटस तथा समस्त मूर्ख प्रेमियों को शीतलता प्रदान करने वाले कार्ड" के रूप मे करता है और जिसका उद्देश्य फिलाटस को स्त्रियो के समाज तथा प्रेम की कोमल भावना से परावृत करना है। एक प्रकार से है तो यह प्रेमाख्यान ही परन्तु घटनाओं से रहित है, तथा जो कुछ थोड़ा सा वृत्तान्त है वह भी अन्तहीन विवादो और नैतिक उपदेशों के लिए बहाना-मात्र है। दूसरे भाग में यूफ्यूज़ इंग्लैण्ड जाता है तथा 'द्वीप के भूगोल, राजदरबार एवं आचार-विचार का वर्णन' बड़े विस्तार से करता है जिसमे ऐसी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा की गयी है कि यदि हम इसे सत्य मान सकते तो हमें विश्वास हो जाता है कि लाइली के समय में हमारा देश बिलकुल स्वर्ग था तथा इसके निवासी समस्त गुणों की मूर्ति थे। 'यूफ्यूज' को असाधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई; अर्ध शताब्दी से कुछ ही अधिक समय मे इसके दस संस्करण प्रकाशित हुए जो उस समय के लिए काफी बड़ा रेकार्ड था। जो कोई कुछ भी पढ़ता था उसने भी इसको पढा था, तथा राजदरबार की महिलाएँ तो इसको नीतिशास्त्र का ग्रंथ, सभ्यतापूर्ण व्यवहार की निर्देशिका तथा वार्तालाप एव लेखन-कला मे श्रेष्ठता का आदर्श मानती थी। इसकी यह अनवरत प्रसिद्धि मुख्य रूप से इसकी शैली के कारण हुई। प्राचीन यूनानी एव लैटिन साहित्य के लिए उत्साह, स्पेनिश एवं इटालियन साहित्य के प्रभाव तथा राष्ट्र-भाषा का संस्कार व उन्नति करने की व्यापक इच्छा के कारण अंग्रेजी गद्य मे सभी प्रकार के अद्भुत प्रयोग हुए। लाइली की शैली अथवा 'यूफ्यूजवाद' जैसा कि उसे कहा जाता है, इन समस्त प्रयोगो मे सबसे महत्त्वपूर्ण था। तत्कालीन अन्य प्रयासों की भाँति इसकी विशेषता भी अत्यधिक विस्तार एव कृत्रिमता ही है परन्तु यह उन प्रयासों से इस बात मे भिन्न है कि इसमें भाषा के ऐसे अनेक विशिष्ट प्रयोग है जो इसे एक स्वतन्त्र गुण प्रदान कर देते है। कदाचित् 'यूफ्यूज़वाद' की सबसे प्रमुख विशेषता है विपरीत अर्थ वाले शब्दो और वाक्यांशो के सतुलित प्रयोग का आधिक्य। उदाहरणस्वरूप यह वाक्य लें—"As you may suspect me of idleness in giving ear to your talk, so you may convince me of lightness in answering such toys." (अर्थात् 'जैसे आप मेरे ऊपर यह संदेह करते हैं कि मैं आपके वार्तालाप को सुनने में आलस्य कर रहा हूँ, वैसे ही आप मुझे

यह विश्वास दिलाये कि मै इन छोटी छोटी बातों का उत्तर देने मे गभार नहा हू')। जैसा कि स्पष्ट है, इस वाक्य में "suspect me" और "convince me", "idleness" और "lightness", "giving ear" और 'answering", "talk" और "toys" का ऐसे संतुलित ढंग से प्रयोग हुआ है कि उससे इन शब्दों व वाक्यांशों का विपरीत अर्थ स्पष्ट हो जाता है। इस संतुलित अर्थ-वैपरीत्य का प्रयोग बहुधा अनुप्रास के साथ हुआ है, उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य में—

"Although I have *sh*rined thee in my *h*eart as a *t*rusty *f*riend, I will *s*hun thee hereafter as a *t*rothless *f*oe' (अर्थात् 'यद्यपि मैने अपने हृदय में एक विश्वासी मित्र के रूप मे तुम्हारी मूर्ति स्थापित कर ली है, परन्तु अब मै तुमसे एक विश्वासघाती शत्रु की भाँति दूर रहूँगा')। इसके अतिरिक्त लाइली ने उपमाओं एवं श्लेष का भी खूब प्रयोग किया है। उसकी एक अन्य विचित्र विशेषता है "अप्राकृतिक प्राकृतिक इतिहास" के प्रति उसका अनुराग, अर्थात् ऐसा प्राकृतिक इतिहास जिसका आधार विज्ञान नही बल्कि पौराणिक एवं काल्पनिक कथाएँ है। उदाहरण के लिए जब हम 'ऐटेगेम' नामक चिड़िया के बारे में पढ़ते है तो बड़े ही आश्चर्य से देखते है कि पकड़ी जाने पर वह कभी गाती ही नही, अथवा जब हम 'ड्रैकोनाइट्स'[१] नामक उस बहुमूल्य मणि के विषय में पढ़ते है जो सर्प मे पायी जाती है, अथवा 'डिक्टेनम' नामक जड़ी के बारे में जिसको घायल हिरन दवा के रूप मे प्रयोग करते है। शेक्सपियर मे भी हमें इसी प्रकार के कल्पनाजनित-असत्य विज्ञान का एक उदाहरण मिलता है जब वह 'टोड'[२] का वर्णन ऐसे जंतु के रूप में करता है जो 'कुरूप और जहरीला' होता है परन्तु साथ ही जो 'अपने सिर मे एक बहुमूल्य मणि' धारण किये रहता है।

एलिजाबेथ-युगीन गद्यकथा-साहित्य के इतिहास में दूसरा स्थान सर फिलिप सिडनी की रचना 'आकण्डिया' को दिया जा सकता है। यह पुस्तक १५८१ के लगभग समाप्त हो चुकी थी परन्तु १६१३ तक प्रकाशित नही हुई। कुछ हद तक तो इसमें प्राचीन क्षात्र धर्मात्मक प्रेमाख्यानों की परम्परा ही आगे बढ़ायी गयी है परन्तु शैली एवं रचना-पद्धति के संबंध में सिडनी पुर्तगाली लेखक माण्टमेयर की

१. भारतीय साहित्य में बहुप्रयुक्त 'नागमणि' की भाँति।—अनु०
२. मेढक की शक्ल का रेंगने वाला जानवर जो उछल नहीं सकता।—अनु०

पशु-चारण जीवन संबंधी 'डायना' तथा इटालियन लेखक सनाजारो की 'आर्केण्डिया का बहुत ऋणी था। 'यूफ्यूज़' के विपरीत, जिसमे कथा-तत्त्व प्रायः नही के बराबर है, यह घटनाओं से पूर्ण है। इसमें आकर्षण के प्रधान केन्द्र पाइरोक्लीज़ तथा मुसीडोरस नामक दो मित्रो के वे साहसिक कार्य है जो वे आर्केडिया की फिलोक्लिया तथा पामिला नामक दो राजकुमारियो का हृदय जीतने के दौरान मे करते है। परन्तु अनेकानेक अन्य चरित्रों का भी समावेश इसमें हुआ है जिनमे से प्रत्येक एक पृथक् कथा का केन्द्र है तथा प्रासंगिक कथाओं के भी अंदर अन्य प्रासगिक कथाएँ अन्तर्निहित है। इन सबके कारण कथानक अत्यन्त जटिल, अव्यवस्थित तथा परिणामस्वरूप दुरूह हो गया है। यद्यपि सिडनी ने लेखन-शैली की कुछ खास विशेषताओं का लाइली की भाँति अति प्रयोग नही किया है, तथापि उसका गद्य अत्यन्त आलंकारिक एव काव्यात्मक है। इसके अतिरिक्त कुछ स्थलो पर चित्ताकर्षक एवं सुन्दर होते हुए भी , सरलता एवं संयम के पूर्ण अभाव के कारण अंत मे यह गद्य अरुचिकर हो जाता है।

शेक्सपियर के जिन पूर्ववर्ती नाटककारों का नाम हम ले चुके है उनमें से दो—लॉज और ग्रीन—का कुछ महत्त्व प्रेमाख्यान-लेखकों के रूप मे भी है। पशु-चारण संबंधी परम्परागत साहित्य के चरित्रो एवं साज-सज्जा के प्रयोग मे वे सामान्यतः सिडनी के ही समान है, परतु उनकी शैली प्रमुख रूप से लाइली की शैली के अनुरूप है। दोनों ने ही अन्य तमाम रचनाएँ करते हुए भी एक-एक रचना ऐसी प्रस्तुत की है जिसका महत्व अब भी है, यद्यपि यह महत्त्व उन पुस्तको के अपने आंतरिक गुणों के कारण नही बल्कि इस कारण है कि उनका कुछ सबंध शेक्सपियर से है। लॉज की 'रोजालिण्ड, यूफ्यूज गोल्डेन लिगेसी' (रोजालिण्ड, अर्थात् 'यूफ्यूज़ की स्वर्णिम भेट') नामक रचना ने 'ऐज यू लाइक इट' के लिए सामग्री प्रदान की, तथा ग्रीन की 'पैण्डोस्टो, दि ट्रायम्फ ऑव टाइम' (पैंडोस्टो, अर्थात 'समय की विजय') ने 'दि विण्टर्स टेल' के लिए। "युनिवर्सिटी विट्स" (विश्वविद्यालय मे शिक्षित विद्वानो) मे से तीसरे, टॉमस नैश का स्थान इन सबसे अलग है। कारण यह है कि ऐसे समय में जब कथा-साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति प्रायः पूर्ण रूप से प्रेमाख्यान की ही ओर थी, उसके एक असस्कृत प्रकार के यथार्थवाद के रूप में एक नयी दिशा स्पष्ट रूप से इंगित की। उसकी रचना 'दि अन्फॉर्चुनेट ट्रैवेलर, ऑर दि लाइफ ऑव जैक विल्टन' ('अभागा यात्री, अर्थात् जैक विल्टन की जीवनी') जिसमें यूरोपीय महाद्वीप में पर्यटन एवं साहसिक कार्यों का क्रमहीन एवं अव्यवस्थित वर्णन है,

'पिकारेस्क'[1] अथवा आवारापन के उपन्यासों का हमारा सर्वप्रथम उदाहरण है। इस विशिष्ट प्रकार के उपन्यास स्पेन में पहले से ही लोकप्रिय थे, तथा बाद में डिफो ने बड़ी सफलतापूर्वक इनकी रचना की।

३७. बेकन और उसके निबंध––यदि हम यह सोचे कि शेक्सपियर युग का अंग्रेजी साहित्य पूर्ण रूप से कल्पना शक्ति पर ही आधारित था, तो ऐसा मानना गलत होगा। इस युग मे पुनर्जागरण ने अंग्रेजी जीवन के कलात्मक पक्ष के सिवा उसके बौद्धिक पक्ष को भी महान् प्रेरणा प्रदान की। इसका परिणाम यह हुआ कि ऐसी बहुत सी गद्य पुस्तके उन विभिन्न विषयों पर लिखी गयी जिनमें उस समय के विचारशील व्यक्तियों की रुचि थी। इनमें से अधिकतर रचनाएँ उन विषयों के पृथक इतिहास के अन्तर्गत आती है; न कि सामान्य साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत। परन्तु इनमे से कुछ लेखकों का स्थान साहित्य के इतिहास मे भी है। ऐसे लेखको मे एक, अर्थात् बेकन का महत्त्व तो बहुत ही अधिक है जो अपने समय का प्रमुख गद्य-लेखक था।

फ्रांसिस बेकन का जन्म २२ जनवरी, १५६१ को हुआ था। वह एक प्रसिद्ध वकील एवं राजनीतिज्ञ का द्वितीय पुत्र था। जब वह बालक ही था, तभी उसने अपने चातुर्य एवं प्रगल्भता से रानी एलिजाबेथ का ध्यान आकर्षित कर लिया था। उसके पिता उस समय इंग्लैण्ड की 'ग्रेट सील के कीपर' थे, इसी कारण रानी उसे मजाक में 'नन्हा लार्ड कीपर' कहा करती थी। उसकी शिक्षा ट्रिनिटी कालेज, कैम्ब्रिज मे हुई तथा उसे राजनीतिक जीवन के लिए तैयार करने के उद्देश्य से अंग्रेजी राजदूत के दल का सहायक सदस्य बनाकर पेरिस भेजा गया। १५७९ में पिता का देहान्त हो जाने के कारण उसे अपने पैरों खडा होना पड़ा। ऐसी दशा में उसने अपने लिए वकालत का पेशा चुना। १५८२ मे उसने वकालत मे प्रवेश किया और १५८९ मे वह 'क्वीन्स काउन्सेल' ('रानी का सलाहकार') नियुक्त किया गया। इस समय तक उसने एक भाषणकर्त्ता के रूप में 'हाउस ऑफ कामन्स' ('लोक-सभा') मे भी अपनी धाक जमा ली थी। जेम्स प्रथम के सिहानासीन होने के उपरात उसने राज्याश्रय व संपत्ति दोनों ही दृष्टियों से बड़ी शीघ्रतापूर्वक उन्नति की।

१. 'पिकारेस्क' शब्द स्पेनिश भाषा के 'पिकारो' शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है गुण्डा, आवारा––लेखक

१६०३ में उसे सर की उपाधि प्रदान की गयी तथा १६१३ में वह एटार्नी जनरल बना दिया गया। इसके बाद तो १६१६ में प्रिवी काउन्सिलर, १६१७ में लार्ड कीपर, १६१८ में लार्ड चांसलर और 'बैरन वेरुलम' तथा १६२१ में 'वाइ काउन्ट ऑव सेण्ट अलबन्स' होकर वह बराबर उन्नति ही करता गया। फिर अचानक ही उसकी परिस्थितियाँ बदल गयी। 'हाउस ऑव लार्ड्स' (लार्ड-सभा) के सामने उसपर भ्रष्टाचार के विभिन्न आरोपों पर मुकदमा चलाया गया। वहाँ उसने अपने बचाव में कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया। जो दण्ड उसे दिया गया, वह बड़ा कठोर था, अर्थात् चालीस हजार पौड जुर्माना, राजा की इच्छा के अनुसार अनिश्चित काल के लिए कैद तथा पार्लिमेण्ट एवं राजदरबार से आजीवन निष्कासन। परन्तु यह दण्डाज्ञा कभी कार्यान्वित नही की गयी और अंत मे राजा ने उसे क्षमा प्रदान कर दी। अपने जीवन के शेष थोड़े से वर्ष उसने पढने-लिखने व ज्ञानार्जन मे लगाये। १६२६ में एक वैज्ञानिक प्रयोग करते समय उसे सर्दी लग गयी और उसकी दशा ऐसी गभीर हुई कि उसकी युत्मु हो गयी। उसका चरित्र अनेक प्रकार की असगतियों एव विरोधी लक्षणों से युक्त था। उसका विश्वास था कि उसका जन्म "मानवता की सेवा करने के लिए" हुआ था तथा उसकी वास्तविक इच्छा थी कि वह अपनी आश्चर्यजनक शक्तियों का प्रयोग उस ज्ञान के अभ्युदय मे करे जो "ईश्वर के वैभव को प्रकट करने वाला तथा मनुष्य जीवन में विश्रांति लानेवाला" हो। परतु जहाँ तक व्यवहार की बात है उसने धन एवं शक्ति के अर्जन तथा अपनी अपरिमित आकाक्षाओं की पूर्ति के लिए बहुत कुछ बलिदान कर दिया। दूसरी ओर उसकी नैतिक शिक्षा भी बहुधा अत्यत सकुचित प्रकार की स्वार्थपरता एवं हितसाधन की नीति का रूप धारण कर लेती है। उसने अनेक विषयों पर बड़े विशाल पैमाने पर लिखा है। 'एडवासमेण्ट ऑव लर्निंग' ('ज्ञान का उत्कर्ष') तथा 'नोवम ऑर्गेनम' ('नवीन उपकरण') उसकी महान्तम रचनाएँ है तथा इनके कारण उसका स्थान विश्व के युगांतरकारी विचारकों की अग्रिम पंक्ति मे है। इन दोनो रचनाओ मे उसने प्रकृति के अध्ययन की "बेकनी" अर्थात् आगमन शैली की सोदाहरण व्याख्या की है। परंतु ये रचनाएँ विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र के इतिहास की अंग है, न कि सामान्य साहित्य के इतिहास की। सामान्य साहित्य के क्षेत्र मे उसका प्रधान योगदान है उसके निबंधों का संग्रह जिसका नाम है 'एसेज़, ऑर काउसेल्स सिविल ऐण्ड मॉरल' ('निबंध, अर्थात् नैतिक एवं शिष्टाचार-संबंधी शिक्षाएँ')। यह पुस्तक सर्वप्रथम १५९७ में प्रकाशित हुई थी। १६१२ और

१६२५ के संस्करण इसकी तुलना में बहुत बड़े थे। इसमें कोई संदेह नही कि उसे इन निबंधो को लिखने की प्रेरणा महान् फ्रांसीसी विचारक मॉण्टेन के 'एसेज' से मिली परंतु विषय-सामग्री एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से वे पूर्णरूपेण बेकन की स्वतंत्र कृति हैं। यह बात ध्यान देने की है कि मॉण्टेन की ही भाँति उसने भी 'एसे' शब्द का प्रयोग उसके मौलिक, व्युत्पत्तिक अर्थ में तथा 'असे' (assay) शब्द का समानार्थक मानकर किया है—अर्थात् जिसका अर्थ है 'प्रयत्न'। इसी कारण उसके ये "निबंध' सर्वांगपूर्ण प्रबधों के रूप में नही लिखे गये है बल्कि उनका उद्देश्य कुछ विषयों पर लेखक के "बिखरे हुए चितनों" अथवा अनौपचारिक विचारो को व्यक्त करना है। पूर्णरूपेण व्यावहारिक होने के कारण इन निबधो का विषय है निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों मे जीवन-निर्वाह कैसे किया जाय। इस प्रकार उनका सबध उन वस्तुओं से है जो "मनुष्यो के व्यवसाय एवं हृदयों के अभिन्न अंग" है। उनकी प्रधान विशेषताएँ हैं असाधारण विवेक एव चातुर्य। अन्य किसी भी साहित्य में इस प्रकार की ऐसी कोई पुस्तक नही है जिसमे इतना परिपक्व अनुभव-जन्य-ज्ञान भरा हो। परंतु साथ ही हमे यह कभी नही भूलना चाहिए कि जिस ज्ञान का उपदेश इसमे दिया गया है वह स्पष्ट रूप से लौकिक प्रकार का ज्ञान है; उसमें आध्यात्मिकता का लेशमात्र भी नही है।

उसके सर्वप्रथम जीवनीलेखक के मतानुसार निबधो के लिखने मे उसका उद्देश्य "अपने विचारो की स्पष्ट एव ओजपूर्ण अभिव्यक्ति करना था, न कि वाक्यांशो को सुंदर एवं कृत्रिम बनाना।" परंतु उसकी शैली मे भी वही आलकारिकता, उपमाओ के प्रति वही अनुराग तथा सादृश्य एवं रूपको के लिए वही आकर्षण स्पष्ट रूप से विद्यमान है जो उस युग की साहित्यिक रुचि के इतने आवश्यक अंग थे। उसकी शैली पर लैटिन का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। परतु उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है उसकी आश्चर्यजनक सामासिकता तथा वह शक्ति जिसका परिचय उसने छोटे-छोटे वाक्यो मे बड़े गूढ अर्थ वाली बाते कहने में दिया है। कम से कम स्थान मे अपने विचार भर देने की शक्ति मे बेकन अपना सानी नहीं रखता। मार्लो के 'ज्यू ऑव माल्टा' मे एक वाक्याश[1] है जिसका अर्थ

१. "Infinite riches in a little room" **हिंदी में इसका एक उपयुक्त पर्याय "गागर में सागर" हो सकता है।—अनु०**

है "जरा–सी जगह मे असीमित धन"। बेकन के 'एसेज' का वर्णन इसी रूप में किया जाय तो कुछ अनुचित न होगा।

३८. शेक्सपियर-युग की अन्य गद्य-रचनाएँ–इस युग की विभिन्न रुचियाँ उसके गद्य-साहित्य में भली भाँति परिलक्षित हुई है। बहुत से लेखको ने इतिहास-पुस्तकों की रचना की। इनमें से प्रमुख ये है—सर वाल्टर रैले की 'हिस्टरी ऑव दि वर्ल्ड' (१६१४) जो बड़ी विशाल है परतु जिसमें लेखक ने आलोचक की दृष्टि बिल्कुल ही नही रखी है; बेकन की 'हिस्टरी ऑव दि रेन ऑव हेनरी दि सेविन्थ' ('हेनरी सप्तम के शासनकाल का इतिहास', १६२२) जो अत्यत न्याय-संगत है; फॉक्स की 'ऐक्ट्स ऐण्ड मानुमेण्ट्स ऑर बुक ऑव मार्टर्स' ('कृतियाँ और स्मारक, अर्थात् शहीदो की पुस्तक', १५६३) जो पूर्ण रूप से अविश्वसनीय है; तथा राफेल हॉलिन्शेड कृत 'क्रानिकल्स ऑव इग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड ऐण्ड आयर्लैंड' (१५७७) जिससे शेक्सपियर ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में प्रायः सहायता ली है। ऐसे समय में जब साहसिकता की भावना इतनी प्रबल थी, यात्रा-साहित्य का विकास होना स्वाभाविक ही था। उस साहित्य में से एक पुस्तक का उल्लेख उदाहरण के रूप मे होना आवश्यक है। रिचर्ड हैक्ल्यूट की 'प्रिंसिपल नेवीगेशन्स, वायजेज, ट्रैफिक्स ऐण्ड डिस्कवरीज ऑव दि इग्लिश नेशन' ('अग्रेजी राष्ट्र की प्रधान समुद्री यात्राएँ एव अनुसधान') विशेष रूप से प्रसिद्ध है। धर्मशास्त्र के क्षेत्र मे बहुत सी महत्त्वपूर्ण पुस्तके लिखी गयी। यद्यपि इस साहित्य से यहाँ हमारा सीधा सबध नही है तथापि रिचर्ड हुकर की 'इक्लीजियास्टिकल पॉलिटी' ('धर्मशास्त्रीय तत्र', १५९४-९७) का उल्लेख आवश्यक है। यह ग्रथ अत्यंत प्रवीणतापूर्वक लिखा गया है तथा इसमे जो विशेष बात ध्यान देने की है, वह है इसकी शैली। यद्यपि इसकी शैली अत्यत आलकारिक, वाक्तांडवपूर्ण एव जटिल है, परतु सामान्य रूप से यह अधिकाश मे तत्कालीन गद्य की शैली से अपेक्षाकृत अधिक सरल एव सादी है। इस प्रसग मे हमे बाइबिल के आधिकारिक सस्करण (१६११) का भी स्मरण रखना चाहिए जिसका प्रभाव प्रकाशन के समय से लगाकर अब तक अग्रेजी लेखन-शैली पर पड़ना कभी बंद नही हुआ। साहित्यक इतिहास के दृष्टिकोण से आलोचना-साहित्य के विकास का भी बड़ा महत्त्व है, क्योकि इससे यह प्रकट होता है कि लोगो ने साहित्य को कला मानकर उसके रूपों और सिद्धांतों मे रुचि लेना प्रारंभ कर दिया था। इन प्रारभिक प्रबंधों मे सबसे प्रसिद्ध है सिडनी की 'एपॉलजी फॉर पोएट्री' ('काव्य के लिए

क्षमायाचना' १५८१ के लगभग) । इसी प्रकार की कुछ अन्य रचनाएँ जिनका कुछ महत्त्व है निम्नलिखित हैं:—विलियम वेब की 'डिस्कोर्स ऑव इंगलिश पोएट्री' ('अंग्रेजी काव्य का विवेचन', १५८६) तथा जार्ज पुटेन्हम की 'आर्ट ऑव इंग्लिश पोएज़ी' (अंग्रेजी काव्य की कला, १५८९) ।

(सारिणी अगले पृष्ठों में)

शेक्सपियर-युग की सारिणी

क-पूर्व एलिज़बेथ-युग (१५५८–१५७९)

नाटकेतर-काव्य	नाट्य-साहित्य	गद्य
सैक्विल की 'इण्डक्शन टु दि मिरर फ़ॉर मैजिस्ट्रेट्स', १५५९.	सैकविल और नॉर्टन की 'गॉर्डबुक', १५६१.	फ़ॉक्स की 'ऐक्ट्स ऐण्ड मानुमेण्ट्स्', १५६३.
	स्टिल की 'गैमर गर्टन्स नीडिल' १५६६. गैस्क्वायन की 'सपोजेज़' (एरियोस्टो का अनुवाद) गद्य में अंग्रेजी का प्रथम सुखांत, १५६६.	ऐस्कम की 'स्कूलमास्टर' १५७०
'पैराडाइज़ ऑव डेण्टी डिवाइसेज़', १५७६.	'टैन्क्रेड ऐण्ड जियोमॉण्डा' (सेनेकन दुखांत), तुकांत छंद में, १५६८; अतुकांत छंद में, १५७२.	
गैस्क्वायन की 'स्टील ग्लास', १५७६.	लंदन में सर्वप्रथम नाट्यशालाओं का निर्माण, १५७६.	हॉलिन्शेड की 'क्रॉनिकल्स', १५७७.

ख—उत्तर एलिजबेथ-युग (१५७९–१६०३)

नाटकेतर-काव्य	नाट्य-साहित्य	गद्य
'दि शेफ़र्ड्स कैलेण्डर', १५७९.	लाइली का प्रथम सुखांत, 'इण्डीमियन', १५७९.	लाइली की 'यूफ्यूज़' १५७९-८०.
		सिड्नी की 'आर्केडिया' तथा 'एपॉलजी फॉर पोएट्री', लगभग १५८१.
वार्नर की 'अल्बियन्स इंग्लैण्ड' १५८६.		वेब की 'डिस्कोर्स ऑव इंगलिश पोएट्री' १५८६.
	मार्लो का प्रथम दुखांत, 'टैम्बरलेन दि ग्रेट', १५८७.	
	शेक्सपियर का प्रथम-काल १५८८-९३.	ग्रीन की 'पैण्डोस्टो', १५८८.
		हैक्ल्यूट की 'वायजेज,' १५८९.
		पुटेन्हम की 'आर्ट ऑव इंग्लिश पोएजी', १५८९.
'फ़ेयरी क्वीन', भाग एक से तीन १५९०.		लॉज की 'रोजालिण्ड', १५९०.

नाटकेतर-काव्य	नाट्य-साहित्य	गद्य
'वीनस ऐण्ड एडोनिस', १५९३.	मार्लो की मृत्यु, १५९३.	
'लुक्रीस', १५९४.	शेक्सपियर का द्वितीय-काल, १५९४-१६००.	हुकर की 'इक्लीजियास्टिकल पॉलिटी'. १५९४–९७.
		नैश की 'अन्फार्चुनेट ट्रैवेलर', १५९४.
डेनियल की 'सिविल वार्स', १५९५.		
'फ़ेयरीक्वीन', भाग चार से छः, १५९६.		
ड्रेटन की 'बैरन्स वार्स' तथा 'हीरोइकल एपिसिल्स', १५९६-९८		
		बेकन के 'एसेज' (प्रथम सस्करण, दस निबध, १५९७).
	बेन जॉन्सन का प्रथम नाटक 'एवरीमैन इन हिज़ ह्यूमर', १५९८.	
स्पेन्सर की मृत्यु १५९९.	'ग्लोब' थियेटर का निर्माण, १५९९.	
	शेक्सपियर का तृतीय-काल १६००–१६०८.	

नाटकेतर-काव्य	नाट्य-साहित्य	गद्य
	लाइली की मृत्यु, १६०६.	
	बोमाँ और फ्लेचर के नाटक, १६०७ से आगे।	
	शेक्सपियर का चुतर्थ-काल, १६०८-१२.	
	वेब्सटर का प्रथम नाटक, 'दि व्हाइट डेविल,' १६०८–१०.	
शेक्सपियर की 'सॉनेट्स' प्रकाशित, १६०९.		बाइबिल का आधिकारिक संस्करण १६११.
ड्रेटन की 'पॉलीयाल्बियॉन', १६१३-२२.		
		रैले की 'हिस्टरी ऑव दि वर्ल्ड', १६१४.
	शेक्सपियर की मृत्यु १६१६.	
	बोमाँ की मृत्यु, १६१६.	
	शेक्सपियर के नाटकों का प्रथम फ़ोलियों संस्करण, १६२३.	
	फ्लेचर की मृत्यु, १६२५.	बेकन के 'एसेज़' (तृतीय संस्करण, ५८ निबंध), १६२५.

अध्याय ९

मिल्टन-युग (१६२५-१६६०)

मिल्टन

३९. **मिल्टन-युग**—मिल्टन-युगीन साहित्य के विद्यार्थी के लिए उस युग के इतिहास की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं—एक नैतिक एवं सामाजिक शक्ति के रूप में प्यूरिटनवाद का विकास, शासन के क्षेत्र में एक नियंत्रक शक्ति के रूप में उसकी स्थापना, तथा वे धार्मिक एवं राजनीतिक संघर्ष जिनके द्वारा ये दोनों बातें संभव हो सकीं।

यद्यपि 'रिफ़ार्मेशन'[1] (धर्म-सुधार) के समय उन्हीं लोगों के मत की विजय हुई थी जो संयत विचारों के थे तथापि ऐसे व्यक्तियों का अभाव नहीं था जिनके विचार उग्र थे तथा जो आर्कबिशप पार्कर तथा उसके सहयोगियों द्वारा की गयी धार्मिक व्यवस्था से असंतुष्ट थे। उनके असंतोष का कारण उनका यह विश्वास था कि पार्कर इत्यादि द्वारा संगठित अंग्रेजी चर्च तथा रोम के चर्च में अधिक अन्तर नहीं था। ये लोग वाइक्लिफ़ व लौलार्डो के सच्चे उत्तराधिकारी थे और अब उन पर जेनेवा के प्रसिद्ध जॉन कैल्विन का भी बहुत प्रभाव पड़ा था। यद्यपि ये लोग बहुत-सी बातों में परस्पर एकमत न थे परंतु धार्मिक व्यवस्था के क्षेत्र में पादरियों की सत्ता का विरोध सब लोग समान रूप से करते थे। इसके अतिरिक्त वे राष्ट्रीय चर्च की सार्वजनिक पूजा एवं पद्धति में उन अनेक विचारों एवं संस्कारों को बनाये

१. पहले रोमन कैथलिक होने के कारण इंग्लैण्ड धार्मिक मामलों में पोप के अधीन था। परन्तु हेनरी अष्टम ने पोप से संबंध-विच्छेद करके स्वतंत्र अंग्रेजी चर्च की स्थापना की। यह विच्छेद १५२९ और १५३६ के बीच 'रिफ़ार्मेशन पार्लिमेण्ट' के समय में हुआ। इसी घटना से इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार की वास्तविक नींव पड़ी।—अनु०

रखने के भी उग्र विरोधी थे जिन्हें वे पोप की प्रभुता के चिन्ह मानते थे। जीवन एवं आचरण के संबंध में जिन मतो का वे समर्थन करते थे वे अत्यन्त कठोर थे और इसी कारण उन्हें 'प्यूरिटन' (अर्थात् 'कट्टर') कहा जाने लगा। इस नाम का प्रयोग संभवतः शेक्सपियर के जन्म संवत् के आस-पास अथवा थोड़े ही समय उपरांत आरभ हुआ। पहले इसका प्रयोग मजाक उडाने के लिए किया जाता था परंतु शीघ्र ही इसका प्रयोग केवल एक निरूपक शब्द के रूप मे होने लगा। जेम्स प्रथम के राज्यकाल में इंग्लैण्ड के मध्यम वर्ग मे इस दल की दृढनिष्ठ भावना का प्रसार बड़े तीव्र एव अनवरत ढ़ंग से हुआ। तथापि एक महान् राष्ट्रीय शक्ति के रूप मे प्यूरिटनवाद का अभ्युदय जेम्स के उत्तराधिकारी चार्ल्स प्रथम के समय में ही हो सका। इस समय कुछ बातों का ऐसा सयोग हो गया जिनके कारण इस दल को व्यावहारिक सफलता भी प्राप्त हो गयी उच्च वर्गो की धृष्टतापूर्ण वाचालता एव लपटता के कारण गंभीर व्यक्तियो की सहानुभूति मतामत की परस्पर विभिन्नता के बावजूद भी प्यूरिटनवाद के साथ हो गयी थी, इस कारण उसके नैतिक एवं सामाजिक प्रभाव मे भी अत्यधिक वृद्धि हो गयी। इस बीच कैण्टरबरी के आर्कबिशप लॉर्ड की उद्धत नीति एव पर-ीड़न द्वारा अपनी इच्छा दूसरों पर लादने के उसके निश्चय ने धार्मिक क्षेत्र में संघर्ष की भावना को और भी बलवती एवं वेगवती बना दी। फलस्वरूप पादरियों की सत्ता के समस्त शत्रु एक हो गये। इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने कामन्स-सभा के अधिकार-क्षेत्र का घोर अतिक्रमण किया तथा जनता के सविधानिक अधिकारों पर भी कठोर आघात किया। प्यूरिटन लोगों के इस विश्वास ने कि ईश्वर राजाओ के भी राजा के रूप में सर्वोपरि है तथा व्यक्तिगत सत्यासत्य-निर्णय का अधिकार अन्य सभी अधिकारों से बढ़कर है, उन्हे सांसारिक अत्याचार के प्रति घोर असहिष्णु बना दिया, चाहे उस अत्यचार का स्वरूप कुछ भी क्यों न हो। इस प्रकार प्यूरिटनवाद जिसका रूप अभी तक केवल नैतिक और धार्मिक ही था, अब एक राजनीतिक शक्ति तो बन ही गया, साथ ही ऐसे घोर सकट के समय हमारी लुप्तप्राय स्वतंत्रताओं का महान् रक्षक भी बन गया। गृह-युद्ध के तूफानी समय के उपरांत ऑलिवर क्रॉमवेल की विजय के साथ उसकी भी विजय हुई, तथा 'कामनवेल्थ'[1] के कुछ वर्षो मे वह सर्वसत्तासम्पन्न रहा।

१. १६४९ में चार्ल्स प्रथम की फ़ाँसी के उपरान्त ११ साल तक पार्लिमेण्ट का जो शासन रहा वह 'कामनवेल्थ' के नाम से प्रसिद्ध है।--अनु०

अपनी सीमाओं के भीतर प्यूरिटनवाद का अंग्रेजी जीवन एवं विचार-पद्धति पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसने जिस भावना को जन्म दिया वह सुदर और श्रेष्ठ तो थी परंतु साथ ही कठोर और निष्ठुर भी थी। हम प्यूरिटनों की सत्यनिष्ठा एवं चरित्र बल की प्रशसा करते है, परतु उनकी धर्मांधता, उनकी विषण्णता तथा उनके दृष्टिकोण एवं उनकी सहानुभूतियो की सकुचितता पर हमे दुख भी होता है। प्यूरिटनों मे भावना की तीव्रता एव ईश्वर-भय तो था परतु वे अनुदार एवं अविवेकी भी थे। यद्यपि तत्कालीन परिस्थितियो के आधार पर उस समय फैली हुई बुराइयो के प्रति उनकी रोषपूर्ण एव उत्कट भावना को समझा और उचित ठहराया जा सकता है, तथापि हमे यह तो स्वीकार करना ही होगा कि संसार के प्रति उनका दृष्टिकोण एकागी एवं दोषपूर्ण था। कारण यह है कि नैतिक और आध्यात्मिक विषयो में वे इतने अधिक निमग्न रहते थे कि सामान्यता वे उस विज्ञान एवं कला अथवा उस ज्ञान एवं सौदर्य की उपेक्षा कर लेते थे जो लौकिक जीवन को महत्त्व प्रदान करते है, और कभी-कभी तो इनकी स्पष्ट रूप से निदा भी करते थे। जहाँ तक प्यूरिटनवाद की चली, उसने उदार संस्कृति को नष्ट कर दिया तथा साहित्य को अपने विशिष्ट स्वार्थो के सकुचित क्षेत्र मे ही सीमित रखने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। इस प्रकार वह कला के लिए तो घातक था ही, साहित्य के लिए भी प्राय घातक ही सिद्ध हुआ। बस यदा-कदा ही कोई ऐसा लेखक हुआ तो हो गया जिसने प्यूरिटनवाद की सपूर्ण शक्ति तो ग्रहण कर ली हो परंतु साथ ही उसके बंधनों से मुक्त भी हो। मिल्टन के सबंध मे यह बात स्पष्ट रूप से लागू होती है। वह हमारे साहित्य को प्यूरिटनवाद की महानतम देन है। उसकी प्रतिभा एव उसके साहित्य मे प्यूरिटनवाद के नैतिक और धार्मिक प्रभावों एवं पुनर्जागरण की उदार सस्कृति दोनों का अपूर्व संयोग हुआ है।

४०. मिल्टन का जीवन-वृत्त—जॉन मिल्टन का जन्म लंदन की चीपसाइड बस्ती मे ब्रेडस्ट्रीट में ९ दिसंबर १६०८ को, अर्थात् शेक्सपियर के अवकाश-ग्रहण कर स्ट्रैटफर्ड जाने के लगभग चार वर्ष पूर्व, हुआ था। उसके पिता अपनी सहानुभूतियो के सबध में कठोर प्युरिटन होते हुए भी साहित्य एवं कला के प्रेमी थे, इसी कारण बालक मिल्टन को एक सुसस्कृत परिवार के सभी लाभ प्राप्त हुए। उसकी शिक्षा सेण्ट पॉल स्कूल तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के क्राइस्ट कालेज मे हुई। क्राइस्ट कालेज मे वह सात वर्ष रहा। १६२९ में उसने बी०ए० किया और १६३२ में एम० ए०। परंतु कालेज की पढ़ाई समाप्त होने के बाद भी उसका नियमित

एवं सुनियोजित अध्ययन समाप्त नही हुआ। उसके पिता की इच्छा थी कि वह चर्च मे नौकरी करे अर्थात् पादरी बने परतु उसकी आत्मा इस बात की गवाही नही देती थी। किसी और व्यवसाय को भी ग्रहण करने की उसकी इच्छा नहीं थी। अतएव उसने अपने को पूर्णरूप से आत्मोत्थान एवं काव्य-रचना में लगाने का निश्चय किया। सौभाग्यवश उसके पिता की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि वह अपनी इच्छानुसार आगे बढ़ सके। तदनुसार कैम्ब्रिज छोड़ने पर वह परिवार के ग्रामीण निवासस्थान में रहने लगा जो लदन से लगभग सत्रह मील दूर बकिंघमशायर में हॉर्टन में था। जब वह स्कूल में ही था तभी अपनी बाल्यावस्था में ही वह पुस्तकों मे इतना निमग्न रहता था कि आधी रात तक सोता नहीं था। यह बात उसने स्वय लिखी है। विश्वविद्यालय में भी अध्ययन के प्रति उसकी यह अटूट निष्ठा बनी रही। और अब छः वर्षों के इस अनवरत एकांतवास में उसे यह अवसर मिला कि वह अपना परिश्रमशील अध्ययन अबाध रूप से चला सके। इस प्रकार पहले से ही रखी हुई दृढ नीव पर अपने पाण्डित्य में अनवरत वृद्धि करके मिल्टन बड़ा भारी विद्वान् बन गया। यह बात सावधानीपूर्वक ध्यान मे रखना आवश्यक है, न केवल इसलिए कि अपने पांडित्य की विशालता एवं विशुद्धता में वह हमारे अन्य सभी कवियो से कही ज्यादा बढ़ चढ़ कर है, बल्कि इसलिए भी कि उसके पाण्डित्य ने सर्वत्र उसके साहित्य का पोषण किया है जिसके फलस्वरूप उसका साहित्य उसके पांडित्य से ओत-प्रोत है। इस समय तक वह तीस वर्ष का हो चला था अतः उसने यात्रा द्वारा अपना अध्ययन पूरा करने का निश्चय किया। तदनुसार उसने मई, १६३८ में लंदन से प्रस्थान किया तथा पेरिस होते हुए इटली तक गया। परंतु वहाँ उसे स्वदेश में व्याप्त संकटपूर्ण स्थिति का समाचार प्राप्त हुआ जिसके कारण उसे शीघ्र ही वापस लौटना पड़ा। वह स्वयं लिखता है, "जब मैं सिसिली और यूनान जाने की तैयारी कर रहा था, मुझे इंगलैण्ड में फैल रहे प्रजा के संक्षोभ का विषादपूर्ण समाचार प्राप्त हुआ जिसके कारण मुझे अपना निश्चय बदलना पड़ा। मैंने सोचा कि ऐसे समय मे जब कि सारे देशवासी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे, मनोरजन के लिए विदेश-यात्रा करना मेरे लिए नीचता की बात होगी।" पन्द्रह महीनों की अनुपस्थिति के उपरांत वह अगस्त १६३९ में लंदन लौट आया और १६४० से आगे वह राजपक्ष के विरुद्ध प्यूरिटनों के सहायक के रूप में अधिकाधिक क्रियाशील रहा। सत्य तो यह है कि एक पैम्फ़लेट-लेखक के रूप में वह प्यूरिटन-पक्ष का महान् स्तम्भ बन गया। 'कॉमन-वेल्थ' की स्थापना होने पर वह विदेशी मामलो की समिति के लिए लैटिन सेक्रेटरी

नियुक्त हुआ। १६४३ में उसने राजपक्ष के एक सदस्य की युवती कन्या मेरी पॉवेल से विवाह किया परंतु यह विवाह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ। १६५३ के आरंभ में ही उसके ऊपर एक भयानक विपत्ति आयी। उसकी दृष्टि जो काफी समय से कमजोर हो रही थी अब कार्याधिक्य के कारण बिल्कुल नष्ट हो गयी और वह पूर्ण रूप से अधा हो गया। तीन वर्ष बाद उसने पुनः अपना विवाह किया परंतु उसकी पत्नी, कैथरीन वुड्कॉक, पंद्रह महीने के अंदर ही मर गयी। राजसत्ता का पुनस्संस्थापन (१६६०) होने पर मिल्टन कैद कर लिया गया और उसकी दो पुस्तके (राजकीय) वधिक द्वारा सार्वजनिक रूप से जला दी गयी। परतु शीघ्र ही वह कैद से मुक्त कर दिया गया और धीरे-धीरे उसकी राजनीतिक ख्याति का अत हो जाने दिया गया। अब वह अंधा तो था ही, साथ ही निर्धन और अकेला भी था। जिस निमित्त उसने इतना परिश्रम और बलिदान किया था उसकी असफलता से उसे महान् क्लेश हो रहा था, अब यद्यपि उसे अपनी तीसरी पत्नी, एलिजाबेथ मिन्शल से वृद्धावस्था मे आराम मिल रहा था, तथापि पहली पत्नी की पुत्रियों के कृतघ्नतापूर्ण व्यवहार के कारण उसे महान् कष्ट था। अतएव ऐसी अंधकारमय एव दुखपूर्ण परिस्थिति में उसने उन महत्त्व.कांक्षापूर्ण काव्यात्मक योजनाओ का आधार लिया जिन्हें उसने अपने व्यावहारिक कर्त्तव्य की पुकार पर अलग हटा दिया था। उसका 'पैराडाइज लॉस्ट' ('स्वर्ग से निष्कासन') १६६७ मे प्रकाशित हुआ तथा 'पैराडाइज रिगेन्ड' ('स्वर्ग की पुन.प्राप्ति') और 'सैमसन एगोनिस्टिस' दोनों साथ-साथ १६७१ में। तीन वर्ष उपरांत ८ नवम्बर, १६७४ को मिल्टन का देहात हो गया।

४१. मिल्टन का प्रारंभिक काव्य--मिल्टन के रचना-काल के चार भाग सहज ही किये जा सकते है :—(१) कालेज-युग जिसकी समाप्ति उसके कैम्ब्रिज-जीवन की समाप्ति के साथ १६३२ मे हुई; (२) हॉर्टन-युग जिसका अत यूरोप-प्रस्थान के समय १६३९ में हुआ; (३) गद्य-रचनाओ का काल, १६४० से १६६० तक; तथा (४) काव्य-रचना का उत्तर-काल, अर्थात् उसके महानतम कृतित्व का काल।

कालेज-जीवन में लिखी हुई उसकी लैटिन और अंग्रेजी दोनों ही प्रकार की कविताएँ अधिकतर एक युवा-लेखक की प्रयोगात्मक रचनाएँ ही हैं। मिल्टन का विशेष अध्ययन करने वाले व्यक्ति के लिए तो उनका महत्त्व इस बात में है कि वे कवि की अप्रौढ़ता में उसकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति-स्वरूप है; इसके अतिरिक्त

उनका अन्य कोई महत्त्व नही है। परंतु इस कथन का एक अपवाद भी है। वह है 'ऑन दि मॉर्निंग ऑव क्राइस्ट्स नेटिविटी' ('ईसा के जन्म की सुबह') नामक उसकी 'ओड'[१]। यद्यपि यह कविता पूर्णता से बहुत दूर है और स्थल-स्थल पर क्लिष्ट कल्पना एव शैली की विषमताओ ने इसके सौदर्य को भी नष्ट कर दिया है, फिर भी केवल इक्कीस वर्ष के कवि के लिए यह अत्यंत श्रेष्ठ रचना है। इसके विपरीत ह।र्टन-काल मे उसने चार ऐसी सुदर एवं शक्तिपूर्ण कविताओं की रचना की कि यदि 'पैराडाइज लॉस्ट' कभी न लिखा गया होता तो भी वे लेखक को अंग्रेजी काव्य की महान् विभूतियों मे स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त होती। ये रचनाएँ है :— 'ल लेग्रो'[२] तथा 'इलपेन्सेरोजो'[३] (१६३३), 'कोमस' (१६३४) और 'लिसिडस' (१६३७)। इन कविताओ को अलग-अलग पढ़ कर भी उनका आनद उठाया जा सकता है, परतु साहित्य के विद्यार्थी के लिए उनके विषय में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यदि उन्हे रचना-क्रम के अनुसार पढ़ा जाय तो उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि विचार पूर्ण विश्राम के इन वर्षो मे कवि के मस्तिष्क मे बड़ा गभीर परिवर्तन हो रहा था। मै कह चुका हूँ कि मिल्टन की रचनाओं में प्यूरिटनवाद के नैतिक एवं धार्मिक प्रभावो एव 'पुनर्जागरण' की उदार-सस्कृति का सम्मिश्रण हुआ है। इन विरोधी तत्त्वो के इसी सम्मिश्रण ने उसकी महानतम कविता को एक अनोखी विशिष्टता से सम्पन्न कर दिया। यदि इनमे से एक तत्त्व का भी अभाव होता तो वह इस प्रकार कभी न लिख पाता। परतु उसकी प्रारम्भिक रचनाओ से हमे ज्ञात होता है कि उसने मुख्य रूप से पुनर्जागरणकालीन कला एवं पाण्डित्य से ही प्रेरणा लेकर लिखना ारभ किया तथा आरंभ में प्यूरिटन तत्व बिलकुल गौण था। इस तत्त्व की प्रबलता

१. 'ओड' ऐसी कविता को कहते हैं जिसमें निर्जीव वस्तुओं को जीवधारी मानकर सम्बोधित किया जाता है। संबोधन का होना आवश्यक है। हिन्दी में इसे 'स्तोत्र' अथवा 'संबोध-गीति' कह सकते है।—अनु०

२. इस इटालियन शीर्षक का अर्थ है 'प्रसन्न मानव'। इसमें प्रसन्नता की देवी से याचना की गयी है कि वह कवि को अपने साथ रहने की अनुमति प्रदान करे।—अनु०

३. यह शीर्षक भी इटालियन भाषा में ही है। इसका अर्थ है 'दुखी मानव'; इसमें दुःख की देवी का आह्वान किया गया है।—अनु०

एवं गंभीरता में वृद्धि धीरे धीरे हुई, यहाँ तक कि अत मे यह सबसे प्रधान तत्त्व बन गया। इस प्रकार 'ल लेग्रो' और इलपेन्सेरोज़ो ' में विशिष्ट रूप से प्यूरिटन तत्त्व बहुत कम मात्रा में है, जब कि उनमें ऐसा बहुत-कुछ है जो यथार्थ मे प्यूरिटन भावना के विरुद्ध है। इन दो कविताओ में मनुष्य, प्रकृति एव कला के परस्पर-विरोधी किंतु मनमोहक चित्र खीचे गये है जिन्हे कवि ने एक मे हर्ष और दसरी में विषाद की भावना के माध्यम से देखा है। इनमे कवि ने प्रणय लीला एवं ग्रामीण खेल कूद के सुख, नाट्यशाला एव यूनानी नाट्य के आनद तथा चर्च की वास्तुकला एव सगीत के सौदर्य का स्वच्छदता पूर्वक वर्णन किया है और एक धर्मांध व्यक्ति के लिए ये सभी वस्तुएँ अत्यंत तीव्र घृणा की पात्र थी। परतु 'कोमस' मे मिल्टन के मस्तिष्क के विकास की एक नयी अवस्था स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। प्यूरिटन भावना जो अभी तक प्रच्छन्न रूप से वर्तमान थी उसका प्रभाव अब न केवल कवि की बढ़ी हुई एकाग्रता मे बल्कि उसकी नैतिक शिक्षा के विशिष्ट गुण मे भी दिखाई पड़ता है। साहित्यिक दृष्टि से यह रचना भी पुनर्जागरण के प्रभाव के ही अंतर्गत आती है, क्योकि यह उस नाट्य प्रकार का उदाहरण और हमारे सपूर्ण साहित्य मे सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जिसको 'मास्क'[1] कहा जाता है, जो इग्लैण्ड मे इटली से आया था तथा जो प्रारभ से ही राजदरबार मे तथा अमीरो के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहा था। मिल्टन ने नाट्य के इस रूप को स्वेच्छापूर्वक ग्रहण किया यही इस बात का प्रमाण है कि वह अब भी उस तीव्र शत्रुता की भावना से बहुत दूर था जो प्यूरिटन दल मे नाटक से सबधित प्रत्येक वस्तु के लिए वर्तमान थी। परतु यद्यपि उसने पुनर्जागरण कालीन कला-रूपो को तो ग्रहण किया, तथापि उसने उन्हे एक प्रबल नैतिक भावना एवं उद्देश्य से सयुक्त कर दिया। यह सीधी-सादी कथा एक ऐसी स्त्री के बारे मे है जो जगल मे खोयी जाकर कोमस तथा उसके विषयासक्त मित्रो के प्रलोभन में पड़ जाती है तथा जिसकी रक्षा उसके भाई एक प्रेतात्मा, जो उनकी अनुचर है, तथा नदियों की अप्सरा की सहायता से करते है। स्पष्टतः यह कामुकता द्वारा सतीत्व पर किये जाने वाले आक्रमण तथा दैवी सहायता से सतीत्व की विजय को प्रदर्शित करने वाला एक दृष्टात-रूपक है। इस प्रकार हम यहाँ उन दोनों प्रभाव-

१. 'मास्क' में सभी अभिनेता चेहरे पर नकाब लगाकर अभिनय करते हैं तथा इसमें संगीत आदि की प्रचुरता रहती है।--अनु०

धाराओं को साथ-साथ प्रवाहित होते हुए देखते हैं जिनके द्वारा उसकी प्रतिभा का पोषण हो रहा था। साथ ही हम यह भी ध्यान देते है कि यद्यपि यह नाटक क्लासिकल ज्ञान से पूर्ण है, तथापि इसकी मुख्य भावना की श्रेष्ठता तथा ईश्वर में दृढ़विश्वास जिसकी अभिव्यक्ति इसके द्वारा हुई है, इस बात के प्रमाण है कि कवि के विचारो पर धार्मिक प्रेरणा का प्रभाव अधिकाधिक प्रबल हो रहा था। अंत में, 'लिसिडस' में हमें ऐसे प्यूरिटनवाद के दर्शन होते है जो आध्यात्मिक और नैतिक तो है ही, साथ ही राजनीतिक और धार्मिक भी है। मिल्टन के सहपाठी एडवर्ड किंग की मृत्यु पर लिखा गया यह शोक गीत स्पेन्सर के 'एस्ट्रोफेल' (देखो § २५) की ही भाँति शोकगीतों की परम्परागत क्लासिकल पशुचारण-शैली मे है। इस कारण शैली की दृष्टि से यह 'कोमस' की भाँति पुनर्जागरण से सबधित है। परतु इसका धार्मिक स्वर आद्योपांत स्पष्ट रूप से प्यूरिटन है। भ्रष्टाचारपूर्ण चर्च तथा तत्कालीन किराये के टट्टू पादरियों पर इसमे जो आक्रमण किया गया है और जो इतना प्रसिद्ध है वह तो स्पष्ट रूप से इस बात की घोषणा करता है कि मिल्टन प्यूरिटन दल का अनगामी एवं समर्थक था। इस प्रकार इन प्रारभिक कविताओं के द्वारा हम मिल्टन के मस्तिष्क में धार्मिक भावना के निरतर विकास की प्रगति का परिचय प्राप्त कर सकते है। उसने पुनर्जागरणकालीन ज्ञान एवं कला का परित्याग नही किया; बल्कि उनका अधिकाधिक उपयोग प्यूरिटन जीवन-दर्शन की व्याख्या करने के लिए किया।

४२. **मिल्टन की गद्य-रचनाएँ**––यूरोप से इग्लैण्ड लौटकर मिल्टन ने अपना संपूर्ण ध्यान उस समय चल रहे प्रचण्ड विवादो पर केंद्रित किया और इस प्रकार, अपने ही शब्दों में, उसने "कोलाहल एवं कर्कश विवादों के क्षुब्ध सागर मे"[1] प्रवेश किया। इस समय उसका इकतीसवाँ वर्ष चल रहा था। एक महान् महाकाव्य लिखने की महत्त्वाकाक्षा उसके मन मे पहले ही साकार हो चुकी थी परतु फिलहाल उसने अपना ध्यान इससे हटा लिया जिससे कि वह अपनी सारी शक्ति और सारा अध्यवसाय उस कार्य की सिद्धि मे लगा सके जिसे वह एक महान् सार्वजनिक कर्त्तव्य मानता था। इस प्रकार राजनीतिक और धार्मिक विवादों मे पड़कर उसने काव्य-रचना से पूर्ण संन्यास-सा ले लिया और अगले बीस वर्ष तक गद्य-लेखक के रूप में निरतर क्रियाशील रहा। मिल्टन द्वारा इन अस्थायी एवं महत्त्वहीन बातों में अपना

१. "On a troubled sea of noises and hoarse disputes."

संपूर्ण ध्यान केंद्रित कर देने के कारण साहित्य की कितनी महान् क्षति हुई इसका कुछ अनुमान तभी लग सकता है जब हम यह याद रखे कि मिल्टन अपने युग का महान्तम कवि था परतु अपने जीवन के इस सर्वश्रेष्ठ काल में, जो लम्बाई मे शेक्सपियर के संपूर्ण रचना-काल के करीब-करीब बराबर था, उसने कुल मिलाकर केवल एक दर्जन के लगभग 'सॉनेट' लिखे। आजकल उसकी गद्य-रचनाओ में स्वय कुछ अधिक महत्त्व नही है और न वे पढ़ने मे ही अधिक मनोरजक है। कारण यह है कि उस समय के विवादात्मक साहित्य के दो प्रधान दोष उनमें भी वर्तमान है। ये हैं भाषा की परुषता एव स्वाभाव की तीव्र कटुता जिनके कारण उनका सौदर्य नष्ट हो गया है। वैसे हमे इन रचनाओं में प्राय· उच्च कोटि की एकाग्रता के दर्शन होते है तथा उत्कृष्ट वाक्शक्ति के जो उद्गार समय समय पर मिलते है उनसे इनके दोषो का भी कुछ परिहार हुआ है। फिर उनकी शैली भी भारी एव शिथिल है। मिल्टन ने स्वय कहा है कि उसके "बायें हाथ" की रचनाएँ है, और लगभग प्रत्येक पृष्ठ से हमे यह पता चल सकता है कि उसके बायें हाथ में दाहिने हाथ वाली पटुता नही थी। लबे-लबे शिथिल वाक्य, सश्लिष्ट विन्यास, निक्षिप्त पद एव लैटिन विपर्यास—वास्तव मे इन सब से यही स्पष्ट होता है कि जब मिल्टन ने अपनी गद्य-रचनाएँ लिखी उस समय तक आधुनिक अग्रेजी गद्य का जन्म नही हुआ था। परतु इन निबधो मे से एक बिल्कुल पृथक है। यह है 'एरियोपैजिटिका' जो अत्यन्त उच्च कोटि की महान् रचना है। यह रचना पार्लिमेण्ट की एक आज्ञा के विरोध मे लिखी गयी थी जिसके कारण पुस्तको पर सेन्सर लग गया था। परतु यथार्थ मे इसमे विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता का प्रतिपादन किया गया है। साहित्य एव बौद्धिक स्वतत्रता के प्रत्येक प्रेमी को इसे पढना चाहिए।

४३. **मिल्टन का उत्तरकालीन काव्य**—जब राज्यतत्र के पुनस्सस्थापन के कारण उसे अप्रसिद्धि का शिकार होकर एकात जीवन बिताना पड़ा तभी मिल्टन को उस विशाल योजना की पूर्ति के लिए समय मिला जिसे वह प्रत्येक भविष्य के लिए टालता आया था। अब 'पैराडाइज लॉस्ट' के रूप मे उसने हमारा महान्तम अग्रेजी काव्य प्रस्तुत किया। उसके साहित्य मे परस्पर-विरोधी गुणों के जिस समन्वय के विषय मे हम पहले कह चुके है उसका पूर्ण महत्त्व बौद्धिक बल एव सर्जनात्मक शक्ति की इस अद्भुत कृति के अध्ययन से ही स्पष्ट होता है। इस काव्य की प्रेरणा एवं विषय-वस्तु दोनो का ही स्रोत मिल्टन का प्यूरिटनवाद है। 'पैराडाइज लॉस्ट' की

रचना उसने अपने धर्मज्ञान की व्याख्या के रूप में की है, तथा उसी धर्मज्ञान के आधार पर कवि ने इसमे "शाश्वत विधि-विधान को प्रतिपादित करने व मानवों को ईश्वरीय नियमो के औचित्य का ज्ञान करानें"[१] का बीड़ा उठाया है। परतु यद्यपि विचारक एव नीतिशास्त्री के रूप मे वह अब पूर्णरूपेण प्यूरिटन हो गया था, तथापि कलाकार के रूप में अब भी पुनर्जागरण से उसका सबध टूटा नही था। क्या काव्यरूप व शैली और क्या सज्जा एव विन्यास, सभी बातो मे 'पैराडाइज लॉस्ट' हमे प्राचीन क्लासिकल (प्रतिष्ठित) साहित्य के उन महान महाकाव्यो की याद दिलाता है जो प्रकट रूप से मिल्टन के आदर्श थे। इसके अतिरिक्त मिल्टन का वह विशाल एव विविध ज्ञान जो इस काव्य के ताने-बाने मे बुना हुआ है, यह प्रकट करता है कि वृद्धावस्था के एकाकीपन एव अधेपन मे वह कितने अनुराग के साथ युवावस्था के सुखी दिनों मे किये गये अपने विशाल धार्मिकेतर अध्ययन की याद किया करता था। इस प्रकार अब भी मिल्टन का प्यूरिटनवाद उसके मानववाद का हनन नही कर सका। एक में सदाचार के लिए जो उत्साह एव नैतिक उद्देश्य पर जो आग्रह है वह अब भी उस पाण्डित्य-प्रेम एव सौदर्यानुराग के साथ अविभाज्य रूप से सयुक्त है जो दूसरे की प्रमुख विशेषता है। अतएव मिल्टन के साहित्य का मूल्याकन करने मे यह बात बड़े महत्त्व की है कि उसने समग्र आधुनिक साहित्य के जिस महान्तम महाकाव्य की रचना की उसका विषय क्लासिकल न होकर धार्मिक है, तथा वह ईसाई मत का प्रतिपादन करने के लिए लिखा गया है।

'पैराडाइज लॉस्ट' मे उसने भगवान् के विरुद्ध शैतान के विद्रोह, स्वर्ग में हुए युद्ध, विद्रोही देवदूतो के पतन, पृथ्वी तथा मानव की सृष्टि ईव और आदम के प्रलोभन एव ईडेन से उनके निष्कासन का वर्णन किया है। यद्यपि उसका प्रधान उद्देश्य यह दिखाना था कि किस प्रकार "मानव के प्रथम आज्ञोल्लघन"[२] के परिणाम-स्वरूप पाप एव मृत्यु का प्रवेश मानव जीवन मे हुआ, तथापि जिस बात से उसकी विशिष्टता प्रकट होती है वह यह है कि वह बुराई की विजय के साथ अपने काव्य की समाप्ति नही करता बल्कि उद्धार के दैवी कार्य की भविष्यवाणी भी करता है।

१. "Assert Eternal Providence and justify the ways of God to men"

२. "Man's first disobedience"

इस प्रकार उसने व्यक्त रूप से अपनी प्रारंभिक योजना तो पूर्ण कर ली थी परंतु कुछ समय उपरांत उसने चार भागों में एक उत्तरार्ध भी लिखने की आवश्यकता अनुभव की जिसका आधार बनी "अरण्य मे ईसा के प्रलोभन की कथा।" पैराडाइज़ रिगेण्ड' नामक इस रचना में स्थल स्थल पर उदात्त एव कोमल दोनों ही प्रकार के वर्णन मिलते है परतु अधिकांश आधुनिक पाठको को यह अपनी पूर्ववर्ती विशाल रचना के सामने बहुत ही क्षुद्र मालूम होती है। इन अतिम वर्षो की सर्वोत्कृष्ट रचना है, 'सैम्सन एगोनिस्टिस' (अर्थात् पहलवान् सैम्सन) जो एक "नाटकीय काव्य" है। "पैराडाइज लॉस्ट' की भाँति इसमे भी मिल्टन ने बाइबिल से ली गयी कथा के निरूपण के लिए क्लासिकल कथा-रूपों का व्यवहार किया है, क्योंकि इस रचना में यूनानी-दुखान्त-नाट्य के सिद्धांतो का कठोर अनुसरण हुआ है, जब कि इसकी कथा फिलिस्तीनों के बीच सैम्सन को हुए अनुभवों पर आधारित है। यह कथावस्तु मिल्टन के ध्यान मे बहुत वर्षो से थी जब वह अपने महाकाव्य के लिए उपयुक्त कथा-वस्तु की तलाश मे था, परतु उसने मानव के पतन की कथा के पक्ष में इसका परित्याग कर दिया था। संभवत. उसने इसको अब फिर से इसलिये चुना कि उसने अपने नायक में स्वयं अपनी तथा प्यूरिटनवाद की हीन अवस्था का प्रतिबिम्ब देखा। वह स्वय तो अधा, हताश तथा शत्रुओ की शक्ति से घिरा हुआ था ही, प्यूरिटनवाद भी अपने शत्रुओं की शक्ति के आगे पराजित हो चुका था।

४४. मिल्टन के काव्य की विशेषताएँ––शेक्सपियर के बाद मिल्टन ही अग्रेजी का महान्तम कवि है। दूसरे शब्दों में इसका आशय है कि वह नाट्य-साहित्य के बाहर अंग्रेजी का महान्तम कवि है। इसके अतिरिक्त आलोचकगण इस बात मे प्रायः एकमत है कि उसकी गणना विश्व के तीन-चार सर्वश्रेष्ठ कवियो मे होनी चाहिए। उसमें हमे बौद्धिक एवं सर्जनात्मक दोनो शक्तियों का आश्चर्य-जनक सयोग मिलता है, तथा दोनों ही शक्तियाँ अपने सर्वोत्कृष्ट रूप मे दिखाई देती है। साथ ही वह एक सिद्ध साहित्यिक कलाकार भी था। सूक्ष्म एवं विस्तृत वर्णन में वह जितना सिद्धहस्त था उतना ही स्थूल और सामान्य चित्रण में भी। इस प्रकार उसके साहित्य के सर्जन में अनेक गुणो ने भाग लिया, परतु जिस गुण का ध्यान हमें सबसे स्वाभाविक रूप में आता है तथा यथार्थ में जिसे "मिल्टॉनिक" नाम से ही जाना जाता है, वह है उसकी भव्यता। अग्रेजी कवियों में वह सबसे अधिक भव्य तथा सर्व-सम्मति से उस शैली का एक मात्र अधिकारी लेखक है जिसे मैथ्यू आर्नल्ड

ने "उदात्त शैली"[१] की सज्ञा दी है। विचार एव भाषा के अविश्रांत वैभव मे वह अपना सानी नही रखता। उसकी वर्णन शक्ति भी अद्‌भुत है। यदि हम उदाहरण स्वरूप 'पैराडाइज लास्ट' के प्रारभिक भागों मे दिये गये नरक के दृश्यो पर दृष्टिपात करे तो यह बात अपने-आप प्रकट हो जायगी। यद्यपि घटनाओं के नाटकीय महत्त्व के वास्तविक ज्ञान का उसमे पूर्ण अभाव था, तथापि पराजित देवदूतो की सभा मे हुए शानदार वादविवाद तथा ईव के प्रलोभन के दृश्य इस बात के प्रमाण है कि मानव चरित्र एवं प्रेरक शक्तियो के सबध मे उसकी अतर्दृष्टि असाधारण थी। सिद्धांत मे तो ऐसा माना जाता है कि महाकाव्य बिल्कुल अवैयक्तिक व निरपेक्ष होना चाहिए, परतु मिल्टन के सपूर्ण महाकाव्य मे स्वय लेखक की आत्माभिव्यक्ति हुई है। बहुधा उसका दृष्टिकोण सकुचित हो गया है, प्राय. कठोरता भी उसमें दृष्टिगोचर होती है। परतु जो कुछ वह लिखता है उस सबमे वैयक्तिकता की ऐसी गहनता है जो अत्यत प्रभावशाली है। उसके स्वभाव की उच्चता एव उसकी प्रबल नैतिक गभीरता तो ऐसी है कि पढते समय हम सचमुच ऐसा अनुभव करने लगते है मानो हम ऐसे महापुरुष का सत्सग-लाभ कर रहे है "जिसकी आत्मा नक्षत्र की भाँति थी और जो लौकिक विषयो से दूर रहती थी।"[२]

जहाँ तक उसके काव्य के कला-पक्ष का प्रश्न है, हमे इस सबध मे उसकी शैली एवं छद-रचना के महान् एव विविध सौदर्य की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। विशेष करके उसका अतुकात छद तो गहनतम अध्ययन का विषय होना चाहिए। जैसा हम अब जान गये है, नाट्य-साहित्य मे तो बहुत दिनो से अतुकान्त का प्रयोग किया जा रहा था, परतु अभी तक किसी महत्त्वपूर्ण नाटकेतर कविता मे उसका प्रयोग नही किया गया था। इस दृष्टि से जब मिल्टन ने 'पैराडाइज लॉस्ट' के लिए "तुकरहित अग्रेजी हीरोइक छद"[३] को चुना तब वह एक नया प्रयोग करने जा रहा था। वह अग्रेजी साहित्य मे इस छद का महानतम अधिकारी लेखक है।

१ "The grand style."

२. "Whose soul was like a star, and dwelt apart."—वर्ड्सवर्थ।

३. "English heroic verse without rime" **'हीरोइक' छंद उस पंचपदीय 'आयम्बिक' को कहते हैं जो तुकांत दोहा छंद में प्रयुक्त किया जाता है। वीरों के साहसिक कार्यों का वर्णन करने के लिए यह छंद सबसे उपयुक्त माना जाता था।—अनु०**

अध्याय १०

मिल्टन-युग

अन्य कवि तथा गद्य-लेखक

४५. कैरोलीन कवि––जैसा मैं पहले ही कह चुका हूँ (§३), यद्यपि मोटे तौर से मिल्टन-युग तथा ड्राइडेन-युग मे कुछ भेद अवश्य है, तथापि वे एक दूसरे मे अर्तनिहित है। परिणामस्वरूप १६२५ से १७०० तक के लेखको को किसी एक वर्ग मे रखना और इस आधार पर उनमे कोई सतोषप्रद क्रम स्थापित करना अत्यत कठिन है। फिलहाल हम अपना ध्यान उन लेखको तक सीमित रखेगे जो तिथियों के आधार पर नही बल्कि अपने विचारो व शैली के कारण पुरानी पीढी से सबधित है। जो लेखक वास्तव मे उनके समकालीन होते हुए भी या तो नयी पीढी से सबधित है या जिनको किसी कारणवश नयी पीढ़ी से ही सबधित रखना सबसे अधिक सुविधाजनक है उनके विषय मे हम अगले दो अध्यायो में विचार करेगे।

कैरोलीन[1] कवियो के अतर्गत हम उन अनेक पद्य-लेखकों का समावेश करते है जिनकी रचनाओ को मोटे तौर से चार्ल्स प्रथम के शासनकाल के अतर्गत रखा जा सकता है। वैसे सत्य तो यह है कि इनमें से अनेक लेखक कामनवेल्थ के समय मे या उससे भी बाद तक लिखते रहे। इनमें से कुछ धार्मिक कविताएँ लिखते थे और कुछ लौकिक। इन लेखको मे सबसे महत्त्वपूर्ण था रावर्ट हेरिक (१५९१–१६७४) जो धार्मिक व लौकिक दोनो प्रकार की काव्य-रचना मे समान रूप से दक्ष था, यद्यपि उसे दोनों

१. 'कैरोलीन' शब्द 'कैरोलस' से बना है जो 'चार्ल्स' का लैटिन रूप है।––ले० [अतएव कैरोलीन साहित्य का अर्थ हुआ जेम्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स प्रथम के शासन-काल में रचा गया साहित्य।––अनु०]

में बराबर सफलता नही प्राप्त हुई। प्रारंभ में वह बेन जॉनसन का सहयोगी था, परंतु बाद मे उसने चर्च मे नौकरी कर ली। डेवन्शायर जैसे दूर प्रदेश में निष्कासित की भाँति रहता हुआ वह उतना ही दुखी था जितना आयर्लैण्ड मे स्पेन्सर। फिर गृहयुद्ध की समाप्ति पर उसकी नौकरी भी छीन ली गयी, परंतु पुनस्संस्थापन होने पर वह फिर बहाल कर दिया गया। उसकी धार्मिक व लौकिक दोनों प्रकार की कविता एक ही जिल्द मे परतु अलग-अलग शीर्षक के अतर्गत प्रकाशित हुई (१६४८)। उसकी धार्मिक कविता का शीर्षक था 'नोबुल नम्बर्स' तथा लौकिक कविता का 'हेस्पराइडीज़'। हेरिक की प्रतिभा सब से अधिक लौकिक कविता मे चमकी है। ये कविताएँ विविध प्रकार की है तथा इनमे मित्रों के प्रति संबोधन, परियों की कविताएँ, नाना प्रकार के विषयो पर सामयिक कविताएँ तथा अनेक प्रेम सबधी कविताएँ, सभी कुछ शामिल है। परंतु अपनी स्वाभाविकता एवं सहजता, कल्पना-वैभव तथा गीतमय सौदर्य के कारण वे सभी अत्यत आनद-दायक है। ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है तत्कालीन राजनीतिक प्रश्नों के प्रति उनकी पूर्ण निरपेक्षता। उथल-पुथल और अव्यवस्था के उन दिनो मे जब मनुष्यो के मस्तिष्क उग्रतम भावनाओं द्वारा उद्वेलित हो रहे थे, हेरिक ने अपने को पूर्णरूपेण अलग रखा और जीवन के उल्लास के गीत गाना अधिक श्रेयस्कर समझा, यद्यपि इस उल्लास के साथ ही उसकी सक्षिप्तता अथवा क्षणभगुरता को भी कवि भूलता नही है।

'कवेलियर' वर्ग के कैरोलीन कवियों में, जिनकी प्रेरणा का स्रोत पूर्ण रूप से प्रायः लौकिक ही था, टॉमस कैरी (१५९८?–१६३९), उसके मित्र सर जॉन सक्लिग (१६०९–४२) तथा रिचर्ड लवलेस (१६१८–५८) के नाम प्रमुख है। ये सभी कवि प्रसाद-गुण-प्रधान हैं तथा वे अपनी कला को गम्भीरता से लेने का बहाना भी करते थे, परतु उन्होने जो भी लिखा है वह बडी कुशलतापूर्वक लिखा है। कैरी की "वह जो गुलाबी गालों को प्यार करता है"[१], सक्लिग की "ओ प्रेमी! इतने पीले, दुर्बल क्यो"?[२] तथा लवलेस की 'कारागार से अल्थिया को'[३] नामक कविताएँ

१. "He that loves a rosy cheek".
२. "Why so pale and wan, fond lover.'
३. "To Althea from Prison"

उस सुंदर गीतिमयता के उदाहरण स्वरूप पेश की जा सकती है जो इन कवियों के प्रेम-काव्य की विशेषता है। इनके साथ ही हम यहाँ एण्ड्र मार्वेल (१६२१—७८) को भी शामिल कर सकते है, क्योकि उसकी प्रारभिक रचनाओं में 'कवेलियर' संप्रदाय की अन्य विशेषताएँ वर्तमान है। परंतु राजनीति व धर्म के क्षेत्र मे वह दूसरे पक्ष में था। पुनस्संस्थापना के उपरान्त उसने काव्य की दिशा भी बदल दी और चार्ल्स द्वितीय तथा उसके सहायको पर ऊबड-खाबड शैली मे कठोर व्यंग्यपूर्ण कविताएँ लिखी।

जिन कैरोलीन कवियो ने प्रमुखतया धार्मिक विषयों को ग्रहण किया उनमें सबसे प्रसिद्ध था जॉर्ज हर्बर्ट (१५९३–१६३३), यद्यपि काव्यगुण में वह महान्तम नहीं है। उसके गीतों का सग्रह, जिसका शीर्षक है 'दि टेम्पुल,' शुद्ध भक्ति की भावना से ओतप्रोत है। रिचर्ड क्राशॉ (१६१३ ?—४९) की धार्मिक कविता मे इससे कही अधिक उत्साह और ओज है यद्यपि काव्य गुण की दृष्टि से वह बडी असम है तथा कभी-कभी क्लिष्ट कल्पना के कारण उसका सौदर्य बिल्कुल नष्ट हो गया है। इसी प्रकार यद्यपि हेनरी वॉन (१६२२–९५) पर हर्बर्ट का सीधा और शक्तिशाली प्रभाव पडा, तथापि उसकी कविता हर्बर्ट की कविता से विचार की गहनता तथा रहस्यात्मकता में अधिक श्रेष्ठ है। फ्रासिस क्वार्ल्स (१५९२–१६४४) की 'रेलिजस एम्ब्लेम्स' का भी उल्लेख होना आवश्यक है क्योकि वह बहुत दिनो तक अत्यंत लोकप्रिय रही। इस पुस्तक में अनेक विचित्र तस्वीरे भी दी गयी थी।

४६. काउली तथा 'मेटाफ़िजिकल' (आध्यात्मिक) कवि—अब्राहम काउली (१६१८–६७) के प्रति कुछ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योकि एक तो वह अपने समय मे महान्तम अंग्रेजी कवि समझा जाता था, और दूसरे वह सामान्यतः आध्यात्मिक सप्रदाय का प्रधान प्रतिनिधि माना जाता है जिसका जन्म, जैसा कि हम देख चुके है, डन की रचनाओ मे हुआ था (देखो § २७)। इस संप्रदाय को 'मेटाफिजिकल' नाम सबसे पहले जॉनसन ने दिया था, और यद्यपि यह कोई बहुत अच्छा नाम नही है, फिर भी यह हमारी आलोचनात्मक शब्दावली का अंग बन गया है। वैसे जॉनसन ने अपने इस शब्द की जो व्याख्या की है वह बड़ी ही सुदर है। वह लिखता है कि 'मेटाफिजिकल' कवि "विद्वान् थे और अपना पूरा प्रयत्न वे अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करने मे ही लगाते थे। ..उन्होने न तो प्रकृति के चित्र उतारे और न जीवन के।. .उनके विचार बहुधा नये लेकिन स्वाभाविक बहुत कम है यद्यपि न तो वे प्रत्यक्ष है, और न न्यायसगत ही हैं।

पाठक को आश्चर्य इस बात पर नही होता है कि वह इन विचारो को समझ नही पाया बल्कि अधिकतर तो उसे यह सोचकर आश्चर्य होता है कि किस दुराग्रहपूर्ण परिश्रम से उन्हे खोज निकाला गया।" लेखको के इस विचित्र वर्ग की प्रमुख विशेषताएँ यहाँ इगित कर दी गयी है। उनका साहित्य कृत्रिमता एव क्लिष्ट-क पना से भरा हुआ है; अपने वर्णनों की नवीनता एव प्रगल्भता द्वारा पाठको को आश्चर्यचकित कर देने के प्रयत्न मे उन्होने बोझिल रूपको, असभव उपमाओं एव अपरिमित अतिशयोक्ति का प्रयोग किया है, वर्णन चातुर्य उनके लिए सबसे प्रधान गुण है जिसे प्राप्त करने के लिए वे किसी भी मूल्य पर तैयार होगे, उनके काव्य मे भावो की स्वाभाविक अभिव्यक्ति का स्थान दार्शनिक जटिलताओ एव तार्किक वितडावाद ने ले लिया है, तथा उन्होने अपनी विशाल एव असामान्य विद्वत्ता का प्रयोग औचित्य का जरा भी ख्याल किये बिना ही किया है। परिणामस्वरूप वे सामान्यतया आवेशयुक्त, कठोर, निरुत्साह एव दुरूह हो गये है। परतु इतने पर भी उनके साहित्य मे समय-समय पर ऐसे अश और यहाँ तक कि पूरी-पूरी कविताएँ मिल जाती है जिनमे यथार्थ रचनाशक्ति एव सौदर्य के दर्शन होते है। इस बात से यह सिद्ध हो जाता है कि प्रतिभा के उद्रेक को हानिकारक सिद्धात कभी पूर्ण रूप से नहीं दबा सकते। परंतु जब हम क्राशॉ जैसे कवि को रोती हुई मेरी मैगडलेन की आँखो के लिए रूपक ढूँढने मे धरती और आकाश को छानते हुए तथा उनका निम्नलिखित वर्णन देते हुए देखते है तब हम उन उन्मादपूर्ण असंगतियो का कुछ अनुभव कर सकते है जिनके जाल मे अग्रेजी काव्य थोडे समय के लिये फँस गया था --

"दो चलते-फिरते स्नानागार, दो रोती हुई गतियाँ,
सुवहनीय और सक्षिप्त महासागर।"[1]

जैसा जॉनसन ने कहा है, अग्रेजी कविता की यह स्थिति इस कारण थी कि "लोग नयी और अद्‌भुत वस्तुओ की खोज मे ऐसे लगे हुए थे कि जानबूझ कर प्रकृति का उल्लंघन करते थे[2]।" काउली के साहित्य मे हमे इस आध्यात्मिक संप्रदाय की अतिम महत्त्वपूर्ण रचनाएँ मिलती है, परन्तु यह याद रखना आवश्यक है कि साधारण दृष्टि से उस युग के कवियो पर इसका प्रभाव अत्यन्त विस्तृत रूप से

१. Two walking baths, two weeping motions,
Portable and compendious oceans

२. A voluntary deviation from nature in pursuit of something new and strange.

पडा। इस प्रकार जिन तीन प्रमुख धार्मिक कवियो–क्राशॉ, हर्बर्ट तथा वॉन का नामोल्लेख ऊपर हुआ है वे सभी न्यूनाधिक रूप से 'आध्यात्मिक' थे। यह बात भी ध्यान देने की है कि अपनी उत्तरकालीन कविता मे काउली ने अपनी अधिकाश प्रारभिक उच्छृखलता का परित्याग कर दिया तथा उस सयमित एव गंभीर शैली के निकट आ गया जिसका प्रवेश नयी पीढी के साथ हुआ।

टॉमस ट्रैहर्न (१६३४?–१७०४), जो क्राशॉ, हर्बर्ट और वॉन से, जिनका नाम अभी लिया जा चुका है, से आयु मे कुछ छोटा था। उसकी अधिकाश हस्तलिखित पुस्तके उसकी मृत्यु के उपरांत लगभग दो सौ वर्ष तक लुप्त न हो गयी होती तो सामान्यत उसे इन्ही तीनो के साथ रखा गया होता। जब वर्तमान शताब्दी के प्रारभ मे वे प्रकाश मे आय, तो १९०३ मे उसकी 'पोएम्स' के प्रकाशित होते ही ट्रैहर्न को तत्काल सत्रहवी शताब्दी के महानतम धार्मिक एव 'आध्यात्मिक' ('मेटाफिजिकल') कवियो की कोटि मे स्थान प्राप्त हो गया। उसकी 'सेन्चुरीज ऑव मेडीटेशन्स' (१९०८) ने सिद्ध कर दिया कि वह एक महान् गद्य-लेखक भी था। यद्यपि ट्रैहर्न के साहित्य मे भी हमे उसी कठिनाई का सामना करना पडता है जो 'मेटाफिजिकल' कवियो मे समान रूप से पायी जाती है, तथापि विचारो की गहराई तथा आध्यात्मिक भावना के साथ ही साथ इसमे सौदर्य एव उच्च कोटि की वाक्-शक्ति भी बहुत है।

४७. कैरोलीन गद्य-लेखक––मिल्टन-युग के गद्य-साहित्य मे अनेक महत्त्व-पूर्ण नाम है परतु हम उन्ही लेखको का समावेश करेगे जिनकी रुचि इतनी विस्तृत थी कि उन्हे सामान्य साहित्य के इतिहास मे स्थान देना सर्वथा उचित होगा। इस प्रकार वक्तृत्वशक्ति के धनी पादरी जेरिमी टेलर (१६१३–६७) की 'होली लिविग' (पवित्र जीवन) और 'होली डाइग' (पवित्र मृत्यु), तथा प्यूरिटन रिचर्ड बैक्सटर (१६१५–९१) की 'दि सेण्ट्स एवरलास्टिग रेस्ट' (सतो का शाश्वत विश्राम) का उल्लेख होना आवश्यक है, क्योकि विषय तथा उद्देश्य दोनो मे शुद्ध धार्मिक होते हुए भी उनका इस प्रकार की रचनाओ मे बड़ा ऊँचा स्थान है। एक अन्य पादरी टॉमस फुलर (१६०८-६१) ने भी जो बडा विलक्षण, हाजिरजवाब और आनदी था, धार्मिक विषयो पर बहुत कुछ लिखा परन्तु उसकी वर्तमान प्रसिद्धि सबसे अधिक उसकी 'वर्दीज ऑव इग्लैण्ड' नामक पुस्तक के कारण है जो बड़ी ही मजेदार और विविधतापूर्ण है। सर टॉमस ब्राउन ने, जो डाक्टर था, विविध और विलक्षण पाण्डित्य से पूर्ण पुस्तको की रचना की, परंतु उसकी प्रसिद्धि मुख्यतया 'रेलिजियो

मेडिची' (डाक्टर का धर्म) के कारण है जिसमें उसने अपने व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास को कबूल किया है। आइज़क वाल्टन (१५९३-१६८३) की पुस्तक 'दि कम्प्लीट ऐंगलर, ऑर दि कण्टेम्प्लेटिव मैन्स रिक्रियेशन' से यह सिद्ध हो जाता है कि केवल रचना-कौशल और सौदर्य के द्वारा बहुत-ही असामान्य विषय में भी अधिक से अधिक लोगो की रुचि जाग्रत की जा सकती है। प्रकट रूप से तो यह पुस्तक मछुओं के शिक्षण के लिए लिखी गयी है, परतु अपनी रोचक वार्तालाप-शैली तथा वास्तविक ग्रामीण रस के कारण यह ऐसे असख्य पाठकों को प्रिय रही है जिनकी रुचि मछली के शिकार में बिलकुल ही नही थी। वाल्टन ने कुछ प्रशंसनीय जीवनियाँ भी लिखी। इस समय इतिहास के क्षेत्र में भी अनेक अच्छी रचनाएँ लिखी गयी जिनमें सर्वप्रथम स्थान 'हिस्टरी ऑव दि ग्रेट रिबेलियन' ('महान् विद्रोह का इतिहास') का है जो एडवर्ड हाइड, अर्ल ऑव क्लैरेण्डन (१६०९-७४) की रचना है। राजपक्ष की ओर लेखक का झुकाव होने के कारण यह इतिहास विश्वसनीय तो नही है, परंतु भाषा की भव्यता एव दक्ष चरित्र-चित्रण के कारण इसकी प्रशसा होती है जो उचित ही है। टॉमस हॉब्स (१५८८-१६७९) की 'लेवियादन' में शक्तिशाली केन्द्रीय शासन का समर्थन किया गया है। हमे अब 'लेवियादन' के सिद्धान्तो से कोई मतलब नही है, परंतु उसका उल्लेख होना इसलिए आवश्यक है कि वह उन राजनीतिक प्रबधों में सबसे महत्त्वपूर्ण है जो युग की अशाति एवं विचारविमर्श द्वारा प्रेरित हुए थे।

इन समस्त व्यक्तियों के साहित्य पर सामान्य दृष्टि से विचार करते हुए तथा फिलहाल उनकी व्यक्तिगत विशेषताओ की उपेक्षा करते हुए, हम कह सकते है कि हमे उनकी शैली मे आधुनिक अग्रेजी गद्य के विशिष्ट स्वर और शैली के दर्शन कही भी नही होते। जो बात मिल्टन के गद्य के विषय मे कही जा चुकी है वह उसके समकालीनों के गद्य पर भी समान रूप से लागू होती है। यहाँ तक कि बैक्सटर की वार्तालाप-प्रधान शैली मे भी बहुत-सा अश ऐसा है जो हमें स्मरण करा देता है कि यह उस प्रकार का गद्य नही है जिसका हम आजकल प्रयोग करते है। इस कारण काउली के मनोहारी 'एसेज' के विशेष ऐतिहासिक महत्त्व का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। इन निबंधों की शैली तथा गद्य-लेखन की उस सरलतर एवं स्पष्टतर शैली मे अत्यधिक समानता है जिसका आरभ, जैसा हम अभी देखेगे, ड्राइडेन-युग मे हुआ।

टिप्पणी—मिल्टन-युग के साहित्य की सारिणी देखो १२वे अध्याय के अन्त मे

अध्याय ११

ड्राइडेन-युग (१६६०-१७००)

काव्य

४८. **ड्राइडेन-युग**––स्टुअर्ट वंश के पुनस्संस्थापन के साथ-साथ अंग्रेज जनता के सामान्य स्वभाव मे भी बड़ा परिवर्तन हो गया। प्यूरिटनवाद तथा उससे संबंधित प्रत्येक वस्तु के विरुद्ध एक व्यापक प्रतिक्रिया आरभ हो गयी। यह प्रतिक्रिया इतनी वेगवती थी कि उसके कारण, धर्मान्धता की वजह से मूर्खतापूर्वक लादे गये क्लेशकर बंधन तो ट्ट ही गये, साथ ही साथ मर्यादा और शालीनता को भी प्रायः तिलांजलि दे दी जाती थी। सामाजिक इतिहास मे यह इंग्लैण्ड के अध.पतन की सीमा थी। चार्ल्स द्वितीय का राजदरबार इस देश का सबसे निर्लज्ज राजदरबार था; पर-स्त्रीगमन और लम्पटता का फ़ैशन हो गया; प्यूरिटनवाद के नैतिक आदर्श मजाक के विषय वन गये और जो लोग अब भी पारिवारिक सवधों की पवित्रता के समर्थक थे उनका या तो ढोगी कहकर मजाक उडाया जाता था या कट्टर-पथी, शुष्क-हृदय कहकर उनकी घोर निन्दा की जाती थी। राजदरबार और सामत-वर्ग की हालत तो बिल्कुल ही बदतर थी, पर उनके सकुचित दायरे के बाहर भी भ्रष्टाचार की भावना व्यापक रूप से फैली हुई थी। यद्यपि व्यक्तिगत रूप से धार्मिकता और भलाई के आदर्श का लोप नही हुआ था, फिर भी नैतिक भावना का जो पतन सामान्य रूप से हो गया था वह सर्वत्र स्पष्ट था। इन परिस्थितियो का साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा उसका पूर्वाभास उन सभी लोगो को हो जायगा जो साहित्यिक निरूपण के उस महान् सिद्धान्त को याद रखेगे जिसकी सत्यता पिछले अध्यायो में प्रमाणित हो चुकी है, अर्थात् साहित्य एक सामाजिक उत्पादन है तथा उसमें उस युग के जीवन का प्रतिबिम्ब मिलता है जिसमें उसकी रचना हुई है। ड्राइडेन-युग के साहित्य में कभी-कभी तो स्पष्ट एव अवज्ञापूर्ण भ्रष्टता के दर्शन होते है; अपने सर्वश्रेष्ठ रूप मे भी इसमें सामान्यतः नैतिक बल और आध्यात्मिक उत्साह का अभाव था, यद्यपि यह अन्य अनेक प्रशसनीय गुणो से युक्त था।

उद्देश्य की वास्तविक गम्भीरता का लोप हो गया और उसके साथ ही सबल भावना एव महान् रचनात्मक शक्ति भी जाती रही। लोगो के विचार अब भावना की ऊँचाइयो पर चढने का प्रयत्न नही करते थे, वरन् साधारणता की भूमि पर ही रहते थे। साहित्य ने कल्पनालोक की उडाने भरनी बद कर दी और वह पदगामी हो गया। इस प्रकार हम पुनःसस्थापन के साथ ऐसे युग मे प्रवेश करते है जिसका साहित्य कल्पनात्मक या भावनात्मक न होकर बौद्धिक है तथा प्राय श्रेष्ठ रचना-कौशल से पूर्ण होने पर भी कुछ कठोर एव सहानुभूति से रहित है। यहाँ तक कि कविता के विषय मे भी यह बात सत्य है। कविता गद्य के समान नीरस हो गयी, उससे गद्य का काम लिया जाने लगा तथा गद्य के मानदण्डो से उसका मूल्याकन भी होने लगा। कवि लोग न तो स्पेन्सर की भाँति अपने विचारो को परियो के लोक की सैर ही करने देते थे और न मिल्टन की भाँति स्वर्ग और नरक के रहस्यों का उद्घाटन ही। उन्होने अपनी कविता को तर्क, विवाद तथा व्यक्तिगत एवं राजनीतिक व्यग्य का माध्यम बना लिया। इस प्रकार छंदवद्ध पैम्फ्लेटो के युग का प्रारभ हुआ। युग की परिवर्तित प्रवत्ति का यह एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। परतु जो बात कदाचित् इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है वह यह है कि पुनःसस्थापन-युग के लेखको ने ही हमारे आधुनिक अग्रेजी गद्य का वास्तविक निर्माण किया।

इस युग के साहित्य की विशेषताओ के उदाहरणस्वरूप हमें फ्रांस द्वारा डाले गये सीधे एव शक्तिशाली प्रभाव को भी याद रखना चाहिए। यूरोप पर इटली का जो सास्कृतिक आधिपत्य इतने दिनो से चला आ रहा था वह समाप्त हो चुका था और अब फ्रास ही ससार की रुचि का महान् निर्णायक बन गया था। फिर दोनो देशो के राजनीतिक सबधो के कारण इग्लैण्ड मे स्वाभाविक रूप से सभी फ्रेच चीजो का फैशन हो गया; यहाँ तक कि फ्रेच रुचियो और कला के सबध में फ्रेच विचारो का भी फैशन हो गया। फ्रास के तत्कालीन साहित्य की विशेषताएँ खास तौर से निम्नलिखित थी—सुस्पष्टता, प्रफुल्लता, तथा कला-पक्ष की ओर अधिक ध्यान दिये जाने के कारण, अनुशासन, लालित्य एव परिष्कार। मूलत. यह एक सभ्य समाज का साहित्य था और उसमें इस प्रकार के साहित्य के सभी गुण-दोष वर्तमान थे। इससे भी अधिक यह ऐसा साहित्य था जिस पर बुद्धि का आधिपत्य था तथा जिसका नियत्रण आलोचनात्मक प्रवृत्ति के हाथ मे था। अब अग्रेजी लेखक मार्ग-निर्देशक व प्रेरणा के लिये उसी साहित्य पर निर्भर रहने लगे जो उनके

इतना अधिक अनुकूल था। इस प्रकार हमारे गद्य व पद्य दोनो मे ही व्यवस्था एवं अनुशासन के सिद्धान्तो तथा विवेक की भावना की उन्नति को महान् प्रोत्साहन मिला। क्योकि कविता के क्षेत्र मे भावना एव सहजता के स्थान पर इन्ही गुणों के विकास पर सारा ध्यान केन्द्रित हो गया, इसलिये एक कृत्रिम प्रकार की कविता का विकास अवश्यम्भावी था।

४९. ड्राइडेन के पूर्ववर्ती लेखक––ड्राइडेन, जिसे "एक क्षुद्र युग का महानतम व्यक्ति"[1] कहा गया है, इस युग का एकमात्र पूर्ण प्रतिनिधि था। परतु उसके साहित्य पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि हम अन्य दो लेखको–एडमण्ड वालर (१६०५-८७) और सरजान डेग्हम (१६१५-१६६९) के विषय मे भी एक शब्द कह दें। ये दोनो लेखक ड्राइडेन से कुछ वर्ष बड़े थे। वह स्वय उन्हे अपना गुरु मानता था और सामान्यत. अब भी वे काव्य मे तथाकथित "क्लासिक" सप्रदाय के अग्रदूत माने जाते है। सामान्य रूप से तो ये दोनो लेखक उस प्रतिक्रिया के नेता थे जो "मेटाफिजिकल" कवियों की अतिरजनाओ और दुर्बोधता के विरोध में तथा विवेक और अभिव्यक्ति की स्वच्छता एव स्पष्टता के पक्ष मे प्रारभ हुई थी। परतु विशेषत उन्होने ऐसे समय मे अग्रेजी छन्दशास्त्र का सुधार किया जब वह अक्षम्य रूप से कर्कश और कठोर हो गया था। वास्तव मे उनका ऐतिहासिक महत्त्व इसी कारण है। वालर के विषय मे यह बात और भी सत्य है। ड्राइडेन कहता है "मिस्टर वालर से पूर्व तुकात की श्रेष्ठता और भव्यता का पूर्ण ज्ञान किसी को नही था; उसी ने हमे इसका ज्ञान कराया। वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने लेखन को कला बना दिया और हमें यह बताया कि किस प्रकार प्रत्येक भाव की समाप्ति दोहे की दो पक्तियो मे ही की जा सकती है। उसके पूर्ववर्ती लेखको की कविता मे भाव इतनी अधिक पक्तियो तक चलता रहता था कि पाठक उसे पूरा-पूरा ग्रहण ही नही कर पाता था।" वालर की प्रसिद्धि का प्रमुख कारण 'हीरोइक'[2] दोहा-छद मे किया गया यही सुधार है। उसने 'हीरोइक' दोहे के उस रूप को

1. "The greatest man of a little age."

२. **'हीरोइक' अर्थात् वीर-काव्य में सामान्यतया यही छंद प्रयुक्त होने के कारण इसे "हीरोइक" की संज्ञा प्रदान की गयी है। यहाँ इससे आशय यह है कि दोहे की प्रत्येक पंक्ति 'आयम्बिक' पंचपदी होती है, अर्थात् अतुकांत छंद की पंक्तियों**

प्रचलित कर दिया जिसे हम "क्लासिक" या "निमीलित" ('क्लोज्ड कपलेट') के नाम से जानते है। इसमे नियम यह होता है कि भाव अबाधरूप से एक दोहे से दूसरे दोहे मे न चलता रहे बल्कि दूसरी पक्ति समाप्त होते ही समाप्त हो जाय। इस प्रकार छंद संबधी विराम तथा भाषा सबधी विराम दोनो साथ-साथ आते है। ड्राइडेन का यह कथन गलत है कि यह "निमीलित" दोहा-छंद वालर का आविष्कार था। जैसा कि स्पष्ट है, ड्राइडेन ने वालर की बड़ी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशसा की है। इस छंद का व्यवहार अनेक पूर्ववर्ती कवियो ने समय-समय पर किया था। परतु जब वालर ने काव्य-रचना प्रारभ की, उस समय कवियों की सामान्य प्रवृत्ति इस ओर न होकर ऐसे काव्य की ओर थी जो इतना अव्यवस्थित था कि उसका कोई रूप ही न था। इस कारण ऐसा कहा जा सकता है कि नया आंदोलन वालर से ही प्रारभ हुआ। "क्लासिक" दोहे का चरमोत्कर्ष उसके हाथों नही हुआ, बल्कि उसका विकास धीरे-धीरे हुआ, और सबसे पहले पोप ने इसे पूर्णता के शिखर पर पहुँचाया। पोप इस छद का सबसे महान् कवि है। परतु इसका मार्ग सर्वप्रथम वालर ने ही दिखाया। उसके उपरान्त डेन्हम आया जो अब प्रमुख रूप से अपनी वर्णनात्मक कविता 'कूपर्स हिल' के कारण याद किया जाता है। वालर और डेन्हम दोनो के लिए ड्राइडेन ने लिखा है–"इन दोनों कवियो के प्रादुर्भाव के पूर्व हमारा छंद-विधान अपनी शैशवास्था में था।"[1]

५०. ड्राइडेन का जीवन-वृत्त––जॉन ड्राइडेन का जन्म नार्थम्पटनशायर

की भाँति प्रत्येक पंक्ति में दस 'शब्दांश होते हैं जिनमें से पाँच दीर्घ होते हैं, तथा साधारणतः ह्रस्वपद पहले और दीर्घपद बाद में होता है। उदाहरण के लिए पोप की निम्नलिखित पंक्ति में––

"To err/ is hu/ man, to/ forgive/ dine."

(त्रुटि है मानव सुलभ, क्षमा करना देवोपम)

पाठकों को 'हीरोइक' दोहा-छंद के दो विरोधी रूपों का पारस्परिक भेद सावधानीपूर्वक समझ लेना चाहिए। ये भेद है "क्लासिक" जो यहाँ हमारे अध्ययन का विषय है, तथा "रोमाण्टिक", जिसका प्रसंग बाद में आवेगा।––ले०

१. "Our numbers were in their nonage till these last appeared".

के ओल्डवंकिल आल सेण्ट्स नामक स्थान मे १६३१ में हुआ। उसकी शिक्षा वेस्टमिन्सटर तथा ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिज मे हुई। १६५७ के लगभग वह लन्दन मे बस गया। इसके उपरान्त शीघ्र ही उसने अपनी प्रथम महत्त्वपूर्ण कविताएँ लिखी। ये थी 'हीरोइक' स्टैन्जाज ऑन दि डेथ ऑव ऑलिवर क्रॉम्वेल' ('ऑलिवर कॉम्वेल की मृत्यु पर लिखे गये कुछ पद्य', १६५९) तथा 'ऐस्ट्रिया रिडक्स', जो चार्ल्स द्वितीय के "हर्षकारी पुनस्सस्थापन के उपलक्ष मे लिखी गयी थी तथा जिससे यह स्पष्ट है कि उसने कितनी जल्दी अपना मत परिवर्तित कर दिया था। १६६३ मे उसने रंगमच के लिए लिखना प्रारंभ कर दिया। जिस व्यक्ति को अपने जीवन-निर्वाह के लिए लेखनी पर ही निर्भर रहना हो उसके लिए यह एकमात्र लाभदायक क्षेत्र था। लगभग पन्द्रह वर्ष तक नाट्य-लेखन उसका प्रमुख व्यवसाय बना रहा। १६७० मे वह राजकवि ('पोएट लॉरिएट') बना दिया गया और १६८१ मे उसने 'ऐब्सलम ऐण्ड ऐकिटॉफेल' को प्रकाशित करवा कर अपने जीवन मे एक नया अध्याय प्रारभ किया। ड्राइडेन द्वारा पद्य मे लिखे गये महान् व्यंग्यों में से यह सर्वप्रथम था। इसके उपरान्त इसी प्रकार की अन्य रचनाएँ हुई और बाद में उसने दो धार्मिक कविताओं की रचना की। ये है 'रेलिजियो लायची' (१६८२) जिसमें चर्च ऑव इंग्लैण्ड का पक्ष लिया गया है, तथा 'दि हाइण्ड ऐण्ड दि पैन्थर' (१६८७) जिसमें बड़े विस्तारपूर्वक रोमन कैथलिक धर्म के पक्ष में तर्क किया गया है। इसका कारण यह था कि इस बीच मे उसने प्रोटेस्टेण्ट धर्म छोड़कर रोमन कैथलिक धर्म ग्रहण कर लिया था। इस धर्म-परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही १६८८ के विद्रोह से उसे बड़ा आघात लगा। राजकवि का पद उससे छीन लिया गया। राजकीय सम्मान की सारी आशाएँ मिट जाने के कारण, अब जीवन के शेष वर्षों मे उसने अपने को साहित्य-सेवा मे अर्पण कर दिया। इस सबध मे उसका साहस व उद्यम प्रशंसनीय है। उसने पाँच और नाटकों की रचना की जो जुवेनल, पर्सियस और वर्जिल के अनुवाद है तथा 'फेबुल्स' नामक एक अन्य पुस्तक भी लिखी जिसमे होमर, ओविड, बोकैशिया और चॉसर की कथाओं के अनुवाद है। यह पुस्तक नवम्बर, १६९९ में प्रकाशित हुई। छः महीने उपरांत, मई १७००, मे उसकी मृत्यु हो गयी।

५१. ड्राइडेन का काव्य—ड्राइडेन की गद्य-रचनाओं व उसके नाटकों के विषय में हम अगले अध्याय में लिखेंगे। यहाँ हमारा सबध केवल उसके काव्य से है।

कवि के रूप में उसका विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ। उसकी प्रथम कविता युवा लार्ड हेस्टिंग्ज की मृत्यु पर एक शोकगीत थी जो उसने अठारह वर्ष की अवस्था मे लिखी थी। यह कविता ऐसी निम्नकोटि की है कि सहज मे विश्वास ही नही होता (कि यह ड्राइडेन की रचना) है। सत्ताइस वर्ष की अवस्था मे लिखे गये 'हीरोइक स्टैन्जाज' यद्यपि कुछ उत्कृष्ट पक्तियाँ और रूपक है परतु फिर भी वे अपरिष्कृत और शब्दाडबर से पूर्ण है। इस समय उसके ऊपर काउली का बड़ा गहरा प्रभाव था जिसका वर्णन उसने बाद मे "मेरी युवावस्था के प्रियतम"[1] के रूप मे किया है। परिणामस्वरूप इन प्रारंभिक रचनाओ मे 'मेटाफिजिकल' संप्रदाय के सभी लाक्षणिक दोष अधिकता से वर्तमान है। ये दोष 'ऐनस मिराबिलिस' (१६६७) तक मे शेष है जिसमे उसने उस "आश्चर्यजनक वर्ष" की दो महान् घटनाओ–हालैण्ड से युद्ध तथा लदन की महाग्नि––का वर्णन किया है। इसमे उसने समय-समय पर बड़ी ही असभव क्लिष्ट-कल्पना का प्रयोग किया है। उदाहरणस्वरूप उसने भगवान् को "हीरे के एक खोखले पिरामिड" की सहायता से आग को बुझाते हुए दिखाया है, बिलकुल उसी प्रकार जैसे वह स्वय अपनी मोमबत्ती बुझाया करता था। परतु यद्यपि इस कविता के दोष बहुसख्यक एव अत्यन्त स्पष्ट है, तथापि इसके पुरुषोचित ओज एव स्पष्टता से यह पता चलता है कि लेखक की प्रतिभा अत्यधिक विकसित हो गयी है। किंतु उसकी प्रतिभा के पूर्ण दर्शन के लिए हमे उन रचनाओ की ओर ध्यान देना होगा जो उसने अपने जीवन के अतिम बीस वर्षो मे लिखी। इनमे वह 'आध्यात्मिक' लेखको की मिथ्या रुचि के बधन से पूर्णरूपेण मुक्त हो गया है तथा उसकी शैली भी अब पकिल व अनेक प्रकार की निरर्थकताओ से अवरुद्ध नही रही बल्कि सुस्पष्ट एव प्रबल प्रवाहपूर्ण हो गयी है। ये रचनाएँ, जिनसे इग्लैण्ड मे "क्लासिकल" सप्रदाय की कविता की निश्चित स्थापना हुई, तीन शीर्षको के अन्तर्गत रखी जा सकती है––

१ राजनीतिक व्यग्य––'ऐब्सलम ऐण्ड ऐकिटॉफेल'–यह रचना तथाकथित पोपीय षडयत्र के कारण उत्पन्न हलचल के बीच अर्ल ऑव शाफ्ट्सबरी के आरोपो के विरुद्ध राजा की नीति के पक्ष मे लिखी गयी थी तथा अपने शक्तिशाली चरित्र-चित्रण के लिए विशेष प्रसिद्ध है, उदाहरणस्वरूप ऐकिटॉफेल के नाम से स्वय शाफ्ट्-

1. "The darling of my youth."

सबरी तथा ज़िम्री के नाम से ड्यूक ऑव बकिंघम के चित्र। 'दि मेडल'–इसमें भी शाफ्ट्सबरी की ही आलोचना की गयी है। 'मैक्फ़्लेक्नों' –इसमें टॉमस सैंडवेल की कठोर आलोचना की गयी है। वह पहले उसका मित्र था परंतु उसने 'दि मेडल' के जवाब में एक कविता लिखी थी जो कुत्सित गाली-गलौज से पूर्ण थी।

२. 'रेलिजियो लायची' तथा 'दि हाइण्ड ऐण्ड दि पैन्थर' नामक दो महान् विचारात्मक काव्य। ये दोनों रचनाएँ विशुद्ध रूप से धार्मिक नहीं है क्योंकि उनमे श्रद्धा-भक्ति अथवा आध्यात्मिकता का अंश भी नहीं है। वे विवादात्मक तथा धर्मशास्त्र से संबधित है। दो विरोधी दृष्टिकोणो से लिखी होने के कारण उनका विशेष महत्त्व इस बात में है कि उनसे ड्राइडेन की छंद में तर्क करने की दक्षता का पता चलता है। साथ ही उनमें उसकी उस असाधारण कुशलता के दर्शन होते है जो उसे किसी भी पक्ष के सफल प्रतिपादन में समर्थ बना देती थी जिसको उसने उस समय ग्रहण कर लिया हो। अपनी मानसिक नम्यता एवं क्षिप्रता के कारण वह किसी भी पक्ष की वकालत करने में आश्चर्यजनक रूप से समर्थ था।

३. 'दि फेबुल्स'—यद्यपि ये सुन्दर कथाएँ ड्राइडेन ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों की परेशानियों तथा वृद्धावस्था एवं अस्वास्थ्य के बढ़ते हुए कष्ट के बीच लिखीं, तथापि उनसे ऐसा बिल्कुल नही लगता कि कवि की शक्ति का ह्रास हो रहा है, वरन् उसकी प्रतिभा अपने श्रेष्ठतम रूप में दिखाई देती है, और उनके कारण उसे हमारे सर्वश्रेष्ठ पद्य कथाकारों मे स्थान दिया गया है। 'पैलेमन ऐण्ड आर्काइट' नामक कथा, जो चॉसर की 'नाइट्स टेल' पर आधारित है, हमें इस बात का अवसर प्रदान करती है कि हम चौदहवीं शताब्दी की कहानी-कला और शैली की लाभप्रद तुलना सत्रहवी शताब्दी के काव्य-साहित्य से कर सकें।

जिस प्रकार ड्राइडेन का काव्य अपने गुणों में युग का प्रतिनिधि है उसी प्रकार अपने दोषों में भी। सामान्य रूप से इसमे उन गुणों का अभाव है जिन्हें हम मूल रूप से काव्यात्मक गुण कहने के अभ्यस्त हैं। इसमें कल्पना-शक्ति, भावना की गहराई तथा आरभिक तेज अथवा उत्कटता का अभाव है, तथा कुछ स्थलों को छोड़कर उच्च कोटि की संगीतात्मकता के दर्शन भी बहुत कम होते हैं। ऐसे दो स्थल है 'टु दि मेमोरी ऑव मिसेज़ ऐन किलिग्रू' तथा 'अलेक्ज़ैण्डर्स फ़ीस्ट' नामक दो महत्त्वपूर्ण संबोध-गीतियाँ ('ओड')। दूसरी ओर इस काव्य की विशेषता है उत्कृष्ट बौद्धिकता तथा शैली में एक प्रकार का पुरुषोचित ओज। यद्यपि ड्राइडेन में काव्यात्मकता बहुत कम पायी जाती है (यहाँ हम इस शब्द का उस अर्थ में प्रयोग

कर रहे हैं जो हमारे दिमाग में कीट्स अथवा कोलरिज के विषय में विचार करते समय रहता है), तो कम से कम उसमें ऐसे अनेक स्थल है जो आश्चर्यजनक शक्ति एव वाग्वैभव से सम्पन्न है। इसीलिए इस बात का कारण जानना आसान है कि व्यग्यलेखक तथा पद्य मे तर्क करने मे सिद्धहस्त लेखक के रूप मे उसका इतना ऊँचा स्थान क्यों है। इन दोनों क्षेत्रों मे 'ऐब्सलम ऐण्ड ऐकिटॉफ़ेल' और 'रेलिजियो लायची' का लेखक अब भी हमारा महान्तम लेखक है।

ड्राइडेन के प्रभाव और उदाहरण के कारण ही क्लासिक दोहा-छंद को वह उच्च स्थान प्राप्त हो सका जिस पर वह गम्भीर अंग्रेजी काव्य के लिए सर्वस्वीकृत छंद के रूप मे अनेक वर्षो तक प्रतिष्ठित रहा। जब उसने लिखना प्रारंभ किया उस समय अन्य लोगो की भाँति वह भी इस विषय मे निश्चित नही था कि किस छद का प्रयोग करना सर्वोत्तम होगा। इस प्रकार उसने 'ऑलिवर क्रॉम्वेल' वाली कविता तथा 'ऐनस मिराबिलिस' में तो 'गॉण्डिबर्ट'[१] काव्यांश (स्टैन्ज़ा) का प्रयोग किया परतु 'ऐस्ट्रिया रिडक्स' तथा चार्ल्स के सिंहासनारोहण के उपलक्ष में लिखी गयी 'पैनेजिरिक' (अर्थात् 'विरदावली') में दोहा-छंद का प्रयोग किया। 'ऐब्सलम ऐण्ड ऐकिटॉफ़ेल' मे उसने अपना अतिम निर्णय दोहा-छंद के पक्ष में किया तथा अपने गौरवपूर्ण प्रयोग द्वारा उसने इसकी सामर्थ्य सिद्ध करके सफलता निश्चित कर दी।

५२. बट्लर—इस युग का केवल एक और कवि इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसका उल्लेख यहाँ होना आवश्यक है, और उसकी प्रसिद्धि केवल एक रचना के कारण है। यह कवि है 'हुडिब्रस' का लेखक सैमुएल बट्लर (१६१२-८०)। यह प्रसिद्ध रचना तीन भागों मे क्रमशः १६६३, १६६४ और १६७८ में प्रकाशित हुई। प्यूरिटनों पर लिखे गये इस व्यंग्य ने युग की रुचि को तुरंत प्रभावित किया तथा अपनी लोकप्रियता द्वारा इन तथाकथित "सतो" व उनके उद्देश्य के प्रति

१. इस काव्यांश का यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि ड्राइडेन के मित्र तथा नाट्य-रचना में उसके सहयोगी सर विलियम डैवनाण्ट ने अपनी 'गाण्डिबर्ट' (१६-५१) शीर्षक कविता में इसको प्रयोग करके इसे लोकप्रिय बना दिया था। इसमें 'आयम्बिक' पंचपदीय छंद की चार पंक्तियाँ होती हैं जिनका तुकांत-विधान अ ब अब होता है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण ग्रे की 'एलेजी' में मिलता है।—लेखक

फैली हुई सामान्य प्रतिक्रिया को उद्दीप्त कर दिया। इस काव्य का विन्यास स्पष्टतः 'डॉन क्विक्ज़ॉट' के आधार पर हुआ है क्योकि स्पेनी भाषा के उस आश्चर्यजनक परिहासपूर्ण प्रेमाख्यान की भाँति इसमे भी एक सरदार व उसके सहचर के सकटों तथा प्रेम के विषय मे सरदार को लगे आघातो का वर्णन किया गया है। इस काव्य के दोनों प्रमुख चरित्र प्यूरिटनवाद के प्रतिनिधि है यद्यपि वे परस्पर-विरोधी स्वभाव के है, और लेखक ने दोनो को हमारी घृणा का पात्र बनाया है। सर हुडिब्रस, जो 'प्रिस्विटीरियन' मतानुयायी है तथा जिसमे युद्ध के लिए अदम्य उत्साह है, जानबूझकर पाखण्डी नही है यद्यपि अनजान मे उसमे पाखण्ड पर्याप्त मात्रा मे है। इसके विपरीत उसका अनुचर, राल्फो, बेहूदा एव पाखण्डी धोखेबाज है जिसने केवल अपने लाभ के लिए सदाचार की नकाब पहन रखी है। कथा का प्रारभ इन दोनो के एक ऐसे प्रयत्न से होता है जो ये लोग 'बियर-बेटिग'[1] के एक खेल को बद कराने के लिए करते है। इस कारण खेल देखने के लिए एकत्रित भीड़ से उनका खूब झगड़ा होता है जिसका फल यह होता है कि लोग उन्हे 'पैरिश' के शिकजे एड़ियाँ जकड़कर छोड़ देते है। यह पुस्तक का सबसे मनोरजक भाग है। इसके पश्चात् अन्य घटनाएँ आती है जिनसे हमारी रुचि दूसरे भाग मे काफ़ी दूर तक बनी रहती है; परंतु इसके बाद कथा समाप्त हो जाती है और काव्य के शेष भाग मे पत्रो के कुछ अंशों, प्रासगिक वर्णनों तथा व्यंग्यात्मक आलोचनाओ की ही प्रमुखता है। आधुनिक रुचि वाले पाठकों के लिए 'हुडब्रस' आवश्यकता से अधिक लम्बी है; इसके कुछ सर्वोत्तम स्थलों में भी अतिविस्तार का दोष पाया जाता है; तथा इसमें प्यूरिटन-वितण्डावाद की विभिन्न बातों के परीक्षण ने आवश्यकता से अधिक स्थान घेर लिया है। आजकल के पाठक की दृष्टि मे इसकी विषयवस्तु की स्थानीयता और अस्थायित्व भी एक गम्भीर दोष है। तथापि यह वाकचातुर्य एवं प्रफुल्लता से पूर्ण है और इसका अनियमित छंद तथा इसके आश्चर्यजनक दोहरे तुकांत भी, जैसा ड्राइडेन ने कहा है, परिहासोत्पादक रचना के उद्देश्य एवं आत्मा के लिए सर्वथा उपयुक्त है, यद्यपि थोड़ी ही देर बाद हमारा मन उनसे भर जाता है। बट्लर का विचार परिहास द्वारा प्यूरिटनवाद की हत्या करने का था। इसी

१. एक खेल जिसमें किसी भालू को कुत्तों से तंग करवाया जाता था। सत्रहवीं शताब्दी में यह खेल बहुत लोकप्रिय था।—अनु०

कारण उसकी कविता ने राजदरबार का खूब मनोरंजन किया तथा चार्ल्स द्वितीय को भी वह बड़ी प्रिय थी। वैसे इसी चार्ल्स द्वितीय ने, यद्यपि वह इसको पढ़कर खूब हँसता था और इसकी प्रशंसा करता था, इसके लेखक को अपने अंतिम वर्ष गरीबी में बिताने दिये और उसके लिए कुछ भी न किया। यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती कि बट्लर ने प्यूरिटनवाद का जो चित्र खींचा है वह पूर्ण और अंतिम नही है। यह तो उसका उपहास मात्र है। उसने केवल उस अति और पाखण्ड को ही देखा जो वास्तव में प्रायः प्यूरिटनवाद से संबधित रहते थे। परंतु इसकी महान्ता और शक्ति के जिन तत्त्वो ने इतिहास के निर्माण मे उसे इतना महत्त्वपूर्ण बना दिया था, उन्हे वह या तो देख ही नही सका या उसने जान-बूझकर नही देखा। कम से कम उसने अपनी रचना मे उन्हें स्वीकार तो नही ही किया है।

अध्याय १२

ड्राइडेन-युग

गद्य तथा नाट्य-साहित्य

५३. आधुनिक गद्य का उत्थान—मैथ्यू आर्नल्ड लिखता है कि "हमारे आधुनिक अंग्रेजी गद्य की उत्पत्ति का वास्तविक समय पुनस्संस्थापन-काल ही था। पुनस्संस्थापन से पूर्व की शैली से उसके बाद के अंग्रेजी गद्य की शैली का जो विच्छेद हुआ वह इस गद्य की विशिष्ट रचना के कारण ही संभव हुआ। यह रचना लम्बाई और सश्लिष्ट शैली के विरुद्ध थी तथा इसके कारण हम इस योग्य हुए कि थोड़े मे और स्पष्ट रूप से अपने विचार व्यक्त कर सके। अंग्रेजी गद्य को गद्य-रचना के सच्चे नियमों का ज्ञान इसी समय हुआ और वह आधुनिक बन गया। कुछ ऊपरी विभिन्नताओं के होते हुए भी इस गद्य की शैली हमारे अपने समय की ही शैली है।" ऐतिहासिक दृष्टि से ड्राइडेन-युग के साहित्यिक इतिहास में इस आधुनिक गद्य की स्थापना सबसे बड़ी अकेली घटना है।

यदि हम मिल्टन के 'एरियोपैजिटिका' से एक पृष्ठ पढ़े और फिर एक पृष्ठ ड्राइडेन, डिफो अथवा एडिसन से, तथा उन दोनों के बीच के मौलिक भेदों पर ध्यान दे तो हम आर्नल्ड के कथन की परीक्षा आसानी से कर सकते है। सत्य तो यह है कि किसी भी व्यक्ति की दृष्टि से ये भेद छूट नही सकते। मिल्टन की शैली के विषय मे हम सहज ही कहते है कि "हमें इस प्रकार लिखने का प्रयत्न करने का विचार जरा देर के लिए भी नही करना चाहिए।" परतु ड्राइडेन, डिफ़ो, और एडिसन की शैली के विषय में हम कहते है कि "यह शैली कही-कही कुछ पुरानी तो अवश्य है फिर भी यह बहुत करके हमारी ही लेखन-शैली है।" जैसा हम जान चुके हैं, प्राचीन गद्य, अर्थात् हूकर, मिल्टन तथा स्वयं ड्राइडेन के ही समय के क्लैरेण्डन व जेरिमीटेलर जैसे लेखकों का गद्य सामान्य प्रयोग के लिए आवश्यकता से अधिक जटिल, संश्लिष्ट और बोझिल था। उनके वाक्य लंबे होते थे; तथा निक्षिप्त पदों व वाक्यों की भरमार होती थी। वाक्य-रचना बहुधा अंग्रेजी की न होकर

लैटिन के आधार पर होती थी। नये गद्य में यह सब बदल गया। वाक्य पहले की अपेक्षा अधिक छोटे व सरल होने लगे; लबे और अव्यवस्थित वाक्यो को तोड़ कर छोटा कर दिया गया; निक्षिप्त पदो तथा लैटिन के विपर्ययो को दूर कर दिया गया। स्पष्ट है कि इन परिवर्तनों के कारण लिखने और पढ़ने दोनों में सरलता हो गयी; तथा उनके कारण लेखन मे सुस्पष्टता तथा निर्दिष्टता भी आयी।

इस नवीन गद्य के श्रीगणेश तथा स्थापना मे अनेक कारणो का सयोग रहा। सहज बुद्धि की भावना तथा आलोचनात्मक प्रवृत्ति के विस्तार का ही, जो कि काव्य की श्रेष्ठतर भावनाओं के लिए इतना हानिकारक रहा, इसमे काफी बडा हाथ था। यहाँ पर विज्ञान के बढते हुए प्रभाव को भी स्वीकार करना आवश्यक है, क्योकि विज्ञान विचार की स्पष्टता तथा अभिव्यक्ति की सरलता के पक्ष मे था। फिर, यह भी याद रखना आवश्यक है कि एक नये प्रकार की जनता का विकास हो रहा था जो उस जनता से कही अधिक विविधतापूर्ण तथा नानाजातीय थी जिसका साहित्यिक ससार पर अभी तक लगभग एकाधिकार-सा रहा था। अतएव लेखकों के लिए यह आवश्यक था कि वे सामान्य पाठको के इस निरतर बढते हुए समूह की रुचियो और सामर्थ्य को ध्यान मे रखे, क्योकि वे इन्ही की सतुष्टि के लिए तो लिखते थे। अनवरत राजनीतिक एव धार्मिक उत्तेजना के उस युग मे उस क्षणभंगुर साहित्य की भी अत्यधिक उन्नति हुई जिसको अब हम पत्रकारिता के शीर्षक के अन्तर्गत रखते है। इस प्रकार सामान्य पाठक तथा क्षिप्रलेखक दोनो साथ ही साथ प्रकट हुए और दोनो की प्रतिक्रिया एक दूसरे पर हुई। अनिवार्यतः जनता के इस परिवर्तन का आशय था कि जिन विषयों को पहले शुष्क, विद्वत्तापूर्ण एवं कठिन शैली में लिखा जाता था, उन्हें सरल और रोचक बनाना पड़ेगा। इन सभी प्रभावों ने उस महान् परिवर्तन मे अपना-अपना योग दिया जो इस समय अग्रेजी गद्य में हुआ। इनके अतिरिक्त एक अन्य प्रभाव था फ्रांसीसी साहित्य का। अन्य सभी यूरोपीय देशो से पहले फ्रांस में एक ऐसे गद्य का विकास हो चुका था जो अपनी सुस्पष्टता, नम्यता व उत्तम रुचि के कारण सामान्य विवाद, स्पष्टीकरण तथा सामाजिक व्यवहार के समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रशंसनीय रूप से योग्य था। इस गद्य ने बिलकुल वैसा ही आदर्श प्रस्तुत कर दिया जिसकी अग्रेजी लेखकों को अपने मार्ग-निर्देशन के लिए आवश्यकता थी।

नवीन गद्य की स्थापना न तो इतने अचानक ही हुई जितना आर्नल्ड के कथन से हमारा विचार हो सकता है, और न यह किसी एक ही व्यक्ति का कार्य था।

परंतु इस प्रकार के सक्षिप्त विवरण में भी ड्राइडेन विशेष स्थान पाने का अधिकारी है क्योकि आधुनिक शैली मे हमारे यथार्थ रूप से महान् गद्य-लेखको में वह प्रथम था।

५४. ड्राइडेन का गद्य-साहित्य––ड्राइडेन ने केवल धनोपार्जन के लिए जो तमाम साहित्य लिखा है उसकी तो अवहेलना की जा सकती है, परतु इसके अतिरिक्त उसका जो गद्य-साहित्य है उसमे मुख्य रूप से निबध व प्राक्कथन है जिनमें काव्य और नाटक से सबधित अनेकानेक प्रश्नो पर विचार किया गया है। यहाँ भी हम देखते है कि उसका साहित्य अपने युग का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार पुनस्सस्थापनयुग मे नवीन गद्य का उत्थान हुआ, उसी प्रकार उस समय आधुनिक आलोचना का भी वास्तविक प्रारभ हुआ। कारण यह है कि यद्यपि जैसा हम देख चुके है, इंग्लैण्ड मे आलोचना-शास्त्र कुछ मात्रा मे इसके पहले भी वर्तमान था, तथापि लोगों ने साहित्य-रचना के सिद्धान्तो व नियमो का व्यवस्थित करना अव पहली वार आरभ किया। आलोचना तथा साहित्य-रचना के कठोर नियमो द्वारा शासित करने की तदनुरूप प्रवृत्ति के विकास मे उस युग की भावना का एक और उदाहरण मिलता है जो कल्पना की अपेक्षा व्याख्या के विषय मे कही अधिक समर्थ था, तथा जिसमें रचनात्मक शक्तियों के ऊपर बौद्धिक शक्तियो का आधिपत्य था। ड्राइडेन हमारा सर्वप्रथम महान् आधुनिक गद्य-लेखक तो है ही, साथ ही वह हमारा सर्व-प्रथम महान् आधुनिक आलोचक भी है। अपनी आलोचना के दरमियान मे उसने प्रायः उन सभी विषयो को उठाया है जिनमें तत्कालीन साहित्य-जगत् की रुचि थी तथा विविध दृष्टिकोणो से उनकी विवेचना की है क्योकि उसका मत निरंतर परिवर्तित होता रहता था। उदाहरणस्वरूप इन विषयो मे से कुछ थे नाट्य-रूप तथा शैलियाँ, वीरकाव्य तथा महाकाव्य के तत्त्व, कला और प्रकृति का परस्पर सम्बन्ध, यूनान तथा रोम के महान् लेखको की विशेषताएँ इत्यादि। इस प्रकार उसके साहित्य का सर्वाधिक महत्त्व इस दृष्टि से है कि उसमें साहित्य के उन्नतिशील 'क्लासिकल' सप्रदाय के आदर्शो व रुचियो की व्याख्या की गयी है। सामान्य रूप से विचार करते हुए उसकी सर्वोत्तम आलोचना उसकी नाट्य-साहित्य विषयक रचनाओ मे है, और खासतौर से 'एसे ऑव ड्रैमेटिक पोएजी' (अर्थात् 'नाटकीय कविता पर निबंध') में, जो इन सबमें उसकी सबसे पहली तथा सबसे अधिकारी रचना है। इसमे उसने तीन प्रमुख प्रकार के नाटकों के सिद्धांतों व गुणों पर विचार किया है, अर्थात् यूनानियों व रोमनो का 'क्लासिकल'

नाट्य, फ्रांसीसियो का नव-क्लासिकल नाट्य, तथा अग्रेजो का 'रोमाण्टिक' नाट्य। इसके अतिरिक्त अन्य बातों के साथ-साथ, उसने नाटकों मे अतुकांत छंद के स्थान पर तुकात के प्रयोग का औचित्य सिद्ध करने तथा "जो व्यक्ति अनुचित रूप से अग्रेजी लेखको की अपेक्षा फ्रांसीसी लेखकों को अधिक पसंद करते है उनकी आलोचना के विरुद्ध अपने अंग्रेजी लेखकों के सम्मान की रक्षा करने" का भी प्रयत्न किया है। ड्राइडेन प्रायः बहुत जल्दी लिखता था और सूक्ष्म बातों मे स्वभावतया लापरवाह भी था। सामान्यतः उसने अपने युग की मर्यादाओं और पूर्वाग्रहों को भी स्वीकार किया है। इन सब कारणों से उसकी आलोचना का काफ़ी बड़ा अंश ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हुए भी, स्थायी महत्त्व का कम है। परंतु इसके साथ ही हम शायद ही कभी उस स्वस्थ विवेक से प्रभावित हुए बिना रह सकते है जिसका परिचय वह अपने द्वारा उठाये हुए लगभग प्रत्येक विषय मे देता है। उसकी विदग्धता तथा सूक्ष्मदृष्टि तो असाधारण कोटि की है, जब कि उसकी गद्य-शैली सुस्पष्टता, ओज, पदरचना के आश्चर्यजनक लालित्य तथा वार्तालाप संबंधी स्वाभाविकता के गुणो से सम्पन्न है। वार्तालाप संबंधी यह स्वाभाविकता कुछ अन्य समकालीन लेखको की स्वाभाविकता से भिन्न होने के कारण एक ऐसी साहित्यिक विशिष्टता से सम्पन्न है जो उसे सबसे पृथक् कर देती है, तथा लापरवाही से उत्पन्न सदोषता और साधारणता भी उसमे नही आने पायी है।

५५. **बन्यन**––ड्राइडेन-युग के गद्य-साहित्य मे केवल एक ही नाम और है जो यथार्थ रूप से महान् है। यह नाम है जॉन बन्यन (१६२८-८८) का। बन्यन का जन्म बेड़फर्डशायर के एल्सटो नामक स्थान मे हुआ था। उसका पिता ठठेरा था और बाद मे उसने पिता के व्यवसाय को ही अपनाया। कुछ समय तक वह गृहयुद्ध मे भी लड़ा, परन्तु यह निश्चित नही है कि वह किस पक्ष में था। इसके बाद बैप्टिस्टों द्वारा ईसाई मत मे उसका बप्तिस्मा हुआ; विवाह उसने जल्दी ही कर लिया; तथा १६५५ में गॉव के मैदानो मे उपदेश देना आरभ कर दिया। पुनस्सस्थापन के बाद भी उसने यह कार्य जारी रखा और शीघ्र ही उसे गुप्त व गैर कानूनी सभाएँ करने के अपराध में जेल मे बंद कर दिया गया। इस प्रकार वह बेड़फ़र्ड जेल मे बारह वर्ष तक बदी रहा। उसकी आत्मकथात्मक रचना 'ग्रेस अबाउण्डिंग' ('प्रभूत कृपा') बन्दी गृह में ही लिखी गयी थी। १६७५ में फिर दूसरी बार छः महीने की कैद हुई। इस बार जेल में उसने 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' का प्रथम भाग लिखा। इस बीच मे उसने उपदेश देने के लिए लाइसेस प्राप्त कर

लिया था तथा बेड़फर्ड के बैप्टिस्ट समाज का नियमित पादरी बन गया था। यह समाज उस समय एक खलिहान में एकत्र हुआ करता था। अपने अंतिम वर्षों मे वह लंदन में उपदेशक के रूप में भी प्रसिद्ध था। लंदन की ही एक यात्रा मे उसकी मृत्यु हुई; और उसे बनहिल फील्ड्स में 'डिसेण्टरो' के पुराने कब्रगाह मे दफनाया गया, जहाँ बाद में डिफ़ो और आइजक वाट्स भी दफनाये गये। बन्यन ने बहुत कुछ लिखा है, परतु उसकी चार महान् रचनाएँ निम्नलिखित है 'ग्रेस अबाउण्डिग' (१६६०), 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' (१६७८-८४), 'दि लाइफ ऐण्ड डेथ ऑव मिस्टर बैडमैन' (१६८०), तथा 'दि होली वार' (१६८२)। बन्यन के संबध में बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो उसे साहित्य के इतिहास मे एक अत्यत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बना देती है। अकेले मिल्टन को छोड़कर, जिसका स्वयं एक अद्वितीय स्थान है, उसकी आश्चर्यजनक कल्पना उसे उस कल्पनाशून्य-युग मे एक अद्वितीय स्थान का अधिकारी बना देती है। वह हमारे साहित्य मे एकमात्र व्यक्ति है जो एक लम्बा दृष्टांत-रूपक गद्य में लिखने तथा उसकी प्रतीकात्मकता को जरा भी हानि पहुँचाये बिना उसे आदि से अंत तक एक यथार्थ मानवी कथा के निमग्नकारी रस से पूर्ण करने में सफल हुआ है। उसकी शैली में सुस्पष्टता व सादगी का जो संयोग मिलता है वह उसके साहित्य की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है। बन्यन शिक्षित नही था; प्राचीन यूनानी और लैटिन साहित्य का अथवा साहित्यके विभिन्न सिद्धान्तों का उसे बिल्कुल ज्ञान न था; यहाँ तक कि अंग्रेजी साहित्य के विषय में भी उसका ज्ञान बहुत ही कम या प्रायः बिल्कुल नही के बराबर था। परतु उसे अंग्रेजी बाइबिल के आधिकारिक सस्करण (१६११) का एक एक शब्द याद था, तथा शैली के संबंध में प्रकृति ने उसे एक अपूर्व प्रतिभा से सम्पन्न किया था। सत्य तो यह है कि बहुत ही कम लेखकों ने, उनकी ट्रेनिग और प्रवीणता चाहे जितनी और जैसी रही हो, सही शब्द तथा प्रभावोत्पादक पद के प्रयोग में ऐसे विवेक का परिचय दिया है। यहाँ पर मिल्टन से उसकी भिन्नता का महत्व स्पष्ट हो जाता है। दोनों प्यूरिटन थे; फिर भी, जैसा हम देख चुके हैं, मिल्टन जो कि स्कूलों की समस्त विद्या का पंडित था, पुनर्जागरण द्वारा भी प्रेरित हुआ था, परंतु बन्यन सच्चे अर्थों मे मात्र प्यूरिटनवाद की ही देन था। अतएव यदि हमसे पूछा जाय कि अंग्रेजी साहित्य में प्यूरिटनवाद की महत्तम कृति क्या है, तो उत्तर में 'पैराडाइज लॉस्ट' नही बल्कि 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' का नाम लेना चाहिए। अंत में, अंग्रेजी गद्य कथा-साहित्य के विकास में बन्यन का जो स्थान है उसे भी हमें नहीं भूलना चाहिए। 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' का

शिक्षात्मक उद्देश्य जो सर्वोपरि है, तथा इस रचना का दृष्टांत-रूपक वाला स्वरूप हमें इस बात से रोकते है कि उसे नियमित आधुनिक उपन्यासों की कोटि में रख सके, फिर भी कथानक, चरित्रो तथा कथोपकथन तीनों का रस इतनी सफलता से बनाये रखा गया है, नाटकीय शक्ति इतनी प्रबल है तथा सामान्य जीवन पर लेखक की पकड़ इतनी मजबूत है कि इसे कम से कम उपन्यास का अग्रदूत तो अवश्य ही मानना चाहिये।

५६. ड्राइडेन-युग के अन्य गद्य-लेखक––सर विलियम टेम्पुल (१६२८-९९) ने, जो स्विफ्ट के साथ अपने संबंध के कारण सबसे अधिक प्रसिद्ध है, पत्र व निबंध सादी परंतु परिष्कृत शैली मे लिखे, तथा जॉन टिलॉट्सन (१६३०-९४) ने धर्मोपदेशको की पुरानी परम्परा का परित्याग करके धार्मिक वक्तृता में भी ऐसी ही शैली का प्रयोग करना आरभ कर दिया, अतः नवीन गद्य की स्थापना मे इन दोनों का भी कुछ महत्व है। दार्शनिक व्याख्या व विवेचन में इस गद्य की महान् उपयोगिता का स्पष्ट परिचय जॉन लॉक (१६३२-१७०४) ने अपने 'एसे ऑव दि ह्यूमन अण्डरस्टैण्डिग', 'ट्रीटिज ऑन गवर्नमेण्ट' तथा 'थॉट्स ऑन एजूकेशन' मे दिया। परन्तु सामान्य पाठक के दृष्टिकोण से इस युग का सबसे मनोहर गौण गद्य-साहित्य जॉन ईवलिन (१६२०-१७०६) तथा सैमुएल पीप्स (१६३३–१७०३) नामक दो डायरी-लेखकों की रचना मे उपलब्ध होता है। ईवलिन की 'डायरी' अब प्रमुख रूप से तत्कालीन घटनाओं के ऐसे विवरण के रूप में पढी जाती है जो एक राजपक्ष के भक्त, विचारशील और आदर्शवादी व्यक्ति ने अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। यह गभीर परतु सरल शैली में लिखी गयी है। इसके विपरीत पीप्स की 'डायरी', अपने ऐतिहासिक महत्त्व से बिल्कुल परे, सर्वाधिक मनोरजक पुस्तको में से है, तथा किसी भी साहित्य मे अपने ढग की सबसे असाधारण वस्तु है। इसमें लगभग दस वर्ष का विवरण है, अर्थात् १ जनवरी, १६६० से ३१ मई, १६६९ तक, जब कि लेखक की आँखों की ज्योति जाती रही। अतएव अन्य अनेक उल्लेखनीय घटनाओ के अतिरिक्त इसमे पुनस्संस्थापन, महामारी तथा महाग्नि का भी समावेश है। परन्तु इसका प्रधान महत्त्व उस समय के व्यक्तियों और रीति-रिवाज तथा लंदन के लोगों की आदतो, फैशनों व अपकीर्तिकर-चर्चाओ के उन स्पष्ट चित्रों तथा सड़कों, काफी हाउसों एवं नाट्यशालाओ की गपबाजी के उन यथार्थ वर्णनों के कारण है जो लेखक ने इसमें दिये है। साथ ही इसका महत्त्व इस कारण भी है कि इसमें स्वयं एक अदम्य उत्साह वाले लेखक के व्यक्तिगत जीवन व कार्यो, घरेलू परेशानियों,

ईर्ष्याओं, मौजों, सफलताओं और निराशाओं का विवरण है। पीप्स ने इसको जनता के लिए नही बल्कि केवल अपने लिए लिखा था। उसने ऐसी संकेत-लिपि का प्रयोग किया था जिसे उन्नीसवी शताब्दी का प्रारंभ होने से पूर्व पढ़ा ही नहीं जा सका। वह अपनी डायरी की अभेद्य गूढता के विषय मे ऐसा निश्चिन्त था कि उसने इसमे अपने आंतरिक विचारों और भावों को लिखने मे भी शंका नही अनुभव की। अंतर्मन से चरित्र के प्रकटीकरण की दृष्टि से यह 'डायरी' अद्वितीय है।

५७. ड्राइडेन-युग का नाट्य-साहित्य——हमें अपने विषय के इस भाग को अधिक स्थान देने की आवश्यकता नहीं है। इस समय का रंगमंच लगभग पूर्ण रूप से फैशनेबुल समाज की ही उपज था तथा उसमें सर्वत्र उसके संरक्षकों की रुचि परिलक्षित होती थी। इस काल के सुखांत-नाट्य को सामान्यतः पुनस्संस्थापन-नाट्य ('रेस्टोरेशन ड्रामा') कहा जाता है, यद्यपि यह बात पूर्णरूपेण सही नही है। इसमें प्रमुख नाम निम्नलिखित है :—विलियम वाइकर्ली (१६४०?–१७१६), विलियम क्राँग्रीव (१६७०-१७२९) जो इस वर्ग का सबसे दक्ष लेखक तथा कृत्रिम नाट्य ('आर्टिफिशल ड्रामा') के महान्तम लेखकों में से है, सर जॉन वानब्रॉ (१६६४?–१७२६), तथा जॉर्ज फरकुहर (१६७८–१७०७)। इन लोगो का साहित्य सर्वत्र आश्चर्यजनक चतुरता से पूर्ण तथा साहस एवं उल्लास की भावना से सम्पन्न है। वाक्चातुर्य उसमें बहुतायत से मिलता है और कभी भी क्षीण नही होता। परंतु उसमे प्रकृति के यथार्थ चित्रण का सर्वथा अभाव है तथा अपने निम्नतम रूप मे उसकी स्पष्ट और निर्लज्ज अश्लीलता उस समाज की भावना को परिलक्षित करती है जिसके लिए उसकी रचना हुई थी। अंत में इस अश्लीलता के कारण ही रेवरेण्ड जेरिमी कॉलियर (१६५०-१७२६) ने इस साहित्य को कड़ी फटकार दी। उसके 'शॉर्ट व्यू ऑव दि प्रोफेननेस ऐण्ड इम्मोरैलिटी ऑव दि इंग्लिश स्टेज' (१६९८) अर्थात् 'अंग्रेजी रंगमंच की अश्लीलता व अनैतिकता का संक्षिप्त विवरण'—के कारण बड़ा बावेला मचा परंतु उसका प्रभाव बहुत अच्छा पडा। इस युग का दुखांत-नाट्य भी इतना ही अवास्तविक था, यद्यपि वह सुखांतों की अश्लीलता से मुक्त रहा। कुछ समय तक इसका सबसे लोकप्रिय रूप रहा 'हीरोइक' नाट्य जिसमें प्रेम, पौरुष एवं साहस का चित्रण बड़े विशाल पैमाने पर होता था जिसका जीवन से बिल्कुल संबंध नही होता था तथा जिसका कथोपकथन ध्वनियुक्त वाक्तांडव व अतिशयोक्तिपूर्ण गर्जन-तर्जन से परिपूर्ण था। इन 'हीरोइक' नाटकों में अतुकांत छंद का स्थान तुकांत ने ले लिया जिसके विषय में याद ही होगा कि उसका समर्थन

ड्राइडेन ने अपने 'एसे ऑन पोएजी' में किया था। ड्राइडेन स्वयं इस नाट्य (अर्थात् 'हीरोइक' दुखांत नाट्य) का प्रमुख लेखक था। उसके 'टिरैनिक लव, ऑर दि रॉयल मार्टर' (१६६९) तथा 'कॉन्क्वेस्ट ऑव ग्रेनेडा' (१६७०) के दो भागों में इस नाट्य के सर्वोत्कृष्ट रूप के दर्शन होते हैं। परंतु 'हीरोइक' नाट्य का फैशन बहुत अधिक दिन तक नहीं चला तथा अन्य रूपों के पक्ष में प्रतिक्रिया आरंभ हो गयी। एक ओर तो 'सेनेकन' अथवा फ्रेंच संप्रदाय के अनुयायी थे, जैसे क्राँग्रीव जिसने अपने एकमात्र दुखांत 'दि मोर्निंग ब्राइड' (१६९७) में नियमित 'क्लासिकल' आदर्शों का ही पूर्ण अनुसरण किया है। दूसरी ओर ड्राइडेन था, जो अब 'हीरोइक' शैली और तुकांत से ऊब चुका था; अपने 'आल फॉर लव' में वह शेक्सपियर तथा अतुकांत छंद की ओर पुनः लौट पड़ा। यह नाटक शेक्सपियर के 'एण्टनी ऐण्ड क्लियोपैट्रा, पर आधारित है। परंतु नाट्य-रचना के क्षेत्र में कोई महत्त्वपूर्ण नये कदम नहीं उठाये गये और जो रचनाएँ इस समय रंगमंच के लिए लिखी गयीं उनका साहित्यिक महत्त्व बहुत कम है। इस युग के केवल दो ही दुखांत-लेखक और हैं जिनका नामोल्लेख यहाँ आवश्यक है। ये हैं नथेनियल ली (१६५३-९२) जिसने पहले तुकांत में और फिर अतुकांत छंद में लिखा तथा जिसमें धुआँ बहुत, पर आग बहुत थोड़ी है; तथा टॉमस ऑट्वे (१६५२–८५) जिसके 'ऑर्फन' ('अनाथ') और 'वेनिस प्रिज़र्व्ड' शीर्षक नाटक अभिनेताओं व दर्शकों दोनों के बीच बहुत दिन तक लोकप्रिय बने रहे।

मिल्टन-युग १६२५–१६६० तथा ड्राइडेन-युग १६६०–१७०० की सारिणी

ऐतिहासिक घटनाएँ	काव्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
चार्ल्स प्रथम, १६२५-४९.			फ्लेचर की मृत्यु, १६२५.
		बेकन की मृत्यु, १६२६.	
	मिल्टन की 'नेटिविटी ओड', १६२९.		
	हर्बर्ट की 'दि टेम्पुल', १६३१.		
	डन की मृत्यु', १६३१.		
		ड्राइडेन का जन्म १६३१.	
	मिल्टन की 'ल लेग्रो' तथा 'इलेपेन्सेरोजो', १६३३.		
	'कोमस', १६३४.		
		ट्रैहर्न का जन्म, १६३४ ?	
	'लिसिडस' १६३७.		बेन जॉन्सन की मृत्यु १६३७.
	डेन्हम की 'कूपर्स हिल' १६४२.	सर टॉमस ब्राउन की 'रेलिजियो मेडिची', १६४२.	थियेटरों का बद होना, १६४२.
		मिल्टन की 'एरियोपैजिटिका', १६४४.	
	वालर की 'कविताएँ', १६४५.		
	काउली की 'मिस्ट्रेस', १६४७.		
	हेरिक की 'नोबुल नम्बर्स' तथा 'हेस्पराइडीज़', १६४८.		

ऐतिहासिक घटनाएँ	काव्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
कॉमनवेल्थ की स्थापना, १६४९.		बैक्सटर की 'सेण्ट्स रेस्ट', १६५०. टेलर की 'होली लिविंग', १६५०. टेलर की 'होली डाइंग', १६५१. वाल्टन की 'कम्प्लीट ऐंगलर', १६५३.	
क्रॉमवेल की मृत्यु, १६५९.	ड्राइडेन की 'हीरोइक स्टैन्ज़ाज़ ऑन दि डेथ ऑव क्रॉम्वेल', १६५९.		
चार्ल्स द्वितीय, १६६०–८५.	ड्राइडेन की 'ऐस्ट्रिया रिडक्स', १६६०	पीप्स की 'डायरी' का आरंभ, १६६०.	थियेटरों का पुन खुलना, १६६०.
		फुलर की 'वर्दीज' जो उसकी मृत्यु के कारण अधूरी रह गयी, १६६१. डिफ़ोका जन्म, १६६१ ?	
	बट्लर का 'हुडिब्रस', भाग १, १६६३. भाग २, १६६४.		ड्राइडेन का प्रथम नाटक 'दि वाइल्ड गैलण्ट', १६६३.
लंदन की महाग्नि, १६६६.			
	ड्राइडेन की 'ऐनस मिराबिलिस' १६६७. 'पैराडाइज़ लॉस्ट', १६६७.	ड्राइडेन का 'एसे ऑन ड्रैमैटिक पोएज़ी', १६६७. स्विफ़्ट का जन्म, १६६७.	

ऐतिहासिक घटनाएँ	काव्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
	काउली का देहांत, १६६७.		ड्राइडेन का 'टिरैनिक लव' १६६९.
		वाल्टन की 'लाइव्ज', १६७०.	'कॉन्क्वेस्ट ऑव ग्रेनेडा, १६७०.
	'पैराडाइज़ रिगेण्ड' तथा, 'सैम्सन एगोविस्टिस', १६७१.		वाइकर्ली की 'कॉमेडीज', १६७१-७७.
		ड्राइडेन का 'एसे ऑव हीरोइक प्लेज़', १६७२.	
		ऐडिसन का जन्म, १६७२.	
		स्टील का जन्म, १६७२.	
	मिल्टन की मृत्यु, १६७४.		
	बट्लर की 'हुडिब्रस' भाग ३, १६७८.	'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस', भाग १, १६७८.	ड्राइडेन का 'आल फॉर लव', १६७८.
		बन्यन का 'मि० बैडमैन', १६८०.	ऑटवे का 'ऑर्फ़न', १६८०.
	ड्राइडेन की 'ऐब्सलम, ऐण्ड ऐकिटॉफेल', १६८१.		
	ड्राइडेन की 'रेलिजियो लायची', १६८२.	बन्यन का 'होली वार', १६८२.	ऑटवे का 'वेनिस प्रिजर्व्ड', १६८२.
		'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' भाग २, १६८४.	

ऐतिहासिक घटनाएँ	काव्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
जेम्स द्वितीय १६८५-८८.	ड्राइडेन की 'दि हाइण्ड ऐण्ड दि पैन्थर', १६८७.		
	वालर की मृत्यु, १६८७.		
	पोप का जन्म १६८८.	बन्यन की मृत्यु, १६८८,	
रक्तहीन क्रांति, १६८८. विलियम तृतीय और मेरी, १६८९.		रिचर्डसन का जन्म, १६८९.	
			क्रॉग्रीव द्वारा नाटक लिखना प्रारभ १६९३.
			वानब्रॉ द्वारा नाटक-रचना प्रारंभ, १६९७.
		कॉलियर का 'शॉर्ट व्यू', १६९८.	
	ड्राइडेन की 'फ़ेबुल्स', १६९९.		फ़र्कुहर द्वारा नाट्य-रचना प्रारंभ, १६९९.
	ड्राइडेन की मृत्यु, १७००.		

अध्याय १३

पोप-युग (१७००-१७४५)

काव्य

५८. **पोप-युग**—यद्यपि अठारहवी शताब्दी के प्रारभ मे इग्लैण्ड मे लोगों का आचार-व्यवहार असस्कृत, राजनीति घोर भ्रष्टाचार से पूर्ण तथा समाज की सामान्य प्रवृत्ति नृशंसता की ओर थी तथापि उस समय नैतिक उद्धार की दिशा में भी दृढ प्रयत्न किया गया। कॉलियर के 'शार्ट-व्यू' का जैसा स्वागत हुआ उससे यह स्पष्ट सिद्ध हो गया कि लोग उस घोर उच्छृखलता से बड़ी ही जल्दी आजिज आ रहे थे जो स्टुअर्ट राजाओं के पुनरागमन के साथ ही फैशनेबुल वर्ग मे आ गयी थी। साथ ही लोग पुनः जीवन और आचरण की उन तात्त्विक मर्यादाओ पर जोर देने लगे जो पिछली पीढी के लिए घोर घृणा का विषय थी। जैसा हम अभी देखेगे, इस अर्ध-शताब्दी के साहित्य के एक बड़े भाग की उल्लेखनीय विशेषता है सुधारक की आकांक्षा। यह आकाक्षा मध्यवर्गीय लेखको द्वारा रचे गये साहित्य मे विशेष रूप से दर्शित होती है। ये लेखक नैतिक विचारों द्वारा अत्यधिक प्रभावित थे। इस प्रकार पोप-युग के लोग पुनस्संस्थापन-युग की लम्पटता के तो विरुद्ध थे, परतु साथ ही अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी के समान ही वे उस प्रत्येक वस्तु के कट्टर विरोधी थे जिसमे प्यूरिटन दुराग्रह एवं धर्मांधता की जरा भी बू थी। अतएव यद्यपि इस समय इग्लैण्ड मे खोयी हुई नैतिकता की पुनः प्रतिष्ठा होनी तो प्रारभ हो गयी, तथापि एलिज़ाबेथ-युग की उच्च भावनात्मकता और आध्यात्मिक उत्साह की पुनः प्राप्ति न हो सकी। उनकी दृष्टि में भावातिरेक उतना ही अस्वाभाविक था जितना पुनस्सस्थापन-कालीन नैतिक अनाचार। भावातिरेक के भय के कारण ही उनमे एक प्रकार की कठोर उदासीनता का भाव आ गया। सदाचार की प्रशंसा तो की जाती थी और उसका उपदेश भी दिया जाता था परंतु धर्मोपदेश में भी गंभीरता के प्रदर्शन को अत्यंत कुरुचिपूर्ण एवं "उत्साह" की भावना को अत्यंत भयप्रद माना जाता था। युग का आदर्श बन गया सद्बुद्धि और सद्बुद्धि का आशय था विवेकपूर्ण एव लाभदायक

वस्तुओं में रुचि तथा उन समस्त वस्तुओं से घृणा जो अतिरंजित, रहस्यपूर्ण और काल्पनिक हों। यह बात धार्मिक क्षेत्र मे प्रत्यक्ष है जिसमे प्रमुख सिद्धात थे बौद्धिकता और उपयोगिता। अठारहवी शताब्दी के प्रारंभ से लेकर १७५१ में बोलिंगब्रुक की मृत्यु तक सारे इंग्लैण्ड को उद्वेलित कर देने वाले धार्मिक विवाद में शुद्ध प्राकृतिक धर्म के समर्थको ने मसीहा द्वारा दिव्य तत्त्व के प्रकाशन के सिद्धान्त तथा चामत्कारिकता को निरंतर अपने आक्रमण का लक्ष्य बनाये रखा। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि ईसाई धर्म के कट्टर पंथी समर्थक स्वयं भी तार्किकता एवं बुद्धिवादी भावना से उतने ही पूर्ण थे जितने उनके विरोधी। दोनो दलों की समान धारणा यह थी कि तर्क और युक्ति सर्व-प्रधान है। युग के महान्तम उपदेशक श्रोताओं की तर्क बुद्धि एवं सद्विवेक के जाग्रत करने का प्रयत्न करते थे। उनका उद्देश्य लोगो की सुषुप्त आत्मा को भावनाओं के माध्यम से जगाना नही बल्कि उनकी प्रज्ञा को वश मे करना था। सामान्य रूप से, उनकी दृष्टि मे धर्म कुशल पुलिस-व्यवस्था की भाँति ऐसी वस्तु था जो समाज के कल्याण के लिए आवश्यक थी, न कि प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को संचालित करने वाली शक्ति। वेस्ली के 'इवेन्जेलिकल' पुनरुत्थान का प्रारंभ होने तक अठारहवी शताब्दी मे जितनी धर्मशास्त्रीय रचनाएँ लिखी गयी उन सबकी विशेषता यही बुद्धिवादी एव उपयोगिता-प्रधान प्रवृत्ति है। यही प्रवृत्ति इस युग के साहित्य की भी विशेषता है जिसमे ऐसी ही उदासीनता एवं भावो की न्यूनता तथा विचारो मे स्थूलता व अभिव्यक्ति मे औपचारिकता की ओर रुझान के दर्शन होते है। यह साहित्य बुद्धि का (यद्यपि ऐसी बुद्धि का जो ऊपरी धरातल के ज्यादा नीचे शायद ही कभी जाती है), वाक्पटुता का और कल्पना का साहित्य है; मनोवेग, भावना, अथवा सर्जनात्मक शक्ति का साहित्य नही, तथा इसमे शुद्धता एव रमणीकता के लिए फैले हुए प्रबल उन्माद के लिए स्वाभाविकता और सरलता की बलि दे दी गयी। यह बात कविता तक के विषय में भी सत्य है जिसने "शहर" (अर्थात् लदन) की सकुचित दुनिया की रुचियों का अतिक्रमण शायद ही कभी किया हो। लोगो का दृष्टिकोण सामान्यतः इसी दुनिया की सीमाओ में बद्ध होकर रह गया। इस कविता का स्वागत काफ़ी हाउसों व ड्राइंग-रूमो में ही हो सकता था, इसलिए इसमे प्रचलित राजनीति और विवादों को ही स्थान मिला। ऐसी कविता चाहे जितनी चतुरतापूर्ण हो, न्यूनाधिक रूप से उसका क्षणिक होना आवश्यक था; अनिवार्यतः इसमें उस गहराई एवं मूल वस्तुओं पर उस अधिकार का अभाव था जो साहित्य को स्थायित्व प्रदान करती है। जहाँ

तक शैली के परिष्कार का संबंध है बहुधा उसका परिणाम होता था आडंबरपूर्ण कृत्रिमता एव रूक्ष परंपरा और रूढि ।

पोप-युग को कभी 'क्लासिक' युग और कभी अंग्रेजी साहित्य का 'आगस्टन" युग कहा जाता है।[1] इन दोनों नामो मे से एक का भी अनुमोदन नही किया जा सकता, परंतु वे इतने प्रचलित है कि उनके उस अर्थ को स्पष्ट कर देना ठीक होगा जिसमे उनका प्रयोग होना चाहिए। "क्लासिक" विशेषण का प्रथम आशय यह है कि इस युग के कवि और आलोचक प्राचीन यूरोपीय लेखकों की रचनाओ (वास्तव में लैटिन लेखको की रचनाओं) को अपने लिए सर्वश्रेष्ठ आदर्श ग्रंथ तथा साहित्यिक रुचि का उच्चतम मापदण्ड मानते थे। इसका दूसरा आशय यह है इन लैटिन लेखकों की भाँति वे व्यक्तिगत प्रतिभा के निर्देशन एव प्रेरणा मे कम परंतु प्राचीन साहित्य द्वारा बलपूर्वक लादे गये नियमो व नियत्रणो में अधिक विश्वास करते थे। जब १७०६ में वाल्श ने पोप को लिखा कि "समस्त भाषाओं के आधुनिक कवियों मे सर्वोत्तम वही है जिन्होंने प्राचीन लेखकों की पूरी नकल की है" तो वह संक्षेप में 'क्लासिक' काव्य के सिद्धान्त को ही व्यक्त कर रहा था। पोप ने स्वय भी इस सिद्धांत को अपने 'एसे ऑव क्रिटिसिज्म' की इन सुप्रसिद्ध पक्तियो मे दुहराया है—

'कविता देवी के अश्व को एड़ लगाने की अपेक्षा उसका मार्ग-निर्देशन करना अधिक अपेक्षित है; उसके आवेश पर अंकुश लगाना चाहिए, न कि उसके वेग को बढाना। अन्य अच्छे घोड़ों की भाँति यह उडन-घोड़ा भी अपनी सच्ची प्रतिभा तभी दिखलाता है जब इसकी चाल को नियत्रित रखा जाय। प्राचीन काल मे जिन नियमो की खोज की गयी थी, वे कल्पित नियम नही थे—वे अब भी प्रकृति के ही समान है यद्यपि यह प्रकृति का व्यवस्थित रूप है। स्वतंत्रता की भाँति प्रकृति पर भी उन्ही नियमो का बधन रहता है जिन्हें पहले स्वयं उसी ने बनाया था।... अतएव प्राचीन नियमों का उचित सम्मान करना सीखो, उनका अनुकरण करना ही प्रकृति का अनुकरण करना है।"[2]

१. ये दोनों नाम जरा व्यापक रूप से भी प्रयुक्त किये जाते हैं जिससे पोप-युग के साथ-साथ ड्राइडेन-युग भी उनके अन्तर्गत आ जाता है, अर्थात् मोटे तौर से १६६० से १७४५ तक का पूरा समय।—लेखक

२. पोप की पंक्तियाँ दोहा-छंद में हैं। यहाँ सुविधा के विचार से ही उनका अनुवाद गद्य में किया गया है (अगला पृष्ठ देखें)।—अनु०

दूसरा विशेषण 'आगस्टन' प्रारंभ में प्रशंसा का द्योतक था क्योकि जो लोग इसका व्यवहार करते थे उनका विश्वास था कि जैसे आगस्टन-युग लैटिन साहित्य का स्वर्ण-काल था, उसी प्रकार पोप-युग अंग्रेजी-साहित्य का स्वर्ण-काल था। क्योकि अब हमारा मत ऐसा नही है इसलिए इस शब्द का मूल अर्थ लुप्त हो गया है। परंतु हम अब भी इसे एक सुविधाजनक शब्द के रूप में प्रयोग कर सकते है, क्योंकि अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के अंग्रेजी साहित्य और वर्जिल व हॉरेस के समय के लैटिन साहित्य के बीच जो समानता है वह इस शब्द के द्वारा प्रकट हो जाती है। दोनों ही युगो मे लेखक अधिकतर शक्तिशाली सरक्षकों पर निर्भर थे। दोनो मे आलोचनात्मक भावना का प्राधान्य था, तथा दोनो में एक पूर्णरूपेण कृत्रिम समाज ने जिस साहित्य की सृष्टि की वह स्वच्छद रचनात्मक प्रयास एव प्रेरणा का साहित्य नही है, बल्कि उसकी कला अत्यत स्पष्ट, असहज और अस्वाभाविक है।

५९. 'क्लासिकल' संप्रदाय की कविता की विशेषताएँ--अठारहवी शताब्दी में अग्रेजी काव्य की परम्परा--आगस्टनों व उनके परवर्ती अनुयायियो के साहित्य की प्रमख धारा तथा उनके प्रभाव के विरुद्ध उत्पन्न प्रतिक्रिया की विभिन्न धाराएँ दोनो ही--को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम 'क्लासिकल' संप्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ साफ-साफ समझ ले। यद्यपि निम्नलिखित साराश में कुछ न कुछ पुनरावृत्ति होना अवश्यभावी है, तथापि विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए उसको अनुचित न माना जायगा।

"Tis more to guide than spur the Muse's steed,
Restrain his fury, than provoke his speed;
The winged courser, like a gen'rous horse,
Shows most true mettle when you check his course.
Those Rules of old discover'd, not devis'd,
Are Nature still, but Nature methodiz'd;
Nature, like liberty, is but restrain'd,
By the same laws which first herself ordain'd.
Learn hence for ancient rules a just esteem,
To copy Nature is to copy them."

१. जैसा हम कह चुके है, 'क्लासिकल' काव्य मुख्य रूप से जीवन की ऊपरी धरातल तक ही सीमित रहनेवाली बुद्धि की सृष्टि है। भावना एवं कल्पना की दृष्टि से उसकी अपूर्णता स्पष्ट है। साधारणतया वह उपदेशात्मक और व्यंगात्मक है—अन्य शब्दों मे वह तर्क एवं आलोचना, राजनीति और प्रसिद्ध व्यक्तियों का काव्य है।

२. यह प्रायः पूर्णरूपेण एक 'नगर' काव्य है जो सस्कृति के महान् केन्द्रों के शिष्ट समाज की रुचियो पर आधारित है। इसमें जीवन के निम्न पक्षो की उपेक्षा हुई है तथा इससे प्रकृति , दृश्यचित्रों अथवा ग्रामीण जनों और वस्तुओं के प्रति किसी वास्तविक प्रेम का पता नही चलता।

३. इसमें उन सभी तत्वों का प्रायः पूर्ण अभाव है जिन्हें हम कुल मिलाकर 'रोमाण्टिक' के नाम से पुकारते है, यद्यपि यह नाम बहुत स्पष्ट नही है। पोप-युग में भावनाओं को बड़े संदेह की दृष्टि से देखा जाता था, इसी कारण धार्मिक विषयो में किसी भी प्रकार के 'उत्साह' को वे लोग घृणास्पद समझते थे। इसके साथ-साथ साहित्य मे प्रत्येक 'रोमाण्टिक' वस्तु से घृणा होना स्वाभाविक ही था। 'रोमाण्टिकता' और उत्साह दोनों ही उस युग के विवेक एवं सद्बुद्धि संबधी सभी विचारो के विरुद्ध थे। आलोचना के क्षेत्र में लोगों की रुचि हमारे प्राचीन साहित्य के आचार्यो, जैसे चॉसर, स्पेसर और यहाँ तक कि शेक्सपियर तक के विरुद्ध थी और उन्हे असंस्कृत मानती थी। इसका शत्रुभाव उन बातो से और भी अधिक था जो मध्य युग से सबधित थी जो कि क्षात्रधर्म के बाहुल्य, कल्पनात्मक आदर्शवाद तथा प्रबल धार्मिक विश्वास का युग था। 'रोमाण्टिक ' काव्य और कला के प्रति आलोचकों का यह विद्वेष तत्कालीन काव्य में प्रत्येक स्थल पर परिलक्षित है।

४. शैली के प्रति अत्यधिक ध्यान तथा बाह्य परिष्कार के प्रेम के कारण एक अत्यत कृत्रिम तथा रूढ़िवादी शैली विकसित हो गयी जो शीघ्र ही एक परम्परागत काव्यभाषा के रूप मे रूढ़ हो गयी। सभी तरह की 'क्लासिकल' कशीदाकारी का मौके-बेमौके हमेशा इतना अधिक प्रयोग किया गया कि वह फटकर तार-तार हो गयी और निरंतर प्रयोग के कारण हास्यास्पद बन गयी। परिष्कार के संबध में लोगो में एक ऐसे असत्य विचार का विकास हो गया जिसके आगे सादगी और स्वाभाविकता लुप्त हो गयी तथा वर्ण्य-विषय अत्यन्त साधारण कोटि का होने पर भी सीधी-सादी भाषा के स्थान पर आडंबरपूर्ण शब्दजाल एवं वाग्विस्तार का

प्रयोग होने लगा। उदाहरणार्थ यदि कोई क्लासिक कवि किसी पुरानी गाथा की 'अपरिष्कृत' सामग्री को पुनः गढने का बीड़ा उठाता तो वह सीधे-सादे "ईश्वर उसकी आत्मा को शाति दे"[1] के स्थान पर उसका अनुवाद "शाश्वत आशीषे उसकी छाया का अनुगमन करे"[2] जैसी रूढ़ एव कृत्रिम शैली में कर देता और ऐसा करते समय वह ईमानदारीपूर्वक यही सोचता कि इस प्रकार वह बोलचाल की भाषा के एक अत्यन्त सामान्य व अशिष्ट प्रयोग को सुन्दर काव्य का रूप दे रहा था। यह उस "आडबरपूर्ण तथा निरर्थक शब्दजाल" का एक अच्छा उदाहरण है जिसका दृढ़ विरोध वर्ड्सवर्थ द्वारा शीघ्र ही होनेवाला था।

५. क्लासिक कवियो का विश्वास था कि गभीर प्रकार की कविता केवल एक ही छंद में संभव है और वह है तुकात दोहा छद। अतएव तुकात दोहा छद की प्रधानता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। थोड़ी ही देर विचार करने से स्पष्ट हो जायगा कि उस समय जिस प्रकार की कविता लोकप्रिय थी उसके लिए यह छद अपनी सामसिकता के कारण अत्यत उपयुक्त था। परन्तु यह भी उतना ही स्पष्ट होगा कि दीर्घकाल तक प्रयुक्त होने पर इसका नीरस होना अवश्यंभावी था, तथा अत्यत सकुचित और कठोर होने के कारण इसे ऊँचे भावावेग या शक्तिशाली कल्पना की अभिव्यक्ति का माध्यम भी नही बनाया जा सकता था।

६०. **पोप का जीवन-वृत्त**—इस क्लासिक सप्रदाय के महानतम आचार्य अलेक्जैण्डर पोप का जन्म लदन में १६८८ में हुआ था जो गौरवपूर्ण क्राति तथा बन्यन के देहांत का भी वर्ष है। उसके पिता, जो एक सम्पन्न वस्त्र ('लिनेन')-व्यवसायी थे, रोमन कैथलिक थे। अतएव अपने धर्म के कारण पोप को पब्लिक स्कूलो और विश्वविद्यालयों मे स्थान न मिल सका। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपना अधिकाश ज्ञान बड़े अव्यवस्थित रूप मे प्राप्त किया तथा उसका अध्ययन विस्तृत होते हुए भी उसके ज्ञान मे शुद्धता कभी नही आ पायी। उसके साहित्य मे स्वस्थ ज्ञान और मानसिक अनुशासन दोनो का ही अभाव पाया जाता है। छुटपन से ही वह बड़ी आसाधारण प्रतिभा वाला था। (अपने ही प्रसिद्ध शब्दों मे वह "तुतलाता भी छदो मे ही था, क्योकि छद स्वाभाविक रूप से निकलते थे")।[3]

१. "God rest his soul"
२. "Eternal blessings on his shade attend."
३. "Lisped in numbers, for the numbers came"

उसने अपनी 'पैस्टोरल्स' १७०९ में प्रकाशित की तथा 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' १७११ में। वह प्रारंभ में अपने माता-पिता के साथ विडसर फॉरेस्ट के छोर पर बिनफील्ड में और फिर होमर के अनुवाद की समाप्ति तक चिसविक में रहा। इस अनुवाद की आर्थिक सफलता से उत्साहित हो उसने १७१९ मे ट्विकेनहम में एक मकान खरीद लिया। यही उसने अपने जीवन का शेष भाग बिताया और यहीं १७४४ मे उसकी मृत्यु हुई। बहुत दिनो तक वह अपने समय का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक माना जाता रहा। उसके प्रशंसक मित्रो ने अत्यधिक प्रशसा करके उसके मस्तिष्क को दूषित कर दिया। इसके अतिरिक्त उसमें जो द्वेष भावना थी, वह यदि न होती तो जितना सम्मान उसे वास्तव में प्राप्त हुआ उससे कही अधिक और कही व्यापक सम्मान उसे प्राप्त होता क्योकि उसका यह द्वेषपूर्ण स्वभाव सदैव मित्रों को भी शत्रु बना देता था। अपने समकालीनों के साथ उसके संबंधो का इतिहास तुच्छ ईर्ष्याओं और झगड़ों का अत्यन्त जटिल इतिहास है। इतना सब होते हुए भी हमें अपना निर्णय देते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि उसकी शीघ्र ही कुपित हो जाने की आदत तथा झगड़ालूपन दोनो अधिकांश मे उसकी दीर्घकालीन अस्वस्थता के ही परिणाम थे। जैसा उसने 'एपिसिल टु डॉक्टर आर्बथ्नट' मे लिखा है उसका संपूर्ण जीवन एक "लम्बी व्याधि" के समान था। परन्तु अपनी बीमारी और शारीरिक अक्षमता के बावजूद उसने लगभग अतिम श्वास तक लगातार कार्य किया, तथा उसका साहित्य-प्रेम भी बडा सच्चा और शुद्ध था। उसका यह साहित्य-प्रेम और भी अधिक उल्लेखनीय है क्योकि उस समय इसका अत्यन्त अभाव था।

६१. पोप की रचनाएँ--पोप का साहित्यिक जीवन स्वाभाविक रूप से तीन कालों मे विभक्त हो जाता है अर्थात् मौलिक रचनाओं के आदि और उत्तरकाल तथा इन दोनो को पृथक करनेवाला अनुवाद-रचना का काल (१७१५-२५)।

१. १७१५ के पहलेवाले काल मे बहुत सी विविध कविताएँ लिखी गयीं जिनमे सबसे महत्त्वपूर्ण है--'फोर पास्टोरल्स', वसत, ग्रीष्म, शिशिर एव शीत ऋतुओं पर लिखी गयी ये छोटी-छोटी कविताएँ वर्जिल की शैली पर आधारित है तथा पशुचारण -सबधी काव्य की सबसे कृत्रिम शैली में लिखी हुई है (देखो § २५)। 'दि मसाया' ('मसीहा') जो बाइबिल की 'इजाया' पुस्तक के मसीहा से संबधित अशों का पद्यात्मक अनुवाद है तथा वर्जिल के चौथे 'एक्लॉग' के अनुकरण पर लिखा गया है। मूल रचना की श्रेष्ठ प्रभावोत्पादकता पोप की कृत्रिम शैली की मिथ्या चमक-दमक में बिल्कुल लुप्त हो गयी हैं। 'बिण्डसर फॉरेस्ट' के लिए

उसे निस्संदेह डेन्हम की 'कूपर्स हिल' से ही प्रेरणा प्राप्त हुई। प्रकृति के वास्तविक सौदर्य के प्रति क्लासिक संप्रदाय की उपेक्षा इसमे स्पष्ट दिखाई देती है। पोप के दृश्य-चित्र वर्णित वस्तु के किसी व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित न होकर यूनानी और लैटिन कवियों की नकल मात्र है। 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' तो इक्कीस वर्ष के व्यक्ति के लिए बड़ी ही असाधारण कृति है। इसके विधान में कोई मौलिकता नही है क्योकि यह हॉरेस की 'आर्स पोएटिका' तथा ब्वालो की 'लार्त पोएतिक' पर आधारित है। न इसमे कोई नया या स्वतन्त्र विचार ही है, क्योंकि जैसा लेडी मेरी वॉर्टले मॉटेग्यू ने कुछ निर्दयता-पूर्वक कहा है, यह सब "चुराया हुआ" है। परन्तु पोप ने उस समय के अधिकारी आलोचकों, विशेषकर फ्रांसीसी आलोचकों को ध्यान-पूर्वक पढ़ा था और उसने इन सबसे जो विचार एकत्र किये थे उन्हे ऐसे पद्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है जो आश्चर्यजनक रूप से सामासिक, गूढ़ अर्थ से भरा हुआ तथा उद्धरण योग्य है। 'दि रेप ऑव दि लॉक' को तो निस्सकोच उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता है। इसका आधार रोमन कैथलिक समाज में घटी हुई एक घटना थी। उस समाज मे पोप के बहुत से मित्र थे। लार्ड पीटर के नाम के किसी व्यक्ति ने अराबेला फर्मर नामक एक युवती सुन्दरी (इस कविता की बेलिण्डा) के सर से बालों का एक गुच्छा काट लिया। इस मजाक के कारण दोनो परिवारों में झगडा हो गया तथा जॉन कैरील ने जो दोनों परिवारो का मित्र था, पोप से प्रार्थना की कि वह सारी बात को परिहास का रूप देकर झगड़े को शांत करा दे। इसी पर 'दि रेप ऑव दि लॉक' की रचना हुई। पोप ने इस रचना की परिभाषा देते हुए इसे 'हीरोई-कॉमिकल' (अर्थात् 'वीर रसात्मक हास्यकृति') कहा है। परतु इस 'मॉक इपिक' (अर्थात् 'छद्म महाकाव्य') कहना अधिक ठीक होगा। बटलर के 'हुडिब्रस' में जिस असंस्कृत, भोडे पद्य का प्रयोग किया गया है वह उसके हास्यात्मक विषय के लिए सर्वथा उपयुक्त था। इसके विपरीत इस रचना मे छोटी-छोटी नगण्य घटनाओं का वर्णन ऐसी गंभीर और गौरवपूर्ण शैली में किया गया है जिसका महाकाव्य में ही प्रयुक्त होना उचित है। विषय-वस्तु और उसके वर्णन मे यह असंगति, जिसका कवि ने जानबूझकर प्रयोग किया और आदि से अन्त तक निभाया है, इस प्रकार की 'पैरोडी' ('विद्रूप रचना') की जान है। बिल्कुल महाकाव्य की शैली में कथानक की आयोजना, अलौकिक जीवों का प्रयोग जिसे प्रत्येक महाकाव्य का आवश्यक अंग समझा जाता था तथा उन अनेक अंशों के कारण जिनमें महान् महाकाव्यों के दृश्यों एवं वाक्यांशो तक ही परिहासपूर्ण

नकल की जाती है, इसके प्रभाव मे और भी वृद्धि हो जाती है। इस कविता में इन सब बातो का निर्वाह ऐसे प्रशसनीय ढंग से हुआ है कि 'दि रेप ऑव दि लॉक' अग्रेजी साहित्य मे अपने ढंग की सर्वोत्तम रचना है। साथ ही इसकी सामान्य वाक् चपलता तथा स्त्रियो के प्रति इसके सदेहात्मक और द्वेषपूर्ण दृष्टिकोण से हमें पोप के युग की उस कठोरता का भी कुछ पता चलता है जिसे उस युग की थोथी नारी-आराधना ढँकने मे सफल न हो सकी।

२. अपने दूसरे रचना काल में पोप ने 'ईलियड' और 'अ डिसे' का अनुवाद प्रस्तुत किया। इनमें से पहला तो उसने अकेले लिखा था परन्तु दूसरे मे औरों की काफी मदद मिली। दोनों भाग एक साथ 'होमर' नाम से अधिक प्रसिद्ध है। पोप का 'होमर' सदैव पाठकों के रसास्वादन एव प्रशसा का विषय रहा है, परन्तु उसमें होमर से कही अधिक पोप के दर्शन होते है। पोप मे होमर का अनुवाद करने लायक पाण्डित्य का अभाव था और इस कारण उसे पिछले अनुवादो पर बहुत अधिक निर्भर रहना पडा। परन्तु यह कठिनाई बहुत छोटी थी। वास्तविक कठिनाई तो इस बात मे थी कि न पोप और न उसके युग के लोग ही होमर या होमरीय दुनिया की भावना को समझ सकते थे। इसी कारण उनके लिए उस भावना को आत्मसात् करना या उससे एकाकार होना भी सभव न था। परन्तु पोप के पाठक यूनानी कविताओ का कोई पाण्डित्यपूर्ण या सच्चा अनुवाद नही चाहते थे बल्कि उन्हे ऐसे अनुवाद की अपेक्षा थी जो उनके युग की रुचियो के अनुकूल हो और ड्राइंग-रूम में बैठकर पढ़ा जा सके। पोप ने उनकी यह माँग पूरी कर दी। जैसा गिबन ने बाद मे कहा है, उसके अनुवाद मे मूल के प्रति निष्ठा को छोड़कर अन्य समस्त गुण है। वास्तव मे तो यह होमर की रचना (अर्थात् उसका अनुवाद) नही बल्कि अठारहवी शताब्दी की एक अत्यन्त शानदार और महत्त्वपूर्ण रचना है।

३. 'होमर' के प्रकाशन के उपरान्त पोप ने अपने को लगभग पूरे तौर से व्यंग्यात्मक और उपदेशात्मक काव्य तक ही सीमित रखा। इस तृतीय काल की प्रमुख रचनाएँ है 'सेटायर्स ऐण्ड एपिसिरस ऑव हॉरेस इमीटेटेड' ('हॉरेस के व्यग्यो एव पत्रो के अनुकरण')। 'एपिसिल टु डॉक्टर ऑर्बथ्नट का जो इनका 'प्रोलॉग' (आमुख) है, विशेष महत्त्व है क्योकि वह पोप की समस्त रचनाओ मे सबसे अधिक और सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत है। ऐटिकस नाम से उसने एडिसन का जो चरित्र-चित्रण किया है वह इसके सुविख्यात अशों में से है। 'दि डन्सियड' में पोप ने अपने समय के 'डंसेज' (अर्थात् 'मूर्खो')-निम्नकोटि के कवियो, अपनी विद्वत्ता

के प्रदर्शकों तथा आडम्बरपूर्ण आलोचकों पर व्यंग्य किया है। यह एक लम्बी और विस्तार-पूर्ण रचना है। इसमें जिस महाकाव्य-विधान का व्यवहार किया गया है वह स्पष्ट ही ड्राइडेन की 'मैक्फ्लेक्नो' द्वारा सुझाया हुआ है, परन्तु इसकी वास्तविक प्रेरणा सभी तरह के लोगों से हुए पोप के झगडों मे ढूँढनी चाहिए। यद्यपि इसमें कवि ने अत्यधिक चातुर्य प्रदर्शित किया है तथापि इसमें जिन मूर्खों की आलोचना की गयी है उनकी पूर्ण अप्रसिद्धि के कारण आधुनिक पाठक इसका बहुत कम आनन्द उठा पाता है। 'दि एसे ऑन मैन' की योजना बड़ी विशाल थी लेकिन वह कभी पूरी-पूरी कार्यान्वित न हो सकी। पोप इसके केवल चार ही भाग लिख पाया। इसमे विश्व के नैतिक शासन का पक्षपोषण किया गया है और इसमें जो कुछ भी भौतिक या नैतिक बुराई पायी जाती है उसे इस आशावादी सिद्धान्त के आधार पर समझाने की चेष्टा की गयी है कि "जो कुछ भी है, वह ठीक है।" दुर्भाग्यवश पोप कोई दार्शनिक न था; न तो उसमे दर्शन की ओर कोई स्वाभाविक झुकाव ही था और न इसके लिए उसको कोई प्रशिक्षण ही प्राप्त हुआ था। केवल दूसरों के प्रभाव के कारण ही, विशेषकर अपने मित्र लार्ड बोलिंगब्रुक के प्रभाव के कारण, ईश्वर में तो विश्वास करता था परन्तु किसी धर्म या चर्च में नही, वह दर्शन से खिल-वाड करने की ओर प्रेरित हुआ। यह तो निश्चित ही है कि उसने उन विशाल और कठिन प्रश्नो पर स्वय कभी कोई विचार नही किया था जिनको हल करने का बीडा उसने मूर्खतापूर्वक उठाया। परिणामस्वरूप यह 'एसे' अत्यन्त अस्पष्ट और परस्पर विरोधी बातों से भरा हुआ है। इस कारण आजकल विद्वत्तापूर्ण निबंध की भाँति इसका प्रयोग करने का कोई स्वप्न मे भी विचार न करेगा। परन्तु इसमे ऐसे अनेक स्थल है जो अपने शैली-सौदर्य एवं ओज के कारण ठीक ही यथेष्ट प्रसिद्ध है और अभी तक बहुधा उद्धृत किये जाते है।

पोप के गुण-दोष क्लासिकल संप्रदाय के गुण-दोष है। हम उसकी गणना महान् कवियो मे नही कर सकते। उसमे न तो वह कल्पना-शक्ति थी और न भावना की वह गहराई ही जिसके बिना महान् कविता की रचना असंभव है। फिर वह कोई महान् विचारक भी न था। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण वही संकुचित और छिछला दृष्टिकोण था जो उसके युग का इतना प्रतिनिधि लक्षण था। परन्तु वह बुद्धि के उस विशिष्ट रूप की मूर्ति था जिसे उस समय 'विट' (अर्थात् वाक्चातुर्य) कहते थे और जिसका उस युग मे अनुशीलन किया जाता था जो प्रशंसा का विषय था। इसके अतिरिक्त अपनी सीमाओ के भीतर वह एक आश्चर्यजनक रूप से

चतुर एवं निपुण साहित्य-शिल्पी भी था तथा वह सुव्यवस्थित, सुसंयत एव अर्थ वैपरीत्य और छोटे-छोटे परन्तु गंभीर अर्थ से पूर्ण वाक्यों से सम्पन्न शैली जो 'क्लासिकल' कविता का आदर्श थी, उसके हाथो मे पूर्णता को प्राप्त हुई। अंग्रेजी कवियों में शेक्सपियर के बाद सबसे अधिक उद्धृत किया जानेवाला कवि वही है तथा इस प्रकार की सुविदित पक्तियाँ (जो बिना किसी चुनाव के जैसे आती गयीं वैसे ही ले ली गयी है) यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि सूक्ष्म परन्तु अर्थपूर्ण और उपयुक्त पदावली रचने की कैसी असाधारण शक्ति उसमें थी—

"Who shall decide when Doctors disagree ?"
(जब विद्वान् असहमत हों तब कौन करेगा निर्णय ?)
"A little learning is a dangerous thing."
(अल्पज्ञान होता सदैव अनर्थकारी।)
"And fools rush in where angels fear to tread. "
(देवदूत भी डरे जहाँ पग रखने में,
मूर्ख न कुछ भय खायँ वहाँ घुस पडने में।)
"To err is human, to forgive divine. "
(त्रुटि है मानव-सुलभ, क्षमा लेकिन देवोपम।)
"The proper study of mankind is man. "
(मानवता के अध्ययन का मानव ही उचित विषय।)
"The Right Divine of kings to govern wrong."
(अधिकार कुशासन करने का राजाओं को है दैवी।)
"A wit's a feather, and a chief a rod. '
An honest man's the noblest work of God "
(वाक्चतुर है पंख और मुखिया है दण्ड समान,
ईश्वर ही सर्वोत्तम कृति वह जिसमे है ईमान।)

इसके अतिरिक्त वह 'क्लासिकल दोहा-छंद का सर्वोत्कृष्ट अधिकारी लेखक भी है। ड्राइडेन ने दोहा-छंद में जो स्वछन्दता बरती थी, पोप ने उसे दूर कर दिया तथा अर्थ को कठोरतापूर्वक दोहे की दो पंक्तियों में ही सीमित रखा। पोप द्वारा पूर्णता को पहुँचाये गये आदर्श का अनुसरण उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारभ-काल तक उन सभी कवियो ने बड़ी भक्तिपूर्वक किया जिन्होने दोहा छंद का प्रयोग किया।

६२. **पोप युग के अन्य कवि**—यहाँ मै पोप की पीढ़ी तथा उसके संप्रदाय के अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण कवियो का ही नामोल्लेख करूँगा। कई ऐसे युवा लेखक भी थे जिनका काव्य बड़ा ही चित्ताकर्षक है। यद्यपि उनकी रचना का कम से कम कुछ भाग तो पोप युग की सीमाओ के भीतर ही पड़ता है, तथापि उनका विचार आगे के एक अध्याय के लिए स्थगित रखा जायगा क्योकि वे इस बात के द्योतक है कि रुचि में परिवर्तन होना आरंभ हो गया था।

कालक्रम की दृष्टि से मैथ्यू प्रायर (१६६४-१७२१) पोप से भी पहले आता है। सर्वप्रथम तेईस वर्ष की अवस्था मे उसे ख्याति प्राप्त हुई जब उसने चार्ल्स-मॉण्टेग्यू, जो बाद में अर्ल ऑव हेलीफैक्स हुआ, के सहयोग से ड्राइडेन की कविता 'दि हाइण्ड ऐण्ड दि पैन्थर' की एक पैरोडी 'दि टाउन ऐण्ड कण्ट्री माउस' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी। बाद में उसने 'हुडिब्रस' के अनुकरण पर 'अल्मा' नामक एक रचना तथा 'सालोमन' शीर्षक एक लंबी और अत्यन्त गंभीर कविता लिखी। परंतु उसकी रचनाओं में केवल उसकी हास्य-प्रधान कविताएँ ही आजकल पढ़ी जाती है जिनमें औचित्य तो सदैव बहुत अधिक नही है परंतु जो सामान्यतः उल्लासपूर्ण और ललित है। प्रायर से कहीं अधिक विख्यात है जॉन गे (१६८५-१७३२) जो स्विफ्ट और पोप का घनिष्ट मित्र था। उसकी रचनाएँ निम्नलिखित है—'फ़ेबुल्स' जिन्हे अब भी काव्य-संग्रहो मे स्थान दिया जाता है, पशु-चारण संबंधी छः कविताओं की सीरीज़ 'दि शेफ़र्डस वीक' जिसकी रचना प्रहसन के रूप मे होने पर भी जो ग्रामीण जीवन का पोप के कृत्रिमतापूर्ण पशु-चारण काव्य से कहीं अधिक यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है; 'ट्रीविया' जिसमे लन्दन की सड़कों का हास्यपूर्ण वर्णन है; तथा उस समय अत्यधिक लोकप्रिय इटालियन ऑपेरा (संगीत-नाट्य) का मजाक उड़ाने के लिए लिखा गया 'दि बेगर्स ऑपेरा' जिसकी सफलता ने लन्दन में तूफान मचा दिया। एडवर्ड यग (१६८३-१७६५) चरित्र और प्रतिभा में गे से अत्यत भिन्न था और बड़ा ही नीच एव घृणास्पद व्यक्ति था। उसने कई विभिन्न शैलियो में बहुत अधिक साहित्य रचा जिसमे पोप की शैली मे लिखे व्यंग्य तथा दुखांत नाटक भी शामिल है। परंतु 'नाइट थॉट्स' के लेखक के रूप में उसको जो लोकप्रियता बहुत दिनों तक प्राप्त रही वह उसकी वास्तविक योग्यता के हिसाब से कहीं अधिक थी। यह एक विषादपूर्ण एव अहितकर कविता है तथा पाठ्य-पुस्तक जैसी नैतिक शिक्षाओं से भरी हुई है जो बड़ी ही अलंकृत तथा आडंबरपूर्ण शैली में व्यक्त की गयी है; परंतु कहीं-कही पर ऐसे स्थल अवश्य है जिनकी प्रभावो-

त्पादकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसके विषय में एक बात ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वह यह कि इसी "क़ब्रगाह" संप्रदाय की एक अन्य विषाद-पूर्ण कविता 'दि ग्रेव' की भाँति, जो रॉबर्ट ब्लेयर (१६९९-१७४६) नामक एक स्काटिश कवि की रचना है, यह भी उस समय प्रचलित क्लासिक दोहा-छद में नहीं बल्कि अतुकात छंद में लिखी गयी है। विलियम सॉमरविल (१६७५-१७४२) की वर्णनात्मक कविता 'दि चेज़' भी इसी छंद का एक अन्य प्रारंभिक उदाहरण है। सर सैमुएल गार्थ (१६६१-१७१९) की 'दि डिस्पेन्सरी', जिसमें तत्कालीन 'सोसायटी ऑव एपॉथिकैरीज़' ('अत्तार-समाज') पर व्यग्य किया गया है, अब हमारे लिए महत्त्वहीन है, परंतु उस युग की रुचि के उदाहरणस्वरूप इसका नामोल्लेख किया जा सकता है।

अध्याय १४

पोप-युग

गद्य एवं नाट्य-साहित्य

६३. डिफ़ो––पोप-युग के प्रधान गद्य-लेखकों का काल-क्रमानुसार विचार करने पर हमें सबसे पहला नाम डेनियल डिफो (१६६१-१७३१) का मिलता है। यह विलक्षण व्यक्ति एक सम्पन्न कसाई का पुत्र था, जो लंदन शहर के बिल्कुल बीच मे अपना व्यापार करता था। उसने 'नॉन-कनफॉर्मिस्ट' चर्च में पादरी बनने के लिए शिक्षा प्राप्त की, परंतु पादरी-जीवन को न अपनाकर उसने व्यावहारिक जीवन अपनाया। अपनी लम्बे और साहसपूर्ण जिदगी के दौरान में वह होज़ियर (मोज़े, बनियान इत्यादि बेचने वाला), टाइल-निर्माता, वैदेशिक व्यापारी, मुद्रक, वालटियर सिपाही, राजा का विश्वासपात्र, न्यूगेट कारावास का बंदी, सरकारी जासूस, राजनीतिक पीड़न से रक्षा करने के हेतु फ़रार, तथा 'पिलोरी'[1] मे एक सहानुभूतिपूर्ण भीड़ का हीरो रहा। जन्मजात पत्रकार और पैम्फलेट-लेखक होने के कारण उसने असंख्य विषयों पर असाधारण निपुणता के साथ बड़े ही प्रभावपूर्ण ढग से लिखा, और यद्यपि उसकी रचनाओं की कोई पूरी सूची कभी तैयार नहीं की गयी तथापि ऐसा कहा जाता है कि उनकी संख्या २५० से भी अधिक है। जनता क्या चाहती है इस विषय मे उसकी बुद्धि बड़ी पैनी थी और बाजार पर नज़र रखते हुए जो भी चीज बिकने की आशा होती थी उसी को वह उठा लेता और

१. काठ का एक यंत्र जिसमें सर और हाथ कसकर अपराधी को सार्वजनिक स्थान में खड़ा कर देते थे और एकत्रित जनता उस पर सड़े फल, मरे हुए जानवर और हर तरह का कूड़ा फेंकती थी। अपराधी बेचारा न तो बैठ सकता था और न किसी प्रकार अपनी रक्षा कर सकता। फलस्वरूप कभी-कभी भीड़ के विनोद में उसकी जान तक चली जाती थी।––अनु०

जब तक जनता की रुचि उसमें बनी रहती तब तक उस पर कुछ न कुछ लिखकर प्रस्तुत कर देता था। साथ ही साथ वह नैतिक और सामाजिक सुधारक होने का भी दावा करता था तथा अपने युग के दोष दूर करना और शिक्षा देना उसका उद्देश्य था। परन्तु साहित्य में उसका महत्त्व मुख्य रूप से उसके कथा-साहित्य के कारण है जो उसके सामान्य-पत्रकारता संबंधी क्रिया-कलाप का ही एक गौण अग था। अनेक वर्षो तक वह ऐसे लोगों की जीवनियाँ तैयार करने मे व्यस्त रहा था जिन्होने किसी न किसी कारणवश जनता का ध्यान आकर्षित किया था। इनमें हाल में मृत विख्यात व्यक्ति भी थे और कुख्यात, दु.साहसी तथा अपराधी भी। ये तथा-कथित जीवनियाँ उसी क्षण तथा उसी क्षण के लिए लिखी गयी थी और इसी कारण किसी व्यवस्थित सगठन या योजना के बिना तथा सत्यासत्य की अधिक परवाह किये बिना ही प्रस्तुत कर दी गयी थी। इस प्रकार साठ वर्ष की अवस्था मे अपने विविधतापूर्ण जीवन के एक नये क्षेत्र में प्रवेश करके उसने गद्य कथा-साहित्य के जिस विशिष्ट रूप का विकास किया उसके लिए उसे केवल इतिहास के ढाँचे को त्याग देना पड़ा (और सब बाते वैसी ही रही)। जैसा उसके एक आलोचक ने लिखा है—"वास्तविक नामों से सबंधित जीवनियो की रचना से काल्पनिक नामो वाली जीवनियों की रचना की ओर लिया गया कदम बहुत छोटा था।" यह कदम उसने 'दि लाइफ ऐण्ड एडवेचर्स ऑव रॉविन्सन क्रूसो' को प्रकाशित करवा लिया जो उन पुस्तको मे से है जिनके विषय मे यह समझा जाता है कि उन्हे प्रत्येक व्यक्ति ने पढा होगा। इस पुस्तक की सफलता इस बात की द्योतक थी कि उसने फ़ायदे की एक नयी राह खोल दी थी और अपनी आदत के अनुसार डिफो ने बड़े ही उद्यम के साथ इस नयी राह से फ़ायदा उठाना शुरू कर दिया। इस प्रकार उसने 'दि मेम्वायर्स ऑव एक कवेलियर', 'कैप्टेन सिगिल्टन', 'मॉल फ्लैण्डर्स', 'कर्नल जैक', तथा 'रॉक्सना' की रचना की। यद्यपि अपने 'जर्नल ऑव दि प्लेग इयर' के बारे मे उसका दावा था कि वह एक चश्मदीद गवाह द्वारा लिखा हुआ यथार्थ वृत्तांत है, और बहुत दिनों तक उसे इसी रूप में स्वीकार भी किया जाता रहा, तथापि वास्तव मे यह एक काल्पनिक रचना है और इसलिए उसे कथा-साहित्य के वर्ग में ही रखना चाहिए। जैसा छद्म इतिहास की इस अद्‌भुत कृति से स्पष्ट है, डिफ़ो ने अपनी काल्पनिक कथाओं के लिए अंत तक यही दावा किया कि वे वास्तविक हैं तथा पाठकों को उनकी यथार्थता का विश्वास दिलाने की भरसक चेष्टा की। इसी कारण उन्हें "काल्पनिक जीवनियाँ" अथवा सर लेस्ली स्टीफ़ेन के शब्दों

में, "सत्य से रहित इतिहास" की संज्ञा देना सबसे उपयुक्त होगा। यह बात महत्त्व-पूर्ण है क्योकि इससे हमें डिफो की विशिष्ट शैली तथा उसकी रचनाओं के प्रतिनिधि गुण को समझने में सहायता मिलती है। उसकी समस्त कथाएँ जीवनी के ही रूप मे लिखी गयी है, तथा उनमे कथा-वस्तु को एक सुव्यवस्थित कथानक के रूप में संगठित करने का कोई प्रयास नही किया गया है। क्योंकि उसका उद्देश्य अपनी काल्पनिक कथाओ को सदैव यथार्थ रूप देना रहता था, इसलिए वे ऐसे ढग से लिखी गयी है मानों यथार्थ जीवन की कथाएँ हो। उनकी शैली बड़ी सीधी-सादी, सरल व व्यावहारिक है जो यथार्थ जीवन की कहानियो के लिए सर्वथा उपयुक्त है, तथा उसमे ऐसी प्रत्येक वस्तु से बचने की चेष्टा की गयी है जिसमे कृत्रिमता का जरा-भी आभास हो। इसी कारण उसमे असाधारण सूक्ष्म यथार्थवाद के दर्शन होते है जिसको उसके कथा-साहित्य का प्रमुख गुण माना गया है। उसकी घरेलू, सरल और बातचीत के ढग की शैली उसके उद्देश्य के लिए बड़ी ही उपयुक्त थी। अग्रेजी उपन्यास के इतिहास मे डिफो के महत्त्व को सभी लोग स्वीकार करते है, यद्यपि इस विषय मे थोडा मतभेद है कि अग्रेजी उपन्यास के विकास मे उसके योगदान का ठीक-ठीक क्या महत्त्व था। अगले एक अध्याय मे जब हम उसकी मृत्यु के थोड़े ही समय उपरात हुई उपन्यास की स्थापना का वर्णन करेगे तब इस प्रश्न पर भी कुछ कहेगे।

६४. **स्विफ्ट**--कालक्रम में डिफो के बाद आता है जॉनथन स्विफ्ट (१६६७-१७४५) जो अपने युग का सबसे शक्तिशाली और सबसे मौलिक प्रतिभावाला लेखक था। उसका जीवन हमारे साहित्यिक इतिहास के सबसे करुण व शोचनीय जीवनियो मे से था। उसका जन्म आयर्लैण्ड में अग्रेज माता-पिता से हुआ था, तथा १६८९ मे वह मूर पार्क, सरे मे सर विलियम टेम्पुल का **गोपनीय** (विश्वस्त) सचिव नियुक्त हुआ। १६९४ में वह बेलफास्ट के निकट किलरूट के गिरजे में पादरी बना दिया गया। दो वर्ष बाद वह मूर पार्क लौट आया, और १६९९ में टेम्पुल की मृत्यु हो जाने पर आयर्लैण्ड मे लैरेकर का 'विकार' (पादरी) बन गया। शीघ्र ही वह राजनीतिक क्षेत्र मे एक महान् शक्ति बन गया, पहले 'ह्विग' दल में और फिर 'टोरी' दल मे। पैम्फलेट-लेखक के रूप मे उसने बड़ी ख्याति प्राप्त की। १७१४ मे उसकी पदोन्नति करके उसे डबलिन के सेण्ट पैट्रिक गिरजे का डीन बना दिया गया। वहाँ उसने आयरिश जनता का ऐसी दृढ़तापूर्वक पक्षपोषण किया कि वे लोग बिल्कुल उसकी पूजा करने लगे। इसी पर एक बार आयर्लैण्ड के लार्ड

लेफ़्टीनेण्ट ने मजाक करते हुए कहा था कि वह आयर्लैण्ड का शासन तो केवल डा० स्विफ़्ट की अनुमति से ही करता था। बहुत वर्षों से उसे दिमाग की ऐसी रहस्यपूर्ण बीमारी के दौरे अक्सर आया करते थे जिसके कारण उसे भयंकर कष्ट-दायक पीड़ा होती थी और उससे भी अधिक भयंकर विषाद उसे जकड़ लेता था। जिस अनर्थ की आशंका उसे बहुत दिनो से थी वह १७३६ मे आ ही गया और उसका दिमाग फ़ेल होने लगा। थोड़ा-थोड़ा करके उसकी स्मरण-शक्ति बिल्कुल लुप्त हो गयी; परंतु इस अटूट विपत्ति में वह कुछ वर्ष तक और जीता रहा जब तक कि स्वयं मृत्यु ने ही उसके ऊपर दया करके उसे मुक्ति नही दे दी। इसमे सदेह नही कि स्विफ्ट के घोर निराशावादी स्वभाव में इस मानसिक व्याधि का कुछ कम हाथ नहीं था, परंतु साथ ही हमे यह भी याद रखना चाहिए कि वह एक अत्यन्त महत्वाकाक्षी व्यक्ति था और उसकी महत्त्वाकाक्षाओ की असफलता ने उसकी आत्मा को कड़ुआहट से भर दिया। एक के बाद एक तीन स्त्रियों से उसके जो संबंध रहे उसका भी उसके जीवन को दुखी बनाने में कुछ हाथ रहा। इनमे सबसे महत्त्वपूर्ण थी ईस्थर जॉनसन अथवा स्टेला, जैसा कि वह उसको पुकारा करता था, जिससे उसकी पहली मुलाकात टेम्पुल के घर पर हुई थी जब वह युवा हो चुका था और स्टेला छोटी-सी बच्ची ही थी। इस प्रेम-कथा के विषय मे अधिक कुछ ज्ञात नही है, और उन दोनों ने कभी गुप्त रूप से विवाह किया था या नही यह इसकी पलेहियों में से है। परन्तु इतना हम जानते हैं कि वह स्टेला के ऊपर अत्य-धिक अनुरक्त था, और १७२८ मे उसकी मृत्यु से उसे ऐसी करारी चोट लगी जिससे वह कभी मुक्त न हो पाया। उसके उग्र और उद्धत स्वभाव की गहराइयों में जो वास्तविक कोमलता छिपी हुई थी उसका पता उसके 'जर्नल टु स्टेला' से लगता है जो उसकी सर्वाधिक राजनीतिक क्रियाशीलता और प्रभाव के समय में लंदन मे बिताये गये जीवन का वृत्तांत है तथा जो कभी प्रकाशित करवाने के विचार से नही लिखा गया था।

स्विफ्ट अंग्रेजी के महान्तम गद्य-लेखकों मे से है। आलंकारिकता और वाक्तांडव से रहित सीधी-सादी, सरल और बातचीत के ढग की शैली पर उसका जैसा अधि-कार था उसकी बराबरी बहुत कम लेखक कर सकते है, तथा उससे बढकर तो कोई है ही नही। उसका विशिष्ट क्षेत्र था व्यंग्य और उसका प्रिय अस्त्र था 'विपरीत लक्षणा' (अर्थात् 'आइरनी') जो इस बात की कला है कि कहना कुछ हो और कहा जाय कुछ और। अपने वास्तविक दृष्टिकोण से विपरीत दृष्टिकोण

को अपनाकर तथा बड़ी ही गंभीरता के साथ, एक क्षण को भी अपना असली रूप प्रकट किये बिना, वह जिस दक्षता से उसी पक्ष का मजाक उड़ाता है जिसका वह ऊपरी तौर से समर्थन कर रहा होता है, वह बड़ी ही अद्‌भुत है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण उसके 'आर्गुमेण्ट टु प्रूव दैट दि एबॉलिशिग ऑव क्रिश्चियनिटी इन इंग्लैंड मे बी अटेण्डेड विद सम इन्कन्वीनियन्सेज' (अर्थात् 'इग्लैण्ड में ईसाई धर्म के विनाश से कुछ असुविधाएँ हो सकती है यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण') मे मिलेगा। इसमे प्रकट रूप से यह स्वीकार करते हुए कि "बाइबिल का विधान. . . . सामान्यत. प्राचीन हो गया है और उसका विस्फोट हो चुका है," उसने स्वतंत्र विचारकों एव प्रचलित धर्म के झूठे दावेदारों दोनों पर ही करारा आघात किया है। 'दि बैटिल ऑव दि बुक्स' और 'ए टेल ऑव ए टब', की जो अपेक्षाकृत अधिक लम्बे पैमाने पर है, गणना अग्रेजी भाषा के श्रेष्ठतम गद्य-व्यंग्यो में की जाती है। ये दोनों रचनाएँ १७०४ मे प्रकाशित हुई, यद्यपि लिखी कुछ पहले गयी थी। इनमे से पहली रचना प्राचीन और आधुनिक साहित्यों के सापेक्ष गुणों के बारे में चल रहे एक विवाद का परिणाम थी जिसमें सर विलियम टेम्पुल ने प्रमुख भाग लिया था। इसका प्रधान विषय विवाद से संबंधित मुख्य प्रश्नो का उत्तर देना नही बल्कि टेम्पुल के व्यक्तिगत विरोधियों की पराजय का वर्णन करना था। 'किंग्स लाइब्रेरी' मे प्रतिपक्षी पुस्तकों की सेनाओ के युद्ध का जो वर्णन उपहासपूर्ण छद्म-वीर काव्य शैली ('मॉक हीरोइक') में किया गया है वह अपने ढंग का अनोखा है। लेखक की अन्य सब पुस्तको से बढ़कर 'ए टेल ऑव ए टब' मे हमें उसके विचारों और शैली का निचोड प्राप्त होता है। चर्च ऑव रोम के झूठे दावो तथा विसंवादी (प्रचलित धर्म से असहमति प्रकट करने वाले) वर्गों की अतिरंजनाओं के विरुद्ध प्रोटेस्टेण्ट चर्च का पक्षपोषण करने तथा आधुनिक ईसाइयत के दोषो को प्रकट करने के लिए इसकी रचना हुई थी। इस उद्देश्य की पूर्ति एक दृष्टांत-रूपक कथा के माध्यम से की गयी है जिसके प्रमुख चरित्र पीटर, मार्टिन और जैक नाम के तीन भाई हैं जो क्रमशः रोमन चर्च, अग्रेजी चर्च तथा 'कैल्विनिस्टो' अर्थात् विसंवादियों ('डिसेण्टर्स') के प्रतिनिधि है। वैसे इस केन्द्रीय विषय से आधी रचना भी मुश्किल से ही संबंधित होगी; शेष रचना क्षमा-प्रार्थनाओं, प्रस्तावनाओं, समर्पणो तथा प्रासगिक भाषणो से भरी हुई है। परन्तु इन गौण विभागों में, जिनमें उसने ज्ञान के दुरुपयोगो तथा अन्य संबंधित विषयो को लिया है, स्विफ़्ट के कुछ अत्यन्त मर्मभेदी और प्रतिनिधि स्थल मिलते हैं। उसने स्वयं कहा था कि इस

पुस्तक का उद्देश्य परमार्थ विद्या एवं वाग्वैदग्ध्य का सम्मिश्रण करना था; परन्तु इसका वाक्यचातुर्य इतना मर्मभेदी और व्यंग्य इतना भीषण है कि हमारे ऊपर जो प्रभाव पड़ता है वह है पवित्र धार्मिक विषयो के वर्णन मे पूर्ण अश्रद्धा का। स्विफ्ट की एक अन्य रचना-'गलिवर्स ट्रैवेल्स' (गलिवर की यात्राएँ)—एक प्रकार से इन सबसे भिन्न है क्योकि जबकि उसकी अन्य समस्त रचनाएँ केवल विद्यार्थियों द्वारा ही पढ़ी जाती है, ये यात्राएँ 'रॉबिन्सन क्रूसो' की भाँति अंग्रेजी साहित्य की सतत लोकप्रिय रचनाओं मे से है। परंतु वास्तव में, उद्देश्य एव भावना की दृष्टि से ये 'ट्रैवेल्स' उसकी अन्य रचनाओं के ही समान है तथा उसी मानवद्वेष की "महान् नीवो" पर इनका निर्माण हुआ है जो उसके विचारों का आधार था। इसीलिए निकट से परीक्षण करने पर बच्चो की यह अत्यन्त मनोरजक पुस्तक मानवता पर लिखे गये कठोरतम व्यंग्यो से होड़ लेने लगती है। फिर यह बात महत्त्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है कि यह जिन चार भागो में विभाजित है उनमें से जैसे-जैसे हम एक दूसरे की ओर बढ़ते है वैसे-वैसे व्यंग्य गहरा होता चला जाता है! 'लिली-पुट की यात्रा' में, जो अधिकांश में तत्कालीन अंग्रेजी राजनीति से संबधित है, हमें मानव की असीम क्षुद्रता और उसके सारहीन झूठे दावों का दिग्दर्शन कराया गया है। 'ब्रॉबडिगनैग की यात्रा' में, जिसमे गलिवर बौना बन जाता है, यही बात और भी अच्छी तरह मन में पैठायी गयी है; साथ ही लेखक की जुगुप्सा भी और अधिक स्पष्ट हो गयी है। 'लैपुटा की यात्रा' में स्विफ्ट ने दार्शनिकों, आयोजकों, आविष्कारको तथा उन सभी लोगो पर अवज्ञापूर्वक कठोर प्रहार किया है जो काल्पनिक वस्तुओं के पीछे अपनी शक्ति नष्ट करते है। प्रासगिक रूप से उसने इतिहास की जो व्याख्या की है तथा 'स्ट्रल्डब्रग्स' नामक एक प्रकार के हतभाग्य और अमरत्व के अभिशाप से त्रस्त जीवो का जो वर्णन किया है उससे हमे मालूम होता है कि उसके विचारों में निराशावाद और विवाद की कालिमा बढ़ रही थी। अन्त में हुनहुम्स और याहूज़ के देश की यात्रा मे तो स्विफ्ट ने मानव-सभ्यता की सारी अनावश्यक सज्जा एवं कृत्रिमताओं की धज्जी-धज्जी उड़ा दी और इस "मनुष्य कहे जाने वाले पशु" को जैसा उसने स्वय देखा था वैसा ही हमारे सामने पेश कर दिया है, अर्थात् अपनी अधमता में इतना डूबा हुआ कि बिल्कुल पशु के समान गिरा हुआ। स्विफ्ट के शेष साहित्य की भाँति 'ट्रैवेल्स' नामक यह रचना भी उसे अपने यग के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करती है जिसमें आध्यात्मिक गुण का अभाव था, जो काल्पनिकता और मर्यादोल्लंघन को सदैव संदेह की दृष्टि

से देखता था और जीवन के प्रति जिसका दृष्टिकोण पूर्ण भौतिकवादी था। हाँ, एक बात में वह अवश्य अपवाद के रूप में दिखाई देता है जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उसका युग थोथी और अनुत्तरदायी आशावादिता का युग था–'एसे ऑन मैन' की आशावादिता का युग। इसके विपरीत स्विफ़्ट घोर निराशा वादी था।

६५. ऐडिसन और स्टील––सामयिक निबंध ('पीरियॉडिकल एसे') की रचना में जोज़ेफ ऐडिसन (१६७२-१७१९) और सर रिचर्ड स्टील (१६७२-१७२९) ने परस्पर जो सहयोग किया उसके कारण उनका नाम सदैव एक साथ लिया जाता है। बिल्कुल समवयस्क होने के कारण पहले लड़कपन में उनका साथ चार्टर हाउस स्कूल में रहा और फिर युवावस्था में आक्सफ़र्ड में। फिर स्टील सेना में भरती हो गया। बाद मे उसने बड़े उत्साहपूर्वक राजनीति में प्रवेश किया तथा अनेक उत्थान-पतन देखने और भाग्य के तमाम थपेड़े खाने के बाद वेल्स में उसकी मृत्यु हुई। जैसा थैकरे ने कहा है, "अपने प्रिय स्थानो, अपनी योजनाओ, अपनी पत्नी, अपनी आय तथा अपने स्वास्थ्य सभी से उसका साथ छूट चुका था; बस अन्त तक कोई चीज़ रही तो वह थी उसका दयावान् हृदय।" इस बीच ऐडिसन ने अपने प्राचीन साहित्य के ज्ञान के लिए बड़ी ख्याति अर्जित की। फिर कूटनीतिज्ञ-जीवन में प्रवेश पाने के लिए उसने यूरोप की यात्रा की। 'हाउस ऑव कामन्स' का सदस्य चुने जाने के उपरान्त वह आयर्लैण्ड के लिए चीफ सेक्रटरी नियुक्त किया गया और एक साल तक 'सेक्रेटरी ऑव स्टेट' भी रहा। फिर अपने मित्र से दस वर्ष पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। दोनों के चरित्र परस्पर अत्यन्त भिन्न थे। स्टील बडी स्वच्छंद प्रकृति का और बड़ा अनियमित जीवन बिताने वाला व्यक्ति था—मस्त, फिज़ूलखर्च और लापरवाह; परन्तु उसमे उदारता और सहानुभूति तथा प्रत्येक शुद्ध और अच्छी वस्तु के प्रति निष्कपट प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसके विपरीत ऐडिसन एक अत्यन्त शिष्ट और सुसंस्कृत व्यक्ति था। उसकी रुचि अत्यन्त परिष्कृत थी तथा सदाचार और धार्मिकता के विषय मे उसके विचार बड़े उच्च कोटि के थे। परन्तु साथ ही वह बेहद शर्मीला, लोगो से दूर रहने वाला और कुछ रूखे स्वभाव का था। जब दोनो ने सामयिक निबंध के क्षेत्र मे एक दूसरे से सहयोग करने का निश्चय किया तब स्वभाव और दृष्टिकोण की यह भिन्नता उनके लिए बड़े काम की सिद्ध हुई। इस क्षेत्र के बाहर भी इन दोनों ने बहुत सा विविध साहित्य लिखा। स्टील के सुखांतो तथा ऐडिसन

के एकमात्र दुखांत के विषय में हम अभी आगे चलकर लिखेगे और ऐडिसन की कविता 'दि कैम्पेन', के विषय मे तो जो किसी समय मे बड़ी ही प्रसिद्ध थी, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि उस समय जैसी प्रशसा इसे प्राप्त हुई वह अब बड़ी ही हास्यास्पद लगती है। यह कविता ब्लेन्हिम की विजय के सम्मान मे लिखी गयी थी तथा यह लेखक के लिए राजनीतिक पदोन्नति का पासपोर्ट सिद्ध हुई। अस्तु ऐडिसन और स्टील से हमारा संबध केवल निबंध-लेखक के रूप मे ही है। यहाँ स्टील ने ही, जिसमे नयी चीज़ो को प्रारंभ करने की प्रतिभा सदैव अधिक रही, 'दि टैट्लर' की स्थापना करके नयी राह दिखायी। अठारहवी शताब्दी मे प्रकाशित होने वाले सामयिक पत्रो की लम्बी पंक्ति मे यह सर्वप्रथम था। फिर इसके उपरात 'दि स्पेक्टेटर' की स्थापना हुई जो इन पत्रो मे सबसे प्रसिद्ध है। इसमें ऐडिसन, जिसने अपने मित्र के पिछले पत्र मे भी कुछ निबध लिखे थे, प्रमुख सहयोगी बना। इसका प्रकाशन पहली मार्च, १७११ से प्रारभ होकर ६ दिसम्बर, १७१२ तक सप्ताह मे रविवार छोड़कर प्रतिदिन होता रहा। इसके उपरात लगभग अठारह महीने बाद ऐडिसन ने अकेले ही इसे फिर से चालू किया और १८ जून से २० दिसम्बर, १७१४ तक यह पत्र सप्ताह मे तीन बार प्रकाशित होता रहा। पूरे 'स्पेक्टेटर' मे ६३५ निबंध है। इनमे से २७४ ऐडिसन ने, २४० स्टील ने तथा शेष १२१ उनके विभिन्न मित्रो ने लिखे है।

सामयिक निबध के माध्यम से ऐडिसन और स्टील ने मिलकर जो कार्य किया उसके नैतिक महत्त्व के विषय मे जो कुछ भी कहा जाय वह अत्युक्तिपूर्ण न होगा। साथ ही उनकी शैली भी बड़ी महत्त्वपूर्ण है। नीतिशास्त्री के रूप मे उन्होने दो परस्पर-विरोधी प्रभावो के नष्ट करने का बीडा उठाया—एक ओर थी पुनस्सस्थापन-युग से सबधित अनियमित जीवन और अनियमित विचार की उच्छृङ्खल एवं भ्रष्ट परम्परा तथा दूसरी ओर प्यूरिटन दुराग्रह और धर्मान्धता। उनकी शैली उनके उद्देश्य के लिए बड़ी ही उपयुक्त थी। प्यूरिटन नीतिशास्त्री अपने स्वभाववश किसी के भी साथ कोई रियायत किये बिना जैसी व्यापक निदा और गाली-गलौज किया करते थे उससे उन्ही के उद्देश्यों की हानि होती थी। इसके विपरीत स्टील और ऐडिसन ने अपने निबध बड़ी सज्जनता के साथ लिखे। उन्होने सभी वर्गो के पाठकों से उन्ही के स्तर पर बात की तथा मनुष्य की साधारण कमजोरियों के लिए काफ़ी रियायत कर दी। परंतु साथ ही उन्होंने शिष्टता एवं सद्बुद्धि का सदैव पक्षपोषण किया। सबसे अधिक सफलता तो उन्हें वाक्चातुर्य, हास्य तथा

व्यंग्य के अपने अनोखे प्रयोग द्वारा मिली। पुनस्संस्थापन के बाद के साहित्य में इन तत्वों को अधिकतर दुराचार की सेवा में तथा शिष्टता और सद्बुद्धि को हास्यास्पद बनाने के लिए ही प्रयुक्त किया गया था। ऐडिसन और स्टील ने ऐसा पाँसा पलटा कि इन उपहासकों को ही हास्यास्पद बना दिया। इससे अत्यधिक लाभ हुआ। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक एवं पारिवारिक आचार-व्यवहार के आधारभूत प्रश्नों के संबंध मे अपने युग को ठीक रास्ते पर लाने में बड़ा काम किया और इसी कारण अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अंग्रेजी आचार-व्यवहार के इतिहास में उनका बड़ा ऊँचा स्थान है। केवल यही नही बल्कि उन्होने शुद्ध नैतिक उद्देश्य के साथ-साथ एक शैक्षिक उद्देश्य भी सामने रखकर अपने निबधो की रचना की। सामान्य सस्कृति का विस्तार तथा उसे लोकप्रिय बनाना सदैव उनका उद्देश्य रहता था। इस प्रकार वे कला, दर्शन, नाट्य और काव्य सभी का विवेचन सदैव बड़े सुगम और चित्ताकर्षक ढंग से करते थे तथा ऐसा करते समय उनका उद्देश्य केवल यही था कि सामान्य पाठक इन विषयो मे दिलचस्पी लेने लगे बल्कि उसकी रुचि का पथ-निर्देशन और विकास भी हो। उदाहरण के लिए पहले पहल 'दि स्पेक्टेटर' में ही ऐडिसन ने 'पैराडाइज़ लॉस्ट' पर अठारह निबंधों की एक सीरीज प्रकाशित की जिसके द्वारा उसने अंग्रेज जनता को इस योग्य बनाया कि वह मिल्टन तथा उसकी रचनाओ का अधिक अच्छा मूल्याकन कर सके। विशेषकर उन्होंने स्त्रियों के सुधार और उत्थान की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। ऐसे समय में जब समाज में स्त्रियाँ जीवन की क्षुद्रताओं में डूबी हुई थीं, उन्होने उनको विस्तृत बौद्धिक जीवन की धाराओं मे खीच लाने का अथक प्रयत्न किया।

'दि स्पेक्टेटर' का एक और पहलू ध्यान देने योग्य है। जब ऐडिसन और स्टील ने लिखना प्रारंभ किया उस समय तक अंग्रेजी साहित्य में (नाटककारों को छोड़कर) किसी ने भी अपने समय के साधारण सामाजिक संसार के मनुष्यों व उनके आचार-व्यवहार का कोई उल्लासपूर्ण चित्र प्रस्तुत नही किया था। अब उन अनेक निबधो मे जिनमें 'स्पेक्टेटर क्लब' के मुख्य चरित्रों का वर्णन है, विशेषकर वे निबध जिनमें सर रोजर डी कॉवर्ली नामक मनोरंजक टोरी ग्रामपति ('स्क्वायर') की विचित्रताओं का वर्णन है, हमारे निबंधकारों ने यह चित्र प्रथम बार प्रस्तुत किया और बड़ी सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया। इसके लगभग एक शताब्दी पहले से ही गद्य और पद्य के व्यंग्य यूनानी लेखक थियोफ्रास्टस के 'कैरेक्टर्स'

को अपना आदर्श मानकर "चरित्र-लेखन" करते रहे थे।[1] अपने वर्ग के प्रतिनिधि चरित्रों के ये चित्र प्रायः चातुर्यपूर्ण होते थे परन्तु न तो वे वास्तविक लगते थे और न उनमें सजीवता ही होती थी। ऐडिसन और स्टील के हाथो में सत्रहवीं शताब्दी के ये चरित्र व्यक्तिगत और सप्राण हो गये। उनके चरित्र गुणों की सूची-मात्र नही है बल्कि वास्तविक दृश्यों के बीच गतिमान तथा विविध घटनाओं में भाग लेने वाले यथार्थ मनुष्य है। यद्यपि 'स्पेक्टेटर' के बिखरे हुए निबधो मे उस अटूट-क्रम के दर्शन नहीं होते जो एक उपन्यास के लिए अनिवार्य है, फिर भी चरित्र-चित्रण के क्षेत्र मे हुए इस महान् विकास को वास्तविक उपन्यास के उत्थान की एक महत्त्वपूर्ण अवस्था तो मानना ही चाहिए। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि 'स्पेक्टेटर' के बहुत से निबधों में, जिनमे सर रोजर के जीवन से कुछ दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं, आधुनिक उपन्यास के बीज वर्तमान है।

६६. पोप-युग के अन्य गद्य-लेखक——पोप-युग पद्य की अपेक्षा गद्य में अधिक समृद्ध था तथा सामान्य रूप से इस युग का गद्य उसके पद्य से कही अधिक रुचिकर भी है। द्वितीय श्रेणी के लेखकों में पोप का मित्र जॉन ऑर्बथ्नट (१६६७-१७३५) सबसे चित्ताकर्षक है। वह एक विख्यात डाक्टर था तथा वाक्पटु होने के साथ-साथ दयावान् भी था। उसके व्यक्तिगत चरित्र के प्रमाणस्वरूप स्विफ़्ट का यह कथन ही उद्धृत करना पर्याप्त होगा कि यदि संसार में केवल एक दर्जन ऑर्बथ्नट हो जायँ तो वह अपनी 'गलिवर्स ट्रैवेल्स' जला दे। अन्य रचनाओं के अतिरिक्त उसने 'दि हिस्टरी ऑव जॉन बुल' नामक एक अति सुन्दर व्यग्य भी लिखा। इस रचना के महत्त्व का एक कारण यह है कि इसने अग्रेजो के राष्ट्रीय चरित्र को प्रदर्शित करने वाले जॉन बुल नामक चरित्र की सृष्टि की जो अब एक परम्परा के रूप में मान्य हो गया है। पोप के एक अन्य मित्र हेनरी सेण्ट जॉन, लार्ड बोलिगब्रुक

१. सर टॉमस ओवरबरी (१५८१–१६१३) की 'कैरेक्टर्स', जोज़ेफ़ हाल (१५७४–१६५६) की 'कैरेक्टर्स ऑव वर्च्यूज़ ऐण्ड वाइसेज़' तथा जॉन अर्ल (१६०१?–६५) की 'माइक्रोकॉस्मोग्राफ़ी' इस प्रकार की रचना के प्रधान उदाहरण हैं। ड्राइडेन के व्यंग्यों में जिस प्रकार के ब्योरेवार चित्र मिलते हैं वे वास्तव में इसी कोटि के "चरित्र" हैं, परन्तु उन्हें एक विशेष ढाँचे में रखकर वैयक्तिकता प्रदान कर दी गयी है।——लेखक

(१६७८-१७५१) ने राजनीति और दर्शन पर बड़ी मनोहर, यद्यपि तनिक आडंबर-पूर्ण-शैली मे अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। फ्रांसिस एटरबरी (१६६२-१७३२) भी पोप के अंतरग सहयोगियों में से था। यद्यपि उसके प्रवचन तथा अन्य विविध रचनाएँ अब विस्मृति का शिकार बन गयी है, तथापि तत्कालीन साहित्यिक इतिहास की अन्य विभूतियों से उसके जो संबंध थे उनके कारण उसका बड़ा महत्त्व-पूर्ण स्थान है। पोप की 'डन्सियड' के द्वितीय संस्करण का नायक कॉली सिबर (१६७१-१७५७) को नाटककारों में ही स्थान देना उचित है, परन्तु उसकी मजेदार 'एपॉलजी' अथवा आत्मकथा के कारण यहाँ भी उसका उल्लेख हो सकता है। ड्राइडेन के एकीटोफेल (लार्ड शाफ्ट्सबरी) का पौत्र एन्थनी, तृतीय लार्ड शाफ्ट्सबरी (१६७१-१७१३), जॉर्ज बर्कले (१६८५-१७५३) तथा जोजेफ़ बटलर (१६९२-१७५२) दर्शन और धर्मशास्त्र के विशिष्ट साहित्य मे आते है। परन्तु बाद में लिखे गये 'एसे ऑन मैन' में व्यक्त की गयी आशावादिता को लोकप्रिय बनाने में शाफ्ट्सबरी की 'करेक्टरिस्टिक्स' का प्रभाव इतना अधिक पड़ा, तथा बर्कले की 'प्रिंसिपिल्स ऑव ह्यूमन नॉलेज' और बटलर की 'एनालजी ऑव रेलिजन' की ख्याति इतनी अधिक है कि उनके विषय मे एक भी शब्द कहे बिना उनकी पूर्ण उपेक्षा कर जाना संभव नही है।

६७. **नाट्य-साहित्य**––पोप-युग के नाट्य-साहित्य का महत्त्व बहुत कम है और यहाँ उसके विषय मे जो कुछ थोडा-सा कहना है वह उसके ऐतिहासिक महत्त्व से ही सबधित होगा। साहित्यिक दृष्टि से दुखांत-नाट्य मे सबसे महत्त्व-पूर्ण रचना ऐडिसन की 'केटो' है जिसमें फ्रेंच संप्रदाय के शिष्टाचार के आधिक्य तथा वाक्तांडव से पूर्ण नाट्य को अंग्रेजी रगमच पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें कुछ सुन्दर स्थल अवश्य है परन्तु इसका छन्द-विधान कठोर, इसका वाक्तांडवपूर्ण भाषण दर्शको के उत्साह को मारने वाले तथा इसके चरित्र निर्जीव है। इस युग के सुखांत-नाट्य के विषय मे सबसे महत्त्वपूर्ण बात उसका वह दृढ़ निश्चय है जो उसने अपने को पुनस्संस्थापन-कालीन नाट्य की अनैतिकता से मुक्त करने के लिए किया और जो बिल्कुल स्पष्ट है। इस प्रयास का संबध कॉली सिबर, श्रीमती केण्टलिवर (१६६७-१७२३) तथा विशेष रूप से स्टील के नामो से है। कॉली सिबर की रचनाएँ यद्यपि सदैव अश्लीलता से पूर्ण है, तथापि यह अश्लीलता उसके नैतिक उद्देश्य को पूरे तौर से नही छिपा पायी है। स्टील के चार नाटकों में सबसे सुन्दर है 'दि कॉन्सटैण्ट लवर्स' जो उसकी महत्त्वपूर्ण कृति थी। ये चारों

नाटक नैतिक उद्देश्य से इतने अधिक बोझिल है कि कही-कही हास्य के होते हुए भी नीरस और अरुचिकर हैं। स्टील ने यह बात भुला दी कि सुखात का सबसे पहला उद्देश्य दर्शकों का मनोरंजन करना है, उपदेश देना नही; उसने अपने रंगमंच को एक प्रकार का व्याख्यान-मच बना दिया। इस प्रकार उसने उस अत्यधिक शिष्ट, उपदेशात्मक और नीरस प्रकार के नाट्य की स्थापना की जो 'भावना प्रधान सुखांत' के नाम से ('सेण्टीमेण्टल कॉमेडी') विख्यात है तथा जिसका आधिपत्य रंगमंच पर बहुत दिनों तक रहा। यहाँ हमे इस सामान्य सत्य का बडा अच्छा उदाहरण मिलता है कि किसी वस्तु के प्रति गहरी प्रतिक्रिया लोगों को सदैव विपरीत पराकाष्ठा की ओर ले जाती है। इस भावनाप्रधान सुखांत के साथ हम जॉर्ज लिलो (१६९३-१७३९) के उस प्रयोग को भी संबद्ध कर सकते है जो उसने अपने 'लण्डन मर्चेण्ट, ऑर हिस्टरी ऑव जॉर्ज बार्नवेल' तथा 'फेटल क्यूरियॉसिटी' में "पारिवारिक नाट्य" की स्थापना के लिए किया। यह एक प्रकार का दुखांत नाट्य था जिसके चरित्र और घटनाएँ इतिहास व प्रेमाख्यान के बजाय साधारण जीवन से लिये जाते थे। लिलो एक व्यापारी और धार्मिक विश्वास मे 'नॉनकन्फार्मिस्ट' (अर्थात् कट्टर-पंथी चर्च के सिद्धातो को न मानने वाला) था तथा उसने अपने नाटकों में उपदेशात्मकता पर जो जोर दिया है और (जिसका सीधा संबंध उसकी प्यूरिटन भावना से है) वह मध्यमवर्गी नैतिक भावना की उस शक्ति का एक और प्रमाण है जिसको हम इस युग के साहित्य में अन्य स्थलो पर भी देख चुके है।

पोप-युग की सारिणी

पद्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
		स्टील का 'दि फ्यूनरल', १७०१.
		स्टील का 'दि लाइंग लवर' १७०३.
ऐडिसन की 'दि कैम्पेन', १७०४.	स्विफ्ट की 'बैटिल ऑव दि बुक्स' और 'टेल ऑव ए टब', १७०४.	
	ट्रैहर्न की मृत्यु, १७०४.	

पद्य	गद्य	नाट्य-साहित्य
		स्टील का 'दि टेण्डर हस्बैंड', १७०५.
पोप की 'पैस्टोरल्स', १७०९	'दि टैट्लर', १७०९-११.	
	बर्कले की 'प्रिंसिपिल्स ऑव ह्यूमन नॉलेज', १७१०.	
पोप की 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म', १७११.	'दि स्पेक्टेटर', १७११-१२, तथा १७१४.	
	शाफ़्ट्सबरी की 'करेक्टरिस्टिक्स', १७११.	
पोप की 'दि रेप ऑव दि लॉक', १७१२.		
	ऑर्बथ्नट की 'हिस्टरी ऑव जॉन बुल', १७१३	ऐडिसन का 'केटो', १७१३.
गे की 'शेफर्ड्स वीक', १७१४.		
गे की 'ट्रीविया', १७१५.		
पोप का 'होमर', १७१५-२५.		
प्रायर की 'पोएम्स', १७१८		
	ऐडिसन की मृत्यु, १७१९.	
	डिफो का 'रॉबिन्सन क्रूसो' भाग १, १७१९.	
	डिफ़ो के अन्य उपन्यास, १७२०-२५.	
		स्टील का 'दि कॉन्शस लवर्स', १७२२.
यंग की 'युनिवर्सल पैशन्स' (व्यंग्य), १७२५.		

गद्य	पद्य	नाट्य-साहित्य
टॉम्सन की 'सीजन्स', १७२६-३०.	स्विफ्ट की 'गालिवर्स ट्रैवेल्स,' १७२६-२७.	
गे की 'फेबुलस' १७२७.		
पोप की 'दि डसियड' १७२८ (चतुर्थ संस्करण, १७४२).		गे का 'दि बेगर्स ऑपेरा' १७२८.
	स्टील की मृत्यु १७२९	
	डिफो की मृत्यु १७३१.	लिलो का 'दि लण्डन मर्चेण्ट' १७३१.
पोप के 'मॉरल एसेज,' १७३२-३५.		
पोप का 'एसे ऑन मैन,' १७३२-३४.		
पोप के 'इमिटेशन्स ऑव हॉरेस', १७३३-३७.		
पोप की 'एपिसिल टु ऑर्बथ्नट,' १७३५.		
	बट्लर की 'एनॉलजी' १७३६.	
यंग की 'नाइट थॉट्स' १७४२.		
ब्लेयर की 'दि ग्रेव' १७४२.		
पोप की मृत्य १७४४.		
	स्विफ्ट की मृत्यु, १७४५.	

अध्याय १५

जॉन्सन-युग (१७४५-१७९८)

सामान्य गद्य

६८. **जॉन्सन-युग**--जब तक हम उन महान् परिवर्तनो के विषय मे न जान ले जो अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी समाज की आत्मा में हो रहे थे तब तक हमे उस युग के इतिहास का अधिक ज्ञान न होगा। हम देख चुके है कि पुनस्सस्थापन के साथ आयी हुई स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध जो नैतिक प्रतिक्रिया हुई वह पोप-युग में एक प्रकार की नियमबद्धता व औपचारिकता के रूप मे स्थिर हो चुकी थी तथा लोगों ने विवेक और सद्बुद्धि की सत्ता को ही अपना निर्देशक सिद्धात स्वीकार किया था। भावना के प्रति तो उनमे इतना गहरा अविश्वास था कि उनके जीवन और साहित्य दोनो का सम्पूर्ण वातावरण कठोर और शुष्क हो गया था। सभी प्रकार के गांभीर्य एव उत्साह के प्रति उनमे जो भय की भावना थी उसके कारण उनके चित्तन मे एक प्रकार की अविनय और धृष्टता की भावना आ गयी थी तथा प्राय. उसमे मनुष्यमात्र से द्वेष का भाव भी झलकता था। पोप का हास्यास्पद आशावाद उस आत्म-सन्तोषी युग की निश्चिन्तता की भावना को ही व्यक्त करता है; एडिसन और स्टील की सदय परन्तु थोथी और अमर्मभेदी, सामाजिक आलोचना इसी भावना को एक दूसरे रूप में प्रकट करती है। स्विफ्ट के भयकर मानवद्वेष को, जो इस सामान्य संगीत में एक पृथक् ध्वनि को ही व्यक्त करता है, कम से कम कुछ अशो मे तो अवश्य एक ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति की असीम घृणा के रूप मे ही निरूपित करना पड़ेगा जो उसके अन्दर अपने चारों ओर क्षुद्रतापूर्ण ससार के लिए भरी थी। वह यह अनुभव करता था कि इस घृणा के बावजूद इस क्षुद्र संसार ने उसे उसी प्रकार बाँध रखा था जैसे उसके गलिवर को लिलीपुटवासियों ने। अब नयी पीढ़ी ने स्वयं पिछले युग की आत्मतृप्ति और आत्मकृतार्थता, भावना की शीतलता तथा शुष्कता का विरोध किया। पिछली पीढ़ी का जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण था तथा उसकी औपचारिकता, उसकी अनुदारता एवं उसके नियंत्रक आदर्श सभी से

नयी पीढ़ी असंतुष्ट थी। इतने दिनों से चली आ रही कृत्रिमता से तंग आकर वे विचार और भाषा दोनों में किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा करने लगे जो अधिक स्वाभाविक और सहज हो। उन्होंने अनुभव किया कि इस आश्चर्यमय और रहस्यपूर्ण संसार मे अनेक ऐसी वस्तुएँ थी जिनका आगस्टन संप्रदाय के थोथे दर्शन मे स्वप्न भी न देखा गया था। उनमें यह जो नयी क्रियाशीलता आयी उसका एक विशेष कारण था भावनाओं का पुनर्जागरण। इस संक्रमण-युग के इतिहास मे यह बात अन्य सभी बातों से अधिक महत्त्व की है। बहुत दिनों से दबी हुई भावनाएँ अब पुनः संस्थापित की गयीं और परिणामस्वरूप संपूर्ण जीवन का रूप परिवर्तित हो गया। यह बात हमे धर्म के विषय में दिखाई देती है। जैसा हम देख चुके है, तत्कालीन समाज की सामान्य प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर पोप के समय में धर्म भी औपचारिक, उपयोगिता-प्रधान और अनाध्यात्मिक हो गया था। अब वेस्ली और ह्वाइटफील्ड के नेतृत्व मे जो महान् धार्मिक पुनरुत्थान हुआ उसके कारण पुरानी औपचारिकता दूर हो गयी, उपयोगितावादी दृष्टिकोण का परित्याग कर दिया गया और चर्च तथा उसके बाहर के जनसमुदाय दोनों में ही आध्यात्मिक उत्साह की एक नयी लहर भर गयी। जैसा हम कह चुके है, पिछले युग के उपदेशक अपने श्रोताओ को तर्क द्वारा समझाने का प्रयत्न करते थे, भावना के द्वारा द्रवित करने का नही। उनके प्रवचन सावधानीपूर्वक लिखे हुए निबंध होते थे जो निम्नलिखित विशेषताओं से सम्पन्न होते थे—शिष्टाचार, वाक्संयम व उचित-अनुचित के नियमों की पूर्ण मान्यता। इसके विपरीत पुनरुत्थानवादी उपदेशक आशु प्रवचनो द्वारा सीधे अपने श्रोताओं की भावनाओं को ही प्रभावित करने का प्रयत्न करते थे। उनकी आवेशपूर्ण भाषण-शैली तथा चेष्टाओ से यह स्पष्ट था कि जहाँ आत्मा के सनातन भाग्य के निर्णय का प्रश्न था वहाँ उन्हें शिष्टाचार और उचित अनुचित की कुछ भी परवाह नही थी। हैण्डेल के 'मेसाया' को १७४३ मे लदन में प्रथम अभिनय मे ही जो महान् सफलता प्राप्त हुई वह इस परिवर्तन का एक और प्रमाण थी।

धार्मिक क्षेत्र में इस पुनरुत्थान का एक स्वाभाविक परिणाम (जो कुछ अंशो में इस पुनर्जागरण का हेतु भी था) यह हुआ कि मनुष्य के रूप मे मनुष्य के प्रति लोगों की सहानुभति अधिक विस्तृत और गहरी हो गयी। इस मानवतावादी भावना का विस्तार तथा समाज की पाशविकता और सामान्य कठोरता के विरुद्ध जो आवाज इस समय उठायी जाने लगी उसकी बढ़ती हुई अविरलता और शक्ति ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्त्व की है। परन्तु ये सभी वस्तुएँ एक महान् और व्यापक आंदोलन

अर्थात् प्रजातन्त्र के वेगपूर्ण विकास की अंगमात्र थी। मनुष्य को मनुष्य के रूप में जैसी मान्यता अब प्राप्त हुई तथा चरित्र के उन गुणों पर जैसा जोर अब दिया जाने लगा जिनका जन्म तथा पालन-पोषण के कृत्रिम बधनों से कुछ भी संबंध नहीं है, वैसा पहले कभी नही हुआ था। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता गया, सामाजिक और राजनीतिक अशान्ति अधिकाधिक स्पष्ट होती गयी। वातावरण भाँति-भाँति के नवीन और विस्फोटक विचारों से पूर्ण था। स्वतन्त्रता, समानता तथा मानवीय अधिकारों के विचारों से लोगों का परिचय अधिकाधिक बढ़ता गया तथा साथ ही वे तत्कालीन सामाजिक एवं शासकीय-विधान् की असंख्य बुराइयों और असंगतियों के प्रति अधिकाधिक जागरूक भी होते गये। महान् फ्रांसीसी लेखक रूसो[1] द्वारा सभ्यता तथा उसके द्वारा पूजित समस्त आदर्शों पर किये गये करारे हमले तथा 'प्रकृति की ओर प्रत्यावर्तन' के उसके प्रबल संदेश ने संपूर्ण यूरोपीय दुनिया में एक अभूतपूर्व लहर दौड़ा दी। अठाहरवीं शताब्दी के इन अन्तिम दशाब्दों में हम जिधर भी मुड़ें उधर ही विशाल उथल-पुथल के चिन्ह दिखाई देते हैं। अटलांटिक महासागर के पार एक नये गणतन्त्र का प्रादुर्भाव हुआ जिसका आधारभूत सिद्धान्त था कि सभी मनुष्य जन्म से ही स्वतन्त्र और समान है। थोड़े ही समय उपरांत, फ्रास के ऊपर जो तूफान बहुत दिनों से छा रहा था, वह क्रांति के रूप में टूट पड़ा।

स्पष्ट है कि ऐसी अर्द्धशताब्दी के साहित्य में प्राचीन और नवीन का संघर्ष, नवीन की सतत विजय तथा इस सबके परिणाम-स्वरूप भावना के क्षेत्र मे हुए महान् परिवर्तन—ये सब बातें अनेक रूपों में व्यक्त होगी। शुद्ध साहित्यिक दृष्टिकोण से विचार करते हुए हम यह भी आशा कर सकते हैं कि इस साहित्य से आगस्टन-युग की शक्तिशाली परम्पराओं तथा अनेक विरोधी सिद्धान्तों के संघर्ष का भी पता चलेगा। साथ ही यह भी पता चलेगा कि क्लासिकल संप्रदाय की प्रतिष्ठा में शनैः शनैः कमी होने के कारण किस प्रकार एक ऐसे साहित्य की स्थापना हुई जो क्लासिकल साहित्य से वस्तु, भावना तथा शैली सभी में मूलतः भिन्न था। यद्यपि जॉन्सन-युगीन साहित्य के इतिहास में बहुत सी बाते ऐसी हैं जो प्रारम्भ में भ्रम डालनेवाली प्रतीत होती है, तथापि मेरा विचार है कि इसके विकास की प्रमुख धाराओं को समझने मे हमें कठिनाई न होगी।

१. रूसो का जन्म जीनीवा (स्विट्ज़रलैण्ड) में हुआ था परन्तु उसे हमेशा फ्रांसीसी लेखकों के साथ ही स्थान दिया जाता है—लेखक।

६९. **जॉन्सन**––पोप और वर्ड्सवर्थ के बीच के महान्तम अंग्रेजी लेखक सैमुयल जॉन्सन का जन्म १७०९ मे लिचफील्ड में हुआ था। उसके पिता पुस्तक-विक्रेता थे। उनसे उसने अपनी विशाल, थलथल और अस्वस्थ देह विरासत में पायी तथा वह विषाद-पूर्ण स्वभाव भी जिसने उसके अधिकांश जीवन को अंधकारमय बना दिया। दिवालियेपन में पिता की मृत्यु हो जाने पर सैमुएल ने थोड़े दिन तक एक स्कूल मे अध्यापन-कार्य किया। उसके उपरांत बरमिंघम के एक प्रकाशक के लिए कुछ अनुवाद-कार्य किया। उसने अपना विवाह एक विधवा से किया जो उससे आयु में बीस वर्ष अधिक बड़ी थी। अपना एक निजी स्कूल खोलने के निरर्थक प्रयास में उसने अपनी पत्नी का जो कुछ थोड़ा बहुत धन था वह भी उड़ा दिया। अब उसने लंदन में अपना भाग्य आजमाने का निश्चय किया। जेब में केवल ढाई पेंस लेकर वह १७३७ में राजधानी पहुँचा। उसके साथ उसका एक शिष्य, डेविड गैरिक, भी था जो शीघ्र ही अपने समय के महान्तम अभिनेता के रूप में प्रसिद्ध होनेवाला था। १७३८ में उसने 'लण्डन' नामक एक कविता प्रकाशित की तथा 'केव्ज मैगज़ीन' से भी संबंध स्थापित किया। इस पत्रिका में वह लगातार कई वर्षों तक नियमित रूप से पार्लिमेण्टरी रिपोर्ट लिखता रहा, यद्यपि वह पार्लिमेण्ट की गैलरियों में एक बार भी नहीं गया तथा दूसरों की टिप्पणियों के आधार पर ही भाषणों की रचना कर देता था। अगले कुछ वर्ष उसने भाँति-भाँति की बेगार की। परन्तु इसी बीच उसने 'वैनिटी ऑव ह्यूमन विशेज' (१७४९) तथा 'नियो-क्लासिक' शैली मे 'आइरीन' (१७४९) नामक एक दुखान्त की रचना की। मार्च, १७५० में उसने 'दि स्पेक्टेटर' के अनुकरण पर 'दि रैम्बलर' नामक एक सामयिक पत्र निकालना भी आरम्भ किया जो मार्च, १७५२ तक प्रति मंगलवार और शनिवार को निकलता रहा। इसमें पाँच अंकों को छोड़कर बाकी सब स्वयं उसी के लिखे हुए थे। आगे चलकर उसने दो और सामयिक पत्र निकाले अर्थात् 'दि एडवेचरर' और 'दि आइडलर'। इस बीच में आठ वर्ष तक (१७४७-५५) वह एक अत्यन्त विशाल कार्य में व्यस्त रहा। यह 'डिक्शनरी ऑव दि इंग्लिश लैंगवेज' (अंग्रेजी भाषा का शब्दकोष) था। इसमें उसने न केवल शब्दों की परिभाषाएँ देने का बीड़ा उठाया, बल्कि अपनी परिभाषाओं के उदाहरणस्वरूप सम्पूर्ण अंग्रेजी साहित्य से उद्धरण देने का भी निश्चय किया। व्युत्पत्ति एवं भाषा-शास्त्र की दृष्टि दोषपूर्ण होते हुए भी (ये दोनों विषय उस समय अपनी शैशवावस्था में ही थे) इस रचना ने अंग्रेजी शब्दकोष-रचना की नींव रखी। जॉनसन ने अपने शब्दकोष

का 'प्रास्पेक्टस' लार्ड चेस्टरफील्ड को संबोधित किया था परन्तु उसने उसकी पूर्णरूपेण उपेक्षा की। हाँ, अन्त में जब उसकी रचना लगभग समाप्ति पर थी उसने जॉनसन की ओर कुछ ध्यान दिया। इस पर जॉनसन ने लार्ड चैस्टरफ़ील्ड को जो शानदार पत्र लिखा उसने अठारहवी शताब्दी की पूरी संरक्षण-प्रथा पर घातक आघात किया। 'डिक्शनरी' ने उसे आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र बना दिया, और कुछ समय उपरान्त जब उसे ३०० पौण्ड की सालाना पेन्शन मिलने लगी तब उसे सारी चिन्ताओं और संघर्षों से मुक्ति मिल गयी। अब वह साहित्य का सर्वमान्य डिक्टेटर, अथवा स्मॉलेट के शब्दों मे, 'महान् अधिपति' ('ग्रेट चैम') बन गया। १७६४मे स्थापित किये गये अपने प्रसिद्ध क्लब में, जहाँ वह गोल्डस्मिथ, महान् चित्रकार सर जोशुआ रिनलड्स, बर्क, गिबन, प्राच्य संस्कृति-विशारद सर विलियम जोन्स, गैरिक तथा बॉसवेल जैसे लोगो से घिरा रहता था, उसे अपनी अद्वितीय संभाषण एवं तर्क-शक्ति के प्रदर्शन के लिए प्रति रात्रि पर्याप्त अवसर प्राप्त होता था। १७५९ मे उसने अपनी शिक्षापूर्ण कथा 'रैसेलस ' प्रकाशित की। शेक्सपियर के नाटकों का संस्करण (आलोचनात्मक टिप्पणियों सहित) १७६५ में, तथा बॉसवेल के साथ की गयी हेब्रिडीज द्वीप-समूह की यात्रा का वर्णन 'जर्नी टू दि वेस्टर्न आइलैण्ड्स ऑव स्कॉटलैण्ड' शीर्षक के अन्तर्गत १७७५ में प्रकाशित हुआ। उसकी सबसे विशाल तथा सबसे महान् रचना 'दि लाइव्ज ऑव दि मोस्ट एमिनेण्ट इग्लिश पोएट्स विद क्रिटिकल ऑब्जर्वेशन्स ऑन देअर वर्क्स' १७७९-८१ में प्रकाशित हुई। उसकी मृत्यु १७८४ मे हुई तथा उसे वेस्टमिंस्टर विहार ('एबी') मे दफनाया गया।

जॉनसन के संबंध में एक बात बड़ी विलक्षण है। मेकाले के शब्दों में "अन्य लेखकों की रचनाएँ उनकी स्मृति को जीवित रखती है परन्तु जॉनसन की ख्याति उसकी अनेक रचनाओ को जीवित रखती है।" यद्यपि एक दो को छोडकर उसकी रचनाएँ आजकल सामान्यतः उपेक्षित ही है, तथापि अन्य किसी भी अग्रेजी लेखक से हमारा इतना घनिष्ठ परिचय नही है। इसका कारण यह है कि वह अपने वीर-पूजक मित्र जेम्स बॉसवेल (१७४०–९५) द्वारा लिखी हुई जीवनी के पृष्ठो मे अब भी जीवित है, जो अग्रेजी ही क्या किसी भी साहित्य में अपने ढंग की श्रेष्ठ पुस्तक है। इसमें जॉनसन के विलक्षण परन्तु शक्तिशाली व्यक्तित्व की एक-एक बात का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है। उसके आचरण की असंख्य विलक्षणताएँ, विमनस्कता तथा घोर निर्दयता के दौरे, उसकी स्नेहालुता

तथा विशालहृदयता, उसकी आश्चर्यजनक चतुरता और बुद्धि, उसकी सुन्दर बौद्धिक सदाशयता तथा हर प्रकार के पाखंड के प्रति उसकी घृणा, उसकी धर्मांधता, असहिष्णुता तथा बच्चों जैसे पूर्वाग्रह, उसकी अद्‌भुत स्मरण-शक्ति, हर वस्तु को शीघ्र समझने तथा प्रत्युत्तर देने में उसकी प्रवीणता, वार्तालाप के लिए उसकी असामान्य प्रतिभा—सभी कुछ तो इस पुस्तक में देखने को मिलता है। यद्यपि प्रत्येक स्थल पर हमें उसकी सीमाएँ स्वीकार करनी पड़ती है, और ये सीमाएँ अत्यन्त स्पष्ट है, तथापि वह साहित्य तथा जीवन दोनों के ही आलोचक के रूप मे महान् था। उसकी साहित्यिक आलोचना प्रायः सदैव बड़ी सूक्ष्मदर्शी तथा उत्साहवर्द्धक है, यद्यपि कभी-कभी उसका निर्णय उसके प्रबल पूर्वाग्रहों द्वारा प्रभावित रहा है। उदाहरण स्वरूप, वह मिल्टन के राजनीतिक और धार्मिक विचारों के प्रति अपने द्वेष के कारण मिल्टन के काव्य के महत्व को समझने में असफल रहा। अपनी समस्त रुचियों और मापदण्डो मे वह पूर्ण रूढ़िवादी था। आगस्टन काव्य-संप्रदाय के सिद्धान्तो के प्रति वह हमेशा सच्चा रहा तथा इस साहित्यिक पद्धति के विरुद्ध जिसे वह 'शास्त्रसंमत' मानता था, जो भी आन्दोलन हुए उन सबका उसने दृढ़तापूर्वक विरोध किया। परन्तु यह बात हम बाद में पुन. उठायेंगे जब हम स्वयं उसकी कविता के प्राविधिक पक्ष के विषय में भी कुछ कहेंगे। नीतिशास्त्री के रूप में उसकी विशेषता है आश्चर्यजनक न्यायबुद्धि तथा बृहत व्यावहारिक ज्ञान। सामान्यतः उसे निराशावादी ही कहा जायेगा। उसका विश्वास था कि "जीवन में हम अभाव से अभाव की ओर ही प्रगति करते है, सुखोपभोग से सुखोपभोग की ओर नही;" हम जीवन की "शून्यता" का अनुभव करके ही कार्यपरता की ओर प्रेरित होते हैं; हम अपनी शक्ति अधिकतर काल्पनिक सुखो के पीछे दौड़ने में ही खर्च करते हैं; जब हमारी इच्छाएँ सन्तुष्ट हो जाती हैं, तो प्रायः उसका परिणाम अति तृप्ति में होता है। उसने इन विचारों को अपनी कई विविध रचनाओं में विस्तार से व्यक्त किया है, विशेषकर 'वैनिटी ऑव ह्यमन विशेज' तथा 'रैसेलस' में जो उसकी सर्वोत्तम कृतियों मे से है। पहली कृति (जो जुवेनल के दशम व्यंग्य का रूपान्तर है) शीर्षक में व्यक्त की गयी शिक्षा (अर्थात् 'मानवीय इच्छाओ की निस्सारता') पर लिखा हुआ एक प्रभावोत्पादक प्रवचन है, तथा इन निष्कर्षों के समर्थन में अनेक उदाहरण भी दिये गये है जो इतिहास से लिये गये है। दूसरी कृति ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमे शाफ़्ट्सबरी व पोप के तुच्छ आशावाद का विरोध किया गया है। इसमें अबीसीनिया के एक युवा राजकुमार की कथा है जो जीवन में पूर्णता की खोज में निकलता है तथा

अंत मे हर प्रकार के लोगों के बीच हुए अपने अनेकानेक अनुभवों के द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सुख जिसकी खोज में सब लोग लगे हुए है, कहीं भी नही मिल सकता। यद्यपि इस प्रकार जॉनसन का दर्शन अत्यन्त विषाद-पूर्ण है, तथापि उसमें ऐसी कोई बात नही है जो सामर्थ्य का क्षय करनेवाली या दुर्बलता प्रदान करनेवाली हो। जीवन भर वह अपने निरंतर बढ़ते हुए विषाद से कठोर सघर्ष करता रहा। यह विषाद उसके चिरस्थायी अस्वास्थ्य का ही परिणाम था। उसका साहित्य उसके पौरुष और दृढ़ साहस की भावना से ओतप्रोत है। उसकी शिक्षा का सार यह है कि हम बुराई को बिना कुछ शिकायत किये सहन तो करे तथा अच्छाई से अधिकतम लाभ उठाने का भी प्रयत्न करें, परन्तु साथ ही हमें चाहिए कि हम जीवन के तथ्यों का ईमानदारी के साथ सामना करें न कि (पोप की भाँति) उनके विषय में भावनापूर्ण निरर्थक प्रलाप करें। इसके अतिरिक्त जैसा कि 'वैनिटी ऑफ ह्यूमन विशेज' तथा 'रैसेलस' के निष्कर्ष से स्पष्ट है, उसके प्रबल धार्मिक विश्वास ने उसे पूर्ण निराशा का शिकार होने से बचा लिया।

गद्य-लेखक के रूप में जॉन्सन ने आगस्टन लेखकों द्वारा निर्देशित पथ का अनुसरण नहीं किया। एडिसन के सहज लालित्य तथा स्विफ्ट की मुहावरेदार, ओजपूर्ण वार्तालाप शैली के स्थान पर उसने ऐसी शैली का प्रयोग किया है जो लैटिन शब्दो से अत्यधिक भरी हुई है तथा जिसके वाक्य-विधान में श्रमसाध्य सतुलन और अर्थ-वैपरीत्य की प्रधानता है। अधिकतर पाठक अब यह अनुभव करते है कि उसकी लेखन-शैली (अथवा मेकाले के शब्दों में "जॉन्सोनीज़") आडम्बरपूर्ण तथा बोझिल है। परंतु उसकी शैली दुरूह कभी नही है तथा अपने सर्वोत्तम रूप में वह महान् सामर्थ्य, वैभव और गौरव से सम्पन्न है।

७०. गोल्डस्मिथ—जॉन्सन-युगीन साहित्य में जो लेखक ऐतिहासिक और व्यक्तिगत दोनो ही दृष्टियों से जॉनसन के सबसे अधिक निकट है, वह है गोल्डस्मिथ। गोल्डस्मिथ का जन्म आयर्लैंड में लॉगफोर्ड काउण्टी के पैलस नामक स्थान में १७२८ में हुआ था जहाँ उसके पिता प्रोटेस्टेण्ट पादरी थे। अपने विलक्षण परिवार में वह सबसे अधिक विलक्षण था। युवावस्था में उसने अपनी उच्छृखलता और मूढ़ता के कारण बड़ा नाम कमाया। डब्लिन विश्वविद्यालय से किसी प्रकार डिग्री प्राप्त करने के अनंतर उसने कुछ वर्ष निष्प्रयोजन बिताये। फिर उसके संबंधियों ने उसे डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए एडिनबरा भेज दिया जहाँ उसकी उच्छृखलता अनियंत्रित रूप से बढ़ती रही। एडिनबरा से वह लीडेन गया। लीडेन

मे वह नाममात्र को डाक्टरी का अध्ययन करता रहा, साथ ही अध्यापन द्वारा उसने कुछ पैसा भी कमाया जो सब उसने जुए में उड़ा दिया। फिर १७५५ में वह केवल एक साफ कमीज, एक गिन्नी तथा अपनी प्रिय जर्मन वशी लेकर यूरोप की यात्रा करने निकला। फ्लैण्डर्स के रास्ते वह पेरिस पहुँचा और वहाँ से स्विट्जरलैण्ड। आल्प्स पार करके वह इटली में पैडुआ तक गया (जो उस समय अपने डाक्टरी विद्यालय के लिए प्रसिद्ध था) तथा वहाँ से फ्रांस होता हुआ वापस लौटा। राह में उसने अपना खर्च कैसे चलाया, यह अब तक रहस्यपूर्ण है। परंतु इस प्रश्न तथा साथ ही उसके अनुभवों के विषय मे सूचना प्राप्त करने के लिए हम बिल्कुल निरापद हो उसकी कविता 'दि ट्रैवेलर' तथा उपन्यास 'दि विकार ऑव वेकफील्ड' में 'जॉर्ज प्रिमरोज़ के यूरोप-भ्रमण के वर्णन की सहायता ले सकते है। १७५६ में जब वह लदन पहुँचा तो उसके पास एक पेनी भी न थी और न ही उसका कोई मित्र था। कुछ समय तक एक औषधि-विक्रेता के सहायक तथा उसके बाद पेखम के एक स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्य करने के उपरात किसी ने उसका परिचय रिचर्डसन से करा दिया (§ ७४) जिससे उसे एक प्रेस में सशोधन का काम मिल गया। इस प्रकार उसने ३० वर्ष की उम्र में साहित्य में प्रवेश किया। अपने साहित्यिक जीवन में उसने अधिकतर प्रकाशकों की बेगार ही की। उसकी रचनाओं का अधिकांश उस कृतियो के वर्ग का है जो केवल जीवन-निर्वाह के लिए ही लिखी जाती है, यद्यपि इनमे भी उसके व्यक्तित्व और उसकी शैली का आकर्षण पर्याप्त मात्रा मे वर्तमान है। इस बेगार के बीच कभी-कभी उसने स्थायी महत्त्व की भी कुछ रचनाएँ प्रस्तुत की है 'दि ट्रैवेलर' (१७६४) तथा 'दि डेज़र्टेड विलेज' (१७७०) नामक दो कविताएँ, 'दि विकार ऑव वेकफील्ड', (१७६६) नामक उपन्यास तथा 'दि गुड-नेचर्ड मैन' (१७६८) और 'शी स्टूप्स टु कॉन्कर', (१७७३) नामक दो सुखांत नाटक। इनके अतिरिक्त कुछ निबंध भी हैं जिनमें 'दि सिटिज़ेन ऑव दि वर्ल्ड' (१७६०–६२) शीर्षक सीरीज़ भी है। ज़ॉन्सन से उसकी मित्रता १७६१ में या इससे कुछ पहले प्रारंभ हुई, तथा वह ज़ॉन्सन के प्रसिद्ध क्लब के प्रारंभिक सदस्यों में से था। मस्तिष्क और स्वभाव में इतने अधिक भिन्न, परतु साथ ही एक दूसरे के प्रति इतने सहानुभूतिपूर्ण, उन दोनों के बीच जो हार्दिक सम्बध थे उससे उनके विषय में बहुत कुछ पता चलता है। यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि ज़ॉन्सन गोल्ड्स्मिथ को अक्सर डाँटा करता था, तथापि वह और किसी को ऐसा नही करने देता था। दूसरी ओर गोल्ड्स्मिथ ने ही जॉन्सन के रूक्ष और अशिष्ट व्यवहार के विषय में

कहा था कि उसमें केवल रीछ की खाल को छोड़कर रीछ का और कोई गुण नही था।[1] बातचीत मे तेज न होने तथा गलतियाँ करने में पूर्ण रूप से माहिर होने के कारण गोल्ड्स्मिथ लदन के साहित्य-ससार के विद्वानों के मजाक का विषय था; परंतु बर्क और रिनॉल्ड्स जैसे लोग उससे स्नेह करते थे तथा, जैसा गैरिक ने एक उपहासात्मक मृत्यु-लेख में कहा है वह "देवदूत की भ ति लिखता था" यद्यपि "बातचीत तोते के समान करता था।"[2] उसके सघर्ष और उत्थान-पतन अंत तक जारी रहे। जब १७७४ में उसकी मृत्यु हुई उस समय भी वह अत्यधिक ऋणग्रस्त था। बेचारा गोल्ड्स्मिथ अस्थिरचित्त, अभिमानी और अपव्ययी तो अवश्य था, परन्तु वह इतना विशाल-हृदय, सहानुभूति-पूर्ण तथा दयावान् था कि हम उसके दोषों को भूल जाते है और सदैव बड़े स्नेह के साथ उसकी याद करते है। वेस्टमिन्सटर विहार ('एबी') में उसकी कब्र पर जॉन्सन द्वारा लिखा हुआ जो मृत्यु-लेख है उसके अनुसार साहित्यक के रूप में वह एक श्रेष्ठ और अधिकारी लेखक था जिसने "शायद ही किसी प्रकार की रचना को अछूता छोड़ा हो तथा जिनको छुआ उनमें से ऐसी कोई नही है जिसे उसने सजाया-सँवारा न हो।"[3]

गोल्ड्स्थिम का साहित्य अत्यत विविध प्रकार का है, और केवल सुविधा के विचार से ही यहाँ हमने उसको सामान्य गद्य-लेखकों के बीच रखा है। उसके एकमात्र उपन्यास तथा उसकी कविताओं के बारे मे हम आगे चलकर लिखेगे, क्योकि जॉन्सन-युग का नाट्य-साहित्य अपने समग्र रूप में इतना महत्वपूर्ण नही है कि एक पृथक् अध्याय मे उस पर विचार किया जाय, इसलिए उसने नाट्य-साहित्य को जो योग-दान दिया उसे हम यही पर ले सकते है। उसके दोनों प्रशंसनीय

१. "He has nothing of the bear but his skin." **जॉनसन को अपने कठोर और अशिष्ट स्वभाव में 'रीछ' कहा जाता था। गोल्ड्स्मिथ का तात्पर्य था कि उसमें जो रूक्षता (अथवा 'ऋक्षता') थी वह ऊपरी थी और अन्दर से वह बड़ा दयावान् और शिष्ट-स्वभाव का था।--अनु०**

२. "Who wrote like an angel but talked like Poll."

३. "A gentle master" who "left scarcely any kind of writing untouched, and touched nothing that he did not adorn."

सुखांत नाटक, जिनमे से बाद वाला अब भी एक श्रेष्ठ अभिनेय नाटक माना जाता है, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योकि उनसे यह स्पष्ट मालूम होता है कि भावनाप्रधान सुखांत की नीरस और शुष्क उपदेशात्मिकता के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरभ हो गयी थी तथा लेखक यथार्थ जीवन और हास्य की ओर पुनः ध्यान देने लगे थे। यथार्थ सुखांत भावना के इस पुनरुज्जीवन मे गोल्ड्स्मिथ के ही स्वदेशबंधु रिचर्ड ब्रिन्सले शेरिडन (१७५१-१८१६) ने अपने श्रेष्ठ सुखांतों 'दि राइवल्स' (१७७५) और 'दि स्कूल फॉर स्कैण्डल' (१७७७) की रचना द्वारा समान रूप से भाग लिया।

गोल्ड्स्मिथ की मौलिक रचनाओ की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता वह प्रबल वैयक्तिक तत्त्व है जो उन सब मे पाया जाता है। (यहाँ गोल्ड्स्मिथ की मौलिक रचनाओं और अन्य के बीच जो केवल सग्रह मात्र है, जो अतर है उसे हमे समझ लेना चाहिए)। अतएव उन रचनाओ की मनोहरता मूलत. स्वयं लेखक की ही मनोहरता है। वह जो कुछ लिखता था उसमें न केवल अपने स्वभाव की ही बल्कि अपने अनुभवो की भी अभिव्यक्ति करता था। इतनी आत्माभिव्यक्ति अधिकतर लेखकों में नही मिलती। उसकी कल्पनात्मक रचनाओ का काफी बड़ा भाग वास्तव में संस्मरण के रूप में है जो या तो बड़े ही हलके छद्म रूप में रहता है, जैसे 'दि सिटिजेन ऑव दि वर्ल्ड' के अनेक स्थलों तथा 'दि विकार ऑव वेकफील्ड' मे या बिल्कुल ही खुले रूप मे बिना किसी छद्म वेष के, जैसे उसकी दोनों महान् कविताओं में है। इसी प्रकार उसके सुप्रसिद्ध पात्रो मे से अधिकांश के मूल चरित्र उसके संबधियो या स्वय उसी में ढूँढ़ लेना आसान है। उदाहरणस्वरूप डा० प्रिमरोज़ निश्चय उसके पिता है; 'दि डेजर्टेड विलेज' का भला पादरी उसका भाई हेनरी है; तथा 'दि विकार ऑव वेकफील्ड' का मोजेज, 'दि गुड-रेचर्ड मैन' का युवा हनीवुड और 'शी स्टूप्स टु कॉन्कर' का टोनी लम्पकिन स्वयं उसी के हास्यजनक रूप है। फिर भी वास्तविक जीवन के इतने अधिक निकट होते हुए भी वह किसी भी अर्थ मे यथार्थवादी नही था। बल्कि इसके विपरीत उसका स्वभाव मूलरूप से इतना काव्यात्मक था कि वह अनुभव से जो भी वस्तु लेता है वह उसके हाथों में आदर्श रूप धारण कर लेती है। आलोचक और सैद्धांतिक के रूप में तो वह जॉन्सन से भी अधिक रूढ़िवादी था तथा उसने पोप के आधिपत्य का प्रतिपादन बडी दृढतापूर्वक किया। अभी आगे उसके काव्य के संबंध में हम इस बात पर और जोर देगे। अभी तो हम प्रसंगवश यह उल्लेख कर सकते है कि आगस्टन-युग के प्रति उसमें

प्रशंसा की जो भावना थी वह शैली मे भी स्पष्ट है; जॉन्सन ने जिस आलंकारिक-शैली को प्रचलित कर दिया था उससे सर्वथा अप्रभावित रह कर उसने ऐसी सरल और अनौपचारिक शैली का प्रयोग किया है जिसके विषय में कोई संदेह नही कि वह पूर्णरूप से उसकी निजी शैली है। तथापि उसके विषय में यह कहा जा सकता है कि वह एडिसन और स्टील की परम्परा को आगे बढ़ाने वाली है।

७१. जॉन्सन-युग के अन्य सामान्य गद्य-लेखक––जॉन्सन-युग की सर्वोत्तम गद्य-रचना इतिहास के क्षेत्र में हुई। वास्तव में यह विषय ऐसा था जिसका परिशीलन इंग्लैण्ड में इतनी सफलता तथा इतनी कलात्मक भावना के साथ पहले कभी नहीं हुआ था। डेविड ह्यूम (१७११–१७७६) ने जो एक नास्तिक दार्शनिक के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, एक 'हिस्टरी ऑव इंग्लैण्ड' लिखी जिसकी विशेषता है शैली की परिष्कृत सुस्पष्टता परन्तु जिसका एक बडा दोष यह है कि वह तथ्यों के संबंध में लापरवाह था तथा कट्टर 'टोरी' होने के कारण उसने प्यूरिटनों के विरोध में स्टुअर्टों के साथ प्रबल पक्षपात भी किया है। वाल्टेयर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए उसने अपने राजनीतिक वृत्तांत के साथ-साथ संस्कृति और आचार-व्यवहार के विषय में भी काफी सूचना दी है। विलियम रॉबर्टसन (१७२१–९३), जो ह्यूम जैसा उत्कृष्ट लेखक तो नही था परंतु उससे अधिक सावधान था, अपनी 'हिस्टरी ऑव स्काटलैण्ड', 'हिस्टरी ऑव चार्ल्स दि फिफ्थ' तथा 'हिस्टरी ऑव अमेरिका' द्वारा बड़ा नाम कमाया। परंतु इस युग का अद्वितीय रूप से महान्तम इतिहास-लेखक था एडवर्ड गिबन (१७३७–१७९४) जिसकी 'हिस्टरी ऑव दि डिक्लाइन ऐण्ड फाल ऑव दि रोमन एम्पायर' 'एतिहासिक साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से है। इस गौरवपूर्ण रचना का जन्म कैसे हुआ, यह स्वयं लेखक के ही शब्दों मे व्यक्त किया जा सकता है "१५ अक्टूबर १७६४ को जब मैं रोम के कैपिटॉल के भग्नावशेषों के बीच विचारमग्न बैठा हुआ था, जबकि नंगे पैरों वाले 'फ्रायर' (तपस्वी, मुनि) जुपिटर के मदिर मे सांध्यकालीन प्रार्थनाएँ कर रहे थे, उसी समय इस नगर की अवनति व उसके पतन का वृत्तांत लिखने का विचार मेरे मस्तिष्क में सर्वप्रथम प्रारंभ हुआ।" गिबन का वृत्तांत टाइटस के शासन-काल, सन् ९८ ई० से प्रारंभ होता है और १४५३ में तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया की विजय के साथ समाप्त हुआ है। इस प्रकार उसने चौदह शताब्दियो के भीतर से गुजरने वाले एक "रोमन मार्ग" का निर्माण किया। इस विशाल योजना की पूर्ति में उसने श्रमसाध्य शोध, कष्टसाध्य यथार्थता तथा अत्यंत विशाल और अव्यस्थित सामग्री को सुसंगठित

रूप देने की आश्चर्यजनक क्षमता को एक में संयुक्त कर दिया। उसमें जो किंचित् गंभीर दोष पाये जाते हैं वे केवल ये हैं कि एक तो उसमें भावना और सहानुभूति का अभाव है, दूसरे (कुछ अंशों में इसी के परिणामस्वरूप) उसने अपने विषय के धार्मिक पक्ष की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, विशेषकर ईसाइयत की ओर और तीसरे, उसकी शैली ऐसी श्रमसाध्य और अस्वाभाविक तथा आडंबरपूर्ण है कि उसमें अत्यधिक एकरसता आ गयी है। परन्तु, जैसा कि प्रसिद्ध विद्वान् स्व० ई० ए० फ्रीमन ने उसके विषय में कहा है, "अठारहवी शताब्दी में गिबन ही एकमात्र इतिहासकार है जिसको आधुनिक अनुसंधान न तो गलत ही सिद्ध कर पाया और न उसके कारण कभी उसके गलत सिद्ध होने की आशंका ही उत्पन्न हुई।"

जिस प्रकार इस युग के ऐतिहासिक गद्य में गिबन का नाम महान् है, उसी प्रकार इसके राजनीतिक गद्य में एडमण्ड बर्क (१७२९–९७) का नाम महान् है। बर्क अत्यंत उत्कृष्ट स्वभाव तथा असाधारण रूप से विस्तृत दृष्टिकोण वाला व्यक्ति था। राजनीतिक विवाद को नैतिक गांभीर्य, सुस्पष्ट कल्पना तथा श्रेष्ठ तार्किक शक्ति से संपन्न करने का श्रेय उसी को है। साथ ही उसकी सुसम्पन्न तथा अत्यधिक आलंकारिक शैली ने उसकी प्रत्येक रचना को एक वैभवपूर्ण पुट दे दिया है। उसके सिद्धांत दार्शनिक रूढ़िवाद के सिद्धांत थे तथा ऐतिहासिक निरंतरता की शक्तिशाली अनुभूति उसके विचारों के केंद्रीय तत्त्वों में से थी। 'ऑन अमेरिकन टैक्सेशन' (१७७४) तथा 'ऑन कन्सिलियेशन विद अमेरिका' (१७७५) नामक अपने भाषणों में उसने अमेरिकी उपनिवेशों का पक्षपोषण किया, परन्तु 'रेफ़्लेक्शन' (१७९०), 'लेटर टु ए नोबुल लॉर्ड' (१७९०) तथा 'लेटर्स ऑन ए रेजीसाइड पीस' (१७९६–९७) में फ्रांसीसी राज्यक्रांति का घोर विरोध किया है। इनमे से प्रथम अर्थात् 'रेफ्लेक्शन' का जवाब टॉमस पेन (१७३७–१८०९) ने अपने 'राइट्स ऑव मैन' में दिया। परन्तु बर्क की राजनीतिक रचनाओं में सबसे अधिक स्थायी महत्त्व की रचना है 'थॉट्स ऑन दि प्रेज़ेण्ट डिस्कण्टेण्ट्स'। 'इन्क्वायरी इण्टु दि ऑरिजिन ऑव अवर आइडियाज़ ऑव दि सब्लाइम ऐण्ड दि ब्यूटीफुल' (१७५७) जो उसकी प्रारंभिक रचना है, अंग्रेजी में सौंदर्य-शास्त्र पर पहला महत्त्वपूर्ण प्रबंध है। एक समय यह भी संदेह किया जाता था कि 'जूनियस' के नाम से लिखित और सरकार की घोर निंदा से पूर्ण जो ७० पत्र १७६८ और १७७२ के बीच प्रकाशित हुए थे वे बर्क ने ही लिखे थे। उनके लेखक के बारे में जो रहस्य है वह यद्यपि कभी पूर्ण रूप से उद्घाटित नही हो पाया, परंतु अब साधारणतया वे सर

फ़िलिप फ्रैंसिस (१७४०–१८१८) द्वारा लिखे हुए कहे जाते हैं। यदि बर्क फ्रांसीसी राज्य क्रांति के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण का महान् अंग्रेज प्रतिनिधि था, तो विलियम गॉड्विन (१७५६–१८३६) उसका प्रधानतम दार्शनिक समर्थक था। उसकी रचना 'इन्क्वायरी कन्सर्निंग पोलिटिकल जस्टिस' मे क्रांतिकारी से क्रांतिकारी विचार ऐसी शांति एव अक्षोभ के साथ व्यक्त किये गये हैं मानों गणित की कोई समस्या हल की जा रही हो। जैसा हम आगे चलकर देखेगे, इस रचना ने नयी पीढ़ी को अत्यधिक प्रभावित किया।

जॉन्सन-युग मे धर्मशास्त्र, दर्शन तथा अर्थशास्त्र से सबंधित साहित्य भी प्रचुर मात्रा मे लिखा गया। लेकिन इन क्षेत्रों में जो कार्य हुआ वह अत्यधिक विशिष्ट प्रकार का होने के कारण उसका समावेश यहाँ नही हो सकता। अपेक्षाकृत सुबोध गद्य मे सबसे महत्त्वपूर्ण नाम पत्र-लेखकों के है,क्योकि इस समय पत्र-लेखन मनोरजन का भी साधन माना जाता था और कला के रूप में भी उसकी साधना बड़े परिश्रम पूर्वक की जा रही थी। इन लेखकों में से तीन का उल्लेख होना आवश्यक है। ये है लेडी मेरी वॉर्टले मॉण्टेग्यू (१६८९–१७६२), फिलिप डॉर्मर स्टैनहोप, अर्ल ऑफ चेस्टरफ़ील्ड (१६९४–१७७३) तथा हॉरेस वालपोल (१७१७–९७)। लेडी मेरी के पत्रो से लगभग आधी शताब्दी के विषय में जानकारी हासिल हो सकती है तथा वे आदि से अंत तक प्रायः समान रूप से पठनीय है। परतु कदाचित् वे उन स्थलों में विशेष रूप से रूचिकर है जहाँ उनमें लेखिका ने विदेशो मे अपने अनुभवों का वर्णन अपनी विशिष्ट उल्लासपूर्ण शैली में किया है। चेस्टरफील्ड ने अपने पत्र अपने पुत्र को संबोधित किये है। उनका उद्देश्य पुत्र के निर्देशन के लिए शिष्ट एवं सुसस्कृत व्यवहार की एक पुस्तिका प्रस्तुत करना था। इसी कारण उनका स्वर एक अत्यंत व्यवहारकुशल व्यक्ति का स्वर है। वालपोल के पत्रो मे जिस मोहपूर्ण समाज मे वह रसिक और मौजी व्यक्ति विचरता था उसके सामाजिक क्रिया-कलाप, राजनीति, प्रसिद्ध व्यक्तियों, प्रपंचों-प्रवादों तथा साधारण वार्तालाप का अत्यन्त मनोहारी चित्र है। इसी कारण वे असाधारण रूप से मनोरंजक है। परतु उनकी अगंभीरता, शैली की क्षुद्रता, तथा उनमें बारंबार व्यक्त ईर्ष्या-द्वेष से हम उसके चरित्र के विषय में बहुत अच्छा विचार नहीं बना पाते। शीघ्र ही उपन्यास के सम्बंध में उसका नाम फिर से आयेगा।

अध्याय १६

जॉन्सन-युग

उपन्यास

७२. रिचर्डसन के पूर्व इंग्लैण्ड में गद्य कथा-साहित्य--गद्य कथा-साहित्य के जिस विशिष्ट रूप को हम उपन्यास की संज्ञा देते है उसका निश्चय रूप से प्रारंभ इग्लैण्ड में कब से हुआ, इस विषय मे ठीक-ठीक कुछ कहना असभव तथा विवाद करना व्यर्थ है। फिर भी यह कहना बिल्कुल निरापद है कि इसकी दृढ़ स्थापना तथा निश्चित लोक-प्रियता जॉन्सन-युग से ही आरभ होती है। वास्तव मे तो उसको इस युग की सबसे महान् सिद्धि माना जा सकता है। साथ ही यह भी प्रतिपादित करना कठिन नही है कि गद्य-कथा-साहित्य ने सर्वप्रथम रिचर्डसन की रचनाओं में ही निश्चयात्मक रूप से अपना आधुनिक रूप ग्रहण किया। अतएव हम यहाँ उसके साहित्य को एक नयी दिशा मे उठाये हुए कदम के रूप मे देखेगे। परतु साहित्यिक इतिहास में उसका उचित स्थान निर्धारित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उसके समय से पहले के अंग्रेजी कथा-साहित्य के विकास का एक द्रुतगामी सर्वेक्षण कर ले।

हम देख चुके है कि यद्यपि शेक्सपियर-युग मे कल्पना शक्ति के उद्गम का प्रधान स्रोत नाट्य-साहित्य था, तथापि इस युग मे कुछ मात्रा मे गद्य कथा-साहित्य की भी रचना हुई थी। इस कथा-साहित्य का अधिकांश या तो शुद्ध रूप से 'रोमाण्टिक था, जैसे सिडनी, लॉज और ग्रीन की रचनाओ में, या फिर उपदेशात्मक जैसे मोर, लाइली और बेकन के साहित्य में। परन्तु नैश के 'पिकारेस्क'[1] उपन्यासों में यथार्थ-

१. 'पिकारेस्क' कहे जाने वाले उपन्यासों के नायक ऐसे साहसिक वृत्ति वाले व्यक्ति होते थे जिन्हें अपने कार्यों की नैतिकता, अनैतिकता का ध्यान नहीं होता था। वास्तव में स्पेनिश शब्द 'पिकारो', जिससे यह बना है, का अर्थ होता है 'धूर्त, बंचक, शठ'।--अनु०

वाद की ओर भी कुछ प्रवृत्ति दिखाई पडती है। कुछ समय उपरांत फ्रांस से अनावश्यक रूप से लम्बे 'हीरोइक रोमांस' (अर्थात् वीररसात्मक प्रेमाख्यान) का आगमन हुआ जिसमें सारहीन क्षात्रधर्म, छद्म पशुचारणवाद, छद्म इतिहास तथा एक कृत्रिमतापूर्ण समाज के अतिरंजित पौरुष का विचित्र संयोग था। इस समय यह फ्रांस में अत्यधिक लोकप्रिय था और अन्य फ्रांसीसी फैशनों की भाति इंग्लैण्ड में भी इसको कुछ अस्थायी लोकप्रियता प्राप्त हुई। फिर इस उपन्यास के भयंकर विस्तार तथा पूर्ण अयथार्थता के विरुद्ध उत्पन्न प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अफ्रा बेन (१६४०–८९) तथा अन्य कई लेखिकाओं ने एक ऐसी कहानी का प्रारंभ किया जिसकी सबसे बड़ी विशेषता थी वर्णन की एकाग्रता और विशिष्टता। यद्यपि यह रूप कथावस्तु और शैली दोनों में अब भी अत्यधिक परम्परामूलक था, तथापि अपने पूर्ववर्त्ती फ्रांसीसी शैली वाले उपन्यास की तुलना में इसमें सत्य और प्रकृति की ओर पुनर्गमन की प्रवृति स्पष्ट दिखाई देती है। इस बीच में बहुत से बाहरी प्रभाव भी अपना कार्य कर रहे थे अर्थात् जिनका उपन्यास से सीधा सबंध नही था। जैसा हम अब देख सकते है, ये सभी प्रभाव गद्य कथा-साहित्य के उस पूर्ण काया-कल्प मे कुछ न कुछ योग दे रहे थे जो उसे एक ऐसा अनोखा रूप प्रदान करने वाला था जो कुछ ऊपरी समानताओं के बावजूद पहले के सभी रूपों से मूलतः भिन्न था। जैसा हम पहले देख चुके हैं, इन प्रभावों मे से एक था चरित्र-लेखको की रचनाएँ तथा सामयिक निबंध के क्षेत्र में एडिसन और स्टील का साहित्य जो चरित्र-लेखकों के कार्य से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त बन्यन ने दृष्टांत रूपक के रूप में कथा-साहित्य का जो आश्चर्यजनक प्रभावशाली उपयोग किया था उसे भी स्वीकार करना आवश्यक है; तथा जीवनी-साहित्य की बढ़ती हुई लोकप्रियता पर भी जोर देना आवश्यक है, क्योंकि, जैसा स्पष्ट है, उसके रचना-रूपों और पद्धतियों का ऐतिहासिक इतिवृत्त के बजाय काल्पनिक इतिवृत्त में बड़ी सुगमतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता था। जैसा हमें याद है, यह बात डिफ़ो की कहानियों के बारे मे विशेष महत्त्वपूर्ण है, और यहाँ वह प्रश्न निश्चित रूप से हमारे सामने उठ खड़ा होता है जिसका थोड़ा स्पर्श हम पहले ही कर चुके हैं; अर्थात् कथा-साहित्य के विकास में डिफ़ो का क्या स्थान है। इस बात से तो इन्कार नही किया जा सकता कि प्रेमाख्यान की विलक्षण रूढ़ियों का निराकरण करके तथा जीवनी-साहित्य की शैली और पद्धति को अत्यंत सावधानी-पूर्वक ग्रहण करके वह वास्तविक उपन्यास के बहुत ही निकट आ गया था। फिर

भी, इतना सब होते हुए भी यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि उसे अपनी राह मिल नही सकी। उसकी कथाएँ सामान्य जीवन और चरित्र से इतनी विलग है, तथा उनमें विलक्षण साहसिक कार्यों एव अपराध का अंश इतना अधिक और 'पिकारेस्क' तत्त्व इतना प्रबल है कि कठोरता से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होगा कि उन्हें प्रेमाख्यानों की कोटि में ही रखना चाहिए न कि उपन्यासों में। अवश्य ही यह प्रश्न केवल नामों से ही संबधित है (अर्थात् उसकी रचनाओं को प्रेमाख्यान कहा जाय या उपन्यास) और इसको अधिक महत्त्व देने की आवश्यकता नही है। परतु डिफ़ो की कला की विशिष्टताओं के अध्ययन द्वारा कम से कम रिचर्डसन के साहित्य के विशिष्ट रूप के स्पष्टीकरण में तो सहायता मिलेगी ही। रिचर्डसनके पूर्व गद्य कथा-साहित्य में अनेक दिशाओं में पर्याप्त कार्य हुआ था। परंतु अभी तक किसी ने तत्कालीन सामाजिक एवं घरेलू जीवन से संबंधित ऐसा कोई उपन्यास नही लिखा था (डिफो ने भी नही) जिसका प्रधान आकर्षण एक जाने-पहचाने वातावरण मे साधारण लोगों द्वारा किये गये कार्यों पर निर्भर हो। सबसे पहले रिचर्डसन ने 'पामेला' नामक ऐसा उपन्यास प्रस्तुत किया और इस प्रकार उसने जिस नये आंदोलन का सूत्रपात किया उसको ध्यान में रखते हुए उसको आधुनिक उपन्यास का जन्मदाता कहना अनुचित न होगा।

७३. **उपन्यास का ऐतिहासिक महत्त्व**––रिचर्डसन की ओर ध्यान देने से पूर्व उचित होगा कि जरा-सा रुककर हम उपन्यास का साहित्यिक और सामाजिक दोनों दृष्टियो से जो महत्त्व है उस पर कुछ प्रकाश डाल दें। इस सबंध में निम्नलिखित बातों पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। सर्वप्रथम, सामयिक निबंध की भाँति, जिसका सूत्रपात उपन्यास से एकदम पहले हुआ, उपन्यास साहित्य को भी अपनी लोकप्रियता एक विविध प्रकार के पाठक-वर्ग का विकास होने पर ही, तथा बहुत अशो में उसी के कारण, प्राप्त हुई। यह पाठक-वर्ग विविध प्रकार का तो था ही, उसमें स्त्रियों की संख्या और उनके प्रभाव में अधिकाधिक वृद्धि होती जा रही थी। दूसरे, व्यवहारतः साहित्य में एक नवीन कला-रूप होने के कारण उपन्यास इस बात का लक्षण था कि साहित्य 'क्लासिकता' के अपघातक बंधनों से मुक्त हो रहा था तथा इस सिद्धांत का परित्याग कर रहा था कि आधुनिक प्रतिभा का पहले से परम्परा द्वारा निर्दिष्ट दिशाओं में जाना अपरिहार्य था। महाकाव्य तथा नाट्य में अभी यह बात असंभव थी कि लोग प्राचीनता के अधिकार को पूर्ण रूप से अस्वीकार कर दें। परंतु उपन्यास में इस अधिकार की उपेक्षा की जा सकती थी। अवश्य ही

प्राविधिक प्रश्नों पर कुछ बिचार-विमर्श 'क्लासिकल' दृष्टिकोण से भी किया गया तथा कभी-कभी 'क्लासिकल' पाण्डित्य का प्रदर्शन भी हुआ है। फील्डिग इस प्रवृत्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। परंतु सामान्यरूप से उपन्यास ने एक नया क्षेत्र सुलभ कर दिया जिसमे आधुनिक लेखक स्वच्छन्दतापूर्वक कार्य कर सकते थे। तीसरे, उपन्यास का उद्भव अठारहवीं शताब्दी मे इंग्लैड में होने वाले प्रजातान्त्रिक आंदोलन का ही एक परिणाम था। प्रेमाख्यान-साहित्य अपनी रुचियो और चरित्रों के विषय में दुखांत नाट्य की भाँति प्रायः सदा ही कुलीन रहा था। यद्यपि डिफो ने अन्य सब विषयों की भाँति इस विषय में भी 'रोमाण्टिक' परंपराओ का निराकरण कर दिया तथापि, जैसा हम कह चुके है, उसने भी साधारण सामाजिक संसार से अपने को विलग ही रखा तथा केवल राजकुमारों और आर्केडिया-निवासी पशुचारकों के स्थान पर साहसिकों और अपराधियो को रख दिया। उपन्यास की व्यापकता, उसमें हर तरह और हर परिस्थिति के व्यक्तियों के चरित्रों और क्रिया-कलाप का स्वच्छंद वर्णन, तथा विशेषतया मध्यम और निम्नवर्ग के जीवन का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उसके प्रजातत्रात्मक गुण के निस्संदेह प्रमाण है। अतएव यह मात्र सयोग ही नही था कि इसका उद्भव ऐसे समय मे हुआ जब सर राँबर्ट वालपोल के दृढ़ शासन के अतर्गत यह देश सैनिक सक्षोभ के एक लबे समय के उपरात सुस्थिर हो रहा था, तथा जब इस सुस्थिरता के परिणामस्वरूप हुई व्यापार और उद्योग की उन्नति के कारण प्राचीन सामन्तवादी कुलीनो की प्रतिष्ठा का ह्रास हो रहा था और मध्यम वर्ग की सामाजिक एवं राजनीतिक शक्ति में निरंतर वृद्धि हो रही थी। लार्ड मॉर्ले के शब्दों मे, 'पामिला' "एक महान् साहित्यिक संधि-काल का सीमा-चिह्न तो है ही, परंतु इसके साथ ही यह एक महान् सामाजिक संधि-काल का भी सीमा चिह्न कुछ कम अर्थ मे नही है, जब कि एक ग्रामीण कुलीना की सेविका (पामिला) की परीक्षाओ, गुणो और विजयो के ऊपर सपूर्ण इग्लैण्ड उत्साह के मारे पागल हो उठा।" अत मे, क्योकि मानव-उद्देश्यो, भावनाओ और आतरिक जीवन के सम्पूर्ण दृश्यों के चित्रण के लिए नाट्य की अपेक्षा उपन्यास में अधिक विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध होता है, इसलिये हमारे अतर्मुखी और तत्त्वान्वेषक आधुनिक जगत् का प्रतिनिधि कला-रूप होने के कारण उसने प्रारभ से ही साहित्य मे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया।

७४. रिचर्डसन—सैमुएल रिचर्डसन (१६८९–१७६१) एक सम्पन्न मुद्रक तथा सभी प्रकार के शिष्टाचार की मूर्ति था। पचास वर्ष की अवस्था तक उसे

कभी इसका भान तक नहीं हुआ था कि उसमे लेखन की क्षमता थी। फिर संयोगवश ही उसने एक युगांतरकारी पुस्तक की रचना कर डाली। उसके दो प्रकाशक मित्रों ने उससे कहा कि वह उनके लिए "सामान्य शैली में पत्रो की एक छोटी-सी पुस्तक" लिख दे जो "उन ग्रामीण पाठको के लिए जो स्वयं लिखने में असमर्थ है" आदर्श का काम दे। और क्योंकि नैतिक प्रयोजन उसके मस्तिष्क में सर्वोपरि रहते थे इसलिए उसके सुझाव पर यह निश्चय किया गया कि लेखन-कला की शिक्षा के साथ-साथ शिष्टाचार-संबंधी निर्देशन भी संयुक्त कर दिया जाय। उसने अपना काम मुश्किल से शुरू ही किया था कि उसे एक सच्ची कथा याद आ गयी जो उसने कई साल पहले सुनी थी और उसने सोचा कि वह इस कथा का उपयोग ऐसी डोरी के रूप में करे जिस पर वह अपने पत्रों को लटका सके। तब एक और विचार उसके मन मे उठा कि (मैं उसी के शब्दों को उद्धृत कर रहा हूँ) यह पुस्तक "यदि अपनी सादगी के अनुरूप सरल और स्वाभाविक शैली मे लिखी जाय तो सभवतः इससे एक नये प्रकार की रचना का श्री गणेश हो जाये. . . . .युवा स्त्री–पुरुष एक ऐसी चीज़ पढ़ने में प्रवृत्त हो जायँ जो प्रेमाख्यान साहित्य के आडंबर और प्रदर्शन से भिन्न हो तथा. . . . .जिससे धर्म और सद्गुणों के आदर्श का प्रसार हो।" अतः पत्र-लेखन की जो पुस्तक लिखने का विचार प्रारंभ में था उसे फ़िलहाल स्थगित कर दिया गया, और 'पामिला, ऑर वर्च्यू रिवार्डेड' ('पामिला, अर्थात् सदगुणों का पुरस्कार') का जन्म हुआ (१७४०)। इसकी कथा तो बहुत छोटी है। इसमें एक युवा लड़की की कथा है जो एक उच्चकुलीन महिला की सेविका है। स्वामिनी की मृत्यु के उपरांत उनके दुराचारी पुत्र के अनुचित प्रस्तावों के कारण उसे लंबे समय तक बड़े अत्याचार और पीडन का सामना करना पड़ता है। परंतु वह उसकी सभी चालों और दावों का सफलतापूर्वक विरोध करती है, यहाँ तक कि अत में उसका हृदय पामिला की ओर द्रवित हो जाता है और वह उससे विवाह कर लेता है। परंतु विषय-वस्तु की सादगी के बावजूद रुचि और चरित्र की दृष्टि से इस पुस्तक में इतनी नवीनता थी कि इसको तात्कालिक और विस्मयजनक सफलता प्राप्त हुई। इसकी नैतिक शिक्षा को स्वय रिचर्डसन ने प्रमुख महत्त्व दिया था, और इसकी प्रशंसा गिरजाघरों के मंच पर भी की गयी, परंतु इस विषय मे जितना कम कहा जाय उतना ही अच्छा क्योकि आजकल तो हमें यह चरम रूप से क्षुद्र और अर्थलोभजन्य ही मालूम होती है। एक कलात्मक रचना के रूप में इसका महत्त्व मुख्यतः ऐतिहासिक है। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें जरा अपरिष्कृत रूप में उन विशिष्ट पद्धतियो के दर्शन होते है जिनका

प्रयोग बाद में उत्तरवर्त्ती रचनाओं—'क्लैरिसा, ऑर दि एडवेंचर्स ऑव ए यंग लेडी,' जो सामान्यतः 'क्लैरिसा हार्लो' (१७४७–८) के नाम से विख्यात है, तथा 'सर चार्ल्स ग्रैण्डिसन' (१७५३)—में इससे कहीं अधिक दृढतापूर्वक और कहीं अधिक प्रभावोत्पादकता के साथ किया गया।' 'क्लैरिसा' रिचर्डसन की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसने उसे पूरे यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया; तथा अब भी इसकी गणना अठारहवीं शताब्दी के महान्तम उपन्यासों में की जाती है। इसके महत्त्व का एक और कारण यह है कि रिचर्डसन द्वारा चित्रित किया गया सबसे उल्लेखनीय चरित्र इसी में है। यह चरित्र है दुराचारी लवलेस का जिसका नाम अब काफी कुख्यात हो गया है। आजकल रिचर्डसन के प्रति न्याय करना हमारे लिए कठिन है। इसका कारण कुछ तो यह है कि विचार में बड़े गहरे परिवर्तन हो गये है और कुछ यह कि उसके समय से गद्य कथा-साहित्य की कला का अब अत्यधिक विकास हो गया है। उसकी रचनाएँ अत्यधिक लम्बी तथा अंतहीन पुनरावृति और ढेर के ढेर अनावश्यक ब्योरे के बोझ से दबी हुई है। उसकी कहानियों में सहज प्रवाह का अभाव है; तथा उनकी गठन-शैली बड़ी ही अनिपुण है। सभी रचनाएँ पत्रों के रूप मे लिखी गयी हैं जिनका आदान-प्रदान विभिन्न पात्रों के बीच होता है। यद्यपि इस पत्र-शैली का लाभ यह है कि यह पत्र-लेखकों से हमारा घनिष्ठ संबंध स्थापित कर देती है तथापि इसके कारण हमारी रुचि केन्द्रीभूत न रह कर बिखर जाती है और समय-कुसमय सदैव अनवरत पत्र-लेखन चलते रहना आवश्यक होने के कारण, हम यह अनुभव किये बिना नहीं रहते कि यह संपूर्ण रचना अत्यधिक कृत्रिम है। परंतु उद्देश्य और मनोवेगों के धैर्यपूर्ण और सूक्ष्म विवेचन के लिए रिचर्डसन का स्थान अब भी बहुत ऊँचा है। इस बात से उसकी अत्यधिक दीर्घसूत्रता कुछ हद तक तो उचित सिद्ध होती ही है। उसकी कला असीमित रूप से छोटी वस्तुओ की कला है और वह अपने प्रभावों की सृष्टि छोटी-छोटी और ऊपरी तौर से नगण्य हजारों बातों को सयुक्त करके करता है। अपनी अनेक मौलिक विशिष्टताओं में उसकी प्रतिभा स्त्रियोचित अधिक थी, पुरुषजातीय कम। लड़कपन से ही वह सदा स्त्रियों का ही संग अधिक पसंद करता था, तथा यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि सामान्यतः उसे स्त्री-चरित्रों के चित्रण में ही सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई। उसे संसार का यथार्थ ज्ञान बहुत कम था तथा उसका दृष्टिकोण भी अत्यधिक संकुचित था। परिणामस्वरूप उसकी रचनाओं के नैतिक पक्ष को (और वह प्रमुखरूप से नीतिशास्त्री की हैसियत से ही लिखता था) बड़ी हानि पहुँची। उसने एडिसन और स्टील की नैतिक परम्पराएँ

जारी रखीं और इसमें संदेह नहीं कि अपने हस्तक्षेपीय विधि से उसने समाज व आचार-व्यवहार के शुद्धीकरण मे अच्छा कार्य किया। परंतु उसका उपदेश देने का ढंग प्रायः अरुचिकर और निरर्थक जल्पना का रूप धारण कर लेता है, तथा उसका भावनापक्ष प्रायः अत्यधिक कृत्रिम और बीभत्स है। सामान्यरूप से उसकी रचनाओं का वातावरण ताप-नियंत्रित वनस्पतिशाला के वातावरण से इतना अधिक मिलता जुलता है कि वह पूर्ण रूप से आनंददायक या स्वास्थ्यप्रद नही हो सकता।

७५. **फ़ील्डिग**—अठारहवी शताब्दी के हमारे उपन्यासकारों में दूसरा, और उन सबमें महान्तम, हेनरी फीलडिंग (१७०७–५४) अत्यंत भिन्न प्रकार का व्यक्ति था। वह बड़ी ही प्रबल, ओजस्वी और कुछ अंशों मे असंस्कृत प्रकृति का व्यक्ति था। जीवन के विषय में रिचर्डसन का ज्ञान जितना सकुचित था उसका उतना ही विस्तृत था, विशेषकर उसे जीवन के कुछ ऐसे पहलुओं का ज्ञान था जिनसे शालीनता और शिष्टता की मूर्ति वह मुद्रक (रिचर्डसन) सन्न रह जाता। इस प्रकार उसके साहित्य में एक ऐसी शक्ति और व्यापकता है जिसे रिचर्डसन के साहित्य में खोजना व्यर्थ ही होगा। रिचर्डसन ने फील्डिग के संबध में जो विचार व्यक्त किया है कि उसकी रचनाएँ "बड़ी ही निम्न और कुत्सित" है—वह इन दोनों व्यक्तियों का अंतर स्पष्ट कर देता है। इसके अतिरिक्त उपन्यास-रचना में प्रवृत्त होने से पूर्व लगभग दस वर्ष तक फ़ील्डिग नाटक लिखता रहा था और नाट्य-रचना में इस लम्बे प्रशिक्षण के कारण उसे कथा-ग्रन्थन-कला में बड़ी मूल्यवान् शिक्षा मिली थी। अतएव जब उसने उपन्यास लिखना प्रारंभ किया तो वह रचना-प्रविधि में अच्छी तैयारी कर चुका था। इसके विरुद्ध रिचर्डसन को ऐसा अवसर कभी नही प्राप्त हुआ था।

विलक्षण बात तो यह है कि उपन्यास के क्षेत्र में उसका पहला प्रयोग रिचर्डसन के पहले प्रयोग का सीधा परिणाम था। १७४० में संपूर्ण इग्लैड 'पामिला' के ऊपर हर्षातिरेक से प्रमत्त था। अकेला फ़ील्डिंग ही इस व्यापक उत्साह से अछूता रहा। उसमें हास्यप्रद विषयों को पहचानने-समझने की जो पैनी बुद्धि थी वह इस कहानी की आधारभूत असंगतियों से जाग्रत हो गयी। जिस क्षुद्र नायिका के सद्गुणों का प्रदर्शन इतने संतोष के साथ किया गया था उसकी अत्यधिक छलना और चतुरता ने उसे बिल्कुल विमूढ़ कर दिया। इसके अतिरिक्त लेखक की आवश्यकता से अधिक भावनात्मकता उसे बड़ी ही अरुचिकर प्रतीत हुई। अतएव उसे एक सुदर विचार सूझा कि क्यों न इस पुस्तक की 'पैरोडी' (विद्रूप रचना) लिखकर उसकी

लोकप्रियता से लाभ उठाया जाय और साथ ही उसका सदाशयता-पूर्ण मजाक भी उड़ाया जाय। इस प्रकार 'दि एडवेंचर्स ऑव जोज़ेफ़ एण्ड्रूज़' (१७४२) का जन्म हुआ। फीलिडंग ने अपने उपन्यास का प्रारंभ किया 'पामिला' की मूल परिस्थिति को उलट कर। जैसे रिचर्डसन की नायिका को उसके स्वामी ने प्रलोभन दिये थे, उसी प्रकार इसके नायक को (जिसे पामिला का भाई बताया गया है) उसकी स्वामिनी प्रलोभन देती है; और यह पैरोड़ी दसवें अध्याय तक चलती रहती है। उसके बाद वह अपने आविष्कार के इतना अधिक वश में हो जाता है कि वह अपनी प्रथम योजना का परित्याग कर देता है और कहानी एक "राजमार्ग का महाकाव्य" बन जाती है जो साहसिक कार्यों, भोंडे मजाक तथा अपेक्षाकृत अशिष्ट परिहास से पूर्ण है। यह केवल एक प्रयोगात्मक रचना थी परंतु इसने फीलिडंग को अपना सही रास्ता ढूँढ़ने में सहायता दी। इसके बाद १७४९ मे 'दि हिस्टरी ऑव टॉम जोन्स' की रचना हुई जो अठारहवी शताब्दी का महान्तम उपन्यास है। इसमे फीलिडग ने एक अत्यंत विशाल चित्रपट को लिया है और उसे आकृतियों से भर दिया है। उसका नायक एक अनाथ-परित्यक्त बालक है जिसका पालन-पोषण पश्चिमी इंग्लैंड में आलवर्दी नामक एक संभ्रांत ग्रामीण द्वारा हुआ। परंतु वह शीघ्र ही उनसे झगड़ा कर लेता है और उसके उपरांत ऐश्वर्य की खोज मे लंदन की ओर चल पड़ता है। प्रथम भाग ग्रामीण व्यक्तियों और उनके आचार-व्यवहार से परिपूर्ण है और द्वितीय भाग राजधानी के लोगों व उनके आचार-व्यवहार से। अपने सम्पूर्ण रूप में इस पुस्तक में हमें अठारहवी शताब्दी के मध्य भाग के आसपास के अंग्रेजी जीवन का सबसे पूर्ण और समृद्धशाली चित्र मिलता है। फीलिडंग का तीसरा श्रेष्ठ उपन्यास 'अमेलिया' १७५१ में प्रकाशित हुआ। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, इसमें पाठक की रुचि का केंद्र एक स्त्री का चरित्र है, और इस प्रकार फ़ीलिडंग ने, संभवतः जान बूझकर, 'क्लैरिसा' के लेखक से उसी के क्षेत्र में टक्कर ली। इसमें एक पतिपरायण स्त्री के साहस और धैर्य तथा उसके दुर्बल इच्छा-शक्ति वाले पति के कुकर्मो की कथा है। पहली दोनों रचनाओं की अपेक्षा इसमें विषाद की मात्रा कही अधिक और ओज व हास्य की मात्रा अत्यधिक कम है। चरित्र-चित्रण कुछ अंशों में उत्तम कोटि का होते हुए भी ऐसे चिह्न बिलकुल स्पष्ट है जिनसे पता चलता है कि लेखक की शक्ति क्षीण हो रही थी।

फ़ीलिडग को गद्य कथा-साहित्य के रचना-सिद्धान्तों की बड़ी फ़िकर रहती थी। यह ऐसा विषय था जिसकी ओर न तो डिफ़ो ने और न रिचर्डसन ने

ही अधिक ध्यान दिया था। उसके लिए उपन्यास महाकाव्य अथवा नाटक के समान ही एक कला-रूप था। 'जोजेफ एण्ड्रूज' के प्राक्कथन' तथा 'टॉम जोन्स' के विभिन्न भागो के प्रारभिक अध्यायों का महत्त्व इसी कारण है। वास्तव मे ये प्राक्कथन और अध्याय एक प्रवीण कलाकार द्वारा अपनी कला से सबधित विभिन्न प्रश्नों पर लिखे हुए निवध है। कथानक के संगठन मे उसे स्वय जो सफलता प्राप्त हुई वह अवश्य ही उतनी महान् नही है जितनी महान् वह साधारणतया सोची जाती है, तथा कोलरिज और थैकरे ने 'टॉम जोन्स' के कथानक पर जिस प्रशसा की वर्षा की है उसे बिलकुल वाहियात ही मानना नही पडेगा। फिर भी एकता और सतुलन के जो विचार किसी भी कलाकृति के लिए इतने आवश्यक है उनको उपन्यास मे अवतरित करने के लिए उसने सिद्धात और व्यवहार दोनो ही प्रकार से जो परिश्रम किया उसका पूरा-पूरा श्रेय उसे मिलना चाहिए। यह अवश्य है कि वर्तमान समय मे हमे उसकी अशालीनता और पशुता प्राय बड़ी अरुचिकर लगती है, तथापि हमे यह भी याद रखना चाहिए कि रिचर्डसन की ही भाँति फील्डिग भी अपने विशिष्ट रूप मे स्पष्टत: नैतिकतावादी था, यद्यपि उसने रिचर्डसन के आचार संबधी दृढ़ विचारों का तथा उसकी आत्मतुष्टिपूर्ण भावना का पूर्ण बहिष्कार कर दिया जो उसके साहित्य मे सर्वत्र व्याप्त है। सामाजिक व्यग्यकार और शिक्षक के रूप मे वह अपने मित्र हॉगर्थ[1] के बिलकुल समीप है। "निजी और सार्वजनिक दोनो ही प्रकार की जो अत्यत स्पष्ट बुराइयाँ वर्तमान समय मे देश को दूषित कर रही है, उनमें से कुछ का पर्दाफाश करने मे" (स्वय उसी के शब्द) उसने जिस सदाशयता और गभीरता से काम लिया और दुर्गुणो के चित्रण मे जिस निस्सीम स्वतत्रता और पूर्ण निश्शकता का परिचय दिया है उसमें वह हॉगर्थ के ही समान है। फील्डिग की नैतिकता मे कुछ कमजोरियाँ भी है तथा उसने कुछ विषयों का वर्णन ऐसी उच्छृखलता के साथ किया है जो बड़ी शोचनीय है। परंतु सब बातों का विचार करते हुए हम यह कह सकते है कि रिचर्डसन की तुलना मे वह अत्यत महान् कलाकार था, इसलिए उसका जीवन-चित्रण तथा उसकी रचनाओ का प्रधान स्वर दोनों ही रिचर्डसन की अपेक्षा अधिक यथार्थ और स्वस्थ है।

१. अंग्रेज चित्रकार (१६९७–१७६४)। तत्कालीन लंदन-जीवन के उसके व्यंग्य चित्र अत्यन्त प्रसिद्ध हो गये हैं।–अनु०

७६. स्मॉलेट——एक तीसरे लेखक टोबियस स्मॉलेट (१७२१–७१) को अठारहवी शताब्दी के उपन्यास-साहित्य के इतिहास मे प्रायः रिचर्डसन और फील्डिग के साथ ही रखा जाता है। परतु यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि उसका साहित्य इन लोगों के साहित्य से अत्यत निम्न धरातल पर है। प्रारंभिक जीवन में स्मॉलेट ने कुछ वर्ष एक युद्ध-पोत पर शल्य-चिकित्सक के रूप मे व्यतीत किये, और इस प्रकार उसे समुद्र, नाविको तथा नौसेना की नौकरी की भयावह परिस्थितियो की निजी जानकारी हो गयी जिससे उसने वाद मे अच्छा फायदा उठाया। अपने डाक्टरी पेशे को चलाने के विचार से वह लदन मे जम गया, परतु उसमे सफलता न मिलने पर गोल्ड्स्मिथ की भाँति वह साहित्य की ओर मुडा। गोल्ड्स्मिथ की ही भाँति उसने भी एक पुस्तक-विक्रेता के किराये के टट्टू के रूप मे बहुत बड़ी मात्रा मे विविध प्रकार का साहित्य लिखा जिसमे एक 'हिस्टरी ऑव इग्लैड' भी शामिल है जिसको उसके प्रकाशक ने ह्यूम के इतिहास के विरोध मे लिखवाया था। रिचर्डसन और फील्डिग की सफलता ने स्वभावत उसे कथा-साहित्य मे हाथ आजमाने की ओर प्रेरित किया और उसने आधा दर्जन उपन्यास लिखे जिनमे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण ये है—'दि एडवेचर्स ऑव रॉडरिक रैण्डम' (१७४८), 'दि एडवेचर्स ऑव पेरिग्रीन पिकिल' (१७५१) तथा 'दि एक्सपिडीशन ऑव हम्फ्री क्लिकर' (१७७१)। स्मॉलेट उपन्यास की कल्पना जीवन के "एक विशाल और ब्योरेवार चित्र" के रूप में करता था तथा फील्डिग के विपरीत उसने अपनी सामग्री को एक कलात्मक और सुसगठित रूप देने का प्रयत्न नही के बराबर किया। उसकी कहानियाँ बस साहसिक कार्यों की लडी मात्र है, और उनमे जो कुछ एकता दिखाई देती है वह केवल नायक के व्यक्तित्व के कारण है; उसका एक मात्र उद्देश्य यह था कि वह घटनाओ का क्रम अटूट बनाये रखकर पाठक की रुचि को जाग्रत बनाये रहे। उसकी आविष्कार संबंधी उर्वरता और प्रफुल्लता **तो निस्संदेह बड़ी असामान्य है;** परन्तु मात्र घटना से हम शीघ्र ही ऊब जाते है जब कि वह चरित्र से बिलकुल ही संबधित न हो; और स्मॉलेट का चरित्र-चित्रण प्रायः अत्यत भोड़ा है। रचना की शिथिलता, क्रिया-कलाप पर अत्यधिक निर्भरता, तथा उसके विषयो की प्रकृति सभी इस बात के प्रमाण है कि उसकी प्रवृत्ति 'पिकारेस्क' कथा-साहित्य की ओर लौटने की थी। यद्यपि उसके प्रशसक अब भी है तथापि उसके उपन्यासो का आनद उठाने के लिए यह आवश्यक है कि वर्तमान समय मे हममें से अधिकाश की जैसी धमनियाँ है उससे कही अधिक शक्ति-

शाली हो। उसने ससार का जैसा चित्रण किया है उसके अनुसार वह (ससार) एक गदा और कलुषित स्थान है तथा उसके निवासी अधिकाश में बड़े ही तुच्छ और अप्रीतिकर प्राणी है। जीवन के कलुषित से कलुषित और बीभत्स पक्षों का वर्णन करने मे उसे विशेष आनद मिलता है, तथा उसकी रचनाओं मे ऐसा कुछ भी नही प्राप्त होता जो इस व्यापक अधकार को कम कर सके क्योकि उसका हास्य भी प्राय: बड़े ही अशिष्ट और स्थूल प्रकार का है। हॉ, इसका एक अपवाद अवश्य है और वह है 'हम्फ्री क्लिंकर' जो अपनी पूर्ववर्ती रचनाओ की अपेक्षा कही अधिक शिष्ट तथा वास्तविक हास्य और चरित्रचित्रण की दृष्टि से कही अधिक सम्पन्न है। परतु इसके पहले की रचनाओ के विषय मे यही कहा जा सकता है कि उनमें इतिवृत्त की श्रेष्ठता हमे अपने साथ बहा ले जाती है तथापि उनमे ऐसी बहुत-सी बाते है जो किसी भी पाठक मे अरुचि उत्पन्न कर देगी चाहे वह कितना ही कम मीनमेख निकालने वाला हो। परतु हमे यहाँ यह याद रखना है कि स्मॉलेट ने शुद्ध रूप से एक व्यग्यकार और सुधारक की हैसियत से लिखा है तथा उसका उद्देश्य था कि वह जीवन की महती बुराइयो को उनके सच्चे रग मे और सच्चे पैमाने पर प्रस्तुत करे जिससे वह जनता का ध्यान उनकी ओर पूर्ण रूप से आकर्षित कर सके। हमे उसे इस बात का श्रेय तो अवश्य ही देना होगा कि 'रॉडरिक रैण्डम' मे दिये गये जहाज के दृश्यो की वास्तविकता ऐसी भयकर थी कि उसके कारण नौसेना की नौकरी की दशा सुधारने के लिए बडे क्रातिकारी परिवर्तन किये गये। यद्यपि सामान्यत. उसकी तुलना उसके दोनो पूर्ववर्तियो से नही हो सकती, तथापि उसने भी कथा-साहित्य के क्षेत्र की वृद्धि करने मे कुछ योग दिया। वह समुद्र तथा नौसैनिको से सबंधित उपन्यास का वास्तविक जन्मदाता था और अग्रेजी उपन्यासकारो मे पहला जिसने आयलैण्ड, स्काटलैण्ड तथा वेल्स निवासियों की राष्ट्रीय विलक्षणताओं का प्रयोग नियमित रूप से तथा सफलतापूर्वक किया।

७७. युग के अन्य उपन्यासकार––कथा-साहित्य सबधी उन रचनाओ में से, जिनकी अब बाजार मे बाढ़-सी आ गयी, अधिकांश का तो आजकल नाम भी नही स्मरण किया जाता। यहाँ हमें केवल कुछ लेखको की ही रचनाओं पर नजर डालनी है जिनका साहित्य के इतिहास में एक निश्चित स्थान है, चाहे इस कारण कि उनकी रचनाएँ स्वाभाविक रूप से श्रष्ठ है, अथवा इस कारण कि वे अस्थायी रूप से महत्त्व-पूर्ण हो गयी।

स्वभावत: हम सबसे पहले गोल्ड्स्मिथ के 'दि विकार ऑव वेकफील्ड' के विषय

में बात करेंगे जो कथा-साहित्य के क्षेत्र में उसका एक मात्र प्रयास था। गठन की दृष्टि से इससे यह प्रकट है कि स्मॉलेट की भाँति गोल्ड्स्मिथ ने भी फील्डिग के निर्देशो या उसके उदाहरण से कोई शिक्षा नही ली क्योकि इसका कथानक सुसंगठित नही है तथा ऐसी असंभावनाओ से भरा हुआ है जो अत्यत स्पष्ट है। अत मे, जिस प्रकार उसे सबद्ध करने का प्रयत्न किया गया है वह अत्यत उपहासास्पद है। परंतु जैसे हम गोल्ड्स्मिथ की व्यक्तिगत दुर्बलताओं के लिए अधिकाधिक रियायत करने को तैयार रहते है, उसी प्रकार हम उसकी रचना के प्राविधिक दोषो के सबध मे भी वैसी ही रियायत करने को तैयार है क्योकि यह उसकी अनोखी मोहकता व मृदुलता से ओतप्रोत है तथा इसकी सामग्री का प्रयोग ऐसी रूपातरकारी प्रवीणता के साथ किया गया है जो साधारण से साधारण बात को भी अप्रतिम सौदर्य से पूर्ण कर देती है। उसका हास्य आनद का अजस्र स्रोत है। यद्यपि उसके चरित्र-चित्रण का काफी बडा भाग शुद्ध रूप से रूढ़िपरक है, तथापि जिस सूक्ष्मता के साथ डाक्टर प्रिमरोज और उसके परिवार का चित्रण किया गया है उसकी कितनी भी प्रशसा की जाय अधिक न होगी। उसकी प्रमुख भावना एक सौम्य, पुरुषोचित धर्मनिष्ठा की भावना है, परंतु उसे अतिरजित करके हास्यास्पद कभी नही बनाया गया है। इसके अनेक वर्णनों में जो उदार सहानुभूति बिलकुल स्पष्ट दिखाई देती है--विशेषकर समाप्ति के लगभग जेल के दृश्यों मे वह यह सिद्ध करती है कि मानवता तथा यथार्थ सामाजिक अंतर्दृष्टि दोनों में ही गोल्डस्मिथ अपने युग के अधिकाश पेशेवर उपदेशको और शिक्षको से आगे था। उसके पूर्ववर्ती लेखको के हाथो मे उपन्यास शिक्षात्मक रहा था, परन्तु उसने एकदम इसको जनहित और दया की भावना से पूर्ण कर दिया।

इसके बाद रेवरेण्ड लॉरेंस स्टर्न की (१७१३–६८) जो स्वय भी एक विचित्र व्यक्ति था, विचित्र रचनाओ का उल्लेख होना चाहिए। उसकी 'लाइफ ऐण्ड ओपीनियन्स आंव ट्रिस्ट्रम शेण्डी, जेण्टिलमैन' नामक रचना १७५९ से १७६७ के बीच नौ भागों मे प्रकाशित हुई। इसे उपन्यास तो शायद ही कहा जा सकता है, बल्कि यह असंबद्ध घटनाओ, विलक्षण ज्ञान के विच्छिन्न टुकडो, सनक भरी कल्पनाओ, हास्य, करुण, चिन्तन, अविनय एवं अमर्यादा का अद्भुत सम्मिश्रण है। स्टर्न की शैली मे जिस विलक्षणता और सनकीपन के दर्शन होते है वह आकस्मिक नही है बल्कि उसे जानबूझ कर अपनाया गया है तथा सावधानीपूर्वक उसका संवर्धन किया गया है। उसकी इस रचना मे किसी दृढ आधार की तो इतनी नगण्यता है कि यदि वह दस वर्ष और जीवित रहता तो उसने बड़ी आसानी से इसी योजना के आधार पर नौ भाग

और लिख डाले होते (क्योकि अपनी मृत्यु के समय उसने इसको अपूर्ण ही छोड़ा) और फिर भी किसी यथार्थ निष्कर्ष की ओर रंचमात्र भी प्रगति न होती। उपन्यास-कार के रूप में उसका जो स्थान है वह उसकी चरित्र-चित्रण की आश्चर्यजनक शक्ति के कारण है। ट्रिस्ट्रम शैण्डी के पिता और माता, कार्पोरल ट्रिम, तथा चचा टोबी अठारहवी शताब्दी के कथा-साहित्य के सबसे जीवित चरित्रो में से है। एक अन्य प्रकार से भी वह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। हम कह चुके है कि भावनाओ की पुन. प्रतिष्ठा इस युग के जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी। युग की सामान्य दशाओं पर विचार करते हुए यह बात आश्चर्य की नही है कि पिछली पीढी की शुष्क बौद्धिकता के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई उसमे भावनाएं अनियत्रित होकर उच्छृखल हो गयीं और परिणामस्वरूप एक नये मनोभाव, अर्थात् अत्यधिक भावनात्मकता के "द्रवित" मनोभाव का जन्म हुआ। एक नये प्रकार के व्यक्ति--"भावनाप्रधान व्यक्ति" ('मैन ऑव फीलिग')--का प्रादुर्भाव हुआ जिसकी प्रकृति सब वस्तुओं के करुण पक्ष की ओर ही आकर्षित होती थी और जिसको विषाद भाव के सवर्धन मे एक विचित्र सतोष प्राप्त होता था। फिर, जैसे-जैसे जनसाधारण यह अनुभव करने लगे कि अतिरजित भावनात्मक अवस्थाओं से एक अद्भुत और सरस आनंद की प्राप्ति होती है, वैसे ही वैसे जो लोग उनके मनोरजन के लिए उपाय करते थे वे स्वाभाविक रूप से ऐसी अवस्थाओं को उत्पन्न करने के कार्य मे प्रवृत्त होने लगे। यह नवीन भावनात्मकता रिचर्डसन मे काफी मात्रा मे है; परन्तु स्टर्न ही सबसे पहला अंग्रेजी लेखक था--जिस प्रकार रूसो यूरोप मे सर्वप्रथम लेखक था--जिसने इसका व्यवहार अपने नियमित साहित्यक भंडार के आवश्यक अग के रूप मे किया; और इस विषय में उसकी ऐसी आदत-सी हो गयी थी कि इसने उसके पृष्ठो को एक प्रकार की फफूद से भर दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने इसके लिए उचित नाम भी ढूंढ निकाला। कुमारी लमले नामक एक मित्र को १७४० के लगभग लिखे गये एक पत्र मे वह उसको उन "भावनात्मक" ('सेण्टीमेण्टल') दावतों की याद दिलाता है जो उन दोनो ने साथ-साथ उडायी थी। जिस अर्थ में इस विशेषण का प्रयोग आजकल होता है उसमे इसका प्रयोग किये जाने का यह पहला ज्ञात उदाहरण है और शीघ्र ही स्टर्न ने अपनी यूरोप यात्रा का जो वर्णन "सेण्टीमेण्टल जर्नी' के नाम से प्रकाशित करवाया उसमे उसने स्वय ही इसको लोकप्रिय और अमर बना दिया। अवश्य ही वह इस अश्रुपूर्ण मनोभाव का स्रष्टा नही था (कोई भी व्यक्ति अकेला इसका निर्माता नही था), परंतु उसकी रचनाएँ इस तेजी से बढ़ रहे फैशन के अनुसार ही थी। इसी कारण

वह इसको जाग्रत और प्रसारित करने मे सहायक हुआ। उसके प्रत्यक्ष अनुयायियो मे से एक हेनरी मेकेन्जी (१७४५–१८३१) का कुछ महत्त्व है। उसकी प्रमुख उपन्यास-कृति 'दि मैन ऑव फीलिग' का महत्त्व उसके शीर्षक से ही प्रकट है। स्टर्न के अन्य गुणो का तो उसमे पूर्ण अभाव था, परन्तु उसकी सुस्पष्ट भावनात्मकता का अतिरंजन मेकेजी ने खूब किया, और उसकी रचना मे आदि से अन्त तक आँसुओं की खूब ही झडी लगी है। जैसा कि ठीक ही कहा गया है, यह पुस्तक कम से कम शुष्क तो बिलकुल ही नही है। इसके विपरीत मैं तो यह कहूँगा कि यह अग्रेजी साहित्य की सबसे अश्रुसिक्त पुस्तको मे से है।

आगे चलकर मेकेन्जी ने फ्रांसीसी राज्यक्रांति का विरोध किया, परन्तु उसकी प्रारभिक रचनाओ मे विद्रोह की उस सामान्य भावना के प्रभाव के अनेक चिह्न वर्तमान है जो अठारहवी शताब्दी के द्वितीयार्द्ध मे इग्लैण्ड मे बड़ी शीघ्रता से प्रबल हो उठी। हम यह भी देखते है कि जो लेखक कोई सन्देश देना चाहते थे वे शीघ्र ही यह अनुभव करने लगे कि अपने राजनीतिक और सामाजिक विचारों को लोकप्रिय बनाने के लिए उपन्यास अत्यन्त प्रभावोत्पादक साधन सिद्ध हो सकता है। उदाहरणार्थ विलियम गॉड्विन (देखो § ७१) ने अपनी शक्तिशाली पुस्तक 'कैलेब विलियम्स, ऑर थिग्स एज दे आर' (१७९४) इस उद्देश्य से लिखी थी कि (मूल प्रस्तावना के अनुसार) वह "उस घरेलू और अलिखित निरकुशता के रूपो की एक सामान्य समीक्षा प्रस्तुत कर सके जिसके कारण मानव मानव का विनाश करता है।"

उपन्यास के विकास में यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्राय· प्रारभ से ही स्त्रियो ने इसमे भाग लेना आरभ कर दिया। स्त्रियो के उपन्यास की वास्तविक नीव फ्रैसिसबर्नी (१७५२-१८४०) के 'ईवलिना, ऑर दि हिस्टरी ऑव ए यग लेडीज इण्ट्रेस इण्टु दि वर्ल्ड' ('ईवलिना, अर्थात् एक युवती के ससार मे प्रवेश का इतिहास') नामक उपन्यास द्वारा पडी, यद्यपि उसके पहले भी बहुत-सी स्त्रियों ने कथा-साहित्य की रचना की थी। इसका प्रकाशन 'विकार ऑव वेकफील्ड' के बारह वर्ष बाद १७७८ में हुआ था जब "नन्ही फैनी" (जैसा जॉनसन उसे स्नेहपूर्वक पुकारता था) केवल २६ वर्ष की ही थी। 'क्लैरिसा' के बाद की रचनाओं में इसको सबसे सफल रचना माना जाता है। बहुत अंशों में यह पूर्ण रूप से अठारहवी-शताब्दी-सम्प्रदाय की रचना थी। स्पष्टतया इस पर रिचर्डसन का आभार बहुत अधिक है, क्योंकि इसमे उसकी पत्र-शैली और भावनात्मकता

दोनो को ही अपनाया गया है। परन्तु विस्तार और उदार हास्य में, जो इसका सबसे बलवान् पक्ष है, इसमे फ़ील्डिग और स्मॉलेट की परम्परा का अनुसरण किया गया है, हाँ उनकी अश्लीलता इसमें नही है। साथ ही, यह एक वस्तुतः नयी चीज भी थी, क्योंकि यह पहला उपन्यास था जिसमे एक स्त्री के जीवन का चित्रण बिलकुल खुले रूप से स्त्रियों के ही दृष्टिकोण से किया गया था। अतएव हम मिस बर्नी को उपन्यास-रचना के "चाय की मेज वाले संप्रदाय" ('टी-टेबुल स्कूल') का संस्थापक मान सकते है। उसकी द्वितीय रचना 'सेसीलिया' की योजना इससे अधिक विशाल थी, लेकिन उसमे इस रचना की ताजगी का अभाव था। इसके बाद के उसके उपन्यास पूर्ण असफल रहे।

७८. **प्रेमाख्यान ('रोमांस') का पुनरुज्जीवन**––यद्यपि अठारहवी शताब्दी मे उपन्यास का प्रधान उद्देश्य लोगो व उनके तौर-तरीको का चित्र खीचना था, तथापि इसको जो लोकप्रियता प्राप्त हुई उससे यह अवश्यम्भावी हो गया कि उस युग के विभिन्न प्रभावो के अन्तर्गत शीघ्र ही अनेक दिशाओ मे इसका प्रसार हो। इस प्रकार जब उपन्यास लोगों की मध्य-युग में बढती हुई रुचि के प्रभाव में आया तो एक नये महत्त्वपूर्ण आदोलन का सूत्रपात्र हुआ। जैसा हम आगे चलकर जरा विस्तार से देखेगे, मध्ययुग मे लोगों की यह रुचि उन महान् परिवर्तनो का एक प्रमुख लक्षण थी जो सर्वसाधारण की अभिरुचि मे हो रहे थे। इसका परिणाम हुआ 'रोमास' का पुनरुज्जीवन। इस पुनर्जागरण मे सबसे प्रमुख नाम हारेस वालपोल का है जिसका उल्लेख एक पत्र-लेखक के रूप मे पहले ही हो चुका है। फैशन-प्रिय होने और कला एव प्राचीन इतिहास से सबधित वस्तुओ मे रुचि होने के कारण वालपोल ने अपने दीर्घजीवन मे बहुत-सी चीजों मे हाथ डाला। १७४७ मे ही उसने ट्विकेनहम के पास एक छोटा-सा घर खरीदा था और धीरे-धीरे करके उसने उसको एक छोटे-से 'गॉथिक' (मध्ययुगीन) गढ का रूप दे दिया। इसमे उसने बडी सतुष्टिपूर्वक अपने अद्भुत वस्तुओ के सग्रह तथा कला-वस्तुओ को स्थापित किया। पूरे-पूरे कवच, रोमन कैथलिकों की सचित्र और बेलबूटो से सजी हुई पूजा-पुस्तके, रगीन शीशो के नमूने तथा इसी प्रकार की अन्य विविध वस्तुएँ। उसका 'कासिल ऑव ऑट्रैण्टो' (१७६५) जिसको उसने "गॉथिक" प्रेमाख्यान कहा है, उन्ही विचित्र रुचियो की उपन्यास-रूप मे अभिव्यक्ति है जो स्ट्राबेरी हिल के उस खिलौना-गढ़ मे वास्तु-कला के माध्यम से पहले ही अभिव्यक्त की जा चुकी थीं। स्वयं उसी के वर्णन के अनुसार इसको लिखने की प्रेरणा उसे एक स्वप्न द्वारा

प्राप्त हुई जिसमे उसने "कवच से ढका हुआ एक विशाल हाथ" देखा था। यह असाधारण पुस्तक आजकल हमको बच्चों-जैसी मूर्खताओं की ढेरी-मात्र लगती है और जब हमको इसकी भोंड़ी अलौकिक घटनाओ द्वारा भयभीत और आश्चर्य-चकित होना चाहिए तब हमे केवल हँसी आती है, उदाहरणार्थ जब एक तस्वीर अपने फ्रेम से नीचे उतर आती है, या जब एक मूर्ति की नाक से खून बहने लगता है। परन्तु उस समय तथा इसके बाद की पीढी के पाठको ने इसको बडी ही गभीरता-पूर्वक लिया। ग्रे तो इससे इतना भयभीत हुआ कि रात को सोने के लिए ऊपर जाने मे भी उसे डर लगता था। बायरन ने इसको "अग्रेजी भाषा का प्रथम रोमास" बताया, और स्कॉट ने इसकी प्रशसा हमेशा की तरह अतिशय उदारता के साथ की है। इसकी लोकप्रियता के कारण इसके अनुकरण पर भी तमाम पुस्तके लिखी गयी जिनमे से एक अर्थात् क्लैरा रीव की 'ओल्ड इग्लिश बैरन' (१७७७) विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसका वर्णन भी "एक गॉथिक कहानी" के ही रूप मे होता है। इसके महत्त्व का कारण यह है कि इसमे स्पष्ट रूप से ऐसा प्रयत्न किया गया है (यद्यपि वह बहुत सफल नही हुआ) कि पाठक की 'रोमाण्टिक' रुचि जाग्रत तो हो, परन्तु उसके लिए प्रयुक्त साधन वालपोल द्वारा व्यवहृत सामग्री की अपेक्षा कम अविश्वसनीय और अधिक सुस्थिर हों। फिर भी जिस रोमाण्टिक साहित्य की रचना अठारहवी शताब्दी के अतिम दशाब्दो मे विशाल मात्रा मे हुई उसमे अत्यधिक अतिशयोक्तिपूर्ण विस्मयोत्पादन एक सामान्य विशेषता है। इसका अधिकांश भूली हुई चीजो के कूडे के ढेर मे जा चुका है, परन्तु दो लेखको की रचनाओ का अब भी थोड़ा-सा ऐतिहासिक महत्त्व है। एन रैडक्लिफ़ (१७६४-१८२३) के 'रोमान्स ऑव दि फॉरेस्ट' (१७९१), 'दि मिस्टरीज़ ऑव यूडोल्फो (१७९४) तथा 'दि इटैलियन' (१७९७) के पाठकों की संख्या बहुत ही बडी थी। ये पुस्तकें अत्यधिक लम्बी, कथानक की दृष्टि से बहुत ही उलझी हुई तथा रोमाचकारी घटनाओं से भरी है। वास्तव मे ये लोमहर्षक और भयकारी घटनाओं से इतनी ज्यादा भरी हुई है कि यथार्थ में इनकी लेखिका बड़ी ही शान्त और साधारण कोटि की स्त्री थी, तथापि उसके विषय मे यह प्रचलित हो गया कि इनको लिखते समय वह सचमुच मे पागल हो गयी थी। मैथ्यू ग्रेगरी लूइस (१७७५-१८१८) ने भी, जिसको सबसे अधिक अब स्कॉट के साथ उसके व्यक्तिगत सबधो के कारण याद किया जाता है, कुछ इसी प्रकार से अपनी पहली पुस्तक 'ऐम्ब्रोज़ियो, ऑर दि मॉन्क' द्वारा महान् सफलता प्राप्त की। इसका प्रका-

शन जब वह बीस वर्ष का था तभी हुआ था। इस पर 'दि कासिल ऑव ऑट्रैण्टो' और 'दि मिस्टरीज ऑव यूडोल्फो' का बहुत अधिक ऋण है, यद्यपि सामग्री और प्रभावों की अनियत्रित विस्मयोत्पादकता दोनो मे इसने इन दोनो रचनाओं को हटा दिया है। इन दोनों लेखको मे से किसी की भी रचनाओ मे ऐसी कोई चीज नही है जिसमे हमारी आजकल अधिक रुचि हो। परन्तु रोमाण्टिक मध्ययुग की ओर उनके परावर्तन तथा रहस्य और अलौकिकता के स्वच्छद प्रयोग द्वारा कल्पना को प्रभावित करने का जो प्रयास उन्होने किया उसका जो ऐतिहासिक महत्त्व है उसे ध्यान मे रखना आवश्यक है; साथ ही यह भी अवश्य याद रखना चाहिए कि उन्होने स्कॉट की प्रतिभा को प्रबुद्ध करने और उर्वर बनाने मे बड़ा कार्य किया।

अध्याय १७

जॉन्सन-युग (समाप्त)

पद्य

७९. सामान्य विशेषताएँ––जैसा हम कह चुके है, अठारहवी शताब्दी के उत्तरकालीन अंग्रेजी काव्य का इतिहास प्राचीन और नवीन के सघर्ष तथा नवीन की क्रमिक विजय का इतिहास है। एक ओर वे लेखक थे जो पोप-सप्रदाय की सामान्य परम्परा का अनुसरण करते थे तथा जिनका उद्देश्य उस विशेष प्रकार की कविता की रचना करना था जिसको पोप ने पूर्णता पर पहुँचाया और लोकप्रिय बनाया था। अतएव इन लोगों की रचनाओ मे हम देखते है कि जिसको हम 'आगस्टन' परम्परा कह सकते है उसी को जारी रखा गया है। दूसरी ओर नयी पीढी के लेखको के बीच पोप-सम्प्रदाय की परम्परा का परित्याग करने, विभिन्न प्रकार के प्रभावो की ओर उन्मुख होने तथा नये विषयो, नये रूपो एवं भावना और अभिव्यक्ति की नयी विधियों को खोजने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। अतएव इन लोगो की रचनाओं में हम 'आगस्टन' परम्परा का विध्वंस देख सकते है। जब जोजेफ वार्टन ने अपने 'एसे ऑन पोप' (१७५६) मे यह तर्क किया कि पोप महान् 'वाग्विदग्ध' (विट) तो था, परन्तु महान् कवि नही, क्योंकि उसके साहित्य में उन कल्पनात्मक और भावनात्मक गुणों का अभाव था जो सच्ची कविता के लिए आवश्यक है, जब यग ने रिचर्डसन के सबोधित अपने 'कजेक्चर्स ऑन ओरिजिनल कम्पोजीशन' (१७५९) में यह प्रतिपादित किया कि कवियो को क्लासिक आदर्शो का अनुकरण करना छोड देना चाहिए और प्रकृति तथा वैयक्तिक प्रतिभा की प्रेरणाओं पर निर्भर रहना चाहिए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगो की रुचि मे जो परिवर्तन हो गया था उसकी अभिव्यक्ति प्रचलित परम्परा के सिद्धांतों के विरुद्ध किये गये विद्रोह के रूप मे होने लगी।

इस प्रकार जॉन्सन-युग काव्य-रचना की दृष्टि से स्पष्टतः एक सधि-काल था, परिवर्तन तथा नाना प्रकार के प्रयोगों का काल था। परन्तु यह याद रखना

आवश्यक है कि प्राचीन से नवीन की ओर जाने वाला यह महान् आदोलन शक्तियों का परिणाम था, तथा व्याख्या करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आदोलन बहुत-से थे और सब भिन्न-भिन्न मार्गो का अनुसरण कर रहे थे। इस स्थल पर पाठक को चाहिए कि वह काव्य-रचना के क्लासिकल सप्रदाय की प्रधान विशेषताओ के पहले ही दिये जा चुके (§ ५९) सार को फिर से देख ले। जैसा वहाँ दिखाया गया है, 'क्लासिकल' काव्य (१) मुख्य रूप से बुद्धि की उपज थी तथा भावना और कल्पना का उसमे अत्यन्त अभाव था; (२) यह प्राय· ऐकातिक रूप से 'नगर' काव्य था; (३) 'रोमाण्टिक' भावना का इसमे स्पष्ट अभाव था; (४) शैली मे यह अत्यधिक औपचारिक और कृत्रिम था; तथा (५) इसमे दो पक्तियों मे ही भाव समाप्त हो जाने वाले दोहा-छद का कड़ाई से प्रयोग होता था। इन सभी बातो के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। (१) भावना, अन्तर्वेग और कल्पना ने कविता पर ऐसा आक्रमण किया कि उसकी शुष्क बौद्धिकता नष्ट हो गयी तथा पुराने सकुचित उपदेशात्मक सिद्धातो का बहिष्कार कर दिया गया। (२) "नगर" के साथ काव्य का जो ऐकान्तिक सबध था वह समाप्त हो गया और उसमे प्रकृति तथा ग्राम्य जीवन का वर्णन होने लगा। एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लक्षण उस प्रवृत्ति का विकास था जिसके कारण लोग सुचित्रोपम रमणीयता की ओर आकृष्ट होने लगे। (३) "रोमाण्टिक" भावना का पुनरुज्जीवन हुआ और इस पुनरुत्थान के कारण काव्य के विषयो और उसकी प्रकृति मे महान् परिवर्तन हुए। (४) अब "काव्य-भाषा" की परम्परागत सकुचित रूढियो से मुक्ति पाने तथा उनका स्थान पदरचना की सादगी और प्राकृतिक भाषा को देने के प्रयत्न किये गये। (५) दोहा-छद की सार्वभौमिकता पर आक्रमण किया गया तथा उसके स्थान पर अन्य काव्य-रूपो का प्रयोग किया गया।

प्रतिक्रिया की ये धाराएँ कभी तो एक दूसरे से स्वतंत्र रही, कभी एक साथ चली और कभी-कभी उनका सयोग भी हुआ; फलस्वरूप पेचीदगी इतनी बढ जाती है कि अठारहवी शताब्दी की उत्तरकालीन अग्रेजी कविता का ब्यौरेवार वर्णन इस प्रकार के सक्षिप्त रेखाचित्र की सीमाओ के अन्दर देना असभव होगा। केवल अतिशय महत्त्व की कुछेक बातो को छुआ भर जा सकता है। सरलता के विचार से हम पहले आगस्टन परम्परा की निरतरता को लेगे; तत्पश्चात् हम इस परम्परा के विच्छेद के कुछ पहलुओ पर विचार करेगे; तथा अन्त मे हम कुछ व्यक्तिगत कवियो के बारे में बात करेगे जिनके साहित्य का वैयक्तिक अथवा ऐति-

हासिक दृष्टि से इतना महत्त्व अवश्य है कि उससे उसके पृथक् उल्लेख का औचित्य सिद्ध हो सके।

८०. आगस्टन परम्परा का जारी रहना––अनेक गौण लेखको की उपेक्षा करके, हम इसको दो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण लेखकों–जॉन्सन और गोल्ड्स्मिथ के नामो से सम्बद्ध कर सकते है।

एक बात जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है, पर जोर देना आवश्यक है। वह यह है कि जॉन्सन और गोल्ड्स्मिथ दोनों ही साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष मे प्रबल रूढिवादी थे। परिवर्तन के इस युग मे वे अपने तात्कालिक अतीत के प्रति ही निष्ठावान् रहे। जैसा मेकाले ने कहा है, "जॉनसन का विश्वास था कि जिस प्रकार की कविता का उत्कर्ष उसके समय मे हुआ तथा जिसकी प्रशसा सुनने का वह बचपन से ही अभ्यस्त हो चुका था" वही सर्वश्रेष्ठ कविता थी; और उसने न केवल इसके नियमो के स्पष्ट समर्थन द्वारा इसका पक्षपोषण किया, बल्कि निरतर ऐसे प्रत्येक प्रयोग का विरोध भी किया जिसमे इसे इस कविता के विरुद्ध विद्रोह के चिह्न दृष्टिगोचर हुए, उदाहरणस्वरूप, गाथा का पुनरुत्थान (§ ८४) ऐसा ही एक प्रयोग था। इसी प्रकार गोल्ड्स्मिथ का भी दृढ विश्वास था कि "भावी अनुकरण के लिए सच्चा आदर्श" 'आगस्टन' युग के लेखको मे ही प्राप्त हो सकता था। मेसन के शब्दों मे, उसके अनुसार "पोप क्लासिक अंग्रेजी साहित्य की चरम-सीमा था," तथा सभी महत्त्वपूर्ण बातो मे उसने अपने को मूलतः परिवर्तन का शत्रु ही प्रदर्शित किया है। उदाहरणस्वरूप, उसे अतुकात छन्द से विद्वेष-सा था। इस प्रकार हम यह देखेगे कि इन दोनो लेखको का रचनात्मक साहित्य विषय और शैली दोनो ही दृष्टियो से स्पष्ट रूप से क्लासिकल है। जॉन्सन की दो प्रमुख कविताएँ 'लण्डन' तथा 'दि वैनिटी ऑव ह्यूमन विशेज' पूर्ण रूप से पिछली पीढी की ही कही जायेगी। अपनी विषाद-भावना में अवश्य ही वे पिछली पीढ़ी की नही है, क्योकि वह तो कवि के व्यक्तिगत चरित्र की अभिव्यक्ति है, परन्तु अपनी उपदेशात्मकता, अपनी औपचारिक और आलकारिक शैली, तथा दोहा-छंद के प्रति अपनी निष्ठा मे तो उन्हें उसी पीढ़ी का माना जायेगा। यही बात गोल्ड्स्मिथ की दो महत्त्वपूर्ण कविताओ 'दि ट्रैवेलर' और 'दि डेज़र्टेड विलेज' के विषयो मे कही जा सकती है क्योकि ये भी, राजनीतिक अर्थशास्त्र पर लिखे हुए छन्दवद्ध पैम्फलेट-जैसे होने के कारण, स्पष्टतः शिक्षात्मक है; वे दोहा-छंद में लिखी गयी है जिसका वे अत्यन्त प्रशंसनीय उदाहरण है; तथा प्रायः उनका सौदर्य उस आड-

म्बरपूर्ण कृत्रिम पदावली द्वारा नष्ट हो गया है जो उस समय प्रभावोत्पादक समझी जाती थी। अतएव इन्हें समाप्तप्रायः कृत्रिम अठारहवी शताब्दी सम्प्रदाय की अंतिम महान् रचनाएँ कहना अनुचित न होगा। परन्तु जब हम उनकी परीक्षा अधिक सूक्ष्मता से करते है तो हम अनुभव करते है कि चूँकि गोल्ड्स्मिथ ने जो कुछ भी लिखा सबमें स्वय की तथा अपनी काव्यात्मक स्वभाव की अभिव्यक्ति की है, इसलिए यद्यपि नाममात्र को इसमे 'आगस्टन' परम्परा का अनुसरण किया गया है तथापि अनेक प्रकार से उस परम्परा से विच्छेद के भी प्रमाण मिलते है। यद्यपि वे शिक्षात्मक और दार्शनिक हैं तथापि उनमे प्रतिपादित मत प्राय शुद्ध काव्य-गुण-सम्पन्न प्रासगिक भाषणों के लिए बहाना मात्र सिद्ध हुआ है और उनका तर्क केवल ऐसी डोरी के समान है जिसको लेखक ने चित्रों, विचार-विमर्श तथा सस्मरणो को लटकाने के काम मे लिया है। जो सुकुमार भावना उनमे सर्वव्याप्त है तथा जो उनके विशिष्ट सौन्दर्य के लिए इतनी अधिक उत्तरदायी है वह भी महत्त्वपूर्ण है। गोल्ड्स्मिथ को भावनात्मकता से बडी अरुचि थी, परन्तु उसके ऊपर भी इसकी बढती हुई शक्ति का प्रभाव पड़े बिना न रहा। उनमे प्रकृति और ग्राम्य-जीवन का जैसा वर्णन किया गया है उसका भी उल्लेख होना आवश्यक है। स्मृति की धूमिका (कुहरे) के माध्यम से अपने गत अनुभवो का पुन प्रेक्षण करते हुए कवि को वे सब बातें याद आती है जिनको उसने स्वय देखा और जाना है, और वह उन्ही के विषय मे लिखता है। यद्यपि उसके प्राकृतिक दृश्य तथा ग्रामिकजन निस्सदेह कुछ रूढिपरक है, तथापि इस पर भी उसके वर्णनो मे एक ऐसा वैयक्तिक गुण है जिसके विषय मे जरा भी भ्रम नही हो सकता। अतएव यह स्पष्ट है कि रूढिवादी होते हुए भी गोल्ड्स्मिथ अपने चारो ओर कार्य कर रहे प्रभावों के वश मे आ गया, यद्यपि उसे स्वय इस बात का पूरा पता नही था। जहाँ तक जॉन्सन का सबध है, यह बात याद रखना विशेष रूप से हितकर होगा कि यद्यपि वह अपने समय के साहित्यिक ससार की अद्वितीय और सबसे सशक्त वैयक्तिक शक्ति था, तथापि इतने पर भी वह उस नयी भावना के आक्रमणों को रोकने मे असमर्थ रहा जिससे वह घृणा करता था।

८१. काव्य-रूपों में प्रतिक्रिया——आगस्टन परम्परा के विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया के पहलुओं पर विचार करते हुए हमारे लिए यह सुविधाजनक होगा कि हम प्रारभ उस परिवर्तन से करें जो काव्य-रूप मे दिखाई देता है, यद्यपि इसका वर्णन केवल

अपने मे ही सर्वांगपूर्ण नही हो सकता क्योकि इसका सबध सामान्य रूप से अन्य दिशाओ मे हुए परिवर्तनों से भी है।

शैली-सबधी इस प्रतिक्रिया का प्रमुख लक्षण था पोप के दोहा-छद का परित्याग तथा दूसरे प्रकार के छदो के साथ किये गये प्रयोग। यह संभव है कि ये प्रयोग कुछ अशो मे उस स्वाभाविक अधैर्य द्वारा प्रेरित हुए जो किसी एकाकी, नीरस शैली से होने लगता है, तथा परिवर्तन की इच्छा द्वारा भी जो इस अधैर्य के साथ-साथ चलती है। परन्तु आगस्टन-युग से पूर्व के दीर्घकाल से उपेक्षित लेखको मे पुनर्जागरित रुचि का जो सीधा प्रभाव पड़ा उसको भी स्वीकार करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, अतुकात छद के उत्थान तथा उसकी बढती हुई लोकप्रियता का प्रमुख तात्कालिक कारण था मिल्टन की बढती हुई प्रशसा। अठारहवी शताब्दी मे अतुकात छन्द की प्रथम महत्त्वपूर्ण रचना, टॉम्सन की 'सीजन्स', जिसका उल्लेख आगे चलकर पुन· किया जायेगा, स्पष्टतया मिल्टन के अतुकात छन्द पर आधारित थी। जैसा पहले कहा जा चुका है (§ ६२), पोप-युग के अन्तिम वर्षो मे इसी छन्द के अन्य उदाहरण है सॉमरविल की 'दि चेज', यग की 'नाइट थॉट्स' तथा ब्लेयर की 'दि ग्रेव'। अब हम इस सूची मे डायर की 'दि रुइन्स ऑव रोम' (१७४०) तथा एकेन्साइड की 'दि प्लेजर्स ऑव इमैजिनेशन' (१७४४) को भी जोड़ सकते है। जॉन्सन-युग मे अतुकात छद का प्रयोग बहुत बढ गया तथा गोल्ड्स्मिथ ने 'दि ट्रैवेलर' के समर्पण मे तथा अन्य स्थलो पर इसके सबध मे जो भाषा प्रयुक्त की है उससे सिद्ध है कि यह उस समय दोहा-छद के साथ-साथ दृढतापूर्वक स्थापित हो चुका था, यद्यपि इससे गोल्ड्स्मिथ को क्लेश बहुत हुआ था। इसी प्रकार स्पेन्सरियन पुनर्जागरण मे भी लोगो की ऐसी ही रुचि हुई। इसका प्रारंभ इस शताब्दी के आरभिक वर्षों मे ही हो गया था जब स्पेन्सरियन पद्यांश (देखो § २६) तथा यहाँ तक कि स्पेन्सर की प्राचीन भाषा का भी अनुकरण करने के अनेक प्रयास किये गये, यद्यपि इनमे से एक भी गभीर या महत्त्वपूर्ण न था। शीघ्र ही इन प्रयोगों का प्रचार अत्यधिक बढ़ गया जो इसी बात से प्रकट है कि १७३० और १७७५ के बीच इस पद्यांश मे लिखी हुई ५० से भी अधिक कविताएँ प्रकाशित हुई। जॉन्सन ने 'दि रैम्ब्लर' (१४ मई, १७५१) मे इसका जो जोरदार विरोध किया वह इस विशेष आदोलन की बढ़ती हुई शक्ति का अकाट्य प्रमाण है। डाक्टर जॉन्सन लिखता है, "कुछ विद्वान् और प्रतिभावान् व्यक्तियों के प्रभाव के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि स्पेन्सर का अनुकरण युग पर हावी हो जायगा।" यह

एक ऐसी परिस्थिति होगी जिस पर वह आगे चलकर शोच प्रकट करता है। हमने स्पेन्सरियन पुनर्जागरण के विषय मे यहाँ इसलिए लिखा है कि प्रारभ मे यह केवल छंद-रचना से ही सबंधित था। परन्तु धीरे-धीरे 'फेयरी क्वीन' का जादू उन सभी लोगों पर पड़ने लगा जिन्होंने इसको पढा और अनुकरण किया, और इस प्रकार नयी पीढी के लिए युद्ध और प्रेम से परिपूर्ण क्षात्रधर्म, साहसिक कार्यो की खोज मे घूमने वाले सरदारो व मध्ययुगीन प्रेमाख्यान के आश्चर्य-जगत् के द्वार खोलने मे स्पेन्सर ने सहायता की। इस शताब्दी की तीन प्रमुख स्पेन्सरियन कविताओ की तुलना से इस आदोलन की सामान्य गति का कुछ पता लग सकता है। विलियम शेन्सटन (१७१४-१७६३) की 'दि स्कूलमिस्ट्रेस' (१७४२, सशोधित १७५०) मे, जिसमे गॉव की दादी के एक पुराने स्कूल का रोचक चित्र खीचा गया है, स्पेन्सर की भाषा और शैली का प्रयोग स्पष्ट रूप से प्रहसन के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए किया गया है, लेखक ने घोषणा की कि वह किसी भी बात से स्पेन्सर के प्रति गभीर दृष्टिकोण अपनाने को कभी भी बाध्य नही होगा। टॉम्सन की 'कासिल ऑव इण्डोलेन्स' (१७४८) मे 'फेयरी क्वीन' की गॉथिक साज-सज्जा का काफी प्रयोग हुआ है तथा उसकी बहुत-सी मौलिक विशेषताएँ इसमे पुनः प्रस्तुत कर दी गयी है। जेम्स बीटी (१७३५-१८०३) की 'दि मिन्सट्रेल' (१७७१-७४) मे स्पेन्सर का केवल बाह्य अनुकरण करने की प्रवृत्ति का पूर्ण निराकरण कर दिया गया है, केवल छद के सबध मे छूट दी गयी है, परन्तु गुरू के विस्तृत प्रभाव का प्रमाण उन कारणो मे मिल जाता है जो कवि ने अपने द्वारा इस छंद को चुने जाने के समर्थन मे दिये है। वह कहता है, "इससे मेरे कानो को सुख मिलता है, तथा इसके मौलिक गॉथिक सगठन के कारण ऐसा मालूम होता है कि कविता के विषय व उसकी भावना से इसका कुछ सबध है।"

छन्द के क्षेत्र मे हुई सामान्य प्रतिक्रिया से सबधित दो बातों को स्पष्ट कर देना आवश्यक है। प्रथम यह कि प्राविधिक गुण तथा कलात्मक प्रभाव की दृष्टि से अतुकात छद और स्पेन्सरियन पद्यांश दोनों ही सामासिक और सूत्रात्मक दोहा-छंद के बिल्कुल विलोम है; और उन्होने नयी पीढी को दोहा-छद से भिन्न होने के कारण तो प्रभावित किया ही, परन्तु साथ ही इस कारण भी प्रभावित किया कि उनमें नम्यता बहुत थी तथा वे कवि के मस्तिष्क को स्वच्छंद गति का अवसर प्रदान करते थे। दूसरी बात यह है कि यद्यपि बहुत से कवियों ने दोहा-छंद का बहिष्कार कर दिया, तथापि स्वयं दोहा-छद का रूप वही रहने दिया गया जो वह

अतिम रूप से पोप के हाथो मे ग्रहण कर चुका था। दूसरे शब्दो में, उन्नीसवी शताब्दी मे भी काफी समय बीत जाने तक, जब कवियों को दोहा-छंद का प्रयोग करना ही होता था तो वे उसके 'क्लासिक' रूप को ही ग्रहण करते थे। जैसा हम शीघ्र ही देखेगे, जब ले हण्ट और कीट्स ने काव्य-रचना प्रारभ की तभी छंद-संबधी इस प्रतिक्रिया का प्रभाव दोहा-छद पर भी पडा तथा दीर्घकाल से आधिपत्य का उपभोग करने वाले पोपीय दोहे के स्थान पर अनिर्बध और शिथिल रोमाण्टिक दोहे का प्रयोग होने लगा।

८२. **अठारहवीं शताब्दो के काव्य में प्रकृति-प्रेम का विकास**––प्रकृति के प्रति प्रेम तथा सुचित्रोपमता की भावना का विकास पोप और वर्ड्सवर्थ के बीच के अंग्रेजी काव्य के इतिहास की सर्वाधिक सुस्पष्ट और महत्त्वपूर्ण विशेषताओ मे से है। यह सत्य है कि पुनस्सस्थापन-काल तथा ऐन-युग के पूर्णतया नागरिक साहित्य तक मे कभी-कभी हमे ताजी हवा का ऐसा झोका लगता है जो सीधे जगलों और खेतो से आता हुआ प्रतीत होता है। मिल्टन और मार्वेल का तो कहना ही क्या, जो "जलप्लावन के पूर्व की अतिमानव जाति" के ही शेषांश थे, हमें स्मरण रखना चाहिए कि टॉमस पार्नेल (१६७९-१७१८) और लेडी विन्चिल्सी (लगभग १६६०-१७२०) की रचनाओ मे भी प्राकृतिक सौन्दर्य तथा ग्राम्य जीवन की मनोहरता की सच्ची अनुभूति दिखाई देती है। परन्तु ये लोग अपवाद थे, तथा साधारण तौर से विचार करते हुए यह कहना न्यायसगत होगा कि हमारी आगस्टन अंग्रेजी कविता नगर-जीवन की ही कविता थी। इस युग की कविता देवी को काफी-हाउसो और ड्राइग-रूमो मे विचरण करना सबसे अधिक भाता था; एकात से उसको घृणा थी, तथा यदि कभी किसी समय वह देहात की ओर उन्मुख भी होती थी तो रिचमण्ड हिल या विडसर फारेस्ट के आगे तो शायद ही कभी जाती थी। जिस पीढी को यह शिक्षा दी गयी थी कि वह पहाडो के अछूते सौन्दर्य की अपेक्षा उद्यान की कटी-छँटी शोभा को पसन्द करे, उसकी परिष्कृत रुचि को प्रकृति के उच्छृखल वन्य और असौम्य रूपों से आघात लगता था। जो अप्राकृतिक मत उस समय प्रचलित था उसके अनुसार जब तक किसी वस्तु को नाप-जोख, काट-छाँटकर अनुरूपता न प्रदान की जाय तब तक वह सुन्दर नहीं हो सकती।

पंद्रहवी शताब्दी के काव्य का विचार करते समय (दे० § १६) हमने इस बात का उल्लेख किया था कि उस समय के अंग्रेज लेखकों की दृश्यावली तो पूर्ण-

रूपेण किताबी और रूढ़िवादी थी, परन्तु उनके स्काटिश समकालीनो की दृश्यावली सीधे यथार्थ पर आधारित तथा बड़ी सावधानी और विशुद्धता के साथ चित्रित थी; और हमने पाठक से यह बात ध्यान में रखने को कहा था क्योंकि हमने कहा था कि आगे चलकर देखेंगे कि स्काटिश कवियो ने "उत्तरकालीन अंग्रेजी साहित्य में प्रकृति-प्रेम का प्रवेश कराने मे बडा योग दिया।" इस कथन की सत्यता का अनुभव करने का अवसर अब आया है। सर्वप्रथम प्रकृति-प्रेम का भाव लनार्कशायर के निवासी अलन रैम्जे (१६८६-१७५८) की रचनाओ मे प्रकट हुआ। अधिकांश मे अपने ही प्रदेश के ग्रामीणो के लोकप्रिय गीतों और गाथाओ से प्रेरणा लेकर रैम्जे ने 'दि जेण्टिल शेफर्ड' (१७२५) मे एक यथार्थ पशुचारण-सबधी कविता प्रस्तुत की, जिसके चरित्र सच्चे पशुचारक और पशुचारिकाएँ है, न कि एक शुद्ध साहित्यिक आर्केडिया की परम्परागत छायाएँ। परन्तु उसने जिस धारा को यहाँ प्रवहमान कर दिया वह हमारी लदन-जनता तक पहुँच गयी, तथा उसने एक अन्य स्काटिश लेखक, जेम्स टॉम्सन (१७००-१७४८) की रचनाओ के द्वारा अग्रेजी साहित्य को भी प्रभावित किया। इस लेखक का नामोल्लेख पहले ही हो चुका है। उसकी 'सीजन्स', जो चार भागों मे एक वर्णनात्मक काव्य है, बहुत-सी बातो मे 'आगस्टन' सप्रदाय की ही रचना है—यह उस समय सर्वानुमोदित रीति से ही शिक्षात्मकता से ओतप्रोत है; इसमे लैटिन शब्दो की भरमार है, अवास्तविक और कृत्रिम "काव्य-भाषा" की रूढ़ियो से यह भरी हुई है; परिणामस्वरूप इसकी शैली बडी ही शुष्क और आडम्बरपूर्ण है, इसके वर्णन अक्सर ऐसे लगते है मानो अलग से तैयार किये गये हो। इतना होते हुए भी टॉम्सन की दृश्यावलि वास्तविक है; वह अपने वैयक्तिक ज्ञान के आधार पर लिखता है; तथा उसके अनेक प्रासगिक स्थल बड़ी ही सूक्ष्मता और सहानुभूति से सम्पन्न है। इस समय हम उसकी कृति पर चाहे जो निर्णय दे, हमे कम से कम इसके ऐतिहासिक महत्त्व को तो अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए, क्योकि यह पहली महत्त्वपूर्ण कविता है जिसमे प्रकृति को मानव की अधीनता में रखने के बजाय उसे केन्द्रीय विषय माना गया है। यद्यपि टॉमस के समकालीन वेल्सनिवासी जॉन डायर (१७००-१७५८) की रचनाओं ने साहित्य को 'सीजन्स' की तुलना मे कम ही प्रभावित किया तथापि उनका उल्लेख इसके साथ ही होना आवश्यक है। डायर का नाम शैली संबंधी प्रतिक्रिया के प्रसंग में पहले भी आ चुका है। उसकी वर्णनात्मक कविताएँ 'ग्रान्गर हिल' उसी वर्ष प्रकाशित हुई जिस वर्ष टॉम्सन की 'विण्टर'

का प्रकाशन हुआ था। इसमें दृश्यावली का बडा ओजपूर्ण चित्रण किया गया है जिसके लिए कवि बहुत कुछ मिल्टन का ऋणी है। इस समय से लेकर हमारे काव्य में प्रकृति-प्रेम अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण होता गया। उदाहरणस्वरूप, विलियम कॉलिन्स और विलियम ब्लेक मे हमें इसके दर्शन होते हैं; गोल्ड्स्मिथ मे भी, जैसा हम कह चुके है, यह प्रेम दर्शनीय है; और जैसा हम अभी देखेगे, ग्रे, बर्न्स और कूपर की कविता भी इससे सम्पन्न है।

८३. **नैसर्गिकता का उत्थान**––प्रकृति-प्रेम के इस सतत विकास से हम सामान्य रूप से 'प्रकृति की ओर प्रत्यावर्तन' ('रिटर्न टु नेचर') कही जाने वाली उस प्रवृत्ति को भी सबधित कर सकते है जिसने विषय, स्वर और शैली तीनो बातो में उत्तरकालीन की अठारहवी शताब्दी कविता को अत्यधिक प्रभावित किया। इस "प्रकृति और प्रत्यावर्तन" का आशय केवल सुचित्रमयता तथा ग्राम्य जगत की मनोहरता के प्रति बढती हुई भावना से ही नही बल्कि इससे भी बढकर था। इसका आशय उस विरोध की बढती हुई अनुभूति से था जो प्रकृति और सभ्यता मे होता है, तथा इसका आशय इस गहरे होते हुए भी विश्वास से भी था कि चूंकि हमारे अप्राकृतिक सामाजिक विधान की अपघातक रूढियाँ वैयक्तिकता के स्वच्छंद विकास और अभिव्यक्ति मे बाधक होती तथा अनेक दोषो को जन्म देती है, इस कारण व्यक्तियो और राष्ट्रो दोनो के मोक्ष का एक मात्र उपाय जीवन का आमूल सरलीकरण ही है। काव्य के क्षेत्र मे इसका परिणाम अधिक प्राथमिक विषयो की खोज जो सभ्यता के दूषित प्रभाव से मुक्त और सरल ग्रामीण जनों के बीच ही ढूंढे जा सकते थे, न कि सभ्यता और संस्कृति के मान्य केन्द्रो की जटिलताओं के बीच। इसके अतिरिक्त वर्णन की अपेक्षाकृत अधिक नैसर्गिक विधियों की भी खोज हुई। इस प्रकार नयी पीढ़ी के अनेक कवियो ने जिन उद्देश्यो को सामने रखा उनमे से प्रमुख था चुने हुए विषय-वस्तु, वर्णित मनोवेगों तथा इनके लिए प्रयुक्त भाषा तीनों मे पहले से अधिक सरलता और सादगी। अतएव 'आगस्टन' सम्प्रदाय की कृत्रिम कविता के विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया के विभिन्न रूपों पर विचार करते समय सबसे अधिक जोर कविता को प्रकृति और यथार्थ की ओर लौटा ले जाने के इस प्रयास पर देना चाहिए।

जिस प्रकार नैसर्गिकता का विकास अनेक साहित्यिक एव सामाजिक प्रभावों के सहयोग द्वारा संभव हुआ, उसी प्रकार उसके परिणामों को भी अनेक दिशाओ में ढूंढना है, कभी इसमें तो कभी उसमें, और सामान्य रूप से इन परिणामो का

नयी कविता की अन्य विशेषताओं से ऐसा घनिष्ठ संबंध है कि पृथक् अध्ययन के लिए उनको अलग करना असभव होगा। परन्तु एक-दो बातों की ओर संकेत करना आवश्यक है।

विषय-वस्तु और शैली दोनों मे ही सरलीकरण को प्राचीन गाथा-साहित्य मे लोगों की बढती हुई रुचि के कारण बड़ी सहायता मिली। गाथा के पुनरुत्थान के दूसरे पहलुओं पर मैं अगले विभाग मे बात करूँगा। यहाँ हमे नैसर्गिकता के विकास से उसका जो संबध है केवल उसी पर ध्यान देना है। आगस्टनो मे भी सबसे अधिक आगस्टन होते हुए भी एडिसन ने यह अनुभव किया था कि 'चेवी चेज' और 'दि बेब्स इन दि वुड' की अनौपचारिकता और सहजोद्रेक ने उनको आश्चर्यजनक प्रभावोत्पादक शक्ति प्रदान कर दी थी, यद्यपि उसको वे बचकानी ही लगती थी। अब लोगों को उनकी इस प्रभावोत्पादक शक्ति की अधिकाधिक पूर्ण अनुभूति होने लगी। जैसा हमे याद है, आगस्टनो ने प्राचीन गाथा के वाक्याश "ईश्वर उसकी आत्मा को शाति दे" ('गॉड रेस्ट हिज सोल') का 'सुधार' और 'परिष्कार' करके उसे "शाश्वत आशीषे उसकी छाया की सहचर हो" ('इटर्नल ब्लेसिग्ज ऑन हिज शेड अटेण्ड') का रूप दे दिया था। जॉनसन ने प्राचीन गाथाओं का सामान्य रूप से जो मजाक उड़ाया था उसके बावजूद लोग अब यह अनुभव करने लगे कि इनमें से सरलतर रूप अनुवाद की तुलना मे श्रेष्ठतर तो है ही काव्यात्मक भी अधिक है। इस खोज के कारण रुचि मे परिवर्तन हो गया जिसका आगस्टन सम्प्रदाय की भव्यता और प्रभावोत्पादकता से सम्बन्धित समस्त सिद्धान्तो के लिए घातक होना अवश्यम्भावी था। प्रारंभ में सरलता की ओर प्रगति धीमी और रुक-रुक कर हुई, यहाँ तक कि विशप पर्सी (देखो अगला विभाग) तक ने अपने संग्रह में अपने युग की अत्यधिक परिमार्जित रुचि के साथ रियायत के तौर पर कुछ पुरानी गाथाओं को 'परिष्कृत' कर दिया था। परन्तु प्रारभ में धीमा होने पर भी यह आंदोलन जम गया और ऐसा होने से लेखक और पाठक समान रूप से अधिकाधिक यह अनुभव करने लगे कि काव्य में जो कुछ नैसर्गिक और स्वाभाविक होता है वह दीर्घकाल से मान्यता प्राप्त कला-सम्प्रदाय की सावधानीपूर्वक पुष्ट की हुई रूढ़ियों और परम्पराओं से कही बढ़कर है।

इस स्थल पर विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) की रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। वह एक रहस्यवादी और स्वप्नद्रष्टा था तथा जैसा उसने स्वयं कहा है, मानवजाति के लिए जो भविष्यवाणियाँ उसके अंतर से नि:सृत हुई

हैं वे स्वर्ण-युग को पुनः संस्थापित करने की उसकी इच्छा द्वारा प्रेरित हुई थीं। इसके अतिरिक्त वह मध्ययुगीन पुनरुत्थान द्वारा भी बहुत प्रभावित हुआ था। इस सबके कारण सत्य तो यह है कि ब्लेक का स्थान हमारे प्रारभिक रोमाण्टिक कवियों में होना चाहिये। परन्तु मै जो यहाँ उसके विषय मे बात कर रहा हूँ उसका कारण यह है कि उसकी कविता के उस भाग में जिसका संबंध सभी पाठकों से है—अर्थात् उसके 'पोएटिकल स्केचेज', 'सॉग्स ऑव इनोसेस' तथा 'सॉग्स ऑव इक्सपीरियन्स' में—देहात, सरल जीवन, शैशव तथा घरेलू वातावरण के प्रति प्रेम की जो अभिव्यक्ति हुई है उसने उसको उस नैसर्गिक प्रकार की कविता—अर्थात् साधारण वस्तुओ से सम्बन्धित कविता—मे नेता बना दिया जिसको थोडे ही समय पश्चात् वर्ड्सवर्थ पूर्णता पर पहुँचाने वाला था। इस बीच मे ब्लेक का समकालीन जॉर्ज क्रैब (१७५४-१८३२) एक दूसरे तथा इससे अत्यन्त भिन्न प्रकार की नैसर्गिकता के उदाहरण प्रस्तुत कर रहा था। उसकी रचनाओ—'दि विलेज', 'दि न्यूजपेपर', 'दि पैरिश रजिस्टर','दि बरो', 'टेल्स इन वर्स' तथा 'टेल्स ऑव दि हॉल'—मे नैसर्गिकता ने उत्कट एवं दृढनिष्ठ यथार्थ का रूप धारण कर लिया। स्वय निर्धन माता-पिता की संतान होने तथा अनेक वर्ष तक एक पैरिश-पादरी के रूप मे कठोर परिश्रम करते रहने के कारण क्रैब गरीबों के जीवन से, उसकी समस्त निर्धनता, विपत्ति और असतुष्टि से, आतरिक रूप से अवगत था, और इसी जीवन को, जैसा उसने स्वय उसे देखा और अनुभव किया था, अपने पद्य मे चित्रित करने का ध्येय उसने अपनाया। तथ्यो के प्रति पूर्ण और कभी विमुख न होने वाली निष्ठा ही उसकी योजना थी—उसने घोषित किया कि "मै चारपाई के गीत उसी रूप मे गाता हूँ जिसमें सत्य उसे चित्रित करेगा, परन्तु कवि लोग नही करेगे"; और उसने अपने सिद्धांत को ऐसी दृढता के साथ निभाया है कि उसने अपने चित्रो के गहरे विषाद को एक भी आदर्शवादी स्पर्श द्वारा कम नही किया है। यह बात असाधारण है कि यद्यपि क्रैब रोमाण्टिक आंदोलन की तेजस्वी सक्रियता के वर्षो मे जीवित रहा, तथापि वह अपने सुदीर्घ जीवन के अन्त तक उससे पूर्णरूपेण अप्रभावित रहा। उसने दोहा-छद का जो नियमित प्रयोग किया है वह लुप्त होते हुए 'क्लासिक' सम्प्रदाय से उसका सबंध स्थापित कर देता है। परन्तु वास्तविक जीवन से ली हुई सामग्री का उसने जिस निर्व्याज और यथार्थ रीति से प्रयोग किया है, तथा कवि और उसके चारो ओर के वास्तविक संसार के बीच बहुत दिनों से पशु-चारण-सबंधी जो रूढ़ियाँ खड़ी हो गयी थी उनका जैसा पूर्ण बहिष्कार उसने किया

उसके कारण आगस्टन परम्परा के विरुद्ध हुई नैसर्गिक प्रतिक्रिया मे उसका महत्त्व-पूर्ण स्थान है।

८४. **रोमाण्टिक पुनरुत्थान**--नैसर्गिकता के इस उत्थान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण वह सामान्य विद्रोह था जो इसी के साथ-साथ उस कठोर स्वभाव, शुष्क बौद्धिकता तथा अद्‌भुत. कल्पनात्मक और रहस्यपूर्ण वस्तुओं के प्रति घृणाभाव के विरुद्ध जारी था जैसाकि हम देख चुके है, आगस्टन सप्रदाय की प्रमुख विशेषताओं मे से थे। इस विद्रोह को हम 'रोमाण्टिक' आन्दोलन की संज्ञा प्रदान करते है। 'रोमाण्टिक' शब्द की कोई ऐसी परिभाषा ढूँढना बहुत कठिन है जो पर्याप्त रूप से विस्तृत तथा साथ ही पर्याप्त रूप से सूक्ष्म और निर्दोष भी हो। आलोचक तक भी इस शब्द को ऐसे अनिश्चित और विस्तृत अर्थ मे प्रयुक्त करते है कि प्रायः इसमें आगस्टन-विरोधी प्रत्येक वस्तु शामिल कर ली जाती है, यहाँ तक कि नैसर्गिकता-वाद को भी इसमें शामिल कर लिया जाता है। यह एक ऐसी गलती है जिससे विद्यार्थियो को सदैव अपने को सावधानीपूवर्क बचाना चाहिए, क्योंकि यद्यपि नैसर्गिकतावाद 'रोमाण्टिकवाद' का समकालीन था, यद्यपि वह भी इसी की भाँति आगस्टन आदर्शो के विरुद्ध प्रतिक्रिया का आंदोलन था, तथापि उस प्रतिक्रिया का मार्ग पूर्णतया भिन्न था। जिन बातो की ओर हम सकेत कर चुके हैं, संभवतः उनसे इस विशिष्ट आंदोलन के स्रोत, उसकी दिशा तथा उसके मौलिक तात्पर्य को समझने मे सहायता मिलेगी। 'रोमाण्टिक' से हमारा तात्पर्य निम्नलिखित बातों से है--(१) साहित्य मे सहजोद्रेक का सिद्धान्त, जिसका आशय है कि साहित्यिक सम्प्रदाओं की रूढियो की अपेक्षा कवि की वैयक्तिकता का महत्त्व अधिक है। इसका आशय उन आलोचनात्मक सिद्धांतो के बहिष्कार से भी है जिन्होने कविता को तथा-कथित कला-नियमो द्वारा बाँध रखा था। इसके अतिरिक्त इसमे यह विश्वास भी शामिल है कि काव्यात्मक प्रतिभा वास्तव में दैव-प्रेरित होती है तथा उसके लिये स्वय उसे ही विधि रूप मानना चाहिए। इस प्रकार रोमाण्टिकवाद उत्तर अठार-हवी शताब्दी में व्यक्ति की मुक्ति के लिए चल रहे सामान्य आन्दोलन का ही भाग था और इसी कारण महान् फ्रांसीसी लेखक विक्टर ह्यूगों ने इसका वर्णन "साहित्य में उदारतावाद" ('लिबरलिज्म इन लिटरेचर') के रूप में किया है। (२) एक विशेष स्वभाव तथा मनोदशा जिसके विषय में अधिकांश लोगों का मत है कि उसका निर्माण प्रबल भावावेग, उद्‌बुद्ध चेतना, उच्च आकांक्षा एव विषाद के संयोग से हुआ। श्री वाट्स-डण्टन ने "विस्मय और रहस्यभाव का पुनर्जागरण" कहकर

रोमाण्टिक पुनरुत्थान की जो परिभाषा दी है उसमे इसके इसी पहलू को प्रमुखता दी गयी है। (३) वन्य (अव्यवस्थित, उच्छृखल), काल्पनिक, असाधारण तथा अलौकिक वस्तुओं के प्रति अनुराग तथा (४) इन सब बातो के सयुक्त प्रभावो के परिणामस्वरूप उत्पन्न एक विशेष प्रकार की विषय-वस्तु के प्रति अनुराग जो अठारहवी शताब्दी के मध्यकाल मे बिलकुल नये प्रकार की विषय-वस्तु थी तथा जो वैयक्तिक प्रतिभा को स्वच्छंद विचरण का अवसर प्रदान करती थी, सम्बन्धित मनोदशा को प्रक्षीप्त करती थी तथा अद्‌भुतता के लिए हाल में ही उत्पन्न हुई रुचि के भी अनुकूल थी। सम्भवतः कुछ ठोस उदाहरणों से इन बातो को स्पष्ट करने मे सहयता मिलेगी। इस प्रकार हम कीट्स की 'इण्डीमियन' के दोहो को 'रोमाण्टिक' कहते है क्योकि वे 'स्वच्छद" है, अर्थात् उनमे आगस्टन दोहा—छद के सिद्धांतों का परित्याग कर दिया गया है। हम ग्रे की 'एलेजी' की भावना को 'रोमाण्टिक' विषाद तथा बायरन की पूर्वीय कथाओं की प्रबल भावना को 'रोमाण्टिक' भावावेग के नाम से पुकारते है। स्कॉट की 'ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' के अद्‌भुत आख्यान तथा कोल रिज की 'ऐन्शियण्ट मैरिनर' की अलौकिकता के लिए भी यही विशेषण प्रयुक्त किया जाता है।

क्योंकि मध्ययुग सभी दृष्यिों से मूलतः एक रोमाण्टिक युग था, इसलिए स्वाभाविक ही था कि जिस स्वभाव और जिन रुचियो के विषय मे अभी कहा गया है उनसे सम्पन्न व्यक्तियो की कल्पना प्रेरणा तथा विषयो की खोज मे उसकी ओर मुडे। अतएव रोमाण्टिक आन्दोलन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू (कुछ अशों मे उसका कारण और कुछ में उसका परिणाम) था मध्ययुगीन अथवा गॉथिक पुनरुत्थान। जैसा हम देख चुके है, स्पेन्सर की रचनाओ का अध्ययन फिर से प्रारंभ हो जाने के कारण इसको कुछ प्रोत्हासन शुरू मे ही मिल चुका था। गद्य कथा-साहित्यक मे इस मध्ययुगीन पुनरुत्थान के जो परिणाम हुए उनका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। 'दि कासिल ऑव ऑट्रैण्टो' के प्रकाशन के समय तक इसका प्रभाव काव्य में भी उतना ही स्पष्ट हो गया। इसका महत्त्व इस युग के एक लेखक रिचर्ड हर्ड (१७२०—१८०८) के आलोचनात्मक सिद्धांतो द्वारा बड़े ही मनोहर रूप में प्रकट होता है। अपने 'लेटर्स ऑन शिवलरी ऐण्ड रोमांस' (१७६२) में उसने निर्भयतापूर्वक यह प्रतिपादित किया कि "गॉथिक आचार-विचार" मे काव्य के लिए क्लासिकल पौराणिक कथाओं की अपेक्षा कही अधिक सुदर सामग्री प्राप्त हो सकती थी (यह याद रखना आवश्यक है कि बराबर दुहराये जाने के कारण यह मत अब जीर्ण-शीर्ष

होकर केवल एक निर्जीव रुढ़ि मात्र रह गया है)'। हर्ड लिखता है, "क्या ऐसा नही हो सकता कि गॉथिक प्रेमाख्यान मे ऐसी कोई चीज हो जो किसी प्रतिभावान् व्यक्ति के मतों तथा काव्य के उद्देश्यों के विशेष रूप से अनुकूल हो ? और क्या ऐसा संभव नही है कि आधुनिक युग के दार्शनिक लोग उसका निरन्तर उपहास करने तथा उससे घृणा करने में आवश्यकता से अधिक आगे बढ गये ?" एक आगस्टन सिद्धांत यह था कि कवि को "प्रकृति का अनुसरण" करना चाहिए अर्थात् उसको अनुभूति के पिटेपिटाये मार्ग पर चलना चाहिए। इस सिद्धात का विरोध करते हुए वह कहता है! "कवि का अपना एक अलग संसार होता है जिसमे अनुभूति का महत्त्व अनवरत अनुकरण से भी कम है। इसके अतिरिक्त रचना के लिए उसका एक अलौकिक जगत भी होता है।... कवि के संसार में सब कुछ अद्‌भुत और असाधारण है।" इस समय आगस्टन परम्परा के विरुद्ध प्रतिक्रिया का जो सामान्य आन्दोलन चल रहा था तथा काव्य की प्रकृति, जीवन मे उसके स्थान तथा उसके उद्देश्यों से संबधित विचार का जो रूपांतर हो रहा था उससे मध्ययुगीन पुनरुत्थान का सम्बन्ध स्थापित करने में हमको इन विचारों से बडी सहायता मिलेगी।

नैसर्गिकता के विकास की भाँति रोमाण्टिक अतीत के इस पुनरुत्थान मे भी गाथा-साहित्य मे लोगों की रुचि की वृद्धि का बड़ा शक्तिशाली प्रभाव पड़ा। पहले इस साहित्य मे इधर-उधर केवल कुछ पुराणवस्तुकोविदो की ही रुचि थी, परन्तु अब यह सामान्य पाठको मे भी अधिकाधिक लोकप्रिय होता गया। अठारहवी शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण गाथा-पुस्तक थी बिशप पर्सी की 'रेलिक्स ऑव ऐन्शियण्ट पोएट्री; कन्सिस्टिग ऑव ओल्ड हीरोइक साग्स ऐण्ड अदर पीसेज ऑव अवर अर्लियर पोएट्री, टु गेदर विद सम फ्यू ऑव लेटरडेट' (१७६५)। इस पुस्तक की जिल्दो मे अनेक वर्षों मे संगृहीत की गयी गाथाएँ थी तथा उनके प्रकाशन का सुझाव सर्वप्रथम शेन्सटन (देखो § ८१) ने दिया था। यद्यपि पर्सी ने स्वयं इतने गहरे परिणाम की आशा नही की थी, तथापि रोमाण्टिक रुचियों के प्रसार मे 'रेलिक्स' बहुत बड़ी शक्ति सिद्ध हुई, और जैसा हम आगे चलकर देखेगे, जब स्कॉट ने इन गाथाओं को पहली बार पढ़ा तो उसके बौद्धिक विकास में युगांतरकारी परिवर्तन हो गया। सम्पादक (अर्थात् पर्सी) ने गाथाओं के प्रारंभ में 'एसे ऑन दि ऐन्शियण्ट मिन्स्ट्रेल्स' नामक जो प्रस्तावना जोड़ दी थी, उसका प्रभाव भी साहित्यिक जगत पर ऐसा ही पड़ा। उदाहरणस्वरूप बीटी को अपने "मिन्स्ट्रेल" (देखो § ८१) के लिए प्रेरणा इसी प्रस्तावना के द्वारा प्राप्त हुई थी।

मध्ययुगीन पुनरुत्थान के इतिहास मे "अद्‌भुत बालक" टॉमस चैटर्टन का नाम असाधारण आकर्षण से सम्पन्न है। उसका जन्म ब्रिस्टल में १७५२ में हुआ था और अठारहवाँ वर्ष पूरा समाप्त करने के पूर्व ही १७७० में उसने लंदन में एक कोठरी में आत्महत्या कर ली। चैटर्टन की कविताएँ दो वर्गों मे विभाजित है, परन्तु जिन कविताओं को उसने अपने नाम से प्रकाशित करवाया तथा जिनमें विषय-वस्तु और शैली दोनों में अधिकांशत. आगस्टन परम्परा को ही बनाये रखा गया है उनका महत्त्व यहाँ हमारे लिए उन कविताओं की अपेक्षा बहुत ही कम है जिनको उसने टॉमस रॉले नामक एक व्यक्ति द्वारा रचित घोषित किया जो एक काल्पनिक चरित्र था और जिसका परिचय पन्द्रहवी शताब्दी का एक ब्रिस्टल-निवासी पादरी कहकर दिया गया। इस लड़के द्वारा आविष्कृत यह मध्ययुगीन गल्प, जिसकी सहायता से उसने अपनी ही गढ़ी हुई रचनाओं को प्राचीन मौलिक रचनाएँ कह कर दुनिया को ठगने की चेष्टा की, खुद भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि कविताएँ स्वय है। उस समय पन्द्रहवी शताब्दी के विषय मे वास्तविक ज्ञान कितना कम था यह इसी से सिद्ध हो जाता है कि थोडे दिन तक वह बहुत-से आलोचकों को, यहाँ तक कि वाल-पोल को भी, सफलतापूर्वक धोखा देता रहा। यह करने का कारण यह है कि जिस युग को पुनर्जीवित करने का प्रयास वह कर रहा था, उसकी भाषा और शैली की नकल उतारने की जो चेष्टा उसने की है वह बड़ी ही स्पष्ट त्रुटियो और काल व्यक्तिक्रम के उदाहरणो से भरी है। अब तो हम उन विधियो को भी जान सकते है जिनका उसने तथाकित "रॉले" की भाषा को गढ़ने मे प्रयोग किया। परतु 'आएला' और 'बैलड ऑव चैरिटी' जैसी कविताओ का महत्त्व कभी नही घट सकता क्योकि एक तो वे चैटर्टन की उम्र के बालक के लिए अत्यधिक आश्चर्यजनक रचनाएँ है, दूसरे वे इस बात की ओर स्पष्ट सकेत करती है कि मध्ययुग से सबधित प्रत्येक वस्तु के प्रति आलोचको एव जनता दोनो की जिज्ञासा बड़ी तेजी से बढ रही थी।

इस मध्ययुगीन पुनरुत्थान के साथ-साथ रोमाण्टिक अतीत मे लोगो की रुचि और भी बढ़ गयी। यह रुचि उत्तर के वीरतापूर्ण और कल्पित संसार (जिसके सबंध मे अनेक दन्त कथाएँ प्रचलित थी)--अर्थात् प्राचीन केल्टिक इतिहास की दुनिया में विशेष रूप से बढी। लोगो के सामने एक नयी दुनिया ही खुल गयी। विलियम कालिन्स (१७२१–१७५९) की 'ओड ऑन पॉपुलर सुपर्सटि-शन्स ऑव दि हाईलैण्ड्स ऑव स्कॉटलैण्ड कन्सीडर्ड ऐज दि सब्जेक्ट ऑव

पोएट्री'[1] (जिसकी रचना १७४९ में ही हुई थी, यद्यपि उसका प्रकाशन १७८८ तक नहीं हुआ) के शीर्षक से ही इस प्रवृत्ति का सामान्य महत्त्व स्पष्ट है। परन्तु 'रोमाण्टिक' आन्दोलन के इस पक्ष का पूरा तात्पर्य समझने के लिए हमें उन कविताओं को देखना होगा जो 'ओसियानिक' कविताओं के नाम से विख्यात है। १७६० मे जेम्स मैक्फर्सन (१७३६–१७९६) नामक एक युवा स्काटिश अध्यापक ने एक छोटी-सी पुस्तक प्रकाशित करायी जिसका शीर्षक था 'फ्रैग्मेण्ट्स ऑव ऐन्शियण्ट पोएट्री कलेक्टेड इन दि हाइलैण्ड्स ऑव स्कॉटलैण्ड ऐण्ड ट्रान्सलेटेड फ्रॉम दि गैलिक ऑर अर्स लैग्वेज (अर्थात् 'स्काटलैण्ड की अधित्यका में एकत्रित की गयी तथा गैलिक भाषा से अनूदित प्राचीन कवियों के कुछ अंश')। लेखक का दावा था कि ये कविताएँ "प्राचीन स्काटिश काव्य के वास्तविक अवशेषो" की अक्षरशः नकल थी। इनके कारण लोगो की जिज्ञासा व उनके तर्क-वितर्क मे अत्यधिक वृद्धि हो गयी, तथा मैक्फर्सन इसी प्रकार की नवीन सामग्री की खोज मे अधित्यका की साहित्यिक तीर्थयात्रा पर निकल पडा। इस खोज के फलस्वरूप उसने १७६२ मे छः भागो मे 'फिंगल' तथा १७६३ मे आठ भागो मे 'टेमोरा' नामक दो महाकाव्य प्रस्तुत किये। एडिनबरा और लन्दन दोनों स्थानों में जनता की रुचि मे ज्वर-जैसी गर्मी आ गयी तथा एक प्रचण्ड विवाद उठ खड़ा हुआ। एक ओर तो वे लोग थे जो मैक्फर्सन के इस दावे का समर्थन करते थे कि वस्तुतः ये कविताएँ तीसरी शताब्दी के ओसियन नामक एक गेलिक चारण की रचनाएँ थी दूसरी ओर वे लोग थे (जॉन्सन इन्ही लोगो में से था) जो उन्हे शुद्ध और निर्लज्ज जालसाजी कहकर उनकी भर्त्सना करते थे। यह विवाद जिन प्रश्नो से सबधित था उनका निर्णय अभी तक अंतिम रूप से नही हो सका है, तथा यह निश्चय करना अब भी असम्भव है कि इन कविताओं की विषय-वस्तु मे से कितना वास्तविक रूप से प्राचीन है और कितना सम्पादक व संग्रहकर्त्ता के कौशल का परिणाम है। इसमे तो कोई सदेह **नहीं कि उसने अपनी सामग्री का प्रयोग** बडी स्वच्छंदतापूर्वक किया है। परन्तु सौभाग्यवश मैक्फर्सन के साहित्य के युगांतरकारी स्वरूप को समझने के लिए इस विवाद में पड़ने की आवश्यकता नही है। अपने तथा-

१. अर्थात् 'स्काटलैण्ड की अधित्यका में प्रचलित अंधविश्वासों पर संबोध-गीत'।

कथित अनुवादों के लिए उसने जिस शिथिल लय से पूर्ण गद्य का व्यवहार किया है उसमे वह उस समय क्लासिक दोहा-छन्द के विरुद्ध हुई शैली-संबंधी प्रतिक्रिया को अतिम बिन्दु तक ले गया। विषय-वस्तु तथा भावना मे वह अनियत्रित रूप से 'रोमाण्टिक' है। ये 'ओसियानिक' कविताएँ अलौकिकता से परिपूर्ण, विषाद से ओतप्रोत तथा उस उद्दीप्त भावनात्मकता के कम्पन से कम्पित है जैसाकि हम देख चुके है, उस समय साहित्य पर चतुर्मुखी आक्रमण कर रहा था। उनमे जिस ससार का चित्रण है वह भी वीरोचित सारल्य का संसार है जिसकी पृष्ठभूमि पर्वतों और कुहेलिकाओ के दृश्यो पर आधारित है। इस प्रकार, जहाँ एक ओर वे प्रकृति-वर्णन मे उल्लेखनीय विकास का परिचय देती है, वहाँ इसके साथ ही उन्होने उन लोगो की कल्पना को भी बडे प्रबल रूप से प्रभावित किया जो यह अनुभव करने लगे थे कि सामाजिक जीवन की संकुचित और क्षुद्र रूढ़ियों ने उनको बंधन में बाँध कर उनकी उन्नति रोक दी थी, तथा जो बहुत दिनो से फैशनेबुल ड्राइंग-रूम कविता के परिष्कृत स्वर से बहुत जल्दी ऊबने लगे थे। 'प्रकृति की ओर प्रत्यावर्तन' की इच्छा उन कविताओ की एक प्रमुख विशेषता है। हम लोगो को तो उनका स्वर अत्यन्त कृत्रिम और अस्वाभाविक लगता है। परन्तु तत्कालीन पाठको को उनमें सशक्त, अदोषपूर्ण तथा पुरातन अतीत का वास्तविक स्वर सुनाई पडता था--ऐसे युग का स्वर जब लोग सभ्यता के दूषित प्रभाव से मुक्त, सरल, अकृत्रिम और महान् थे। इनको जो महान् लोकप्रियता प्राप्त हुई तथा इनका जो महान् प्रभाव पड़ा वह इंग्लैण्ड तक ही सीमित न रह कर यूरोप तक फैल गया, क्योकि सारे यूरोप मे 'ओसियानिक' उत्साह की एक लहर दौड़ गयी तथा फ्रास मे क्रांति के समय तक लड़के-लड़कियों के नाम ओशियन के नायक-नायिकाओं के नाम पर रखे जाते थे। इस लोकप्रियता और प्रभाव का कारण ढूँढ़ते समय हमे सदैव उनके सामाजिक महत्त्व को दृष्टि मे रखना आवश्यक है। उन्होंने सभी वर्गो के पाठकों का मन मोह लिया, उनकी सहानुभूति को प्रभावित किया और उनके दिलों मे एक आग सुलगा दी। इस सबका कारण केवल यही नही था कि उनमे साहित्य की शैली में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया था, बल्कि यह भी और इससे भी कही अधिक था कि ये एक कृत्रिमतापूर्ण समाज एवं आवश्यकता से अधिक परिपक्व सभ्यता द्वारा उत्पन्न दोषों के विरुद्ध विद्रोह की बढ़ती हुई मनोदशा का समर्थन करती थी। अतएव इस मामले में हमने देखा कि किस प्रकार नैसर्गिकता और रोमाण्टिकवाद ने साथ-साथ अपना प्रभाव डाला तथा हम इन दोनों का स्रोत भी उन सामाजिक

शक्तियों में ढूंढ सके जिन्होने उस युग के साहित्य का रूप और उसकी दिशा निर्धारित की।

यह बात महत्त्वपूर्ण है कि 'रोमाण्टिक' अतीत के पुनरुत्थान के सम्पूर्ण आदोलन का चरमोत्कर्ष १७६० और १७७० के बीच के दस वर्षो मे हुआ। हर्ड के 'लेटर्स ऑन शिवलरी ऐण्ड रोमांस', वालपोल का 'दि कासिल ऑव ऑट्रैण्टो', पर्सी की 'रेलिक्स', चैटर्टन की कविताएँ, मैक्फर्सन की 'ओसियन' तथा जैसा हम अभी देखेगे, ग्रे की सर्वाधिक रोमाण्टिक रचनाएँ सब इन्ही दस वर्षो के भीतर प्रस्तुत की गयी। अतएव यह स्पष्ट हो जायगा कि स्कॉट और कोलरिज की भाँति जो लोग इसके बाद के दशाब्द के आरभिक वर्षो मे पैदा हुए वे ऐसे उपयुक्त समय मे बाल्यावस्था मे पहुँचे जिससे वे उन प्रभावों की पूरी शक्ति का अनुभव कर सके जिनका प्रवेश साहित्य में इन लेखकों के द्वारा हुआ था।

८५ ग्रे, बर्न्स और काउपर—इस सधि-काल के इन तीन विशेष महत्त्वपूर्ण कवियों की रचानओं का विस्तृत अध्ययन करना तो हमारे रेखाचित्र की सीमाओ से बाहर होगा, परतु इनमें से प्रत्येक के विषय मे इतना कहना तो आवश्यक ही है जो उनकी ऐतिहासिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हो।

टॉमस ग्रे (१७१६–१७७१), जिसका शरीर सदा अस्वस्थ रहा करता था, एक महान् विद्वान्, परन्तु एकान्तप्रिय व्यक्ति था। उसने काव्य रचना तो थोड़ी ही की, परतु जो कुछ भी लिखा वह न केवल अत्यत उच्च कोटि का और परिष्कृत है वरन् इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि वह उस युग के साहित्य मे हो रहे परिवर्तनो का साररूप है। काव्य-रचना मे उसने जो प्रारंभिक प्रयास किये उनमे (लॉक के दर्शन पर लिखी गयी एक लैटिन कविता को छोड़कर) एक कविता थी 'दि अलायंस ऑव एजूकेशन ऐण्ड गवर्नमेण्ट' जो आगस्टन संप्रदाय की ही रचना थी और दोहा-छंद मे लिखी गयी थी। इसको समाप्त करने में ग्रे कभी सफल न हो सका। उसकी सर्वप्रथम प्रकाशित रचना थी 'ऑन ए डिस्टेण्ट प्रास्पेक्ट ऑव ईटन कालेज' नामक एक संबोध-गीत ('ओड') जो १७४२ मे लिखा गया था और जिसको १७४७ मे डॉड्सले ने अनामलखक की रचना के रूप मे प्रकाशित किया। अगले वर्ष डॉड्सले के संग्रह के प्रथम तीन भागों मे उसका ईटन-संबंधी सबोधन-गीत, 'ओड टु स्प्रिंग' तथा 'आन दि डेथ ऑव ए फेवरिट कैट' नामक कविताएँ प्रकाशित हुई। भाव और भाषा दोनों ही दृष्टियों से ये रूढ़िपरक है तथा नयी भावना को व्यक्त करनेवाली कोई भी बात इनमें नही है। १७५१ मे डॉड्सले ने ही उसकी 'एलेजी रिटेन

इन ए कण्ट्री चर्चयार्ड' ('एक देहाती कब्रगाह मे लिखा हुआ शोकगीत') प्रकाशित की जिसके शीघ्र ही पन्द्रह संस्करण निकले तथा चोरी से भी इसके अनेक संस्करण छापे गये। यह सभवत: समस्त अग्रेजी कविताओ में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसके साथ ही एक महान् परिवर्तन के दर्शन होते है तथा इसकी अनेक विशेषताएँ इसको ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यत महत्त्वपूर्ण बना देती है। सबसे पहली बात है प्रकृति का प्रयोग जो यद्यपि केवल पृष्ठभूमि के रूप मे हुआ है, तथापि इसमे बडी यथार्थता और सहानभूति बरती गयी है। इसके बाद आते है कब्रस्तान का दृश्य, गोधूलि का वातावरण तथा चिन्तापूर्ण विषाद का भाव जो (जैसाकि हम कह चुके है) इस कविता को रोमाण्टिक आंदोलन के एक पक्ष, अर्थात् एक स्पष्ट रोमाण्टिक मनोदशा के विकास से सम्बन्धित कर देते है। ग्राम और नगर के बीच दर्शाया गया विरोध एक ओर ग्रामीणो का सरल जीवन और दूसरी ओर" उन्मत्त भीड़ का घृणित सघर्ष"[१]— तीसरी उल्लेखनीय विशेषता है। अत मे "गवॅई-गॉव मे रहने वाले पुरखो"[२] के प्रति प्रदर्शित सदयता तथा "निर्धनो के सक्षिप्त और सरल इतिहास"[३] मे लिखी हुई छोटी-छोटी वस्तओ के मानवीय महत्त्व की अनुभूति मे हम देखते है कि चारो ओर फैल रही प्रजातात्रिक भावना के प्रभाव के अतर्गत काव्य का विस्तार हो रहा था और उसमे अभी तक उपेक्षित जीवन के निम्न पक्षो का भी समावेश हो रहा था। इस प्रकार कवि द्वारा मानवीकरण तथा बड़े अक्षरो के प्रयोग की आगस्टन परम्परा का निरंतर निर्वाह किये जाने पर भी 'एलेजी' से ग्रे की प्रतिमा के विकास की एक निश्चित अवस्था का पता चलता है। परन्तु यह उसके विकास की एक अवस्था मात्र ही थी, उसकी अतिम सीमा नही, क्योंकि जैसे-जैसे उसकी आयु अधिक होती गयी वह, अधिकाधिक रोमाण्टिक होता गया। 'दि प्रॉग्रेस ऑव पोएजी' तथा 'दि बार्ड' नामक दो सबध-गीत इस नयी भावना से ओतप्रोत है कि कवि एक दक्ष कलाकार नही बल्कि दैव-प्रेरित गायक होता है—अठारहवी शताब्दी की अर्थवैपरीत्यप्रधान भाषा मे वह "वाक्पटु" (विट) नही बल्कि" उत्साहोन्मत्त" ('इन्थ्यूजियास्ट') होता है। दूसरी ओर 'दि फेटल सिस्टर्स' और 'दि डिसेण्ट ऑव

१. "The madding crowd's ignoble strife."
२. "The rude forefathers of the hamlet."
३. "The short and simple annals of the poor."

ओडिन' जैसी छोटी कविताएँ, जो उत्तरी ब्रिटेन से सबधित तथा केल्टिक विषयो पर लिखी गयी है, (जैसाकि हम पहले ही कह चुके है) रोमाण्टिक अतीत के पुनरुज्जीवन के इतिहास से सबधित है। कवि के रूप मे ग्रे के विकास का महत्त्व अब स्पष्ट हो जाना चाहिए। उसने आरभ किया पोप की शैली मे लिखे गये छन्दबद्ध पम्फलेटो से, फिर वह परम्परापरक गीतियों (लिरिक्स) की अवस्था से गुजरता हुआ 'एलेजी' तक पहुँचा; तथा उसने अत ऐसे प्रयोगो से किया जो मूलत. रोमाण्टिक है।

यद्यपि ग्रे एक शुद्ध काव्यात्मक भावनावाला व्यक्ति था, तथापि उसने लिखा बहुत ही कम। रॉबर्ट वर्न्स (१७५९–१७९६) प्रतिभा की आश्चर्यजनक रूप से स्वाभाविक शक्ति तथा गायन की अद्वितीय देन से सम्पन्न था। उसकी शक्ति का मौलिक आधार था स्वय अपने प्रति तथा अपने चारो ओर के वातावरण के प्रति पूर्ण निष्ठा। वह एक स्काट कृषक था और उसने निस्सकोच हो कृषक की ही भाँति लिखा तथा जिस वर्ग मे उसका जन्म हुआ था उसके विचारो और भावनाओ, उसके विशिष्ट हास्य, उसके घरेलू, आडम्बरविहीन दर्शन, उसके सुख-दु ख, मनोवेगो, अन्धविश्वासो तथा कभी-कभी उसकी उच्छृखलता और उसके दुराचार तक का वह व्याख्याता बन गया। इन सब वस्तुओ का गान उसने ऐसी पूर्ण स्वच्छन्दता के साथ किया है जिसमे ऐसी किसी भी वस्तु के लिए स्थान नही था जिससे मात्र साहित्यिक रीति और दम्भ व्यंजित हो। यह सोचना बिलकुल गलत है कि वह एक निरक्षर हलवाहा था। उसका अध्ययन विस्तृत तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से पूर्ण था। परतु स्टैण्डर्ड अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव उसके ऊपर बहुत कम पड़ा, यद्यपि यह बात ब्योरे के रूप मे उल्लेखनीय है कि उसकी सबसे महत्त्वकांक्षापूर्ण कविता 'दि कॉटर्स सटरडे नाइट' स्पेन्सरियन पद्याश मे लिखी गयी है। वास्तव में उसकी साहित्यिक वशपरम्परा स्काटिश थी तथा उसके अपने साहित्य पर जो मुख्य साहित्यिक प्रभाव पडा वह था उस देशी कविता का जो स्काटलैण्ड के ग्रामीणो के गीतों और गाथाओ मे उपलब्ध थी। अग्रेजी कविता मे स्वाभाविक भावावेग का प्रवेश फिर से करने मे उसने अठारहवी शताब्दी के उत्तरकालीन अन्य समस्त कवियो से अधिक कार्य किया। उसकी रचनाओ के विषय मे एक और महत्त्वपूर्ण बात है उनका प्रबल प्रजातात्रिक गुण। उसके ऊपर अपने युग की प्रजातात्रिक भावना का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। हमे इस भावना का अनुभव तब होता है जब 'दि कॉटर्स सटरडे नाइट' में वह एक ग्रामीण व उनके परिवार के साधारण जीवन तथा धार्मिकता

का विरोध फैशनेबुल ससार की सम्पत्ति व अभद्र प्रदर्शन तथा उसकी विलासिता एव कृत्रिमतापूर्ण शिष्टता से प्रदर्शित करता है जब वह गाता है कि--

"पद है केवल मुहर गिनी की,
खरा स्वर्ण मानव ही फिर भी,"[1]

जब वह आगे आनेवाले उस समय के विषय मे भविष्यवाणी करता है जब सारे ससार के मनुष्य भाई-भाई होंगे, और जब वह हमें याद दिलाता है कि यह "मानव के प्रति मानव की बर्बरता" ही है जो "असख्य व्यक्तियों को रुलाती है,"[2] तब वह अपने युग मे स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के आदर्श में बढ़ते हुए विश्वास का उद्‌घोषक बन जाता है।

आयरशायर के इस वीर्यवान्, शक्तिमत हलवाहे तथा सुकुमार, किसी भी अनुचित बात से बहुत जल्दी पीडित हो जानेवाले और विषादग्रस्त विलियम काउपर (१७३१-१८००) मे जो विरोध है उससे बढकर और कोई विरोध नही हो सकता, फिर भी साहित्यिक इतिहास के आदोलनो मे दोनों व्यक्ति साथ-साथ है। काउपर ने काव्य-रचना बहुत देर में आरंभ की और उस समय भी उसका उद्देश्य यह था कि जिससे उसका मन अपने ही विषय मे सोचने और इस प्रकार अपना ही शिकार करने से दूर रहे तथा पीड़ित करनेवाली उन धार्मिक चिंताओं पर भी विचार करने से मुक्त रहे जिनके कारण कई बार उसका विषाद बिलकुल पागलपन मे बदल गया था। वह कोई कविता का विद्यार्थी न था; उसने कविता की ओर कला के रूप मे बहुत ही कम अथवा नही के बराबर ध्यान दिया; उसने तो बस अपने ढंग से अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए ही लिखा है। अपने व्यग्यो मे अवश्य ही उसने पोप के आदर्श का अनुसरण किया, परन्तु अपनी प्रमुख कविता 'दि टास्क' मे उसने परम्परा का पूर्ण परित्याग कर दिया और एक स्वतत्र मार्ग अपनाया। अतुकात छद मे लिखी हुई यह लम्बी कविता एक अर्थ मे उत्तर

1. "The rank is but the guinea's stamp—
The man's the gowd for a' that"

2. "Man's inhumanity to man" "makes countless thousands mourn."

अठारहवी शताब्दी के 'दिव्योपदेशात्मक पुनरुत्थान'[१] की उसी प्रकार से सर्वश्रेष्ठ कृति है जिस प्रकार 'पैराडाइज लॉस्ट' सत्रहवी शताब्दी के संघर्षरत प्यूरिटनवाद की सर्वश्रेष्ठ कृति है। परन्तु, यद्यपि इसमे काउपर के संप्रदाय की संकुचित धार्मिक शिक्षा का बहुत-सा अश है तथापि इसमे ऐसा अंश भी बहुत अधिक है जो मात्र साम्प्रदायिक सीमाओं का उल्लघन करके उनसे मुक्त हो गया है। इसमें नाना प्रकार के विषयों पर अत्यन्त अनवस्थित और वृथा विस्तारपूर्ण ढंग से लिखा गया है, तथा ऐसी किसी योजना का पूर्ण अभाव है जो इसके ढाँचे के लिए रीढ का काम दे सके। फिर भी, यदि इसमे कोई संगठनात्मक एकता नही है तो उद्देश्य और अर्थ की एकता तो है ही। जैसा काउपर ने स्वय कहा है, इसका वास्तविक उद्देश्य धर्म और सद्गुणों के प्रेरक होने के कारण एकातवास और ग्राम्यजीवन की प्रशसा करना है। इसमें जिस जीवन-दर्शन की व्याख्या की गयी है उसकी सभ्यता की प्रगति से सबधित समस्त दुर्गुणो से स्पष्ट वैर है, और उसकी बारबार उद्धृत पक्ति "ग्राम बनाया ईश्वर ने और नगर बनाया मानव ने"[२] से पता चलता है कि अनजाने ही काउपर उन क्रांतिवादियों से कितना अधिक एकमत था जो "प्रकृति की ओर प्रत्यावर्तन" तथा जीवन के सरलीकरण का उपदेश दे रहे थे। प्रकृति और दृश्यावली के सहानुभूतिपूर्ण चित्रण मे अठारहवी शताब्दी के समस्त कवियो मे से वह वर्ड्सवर्थ के सबसे अधिक निकट है। अपनी भाषा की अकृत्रिम सरलता मे भी वह वर्ड्सवर्थ के सबसे अधिक निकट है, यद्यपि कभी-कभी अस्वाभाविक "काव्य-भाषा" का प्रयोग भी हुआ है। 'दि टास्क' लोकहित की भावना से भी ओतप्रोत है, तथा कवि की मीन-मेख निकालनेवाली अत्यधिक सावधानी, उसके तपस्वियो-जैसे जीवन तथा उसके धर्म की स्वार्थपरता के बावजूद यह रचना स्वतत्रता के विचारो से भी ओतप्रोत है। इसमे सैनिकवाद तथा गुलामो के व्यापार-जैसी बुराइयो की जो भर्त्सना की गयी है वह उल्लेखनीय है; तथा इससे भी अधिक उल्लेखनीय वह सशक्त स्थल है जिसमे अत्याचार और अनुत्तरदायी अधिकार का प्रतीक होने के कारण बैस्टील[३] पर आक्रमण किया गया है। यह बात रोचक

१. 'Evangelical Revival; Evangelicalism'

२. "God made the country and man made the town.

३. फ्रांस का एक गढ़ जहाँ राजनीतिक बंदी रखे जाते थे। फ्रांस की प्रसिद्ध राज्यक्रांति का श्रीगणेश इसी गढ़ के पतन से हुआ।—अनु०

और स्मरणीय है कि यह अश १७८५ में प्रकाशित हुआ और इसके केवल चार वर्ष उपरान्त बैस्टील का पतन हुआ।

कुछ आलोचको ने काउपर मे वर्ड्सवर्थ का पूर्वाभास पाया है तो कुछ ने बायरन का। एक प्रकार से वह दोनो का ही पूर्वाभास देता है। अपने प्रकृति-प्रेम, प्रकृति के प्रति अपनी भावनात्मक अनुभूति, तथा निम्न ग्राम्य जीवन के सहानुभूतिपूर्ण चित्रण मे वह निश्चय ही वर्ड्सवर्थ का पूर्वाभास देता है, परतु उसके चरित्र और धार्मिक विश्वास का विचार करने पर यह बात विचित्र ही लगती है कि उसका काव्य सामाजिक क्राति के चिह्नो से पूर्ण है और इस प्रकार वह मोटे तौर पर बायरन की ओर इंगित करता है। पोप और वर्ड्सवर्थ के बीच अग्रेजी कविता मे वह सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है और उसका जीवन पोप-युग को वर्ड्सवर्थ-युग से सबंधित करने का काम करता है। जब उसका जन्म हुआ उस समय पोप अपनी शक्ति की चरमसीमा पर था, और जब उसकी मृत्यु हुई उस समय बर्न्स को मरे हुए चार वर्ष हो चुके थे और 'लिरिकल बैलड्स' भी ससार के सामने दो साल तक रह चुकी थी।

इस बीच एक लेखक, जो इस युग के अन्य समस्त लेखको से भिन्न था, एक स्वतत्र काव्य की रचना कर रहा था जिसका स्तर अब उसके समकालीनों द्वारा उसको प्रदान किये गये स्तर से कही ऊँचा माना जाता है। यह लेखक था क्रिस्टफर स्मार्ट (१७२२-७१)। उसकी शिक्षा कैम्ब्रिज मे हुई, परन्तु इसके बाद उसने अपने जीवन का अधिकाश निर्धनता मे बिताया। कुछ समय तक वह पागल भी रहा तथा अपने जीवन का अतिम भाग उसने कर्ज़दारो की जेल में बिताया। इतने पर भी उसकी 'सॉग टु डैविड' (१७६३) अग्रेजी की महान्तम धार्मिक कविताओ मे से है तथा रॉबर्ट ब्राउनिग की 'सॉल' पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा। स्मार्ट की महत्त्वपूर्ण कृति 'जूबिलेट एग्नो' हस्तलिखित पृष्ठो के ऐसे ढेर के रूप मे छोड़ी गयी थी जिसमे कोई भी क्रम या व्यवस्था नही थी। १९५४ मे प्रकाशित एक सस्करण के सम्पादक ने उन्हें क्रमानुसार व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि अपने समग्र रूप में 'जूबिलेट एग्नो' की व्याख्या करना कठिन है तथापि उसमे बहुत-सा अश ऐसा है जो मनन के योग्य है। दूसरी ओर 'माई कैट जेफ्री' को सबोधित किये हुए अंश बिल्लियो के प्रत्येक प्रेमी को तो आनन्दित करते ही है, साथ ही प्रत्येक काव्य-प्रेमी को भी उतना ही आनदित करते है।

जॉन्सन-युग की सारिणी

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
	रिचर्डसन का 'पामिला', १७४०		
	फ़ील्डिंग का 'जोज़ेफ एण्ड्रज़', १७४२		
		पोप की मृत्यु, १७-४४; एकेन्साइड की 'प्लेज़र्स ऑव दि इमैजिनेशन', १७४४	
	रिचर्डसन का 'क्लैरिसा', १७४८	टॉम्सन की 'कासिल ऑव इण्डोलेन्स' १७४८	
	स्मॉलेट का 'रॉडरिक रैण्डम', १७४८	टॉम्सन की मृत्यु, १७४८	
	फ़ील्डिंग का 'टॉम-जोन्स', १७४९	जॉन्सन की 'दि वैनिटी, ऑव ह्यमन विशेज़' १७४९	जॉन्सन का 'आइरीन', १७४९
जॉन्सन का 'दि रैम्ब्लर', १७५०-५२			
	फ़ील्डिंग का 'अमेलिया' १७५१		

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
	स्मॉलेट का 'पेरिग्रीन पिकिल', १७५१		
	रिचर्डसन का 'सरचार्ल्स ग्रैडिसन', १७५३		
ह्यूम की 'हिस्टरी ऑव इंग्लैण्ड', १७५४-६१	फ़ील्डिंग की मृत्यु, १७५४	क्रैब का जन्म, १७५४	
जॉन्सन की 'डिक्शनरी', १७५५			
बर्क का 'एसे ऑन दि सब्लाइम ऐण्ड दि ब्यूटीफुल', १७५६			
रॉबर्टसन की हिस्टरी ऑव स्कॉटलैण्ड', १७५८		ब्लेक का जन्म, १७५७	
	जॉन्सन का रैसेलस', १७५९		
	स्टर्न का 'ट्रिस्ट्रम शैण्डी', १७५९-६१		
		मैक्फ़र्सन की 'ओसियन', १७६०-६३,	
	रिचर्डसन की मृत्यु, १७६१	स्मार्ट की 'सॉंग टु डेविड', १७६३	

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
		चैटटर्न की पो-एम्स', १७६४-७०	
		गोल्ड्स्मिथ की 'दि ट्रैवेलर', १७६४	
	वालपोल का 'कासिल ऑव ऑट्रैण्टो', १७६५	पर्सी का 'रेलिक्स ऑव ऐंशियण्ट इंग्लिश पोएट्री', १७६५	
	गोल्डस्मिथ का 'विकार ऑव वेकफील्ड', १७६६		
	स्टर्न की मृत्यु, १७६८		गोल्ड्स्मिथ का 'गुड्-नेचर्ड मैन' १७६८
'लेटर्स ऑव जूनियस', १७६९-७२			
		गोल्ड्स्मिथ की 'दि डेज़र्टेड विलेज', १७००	
		वर्ड्सवर्थ का जन्म, १७७०	
		चैटर्टन की मृत्यु १७७०	
	स्मॉलेट का 'हम्फ़्री क्लिंकर', १७७१	बीटी की 'मिन्स्ट्रेल', १७७१-७४	

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
	स्मॉलेट की मृत्यु, १७७१	ग्रे की मृत्यु, १७७१	
		स्कॉट का जन्म, १७७१	
	मेकेन्ज़ी का 'मैन ऑव फ़ीलिंग', १७७१	स्मार्ट की मृत्यु, १७७१	
		कोलरिज का जन्म १७७२	
			गोल्ड्स्मिथ का 'शी स्टूप्स टु कॉन्कर', १७७३
गोल्ड्स्मिथ की मृत्यु, १७७४			
बर्क का 'अमेरिकन टैक्सेशन', १७७४		सदे का जन्म, १७७४	
बर्क का 'कंसिलियेशन विद अमेरिका', १७७५			शेरिड्न का 'दि राइवल्स', १७७५
गिबन का 'डिक्लाइन ऐण्ड फ़ाल ऑव दि रोमन एम्पायर', १७७६-८८			शेरिडन का 'दि स्कूल फॉर स्कैण्डल', १७७७
	बर्नी का 'ईवलिना', १७७८		
जॉन्सन की 'लाइव्ज़ ऑव दि पोएट्स', १७७९-८१		क्रैब का 'विलेज', १७८३	

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
		ब्लेक की 'पोएटिकल स्केचेज़', १७८३	
जॉन्सन की मृत्यु, १७८४			
		काउपर की 'दि टास्क', १७८५	
		बर्न्स की प्रारंभिक कविताएँ, १७८६	
		बायरन का जन्म, १७८८	
		ब्लेक की 'सॉंग्स ऑव इनोसेंस', १७८९	
बर्क की 'रिवोल्यूशन इन फ्रांस' १७९०			
पेन की 'राइट्स ऑव मैन, १७९१-९२	रैडक्लिफ़ का 'रोमान्स ऑव दि फॉरेस्ट', १७९१		
बॅसवेल की 'लाइफ़ ऑव जॉन्सन', १७९१			
गॉडविन की 'पोलिटिकल जस्टिस', १७९३			
गिबन की मृत्यु, १७९४	गॉड्विन का 'कैलेब विलियम्स', १७९४	ब्लेक की 'सॉंग्स ऑव इक्सपीरियन्स', १७९४	
	लूइस की 'दि मॉन्क', १७९५		

सामान्य गद्य	उपन्यास	काव्य	नाट्य-साहित्य
		बर्न्स की मृत्यु, १७९६	
बर्क का 'रेजीसाइड पीस', १७९६-९७			
बर्क की मृत्यु, १७९७		'लिरिकल बैलड्स', १७९८	
		काउपर की मृत्यु, १८००	

*

अध्याय १८

वर्ड्सवर्थ-युग (१७९८-१८३२)

पुरानी पीढ़ी के कवि

८६. **वर्ड्सवर्थ-युग**--वड्सवर्थ-युग राजनीति के इतिहास में फ्रांसीसी राज्य-क्रांति का युग है तथा साहित्य के इतिहास में उस प्रवृत्ति का जिसको सामान्य रूप से 'रोमोण्टिक विजय' कहा जाता है। परन्तु ऐसा कहते समय हमें याद रखना है कि रोमाण्टिकता की विजय के साथ-साथ नैसर्गिकता की विजय भी संबंधित है (देखो § ८३)। यहाँ हमारे लिए यह बात समझ लेना बहुत ही आवश्यक है कि साहित्यिक क्षेत्र का यह आन्दोलन व्यापक सामान्य आन्दोलन का केवल एक पक्ष था, जिसका एक दूसरा पहलू फ्रांसीसी क्रांति में उपलब्ध होता है। मूलतः राजनीतिक और साहित्यिक दोनों आन्दोलनों की प्रेरणा का स्रोत एक ही था। यह था फार्मूलों, परम्पराओं, रूढ़ियों एवं मृत आदर्शों के अत्याचार से अधैर्य वैयक्तिकता पर जोर तथा स्वतन्त्रता एव विस्तृत जीवन की आकाक्षा। क्रातिवादी विचारकों की शिक्षाओं की ही भाँति नयी कविता के सिद्धान्तो मे भी ऐसी बहुत-सी बातें थी जिनमें प्राचीन को चुनौती दी गयी थी और उस पर आक्रमण किया गया था। कला के दीर्घकाल से मान्य नियमों और वास्तव मे किसी प्रकार के निर्दिष्ट नियमों को स्पष्ट रूप से घृणा की दृष्टि से देखा जाता था; पोप तथा आगस्टन संप्रदाय के विरुद्ध चल रही प्रतिक्रिया आक्रामक हो गयी; तथा सहजोद्रेक के सिद्धान्त को सर्वत्र प्रमुखता दी जाने लगी। यह सत्य है कि यत्र-तत्र रूढ़िवादी आलोचकों ने उन विचारों का विरोध करने का प्रयास किया जो उन्हें उच्छृखल और अनर्थकारी लगते थे। उदाहरणार्थ, लार्ड जेफ्री ने 'एडिनबरा रिव्यू' के एक प्रारम्भिक अंक में लिखा कि "धर्म के काव्य का साम्य इस बात में है कि उसके प्रतिमान बहुत समय पूर्व कुछ दैव-प्रेरित लेखकों द्वारा निर्धारित कर दिये गये थे जिनके अधिकार के विषय में संदेह करना अब बिलकुल ही न्यायसंगत नहीं है।" परन्तु यह मत युग की प्रमुख भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। यह भावना तो कीट्स द्वारा

व्यक्त की गयी, जब उसने लिखा कि 'किसी व्यक्ति में काव्य-प्रतिभा को अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग स्वयं ही खोजना होगा। इसको नियमों और आदेशों द्वारा परिपक्व नहीं किया जा सकता। इसके लिए तो आवश्यकता है संवेदनशील अनुभूति तथा स्वयं अपने संबंध में प्रतिभा की सतत जागरुकता की, जो वस्तु सर्जनकारी है उसे अपनी सृष्टि स्वयं ही करनी होगी।' यदि हम क्रीट्स के इस कथन की तुलना पहले उद्धृत किये जा चुके पोप के निम्न लिखित दोहे से करे तो आगस्टन और रोमाण्टिक काव्य के बीच जो मौलिक सैद्धान्तिक अंतर है वह स्पष्ट हो जायगा—

"प्राचीन काल में अन्वेषित ये नियम नही थे कल्पित,
अब भी प्रकृति समान, किन्तु है उसका रूप व्यवस्थित।"[१]

अवश्य ही यह सोचना ठीक न होगा कि इन राजनीतिक और साहित्यिक आन्दोलनों का संयोग सर्वत्र उन्ही व्यक्तियों में हुआ जिनमें इनमें से एक या दूसरी विशेषता वर्तमान थी, अथवा कोई व्यक्ति इनमें से किसी एक का अनुगामी तब तक नही हो सकता था जब तक वह दूसरे से भी सहानुभूति न रखे। इस प्रकार के विचार की असत्यता स्कॉट के उदाहरण से तुरन्त प्रकट हो जाती है। स्कॉट काव्य में रोमाण्टिकतावादी था और राजनीति में 'टोरी' (अर्थात् रूढ़िवादी)। वस्तुतः उसकी विशिष्ट रोमाण्टिकता, जैसा कि हम देखेंगे, उसके टोरीवाद का ही अंग थी। हम केवल आन्दोलनों की बात कर रहे है तथा इन दोनों के बीच जो घनिष्ठ संबंध था वह इस बात से स्पष्ट है कि दोनों का प्रधान स्वर मुक्ति का है।

लेकिन हमको इससे आगे जाना है और फ्रांसीसी राज्यक्रांति की विभिन्न अवस्थाओं पर तथा इन अवस्थाओं द्वारा यूरोपीय समाज में लाये गये महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों से अंग्रेजी काव्य का जो घनिष्ठ संबंध है उस पर विचार करना है। १७८९ के महान् विप्लव ने सम्पूर्ण सभ्य संसार में नवजीवन की लहर दौड़ा दी। इसका आगमन एक नये युग की भविष्यवाणी के रूप में हुआ, तथा थोड़ी देर के लिए तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो समस्त मानवता अतीत के सारे दुर्गुणों को पीछे छोड़कर एकदम से ऐसे युग में प्रवेश करनेवाली थी जिसमें प्रजातांत्रिक आदर्शों

१. "Those rules of old discovered, not devis'd,
Are Nature still, but Nature methodis'd."

की पूर्ति हो चुकी थी—स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व तथा मनुष्य के अधिकारों के आदर्श। इस प्रकार उत्साही युवको की आत्मा मे लोकहित सबधी एक आश्चर्यजनक उत्साह तथा उन्नति और पूर्णता के प्रभापूर्ण स्वप्न जाग्रत हो उठे; और फ्रांस की भाँति इग्लैण्ड मे भी उदार प्रकृति के लोग फ्रांसीसी क्रांति द्वारा प्रसूत मनोवेगों की आग से धधक उठने को तैयार ही थे, क्योकि, जैसा उत्तर अठारहवी शताब्दी के अग्रेजी साहित्य से प्रकट है, इग्लैण्ड मे उन सिद्धान्तो मे से अनेक की अबाध प्रगति होती रही थी जो अब तक राजनीतिक क्रांति के कारण केवल अमूर्त सिद्धान्त न रहकर सजीव तथ्यो का रूप धारण करनेवाले थे। जैसा वर्ड्सवर्थ ने आगे चलकर लिखा—

"किन्तु यूरोप मग्न था उस काल हर्षातिरेक से,
था खड़ा फ्रांस स्वर्णिम घड़ियों की चोटी पर,
अरु लगती मानव-प्रकृति पुनर्जन्म लेती हुई;"[1]

और एक बार पुनः

'उस ऊषा मे जीवित रहना ही था परमानन्द,
किन्तु युवा होना तो बिलकुल ही स्वर्गिम था।'[2]

परन्तु जैसा फ्रांसीसी आन्दोलन की प्रगति ने शीघ्र ही सिद्ध कर दिया, १७८९ के शानदार सकल्पो का अपूर्ण रहना ही नियत था। पहले विभीषिका-काल[3] (रेन ऑव टेरर) में भयानक अत्याचार हुए, फिर नैपोलियन का आश्चर्यकारी उद्भव; निरकुश सैनिक शासन की स्थापना; नैपोलियन के युद्धो का दीर्घकाल तक भारी बोझ; बूर्बन शासको की पुन. स्थापना; वाटरलू के बाद यूरोप के विभिन्न राजाओं द्वारा प्रजातन्त्र और लोकप्रिय शासन के विनाश के लिए किये गये निश्चया-

1. 'But Europe at that time was thrilled with joy,
France standing on the top of golden hours,
And human nature seeming born again;"
2. "Bliss was it in that dawn to be alive,
But to be young was very heaven.

३. फ्रांसीसी राज्यक्रांति (प्रथम) के समय मार्च अथवा जून, १७९३ से जुलाई १७९४ तक चलने वाला नृशंसतापूर्ण वर्षों का काल।—अनु०

त्मक प्रयास—इन सब बातों के कारण स्वाभावतः विचार और भावना दोनों में महान् परिवर्तन हुए। इनके कारण प्रतिक्रिया का श्रीगणेश हुआ; क्रांति के सिद्धात बदनाम हो गये; तथा फ्रांस ने एक नवीन और श्रेष्ठतर समाज का सूत्रपात करने का जो महान् प्रयास किया था उसकी असफलता का परिणाम यह हुआ कि लोगों की आशाओ व उनके विश्वास के महल ढह गये। उल्लास और आकांक्षा का युग समाप्त हो गया। उसका स्थान अशांति और मोहभग के युग ने ले लिया। इस प्रकार हम यह आशा कर सकते है कि हमे आदि और उत्तर क्रांति-काल की कविता के स्वर मे अत्यधिक भेद दिखाई देगा।

८७. वर्ड्सवर्थ का जीवन-वृत्त—विलियम वर्ड्सवर्थ का जन्म १७७० में कम्बरलैण्ड प्रदेश के कॉकरमाउथ नामक स्थान मे हुआ और उसकी बाल्यावस्था का बहुत-सा भाग जिस काउण्टी मे उसका जन्म हुआ था उसके पशुचारको व उपत्यकावासियो ('डेल्समेन') के बीच बीता। जैसा उसने आगे चलकर कहा, इस प्रारंभिक वातावरण का उसके ऊपर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। असंस्कृत और असभ्य होते हुए भी ये सीधे, सरल ग्रामीण सभ्यता के दूषित प्रभाव से अछूते, पुरुषत्व और नारीत्व के सरल, अलंकृत गुणो के प्रतिनिधि थे। इस कारण तथा उनके साथ उसका जो घनिष्ठ संबंध रहा उसके कारण उसने मानवता मे आस्था रखना तथा जीवन की तात्विक वस्तुओं के प्रति श्रद्धा रखना सीखा। उसकी शिक्षा-दीक्षा लकाशायर के हॉक्सहेड स्कूल और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे हुई। उसके बाद उसने दो बार फ्रांस की यात्रा की (१७९० और फिर १७९१–९२ मे)। १७९३ मे उसकी 'ऐन इवनिग वॉक' तथा 'डिस्क्रप्टिव स्केचेज' नामक कविताएँ प्रकाशित हुई जिनमे नियमित क्लासिक दोहा-छद का प्रयोग हुआ है तथा जो अन्य बातो में पोप, गोल्ड्स्मिथ और क्रैब की याद दिलाती है। एक मित्र द्वारा अपनी वसीयत मे अपने नाम कुछ रुपया छोड जाने के कारण वह आर्थिक दृष्टि से इतना स्वतन्त्र हो गया कि आगे से पूर्ण रूप से काव्य-रचना मे ही अपने को प्रवृत्त कर सके। कोलरिज से उसकी मित्रता हो जाने के कारण १७९६ के लगभग प्रारभ हुई उसकी प्रतिभा को उद्दीप्त होने मे बड़ी सहायता मिली। दो वर्ष बाद 'लिरिकल बैलड्स' नामक युगप्रवर्तक रचना के प्रकाशन मे कोलरिज ने उसके साथ सहयोग किया। १८०२ मे उसने मेरी हचिन्सन से विवाह किया तथा अपनी बहन डोरीथी को जो उसकी बड़ी ही भक्त थी, परिवार के तीसरे सदस्य के रूप में साथ लेकर वह पहले ग्रैसमियर तथा बाद में राइडल माउण्ट में बस गया। ये दोनों स्थान

लेक डिस्ट्रिक्ट में है जिसका नाम अब सदा ही उसके साथ सम्बद्ध किया जाता है। यद्यपि उसने अबाध रूप से लिखना जारी रखा तथापि जनता का ध्यान आकर्षित करने में बहुत वर्षों तक उसको सफलता नही प्राप्त हुई। आलोचकों ने तो प्रायः एकमत होकर उसकी अवहेलना ही की। परन्तु धीरे धीरे करके उसे सफलता प्राप्त हुई तथा नयी पीढ़ी के पाठक उसकी कविता में एक ऐसे अर्थ और महान्ता का अनुभव करने लगे जिसका आभास उनके पहले वाली पीढ़ी को न हो सका था। उसके विषय में लोगों के विचार में जो व्यापक परिवर्तन हो गया था वह १८४३ में प्रकट हुआ, जब सदे की मृत्यु के उपरान्त उसे राजकवि बना दिया गया। १८५० मे उसकी मृत्यु हो गयी।

उसकी रचनाओ का अध्ययन प्रारभ करने से पूर्व तत्कालीन क्रातिकारी आन्दोलन के साथ उसका जो सबंध है उसके विषय मे कुछ जानकारी कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। इन सबधो का ब्योरेवार वर्णन उसकी आत्मकथात्मक कविता 'दि प्रिल्यूड' मे दिया गया है; साथ ही उसमें उसके जीवन के अन्य रचनात्मक प्रभावो का भी वर्णन है। १७९० मे छुट्टियो मे की गयी फ्रांस की प्रथम यात्रा में वह "उदारता और कल्याणभाव को सुगध की भाँति सर्वत्र फैले हुए" देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ; परन्तु इस जन-आन्दोलन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखते हुए भी फिलहाल वह केवल दर्शकमात्र था। दूसरी फ्रास-यात्रा के तेरह महीनों में उसकी स्थिति बहुत ही भिन्न थी। ऑर्लियन्स मे, जहाँ उसने अपना अधिकांश समय बिताया, उसकी घनिष्ठता बोप्वी नामक एक अफसर से हो गयी जो 'जिरोण्डिस्ट'[1] विचारों का था। उसके साथ वह प्राचीन व्यवस्था के अन्यायो के विषय में स्वतन्त्रतापूर्वक बहस तथा नयी व्यवस्था की समस्त स्वर्णिम सम्भावनाओं की कल्पना किया करता था। अब वह फ्रांसीसी राज्य-क्रान्ति का ऐसा उत्साही समर्थक बन गया कि सितम्बर के जन-वध के तुरन्त बाद अक्टूबर, १७९२ में पेरिस पहुँचने पर 'जिरोण्डिस्ट' पार्टी का सदस्य होने के लिए तैयार हो गया। परन्तु सौभाग्यवश

१. १७९१–९२ की फ्रांसीसी लेजिस्लेटिव असेम्बली तथा १७९२–९५ के 'कन्वेन्शन' (सम्मेलन) में भाग लेने वाला एक नरम दल। इस दल के नेता 'जिरॉंद' जिले से चुने गये थे, इसी कारण इसको 'जिरोण्डिस्ट' कहा जाने लगा।––अनु०

इसी समय इंग्लैण्ड से उसे अपने संबंधियों के पास से एक कड़ा बुलावा इंग्लैण्ड लौटने के लिए प्राप्त हुआ। इस प्रकार समय रहते वह उस विपत्ति से बच गया जिसका शिकार यह पार्टी विभीषिका-काल मे हुई। इंग्लैण्ड मे उसने देखा कि रूढिवादी विचारो के लोग क्राति के प्रबल विरोधी थे और इस कारण उसने लैण्डफ के पादरी को लिखे गये एक खुले पत्र में क्रांति का पक्षपोषण करने का जिम्मा लिया। परन्तु फ्रांस और इग्लैण्ड के बीच लड़ाई छिड़ जाने के कारण उसे बड़े असमजस का सामना करना पड़ा। पहले तो वह फ्रांस के प्रति निष्ठावान् बना रहा। फिर जब विभीषिका का आरम्भ हुआ, तो उसकी निष्ठा को कठोर आघात लगा। रॉबेसपियर[1] का पतन हो जाने पर उसकी निष्ठा थोड़े दिनों के लिए पुनः जाग्रत हो गयी, परन्तु शीघ्र ही नैपोलियन के उद्भव तथा उसके बाद हुई घटनाओ के कारण सदा के लिए समाप्त हो गयी। तब प्रतिक्रिया आरम्भ हुई और इस प्रतिक्रिया के कारण उसने पहले फ्रास से अपना सबध-विच्छेद किया, फिर क्रांति के पीछे जो अमूर्त सिद्धात थे उनका निराकरण और अन्त मे युवावस्था के अपने समस्त प्रगतिशील विचारो का पूर्ण परित्याग। इस प्रकार वर्ड्सवर्थ, जिसने क्रांति के अनुगामी के रूप मे प्रारम्भ किया था, अत मे कट्टर रूढ़िवादी बन गया। जब वह फ्रांस मे रह रहा था, तभी उसने इस बात पर दु.ख प्रकट किया था कि उन्नति के कारण अतीत की बुराइयों के साथ-साथ अनेक ऐसी बातो का भी विनाश हो रहा था जो प्राचीनता तथा उनके साथ हमारे घनिष्ठ संबध के कारण एक प्रकार की दिव्यता से सम्पन्न हो गयी थी। अतीत की पवित्रता और दिव्यता की यह अनुभूति अब उसकी विचार-धारा का एक प्रधान तत्त्व बन गयी, तथा इसने उसको अग्रेजी संस्थाओ और परम्पराओं का रूढ़ समर्थक बना दिया। परन्तु ऊपरी तौर से उसके समस्त क्रातिकारी आदर्शो के ढह जाने पर भी, वर्ड्सवर्थ की रचनाएँ अन्त तक उसके युग के महान् प्रजातात्रिक आन्दोलन का अंग बनी रहीं। हम यह बात तब समझ जायेगे जब हम उसके काव्य-विषयक सिद्धान्त का विचार करेगे।

१. इसीदोर मैक्सिमिलियेन द रॉबेसपियर (१७५८–९४) फ्रांसीसी राज्य-क्रांति की प्रमुखतम विभूतियों में से था। वह 'माउण्टेन' अथवा उग्र दल का नेता था। जुलाई १७९४ में उसकी सत्ता समाप्त हुई तथा उसका वध कर दिया गया।—अनु०

८८. **'लिरिकल बैलड्स' तथा वर्ड्सवर्थ का काव्य-सिद्धांत**—मैं कह चुका हूँ कि 'लिरिकल बैलड्स' एक युगांतरकारी पुस्तिका थी और यह बात सर्वत्र एकमत से मानी जाती है कि इसके प्रकाशन से अंग्रेजी काव्य के इतिहास में एक नये अध्याय का प्रारम्भ हुआ। इसका कारण यह है कि इसमें रोमाण्टिकतावाद और नैसर्गिकतावाद दोनों का ही पूर्ण विकास दृष्टिगोचर होता है। जैसा कोलरिज ने आगे चलकर लिखा, इन दोनों सहयोगियों की योजना यह थी कि इसमें दो विभिन्न प्रकार की कविताओं का समावेश किया जाय; एक में "घटनाएँ और चरित्र, कमसे कम आंशिक रूप से ही सही, अलौकिक रखे जाने वाले थे;" और दूसरे में "विषयों का चयन साधारण जीवन से होना था।" रोमाण्टिकतावाद का प्रतिनिधित्व करती थी कोलरिज की एक मात्र कविता 'दि ऐंशण्ट मैरिनर' और नैसर्गिकतावाद की प्रतिनिधि थी वर्ड्सवर्थ की 'गुडी ब्लेक,' 'दि थॉर्न', 'दि ईडियट ब्वाय' तथा इसी प्रकार की अन्य कविताएँ।

'लिरिकल बैलड्स' के दूसरे संस्करण की प्रस्तावना में वर्ड्सवर्थ ने अपने उद्देश्यों की और भी व्याख्या की है। अस्तु—"इन कविताओं में हमारा प्रधान उद्देश्य था घटनाओ और परिस्थितियो का चयन साधारण जीवन से करना तथा उनके वर्णन में आदि से अत तक ऐसी भाषा का चुनाव करना जिसका व्यवहार लोग वास्तव में करते है; और इसके साथ ही साथ उन्हें कल्पना का ऐसा पुट भी देना था जिसके कारण साधारण वस्तुएँ भी अद्भुत रूप धारण कर लें।" आगे वह कहता है कि "सामान्य रूप से निम्न और ग्रामीण जीवन का चयन इस कारण किया गया कि उस परिस्थिति में हृदय के सारभूत मनोवेगों को अपेक्षाकृत अधिक उर्वरा भूमि उपलब्ध होती है जिसमें वे परिपक्वता प्राप्त कर सकते हैं, उन पर बंधन भी कम होता है तथा उनकी अभिव्यक्ति जिस भाषा में होती है वह अपेक्षाकृत सादी और जोरदार होती है।" इस घोषणा में तीन बातों की व्याख्या करना आवश्यक है। प्रथम है, वर्ड्सवर्थ द्वारा विषय का निर्वाचन; अर्थात् विषयों की खोज में वह सीधे साधारण जीवन की ओर जाता है और उसमें भी, कुछ बातों के कारण जो ऊपर दी जा चुकी हैं, उसकी रुचि निम्न श्रेणी के ग्रामीण जीवन में अधिक है। अपनी इतिवृत्तात्मक और वर्णनात्मक कविताओं में आदि से अंत तक उसने बराबर यही किया है, जिसके प्रतिनिधि उदाहरण के रूप में 'माइकेल' का उल्लेख किया जा सकता है। दूसरे, इन विषयों के वर्णन में उसने अठारहवीं शताब्दी के लेखकों के आडम्बरपूर्ण और अस्वाभाविक वाग्विस्तार के स्थान पर वास्तविक भाषा का प्रयोग किया है

जो ऐसे अवसरों के लिए उपयुक्त है। यह विशेषता हमे आगस्टन संप्रदाय की सम्पूर्ण रीति-नीति तथा उसके "कृत्रिम आडम्बर एवं निरर्थक वाग्जाल" के ऊपर उसके द्वारा किये गये प्रसिद्ध आक्रमण का स्मरण करा देती है। इस आक्रमण की ओर संकेत करने के अभी अनेक प्रसंग आयेगे। इस संबंध मे, यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि काव्य और उत्तम कोटि के गद्य की भाषा के बीच का अन्तर मिटाने के प्रयत्न में वर्ड्सवर्थ अपने सिद्धांतो को आवश्यकता से बहुत अधिक आगे बढा ले गया; साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि अपने प्रारम्भिक प्रयोगो को छोड़कर उसने स्वयं ही अपने सिद्धांतो का अनुसरण नही किया। परन्तु इतना होते हुए भी दीर्घकाल से मान्य, घिसी-पिटी और रूढ़िप्रधान भाषा की प्रतिष्ठा को नष्ट करने तथा उसके स्थान पर काव्य मे सादी और स्वाभाविक शैली को प्रतिष्ठित कराने मे उसके तर्क बडे ही सहायक सिद्ध हुए। तीसरे, अपनी सामग्री को काव्यात्मक रूप देने मे उसने कल्पना का जो प्रयोग किया है उस पर जोर देकर वर्ड्सवर्थ ने अत्यधिक यथार्थता के अपराध के विरुद्ध अपनी रक्षा विशेष रूप से की है। इस प्रकार उसने जीवन के उस कठोर, भावनारहित, कल्पनाहीन वर्णन का विरोध किया जो नैसर्गिकतावाद का परिणाम था, उदाहरणार्थ क्रैब के काव्य मे हमे इसी प्रकार के वर्णन के दर्शन होते है।

अब यह बात स्पष्ट हो जायगी कि वर्ड्सवर्थ के साहित्य को उसके युग के प्रजातन्त्रात्मक आन्दोलन का ही अश बताना न्यायसगत है। उसकी व्यापक अनुभूति, मानव स्वभाव की केवल बाह्य और कृत्रिम विशेषताओं से बिलकुल भिन्न जो प्राथमिक और सारभूत विशेषताएँ है उन पर दिये गये जोर, प्राकृतिक पुरुषत्व में उसका दृढ़ विश्वास, काव्यात्मक उद्देश्यो के लिए सर्वोत्तम मानते हुए साधारण कोटि के विषयों का जान-बूझकर प्रयोग; ये सब विशेषताएँ उसको क्रातिवादी युग की क्रांतिकारी प्रवृत्तियों से संबंधित कर देती है। इसके अतिरिक्त उसकी रचनाओं की प्रवत्ति पूरे तौर से जीवन के सरलीकरण की ओर है, और इस दृष्टि से भी उसका संबंध क्रातिकारी भावना से है। यहाँ तक कि काव्य-भाषा विषयक उसका जो सिद्धान्त है वह भी उसी व्यापक प्रयत्न का एक और पहलू है जो उसने परम्परा तथा कृत्रिमता का विच्छेद करके प्रकृति और यथार्थता के स्थापन के लिए किया था।

८९. **वर्ड्सवर्थ के काव्य की विशेषताएँ**––जिस प्रकार पोप नगर और कृत्रिम जीवन का अति महान् अंग्रेजी कवि है, उसी प्रकार वर्ड्सवर्थ ग्राम तथा प्राकृतिक

जीवन का अति महान् अंग्रेजी कवि है। प्रकृति के व्याख्याता के रूप में तो उसका स्थान सर्वोच्च है और इस दृष्टि से उसकी टक्कर का और कोई कवि नही हुआ। प्रकृति के प्रति उसका प्रेम असीम था, तथा प्रकृति-सबंधी उसका ज्ञान भी उसके प्रेम के समान ही असीम था। स्वय अपने ही शब्दो मे, वह सदा कविता लिखते समय अपनी दृष्टि "अपने उद्देश्य पर निरन्तर जमाये रखता था;" कोई भी वस्तु वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, उसके ध्यान से छूट नहीं सकती थी; तथा उसका उद्देश्य, जो सारी बातों पर नियत्रण रखता था, यह था कि उसने जो देखा था उसका वर्णन पूरी निष्ठा के साथ करे। यह बात ठीक ही कही गयी है कि "प्रकृति में जो कुछ भी प्रगाढ और सारभूत है उसके लिए वर्ड्सवर्थ मे जो दृष्टि थी वह समस्त आधुनिक कवियो मे सबसे पैनी थी," और यह बात भी सर्वथा उचित है कि उसके सभी वर्णनो मे "एक-एक बात सत्य है। वह किसी साहित्यिक पदावली की नकल नही है, बल्कि निजी परीक्षण का परिणाम है।" तथापि वर्ड्सवर्थ के प्रकृति-काव्य का सर्वाधिक विशिष्ट गुण उसका प्रकृति-प्रेम, प्रकृतिविषयक ज्ञान और वर्णन की सत्यता नही बल्कि वह प्रगाढ धार्मिक भावना है जो उसके काव्य में सर्वत्र व्याप्त है। जैसा उसने अपनी अनेक कविताओ में—उदाहरणार्थ 'लाइन्स रिटन एबव टिण्टर्न एबी' तथा 'ओड ऑन दि इण्टीमेशन्स ऑव इम्मॉर्टैलिटी' में—बारंबार व्यक्त किया है, प्रकृति उसके लिए दैवी आत्मा का मूर्त्त रूप थी; तथा जब वह इस बात पर जोर देता है (और यह उसके दर्शन का एक मौलिक सिद्धान्त है) कि प्रकृति समस्त शिक्षको से बढ़कर है, तो उसका आशय है कि विश्वभर में व्याप्त विश्वात्मा तथा मनुष्य की आत्मा के बीच, जो उससे मिलती-जुलती है, आध्यात्मिक ससर्ग सम्भव है जिसके द्वारा हमे शक्ति, शान्ति और सुख की उपलब्धि हो सकती है।

परन्तु यद्यपि वर्ड्सवर्थ मूल रूप से प्रकृति का ही कवि है, तथापि वह मानव का कवि भी कुछ कम नही है, तथा उसने मानव-जीवन के विषय में जो कुछ लिखा है उसमे नीतिज्ञ के रूप मे उसकी महान्ता विशेष रूप से प्रकट हुई है। यह महान्ता सद्व्यवहार और कर्त्तव्य के केन्द्रीय तथ्यो पर उसकी मजबूत पकड़ तथा नैतिक नियमों की श्रेष्ठता के विषय में उसके चिरकालिक विश्वास का ही परिणाम थी। उसने सर्वत्र हमारे अन्तःकरण में स्थित उन आध्यात्मिक शक्तियों पर जोर दिया है जो, यदि हम उनका ठीक से प्रयोग करे तो, हमें स्वयं पर नियन्त्रण करना सिखाती हैं तथा हमें इस योग्य बनाती हैं कि हम धैर्यपूर्ण और सचेतन प्रयत्न करके परिस्थिति की पहुँच और बाह्य वस्तुओं की विक्रिया से ऊपर उठ सकें।

वर्ड्सवर्थ की प्रतिभा के प्रतिबन्ध अत्यन्त स्पष्ट हैं। उसमें हास्यभाव बिलकुल नही था और भावावेश का भी प्रायः अभाव ही था। नाटकीय शक्ति की न्यूनता तो उसमें विशेष रूप से थी। उसके प्रति जिन लोगों की सबसे अधिक श्रद्धा है उन्हें भी यह स्वीकार करना पड़ता है कि उसने जितनी अधिक मात्रा में प्रेरणाहीन और काव्य-गुण से रहित पद्य लिखा है उतना इस कोटि के अन्य किसी कवि ने नही लिखा। विशेष करके जिस काव्य को उसने स्पष्ट रूप से दार्शनिक बताया है उसमें, और खास तौर से 'दि एक्सकर्शन' में, उसने एक साथ सैकड़ों पक्तियाँ जिस सविस्तर नीति-उपदेश से भरी है वह बड़ा ही नीरस और काव्यरसहीन है। यह सत्य है कि उसकी संगृहीत रचनाओं में एक विशाल अश ऐसा है जो क्षणिक और नश्वर है तथा अधिकांश महान् कवियों के विपरीत उसके काव्य का आनन्द विवेकपूर्ण चयन द्वारा ही उठाया जा सकता है। परन्तु उसके विशाल काव्य का जो सर्वोत्कृष्ट और वस्तुतः सजीव अंश है वह उसके संपूर्ण साहित्य की तुलना में कम मात्रा में होते हुए भी अंग्रेजी काव्य की सर्वोत्तम निधियों में से है तथा उसको उन लोगों के बीच उच्च स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त है जिनके विषय में उसने स्वयं लिखा है—

"कवियों ने भू पर स्वर्गिक गीतों को गाकर,
बना दिया अधिकारी हमको शुद्ध सत्य आनन्द का,
दिये जिन्होंने प्रेम श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतर चिन्ताएँ,
धन्य रहें वे और प्रशंसा शाश्वत मिलती रहे उन्हें।"[1]

९०. कोलरिज—जिस समय बैस्टील का पतन हुआ उस समय वर्ड्सवर्थ का मित्र, सैमुएल टेलर कोलरिज (१७७२-१८३४) बालक ही था और क्राइस्ट्स हॉस्पिटल में पढ़ रहा था। फ्रांस की क्रांति का प्रभाव उसके ऊपर तुरन्त पड़ा तथा उसने यौवन के उत्साह से पूर्ण कुछ कविताओं में उसका स्वागत किया। जब उसने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश किया तो उसमें वही उत्साह वर्तमान

1. "Blessings be with them, and eternal praise,
Who gave us nobler loves, and nobler cares—
The Poets, who on earth have made us heirs,
Of truth and pure delight by heavenly lays."

था। परन्तु अस्वास्थ्य और ऋणों के संबंध में चिन्ता के कारण उसे वहाँ बड़ा कष्ट हुआ। १७९४ में उसकी मुलाकात रॉबर्ट सदे से हुई जो आगे चलकर उसका साढ़ू हुआ। सदे के अतिरिक्त कोलरिज की मित्रता अपने अनुरूप स्वभाव वाले कुछ अन्य युवकों से भी हुई और इन लोगों ने मिलकर अमेरिका में सुस्क्वेहाना नदी के किनारे एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए योजना तैयार की, जिसको कोलरिज ने 'पैण्टीसोक्रेसी' (अर्थात् अखिल जनसत्ता) की संज्ञा प्रदान की। यह आदर्शवादी योजना, जो इन युवकों के क्रांतिवादी उत्साह का ही सीधा परिणाम थी, असफल रही; परन्तु इस बीच मे कोलरिज ने अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं की काव्यात्मक अभिव्यक्ति 'रेलिजस म्यूजिग्स,' 'डेस्टिनी ऑव नेशन्स' तथा 'ओड टु दि डिपार्टिंग इयर' (१७९६) नामक कविताओं में की। परन्तु उसके विचारों मे शीघ्र ही परिवर्तन हो गया। यह परिवर्तन उसकी कविता 'फ्रांस : ऐन ओड' (१७९८) में व्यक्त हुआ है जो बड़ी ही भव्य है तथा जिसको उसने स्वयं अपना 'प्रत्याख्यान' (रिकैण्टेशन) कहा है। इसके उपरान्त, वर्ड्सवर्थ की भाँति वह प्रतिक्रिया की समस्त अवस्थाओं से होकर गुजरा तथा शीघ्र ही रूढ़िवाद का समर्थक बन गया। इसके बाद के उसके जीवन की कथा निरुद्देश्य भ्रमण, बनती और बिगड़ती हुई योजनाओं, असफलता तथा असफलता की कड़वी अनुभूति की कथा है। अत्यन्त विशाल प्रतिभा द्वारा सम्पन्न होते हुए भी उसमें इच्छाशक्ति का पूर्ण अभाव था तथा उसे अफीम खाने की जो लत पड़ गयी और जो बहुत वर्षों तक चलती रही, उससे उसकी शक्तियों को और भी लकवा मार गया। इस प्रकार दैवी प्रतिभा से सम्पन्न कोलरिज जीवन-पथ पर घिसटता रहा, बड़े-बड़े स्पप्न देखते हुए और बड़ी बड़ी पुस्तकों की योजना बनाते हुए; परन्तु स्वप्न कभी साकार नहीं हुए, और पुस्तके कभी लिखी नहीं गयी। उसका सम्पूर्ण साहित्य अपूर्ण तथा खण्ड-खण्ड है; तथापि उसका मस्तिष्क इतना मौलिक और सर्जनात्मक था कि धर्मशास्त्र, दर्शन तथा साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में (जिसमें उसने अपने अतिम वर्षों में काफी समय दिया) उसका जैसा प्रभाव था वह उसकी रचनाओ के आकार तथा बाह्य महत्त्व की तुलना में कही अधिक था।

कोलरिज के काव्य का जो सर्वोत्तम अंश है वह परिमाण में बहुत थोड़ा है, परन्तु वह थोड़ा ही असामान्य उत्कृष्टता से सम्पन्न है। 'डिजेक्शन : ऐन ओड' जैसी उसकी वैयक्तिक कविताएँ तथा 'वर्क विदआऊट होप' नामक कविता एक ऐसे करुण भाव से ओतप्रोत है जिसका सबंध उस शोचनीय विफलता से है जो उसके

जीवन का बहुत बड़ा अंश था। परन्तु उसका ऐतिहासिक महत्त्व प्रमुख रूप से 'दि ऐन्शेण्ट मैरिनर' तथा 'क्रिस्टाबेल' जैसी कविताओ के कारण है जो रोमाण्टिकता की विजय का उसी प्रकार पूर्ण प्रतिनिधित्व करती है जिस प्रकार वर्ड्सवर्थ की इतिवृत्तात्मक कविताएँ नैसर्गिकता की विजय की पूर्ण प्रतिनिधि है। हम पहले ही देख चुके है कि कोलरिज ने अलौकिकता को अपना विशेष क्षेत्र चुना तथा उसने अलौकिक विषयो का जैसे शुद्ध काव्यात्मक ढग से प्रयोग किया वैसा उसके पूर्व किसी कवि ने नही किया था। यह याद ही होगा कि वर्ड्सवर्थ ने सत्य मे कल्पना का पुट देकर नैसर्गिकतावाद को उस कठोर अलाक्षणिकता से बचाया जिसकी ओर वह मुड़ रहा था। कोलरिज ने अपनी अलौकिकता का संबध मनोवैज्ञानिक सत्य से स्थापित करके उसे भोड़ी विस्मयोत्पादकता से बचा लिया।

१९. **स्कॉट**––वाल्टर स्कॉट मे 'रोमाण्टिकवाद' को ऐसा व्याख्याता मिला जो कोलरिज की तुलना मे सूक्ष्मता मे तो कम था परन्तु जो उससे कही अधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली था। हम कह सकते है कि रोमाण्टिक अतीत के पुनरुज्जीवन का सम्पूर्ण आदोलन उसके साहित्य मे अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। जिस परिवार मे उसका जन्म हुआ उसके सदस्यो ने स्काटिश क्षात्रधर्म के इतिहास मे प्रमुख भाग लिया था। उसका जन्म १७७१ मे एडिनबरा मे हुआ तथा उसका बचपन अधिकाश मे सीमा प्रदेश के सैण्डी नो नामक स्थान पर अपने बाबा के घर पर बीता। यहाँ उसने उस स्थान की निर्जन और ऊबड़खाबड़ भूमि से प्रेम करना सीखा और यही उसकी बाल-कल्पना उन कहानियो द्वारा जाग्रत हुई जो उसके सबधी सीमा-प्रदेश के युद्धो के विषय मे उसे वहाँ सुनाया करते थे, जिनमे उसके पूर्वजो ने स्वयं भाग लिया था, तथा बाद मे राजकुमार चार्ली के समर्थन मे हुए विद्रोहो की कहानियाँ भी वह सुना करता था। तेरह वर्ष की अवस्था मे सयोग से उसको पर्सी की 'रेलिक्स' हाथ लग गयी (और उस समय से यह उसकी प्रिय पुस्तको मे से हो गयी)। इसको पढ़ने से उसे प्राचीन गाथाओ मे अत्यधिक रुचि हो गयी और शीघ्र ही वह स्वय भी उन्हे इकट्ठा करने लगा। जब वह कानून की पढाई कर रहा था उस समय तथा वकालत के प्रारभिक दिनो मे उसने छुट्टियो मे कई बार स्कॉटिश अधित्यका की यात्राएँ की जिनका प्रेरणादायक उद्देश्य सदैव रोमाण्टिक तथा प्राचीन इतिहास से सबधित हुआ करता था। क्योकि उस समय अधित्यका मे जाने का आशय था वर्तमान से एकदम अतीत मे प्रवेश कर जाना, इसलिए उसने भविष्य में प्रयोग करने के लिए बड़ी मूल्यवान् सामग्री एकत्र की। जन्मजात 'टोरी' होने के कारण उसकी सहानुभति

पूर्णरूप से सामतवादी और क्षात्रधर्म से सबधित व्यवस्था के साथ थी। इसीलिए उसके ऊपर फ्रासीसी क्राति का प्रभाव बिलकुल नही पड़ा। हाँ, यह अवश्य हुआ कि उसके कारण प्रजातन्त्र के प्रति उसकी घृणा ओर भी तीव्र हो गयी तथा इतिहास और रोमास की ओर उसका आकर्षण और भी गहरा हो गया, और उसने नये उत्साह के साथ उनका सहारा लिया। अतएव फ्रासीसी राज्यक्राति उसके जीवन मे एक घटना मात्र थी। परन्तु इस बीच मे उसकी रुचि जर्मन रोमाण्टिक साहित्य मे हो गयी थी, तथा कुछ जर्मन गाथाओ के अनुवाद प्रस्तुत करने के उपरान्त उसने उसी प्रकार के स्वतन्त्र प्रयोग करने प्रारम्भ किये। इनमे उसे लिविस से बड़ा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। फिर पर्सी से प्राप्त प्रेरणा के ही अन्तर्गत, उसने अनेक वर्षो मे एकत्र किये हुए अपने विशाल सग्रह को 'दि मिन्स्ट्रेल्सी ऑव दि स्कॉटिश बॉर्डर' (१८०२-३) नाम से प्रकाशित करवाया। यह उसका पहला महत्त्वपूर्ण प्रकाशन था। इसी के फलस्वरूप उसकी पहली लबी कविता 'दि ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' (१८०५) का जन्म हुआ जो एक प्रकार की विस्तृत गाथा है और सीमा प्रदेश की घटनाओ व मारकाट और वशीकरणो से पूर्ण है। मध्ययुगीन कथा की मनोहरता के बिलकुल ऐसे ही पूर्ण प्रदर्शन के लिए आकुल जनता वर्तमान ही थी। फलस्वरूप 'दि ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' को जो सफलता प्राप्त हुई उससे स्कॉट स्वय जितना आश्चर्यचकित हुआ उतना और कोई नही हुआ होगा। इसके बाद फिर अन्य पद्य-प्रेमाख्यानो की रचना हुई जिनमे से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है 'मार्मियन' (१८०८), 'दि लेडी ऑव दि लेक' (१८१०) तथा 'रोकबी' (१८१३)। इसके बाद 'ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' द्वारा खोली हुई शिरा के क्रमिक क्षय तथा बायरन की, जो इस समय ब्रिटिश जनता पर तूफान की भाति छा गया, भयावह प्रतिद्वद्विता ने स्कॉट को अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति के लिए नया माध्यम खोजने को विवश कर दिया, और 'वेवर्ली' (१८१४) की रचनाकर रोमाण्टिक कवि ने रोमाण्टिक उपन्यासकार के रूप मे एक नये तथा पहले से भी अधिक शानदार जीवन का प्रारभ किया। गद्य-कथा-साहित्य के क्षेत्र मे उसने जो कार्य किया उसके विषय मे मै किसी और अध्याय मे बात करूँगा। यहाँ मै इतना और बता दूँ कि १८२५ मे उसको आर्थिक सकट ने आ घेरा। परन्तु लम्बे समय तक सम्पन्न जीवन बिताने पर भी उसके ऊपर उसका दुष्प्रभाव बिलकुल नही पडा था और उसने विपत्ति के समय बड़ी बहादुरी दिखायी। शीघ्रता से गिर रहे स्वास्थ्य के बावजूद उसने लेखनी के श्रम द्वारा अपने विशाल ऋण से मुक्त होने के

लिए अंत तक अपना शानदार संघर्ष जारी रखा। सन् १८३२ में उसकी मृत्यु हुई।

स्कॉट की कविता ठीक उसी प्रकार की है जिसकी आशा हम उसके जैसे चरित्र और प्रशिक्षण वाले व्यक्ति से करेंगे। उसने अपने आदर्श के रूप में क्लासिक महाकाव्य को पूर्णरूप से अस्वीकृत कर दिया, तथा उसकी "पद्यात्मक रोमाण्टिक कथाएँ" (उसने स्वयं उन्हे इसी नाम से पुकारा है) प्राचीन गाथा और मध्ययुगीय प्रेमाख्यान के स्वाभाविक विकास की ही द्योतक है। उसकी शैली ओजपूर्ण, स्वच्छन्द और क्षिप्र है, परन्तु बहुधा असावधानी और व्यर्थ विस्तार से पूर्ण तथा साधारण कोटि की है। कहानी कहने मे उसकी दक्षता प्रशंसनीय है। उत्तेजक कार्य-कलाप के दृश्यो मे वह विशेष सफल रहा है और सबसे अधिक युद्ध के वर्णन में। दृश्यावली के विस्तृत और स्पष्ट वर्णन मे भी वह सिद्धहस्त है। परन्तु वह बड़ी ही तीव्र गति से लिखता था तथा उसकी आश्चर्यजनक क्षिप्रता बहुधा अनर्थकारी सिद्ध होती थी। उसमे वर्ड्सवर्थ और कोलरिज की रहस्यवादी भावना तथा आध्यात्मिक शक्ति का लेश भी नही है; वह हमें वर्णित वस्तुओं के ऊपरी धरातल से नीचे शायद ही कभी ले जाता है; विचारो की गुरुता का उसमे अभाव है; यद्यपि उसका स्वर विशिष्ट रूप से स्वस्थ है, तथापि उसका नीति-उपदेश बिलकुल पिटा-पिटाया और नीरस है।

९२. वर्ड्सवर्थ के समकालीन अन्य कवि—मै यहाँ वर्ड्सवर्थ, कोलरिज के नाम के साथ अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण कवियों को ही सबद्ध करूँगा जिनका जन्म या तो उन्ही की दशाब्दी मे हुआ था या उसके पूर्व, अर्थात् १७८० से पहले। कालक्रमानुसार उनके नाम इस प्रकार है—विलियम बाउल्स (१७६२-१८५०); सैमुएल रोजर्स (१७६३-१८५५); जेम्स हॉग (१७७०-१८३५); रॉबर्ट सदे (१७७४-१८४३); वाल्टर सैवेज लैण्डर (१७७५-१८६४); टॉनस कैम्बेल (१७७७-१८४४) तथा टॉमस मूर (१७७९-१८५२)।

यद्यपि आजकल बाउल्स की ख्याति नही के बराबर है तथापि स्नेहपूर्ण मान्यता के दो शब्दो का अधिकारी तो वह है ही, क्योकि उसकी रचना सॉनेट्स ने (जिसका प्रकाशन सर्वप्रथम १७८९ मे हुआ था, जैसाकि मुखपृष्ठ पर लिखा गया है, 'एक यात्रा के दौरान में मुख्य रूप से सुरम्य स्थलों पर ही लिखी गयी थी') 'लिरिकल बैलड्स' से पहले के वर्षो में अंग्रेजी काव्य में प्रकृति-प्रेम के विकास मे बड़ा योग दिया। युवावस्था मे उनको पढने से कोलरिज पर उनका जो महान्

प्रभाव पड़ा था उसकी साक्षी उसने स्वय दी है, तथा वर्ड्सवर्थ भी उनकी बड़ी प्रशसा किया करता था।

रोजर्स मे एक सफल बैंकर और कवि का अनोखा सयोग था। वह विक्टोरियन युग तक मे काफी समय तक जीवित रहा। परन्तु वह क्रांति की भावना से लगभग अछूता ही रहा तथा साहित्य-क्षेत्र के नये आन्दोलनो से भी अप्रभावित ही रहा, जिनके उत्थान और विजय को उसने स्वय देखा था। उसकी 'प्लेजर्स ऑव मेमोरी' (१७९२) कट्टर दोहा-छद तथा 'निर्दोष' आगस्टन-शैली में लिखी हुई है, यद्यपि उसकी निर्देशपुस्तिका-जैसी कविता 'इटली' (१८२२) अतुकात छन्द में है, तथापि उसमें अस्वाभाविक भव्यता की परम्परा को बनाये रखा गया है। रोजर्स की निष्ठा अतीत के प्रति ही थी परन्तु उसमे प्रतिभा की ऐसी शक्ति का अभाव था कि वह किसी प्रतिक्रिया का प्रारभ कर सके।

हॉग ने, जिसको 'ऐट्ट्रिक शेफर्ड' कहा जाता था, गद्य और पद्य दोनो मे बहुत-सा साहित्य प्रस्तुत किया, परन्तु वह अपनी रचनाओ की अपेक्षा एडिनबरा के कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक व्यक्तियों के साथ अपनी मित्रता के कारण अधिक प्रसिद्ध है। उसकी कुछ गाथाओ को स्कॉटलैण्ड के स्थानीय भाषा-साहित्य मे सम्मानित स्थान प्राप्त है, जब कि उसकी लम्बी कविताओ 'किलमेनी' और 'दि क्वीन्स वेक' मे कल्पना और शक्ति का कुछ पुट है। बर्न्स के उपरान्त वास्तविक काव्यगुण से सम्पन्न वही कवि ऐसा है जिसका जन्म स्कॉटिश ग्रामीणो के बीच हुआ था और इस प्रकार उसके साथ उसका बिलकुल सीधा सबध था।

सदे का उल्लेख तनिक विस्तार के साथ होना चाहिए। वर्ड्सवर्थ और कोलरिज की भाँति युवावस्था मे उस पर भी फ्रासीसी राज्यक्रांति का बड़ा प्रभाव पडा तथा 'जोन ऑव आर्क' नामक महाकाव्य (रचित १७९३, प्रकाशित १७९६), 'वाट टाइलर' नामक नाटक (१७९४) और बहुत-सी गौण कविताओ मे उसने अत्यन्त उग्र विचार व्यक्त किये तथा पृथ्वी पर विद्यमान सभी प्रकार के दूषणो के विरुद्ध अपना अधैर्य भी प्रदर्शित किया। 'जिरोण्डिस्ट' दल के पतन के साथ उसके राजनीतिक जीवन की दिशा भी बदल गयी तथा अत मे, वर्ड्सवर्थ और कोलरिज की भाँति उसने अपने सारे प्रारम्भिक विचारो का निराकरण कर दिया और कट्टर टोरी बन गया। उसने गद्य और पद्य दोनो की रचना मे बहुत ही अधिक मेहनत की; यहाँ तक कि छोटे छापे और दो कालम वाले ८०० पृष्ठो की पुस्तक केवल उसकी कविताओ से ही भरी है। परन्तु इस विशाल साहित्य का बहुत ही थोड़ा अंश वास्तव

में सजीव है। हाँ कुछ गाथाएँ अवश्य है जो बड़ी ही उत्कृष्ट है, तथा कुछ आनन्द-दायक गीतियाँ भी है, जैसे 'आफ्टर ब्लेनिहम', 'दि हॉली ट्री' और 'दि स्कॉलर'। उसके 'जोन ऑव आर्क' तथा 'वाट टाइलर' मर्यादा और नियम के उन सभी उल्लघनो से पूर्ण है जिनकी आशा एक अनुभवहीन परन्तु उत्साहपूर्ण युवक की रचनाओ मे रहती है। 'ए विजन ऑव जजमेन्ट' नाम से उसने जार्ज तृतीय की जो स्तुति की है वह बडी ही विवेकशून्य और उपहासास्पद है तथा उसकी याद केवल बायरन द्वारा इसके ऊपर लिखे हुए व्यग्य के कारण ही की जाती है। यद्यपि उसकी विशाल कथात्मक कविताएँ (उनको महाकाव्य कहना तो कठिन ही है)—'मैडॉक', 'थलाबा दि डिस्ट्रायर', 'रॉडरिक', 'दि कर्स ऑव कहामा'— जिनके आधार पर उसने कवि के रूप मे प्रसिद्धि प्राप्त करने की चेष्टा की, उस समय स्कॉट, लैण्डर और शेली जैसे लोगो द्वारा बहुत ही प्रशसित हुई, यद्यपि अब तो उनको लेखक के पाण्डित्य और परिश्रम का ही स्मारक माना जा सकता है, न कि वास्तविक काव्यात्मक प्रेरणा का। परन्तु उनका ऐतिहासिक महत्त्व बहुत है। उनसे रोमाण्टिक आन्दोलन की उस प्रवृत्ति का पता चलता है जिसके कारण कवि लोग नवीन, आकर्षक और सुरम्य विषयो की खोज मे बराबर आगे ही बढते गये और इनमे से दो कविताएँ अठारहवी शताब्दी के छद-विधान की एकरूपता के विरुद्ध एक उत्कट प्रतिक्रिया की द्योतक है। 'थलाबा' की पक्तियाँ अतुकात है और उनकी लम्बाई तथा छद भी भिन्न-भिन्न है। 'कहामा' मे तुक का प्रयोग तो अवश्य हुआ है परन्तु छद-सबधी अनियमितता उसी प्रकार बनी है। शेली ने अपनी 'क्वीन मैब' नामक कविता मे 'थलाबा' के छन्दविधान को ही अपना आदर्श बनाया।

लैण्डर अपने लबे जीवन भर बराबर काव्य-रचना करता रहा। उसकी पहलीपु स्तक १७९५ मे प्रकाशित हुई और अन्तिम १८६३ मे। यद्यपि उसे 'सुविज्ञ पाठक' भी मिल गये, चाहे उनकी सख्या कम ही रही, तथापि वह कभी लोक-प्रिय नही हुआ। उसके विषय मे कहा जा सकता है कि वह एक क्लासिक लेखक था जो काव्य-रचना रोमाण्टिक-युग मे कर रहा था, परन्तु उसकी क्लासिकता शुद्ध ग्रीक प्रकार की थी तथा उसमे और अठारहवी शताब्दी की छद्म-क्लासिकता मे कोई समानता नही थी। चाहे वह क्लासिक विषयो को ले, जैसा उसकी 'हेलेनिक्स' मे है, या रोमाण्टिक विषयो को, जैसा 'गेबीर' मे है, उसने सदैव उसी सयमित, अनलकृत और मूर्ति-कला जैसी सावधानीपूर्ण शैली मे लिखा है। जैसा सर हैनरी टेलर ने उसके विषय मे कहा है, वह "शूरतापूर्ण विचारो की एक बीती हुई दुनिया

में रहता था जिसमें साधारण जीवन की घटनाओ के द्वारा कोई परिवर्तन नही होता था; वह संसार की सबसे घटनापूर्ण शताब्दी मे लगभग पूरे सौ साल जीवित रहा परन्तु उसने अनुभव से कुछ सीखा नही और अपने विचारों मे भी प्राय· कोई वृद्धि नही की।'

कैम्बेल की बात भिन्न थी। उसकी प्रारम्भिक रचनाओ मे आगस्टन परम्परा से संबंध-विच्छेद के चिह्न बिलकुल नही है, न भाव मे, न शैली मे। उसकी 'प्लेजर्स ऑव होप' (१७९९), जो रोजर्स की 'प्लेजर्स ऑव मेमोरी' से कही अधिक अच्छी है, विषय-वस्तु और शैली दोनों ही दृष्टियों से समाप्तप्राय· आगस्टन परम्परा में ही है तथा बहुत वर्षो बाद लिखी गयी 'थियोडोरिक' की ही भाँति क्लासिक दोहा छद मे लिखी गयी है। परन्तु इसकी भाषा मे रूढिवादी धरातल के नीचे बडी क्रातिकारी भावना छिपी है। आगे चलकर, कैम्बेल मे भी अपने समय के नवीन काव्यात्मक प्रभाव परिलक्षित हुए, तथा 'गर्ट्रूड ऑव व्योमिग' मे (जिसमें स्पेन्सरियन पद्याश का प्रयोग हुआ है) वह करीब-करीब रोमाण्टिक ही है। उसकी कुछ अपेक्षाकृत छोटी कविताएँ वस्तुत बडी ही आकर्षक और महत्त्वपूर्ण है, उदाहरणार्थ 'लॉशील', 'लार्ड यूलिन्स डॉटर' तथा 'दि लास्ट मैन', परन्तु आजकल वह प्रमुख रूप से अपनी ओजस्वी युद्ध-गीतियो के लिए प्रसिद्ध है। उदाहरण के लिए 'यी मैरिनर्स ऑव इग्लैण्ड', 'होएनलिण्डेन', 'दि बैटिल ऑव दि बाल्टिक' का नाम लिया जा सकता है जो अंग्रेजी भाषा मे इस प्रकार की सर्वोत्तम रचनाओ मे से है।

इस भाग मे जितने लेखको का उल्लेख हुआ है उन सबमे आजकल सामान्य पाठक के लिए सभवत· मूर सबसे अधिक आकर्षक है। यह सत्य है कि उसकी 'लाला रूख' की ख्याति, जो किसी समय बहुत ही प्रसिद्ध थी, अब बहुत कम रह गयी है। यह पूर्वीय कथा उस शैली में लिखी गयी थी जिसके लिए उसके मित्र वायरन ने जनता मे रुचि उत्पन्न कर दी थी। परन्तु यदि हम जानना चाहे कि मूर अपने सर्वश्रेष्ठ क्षणो मे कितनी ऊँचाई तक पहुँच सकता था, तो हमे इस महत्त्वाकाक्षापूर्ण रचना की ओर नही बल्कि उसकी 'आयरिश मेलोडीज' की ओर उन्मुख होना चाहिए। उसको अग्रेजी का अतिम गायक-कवि कहा गया है और यह वर्णन अनुपयुक्त नही है। उसमे गीति-रचना की वास्तविक प्रतिभा थी और यदि उसके पद्य मे प्रायः भावना की गहराई का अभाव दिखाई देता है या यदि वह ऐसी भावना से ओतप्रोत है जो स्थायी नही सिद्ध हुई है, तो साथ ही उसमे ऐसा अंश भी है जो वास्तव में जीवित है और जो उसको उन कवियों के बीच प्रमुख स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त है जिन्हे हम गायक कहते है।

अध्याय १९

वर्ड्सवर्थ-युग

नयी पीढ़ी के कवि

९३. **उत्तर क्रांति-युग**—फ्रासीसी क्रान्ति की समाप्ति का यह आशय नही था कि क्रांतिकारी आन्दोलन का भी अंत हो जाय, यहाँ तक कि राजनीतिक क्षेत्र में भी उसका अंत नही हुआ। यूरोप के विभिन्न देशो की जनता जाग उठी थी और अब उसको न तो कुचला ही जा सकता था और न समझा-बुझाकर शान्त ही किया जा सकता था। इसी कारण स्पेन, पुर्तगाल, इटली और ग्रीस में बारबार विप्लव हुए तथा इंग्लैड मे बड़ा भयकर असतोष व्याप्त रहा। परतु इस बीच, जैसा कि हम देख चुके है, एक प्रबल प्रतिक्रिया का भी आरभ हो चुका था, पुरानी पीढ़ी के बहुत-से लोगो ने अपनी पुरानी निष्ठा का परित्याग कर दिया तथा कुछ समय के लिए प्रगति और जन-शासन के सिद्धांतो का लोप हो गया। परंतु युवा पीढ़ी के अपेक्षाकृत उष्णतर भावना वाले अनेक व्यक्तियों के लिए टोरीवाद की आत्मतुष्टि की भावना असभव थी। वे ऐसे ठीक समय से बड़े हुए कि उन्हे प्रजातत्र की तथाकथित असफलता का पूरा-पूरा तात्पर्य समझ मे आ गया और उन्होने अपने को ऐसे ससार मे पाया जो क्रातिकारी उत्तजना से दीर्घकाल के उपरांत मुक्त हुआ था, जो उसके कारण थककर चूर-चूर हो चुका था परतु फिर भी असन्तुष्ट था। पुराना उत्साह और पुरानी आशाएँ विनष्ट हो चुकी थी और उनके विनाश के उपरांत उनका स्थान कही पर उदासीनता और विरक्ति ने ले लिया था, कही उस जनद्वेष ने जो प्रायः विस्फुटित आदर्शवाद का परिणाम होता है, और कही पर कड़वे असंतोष व लक्ष्यहीन अशाति की मनोदशा ने। यही वे परिस्थितियाँ थी जिन्होने उत्तर-क्रांति-युग मे जन्म लेने वाले अग्रेजी कवियो पर अत्यधिक प्रभाव डाला और उन्हे स्वभावतः विषादग्रस्त बना दिया। फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिभा और चरित्र की विशेषताओं के अनुसार ही अपने युग से प्रभावित होता है। अतएव हमारे कनिष्ठ क्रांतिकारी वर्ग के तीन प्रमुख कवि बायरन, शेली और कीट्स एक ही

वातावरण मे रहे तथा अपने चारो ओर एक ही प्रकार की शक्तियो का प्रभाव देखा, तथापि उनके काव्य की प्रमुख विशेषता और मनःस्थिति मे परस्पर जो विरोध है वह जैसा आश्चर्यजनक है, उससे बढकर और कोई चीज न होगी।

९४. **बायरन**––इन तीनों कवियो मे जॉर्ज गॉर्डन, लार्ड बायरन उम्र में सब से बड़ा तो था ही, वह सबसे प्रतिनिधि कवि भी है क्योकि उसने उस विद्रोह-भावना को अन्य समस्त अंग्रेजी लेखको से अधिक अभिव्यक्ति प्रदान की जो एक साथ बडी व्यापक, आवेगपूर्ण तथा सत्त्वहीन थी और जो उसके युग की प्रमुख विशेषताओं मे से थी। उसके अपने स्वभाव और तूफानी जीवन ने उसे अपने युग का प्रतिनिधि लेखक बनने मे बड़ी सहायता की। उसका जन्म १७८८ मे हुआ तथा उसके पूर्वज बड़े ही अनियंत्रित और स्वच्छन्द थे। अपने माता-पिता से उसको वह सहज-क्रोधी और ज्वालामुखी के समान प्रचण्ड स्वभाव विरासत मे मिला जिसके कारण उसका संघर्ष व्यक्तियों, सस्थाओ तथा अन्य वस्तुओ से बारम्बार होता रहा। जब वह केवल बालक-जैसा ही था, उसने पद्य की एक छोटी-सी पुस्तिका, आवर्स अॅव आइडिलनेस' नाम से प्रकाशित करवायी। 'एडिनबरा रिव्यू' ने इसकी घोर आलोचना की। इस आलोचना का जवाब उसने 'इग्लिश बार्ड्स ऐण्ड स्कॉच रिव्यूअर्स' नामक व्यग्यपूर्ण व्यग्य-रचना मे दिया। १८०९-११ में उसने यूरोप का जो भ्रमण किया उसने उसको 'चाइल्ड हैरल्ड्स पिल्ग्रिमेज' के प्रथम दो सर्गो की सामग्री प्रदान की। इन सर्गो मे उसने अपने द्वारा देखे हुए स्थानो के वर्णन के साथ-साथ ऐतिहासिक स्मृतियो तथा मनुष्य के वैभव और शक्ति की अस्थिरता पर काफी मात्रा मे विषादपूर्ण चिन्तन को भी सयुक्त कर दिया। इन दोनो सर्गो का प्रकाशन १८१२ मे हुआ तथा इनको विशाल सफलता प्राप्त हुई। बायरन ने स्वयं लिखा है कि "एक सुबह मै उठा और अपने को प्रसिद्ध पाया।"[1] फिर कुछ समय तक तो 'रीजेन्सी'[2] के दिनो के फैशनेबुल और दुर्व्यसनी समाज में उसकी पूजा ही होती रही तथा

1. "I woke up one morning and found myself famous."

२. **जार्ज तृतीय (१७६०–१८२०) के पागल हो जाने के कारण शासन चलाने के लिए उसके पुत्र को 'रीजेण्ट' नियुक्त किया गया जो आगे चलकर जार्ज चतुर्थ (१८२०–३०) हुआ। पिता के जीवन-काल में उसने 'रीजेण्ट' को हैसियत से जो शासन किया उस काल को 'रीजेन्सी' (१८११–२०) कहते है।––अनु०**

अपने सहस्रों पाठकों को वह अपने पद्य-प्रेमाख्यानों की वेगवती भावना एवं अत्यधिक चित्रमय दृश्यावली द्वारा आश्चर्यान्वित और आनदित करता रहा। ये प्रेमाख्यान थे 'दि गियोर', 'दि ब्राइड ऑव एबीडॉस', 'दि सीज ऑव कोरिन्थ', 'दि कॉर्सेर'। १८१५ मे उसने विवाह किया परतु एक ही वर्ष बाद वह और उसकी पत्नी एक दूसरे से अलग हो गये। इससे बडी बदनामी फैली और जिस जनता ने अभी थोडे ही दिन पहले उसके ऊपर अतिशयोक्ति-पूर्ण प्रशसा की वर्षा की थी वही जनता अब उसको अन्याय का दानव कहकर उसकी भर्त्सना करने और उसे कोसने लगी। जब उसने इग्लैण्ड छोडा उस समय वह बडा ही असतुष्ट और कुपित था। उसके जीवन का शेष भाग यूरोप मे ही बीता तथा इन्ही निर्वासन के वर्षो मे उसने अपने श्रेष्ठतम साहित्य की रचना की, उदाहरणस्वरूप 'मैनफ्रेड', 'केन', 'चाइल्ड हैरल्ड' के तीसरे और चोथे सर्ग तथा 'डॉन जुआँ' जो अपूर्ण रह गयी। अत मे प्रत्येक वस्तु--क्या ख्याति, क्या काव्य और क्या स्वय, सभी--से विन्न और क्लान्त होकर तुर्को के विरुद्ध अपनी स्वतत्रता के लिए लड़ रहे यूनानियो के सघर्ष मे वह पिल पडा। उसने लड़ाई के मैदान मे युद्ध तक किया। फिर १८२४ मे सैतीसवाँ वर्ष पूरा करने के पूर्व ही मिसोलॉन्घी नामक स्थान पर बुखार के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

बायरन ऐसी सहजता और क्षिप्रता के साथ लिखता था कि वह अविश्वसनीय-सी लगती है। उसका साहित्य न केवल अत्यत विशाल है बल्कि बाह्य रूप से नाना प्रकार का भी है, क्योकि उसमे गीति, व्यग्य, कथात्मक कविताएँ, जिनमे गभीर भी है और कोई-कोई गभीरतापूर्ण हास्य लिये हुए, दु खान्त नाटक तथा नाटकीय कविताएँ सभी कुछ है। परतु यह विविधता बस ऊपर की ही है; क्योकि बायरन अत्यधिक अहवादी था और अपने आप से बाहर शायद ही कभी जाता था, फिर उसने चाहे जो काव्य-रूप ग्रहण किया हो। परिणामस्वरूप उसके काव्य का जो प्रभाव हमारे ऊपर अन्तिम रूप से पडता है वह विविधता का नही वरन् एकरूपता और नीरसता का है। आलोचक और सिद्धातशास्त्री के रूप मे उसने अपने को 'आगस्टन' सम्प्रदाय का अनुयायी घोषित किया; पोप की वह प्रशसा करता था और वर्ड्सवर्थ व कोलरिज की बिलकुल परवाह नही करता था। वह अठारहवी शताब्दी की कविता की तुलना एक यूनानी मन्दिर से और अपने युग की कविता की तुलना कला से विहीन, असंस्कृत तुर्की मस्जिद से करता था। फिर भी, जैसा उसने स्वय स्वीकार किया है, मंदिर को हटाकर उसके स्थान पर मस्जिद को प्रतिष्ठित करने मे उससे अधिक कार्य और किसी ने नही किया। कारण यह कि उसके सिद्धांत चाहे जो कुछ हों, उसके व्याव-

हारिक प्रभाव का सम्पूर्ण भार 'रोमाण्टिकवाद' की ही ओर था। समय की गति तथा भावना और रुचि दोनो मे परिवर्तन हो जाने के कारण सामान्य रूप से उसके काव्य का विध्वस हो गया है; उसका बहुत-सा अश जिसने प्रारभ मे पाठको को मोहाभिभूत कर दिया था अब अत्यत साधारण और केवल ऊपरी टीम-टाम से पूर्ण लगता है; प्राय. उसमे वास्तविक काव्य-गुण के स्थान पर व्यर्थ के वाक्ताण्डव और कोलाहल के ही दर्शन होते है; तथा यदि सदैव नही तो कम से कम कभी-कभी तो अवश्य ही उसने अपने वास्तविक रूप से भिन्न एक अवास्तविक रूप प्रदर्शित करके बनने की भी चेष्टा की है। परन्तु अपनी सारी असावधानी और अपने अनेक दोषो के बावजूद वह आश्चर्यजनक सजीवता और शक्ति-सामर्थ्य से सम्पन्न है तथा उसकी सर्वाधिक भावावेगपूर्ण मन स्थितियो मे उसकी कविता प्रपात के समान दौडती हुई प्रतीत होती है। वर्णन मे उसकी दक्षता सब से अधिक निखरी है, विशेषकर जब वह वर्णन को चितन से मिला देता है। प्रकृति के कवि के रूप मे वह प्रकृति के अपेक्षाकृत वन्य रूपो के वर्णन मे सबसे सिद्धहस्त है। उसे पर्वतो और तूफानो से अनुराग है तथा वह सागर का यशगान करता है क्योकि सागर मानव के प्रति बिलकुल उदासीन और विरक्त है। इसके अतिरिक्त यह भी कह देना आवश्यक है कि व्यग्य-लेखक के रूप मे (उदाहरणार्थ 'विजन ऑव जजमेण्ट' और 'डॉन जुआँ' मे) आधुनिक अंग्रेजी कवियो मे ऐसा कोई नही है जिसकी तुलना उसके साथ की जा सके।

अपने युग के साहित्य मे उसका जो स्थान है उसकी ओर पहले ही सकेत किया जा चुका है। इसका कुछ पता 'बायरनवाद' (बायरनिज्म) शब्द से ही चल जाता है जिसका व्यवहार हम निराशाजन्य विषाद, अति तृप्ति और अशातिपूर्ण व्याकुलता की उस भावना के लिए करते है जो उसकी अधिकाश रचनाओ की प्रमुख विशेषता है। क्रातिवादी कवि के रूप मे वह क्रातिवादी आदोलन के केवल विध्वसक पक्ष का ही प्रतिनिधित्व करता है। एक काल्पनिक आदर्श राज्य की स्थापना सबधी जो भावना इस आदोलन से सबधित थी उससे तथा उसके सामाजिक उद्देश्यो से वह बिलकुल अपरिचित रहा। प्राचीन व्यवस्था मे उसको बिलकुल विश्वास न था तथा अनेक स्थानों पर उसने प्राचीन सामन्तवाद और राजतन्त्र की नि शेष शक्तियो का बडी क्रूरतापूर्वक मजाक उडाया है, उदाहरण के लिए अपने भव्य 'विजन ऑव जजमेण्ट' में, जो सदे द्वारा लिखी गयी इसी नाम की एक मूर्खतापूर्ण कविता के जवाब मे लिखी गयी थी। परन्तु उसके पास कोई ऐसी नयी निष्ठा नही थी जिसको वह पुरानी निष्ठा के स्थान पर संसार के सामने प्रस्तुत कर सके, तथा उसके दर्शन का अन्त शुद्ध

नकारात्मकता और निषेध मे ही होता है। अति महान् गर्व ही इस दर्शन का केन्द्रीय स्वर है। वह स्वतत्रता का देवदूत अवश्य है, परंतु वह स्वतत्रता की कल्पना शुद्ध वैयक्तिकवाद के रूप मे करता है। उसके प्रेमाख्यानो के नायक समुद्र-तस्कर. दस्यु, बहिष्कृत अपराधी और इशमाइल की भांति समाज-विरोधी लोग है। अपने 'चॉइल्ड हैरल्ड', मैनफ़ेड', 'केन' तथा 'डॉन जुआँ' मे उसने उन सभी लोगो की पूजा की है जो समाज के विरुद्ध विद्रोह कर रहे है। फिर वह समाज पर आक्रमण करके ही नही रुकता। यदि समाज दूषित और सड़ा-गला है, तो समस्त विश्व भी अव्यवस्थित है। अतएव उसका विद्रोह स्वय मानव-जीवन की परिस्थितियो के ही विरुद्ध है, दूसरे शब्दो मे जिसको लोगो ने दैवी विधान और नैतिक की सज्ञा दी है उसके विरुद्ध। 'डॉन जुआँ' मे उसने अपने व्यग्य के गोले समाज की परम्पराओं और पाखण्ड पर बरसाये है। मनुष्यो के साथ ईश्वर के बरताव के विषय मे उस युग मे धर्मशास्त्र मे जो व्याख्या की गयी थी, 'केन' मे उसकी कठोर निन्दा की गयी है।

९५. **शेली**—इस प्रकार बायरन अग्रेजी मे क्रांति से सबधित मूर्तिभजन (अर्थात् प्राचीन आदर्शो के विध्वस) की भावना का व्याख्याता था। इसके विपरीत शेली क्राति के आदर्शवादी पक्ष से सबधित है और वह एक मात्र कवि था जो ऐसे समय ससार मे आशा और विश्वास का मसीहा बना जब वह दोनो को ही खो चुका था। वह एक टोरी जमीन्दार का पुत्र था तथा उसका जन्म १७९२ मे हुआ था। ईटन के पब्लिक स्कूल मे कुछ कष्टकर वर्ष बिताने के बाद, जहाँ उसको लोग "पागल शेली" कहा करते थे, उसने आक्सफर्ड विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया। परन्तु 'दि नेसेसिटी ऑव एथीज्म' ('निरीश्वरवाद की आवश्यकता') नामक पैम्फलट प्रकाशित करवाने के अपराध में उसे शीघ्र ही वहाँ से निष्कासित कर दिया गया। हैरियट वेस्टब्रुक नामक एक निरी स्कूल-छात्रा के साथ विवाह कर लेने के कारण परिवार से उसका पूर्ण सबध-विच्छेद हो गया और शेली का जीवन बिना पतवार की नौका जैसा हो गया, जो समुद्र मे बिना किसी दिशा-ज्ञान के इधर-उधर घूमा करती है। अपनी युवा पत्नी की दु.खद मृत्यु के उपरात उसने विलियम गॉड्विन (देखो ७१) की कन्या मेरी से विवाह किया। यह दूसरा विवाह बहुत ही सुखमय सिद्ध हुआ क्योकि मेरी में उसे एक बौद्धिक साथी मिल गया जो उसको सम्बन्धियों के साथ हो रहे झगड़ो, सम्पत्ति तथा बच्चों के विषय मे चल रहे मुकदमो तथा स्वयं अपने ही अत्यधिक भावुक स्वभाव एव दुर्बल स्वास्थ्य के कारण उठती रहने वाली तरह-तरह की परेशानियो के बीच सात्वना और प्रश्रय प्रदान कर सकता था।

१८१८ में वह इंग्लैड छोड़कर इटली चला गया, जहाँ स्पेजिया की खाड़ी को नाव द्वारा पार करते समय समुद्र में डूब जाने से १८२२ में उसकी मृत्यु हो गयी।

शेली की रचनाओं मे दो कविताएँ ऐसी है जो ऐसे किसी भी सामान्य वर्गीकरण के अन्तर्गत नहीं आती जिसको तैयार करना संभव हो। एक है 'अडोनेस' जो कीट्स की मृत्यु पर लिखा हुआ एक अत्यंत भव्य शोक-गीत है; दूसरी है 'दि चेन्सी' जो एक रोमाण्टिक नाटक है और ऐसे विषय पर लिखा गया है जो आवश्यकता से अधिक भयानक है। परन्तु इतने पर भी कुछ स्थलों पर इसमे करुण रस की तीव्रता इतनी ऊँचाई पर पहुँच गयी है कि उसका सानी एलिजवेथीय रंगमंच की कुछ महान्तम रचनाओं में ही ढूंढे मिलेगा। इन दो रचनाओं को छोड़कर उसकी अन्य कविताओ को दो विभागों में बाँटा जा सकता है। सब से पहले आती है उसकी वैयक्तिक कविताएँ। शेली की प्रतिभा मूल रूप से गीतिमय ('लिरिकल') थी तथा उसकी मनोदशाएँ, विचार, मत व अनुभव और भावनाएँ सब सहज ही पद्य में मूर्तिमान् हुईं। गीतिकार के रूप मे तो वह अग्रेजी के महा ्तम कवियो की कोटि मे है तथा 'दि स्काइलार्क', 'दि क्लाउड', 'दि सेन्सिटिव प्लाण्ट', 'ओड टु दि वेस्ट विण्ड' और 'ए लेमेण्ट' जैसी कविताओं में भावना का जो हर्षातिरेक, जो सहजता, जो लालित्य, पदावली की जो उपयुक्तता तथा शब्दों का जो जादू देखने को मिलता है उसकी कितनी भी प्रशसा की जाय अत्युक्तिपूर्ण न होगी। द्वितीय स्थान मे है उसकी अवैयक्तिक कविताएँ। स्वप्न-द्रष्टा होने के बावजूद शेली का विश्वास था कि कवि के रूप में उसने जिस कार्य का बीड़ा उठाया था उसका एक अश यह भी था कि वह मनष्यो को प्रेरणा प्रदान करे एव उनका मार्ग-निर्देशन करे। जैसा उसने स्वयं स्वीकार किया है, उसमें ससार का सुधार करने के लिए अदम्य उत्साह था तथा उसका यह उत्साह उसके काव्य में बारबार प्रज्वलित हो उठा है; कभी तो उसकी लपटे बड़ी ही भयानक और उग्र जान पड़ती है और कभी ऐसी शुद्ध कि उनका कोई सानी नही है। जैसा उसने 'दि रिवोल्ट ऑव इस्लाम' की प्रस्तावना में विस्तारपूर्वक समझाया है, उसका विश्वास था कि फ्रांसीसी राज्यक्रांति के बाद आरंभ होने वाली प्रतिक्रिया यद्यपि उन लोगों के लिए अवश्यम्भावी थी जो किसी बात की ऊपरी सतह से नीचे देखने का कष्ट नही उठाते, तथापि वह केवल एक अस्थायी प्रतिक्रिया सिद्ध होगी। उसका विचार था कि अंधकारमय विषाद एव विश्व-द्वेष की जिस भावना को इस प्रतिक्रिया ने जन्म दिया था उसका लुप्त होना प्रारंभ हो चुका था। और इस प्रकार, चारों ओर फैले हुए अंधकार के बावजूद उसका मत था कि एक नये उषाकाल का उदय होने ही वाला था।

यही वह विश्वास था जिससे वह अपने युग के सारे सन्देहों और निराशाओं के बावजूद चिपका रहा; यही वह विश्वास था जिसके द्वारा उसकी समस्त लोक-हितैषी कविताएं प्रेरित हुई। 'क्वीन मैब' मे, जिसकी रचना उसने अठारह वर्ष की उम्र मे की थी, उसका क्रांतिकारी सिद्धात अभी विध्वंस-विनाश की अवस्था मे ही था, उससे आगे नही बढ़ पाया था। यह कविता गॉडविन की 'पोलिटिकल जस्टिस' पर आधारित है जिसमे से पूरे-पूरे अश लेकर केवल पद्य मे रूपांतरित भर कर दिये गये है। इस आवेशयुक्त और धृष्टतापूर्ण कविता में एक ऐसे व्यक्ति-प्रधान दर्शन की घोषणा की गयी है जो बड़ा ही दृढ़ है और जिसमें किसी प्रकार का समझौता सभव नही है। राजा और सरकार, चर्च, सम्पत्ति, विवाह, सभी प्रकार की सस्थाओ की निन्दा की गयी है तथा स्वय ईसाई धर्म भी इस व्यापक निन्दा का शिकार हुआ है। परन्तु मानवकल्याण की उस आवेशपूर्ण भावना ने इस अतिशयोक्तिपूर्ण भर्त्सना का कुछ परिहार कर दिया है जो शेली के धर्म का आधार थी। 'दि रिवोल्ट ऑव इस्लाम' जिसकी रचना १८१७ मे हुई, स्पेन्सरियन पद्याश मे लिखा हुआ एक लम्बा और अस्तव्यस्त आख्यान है, तथा ससार के भावी कायाकल्प के विषय मे कवि को जो आशाएं है उनसे ओतप्रोत है। कथा के रूप मे यह बडा ही जटिल और प्राय दुर्बोध-सा है, परन्तु इस दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्त्व है कि फ्रासीसी क्राति के व्याख्याता के रूप मे शेली और बायरन के बीच जो मौलिक अतर है उसको समझने मे इससे बड़ी सहायता मिलती है। बायरन के नायक लारा, मैन्फ्रेड, चाइल्ड हैरल्ड, डॉन जुआॅ तथा बाकी और सब अपने मे ही मस्त अहंवादी लोग है, तथा, जैसा मै कह चुका हूँ, वे केवल समाज के विरुद्ध विद्रोही मात्र है। इसके विपरीत, 'दि रिवोल्ट ऑव इस्लाम' का नायक लाओन स्वय शेली के ही भव्य और निस्वार्थ उत्साह से पूर्ण है। उसका एक मात्र ध्येय यह है कि वह समाज का उद्धारक बने तथा अत में वह मानव-हित के लिए स्वेच्छापूर्वक शहीद हो जाता है। परन्तु शेली के विश्वास और आशा की सबसे पूर्ण और सुदरतम अभिव्यक्ति उसके उच्च कोटि के गीति-नाट्य 'प्रोमेथ्यूज अन्बाउण्ड' मे उपलब्ध होती है। प्राचीन काल की प्रसिद्ध यूनानी पुराणकथा के इस रूपान्तर मे टाइटन सम्पूर्ण मानवता के प्रतिनिधि के रूप मे सामने आता है जो दीर्घकाल से निरकुशता की शक्तियो के विरुद्ध सघर्ष करने मे रत है। इन शक्तियों का प्रतीक है जुपिटर। इस प्रतीकात्मक दृष्टांत-रूपक का अन्त एक ऐसे भव्य सहगान के साथ होता हे जो एक पुनर्जीवित संसार मे दैवी उद्देश्य की सिद्धि पर निकले हुए उद्‌गार के रूप मे है।

९६. **कीट्स**--जॉन कीट्स (१७९५-१८२१) में, जो उत्तरकालीन क्रांतिकारी वर्ग के कवियों मे सबसे अन्तिम और उम्र में सबसे छोटा था, एक ओर तो हमे बायरन से असाधारण भिन्नता दिखाई देती है और दूसरी ओर शेली से। कीट्स न तो विद्रोही था और न एक आदर्श काल्पनिक समाज का स्वप्नद्रष्टा। शुद्ध कलात्मक स्वभाव से सम्पन्न होने के कारण, उसने अपने समय के समस्त आन्दोलनों और सघर्षो के प्रति प्रायः पूर्ण उदासीनता और विरक्ति का दृष्टिकोण अपनाया। बायरन में सभी प्रकार की प्रचलित व्यवस्था के प्रति वैर-विरोध की जो तूफानी भावना थी उससे वह पूर्णतया अपरिचित था, न ही उसे शेली के लोकहित सबधी उत्साह तथा संसार को सुधारने वाले आवेश से ही कोई सहानुभूति थी। कविता के सबंध में उसका जो मत था उसके अनुसार उसको दर्शन, धार्मिक उपदेश अथवा सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांतो की अभिव्यक्ति का माध्यम नही बल्कि सौदर्य की मूर्ति होना चाहिए। 'इण्डीमियन' की विख्यात प्रथम पक्ति—"सुन्दरता की वस्तु सदा आनद-विधायक"[1]— मे उसके साहित्य का प्रधान स्वर मुखरित हुआ है। अपने एक उत्तरकालीन पत्र मे उसने घोषित किया—"मैने समस्त वस्तुओ मे सौन्दर्य के सिद्धात से ही प्रेम किया है";[2] क्योकि आधुनिक ससार उसको कठोर, भावनारहित और शुष्क व नीरस प्रतीत होता था, अतएव अपने स्वभाव के अनुसार उसने इस ससार से एक कल्पनात्मक पलायन करने का प्रयत्न किया। किन्तु यह पलायन शेली की भाँति आगे आने वाले किसी आशामय ससार मे नही बल्कि यूनानी पौराणिक कथाओ के भूतकाल मे था, जैसे 'इण्डीमियन', 'लामिया' तथा अपूर्ण छोड़ी हुई 'हाइपीरियन' मे या फिर मध्ययुगीन प्रेमाख्यानो की दुनिया मे था, जैसे 'दि ईव ऑव सेण्ट ऐग्निस', 'इजाबेला' तथा 'लावेल दाम साँ मर्सी' मे। उसके प्रकृति-वर्णन में भी ऐन्द्रिक सौदर्य के प्रति यही भावावेगपूर्ण उत्साह उसकी प्रधान विशेषता है। उसे प्रकृति से जो अनुराग था वह प्रकृति के ही लिए था और उस "वैभव और सौन्दर्य" के लिए जो उसे प्रकृति मे सर्वत्र दिखाई पड़ता था। सीधे सरल "ऐहिक काव्य" से उसका जैसा निकट सम्बन्ध था उससे अधिक किसी आधुनिक कवि का कभी नही रहा। परतु इस प्रेम और अनुराग मे रहस्य की कुछ भी बात नही थी

1. "A thing of beauty is a joy for ever."
2. "I have loved the principle of beauty in all things"

तथा प्रकृति वर्ड्सवर्थ और शेली के लिए जिस प्रकार आध्यात्मिक संदेशों और तात्पर्यों से पूर्ण थी वैसी उसके लिए कभी नही रही।

छब्बीसवाँ वर्ष समाप्त होने के पूर्व ही कीट्स की मृत्यु यक्ष्मा के कारण हो गयी। अतएव शेली के शब्दों मे, वह "अप्राप्त कीर्ति का दाय प्राप्त करने वालो"[1] मे से है। अस्तु, हमे यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि उसके साहित्य का काफी बड़ा भाग अप्रौढ़ एव अपरिपक्व है तथा उसका स्वरूप प्रयोगात्मक है। उसकी कम आयु को देखते हुए ऐसा होना स्वाभाविक भी है। उसकी असामयिक मृत्यु के समय उसकी प्रतिभा निरंतर परिपक्व होती जा रही थी। प्रौढ़ता के थोड़े से वर्षों में ही उसका जैसा नैतिक, आध्यात्मिक एवं कलात्मक विकास हुआ था उसका पता हमें तभी चल सकता है यदि हम १८१७ मे प्रकाशित उसकी प्रथम काव्य-पुस्तिका या उसके अगले साल प्रकाशित होने वाली 'इण्डीमियन' की तुलना १८१९ में प्रकाशित होने वाले उसके तीसरे और अन्तिम संग्रह की कविताओं से और विशेष रूप से 'टु ऑटम', 'टु ए नाइटिंगेल' तथा 'ऑन ए ग्रीशन अर्न' शीर्षक उसकी महान् सबोध-गीतियों से करें। परतु इतना सब होते हुए भी शेली ने जैसी भविष्यवाणी की थी, कीट्स का स्थान निश्चित रूप से "उन मृतात्माओं मे है जो सर्वदा अजर-अमर है[2]"। ऐतिहासिक दृष्टि से उसका महत्त्व तीन बातों के कारण है। सर्व-प्रथम शैली, छद इत्यादि की दृष्टि से वह समस्त रोमाण्टिक कवियो मे सबसे अधिक रोमाण्टिक है; यहाँ तक कि उसने अपने यूनानी विषयों तक के वर्णन में भाषा की ऐसी प्रचुरता और ब्यौरे का इतना आधिक्य प्रदर्शित किया है जो कि यूनानी कला के संयम और प्रतिबन्ध से बहुत ही दूर है। इस संबध मे उसने क्लासिक दोहे का जो पूर्ण बहिष्कार किया उस पर हमको विशेष ध्यान देना है, जिसके स्थान पर उसने अपने मित्र ले हण्ट (देखो अगला अनुच्छेद) द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण करते हुए शिथिल रोमाण्टिक प्रकार के दोहे (देखो § ४९) का व्यवहार किया। दूसरे, फ्रांसीसी क्रान्ति द्वारा उत्पन्न किये गये सामाजिक संक्षोभ व मानव-कल्याण संबंधी उत्साह के ह्रास का जैसा पता उसकी रचनाओ से लगता है वह उस समय के अन्य किसी महान् कवि की रचनाओ द्वारा नही लगता। उसका साहित्य इस बात

1. One of "the inheritors of unfulfilled renown."
2. "With the enduring dead".

का द्योतक है कि काव्य समकालीन जीवन के स्वार्थों से अपना संबंध विच्छेद कर के भूतकाल की ओर मुड़ गया है तथा उसने अपने को सौन्दर्य की सेवा में प्रवृत कर दिया है। यही कारण है कि वह निश्चित रूप से अपने युग के अन्तिम छोर पर खड़ा हुआ प्रतीत होता है। अंतिम कारण यह है कि इतना होते हुए भी आगे आने वाली पीढी के कवियों पर उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

९७. उत्तर क्रांति-युग के अन्य कवि––यह युग विशाल काव्य-रचना का युग था, तथा गौण कवियों में से केवल थोड़े से ही कवियो का उल्लेख यहाँ हो सकता है। इन सब मे जेम्स हेनरी ले हण्ट (१७८४–१८५९) का शेली और कीट्स दोनों के साथ घनिष्ठ संबंध होने के कारण उसका विशेष महत्त्व है। सबसे पहले उसी ने अपनी 'स्टोरी ऑव रिमिनी' (१८१६) मे क्लासिक दोहे का बहिष्कार करके उसके अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छन्द रूप को अपनाया, जिसका व्यवहार आगस्टन-यग के पूर्ववर्ती कुछ कवियों ने किया था। उसके इस परिवर्तन का अनुसरण न केवल कीट्स ने बल्कि शेली ने भी किया, यद्यपि यहाँ यह बात कह देना आवश्यक है कि कीट्स के प्रारंभिक प्रयोगो मे, जैसे असावधान और प्रमादपूर्ण शैली मे लिखी गयी 'इण्डीमियन' मे, स्वच्छन्दता को उच्छृङ्खलता और नियमोल्लघन की ऐसी सीमा तक ले जाया गया कि उसका समर्थन स्वय हंट भी नही कर सका। हट की सर्वोत्तम रचनाएँ गद्य में है परतु इसके विषय मे हम बाद मे बात करेगे। हमारी सूची मे एक अन्य कवि टॉमस अथवा टॉम हुड (१७९९–१८४५) का भी कीट्स से दूर का सम्बंध है, क्योकि उसका विवाह कीट्स के घनिष्टतम मित्र, जॉन हैमिल्टन रिनल्ड्स की बहन से हुआ था। हुड जीवन भर निर्धनता और अस्वास्थ्य के विरुद्ध संघर्ष करता रहा तथा उसने चौबीस वर्ष के लम्बे रचना-काल में (जिसमें उसने किराये के टट्टू के रूप में ही कार्य किया) अपने निरंतर धनाभाव को दूर करने के लिए जो साहित्य प्रस्तुत किया उसमें से कम से कम आधा तो बिलकुल ही तुच्छ और उपेक्षणीय है। सभवतः उसको मुख्य रूप से उसकी हास्यप्रधान कविताओं के कारण ही याद किया जाता है। इन कविताओं से यह सिद्ध है कि वह अंग्रेजी में शब्द-चातुर्य एव श्लेषार्थ का सबसे सिद्धहस्त लेखक था। परंतु उसकी गभीर कविता की भी उपेक्षा नही करनी चाहिए, क्योंकि वह चाहे महान् कवि न रहा हो परन्तु सच्चा कवि तो था ही। उसने कुछ उच्च कोटि की गाथाओं और गीतियों की रचना की है, जैसे 'दि ड्रीम ऑव यूजीन ऐरम', 'दि साँग ऑव दि शर्ट', 'दि ब्रिज ऑव साईज़', 'फेयर इनेज', "आई रिमेम्बर, आई रिमेम्बर", 'टु मेलन्कली' नामक संबोध-गीत

तथा 'साइलेन्स' शीर्षक चतुर्दशपदी (सॉनेट) अंग्रेजी भाषा में अपने ढंग की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से है; प्ली फ़ॉर दि मिडसमर नाइट फ़ेयरीज़' लालित्यपूर्ण कल्पना से पूर्ण है; 'दि हॉण्टेड हाउस' में बड़ी ही भव्य और अविश्रान्त कल्पना-शक्ति के दर्शन होते है; जब कि 'मिस किलमैन्सेग' भयानक और अपरूप विचित्रता के वर्णन से सबधित एक श्रेष्ठ कृति है जो बड़ी ही कठिन प्रकार की कविता है। हुड के साथ ही हम विन्थ्राप मैक्वर्थ प्रीड (१८०२–३९) तथा रिचर्ड हैरिस बार्हम (१७८८–१८४५) का नाम संयुक्त कर सकते है। प्रीड प्रशंसनीय सामाजिक कविता का लेखक था तथा बरहम की सर्वदा आनद-दायक 'इन्गोल्ड्स बी लीजेंड्स' मे मध्य-युगीन जीवन के चित्रण की उस भावना की पैरोड़ी की गयी है जिसको स्कॉट तथा अन्य कवियो ने लोकप्रिय बना दिया था। टॉमस लॉवेल बेडोज (१८०३–४९) के 'दि ब्राइड्स ट्रेजेडी' तथा 'डेथ्स जेस्ट-बुक' नामक नाटकों मे हमे उत्तर एलिजाबथ-युगीन नाट्य की विकृत और विलक्षण भावना का विचित्र पुनरुत्थान देखने को मिलता है। दो कवयित्रियो, फेलीसिया डोरोथिया हेमन्स (१७९३-१८३५) और लेटीशिया एलिजबेथ लैण्डन का भी, जो एल० ई० एल० के रूप मे विख्यात थी, नामोल्लेख होना आवश्यक है। इन दोनो ने ललित और प्रवाहमय काव्य-रचना काफी मात्रा में की जिसने तत्कालीन पाठको की रोमाण्टिक और भावनाप्रधान रुचि को बहुत प्रभावित किया तथा उसी के कारण उनके पाठकों की सख्या काफी बड़ी रही। परन्तु इन दोनों की रचनाएँ शब्दभार-पूर्ण तथा कुछ अशक्त-सी है, विशेष कर एल०ई० एल० में तो मात्र वे वेगपूर्ण उद्रेक की प्रवृत्ति बड़ी ही स्पष्ट है। आजकल इन लेखिकाओ की अपेक्षाकृत लम्बी रचनाओ को पढने का विचार तो शायद ही कुछ लोग करें, परन्त उनका कुछ अस्पष्ट-सा ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है, जब कि श्रीमती हेमन्स की लघु कविताएँ बच्चों की किताबों मे अब भी लोकप्रिय है।

अध्याय २०

वर्ड्सवर्थ-युग

सामान्य गद्य

९८. **सामान्य विशेषताएँ**—वर्ड्सवर्थ-युग के लिखे गये गद्य-साहित्य के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी आधुनिक समीक्षापत्रों एवं पत्रिकाओं का उत्थान। यह उत्थान सबसे पहले 'एडिनबरा रिव्यू' द्वारा प्रारंभ हुआ, जिसकी स्थापना १८०२ में जेफ्री, ब्रॉम, सिडनी स्मिथ तथा ह्विग दल के अन्य प्रमुख साहित्यिकों द्वारा हुई थी। सात वर्ष उपरान्त 'क्वार्टर्ली रिव्यू' नामक पत्रिका टोरी दल के प्रत्याक्रमण के रूप मे प्रारभ की गयी। विलियम गिफर्ड इसका प्रथम सम्पादक था और १८२४ मे उसके अवकाश ग्रहण कर लेने के पश्चात् स्कॉट के दामाद लॉकहार्ट ने उसका स्थान ग्रहण किया। इन दोनों पत्रिकाओ के बाद दो ऐसी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएँ आयीं जिनके संबंध मे, जैसा कि उनके नाम से ही प्रकट है, विचार यह था कि उनका क्षेत्र और उनकी रुचि नियमित समीक्षा की अपेक्षा अधिक विस्तृत एव भिन्नतापूर्ण हो। ये थी 'ब्लैकवुड्स एडिनबरा मैगजीन' जो एक टोरी मासिक था और जिसकी स्थापना १८१७ मे विल्सन, लॉकहार्ट और हॉग ने की; तथा इसकी प्रतिद्वन्द्वी पत्रिका 'दि लण्डन मैगजीन' जिसका प्रारभ थोड़े ही दिनों बाद हुआ तथा जिसके प्रारभिक लेखकों में लैम, हैजलिट, डी क्विन्सी (जो 'ब्लैकवुड्स मैगजीन में भी लिखा करता था), टॉम हुड, एलन कनिघम तथा कार्लाइल जैसे लेखक थे। इसी सामान्य प्रकार की एक अन्य सुविख्यात पत्रिका 'फ्रेजर्स' की स्थापना १८३० में हुई थी।

इस अध्याय में जितने लोगों का उल्लेख किया जाने वाला है उनमें से प्राय. सभी नियमित रूप से पत्रिकाओं में लिखते थे तथा उनमें से कुछ ने तो अपना सारा समय और सारी शक्तियाँ साहित्य के इस प्राय: नवीन रूप की समृद्धि मे लगा दी थी। अतएव यह समझ लेना उचित होगा कि इस रूप का गद्य-साहित्य पर सामान्य रूप से क्या प्रभाव पड़ा। इस संबंध मे दो बाते जोर देने लायक हैं। पहले तो इसके

कारण निबंध-लेखन को महान् प्रोत्साहन मिला, और इसी कारण हम देखते हैं कि इस युग के अधिकांश गद्य-लेखक ग्रंथकार नही बल्कि निबंध-लेखक थे। दूसरे, इसके कारण आलोचना के लिए एक नया क्षेत्र सुलभ हो गया, और विशेष रूप से समसामयिक साहित्य की आलोचना के लिए। स्वाभाविक था कि इस आलोचना साहित्य में प्राचीन और नवीन सप्रदायों के सिद्धांतों एवं गुणों के संबंध में होने वाले विवाद के लिए काफी स्थान सुलभ किया जाय। इस प्रकार इस युग के आलोचक-गण मोटे तौर से दो वर्गों में विभाजित हो गये। एक तो 'क्लासिकल' अथवा रूढ़िवादी वर्ग था और दूसरा था उग्रपथी अथवा 'रोमाण्टिक'।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि गद्य के रूप और प्रकृति में इस युग में मौलिक परिवर्तन दिखाई देने लगे, तथा ये परिवर्तन उन्ही परिवर्तनो के समानान्तर थे जो काव्य के क्षेत्र में आ चुके थे। हम देख चुके है कि किस प्रकार आधुनिक गद्य का जन्म पुनस्संस्थापन के समय हुआ (देखो § ५३) और फिर अठारहवी शताब्दी में ऐडिसन और गोल्डस्मिथ जैसे सिद्धहस्त लेखको ने इसका कसे प्रभावशाली ढग से प्रयोग किया। तथापि जिस प्रकार यह गद्य अपनी उत्कृष्टताओं में अपने युग की विशिष्ट देन था उसी प्रकार अपने प्रतिबन्धों मे भी यह अपने युग की ही विशिष्ट देन था। इसमें सुस्पष्टता, लालित्य और मनोहरता तो थी, परन्तु विविधता, भावनात्मक उत्साह एव सजीवता का अभाव था; न तो यह गद्य इस योग्य ही था कि इसमें कोई प्रबल भावावेग या गहरी भावना की अभिव्यक्ति कर सके। परन्तु अब रोमाण्टिक आन्दोलन के साथ-साथ प्रबल भावावेग और गहरी भावना तथा विविधता, भावनात्मक उत्साह एवं सजीवता का भी आगमन हुआ। अतएव हमे यह जानकर आश्चर्य न होगा कि उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभिक काल के अनेक गद्य-लेखकों ने अठारहवी शताब्दी की परम्परा का पूर्ण परित्याग कर दिया तथा वे समृद्धतर स्वरों एव जटिलतर विन्यास की प्राप्ति मे लग गये। काव्य में जो इसी प्रकार का आन्दोलन चला था उसी के समान गद्य में चलाये गये आन्दोलन का संबंध भी कुछ अंशो मे आगस्टन-युग से पूर्व के अग्रेजी लेखकों मे लोगों की रुचि पुनः जाग्रत हो जाने से था।

हमको जिन लेखको के विषय मे विचार करना है, सुविधा के विचार से हम उनको तीन वर्गों में रख सकते हैं। पहले हम उन लेखकों को लेंगे जो मुख्य रूप से एडिनबरा की दोनों महान् पत्रिकाओ से सबधित थे; दूसरे वर्ग में वे लेखक थे जिनका संबंध लन्दन से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओ से था और जो, यदि पूर्ण रूप से नही

तो अधिकांश में तो पत्रकार और विविध-रचनाकार ही थे। अंत में ऐसे लेखक है जो स्वाभाविक रूप से इन दोनों मे से किसी वर्ग में नहीं आते।

९९. **एडिनबरा-वर्ग**––फ्रांसिस जेफ्री (१७७३-१८५०) ने, जिसको उसके प्रशंसक "आलोचक-प्रमुख"[1] तथा उसकी आलोचना के शिकार "जज जेफ्री" (सत्रहवी शताब्दी के कुख्यात "खूनी जज" की याद दिलाते हुए) कहा करते थे, 'एडिनबरा रिव्यू' मे लगभग २०० लेख लिखे। यद्यपि वह अपने युग का महान्तम आलोचक नही था, तथापि उसे उस युग का सबसे प्रभावशाली आलोचक तो माना ही जा सकता है। जैसा ८६वें प्रकरण मे दिये गये उद्धरण से स्पष्ट हो गया होगा, वह सामान्य रूप से आलोचना मे रूढिवादी पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यह अवश्य है कि उसने रोमाण्टिक आन्दोलन का निरन्तर विरोध नही किया और न वह आगस्टन परम्परा का ही अन्ध समर्थक था, परन्तु उसका प्रभाव सामान्य रूप से परम्परा के प्रभुत्व के पक्ष में तथा नवीनता और परिवर्तन के विरुद्ध पड़ा। आजकल उसकी आलोचना सामान्यतः असंतोषप्रद मालूम होती है। उसमें सहानुभूति की विशालता तथा निर्णय के आकुचन का अभाव था; उसका उद्देश्य व्याख्या करना नही बल्कि दोषारोपण और सभव हो तो, निन्दा करना था; प्रायः वह आलोचना में निर्मम हो जाता था; उसे विषयवस्तु की जरा-भी परवाह नही थी और वह अपना ध्यान बाह्य रूप और शैली पर ही केन्द्रित रखता था तथा साहित्य के विस्तृत मानवीय पक्षो की अनुभूति उसे बिलकुल नही थी।

उसका प्रधान सहकारी सिडनी स्मिथ (१७७१-१८४५) एक अत्यन्त चतुर पादरी था जो अब अपने साहित्य की अपेक्षा अपने वाक्चातुर्य के लिए अधिक प्रसिद्ध है। उसने एडिनबरा रिव्यू में लगभग ६५ लेख प्रकाशित करवाये तथा अन्य प्रकार की रचनाएँ भी काफी मात्रा मे की, जिनमे आयर्लैण्ड के प्रश्न पर लिखा गया 'पीटर प्लिमलेज लेटर्स' (१८०७) नामक एक उत्कृष्ट व्यग्य भी शामिल है। उसकी रचनाओं के विरोध में सबसे बड़ी बात यह है कि उनका संबंध प्रायः ऐसे दोषों से था जिनमें अब जान नही रह गयी है और ऐसे विवादों से जो अब विस्मृत हो गये है। इसी कारण उन्हें अब बहुत ही कम पढ़ा जाता है जो बड़ी शोचनीय बात है, क्योंकि वे अच्छी चीजों से भरी हुई है।

1. "Archcritic."

'ब्लैकवुड वर्ग' के लेखकों में अपने समय में सबसे प्रसिद्ध था जॉन विल्सन (१७८५-१८५४) जो अपने साहित्यिक नाम क्रिस्टफर नॉर्थ के रूप मे अधिक विख्यात है। वह एडिनबरा विश्वविद्यालय में नैतिक दर्शन का प्रोफेसर तो था ही, साथ ही वह बड़े सशक्त शरीर का व्यक्ति, पहलवान, मुक्केबाज और अखाड़े का भक्त था। इसी कारण उसकी मस्ती व जोश तथा दुर्दमनीय सामर्थ्य का प्रवेश उसके द्वारा लिखी हुई लगभग प्रत्येक वस्तु में हो गया। उसका साहित्य बडा विशाल है तथा उसमें कहानियाँ, कविताएँ और हर तरह के विषयों पर लिखे हुए बहुसख्यक निबध सभी कुछ शामिल है। उसका सर्वोत्तम साहित्य उसके 'नॉक्ट्स ऐम्ब्रोजियानी' (अर्थात् एडिनबरा की एम्ब्रोज सराय में बितायी गयी रातें) मे उपलब्ध है जो 'ब्लैकवुड' पत्रिका के कुल मिलाकर सत्तर अंकों में प्रकाशित होकर समाप्त हुई, परन्तु इसका प्रकाशन नियमित रूप से नही होता था। यह रचना संवादो के रूप में है जो उसके उल्लासी स्वभाव, निश्शंक हास्य तथा साहित्य और राजनीति की जोरदार आलोचना से पूर्ण है। परन्तु अधिकाशत वे स्थानीय और अस्थायी विषयो से सबधित थे तथा उनकी स्काटिश भाषा के कारण दक्षिणी पाठको के लिए उनको समझना और उनसे आनन्द उठाना और भी कठिन है। जहाँ तक गद्य शैली का संबंध है, विल्सन पूर्ण रूप से रोमाण्टिक लेखकों के साथ था।

यद्यपि विल्सन का वैयक्तिक मित्र टॉमस डी क्विन्सी (१७८५-१८५९), जिसका महत्त्व साहित्य मे विल्सन की अपेक्षा कही अधिक है, 'लण्डन मैगजीन' तथा 'ब्लैकवुड' दोनों मे ही लिखता था, तथापि हम उसको यही स्थान दे सकते है। वह भी मूल रूप से पत्रिका-लेखक ही था तथा उसकी संगृहीत रचनाओ के १७ भागों में मुख्य रूप से निबंध ही है जो नाना प्रकार के विषयों पर लिखे गये है। उसकी रचनाएँ प्रायः बडे ही स्पष्ट दोषों से युक्त हैं; उसमें अपने असाधारण ज्ञान का दुरुपयोग करने तथा इस प्रकार अपनी रचनाओं को दुरूह बनाकर अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करने की आदत थी; तर्क करने में वह आश्चर्यजनक रूप से कुशाग्र था परन्तु उसका तर्क प्रायः छिद्रान्वेषण और छोटी-छोटी तुच्छ बातों पर व्यर्थ के विवाद तक ही सीमित रहता था; तथा वह लगातार ऐसे अप्रस्तुत विषयों मे पड़ जाता था जो इतने बड़े हो जाते थे कि उनको सँभालना मुश्किल हो जाता था। परन्तु उसके गुण भी उसके दोषों के ही समान स्पष्ट है। अपने सर्वोत्तम रूप मे उसकी शैली अद्भुत रूप से समृद्ध तथा आलंकारिकता से सुसज्जित है। वह अंग्रेजी में भावावेशपूर्ण रोमाण्टिक गद्य के प्रमुख लेखकों में से है। उसमें कथा कहने और

वर्णन की भी महान् शक्ति थी, जैसा कि उसकी 'जोन ऑव आर्क' की कथा तथा आश्चर्यजनक 'इग्लिश मेल कोच' व 'ड्रीम फ्यूग' से स्पष्ट है। 'मर्डर कन्सिडर्ड ऐज वन ऑव दि फाइन आर्टस' में उसने भयानकता और गंभीर हास्य को सयुक्त करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। यह रचना ऐसे अनवरत व्यंग्य से पूर्ण है कि उससे स्विफ्ट भी प्रसन्न हो जाता। परन्तु उसकी याद हमेशा सबसे अधिक उसकी आत्मकथात्मक रचनाओं के कारण की जायेगी जो एक अद्भुत मोहकता से सम्पन्न है, विशेष कर 'कन्फेशन्स ऑव ऐन इग्लिश ओपियमईटर' (अर्थात् 'एक अग्रेज अफीमची का आत्मनिवेदन') नामक रचना जो अग्रेजी के व्यक्तिगत अनुभव के साहित्य मे सर्वोत्तम रचनाओ के साथ रखी जा सकती है।

डी क्विन्सी की भाँति जॉन गिब्सन लॉकहार्ट (१७९४-१८५४) भी एडिनबरा और लन्दन को जोड़ने वाली एक कड़ी है, क्योकि वह दीर्घकाल तक 'ब्लैकवुड' के आधार-स्तभों मे से रहा; साथ ही १८२६ से अपनी मृत्यु के कुछ महीने पहले तक 'क्वार्टर्ली रिव्यू' का भी सम्पादक रहा। यद्यपि विल्सन के साथ उसका बड़ा घनिष्ठ सम्पर्क था, तथापि वह अत्यन्त भिन्न स्वभाव का व्यक्ति था तथा उसकी लेखन-शैली भी बिलकुल भिन्न थी क्योकि वह मितभाषी, तीक्ष्णबुद्धि, विदग्ध एवं कठोर, मर्मभेदी बात कहनेवाला था। उसने विविध प्रकार का साहित्य बहुत अधिक मात्रा मे प्रस्तुत किया, जिसमे चार उपन्यास (इनमें से 'ऐडम ब्लेयर' उल्लेखनीय है क्योंकि इसमे एक भले आदमी के पाप और पश्चात्ताप का सशक्त विश्लेषण किया गया है); उत्साहपूर्ण गाथाओ की पुस्तक 'स्पेनिश बैलड्स' तथा कवि बर्न्स की एक प्रशसनीय जीवनी ('लाइफ ऑव बर्न्स') शामिल है। परन्तु उसकी प्रसिद्धि मुख्य रूप से उसकी भव्य 'लाइफ ऑव स्कॉट' (१८३८) के कारण है। उसने १८२० मे स्कॉट की पुत्री सोफिया से विवाह किया था। आलोचक के रूप में उसकी स्थिति महत्वपूर्ण है। साहित्यिक रुचि के उस सधिकाल मे अन्य अनेक व्यक्तियो की भाँति वह भी कुछ अंशों मे प्राचीन व्यवस्था को मानता था और और कुछ में नवीन को। वह स्कॉट के समान रोमाण्टिक था और वर्ड्सवर्थ से भी सहानुभूति रखता था, परन्तु छोटी पीढी के कवियो—शेली, कीट्स तथा अपने साहित्यिक जीवन के प्रारभिक काल मे टेनीसन—की रचनाओं से उसका वैर था। 'ब्लैकवुड' पत्रिका में कीट्स पर जो कुत्सित आक्रमण किया गया था उसका लेखक उसको ही बताया जाता है परन्तु इसके लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नही है; फिर भी यह निश्चित है कि 'क्वार्टर्ली' में टेनीसन के १८३३ वाले संग्रह की जो

प्रायः वैसी ही बीभत्स आलोचना निकली थी वह उसी की लिखी थी। उसे 'बिच्छू' का जो विरूपक प्रदान किया गया था वह उसमें व्यंग्यपूर्ण आक्षेप की जो प्रतिभा थी उसी की ओर संकेत करता है, जिसका वह प्रायः बड़े ही मारक प्रभाव के साथ प्रयोग करता था।

१००. **लन्दन-वर्ग**––हमको जिन लेखकों से अनुराग है उनमें इस वर्ग मे से चार्ल्स लैम (१७७५-१८३४) का सर्वप्रथम स्थान है, जो अंग्रेजी के उन लेखकों में से है जो पाठकों के सबसे अधिक प्रेमपात्र है और जिसकी स्मृति, सदे के कथनानुसार, "तब तक अपनी सुगध से सुवासित रहेगी जब तक कि (मिस्र के प्राचीन सम्राट) फरोओं को समर्पित की गयी सर्वोत्तम धूप आदि में सुगंध रहेगी।"[1] प्रायः अपने सम्पूर्ण साहित्य मे, और सबसे अधिक सर्वदा आनन्ददायी 'एसेज ऑव इलाया' में, जो उसके साहित्य का सबसे प्रसिद्ध अंश है, वह माण्टेन के समान ही अहवादी है, तथा वह जो कुछ भी लिखता है उसका सार लगभग पूर्ण रूप से स्वय उसके अपने ही व्यक्तित्व––उसके अनुभवो, संस्मरणों, अभिरुचियों, अरुचियों, सनको और पूर्वग्रहों––से लिया गया है। परन्तु हम इस बात की शिकायत कभी नही करते, क्योकि कैनन एंगर के शब्दों मे "चार्ल्स लैम के लिखित शब्दो का प्रधान आकर्षण वह स्वयं है।" वह हास्य और करुण दोनों ही रसो मे सिद्धहस्त था। ये दोनो रस तथा विशेष रूप से वह विलक्षण रूप जिसमें उसने इनको संयुक्त किया था (सुन्दरतम कोमल भावनाओं को विलक्षणतम कल्पनाओ से सयुक्त करते हुए) ऐसे पूर्णरूप से उसके अपने है कि हम साहित्य मे किसी और वस्तु से उनकी तुलना नही कर सकते, यहाँ तक कि इनके गुणों की ओर कुछ संकेत करने के लिए 'लैम्बिश' शब्द गढना पड़ता है। आलोचना के क्षेत्र में रोमाण्टिक भावना के विकास में उसका शक्तिशाली प्रभाव पड़ा, विशेष कर उस प्रकार के रोमाण्टिकवाद के विकास मे जो अतीत के अवलोकन से संबधित था तथा जिसका पोषण मुख्य रूप से आगस्टन-युग से पहले के साहित्य द्वारा होता था। उसकी सारी सहानुभूति इस प्रारम्भिक साहित्य के साथ थी तथा उसके मस्तिष्क का रुझान और उसकी रुचि की दिशा उसके द्वारा

१. मिस्र के पिरामिडों में (जो इन फरऊन सम्राटों की समाधियाँ हैं) पायी गयी धूप आदि सामग्री आज हजारों वर्ष बाद भी वैसी ही ताजी सुगन्ध से पूर्ण है। ––अनु०

एलिजबेथीय शैली में लिखे हुए 'जॉन वुडविल' नामक दुःखांत, उसकी सुपरिचित 'टेल्स फ्रॉम शेक्सपियर' (जिनको उसने अपनी बहन मेरी के सहयोग से लिखा था) तथा उसके 'स्पेसिमेन्स ऑव इंग्लिश ड्रैमेटिक पोएट्स हू रोट अबाउट दि टाइम ऑव शेक्सपियर' (शेक्सपियर के समय के लगभग रचना करनेवाले अंग्रेजी के नाटकीय कवियों की बानगी) से ज्ञात होती है। अंतिम रचना ने हमारे प्राचीन अंग्रेजी नाटककारों से अधिकाधिक लोगो को अवगत कराने में बड़ा योग दिया। यद्यपि उसकी शैली और सब बातों की भाँति पूर्णरूपेण उसकी अपनी है तथापि उसमें उसके प्रिय लेखको बर्टन, फुलर और सर टॉमस ब्राउन की सुवास निरतर आती रहती है। अपनी विलक्षण शैली में तो उसने यहाँ तक कह दिया कि उसने न तो वर्तमान के लिए लिखा है और न भविष्य के लिए ही, बल्कि अतीत के लिए लिखा है।

लैम के समकालीन विलियम हैज्लिट (१७७८-१८३०) में इस बात का प्रमुख उदाहरण मिलता है कि, जैसा हम देख चुके है, किस प्रकार पत्रिकाओ की लोकप्रियता ने साहित्य को पत्रकारता की धाराओं में मोड़ दिया, यद्यपि उसके सबंध में हमे भाषण-मच के उस विकास का भी ध्यान रखना है जो इसके समानान्तर हो रहा था। यद्यपि हैज्लिट क्रोधालु, झगड़ालू और सनकी प्रकृति का तथा तीव्र वैयक्तिक पूर्वाग्रहों से पूर्ण था, तथापि वह अपने समय का सबसे योग्य एवं सन्तोषप्रद आलोचक था, तथा उसकी श्रेष्ठ उदारता एव सुन्दरता के लिए, वह चाहे जहाँ प्राप्त हो, उसकी सुन्दर भावना ने उसको इस योग्य बना दिया कि एक ओर वह रोमाण्टिक सम्प्रदाय के साथ न्याय कर सके, परन्तु साथ ही दूसरी ओर आगस्टन लेखकों के प्रति भी अन्याय न होने पाये। उसकी सर्वोत्तम आलोचना उसके व्याख्यानो अथवा निबन्धो के चार संग्रहों में उपलब्ध है जिनके नाम ये है—'कैरेक्टर्स ऑव शेक्सपियर्स प्लेज' ('शेक्सपियर के नाटकीय पात्र'), 'दि इग्लिश पोएट्स' ('अंग्रेजी के कवि'), 'दि इग्लिश कॉमिक राइटर्स' ('अंग्रेजी के हास्य-लेखक') तथा 'दि ड्रैमेटिक लिटरेचर ऑव दि एज ऑव एलिजबेथ' ('एलिजाबेथ-युग का नाट्य-साहित्य')। उसको 'आलोचकों का आलोचक' ('दि क्रिटिक्स क्रिटिक') कहा गया है, तथा उसकी अन्तर्दृष्टि, उसके विवेक तथा रुचि और स्पर्श की निश्चितता के कारण यह उपाधि न्यायसंगत भी सिद्ध होती है। इतने पर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अपने ढंग की सर्वोत्तम होते हुए भी उसकी आलोचना में उस समय के प्रतिबंध स्पष्ट है। अपने विषय के संबंध में दिये गये

आलोचक के व्यक्तिगत फैसले से ऊपर उठने, संबंधित लेखक को उसके युग के जीवन तथा आत्मा से सम्बद्ध करने, या इस लघ पुस्तिका के प्रथम अध्याय मे जिस व्यापक ऐतिहासिक विधि के विषय में लिखा गया है उसके आधार पर साहित्य की व्याख्या करने का कोई भी प्रयत्न इसमे नही किया गया है।

ले हण्ट को भी, जिसका उल्लेख कवि के रूप में पहले ही हो चुका है, हम यही पत्रिका-गद्य-लेखको मे ही शामिल कर सकते है, क्योकि यद्यपि उसने बहुत-सी पुस्तकों की भी रचना की, तथापि उसमें निरन्तर प्रयास करते रहने की शक्ति का अभाव था और इस कारण उसकी पुस्तके अधिकांश में अपूर्ण और खण्डात्मक रचनाओ से भरी है। उसकी रचना-विधि और शैली पर उसके सदा-निश्चिन्त, अनुत्तरदायी स्वभाव, तितली के समान चचल, परन्तु अनेक लेखकों और साहित्यों का रस एकत्र करनेवाली उसकी प्रतिभा तथा उसके व्यक्तिगत आकर्षण की निश्चित छाप है। उसको अपनी कलम के सहारे ही जीना था और उसका बहुत-सा साहित्य बडी ही जल्दी में लिखा गया था, परन्तु उसके निबन्ध, जो उसके वाक्चातुर्य और प्रचुर कल्पना से पूर्ण है, सदैव पठनीय है तथा साहित्य के प्रति उसका प्रेम सच्चा और प्रगाढ था। आलोचक के रूप मे हैजलिट और लैम से नीची कोटि का होते हुए भी अपने समय के लोगो में उसका एक विशिष्ट स्थान है। उसकी साहित्यिक रुचि कठोर या अनदार न थी वरन् सभी वस्तुओ से अच्छी-अच्छी बाते छाँट लेने के पक्ष मे थी; उसकी सहानुभूति की व्यापकता तो उसकी आलोचना की बड़ी आनन्ददायी विशेषता है; परन्तु सामान्य रूप से उसकी प्रवृत्ति रोमाण्टिकता की ओर थी। उसकी समस्त पुस्त्रकों में सबसे लोकप्रिय है उसकी 'ऑटोबायग्राफी' ('आत्मकथा') जो बडे ही सुन्दर और मोहक ढंग से लिखी गयी है और जिसको कार्लाइल ने, जो ऐसे मामलों में आसानी से संतुष्ट नही होता था, "एक धार्मिक, युक्तिपूर्ण, कुल मिलाकर मानवीय और मान्य पुस्तक कहा है।"[1]

१०१. वर्ड्सवर्थ-युग के अन्य गद्य-लेखक––इन लेखकों मे सर्वप्रमुख, फिर भी प्रत्येक वर्ग अथवा समुदाय से पृथक् था विलियम कॉबेट (१७६२-१८३५) जो राजनीतिक सुधारक, पत्रकार, पैम्फलेट लेखक तथा अनेक ग्रन्थों का निर्माता

1. "A pious, ingenious, altogether human and worthy book."

था। वह स्थूल, ओजस्वी और स्वतन्त्र प्रकृति का व्यक्ति था। कॉबेट अपने समय की सबसे महत्त्वपूर्ण विभूतियों तथा सबसे व्यापक प्रभाव वाले लेखको मे से था यद्यपि उसके विशाल साहित्य के शायद ही किसी अश को सामान्य साहित्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है। सम्भवतः उसकी सबसे प्रतिनिधि और सबसे स्थायी महत्त्व की रचना 'रूरल राइड्स' है। उसकी 'इग्लिश ग्रामर' तो सम्भवतः सभी व्याकरण-ग्रन्थों में अद्वितीय है क्योकि यह आदि से अत तक बड़ी ही मनोरजक है। गद्य-लेखक के रूप मे वह बनयन, डिफो और स्विफ्ट की परम्परा में था। हैज्लिट तो उसको अंग्रेजी भाषा के सर्वश्रेष्ठ गद्य-लेखको मे से मानता था। उसका गद्य देशी भाषा (वह बोली जो अधिक स्वाभाविक होती है) के सौन्दर्य से परिपूरित, समर्थ, सरल और सुस्पष्ट है। उसका निजी सिद्धांत था कि लेखक को जो पहला शब्द सूझे सदैव उसका ही व्यवहार करना चाहिए, क्योकि निश्चय ही यही वह शब्द है जो उसके आशय को पूर्णरूपेण प्रकट करता है। स्पष्ट ही उसने अपने इसी सिद्धात को व्यावहारिक रूप दिया। इस सिद्धांत से उसका काम तो बडे ही सुन्दर ढग से चल गया, परन्तु सामान्य रूप से इसको लागू करना उचित न होगा।

लैण्डर, जिसकी कविताओं की चर्चा पहले ही की जा चुकी है, प्रायः प्रत्येक कल्पनीय बात मे कॉबेट से नितान्त भिन्न है। जिस प्रकार कॉबेट अग्रेजी मे देशी एव लोगों के साधारण वार्तालाप की भाषा के सर्वश्रेष्ठ लेखको मे से है, और जिस प्रकार डि क्विन्सी रोमाण्टिक गद्य के हमारे प्रमुखतम आचार्यो मे से है, उसी प्रकार लैण्डर कठोर, अनलकृत, सूत्रात्मक एव तक्षण-कला जैसी सावधान शैली में बेजोड़ है। उसकी प्रमुख गद्य-रचना 'इमैजिनरी कॉन्वर्सेशन्स' मे अतीत के महान् साहित्यिक पात्रो के काल्पनिक संवाद दिये गये है। इनकी रचना कई वर्षो मे हुई तथा कुल मिलाकर इनकी संख्या १५० है। इनमे जीवन और साहित्य से सबधित नाना प्रकार के विषय लिये गये है, कुछ सवाद तो शद्ध रूप से नाटकीय है, परन्तु शेष विचारात्मक ओर दार्शनिक है। उसके विषय मे यह बात ठीक ही कही गयी है कि वह महान् विचारक नही बल्कि महान् विचारों वाला व्यक्ति था। इन संवादों के अतिरिक्त लैण्डर ने कुछ-कुछ इसी प्रकार की तीन और रचनाएँ लिखी जिनके नाम ये है—'दि साइटेशन ऑव विलियम शेक्सपियर', 'पेरिक्लीज ऐण्ड स्पैसिया', जो पत्र-शैली मे लिखी हुई एथेंस के स्वर्ण-युग की कथा है तथा 'पेण्टामेरॉन' जिसमें पेट्रार्क और बोकैशियो के बहुत-से संवाद दिये गये है जो दाँते की सुन्दर आलोचना के कारण विशेष उल्लेखनीय है।

सदे कवि के रूप मे जैसा परिश्रमी था वैसा ही गद्य-लेखक के रूप में भी तथा कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि उसके गद्य में पद्य की अपेक्षा अधिक स्थायित्व है। उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति 'लाइफ ऑव नेल्सन' है जो बड़ी ही प्रशंसनीय है दूसरी ओर कोलरिज का गद्य भी उसके पद्य के ही समान अपूर्ण और खण्डात्मक है। परन्तु उसकी आलोचना सदैव व्यंजनाप्रधान और प्रेरणादायक होती थी तथा साहित्य में रोमाण्टिक सिद्धांत की स्थापना में उसका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा उसकी 'बायग्राफिया लिटरेरिया' वृथा प्रपंचपूर्ण व असम्बद्ध और असमान श्रेष्ठता वाली पुस्तक है तथा उसकी शैली सामान्यतः साधारण कोटि की ही कही जायगी; परन्तु इसमें बहुत-से पृष्ठ ऐसे सूक्ष्म तत्त्व-विचार एवं व्याख्यात्मक शक्ति से परिपूरित है कि काव्य के सिद्धात-पक्ष पर लिखने वाले लेखकों मे उसको ऊँचा स्थान दिलाने के लिए वह अकेली ही पर्याप्त है।

जिन अनेक लेखकों ने इस युग में इतिहास और दर्शन के क्षेत्र मे प्रशसनीय कार्य किया उनका समावेश करने से इस अध्याय का काफी विस्तार हो सकता था परन्तु उन्होने अपने विशिष्ट विषयो के साहित्य को समृद्ध बनाने में जो योगदान किया उसके महत्त्व पर विचार करने के लिए यहाँ स्थान नही है और केवल उनके नामो और ग्रथो की सूची मात्र देने से कोई लाभ नही होगा।

अध्याय २१

वर्ड्सवर्थ-युग (समाप्त)

उपन्यास

१०२. **स्कॉट**––हम देख चुके है (§ ९१) कि पद्य-प्रेमाख्यानों के लेखक के रूप मे दस वर्ष तक महान् सफलता अर्जित करने के उपरान्त स्कॉट पद्य-प्रेमाख्यान से गद्य कथा-साहित्य की ओर मुड़ गया। हम यह भी देख चुके है कि इस परिवर्तन का कारण कुछ तो यह था कि जो नयी धारा उसने प्रवाहित की थी वह अब सूखने लगी थी, और कुछ यह कि बायरन के आकस्मिक उत्थान के कारण इस क्षेत्र मे वह जिस प्रभुत्व का दीर्घकाल से उपभोग करता आ रहा था उसके लिए सकट उत्पन्न हो गया था। परन्तु यद्यपि 'वेवर्ली' (१८१४) की रचना द्वारा उसने निश्चय ही एक नयी दिशा में कदम बढाये तथापि यह बिलकुल स्पष्ट है कि अपनी अतिम कथात्मक कविताओ मे वह अनजाने ही उपन्यास की ओर आकर्षित होता जा रहा था। यह बात 'दि ले ऑव दि लास्ट मिन्सट्रेल' की तुलना इस सीरीज की अन्तिम महत्त्वपूर्ण रचना 'रोकबी' से करने पर साफ दिखाई पड़ती है। 'दि ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' प्राचीन गाथा का ही केवल एक विकसित रूप था, परन्तु इसके विपरीत 'रोकबी' को सभी बातों पर विचार करते हुए एक पद्यात्मक उपन्यास ही कहा जायगा। यह सर्वप्रथम रचना थी जिसमें आकर्षण का केन्द्र घटना में न रहकर चरित्र मे स्थित हो गया, तथा इसके प्रधान पात्रों का जैसा चित्रण किया गया है वह पद्य की अपेक्षा गद्य के माध्यम के लिए अधिक उपयुक्त था। यह बात उसने स्वयं कही है। अस्तु, 'रोकबी' में पद्य उसकी शक्तियों का सहायक नही वरन् अवरोधक था। अतएव पद्य से गद्य की ओर जो परिवर्तन हुआ वह स्वाभाविक था। साथ ही एक गद्य-प्रेमाख्यान लिखने का विचार उसके लिए वैसा नवीन भी न था जैसा साधारण तौर से सोचा जाता है। वह स्वयं कहता है कि 'ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' की रचना होने के पूर्व ही यह विचार उसके मस्तिष्क मे उठा था, जब उसने "यह महत्त्वाकांक्षा की थी कि वह 'दि कासिल ऑव ऑट्रैण्टो' की शैली

में क्षात्रधर्म से सम्बन्धित एक कथा की रचना करे जिसमें सीमाप्रदेशीय (अर्थात् स्कॉटलैण्ड और इंग्लैण्ड की सीमा पर रहनेवाले) चरित्रों एवं अलौकिक घटनाओं की बहुलता हो।" वास्तव में ऐसी रचना एक प्रकार की 'ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' ही होती परन्तु वह गद्य मे होती। सयोगवश इसके बजाय वह पद्य-प्रेमाख्यान की ओर मुड़ गया और सफलता ने उसको अपनी सारी शक्ति उसी में लगाने को प्रेरित किया। थोडे ही दिनों बाद 'दि लेडी ऑव दि लेक' का जो स्वागत हुआ उससे उसे निश्चय हो गया कि अग्रेजी मे एक ऐसा भी विशाल पाठक-वर्ग था जिसको स्काटिश अधित्यका मे रुचि थी, और यह सोचकर कि इस अधित्यका के विषय मे उसको जो गहरी जानकारी थी उसका वह फायदा उठाये, उसने 'वेवर्ली' के प्रारभिक अध्यायो की रचना कर डाली। परन्तु वह इस प्रयोग मे दृढता से प्रवृत्त नही हुआ तथा वह कापी जिसमे ये अध्याय लिखे गये थे अलग फेक दी गयी और वह उसे भूल भी गया। फिर मैरिया एजवर्थ (§ १०४) की आयर्लैण्ड संबंधी कथाओ ने उसको एक नयी प्रेरणा प्रदान की। स्कॉट ने इन कथाओं को बडे चाव से पढा, विशेष कर इनमे आयरिश जनता के चरित्र व आचार-व्यवहार के जो विस्तृत चित्र खीचे गये थे उनसे वह बहुत प्रभावित हुआ। अब उसके मन मे यह विचार जाग्रत हुआ कि मैरिया एजवर्थ ने आयर्लैण्ड के लिए जो काम किया था वही वह स्काटलैण्ड के लिए क्यों न करे। एक बार पुनः उसकी रुचि गद्य कथा-साहित्य में जाग्रत हो गयी, परन्तु इस बार उसका विचार समकालीन जीवन से सबधित उपन्यास लिखने का था। इसी समय एक ऐसा सुन्दर संयोग हुआ कि एक दिन जब वह एक दराज में मछली के शिकार वाली कटिया इत्यादि ढूँढ़ रहा था तो उसे 'वेवर्ली' के प्रारभिक अध्यायों वाली कापी हाथ लग गयी। उसने उनको पढा और पढकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वे उसकी योजना के बिलकुल अनुकूल थे। यह सोचते ही वह इस रचना को पूरी करने बैठ गया और बिना पूर्व चिन्तन के रचना करने की अपनी आश्चर्यजनक शक्ति की सहायता से उसने तीन सप्ताह मे ही यह काम पूरा कर डाला।

उपन्यास की ओर स्कॉट की इस क्रमिक प्रगति का यह इतिहास इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि हमे इससे यह बात समझने में मदद मिलती है कि उसके साहित्य का स्वरूप निर्धारित करने मे दो विभिन्न प्रभाव एक साथ कार्य कर रहे थे। एक ओर तो वे समस्त प्रभाव थे जिन्होने संयुक्त होकर उसको रोमाण्टिक कवि बनाया तथा अपने विषयों एवं प्रेरणा की खोज में अतीत की ओर उन्मुख किया। दूसरी

ओर वे तमाम प्रभाव थे जिनका आगमन यथार्थ स्काटिश जीवन के प्रायः प्रत्येक पक्ष-संबंधी उसके घनिष्ठ ज्ञान तथा सीधे सम्पर्क के माध्यम से हुआ था। 'वेवर्ली' के पूर्व रोमास और यथार्थ की भिन्न-भिन्न रुचियों को, अर्थात् दूसरे शब्दों मे क्षात्रधर्म एवं साहसिकता की कथा और चरित्र व आचार-व्यवहार की कथा को, संयुक्त करने का कोई प्रयास नही हुआ था। 'वेवर्ली' मे दोनों प्रकार की रुचियाँ एक दूसरी मे निमज्जित हो गयी। इस प्रकार कथा-साहित्य मे स्कॉट ने जो कार्य किया वह अठारहवी शताब्दी के आचार-व्यवहार सबंधी उपन्यास एव अठारहवी शताब्दी के ऐतिहासिक प्रेमाख्यान के सम्मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरे शब्दो में उसने आचार-व्यवहार की कथा को प्रथम बार एक ऐतिहासिक ढाँचे मे रखा।

१०३. स्कॉट के उपन्यासों की विशेषताएँ—'वेवर्ली नावेल्स' अद्भुत सर्जनात्मक सक्रियता के अठारह वर्षो मे लिखे गये सत्ताईस उपन्यासो और पाँच कथाओ को दिया गया सामूहिक नाम है। कुल मिलाकर वे लगभग आठ शताब्दियों से सबधित है। ऐतिहासिक क्रमानुसार उनके नाम इस प्रकार है—ग्यारहवी शताब्दी —'काउण्ट रॉबर्ट ऑव पेरिस, बारहवी शताब्दी—'दि बिट्रोथ्ड', 'दि टेलिसमैन', 'आइवनहो'; चौदहवी शताब्दी—'कासिल डैन्जरस'; पन्द्रहवी शताब्दी—'दि फेयर मेड ऑव पर्थ', 'क्वेण्टिन डर्वर्ड', 'एन ऑव गाइर्सटाइन', सोलहवी शताब्दी—'दि मोनास्टरी', 'दि ऐबट', 'केनिलवर्थ', 'डेथ ऑव दि लेर्डस जॉक'; सत्रहवी शताब्दी—'दि फार्चून्स ऑव निगेल', 'ए लीजेण्ड ऑव मॉन्ट्रोज़', 'वुड्स्टॉक', 'पेवरिल ऑव दि पीक', 'ओल्ड मॉर्टेलिटी', 'दि ब्राइड ऑव लैमरमूर', 'दि पाइरेट'; अठारहवी शताब्दी—'माइ आण्ट मार्गरेट्स मिरर', 'दि ब्लैक ड्वार्फ', 'रॉब रॉय', 'दि हार्ट ऑव मिडलोथियन', 'वेवर्ली', 'रेड गॉण्टलेट', 'गाई मैनरिंग', 'दि हाईलैण्ड विडो', 'दि सर्जन्स डॉटर', 'दि टेपेस्ट्रीड चैम्बर', 'दि टू ड्रोवर्स', 'दि ऐण्टिक्वेरी', उन्नीसवी शताब्दी (१८१२) —'सेण्ट रोमन्स वेल'। स्कॉट के अधिकाश उपन्यास शुद्ध रूप से ऐतिहासिक हैं अर्थात् उनमे ऐतिहासिक घटनाओ और पात्रो का समावेश हुआ है, यद्यपि कुछ उपन्यास —जैसे 'गाई मैनरिंग', 'दि ऐण्टिक्वेरी' तथा 'दि ब्राइड ऑव लेमरमूर' जो सभी उसकी सर्वोत्तम रचनाओं की कोटि मे है—ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखित व्यक्तिगत कथाएँ है। अपनी ऐतिहासिक रुचि की व्यापकता और विस्तार की दृष्टि से स्कॉट अग्रेजी लेखकों में अद्वितीय है, परन्तु जब वह सत्रहवी और अठारहवी शताब्दी के स्कॉटलैण्ड का वर्णन करता है उस समय अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में दिखाई देता है। नियमित ऐतिहासिक उपन्यासों

में उसका विधान यह रहा है कि वह किसी व्यक्तिगत (अर्थात् अनैतिहासिक) चरित्र को नाम मात्र के लिए नायक बनाकर उसको साहसिक कार्यों की पूर्त्ति के लिए कही यात्रा पर भेज देता है और फिर कथा को कुछ ऐसा मोड़ देता है कि नायक अपने समय के महान् सार्वजनिक आंदोलनों में ऐसा फँस जाता है कि उसका भाग्य उन्ही से सबद्ध हो जाता है तथा उन्हीं के द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रकार उसके प्रथम उपन्यास मे एडवर्ड वेवर्ली १७४५ के संकटापन्न वर्ष मे डण्डी-स्थित अपनी रेजीमेण्ट मे सम्मिलित होने के लिए निकलता है। रास्ते में ही वह जैकोबाइट विद्रोह मे फँस जाता है जिसके कारण उसकी भेंट 'यग प्रिटेण्डर'[1] से होती है और वह प्रेस्टनपैन्स और कुलोडेन के युद्धों में भी भाग लेता है। इस प्रकार उसके व्यक्तिगत क्रिया-कलाप इतिहास की महान् धाराओं मे विलीन हो गये हैं। इस प्रकार स्काट के लिए अतीत के केवल व्यापक शौर्यपूर्ण पक्ष का ही नही बल्कि उसके घरेलू और शौर्य-विहीन साधारण पक्षों का भी चित्रण करना सभव हो गया, तथा उसने अतीत को हमारी ही भाँति स्थित व्यक्तियों के हितों से सम्बन्धित करके हमको ऐसा प्रभावित किया कि हमे यह अनुभव होने लगा कि यह चित्रण बिलकुल यथार्थ है। जैसा कार्लाइल ने उसके साहित्य के विषय में कहा है—"इन ऐतिहासिक उपन्यासों ने सभी लोगों को इस सत्य का ज्ञान करा दिया कि इतिहास में जो युग व्यतीत हो चुके है, वे वास्तव मे केवल कूटनीतिक दस्तावेजों, सरकारी कागजों, विवादों तथा लोगों के अमूर्त्त विचारों और भावों से ही नही बल्कि जीवित मनुष्यों से पूर्ण थे। यह बात स्वत. सिद्ध जैसी मालूम होती है परंतु फिर भी इतिहास-

१. जेम्स द्वितीय का पौत्र जिसको 'बॉनी प्रिंस चार्ली' भी कहा गया है। १६८८ की गौरवपूर्ण (अथवा रक्तहीन) क्रांति के समय जेम्स द्वितीय फ्रांस भाग गया था। नये राजा विलियम और रानी मेरी के समर्थक जेम्स को वैधानिक राजा नहीं मानते थे, इसी कारण वे उसके उत्तराधिकारियों को 'प्रिटेण्डर' अर्थात् नकली राजा मानते थे। इतिहास में जेम्स द्वितीय का पुत्र 'ओल्ड प्रिटेण्डर' और पौत्र 'यंग प्रिटेण्डर' के नाम से विख्यात हैं। 'जेम्स' के लैटिन रूप 'जैकोबस' के आधार पर उसके समर्थक 'जैकोबाइट' कहलाये। 'ओल्ड' और 'यंग' प्रिटेण्डर दोनों के ही समर्थन में इंग्लैण्ड में अनेक विद्रोह हुए जिनका केन्द्र प्रायः स्कॉटलैण्ड ही रहा करता था। १७४५ का विद्रोह अन्तिम जैकोबाइट विद्रोह था।—अनु०

लेखकों तथा अन्य लोगों को, जो अब इसे सीख चुके है, यह प्रायः अज्ञात ही थी।"

अवश्य ही यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि स्कॉट ने इतिहास का जो चित्रण किया है वह पूर्णरूपेण सत्य है। प्रायः उसने तथ्यों के सम्बन्धों में बड़ी स्वच्छंदता बरती है तथा उसमें काल-व्यतिक्रम के उदाहरणों की संख्या अत्यधिक है। जहाँ तक इन काल-व्यतिक्रमों का सबध केवल ब्यौरे से ही है वे महत्वहीन हैं, परन्तु कही-कही वे बड़े ही आधारभूत हैं और तब वे गंभीर हो जाते है, जैसे 'आइवनहो' में। प्रेमाख्यान के रूप में यह उपन्यास कितना भी उत्कृष्ट क्यों न हो, मध्ययुगीन जीवन के चित्र के रूप में यह पूर्णरूपेण अविश्वसनीय है। परन्तु सामान्य रूप से जिन युगों का वर्णन उसने किया है कम से कम उनकी बाह्य विशेषताओं को पुनर्निमित करने, हमको उनके प्राणियों तथा आचार-व्यवहार की वास्तविक व सजीव अनुभूति कराने तथा इतिहास की सूखी हड्डियो में जीवन का संचार करने में उसे आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई है।

स्कॉट बहुत ही जल्दी तथा बहुधा असावधानीपूर्वक लिखता था, और जैसा उसने स्वयं स्पष्ट स्वीकार किया है, उसके उपन्यास अधिकांश मे कथा के गठन की दृष्टि से बहुत ही दोषपूर्ण है। वह दृश्य-चित्रण तथा बाह्य क्रिया-कलाप (युद्ध आदि) के वर्णन में सबसे अधिक दक्ष है। चरित्र की व्याख्या करने का उसका ढग आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के ढग से पूर्णतः भिन्न है; वह कोई सूक्ष्म और ब्योरेवार समीक्षा नही करता बल्कि बड़े भारी ब्रुश का प्रयोग करते हुए मोटी और सुस्पष्ट रेखाओं में ही अपने चरित्रो का चित्रण करता है। जब उसने जटिल मानसिक अथवा नैतिक परिस्थितियों के वर्णन के लिए प्रयास किया है तो स्वभावतः असफल रहा है तथा राष्ट्रप्रेम और स्वामिभक्ति को छोड़कर (और यह अपवाद महत्त्वपूर्ण है) अपेक्षाकृत अधिक सशक्त मनोवेगों पर उसका अधिकार बहुत ही कम है। परन्तु सरल, सुलझे हुए चरित्रों मे उसको असाधारण सफलता प्राप्त हुई है, विशेष रूप से उन स्त्री-पुरुषों के चित्रण मे जो सीधे स्काटिश जीवन से ही लिये गये हैं जिससे वह इतना अधिक परिचित था, जैसे उदाहरणार्थ उसके वकील, सिपाही, किसान, ग्रामीणजन, पुराने विचारों के स्वामिभक्त नौकर तथा निम्न वर्गो के हास्य-प्रधान चरित्र। उसका हास्य सरस व रुचिकर, ओजपूर्ण तथा सदैव प्रसाद गुण-संपन्न एवं स्वस्थ है। उसके ऐतिहासिक चरित्र सदैव ऐसे यथार्थ नहीं हो पाये है कि उनसे उन व्यक्तियों के वास्तविक रूप का पता लग सके; परन्तु अपने चरित्रों को सजीव

और मानवीय बनाने का जो रहस्य उसको ज्ञात था उस पर बहुत ही कम लेखकों का अधिकार है। उसके जेम्स प्रथम, लुई एकादश, एलिजबेथ (प्रथम) तथा 'यग प्रिटेण्डर' कल्पनात्मक अनुकृति के श्रेष्ठ उदाहरण है; यद्यपि यहाँ थोड़े से ही चरित्रो का उल्लेख केवल उदाहरण देने के उद्देश्य से किया है। जीवन का उसने जो सामान्य चित्रण किया है उसमें हम पुन. आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि और अनुभूति का भाव देखते है। क्योंकि वह हमे कही भी वस्तुओ के ऊपरी धरातल से ज्यादा नीचे नही ले जाता, इसलिए वह हमको इतिहास के बाह्य दृश्य के अतिरिक्त और किसी चीज का दर्शन नही कराता। यह सब होते हुए भी, स्कॉट के साहित्य मे चाहे जो दोष निकाले जायँ, वह अब भी अत्यन्त महान् साहित्य है। इसमे निश्चित रूप से वे गुण वर्तमान है जो साहित्य को स्थायित्व प्रदान करते है, क्योकि यह साहित्य सर्जनात्मक शक्ति से परिपूर्ण है; मानव-जीवन की विस्तृत और व्यापक धाराओं से वह हमारा सम्बन्ध बनाये रखता है तथा पुरुषोचित, समर्थ एवं हितकर है।

१०४. वर्ड्सवर्थ-युग के अन्य उपन्यासकार––गद्य कथा-साहित्य में स्कॉट के समकालीनो मे प्रमुख स्थान तीन स्त्रियो का है जिन्होने पूर्णरूपेण भिन्न क्षेत्र में कार्य किया, अर्थात् आधुनिक सामाजिक एवं पारिवारिक क्षेत्र मे। कालक्रमानुसार प्रथम स्थान मैरिया एजवर्थ (१७६७–१८४९) का है। स्वयं स्कॉट की ही रचनाओ पर उसका जो प्रभाव पड़ा उसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। उसका साहित्य काफी विशाल है, परन्तु उसकी प्रतिभा का सर्वोत्तम रूप उसकी कुछ लघु कथाओ तथा उसके तीन आयरिश उपन्यासो, 'कासिल रैक्रेण्ट', 'दि ऐब्सेण्टी' और 'ऑर्मण्ड' मे मिलता है। उसकी कहानियाँ आवश्यकता से अधिक उपदेशात्मक है, परन्तु उनमे हास्य और करुण दोनो रस वर्तमान है तथा उत्कृष्टता मे असमान होते हुए भी उनकी शैली रुचिर व सरल है। जिस प्रकार मैरिया एजवर्थ आयरिश चरित्रो एव आचार-व्यवहार की कुशल चित्रकर्त्री थी, उसी प्रकार सूसन एडमस्टन फ़ेरियर (१७८२-१८५४) स्काटिश चरित्रो और तौर-तरीकों की कुशल चित्रकर्त्री थी। उसके तीन उपन्यासो, 'मैरिज', 'डेस्टिनी' तथा 'दि इनहेरिटेस' की भी स्कॉट बडी प्रशंसा करता था। जन्मतिथि की दृष्टि से इन दोनों के बीच जेन ऑस्टिन (१७७५–१८१७) का स्थान है जिसके उपन्यासो के नाम है 'सेन्स ऐण्ड सेन्सिबिलिटी', 'प्राइड ऐण्ड प्रेजुडिस', 'मैन्सफील्ड पार्क', 'एमा', 'पर्स्वेशन' तथा 'नार्थेंजर एबी'। जेन ऑस्टिन का क्षेत्र सकुचित था, और क्योकि

उसने अपने निजी अनुभव और शक्तियो के बाहर जाने का साहस कभी नही किया इस कारण श्रेष्ठता का एक समान धरातल बनाये रखने में जैसी सफलता उसको प्राप्त हुई, वैसी किसी अन्य अग्रेजी उपन्यासकार को नही। उसकी पुस्तकों की रचना बडी ही साधारण (अर्थात् हमारे साधारण दैनिक जीवन से सम्बन्धित) सामग्री द्वारा हुई है, तथा उनमे उच्च कोटि के भावावेग एव प्रबल क्रिया-कलाप का अभाव है। अतएव उनमे घटना-तत्त्व बहुत कम है। परतु उसका स्पर्श ऐसा अचूक व असदिग्ध, उसका हास्य ऐसा सूक्ष्म तथा उसका चरित्र-चित्रण ऐसा सजीव था कि सभी धुरन्धर आलोचको का मत है कि वह अग्रेजी साहित्य के श्रेष्ठतम कलाकारो में से थी।

इस बीच मे पुरुष लेखकों ने जो कथा-साहित्य प्रस्तुत किया उसमे विषय-सामग्री और शैली दोनों ही दृष्टियो से इन लेखिकाओं की अपेक्षा अधिक विविधता देखने को मिलती है। चार्ल्स रॉबर्ट मेट्यूरिन (१७८२–१८२४) ने अद्भुत कल्पना तथा रोमाचकारी प्रेमाख्यान की स्वच्छन्द अनियत्रित परम्परा को आगे बढ़ाते हुए बहुत-सी कहानियाँ लिखी, जिनमें 'मेल्मथ दि वाण्डरर' सबसे सफल थी। दूसरी ओर थियोडोर हुक ने (१७८८–१८४१), जो अपनी पीढ़ी के हास्य-लेखकों मे से था, शिथिल, असगठित शैली में कई एक उपन्यास लिखे जिन्होने उस समय जनता का अत्यधिक मनोरंजन किया, यद्यपि आजकल वे अत्यत नीरस लगते हैं। जॉन गाल्ट (१७७९–१८३९) का साहित्य इन दोनो ही लेखको के साहित्य से कही अधिक महत्त्वपूर्ण है। उसके 'आयरशायर लिगेटीज' तथा 'एनल्स ऑव दि पैरिश' मे तत्कालीन स्कॉटिश जीवन के कुछ प्रशसनीय चित्र मिलते है। टॉमस लव पीकॉक (१७८५–१८६६) ने, जो शेली का घनिष्ठ मित्र था, कथा-साहित्य को समाज और साहित्य की उन बातो पर वाक्चातुर्यपूर्ण व्यंग्यात्मक व्याख्या प्रस्तुत करने का माध्यम बना दिया, जिनको वह नापसद करता था (और ऐसी बातें बहुत-सी थी)। उसने अपने दीर्घ जीवन के प्राय. अंत तक लिखना जारी रखा, परतु हम उसका उल्लेख यहाँ पर इसलि ए कर रहे है क्योंकि उसकी सबसे प्रतिनिधि रचनाएँ—'हेडलांग हॉल', 'मेलिन्कोर्ट', 'नाइटमेयर एबी' तथा 'क्रोचेट कासिल'—सभी १८३२ के पहले लिखी जा चुकी थी। सुविधा के विचार से हम यहाँ ऐतिहासिक प्रेमाख्यान के क्षेत्र में स्कॉट के दो अनुयायियो का भी उल्लेख कर सकते हैं। ये थे जॉर्ज पेन रैन्सफर्ड जेम्स (१८०१–१८६०) तथा विलियम हैरिसन ऐन्सवर्थ (१८०५–१८८२), जिनके साहित्य का श्रेष्ठतम अश शताब्दी के मध्य से

पूर्व ही प्रकाशित हो चुका था। इन दोनों में से कोई भी साहित्यिक सम्मान का तनिक भी अधिकारी नही है, परन्तु रैन्सफर्ड जेम्स ने जो असंख्य कथाएँ लिखीं उनमें से कुछ, जैसे 'हेनरी मार्स्टन' तथा 'रिशल्' अब भी पठनीय हैं; तथा ऐन्सवर्थ की 'ओल्ड सेण्ट पॉल्स' में ताऊन और महान् अग्निकाण्ड के दिनों (१६६५–६६) के लंदन का बड़ा ही सजीव चित्र खीचा गया है।

वर्ड्सवर्थ-युग की सारणी (१७९८-१८३२)

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
'लिरिकल बैलड्स', १७९८.		
लैण्डर की 'गेबीर', १७९८.		
कैम्बेल की 'प्लेजर्स ऑव होप', १७९९.		
काउपर की 'मृत्यु', १८००.		एजवर्थ का 'कासिल रैक्रेण्ट', १८००.
स्कॉट की 'बॉर्डर मिन्स्ट्रेल्सी', १८०२.	'एडिनबरा रिव्यू' की स्थापना, १८०२.	
		एजवर्थ की 'पॉपुलर टेल्स', १८०४.
स्कॉट की 'ले ऑव दि लास्ट मिन्स्ट्रेल', १८०५.		
बयरन की 'आवर्स ऑव अइडिलनेस', १८०७.		
मूर की 'आयरिश मेलोडीज़', १८०७.		
स्कॉट की 'मार्मियन', १८०८.		
'लेडी ऑव दि लेक', १८१०.		
टेनिसन का जन्म, १८०९.	'क्वार्टर्ली रिव्यू' की स्थापना, १८०९.	

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
बायरन की 'चाइल्ड हैरल्ड', (I) (II), १८०९, (III) १८१६ (IV) १८१८.		
ब्राउनिंग का जन्म, १८१२.		
स्कॉट की 'रोकबी', १८१३.		
शेली की 'क्वीन मैब', १८१३.		
वर्ड्सवर्थ की 'एक्सकर्शन', १८१४.		
कोलरिज़ की 'क्रिस्टावेल', १८१६.		
शेली की 'अलैस्टर' १८१६.		
हण्ट की 'स्टोरी ऑव रिमिनी', १८१६.	'ब्लैकवुड्स एडिनबरा मैगज़ीन' की स्थापना, १८१७.	
कीट्स की सर्वप्रथम कविताएँ, १८१७.		
बायरन की 'मैनफ़्रेड', १८१७.	'लण्डन मैगज़ीन' की स्थापना, १८१७.	
	कोलरिज की 'बायग्राफिया लिटरेरिया', १८१७.	
	हैज़्लिट की आलोचनाएँ, १८१७–२०.	
		जेन आस्टिन की मृत्यु १८१७
		जेन आस्टिन का 'सेन्स ऐण्ड सेन्सिबिलिटी', १८११.
		थैकरे का जन्म, १८११.
		डिकेन्स का जन्म, १८१२.
		जेन आस्टिन का 'प्राइड ऐण्ड प्रीजुडिस', १८१२
		वेवर्ली, १८१४

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
बायरन की 'बेप्पो', १८१८.		
कीट्स की 'इण्डीमियन', १८१८.		
बायरन की 'डॉन जुआँ', १८१९–२३.		
कीट्स की 'हाइपीरियन', १८२०.		'आइवनहो,' १८१९
शेली का 'प्रोमेथ्यूज़ अन्बाउण्ड', १८२०.		जॉर्ज ईलियट का जन्म, १८२०
बायरन का 'केन', १८२१	डीक्विन्सी की 'ओपियम ईटर', १८२१	
कीट्स की मृत्यु, १८२१.	लैम के 'एसेज ऑव इलाया', १८२१–२३.	
शेली की 'एडोनेस', १८२१.		
रोजर्स की 'इटली', १८२२.	विल्सन की 'नॉक्ट्स ऐम्ब्रोजियानी', १८२२–२३.	
शेली की मृत्यु, १८२२.		
बायरन की मृत्यु, १८२४.	लैण्डर की 'इमैजिनरी कॉन्वर्सेशन्स', १८२४–५३.	
टेनिसन की 'पोएम्स', १८३०.	मूर की 'लाइफ़ ऑव वायरन', १८३०.	
मिसेज़ हेमन्स की 'सॉंग्स ऑव दि अफ़ेक्शन्स', १८३०.		
ब्राउनिग की 'पॉलिन', १८३१, १८३३.		
क्रैब की मृत्यु, १८३२.		स्कॉट की मृत्यु, १८३२.

अध्याय २२

टेनिसन-युग (१८३२-१८८७)

पद्य

१०५. **टेनिसन-युग**—अपनी काल-विभाजन-विधि का अनुसरण करते हुए हमने जिस युग को यहाँ टेनिसन-युग की संज्ञा प्रदान की है वह एक साहित्यिक युग के रूप मे सामान्य इतिहास के विक्टोरियन--युग से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। विक्टोरिया १८३७ में सिहासनासीन हुई, तथा जो तमाम लेखक उसके शासन-काल को विशिष्ट सम्मान प्रदान करने वाले थे उनमें से अनेक ने १८३० और १८४० के बीच की दशाब्दी में ही अपना रचना-कार्य प्रारंभ किया। परन्तु यद्यपि वह १९०१ तक जीवित रही, तथापि अपने सर्वेक्षण के इस अंतिम[1] युग की समाप्ति उसकी स्वर्ण-जयन्ती के वर्ष १८८७ से ही मानना उचित और सुविधाजनक रहेगा। उस समय तक साहित्य मे लेखकों की एक नयी जाति का उद्भव हो चुका था, और पुरानी पीढी के जो लेखक बचे थे उन्होंने अपने साहित्य में कोई महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं की। वास्तव में तो वे टेनिसन के बेडीवियर की भाँति अपने को "नये मनुष्यों, अपरिचित चेहरों और भिन्न विचारो के बीच[2]" पाते थे।

१. इस पुस्तक के मूल लेखक विलियम हेनरी हडसन ने यह इतिहास टेनिसन-युग तक ही लिखा था। इसी कारण इस युग को इस सर्वेक्षण का अंतिम युग कहा गया है। बाद के दो युगों--'हार्डी-युग' और वर्तमान युग--का इतिहास--अध्याय २५ और २६--श्री ए० सी० वार्ड ने लिखा है। हार्डी-युग का इतिहास--अध्याय २५--सर्वप्रथम १९३० वाले संस्करण में और वर्तमान युग का इतिहास--अध्याय २६--१९५५ वाले संस्करण में प्रकाशित हुआ।--अनु०

२. "Among new men, strange faces, other minds."

टेनिसन-युग का साहित्य वैयक्तिक गुण में आश्चर्यजनक रूप से सम्पन्न और विविध होने के साथ-साथ--और इस साहित्य की विविधता इसकी सर्वप्रमुख विशेषताओं मे से है--विक्टोरियन इग्लैण्ड की भावना से सर्वत्र ओतप्रोत है, तथा इसमें वे समस्त प्रभाव परिलक्षित हुए है जिनके सयोग ने इस अर्वशताब्दी को अनेक दिशाओं में विस्मयकारी परिवर्तन का युग बना दिया। यह साहित्य इस प्रकार का है कि यह कल्पना भी नही की जा सकती कि अपने समग्र रूप मे यह विश्व-इतिहास के किसी अन्य काल मे लिखा जा सकता था। इस युग की विशाल जटिलता तथा इसकी सभ्यता का निर्माण करने वाले तत्त्वो की विमूढ कर देने वाली भिन्नता और अनेकता के कारण सक्षिप्त सीमाओ के भीतर इसकी पूर्ण समीक्षा कर सकना असभव है। परन्तु सौभाग्यवश इस युग के सामान्य जीवन के दो महान् एवं प्रमुख आदोलनों अथवा ब्रैण्ड्स के शब्दो मे "प्रमुख धाराओ" की ओर सकेत करना कठिन नही है। इन आन्दोलनो से हमारा तात्पर्य राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रो में प्रजातत्र की प्रगति तथा बौद्धिक क्षेत्र मे विज्ञान की प्रगति से है।

फ्रांसीसी क्राति के उपरात जो रूढिवादी प्रतिक्रिया प्रारभ हुई उसका उल्लेख किया जा चुका है। १८३७ तक यूरोपीय महाद्वीप की ही भाँति इग्लैण्ड में भी इस प्रतिक्रिया की शक्ति प्रायः बिलकुल समाप्त हो चुकी थी। १८३२ का सुधार-बिल भूमि के स्वामी कुलीन परिवारो के राजनीतिक प्रभुत्व का विनाश पहले ही कर चुका था। परन्तु क्योकि इसके पास हो जाने के बाद भी अधिकाश श्रमिक वर्ग मताधिकार से वंचित ही रहा इस कारण जिन लोगो ने किसी अधिक मूलभूत एव क्रांन्तिकारी कदम की प्रत्याशा की थी तथा उसके लिए अथक प्रयत्न किया था, वे सतुष्ट न हो सके। अतएव चुनाव-प्रथा मे सुधार कराने के लिए आन्दोलन जारी रहा तथा "चार्टिस्म" नाम के महान् जन-आन्दोलन के कारण इग्लैण्ड लगभग दस वर्ष तक राजनीतिक अशान्ति की दशा में रहा, जिसने औद्योगिक मन्दी तथा "भूखे पंचम दशाब्द" ("दि हन्ग्री फॉर्टीज") के व्यापक कष्ट के कारण और भी जोर पकड़ा। अतएव नयी रानी के राज्यकाल के प्रथम दशाब्द को "आधुनिक अग्रेजी इतिहास का एक उद्विग्नतापूर्ण-एवं सकटापन्न काल" कहा गया है। यह वर्णन पूर्ण रूप से उपयुक्त एवं न्यायोचित है। परन्तु जिन सकटो और कठिनाइयों ने देश को चारों ओर से घेर रखा था उन्ही ने लोगो की सामाजिक चेतना को भी जाग्रत किया तथा जनहित संबंधी उत्साह और लोकहित-निष्ठा की भावना को महान् प्रेरणा प्रदान

की।' 'कॉर्न लॉज' (अनाज-कानून[1]) का अंत हो जाने से एक ऐसे युग का सूत्रपात हुआ जिसमें औद्योगिक परिस्थितियों में बड़ा सुधार हुआ तथा १८४८ के उपरान्त 'चार्टिस्ट आंदोलन' भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। फिर, एक लम्बी अवधि के बाद, १८६७ और १८८४–८५ के सुधारबिल आये जिन को हम उस शान्तिपूर्ण आंदोलन की अवस्थाओं के रूप में मान सकते है जिसने विलियम चतुर्थ के समय के मूलतः अल्प-जनसत्तात्मक इंग्लैण्ड का रूप परिवर्तित करके उसे एक "राज-सत्तात्मक गणतंत्र" ('क्राउन्ड रिपब्लिक') बना दिया, जिसकी प्रशंसा टेनिसन ने अपनी कविताओं में की है। परन्तु यद्यपि ये राजनीतिक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण थे, तथापि वे किसी प्रकार भी विक्टोरियन युग के प्रजातंत्रात्मक विस्तार के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू नही थे। इनके साथ-साथ जो सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तन प्रकट हुए वे इन परिवर्तनों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण भी थे; और अधिक सशक्त भी। उदाहरण के तौर पर इन परिवर्तनो मे से कुछ इस प्रकार थे, प्राचीन सामन्त-वादी सीमाचिह्नो एव मान-प्रतिष्ठा की बातो का विनाश, दीर्घ काल से विशेषा-धिकार का उपभोग कर रहे कतिपय व्यक्तियो के अधिकारों के विरोध में बहुसख्यक जनता के अधिकारो की अधिकाधिक व्यापक मान्यता, एक मनष्य से दूसरे मनुष्य तथा एक वर्ग से दूसरे वर्ग के बीच सहानुभूति का विकास, तथा जन-शिक्षा का प्रसार, जिसके कारण व्यक्तिगत प्रगति के लिए उपलब्ध सुविधाओं में अत्यधिक वृद्धि हो गयी। हमारे इतिहास मे विक्टोरियन युग सामाजिक हितों एवं व्यावहारिक आदर्शो से जैसा पूर्ण था वैसा अन्य कोई युग नही था, तथा इसके साहित्य के काफी बड़े भाग को इन्ही हितो और आदर्शो ने प्रेरित और पुष्ट किया। इस कथन की सत्यता के प्रमाण के लिए हमे केवल कार्लाइल, रस्किन, डिकेन्स, किग्सले तथा मिसेज ब्राउनिंग जैसे लेखको या लेखिकाओ की रचनाओ पर नजर डालने की जरूत है।

इस बीच प्रजातत्र के ही समान विज्ञान भी प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा, तथा जिन पचास वर्षों से हमारा यहाँ संबंध है उनमे लोगों ने स्वयं अपने विषय में तथा विश्व के सम्बध मे अपने ज्ञान में जितनी वृद्धि की उतनी उनके पुरखों ने इससे

१. इस कानून के द्वारा विदेशी अनाज के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में इसके विषय में बड़ा विवाद रहा। अंत में १८४६ में सर रॉबर्ट पील ने इसको समाप्त किया।--अनु०

पहले की अठारह शताब्दियों मे भी नहीं की थी। फिर ज्ञान की यह अद्वितीय वृद्धि एक मात्र विचारणीय बात नही है। जीवन और साहित्य पर विज्ञान का जो प्रभाव पडा उसका मूल्यांकन करते समय यह बात भी याद रखनी है कि जन-शिक्षा, समाचार पत्र, पत्रिकाओं और सस्ती पुस्तकों के प्रसार के कारण विशेषज्ञों के तथ्य और उनकी मीमांसाएँ अब केवल उन्ही तक सीमित न रहती थी बल्कि अत्यन्त शीघ्र समस्त पाठक-वर्ग की सम्पत्ति बन जाती थी। उदाहरण के लिए जीवो के क्रमिक विकास के सिद्धांत ('दि डॉक्ट्रिन ऑव इवोल्यूशन') के संबध में यही बात थी, जो समस्त आधुनिक सिद्धान्तों में महान्तम था। इस सिद्धात को हम विशेष रूप से डार्विन, वैलेस और हर्बर्ट स्पेन्सर के नाम से सम्बद्ध करते है तथा इसके विषय में यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि विक्टोरियन युग के समाप्त होने से पूर्व ही इसने प्रकृति, मनुष्य एवं समाज के विषय में समस्त प्रचलित विचारों मे पूर्ण क्रान्ति ला दी थी। ज्ञान के इस तीव्रगामी विकास एवं सार्वजनीनता के परिणामस्वरूप लोगो के विचारों में एक महान् आदोलन हुआ; नवीन सिद्धांतों और प्राचीन विश्वासों के बीच संघर्ष हुआ; तथा प्राचीन बौद्धिक व्यवस्था की नीवें तक हिल गयी। इस कारण आदि से अन्त तक विक्टोरियन युग में परीक्षण एवं आलोचना की भावना का प्रमुख स्थान रहा। इसकी अन्य विशेषताएँ शंका, अविश्वास व धार्मिक अनैश्चित्य, तथा आध्यात्मिक सघर्ष व अशान्ति और ये इस युग के उच्चतर साहित्य के सबसे चिरस्थायी तथा विशिष्ट स्वरो मे से है। साथ ही जो मीमासात्मक व आलोचनात्मक प्रवृत्ति विज्ञान के द्वारा पुष्ट हुई थी उसने साहित्य को अन्य प्रकार से भी अत्यधिक प्रभावित किया, और इसका एक स्पष्ट परिणाम हुआ यथार्थवाद का विकास। अन्त में, रेलवे, वाष्पचालित जलयान तथा तार के रूप मे जीवन में विज्ञान का जो व्यावहारिक प्रयोग हुआ उसके कारण जो युगान्तरकारी परिवर्तन हुए उनको स्वीकार करना भी आवश्यक है। अभी तक जिन अवरोधो ने ग्राम और नगर को व एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से पृथक् कर रखा था उनका विनाश करके तथा यात्रा एवं विभिन्न लोगों के बीच सम्पर्क को सुविधाजनक और विचारों के सप्रेषण को सरल व शीघ्रगामी बनाकर इन यंत्रात्मक परिवर्तनो ने प्राचीन प्रांतीयता की भावना के विनाश, प्रजातत्र के विकास तथा समस्त संसार की भावना को मौलिक रूप से परिवर्तत कर देने में बड़ी सहायता की। अतएव विक्टोरियन इंग्लैण्ड के साहित्य में दिखाई देने वाली प्रधान सामाजिक शक्तियों में उनको शामिल करना अनिवार्य है।

परन्तु जब तक हम ऐतिहासिक व्याख्या का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त—अर्थात् प्रत्येक शक्तिशाली आन्दोलन सदैव एक प्रत्यांदोलन का प्रारभक होता है—याद न रखेगे तब तक हमे इन सामाजिक शक्तियो का पूर्ण तो क्या ऐसा अनुमान भी नही हो सकता जो 'प्रायः पूर्ण' भी कहा जा सके। उदाहरण के लिए, टेनिसन-युग के साहित्य का अध्ययन करते समय हम विज्ञान के प्रभुत्व के विरुद्ध चलाये गये महान् प्रत्यांदोलन की प्रबल शक्ति की उपेक्षा कभी नही कर सकते। वास्तव मे विज्ञान ने साहित्य पर सीधा प्रभाव तो डाला ही, परतु साथ ही इसने जिस विरोध को जन्म दिया उसके द्वारा भी साहित्य को उतना ही प्रभावित किया। विचार और व्यावहारिक जीवन दोनो में ही विज्ञान ने भौतिकता की प्रवृत्ति को जन्म दिया; परन्तु विक्टोरियन साहित्य के सर्वश्रेष्ठ भाग का बहुत-सा अंश इस प्रवृत्ति का अवरोध करने तथा आध्यात्मिक वस्तुओ के शाश्वत महत्व की घोषणा करने की इच्छा द्वारा प्रेरित हुआ था। इस स्थल पर रोमाण्टिक पुनर्जागरण के महत्त्व को भी स्वीकार करना आवश्यक है जिसके संबध में इस युग मे काफी मात्रा मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। सदैव की भाँति, इन रचनाओ मे भी रोमाण्टिकता अधिकाश मे अतीत की ओर कल्पनात्मक प्रत्यावर्तन की भावना से ही सबधित थी, परन्तु उसके प्रेरक उद्देश्य थे आधुनिक भौतिकवादी सभ्यता के कुत्सित सौन्दर्य से असन्तोष तथा कला के यथार्थवादी सिद्धान्त के सकुचित प्रतिबधो से मुक्त होने का निश्चय। अत में रोमाण्टिक भावना सामाजिक सुधार की भावना के साथ सयुक्त हो गयी तथा उसमे भौतिकवाद का जो विरोध निहित था उसने व्यावहारिक रूप धारण कर लिया।

टेनिसन-युग के साहित्य की आश्चर्यजनक समृद्धि और विविधता के कारण यहाँ उसका एक अत्यत सक्षिप्त रेखाचित्र मात्र दिया जा सकता है। बहुत से नाम तो बिलकुल ही छोड़ देने पड़ेगे और जिन लेखको को उनके वैयक्तिक अथवा ऐतिहासिक महत्त्व के कारण चुना गया है उनका वर्णन भी अत्यन्त सक्षेप में करना होगा। सर्वप्रथम काव्य से ही प्रारंभ करते हुए हम इस युग के दो प्रमुख कवियों—टेनिसन और ब्राउनिग—को सबसे अधिक स्थान देगे।

१०६. **टेनिसन**—अल्फ्रेड टेनिसन का जन्म १८०९ में हुआ। १८२९ में, कम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे पढ़ते समय, उसने 'टिम्बकटू' नामक कविता पर कुलपति का पदक प्राप्त किया। १८५० मे उसका विवाह हुआ तथा उसी वर्ष वर्ड्सवर्थ की मृत्यु के उपरान्त उसको राजकवि नियुक्त किया गया। १८८४ मे उसे लार्ड की उपाधि मिली तथा १८९२ में उसकी मृत्यु हुई। कवि के रूप में वह साठ वर्ष से भी

अधिक समय तक सक्रिय रहा। उसकी प्रथम महत्त्वपूर्ण रचना १८३३ में प्रकाशित हुई, परन्तु वर्डसवर्थ के शब्दो मे "हमारे जीवित कवियों मे निश्चित रूप से महानतम" होने का सम्मान उसको १८४२ मे प्रकाशित दो काव्यसंग्रहों द्वारा ही प्राप्त हुआ। फिर १८४७ में 'दि प्रिंसेज' का प्रकाशन हुआ। उसके प्रिय मित्र आर्थर हेनरी हैलम की मृत्यु द्वारा प्रेरित उसका दार्शनिक शोकगीत 'इन मेमोरियम' १८५० मे, 'मॉड, ए मोनोड्रामा' १८५४ में तथा 'इनक आर्डेन ऐण्ड अदर पोएम्स' १८६४ में प्रकाशित हुई। इस बीच में उसने आर्थर और उनके गोलमेज वाले सरदारों (आर्थर ऐण्ड हिज नाइट्स ऑव दि राउन्ड टेबुल) की कथा पर कार्य प्रारभ कर दिया था। यह कथा अनेक वर्षो तक उसके ध्यान का केन्द्र रही क्योकि 'इडिल्स ऑव दि किंग' की प्रथम चार कविताएँ तो १८५९ मे ही प्रकाशित हो चुकी थी परन्तु इस सीरीज की बारहवी और अतिम कविता १८८५ में जाकर प्रकाशित हुई। दस वर्ष से भी अधिक समय तक उसने अपनी शक्ति मुख्य रूप से नाट्य-रचना में लगायी और इस नवीन क्षेत्र मे उसने जो रचनाएँ लिखी उनमे से 'क्वीन मेरी' (१८७५), 'हैरल्ड' (१८७६) तथा 'बेकेट' (१८८४) नामक तीन ऐतिहासिक नाटक प्रमुख है। उसकी उत्तरकालीन रचनाओ मे 'दि ऐन्शेण्ट सेज', 'वास्टनेस' तथा 'अकबर्स ड्रीम' नामक तीन उल्लेखनीय दार्शनिक कविताएँ तथा 'क्रॉसिग दि बार' नामक उत्कृष्ट गीति आती है, यद्यपि इनके अतिरिक्त अन्य बहुत-सी कविताएँ भी है, जो इनसे अत्यंत भिन्न है। (उसके आदेशानुसार उसकी रचनाओं के सम्पूर्ण सस्करणो में 'क्रॉसिग दि बार' सदैव अन्तिम कविता के रूप मे ही छापी जाती है)।

अंग्रेजी साहित्य में मिल्टन के पश्चात् टेनिसन कदाचित् सबसे कर्तव्यपरायण और सिद्धहस्त काव्यात्मक कलाकार था। वह अपनी शैली की सदैव एक-जैसी उत्कृष्टता, भाषा के ऊपर अपने आश्चर्यजनक अधिकार, जो आलंकारिक होते हुए भी सादी और सरल है तथा अपने पद्य के उत्कृष्ट एव विविध सगीत-गण के कारण उल्लेखनीय है। परन्तु शुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से उसका महत्त्व इस बात मे है कि वह अपने युग का सबसे प्रतिनिधि कवि है। तीन शताब्दी पहले, जैसा हम देख चुके है (§२६) एलिजबेथ-युगीन इंग्लैण्ड मे स्पेन्सर का जो स्थान था वही विक्टोरियन इंग्लैण्ड में टेनिसन का था तथा इस युग की भावना की जो सबसे प्रतिनिधि बातें है उनका बहुत-सा अंश उसकी रचनाओ के ताने-बाने में समाविष्ट हो गया है। जैसा स्टॉपफ़र्ड ब्रुक ने कहा है,—"इंग्लैण्ड के आधुनिक जीवन के आन्दोलनों को समझने तथा उनसे सहानुभति रखने की जितनी सामर्थ्य उसमें (अर्थात् टेनिसन मे)

थी उसके अनुसार वह साठ वर्ष से भी अधिक समय तक इस जीवन के घनिष्ठ सम्पर्क मे रहा; तथा इसके सबध मे उसने जो कुछ अनुभव किया उसको अपनी कविता का अभिन्न अंग बना लिया।" अच्छी बाते चाहे जहाँ हो वहीं से उनका संचय कर लेने की जो अत्यंत स्पष्ट प्रवृत्ति उस युग में थी उसकी द्योतक तो स्वयं उसके साहित्य की असामान्य अनेकरूपता ही है। उसने क्लासिकल, रोमाण्टिक तथा आधुनिक विषयो, वर्ड्सवर्थ की भाँति निम्नवर्गीय एव ग्रामीण जीवन से लिये गये विषयो, अग्रेजी इतिहास तथा 'केल्टिक' किवदन्तियो, दर्शन तथा धर्म की गहनतम समस्याओ; सभी पर अपनी रचनाएँ लिखी है, तथा उसकी शैली एवं रचना-विधि मे जो विविधता दृष्टिगोचर होती है वह उसकी विषय-वस्तु की विविधता से जरा भी कम नही है। परन्तु इस अनेकरूपता से भी अधिक प्रतिनिधि विशेषता है उसकी कविताओ की विषय-सामग्री तथा उनका विशिष्ट गुण। १८४२ मे प्रकाशित उसकी 'लॉक्सले हॉल' कविता "युवा इग्लैण्ड" की अशातिपूर्ण भावना तथा विज्ञान, वाणिज्य एव मानवता की उन्नति मे उसके विश्वास से पूर्ण है; दूसरी ओर इसके उत्तर भाग, 'लॉक्सले हॉल सिक्सटी इयर्स आफ्टर' (१८८६) मे उस चित्तपरिवर्तन एव विरक्ति के दर्शन होते है जिसका अनुभव अनेक लोग कर रहे थे और जिसका कारण यह था कि विज्ञान की वेगपूर्ण उन्नति से धर्म की नीवे तक हिल जाने का खतरा पैदा हो गया था तथा वाणिज्य-व्यापार ससार को अर्थ-लाभ के निकृष्ट लोभ से परिपूर्ण कर रहा था। 'दि प्रिसेज' मे कवि ने उस समय की एक महत्त्वपूर्ण समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया है, अर्थात् स्त्रियो की उच्च शिक्षा तथा आधुनिक समाज की शीघ्रता से परिवर्तित होने वाली परिस्थितियो मे उनके उचित स्थान की समस्या; 'मॉड' मे क्रीमियन-युद्ध के दिनो के स्वदेश-प्रेम संबंधी भावावेश तथा इससे उत्पन्न सामान्य सक्षोभ का कम्पन है; 'इडिल्स ऑव दि किग' में यद्यपि मध्ययुगीन ढाँचा बनाये रखा गया है, तथापि राजा आर्थर की कथा को ऐसी नीति-कथा का रूप दे दिया गया है जिसकी शिक्षाओ का उद्देश्य स्पष्ट ही तत्कालीन जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करना है। सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नो के सबध मे टेनिसन के विचारो मे जो परिवर्तन हुआ वह स्वयं इस बात का द्योतक है कि वह अपने समय की प्रवृत्तियों के प्रति अत्यधिक सजग था तथा उन सबसे प्रभावित हुआ। प्रारम्भिक प्रौढ़ता के दिनों की उसकी आशापूर्ण, प्रफुल्ल प्रकृति, प्रौढावस्था के सदेह, अविश्वास व प्रतिक्रियात्मक उक्तियाँ तथा उसके अतिम वर्षो की मर्यादित आशावादिता सभी उन मनोदशाओं को परिलक्षित करती है जो उसकी पीढ़ी में बड़े व्यापक रूप में

एक के बाद एक दिखाई पड़ी। परन्तु राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र मे वह सामान्य रूप से विक्टोरियन उदारतावाद की जागरूक व सतत सावधान भावना के काव्यात्मक व्याख्याता के रूप मे हमारे सामने आता है। वह मूलतः प्रगति का कवि तो था ही, साथ ही नियम और व्यवस्था का भी कवि था; अंग्रेजी परम्परा की महान् विरासत मे उसने अपना दृढ विश्वास अक्षुण्ण बनाये रखा। यद्यपि एक ओर उसका दृढ़ विश्वास था कि दैवी विधान के अनुसार

"परिवर्तित प्राचीन व्यवस्था होती है दे निज स्थान नवीन को,
ईश की इच्छा होती पूर्ण अनेक प्रकार से,
ससार न दूषित हो जिससे एक ही अपरिवर्तित सद्रीति से।"!

तथापि ऐसी ही दृढ़ता से वह "अपरिपक्व शीघ्रता," अविवेकपूर्ण प्रयोगो तथा क्राति का आभास देने वाली प्रत्येक बात के विरुद्ध था। परंतु साथ ही हमें यह बात भी ध्यान मे रखनी चाहिए कि किसी विशिष्ट राजनीतिक सिद्धात का विचार न किया जाय तो टेनिसन की कविता प्राय. विक्टोरियन युग मे अग्रेज जनता की प्रजातात्रिक सहानुभूतियों के प्रसार का माध्यम बनी रही। एकातप्रिय तथा उच्च कुलीन होते हुए भी साधारण व्यक्तियो व साधारण वस्तुओं मे उसकी गहरी रुचि थी; तथा उसके साहित्य का समग्र रूप से विचार करते हुए उसकी यह विशेषता कम महत्त्वपूर्ण नही है कि उसमे 'दि प्रिंसेज', 'मॉड' और 'इडिल्स आव दि किंग' के साथ-साथ 'दि मे क्वीन', 'इनक आर्डेन' और 'डोरा' जैसी रचनाएँ भी विद्यमान है।

इस प्रकार सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से तो टेनिसन के काव्य का ऐतिहासिक महत्त्व है ही, युग के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक जीवन के चित्र के रूप मे उसका महत्त्व और भी अधिक है। क्योकि उसने विज्ञान व दर्शन का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया था, इसलिए वह नये अन्वेषणो एव विचारों मे निहित व्यापक सम्भावनाओं द्वारा अत्यधिक प्रभावित हुआ, जिन्होने प्राचीन विचारधारा के प्रासाद को कमजोर बना दिया था। विशेष रूप से जीवों के क्रमिक विकास के सिद्धान्त ('इवोल्यूशन थ्योरी') की विस्तृत सभावनाओ ने उसको बहुत प्रभावित किया। वास्तव मे सन्देह-अविश्वास व आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का अद्भुत मिश्रण होने के कारण वह अपनी शताब्दी के सदेहो, कठिनाइयों तथा धार्मिक विश्वास की निश्चितताओ को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा व्यक्त करने के लिए सर्वथा उपयुक्त था। उसके साहित्य मे उस शताब्दी के "दो स्वर" ('टू वायसेज') निरन्तर सुनाई पड़ते है। इस युग में विश्वास और अविश्वास के बीच जो महान् सघर्ष चल रहा था वह जैसा

'इन मेमोरियम' में चित्रित हुआ है वैसा उस समय की अन्य किसी गद्य या पद्य-रचना मे नहीं हुआ। दूसरी ओर, बहुत-सी उत्तरकालीन कविताओं में, उदाहरणार्थ 'दि ऐन्शेण्ट सेज' में, हम देख सकते है कि किस प्रकार कवि ने प्रचलित भौतिकता को चुनौती दी है तथा ईश्वर व अमरत्व के शाश्वत सत्यो का कैसा जोरदार प्रतिपादन किया है। यहाँ टेनिसन के प्रकृति-सम्बंधी काव्य के विशिष्ट गुण पर भी जोर देना आवश्यक है। वर्ड्सवर्थ की ही भाँति उसने भी प्रकृति का अध्ययन अत्यंत निकट से किया था तथा उसके विषय मे उसको वैसा ही ज्ञान था। सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों के चित्रण मे भी उसने वर्ड्सवर्थ के ही समान पूर्ण निष्ठा बरती है। परन्तु वर्ड्सवर्थ ने प्रकृति को केवल कवि की आँखो से देखा था, जब कि टेनिसन ने उसको वैज्ञानिक की आँखों से भी देखा। उसे उसके सौन्दर्य से तो अनुराग था, परंतु वह उसकी उदासीनता और क्रूरता का भी अनुभव करता था, और जैसा कि 'इन मेमोरियम' के एक प्रसिद्ध स्थल से प्रकट है (अश ५४–५६), 'सम्पूर्ण विश्व मे व्याप्त सघर्ष के विषय में उसकी तीव्र अनुभूति उसके विचारों को सबसे अधिक उद्वेलित करने वाले तत्त्वों मे से थी। परन्तु यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि क्रमिक विकास के सिद्धात में उसके दृढ विश्वास ने उसे सदैव स्थायित्व और प्रोत्साहन प्रदान किया तथा इस सतत संघर्ष से परे "उस एकमात्र सुदूर दैवी घटना" पर नजर जमाये रखने में उसकी सहायता की "जिसकी ओर सारा विश्व गतिमान् है।"[1]

१०७. ब्राउनिंग—रॉबर्ट ब्राउनिंज का जन्म १८१२ में हुआ। उसने छोटी उम्र में ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया—उसकी "पॉलीन' १८३३ मे प्रकाशित हुई थी जब वह २१ वर्ष का ही था—तथा अपने मित्र टेनिसन की भाँति उसने भी अपना दीर्घ जीवन पूर्ण रूप से साहित्य-सेवा में ही लगाया। उसका 'पैरासेल्सस' नामक नाटकीय काव्य १८३५ में, 'स्ट्रैफर्ड' नामक दु खांत (जिसका प्रदर्शन कॉन्वेण्ट गार्डेन थियेटर में मैक्रेडी द्वारा हुआ था) १८३७ में, 'सार्डेलो' १८४० मे, तथा नाटकीय एवं विविध कविताओं का एक संग्रह 'ब्रेल्स एण्ड पॉमग्रेनेट्स' शीर्षक के अन्तर्गत १८४१ और १८४६ के बीच समय-समय पर प्रकाशित हुआ। १८४६ में उसने एलिजबेथ बैरेट से विवाह किया जो उस समय सामान्य पाठक-

1. "One far off divine event to which the whole creation moves."

वर्ग में अपनी कविता के लिए ब्राउनिंग से भी अधिक विख्यात थी। इसका कारण यह था कि वर्ड्सवर्थ की भाँति उसको भी जनरुचि को अपनी शैली और रचना-विधि के अनुकूल बनाने में बहुत समय लगा। उसके विवाहित जीवन के सुखमय पन्द्रह वर्ष इटली मे व्यतीत हुए तथा इस अवधि में उसने 'क्रिस्मस ईव ऐण्ड ईस्टर डे' (१८५०) तथा 'मेन ऐण्ड वीमेन' (१८५५) की रचना की। १८६१ में पत्नी की मृत्यु हो जाने के उपरान्त वह फिर से इंग्लैण्ड मे बस गया। उसकी 'ड्रैमेटिस पर्सोनी' १८६४ में प्रकाशित हुई तथा 'दि रिंग ऐण्ड दि बुक' नामक विशाल नाटकीय आख्यान-काव्य का प्रकाशन चार भागो में १८६८–६९ में हुआ। इस समय तक वह अपने पाठकों को पूरे तौर से जीत चुका था तथा अपने जीवन के शेष बीस वर्षों में वह टेनिसन के ही समान लोकप्रिय रहा। उसकी साहित्यिक उर्वरता इसी प्रकार जारी रही परन्तु कतिपय गीतियों को छोड़कर उसकी बहुसंख्यक उत्तरकालीन रचनाओं के विषय में यह नही कहा जा सकता कि उन्होने उसकी ख्याति को बढ़ाने में तनिक भी योग दिया। उसकी अन्तिम रचना 'एसोलैण्डो' १२ दिसम्बर, १८८९ को प्रकाशित हुई और उसी दिन वेनिस में पेलाजो रेजोनिको नामक भवन में उसकी मृत्यु हो गयी।

टेनिसन के विपरीत ब्राउनिग अपनी विषय-सामग्री तथा शैली दोनों में अत्यंत स्वच्छन्द (साहसपूर्वक नये-नये प्रयोग करने वाला), अपरिष्कृत तथा परम्परा और रूढ़ि से पूर्ण रूपेण स्वतंत्र था। कभी-कभी भ्रमवश लोग ऐसा सोचते है कि वह काव्य-रचना मे सावधानी नही बरतता था। यद्यपि यह बात गलत है तथापि उसमें भावावेश इतना प्रबल तथा अधैर्य इतना अधिक था कि उसे अपनी कविता के परिष्कार मे समय व्यय करने अथवा उसके लिए प्रयत्न करने का अवकाश नही था। परिणाम-स्वरूप उसके साहित्य का बहुत-सा अश, विशेष रूप से उसके उत्तरकालीन साहित्य में–व्यर्थ के विस्तार से पूर्ण तथा अव्यवस्थित है; प्रायः अभिव्यक्ति की कर्कशता एव अपरिष्कार तथा दोषपूर्ण रुचि के कारण भी उसका सौंदर्य नष्ट हो गया है। इसके अतिरिक्त उसके साहित्य के बहुत बड़े भाग की दुरूहता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता, यद्यपि उसके कुछ कट्टर प्रशंसकों ने इस आरोप को असत्य सिद्ध करने के लिए बड़े जोरदार प्रयत्न किये है। परन्तु अनेक स्पष्ट दोषों के होते हुए भी कवि के रूप में उसकी महानता के विषय में विवाद के लिए बिलकुल स्थान नहीं है, और यद्यपि ब्राउनिंग के पूजकों के द्वारा व्यक्त किये मतों का परिहार करना आवश्यक है तथापि सभी सम्प्रदायों के आलोचकों ने उसके साहित्य के श्रेष्ठतम

अंश—और यह अंश काफ़ी बड़ा है—की उच्च कोटि की सामर्थ्य व सुन्दरता तथा उसके स्थायी काव्यात्मक महत्त्व को एक स्वर से स्वीकार किया है।

उसकी प्रतिभा मूलतः नाटकीय थी; परन्तु क्योकि आदि से अंत तक उसका ध्यान क्रियात्मक ससार के बजाय व्यक्तिगत स्त्री-पुरुषों की नैतिक व आध्यात्मिक शक्तियों तथा उनके मानसिक सघर्षो मे ही केन्द्रित रहा, इसलिए उसकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति रंगमच पर खेले जाने वाले नियमित नाटक के उपकरणों के माध्यम से नही हुई। जिस कला-रूप मे उसकी कला अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रस्फुटित हुई वह है विश्लिष्ट भाषण अथवा नाटकीय स्वगत भाषण।[१] इस कला-रूप का व्यवहार अन्य कवियों ने भी किया है परन्तु उनमे से किसी को भी ऐसी सफलता नही प्राप्त हुई। अपने नाटकीय स्वगत भाषणों मे ब्राउनिंग किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को लेता है जो सामान्यतः उस समय किसी संकटपूर्ण व निर्णायक परिस्थिति में होता है तथा किसी साधारण उपन्यासकार की भाँति बाहर से उसका विश्लेषण करने के बजाय उसके स्वभाव की गहराई में प्रवेश कर जाता है तथा उसको इस बात के लिए विवश कर देता है कि वह अपने ही कथनों से अपने जीवन के आंतरिक से आंतरिक रहस्यों को उद्घाटित कर दे। मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि, विश्लेषण की सूक्ष्मता तथा नाटकीय व्याख्या की शक्ति ब्राउनिग की कविता की प्रमुख विशेषताओं में से है। 'मेन ऐण्ड वीमेन' तथा 'ड्रैमेटिस पर्सोनी' की बहुत-सी कविताओ मे उसकी इस रचना-विधि के उत्कृष्ट उदाहरण मिलते है। उसकी सबसे बड़ी रचना 'दि रिग ऐण्ड दि बुक' (यद्यपि वह उसकी महान्तम कृति नही है) में भी, केवल प्रस्तावना और निष्कर्ष वाले अंश को छोड़कर यही शैली अपनायी गयी है।

नीतिशास्त्री एवं धार्मिक शिक्षक के रूप में विक्टोरियन युग के लेखकों में ब्राउनिग का अत्यंत विशिष्ट स्थान है। वैज्ञानिक भौतिकवाद का कट्टर शत्रु होने के कारण उसने अपने जीवन-दर्शन के केन्द्रीय सत्यों के रूप मे ईश्वर एव अमरत्व का उपदेश दिया तथा इनका उपदेश देते समय उसे इनकी वास्तविकता मे पूर्ण विश्वास था। परंतु उसने केवल प्रचलित जीवन-दर्शन के निषेधों को ही चुनौती नही दी, बल्कि उसके काव्य में आदि से अंत तक इन निषेधो द्वारा उत्पन्न की गयी निराशा-पूर्ण मनोदशा का भी विरोध किया गया है। जो विषादपूर्ण और अनिश्चयात्मक

१. The detached speech, or dramatic monologue.

भावना टेनिसन के काव्य में बहुधा व्यक्त हुई है उसके लिए उसके काव्य में कोई स्थान नहीं है तथा जीवन में जो अशुभ है उसका साहसपूर्वक सामना करते हुए भी उसने अपने प्रबल आशापूर्ण विश्वास का त्याग एक क्षण के लिए भी नही किया है। अपनी पीढ़ी को उसने जो सदेश दिया उसका प्रधान स्वर था कि "जिस सूक्ष्म वस्तु को आत्मा कहते है उसमें दृढ विश्वास रखो" तथा उसके चारों ओर जो बहुत-से लोग यह प्रश्न कर रहे थे कि जीवन वास्तव मे जीने योग्य है भी या नही, उनके लिए उसका उत्तर अपने पिप्पा के शब्दो में यही था कि "ईश्वर अपने स्वर्ग मे है, तथा संसार में सब ठीक है"[1] (अर्थात् परेशान होने की कोई बात नही है, उलटे हमें आश्वस्त होना चाहिए)।

१०८. **टेनिसन-युग के अन्य कवि**—टेनिसन और ब्राउनिंग के बाद, जिनका स्थान अपने समस्त समकालीनों से बहुत ऊपर है, विक्टोरियन युग के बहुसख्यक कवियो मे अग्रगण्य कौन है यह निश्चित करना आसान नही है, परंतु संभवत. तीसरा स्थान मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२–१८८८) को दिया जा सकता है। सहानुभूति और शिक्षण की दृष्टि से वह पूर्ण रूपेण क्लासिकल था तथा प्राचीन यूनानी साहित्यिकों का वह ऐसा प्रबल प्रशसक था कि इसके कारण कभी-कभी उसने गलत रास्ता भी अपना लिया। इन दोनो बातों के कारण उसका विश्वास था कि वास्तविक रूप से महान् काव्य सदैव अवैयक्तिक अथवा निरपेक्ष होता है (जैसे नाटक और महाकाव्य) जिसमें कवि अपने अह से तथा अपने ससार की परिस्थितियो से पलायन करता है। इसके विपरीत आत्मवादी काव्य अर्थात् आत्माभिव्यक्ति का काव्य, अनिवार्यतः निम्नतर कलात्मक कोटि का होता है। उसने अपनी सबसे महत्त्वाकांक्षापूर्ण कविताएँ 'सोहराब एण्ड रुस्तम', 'ट्रिस्ट्रम ऐण्ड इस्यूल्ट', 'बाल्डर डेड' और 'एम्पीडॉक्लीज़ ऑन एटना' इसी सिद्धात के अनुसार लिखी थी; यद्यपि इनकी रचना उसने बड़ी सावधानीपूर्वक की है, तथापि वे कुछ पाण्डित्यपूर्ण, अनुकरणात्मक एवं अवास्तविक-सी प्रतीत होती हैं। इन सब आलोचनात्मक सिद्धातों के बावजूद उसकी प्रतिभा का झुकाव आत्माभिव्यक्ति के काव्य की ओर ही था, तथा

१. "God's in His heaven—
All's right with the world."

'पिप्पा पासेज़' (१८४१) नामक कविता की अंतिम दो पंक्तियाँ।—अनु०]

जब जब उसने सिद्धांन्त की उपेक्षा करके अपने मस्तिष्क को स्वच्छन्द बिचरने का अवसर प्रदान किया तभी उसने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ लिखी। उसकी कविता का अधिकांश उस संक्रमण-काल की विषादपूर्ण भावना से ओतप्रोत है। उसका केन्द्रीय स्वर हमें 'स्टैन्ज़ाज फ़ॉम दि ग्रैण्ड चार्ट्रूज' में सुनाई पड़ता है —

"परिभ्रमण करना दो लोकों बीच, कि जिसमें एक हुआ मृत,
दूजे में वह शक्ति नही जो जन्म ले सके;"[1]

तथा वह अविश्वास के विपुल भार से ग्रस्त है। परन्तु इतना होते हुए भी आर्नल्ड का नैतिकतापूर्ण स्वभाव इतना उदार एव श्रेष्ठ था तथा आचरण एवं कर्त्तव्य के महान् आदर्शों पर, उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि उसका विषाद, कभी-कभी ग्लानि और खेद उत्पन्न करने पर भी, दुर्बल या शिथिल नही बनाता। शैली में वह भावावेगरहित तथा सुस्पष्ट है; उसकी श्रवणानुभूति पूर्णतः सन्तोषप्रद नहीं कही जा सकती और इसी कारण उसके पद्य में शब्दलालित्य एव प्राकृतिक चमत्कार का अभाव है। परन्तु इसमें जिस सुन्दर नियंत्रण तथा मूर्तिकला-जैसी शुद्धता के दर्शन होते है वह अत्यधिक प्रशंसा के योग्य है। आर्नल्ड कभी लोकप्रिय कवि नही रहा परन्तु उसका साहित्य निरन्तर पढा जाता रहा है। उसके पाठक "सख्या मे यद्यपि थोड़े ही रहे परन्तु प्रवीण व योग्य" रहे है।

आर्नल्ड के साथ हेनरी क्लो (१८१९–६१) को संबधित करना स्वाभाविक ही है, इसलिए कि दोनों परस्पर मित्र थे (आर्नल्ड की 'थिर्सिस' क्लो की मृत्यु पर लिखा गया एक श्रेष्ठ शोकगीत है) और इसलिए भी कि वे अनेक प्रकार से आध्यात्मिक सम्बंधी थे। क्लो की वैयक्तिक कविता के विषय मे श्री लॉवेल का मत था कि उसमे "जिस युग मे कवि रह रहा था उसकी नैतिक व बौद्धिक प्रवृत्तियो, सन्देह, अविश्वास तथा स्थिर विश्वासो की दिशा मे किये गये सघर्षो की सबसे यथार्थ पद्यात्मक अभिव्यक्ति" हुई है। अपने अविश्वास, अपने पारदर्शक गाम्भीर्य, नैतिकता पर अपने आग्रह तथा साहस मे वह आर्नल्ड की कविता के समान है। उसकी अपेक्षाकृत लम्बी कविताओ में एक है 'बॉथी अॅव टॉबर-ना-वूलिच' जो बड़ी ही आनददायक है। उसकी जैसी ख्याति है उससे अधिक होनी चाहिए। यद्यपि आर्नल्ड के

१. "Wandering between two worlds, one dead,
The other powerless to be born;"

साथ अपने सम्बन्ध के कारण उसका उल्लेख यहाँ किया गया है तथापि क्लो का स्थान केवल गौण कवियों के ही बीच में है।

एलिज़बेथ बैरेट ब्राउनिग (१८०६–६१) की बात अलग है। अंग्रेजी की समस्त पद्य-लेखिकाओं में महान्तम न होने पर भी वह सबसे महत्त्वपूर्ण और ओजस्विनी है। उसने बहुत अधिक मात्रा में तथा बहुत ही तीव्र गति से काव्य-रचना की; आत्मालोचन की प्रवृत्ति का उसमें आश्चर्यजनक अभाव था; तथा उसमें अनेक एवं अत्यंत स्पष्ट दोष थे। उसकी कविता मे बहुधा अतिशयोक्तिपूर्ण भावनात्मकता के दर्शन होते है जो प्रायः उन्मादपूर्ण बन जाती है तथा कभी-कभी मात्र अनियत्रित भावोद्रेक का ही रूप धारण कर लेती है। उस की शैली प्रायः अत्यधिक कृत्रिम तथा कभी-कभी अश्लील तक हो गयी है। इसके अतिरिक्त दीर्घसूत्रता, प्रपचपूर्ण विस्तार, विशेष प्रभावों की सप्रयास सृष्टि तथा भाषा और तुक-विधान में दुष्प्रयोग की गणना भी उसकी विशेषताओं में करनी पड़ेगी। परन्तु उसकी सर्वोत्तम रचनाओं में उत्कृष्टता, गम्भीरता, वास्तविक भावावेग तथा भाषा पर निर्विवाद अधिकार-जैसे गुणो के दर्शन होते है, जिनके द्वारा उसके दोषों का बहुत कुछ परिहार हो जाता है। उसकी रोमाण्टिक कविताओं मे बीते युग की भावना का प्रभाव स्पष्ट है जो अब भी जारी था; 'कसा गिडी विण्डोज' जैसी कविताओं में इटली तथा स्वतंत्रता के प्रति उसके प्रेम के दर्शन होते है; 'क्राई ऑव दि चिल्ड्रेन' जैसी कविताओं में लोकहित-सबंधी वही उत्साह दिखाई देता है जो डिकेन्स और किग्सले के उपन्यासों तथा हुड के 'सॉग ऑव दि शर्ट' में है। उसकी सबसे महत्त्वाकाक्षापूर्ण कृति 'आरोरा ले' भी इसी सामाजिक उद्देश्य द्वारा प्रेरित हुई। यह अतुकान्त छन्द में लिखी हुई एक लम्बी कविता है जो पद्य के न होने पर वास्तव मे उपन्यास ही कही जायगी। हम देख चुके है कि आर्नल्ड का मत था कि अपनी विषय-वस्तु की खोज में कवि को न केवल अपने युग से बल्कि स्वयं से भी बाहर जाना चाहिए (अर्थात् उसका दोनों से मुक्त होना आवश्यक है, क्योकि ये उसकी प्रतिभा के लिए बधन स्वरूप है)। इसके विपरीत श्रीमती ब्राउनिग का मत था कि अपने युग का साहसपूर्वक सामना करना कवि का प्रधान उद्देश्य होना चाहिए, और इस मत को उसने सिद्धान्त और व्यवहार दोनों में ही प्रतिपादित किया। इसी कारण तत्कालीन गद्य-कथा-साहित्य में जिस यथार्थवाद एवं सुधार-भावना का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान था उसने यहाँ काव्य पर भी हमला बोल दिया है। यद्यपि 'ऑरोरा ले' सम्भवतः श्रीमती ब्राउनिंग की सबसे लोकप्रिय कृति थी, तथापि उसकी सर्वोत्तम कविता 'सॉनेट्स फ़ाम दि

पोर्चुगीज' नामक सॉनेट सीरीज में उपलब्ध होती है जिसमें उसने अपने प्रेम की प्रतिष्ठा की है। इन सॉनेटों का स्थान अंग्रेजी साहित्य के प्रेमकाव्य की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में है, तथा एक स्त्री के भावों की अभिव्यक्ति के रूप में तो वे प्रायः अद्वितीय है।

मैं रोमाण्टिक पुनरुत्थान के विषय में कह चुका हूँ कि वह विक्टोरियन युग की प्रधान वैज्ञानिक एवं व्यापारिक भावना के विरोध मे हुए प्रमुख प्रत्यान्दोलनो में से था, तथा यह भी उल्लेख कर चुका हूँ कि इसके विरोध ने अतीत की ओर पुनरावर्तन का रूप ग्रहण किया। मध्ययुगीन भावना, जिसके प्रभावों का अठारहवी शताब्दी के मध्य से आगे का इतिहास पहले ही दिया जा चुका है, थोड़े दिन तक निर्बल रहने के उपरान्त अब फिर से साहित्य और कला मे एक प्रबल शक्ति बन गयी। डाण्टे ग्रैब्रियल रॉसेटी (१८२८–८२) ने, जो चित्रकार और कवि दोनो था, साहित्य और कला दोनो ही क्षेत्रों मे इस भावना का प्रतिनिधित्व किया। 'प्री रैफेलाइटिज्म'[1] नामक कलात्मक आन्दोलन का, जिसका नाम ही उसकी प्रेरणा और उसके उद्देश्य का निर्देशक है, वह प्रमुख नेता था। अपनी समस्त सहानभूतियो तथा विचार-शैलियो मे अत्यधिक अनाधुनिक होने तथा अपने युग के जीवन में प्रायः बिलकुल ही रुचि न होने के कारण रॉसेटी श्री हॉल केन के शब्दो मे, "इन दिनो मे एक काल-व्यतिक्रम के समान था।" वास्तव मे, उसकी कल्पना का वास्तविक निवास-स्थान उन्नीसवी शताब्दी का लंदन नही था जिसमे भाग्यवश उसने जन्म लिया था, बल्कि दान्ते के समय का फ्लोरेस था, तथा मध्युगीन विचारों और भावों के साथ उसने ऐसा पूर्ण तादात्म्य स्थापित किया था कि 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल', 'वर्ल्ड्सवर्थ' और 'एवी' जैसी कविताओं मे ऐसा प्रतीत होता है कि हम 'विटा नूवा'[2], 'पैरेडिज़ो'[3] तथा महान् कैथलिक चित्रकारों की कृतियो के वातावरण मे साँस ले रहे है। यह बात इसलिए

१. इटालियन चित्रकार राफ़ेल (१४८३–१५२०) से पहले के मध्ययुगीन चित्रकारों का अनुसरण करने की प्रवृत्ति। इन कलाकारों ने अपने चित्रों में सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का ध्यान दिया था और उन्हें खूब सजाया-सँवारा था। यही प्रवृत्ति उन्नीसवीं शताब्दी के इन 'प्री-रैफ़ेलाइट' चित्रकारों और कवियों में दिखाई देती है। ——अनु०

२., ३. इटालियन कवि दान्ते (१२६५–१३२१) की रचनाएँ।——अनु०

और भी महत्त्वपूर्ण है कि जहाँ तक उसके बौद्धिक विश्वासों का प्रश्न है, रॉसेटी कैथलिकों की भाँति ईश्वर की सत्ता में नही बल्कि इसके विपरीत भौतिक पदार्थों की सत्ता मे विश्वास करने वाला था। गाथा-लेखक के रूप में उसको बड़ी सफलता प्राप्त हुई, विशेषकर करुणरस-प्रधान परिस्थितियों के वर्णन में। उदाहरण के लिए 'दि व्हाइट शिप', 'सिस्टर हेलेन' तथा 'ईडेन बॉवर' का नाम लिया जा सकता है। सॉनेट-लेखक के रूप में उसका स्थान अंग्रेजी के महान्तम कवियो मे है, जिसका उदाहरण 'दि हाउस ऑव लाइफ' नामक सुन्दर सॉनेट-सीरीज मे मिलता है। उसकी रचनापद्धति बड़ी ही असामान्य थी तथा भाषा एवं तुकान्त-गठन मे तो उसको विलक्षण सिद्धि प्राप्त थी। परन्तु अपने समग्र रूप में उसके काव्य का स्वर कुछ अधिक स्वस्थ या शिव नही है, तथा उसका अनुपम और वैदेशिक सौन्दर्य कभी कभी भारी मात्रा में अवनति[1] का आभास देता है।

रॉसेटी की बहन क्रिस्टिना जॉर्जिना रॉसेटी (१८३०–९४) अंग्रेजी साहित्य मे एक मात्र ऐसी कवयित्री है जिसको श्रीमती ब्राउनिग के साथ न्यायपूर्वक स्थान दिया जा सकता है। उसकी रचनाओ की विशेषता है तीव्र धार्मिक भावना, रहस्यवाद का स्पष्ट प्रभाव तथा छन्द सम्बन्धी सौदर्य की अधिकता। परन्तु रॉसेटी के प्रभाव तथा उसके द्वारा व्यवहार की हुई रोमाण्टिकता के प्रभाव का प्रमुख रूप क्रिस्टिना में नही बल्कि विलियम मॉरिस (१८३४–९६) मे देखने को मिलता है। मॉरिस की प्रारम्भिक रचनाएँ—'दि डिफेन्स ऑव गिनीवियर ऐण्ड अदर पोएम्स' (१८५८), 'दि लाइफ ऐण्ड डेथ ऑव जेसन' (१८६७) और 'दि अर्थली पैराडाइज' (१८६८–७०)—रचना-विधि एवं शैली में शुद्ध रूप से रोमाण्टिक है, यद्यपि उनमें विषाद का जो स्वर निहित है वह आलोचनात्मक दृष्टि वाले पाठकों को यह याद दिलाता था कि जान-बूझकर अपने युग से मुँह मोड़ लेने के बावजूद वह उसकी सन्तप्त और पीड़ित भावना से पूर्ण रूपेण मुक्त न हो सका। बाद मे, रस्किन के प्रभाव तथा आधुनिक व्यापारिक दृष्टिकोण के प्रति अपनी बढती हुई विरक्ति और घृणा के कारण मॉरिस समाजवादी बन गया। इस प्रकार

१. जब कवि और लेखक विषय-वस्तु की अपेक्षा शैली के सौन्दर्य पर अधिक ध्यान देते हैं तो ऐसी स्थिति को 'अवनति' (डिकेडेन्स) की स्थिति कहा जाता है।--अनु०

मध्ययुग के प्रति उसका अनुराग अतीत के लिए भावनात्मक शोक करने के बजाय भविष्य के लिए एक सुस्पष्ट कार्यक्रम के रूप में परिणत हो गया। मॉरिस ने अपने प्रारभिक रूप का वर्णन करते हुए अपने को "एक रिक्त दिवस का आलसी गायक[1]" बताया है। इस "आलसी" "और निरर्थक गायक" का एक उत्साही और उद्यमी सुधारक के रूप में परिवर्तन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे विक्टोरियन युग मे सामाजिक हितों के शक्तिशाली प्रभुत्व का पता चलता है। भौतिकवाद के विरुद्ध रोमाण्टिकवाद के विरोध ने जो व्यावहारिक रूप धारण किया उसका प्रारभ मुख्य रूप से उसी से हुआ।

विक्टोरियन कवियों की महान् पंक्ति मे से जिस कवि की सबसे अंत मे मृत्यु हुई वह था ऐल्गर्नन चार्ल्स स्विनबर्न (१८३७–१९०९), वह भी रोमाण्टिक सप्रदाय मे ही था, यद्यपि उसकी रचनाओं में उस समय की जटिल और मिश्रित सभ्यता के अन्य बहुत-से प्रभाव भी दृष्टिगोचर होते है। वह बड़ी ही उर्वर एवं बहुमुखी प्रतिभा वाला लेखक था। उसकी रचनाएं नाना प्रकार की है, यथा यूनानी दुःखान्त नाटक (अटलाण्टा इन कैलिडॉन' और 'एरेक्थ्यूज' की गणना अंग्रेजी में शुद्ध क्लासिक रूप को पुनरुज्जीवित करने के लिए किये गये सर्वोत्तम प्रयासो मे की जाती है); मेरी स्टुअर्ट[2] पर लिखी गयी एक नाटकत्रयी; मध्ययुगीन रहस्य-नाट्य-संबंधी प्रयोग; उच्च कोटि के भावों एवं सौन्दर्य से पूर्ण लम्बी कथात्मक कविताएँ जिनमें 'ट्रिस्ट्रम ऑव ल्यॉनीज़' संभवतः सर्वोत्तम है, बहुसंख्यक राजनीतिक कविताएँ जिनका क्रान्तिकारी उत्साह विक्टर ह्यूगो की (जो लेखक के प्रमुख साहित्यिक गुरुओं में से था) याद दिलाता है; अनेक प्रकार के सबोध-गीत;

१. "Idle singer of an empty day"

२. स्काटों की रानी मेरी (मेरी स्टुअर्ट) (१५४२–८७) स्काटलैण्ड के राजा जेम्स पंचम की पुत्री थी। १५५८ में फ्रांस के राजा फ्रांसिस द्वितीय से उसका विवाह हुआ। इसके उपरान्त १५६५ में लार्ड डार्नले से और १५६७ में बॉथवेल से। इंग्लैण्ड की रानी एलिज़बेथ प्रथम ने उसके ऊपर यह अपराध लगाकर कि वह उसके जीवन के विरुद्ध षडयंत्र कर रही थी उसे कैद कर लिया और अंत में फांसी दे दी। स्विनबर्न के अतिरिक्त स्कॉट, जर्मन कवि शिलर और मॉरिस ह्यूलेट ने भी उसको अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।––अनु०

स्वगत भाषण तथा असंख्य वैभवपूर्ण गीतियाँ। परन्तु अंग्रेजी साहित्य में उसका स्थान मुख्यतः गीति-लेखक के रूप में ही है। भाषा और छन्द दोनों पर उसने प्रायः अद्वितीय अधिकार प्रदर्शित किया तथा दोनो के ही प्रयोग मे उसने असीमित साहस दिखाया है। परन्तु उसकी निपुणता प्रायः अनर्थकारी सिद्ध होती थी तथा मात्र शाब्दिक प्रभावों की सृष्टि करने का उसको जो शौक था उसके जाल में भी वह बहुधा फँस जाता था। उसमे किसी बात को कहने की आश्चर्यजनक क्षमता थी, परन्तु सामान्यतः उसके पास कहने योग्य बात बहुत कम होती थी। इसीलिए उसके साहित्य का काफी बड़ा भाग वास्तविक प्रेरणा से युक्त होते हुए भी निस्सारता के दोष से दूषित है। स्विनबर्न मे शाब्दिक सगीत के चमत्कारों की सृष्टि करने की क्षमता थी, परन्तु किसी कविता को स्थायित्व प्रदान करने के हेतु शाब्दिक संगीत के अतिरिक्त भी किसी बात की आवश्यकता होती है।

टेनिसन-युग के जिन बाकी कवियों का उल्लेख यहाँ करना है उनको एक ही अनुच्छेद (पैराग्राफ) मे रखना आवश्यक है। सुविधा के विचार से हम उनको उनकी जन्म-तिथि के आधार पर कालक्रमानुसार रख सकते है।

सर हेनरी टेलर (१८००–८६) ने पद्य के क्षेत्र मे अपनी अधिकाश कृतियाँ नाटकीय शैली में लिखी। उसने अपेक्षाकृत अनलकृत एव कठोर एलिजबेथीय शैली में दुखान्तो की रचना की जिनमें से सर्वश्रेष्ठ है 'फिलिप वान आर्टेवल्ड'। इसके अतिरिक्त उसने 'दि वर्जिन विडो ऑर ए सिसिलियन समर' नामक सुखान्त भी लिखा। कॉर्नवाल के मॉर्वेन्सटो नामक स्थान का अत्यन्त सनकी पादरी रॉबर्ट स्टीफेन हॉकर (१८०३–७५) अद्‌भुत रूप से मध्ययुगीन मस्तिष्क वाला व्यक्ति था तथा जिन सरल ग्रामीणो के बीच वह रह रहा था उनके अनेक भोड़े अन्धविश्वासो तक को मानता था। उसकी सुन्दरतम कविता 'दि क्वेस्ट ऑव दि सग्राल' मध्ययुग की महान् साहसिकता की भावना से परिपूर्ण है और इस कारण 'इडिल्स ऑव दि किग' में दिये गये टेनिसन के पूर्णरूपेण आधुनिक आख्यान से उसका जो विरोध है वह महत्त्वपूर्ण है। एडवर्ड फिट्‌जेरल्ड (१८०९–१८८३) ने, जो टेनिसन के घनिष्ठतम मित्रों मे से था, बहुत कम मात्रा में काव्य-रचना की परन्तु उस कम मात्रा में ही एक ऐसी कविता थी जो अग्रेजी की सबसे सुविख्यात और मनमोहक आधुनिक कविताओं में से है, अर्थात् ग्यारहवी शताब्दी के फारसी ज्योतिषी व कवि उमर खैयाम की 'रुबाइयात' (अर्थात् चतुष्पदियों) का स्वतंत्र अनुवाद अथवा रूपान्तर। इस अनुवाद को प्रारम्भ में बहुत कम सफलता प्राप्त

हुई, परन्तु धीरे-धीरे उसने पाठकों का हृदय जीत लिया और अब बहुत समय पहले से ही उसकी गणना उस युग की सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृतियों में की जाती है। अतएव इसका इतिहास मार्टिन फर्कुहर टपर (१८१०–८९) की 'प्रॉवर्बियल फिलॉसफी' के इतिहास से भिन्न है। इस पुस्तक में जो रचनाएं संगृहीत थी वे अत्यधिक उपदेशात्मक तथा अत्यंत शिथिल और लयबद्ध गद्य मे लिखी हुई हैं। अनेक वर्षों तक इसकी बिक्री लाखों में होती रही, परन्तु अब उसकी प्रतियाँ अपाठ्य रचनाओं के कूड़े के ढेर मे डाल दी गयी हैं। एक अन्य कवि जो अपने समय मे बहुत विख्यात हुआ परन्तु अब जिसका नाम ही नाम शेष रह गया है, फिलिप जेम्स बेली (१८१६–१९०२) था। उसकी विशालकाय रचना 'फेस्टस', जिस पर उसकी ख्याति आधारित है, जब पहले-पहल प्रकाशित हुई तो उसने हलचल मचा दी तथा गम्भीर समीक्षको तक ने इसको 'पैराडाइज लॉस्ट' और 'फाउस्ट' (जर्मन कवि गेटे की प्रसिद्ध रचना) की श्रेणी की रचना बताकर इसका सम्मान किया। टेनिसन ने इसके विषय में यह कहकर ठीक ही निर्णय दिया था कि यह एक नीरस कविता है जिसमे बहुत-सी भव्य बाते है। अभिव्यक्ति की मौलिकता के लिए किया गया स्पष्ट प्रयास जिसे हम श्रीमती ब्राउनिंग के संबंध मे देख चुके है, इस रचना मे पुन. प्रकट होता है। इसकी अतिशयोक्तिपूर्ण भावनात्मकता, इसकी कृत्रिम एव अस्वाभाविक पद-रचना और इसकी आडम्बर एव व्यर्थ के प्रपंच से पूर्ण शैली ध्यान देने योग्य है, क्योंकि सामान्यतः लोगों का विचार यह है कि काव्य मे जो सम्प्रदाय "अत्यधिक कृत्रिमता एवं क्लिष्टतावादी संप्रदाय" ('स्पास्मोडिक स्कूल') के नाम से विख्यात था, यदि उसके निर्माण में नही तो कम से कम उसको पुष्ट करने में इस रचना ने प्रमुख भाग लिया। इस संप्रदाय के अन्य लेखक, जो अपने समय मे कुछ हद तक प्रसिद्ध हुए, थे सिड्नी डॉबेल (१८२४–७४) जिसने 'दि रोमन' और 'बाल्डर' की रचना की, तथा अलेक्जैण्डर स्मिथ (१८३०–१८६७) जिसकी 'लाइफ ड्रामा' जब वह इक्कीस वर्ष का ही था तभी प्रकाशित हुई थी और जिससे पाठकों को जो आशाएँ थी वे कभी सफलीभूत नही हुई। डॉबेल और स्मिथ ऐसी प्रसिद्धि के उदाहरण है जिसका विस्फोट हो चुका है। इसके विपरीत जेम्स टॉम्सन (१८३४–८२) की रचनाओं के विषय में संभावना यह है कि जैसे-जैसे समय बीतता जायगा वैसे-वैसे उनकी ख्याति में कमी नही बल्कि वृद्धि होती जायगी। उसकी 'सिटी ऑव ड्रेडफुल नाइट' नामक कविता घोर नैराश्य एवं विषाद से पूर्ण है, परन्तु उसमें व्यक्त उसके जीवन-संबंधी विचारों के विषय में कोई चाहे जो कहे, उसकी विषादपूर्ण शक्ति,

कल्पनात्मक सामर्थ्य तथा उसके पद्य के नादपूर्ण एवं भव्य संगीत की कितनी भी प्रशंसा की जाय अधिक न होगी। विक्टोरियन कवियों की इस सूची में, जिसको किसी प्रकार भी पूर्ण नहीं कहा जा सकता, हम कुछ अन्य लेखकों का नाम मात्र जोड़ सकते हैं, जिन्होंने पद्य में उल्लेखनीय कार्य किया, यद्यपि प्रमुख रूप से उनकी ख्याति अन्य क्षेत्रों में हुई। लार्ड मेकॉले ने अपनी उत्साहवर्धक 'लेज ऑव ऐन्शेण्ट रोम' के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त की तथा बहुमुखी प्रतिभा वाले लार्ड लिटन ने 'किंग आर्थर' नामक रोमाण्टिक महाकाव्य तथा 'लॉस्ट टेल्स ऑव मिलेटस' द्वारा ख्याति अर्जित की। इनमे से दूसरी रचना पहली की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। थैकरे में गभीर तथा हास्यात्मक दोनों प्रकार की कविता के लिए सच्ची प्रतिभा थी तथा उसकी कुछ गीतियाँ बड़ी ही कोमल और यथार्थ है। जॉर्ज इलियट का काव्य आकार मे काफी विशाल है, तथा उसकी 'स्पेनिश जिप्सी', 'अगैथा', 'दि लीजेण्ड ऑव जूबल' व 'हाउ लिसा लव्ड दि किंग' नामक कविताओं में उसके गद्य कथा-साहित्य के बहुत से बौद्धिक और नैतिक गुण वर्तमान है, परन्तु उनमें वास्तविक काव्यात्मक प्रेरणा का अभाव है। इसके विपरीत किंग्सले के पद्य को पढ़कर प्रत्येक पाठक को यही सोच होता है कि उसने इतना कम पद्य क्यो लिखा। उसकी 'सेण्ट्स ट्रेजेडी' और 'एण्ड्रोमीडा' दोनों उल्लेखनीय है, तथा उसके गीत और गाथाएँ बड़ी प्रशसनीय है।

अध्याय २३

टेनिसन-युग

सामान्य गद्य

१०९. कार्लाइल––टॉमस कार्लाइल अपने युग के सामान्य गद्य-साहित्य की महान्तम विभूति था। उसकी तुलना मे इस क्षेत्र का और कोई भी लेखक नहीं ठहर सकता। इसके अतिरिक्त वह आधुनिक संसार की महान्तम नैतिक शक्तियों में से था। उसका जन्म १७९५ में डम्फ्रीशायर के एक्लीफ़ेचन नामक स्थान में हुआ था जहाँ उसके पिता पत्थर की कारीगरी का काम करते थे। उसका जन्म एकदम असंस्कृत स्काटिश ग्रामीणों के बीच हुआ था, तथा उसके समस्त बौद्धिक विकास के बावजूद, प्राचीन 'कैल्विनवाद'[१] के जिन कठोर सिद्धान्तों के बीच उसका पालन-पोषण हुआ था उन्होने उसके मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डाला। उसकी प्रारंभिक शिक्षा ऐनन नामक स्थान की अकादमी मे हुई जिसके उपरांत उसने एडिनबरा विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। यहाँ से १८०९ में उसने मैट्रिक पास किया। विश्वविद्यालय की कोई डिग्री लिये बिना ही उसको छोड़कर, उसने कुछ समय तक ऐनन तथा कर्काल्डी में शिक्षक का कार्य किया। उसके माता-पिता का विचार था कि वह स्काटिश चर्च मे पादरी बने, परन्तु उसके धार्मिक विचारों में अत्यधिक परिवर्तन हो जाने के कारण यह बात न रही। भावुक और गम्भीर प्रकृति का होने के कारण अनेक वर्षो तक वह नाना प्रकार के सन्देहो से त्रस्त रहा। इन अंधकारपूर्ण वर्षो मे, जब वह इन सदेहों का शिकार था, वह "नास्तिकता के उत्कोशपूर्ण

१. फ्रांसीसी धार्मिक लेखक व सुधारक जो हान्स कैल्विन (१५०९–६४) की शिक्षाओं पर आधारित प्रोटेस्टेण्टवाद का एक विशिष्ट रूप। स्काटिश 'प्रिस्बिटोरियनवाद' कैल्विन के विचारों पर ही आधारित था, इसी कारण उसको कैल्विनवाद' भी कहते हैं।––अनु०

अरण्य"[1] में भटकता रहा। ईश्वर में, जीवन में, स्वयं अपने में उसका जो विश्वास था उसे वह खो चुका था तथा उसे पुनः प्राप्त करने के उसके सारे प्रयत्न असफल रहे। फिर, एकाएक रहस्यात्मक प्रकाश अथवा "आध्यात्मिक नव जीवन" ('स्पिरिचुअल न्यू बर्थ') का ऐसा क्षण आया जिसने उसको कम से कम साहस और निष्ठा की मनोदशा तो पुनः प्रदान कर ही दी, हाँ पहले जो उसमें धार्मिक विश्वास थे वे अवश्य नही लौटे । इस लम्बे आध्यात्मिक सघर्ष तथा उसका अन्त कर देने वाले विलक्षण अनुभव दोनों का इतिहास 'सार्टर रिजार्टस' के दूसरे भाग में बड़े शक्तिशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि अब उसे मानसिक विश्राति प्राप्त हो गयी थी, तथापि दुर्भाग्यवश वह अभी से उस तीक्ष्ण मन्दाग्नि (डिस्पेप्सिया) का शिकार बन चुका था जो आगे चलकर उसके सम्पूर्ण जीवन को दुखी बनाने तथा उसके अधिकाश विचारों को प्रभावित करने वाली थी। प्राइवेट टीचरी तथा किराये के लिखने के काम से (जिसमे गेटे के 'विल्हेम माइस्टर' का अनुवाद भी था) वह जो जीविका उपार्जित करता था वह अपर्याप्त और अनिश्चित अर्थात् किसी भी समय समाप्त हो जाने वाली थी। १८२५ में उसकी प्रशंनीय कृति 'लाइफ ऑव शिलर' पुस्तक रूप में प्रकाशित हुई जो उसकी सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण स्वतत्र रचना थी। १८२६ मे उसने जेन वेल्श से विवाह किया जो बड़ी भव्य बौद्धिक शक्तियों वाली स्त्री थी। फिर कुछ वर्षो तक उसकी रचनाएँ पत्रिकाओ में बड़ी संख्या मे छपती रही, विशेष कर जर्मन साहित्य से संबधित विषयों पर, जिसमें उसको "एक नया आकाश और नयी धरती" मिल गयी थी। पिता की मृत्यु हो जाने पर श्रीमती कार्लाइल को विरासत मे एक छोटा-सा फ़ार्म-हाउस मिल गया जो डम्फ़ीशायर के क्रैगेन पुटॉश नामक स्थान के वन्य पर्वतीय प्रदेश में स्थित था। यही पर रहते हुए उसने 'सार्टर रिजार्टस' की रचना की जो उसकी सबसे प्रतिनिधि कृति है। उसकी यह रचना आधुनिक अंग्रेजी साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण और सजीव पुस्तको मे से है। १८३४ की गर्मियों मे वह लदन चला आया। उसकी 'फ्रेन्च रिवोल्यूशन' १८३७ में प्रकाशित हुई; 'हीरोज ऐण्ड हीरो-वर्शिप' विषय पर दिये गये व्याख्यान १८४१ में; 'पास्ट ऐण्ड प्रेज़ेण्ट' १८४३, जो उन बहुसख्यक पुस्तकों में से सबसे सूक्ष्मदर्शी तथा प्रभावपूर्ण थी जो उस युग की संकटापन्न सामाजिक एवं औद्योगिक परिस्थितियों

१. "Howling wilderness of infidelity."

द्वारा प्रेरित हुई थीं; 'लेटर्स ऐण्ड स्पीचेज़ ऑव ऑलिवर क्रॉम्बेल' १८४५ में; 'लाइफ़ ऑव जॉन स्टर्लिंग' (जो उसका घनिष्ठ मित्र था तथा जिसकी मृत्यु कई वर्ष पहले हुई थी) १८५१ में; तथा 'हिस्टरी ऑव फ़्रेडरिक दि ग्रेट', जो उसकी अन्तिम महत्त्वपूर्ण रचना है, दो-दो भाग करके १८५८, १८६२ और १८६५ में प्रकाशित हुईं। १८६६ में पत्नी के देहांत से उसे ऐसा आघात लगा कि वह उससे कभी मुक्त नही हो पाया, और क्योंकि अपने चारो ओर के संसार के आन्दोलनों एवं प्रवृत्तियों के सम्बन्ध मे भी वह अत्यधिक निराशावादी हो गया था, इसलिए उसके शेष वर्ष दुःख व आत्मा की कटुता से पूर्ण रहे। १८८१ में उसकी मृत्यु हुई। सुझाव तो यह रखा गया था कि उसका शव वेस्टमिन्स्टर एबी में दफनाया जाय, परन्तु उसने स्वयं जो इच्छा प्रकट की थी उसके अनुसार उसको एक्लीफेचन में ही दफनाया गया।

बहुल और विविध शब्दों के प्रयोग, विचित्र रूप से निर्मित वाक्यों, खण्डित वाक्यों, आकस्मिक परिवर्तनों ('ट्रान्जीशन्स'), संबोधनों[१] तथा उच्च उद्गारों के कारण कार्लाइल की शैली अंग्रेजी साहित्य में अपने ढंग की अनोखी है। यद्यपि कभी-कभी यह शैली अपरिष्कृत और यहाँ तक कि 'अराजकतापूर्ण' तक प्रतीत होती है, तथापि हमे यह मानना पड़ेगा कि इसकी स्पष्ट से स्पष्ट विलक्षणताओं[२] में लेखक के विशिष्ट व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति हुई है। 'कला कला के लिए' वाले सिद्धान्त को वह तिरस्कार की दृष्टि से देखता था, तथा साहित्य के मात्र पुस्तकीय पहलू को नहीं सहन कर सकता था; फिर भी अपने विशिष्ट रूप से वह अंग्रेजी के महान्तम साहित्यिक कलाकारों में से था। सजीव एवं प्रभावोत्पादक पद-रचना पर तो उसका जैसा अधिकार था उसमें वह अद्वितीय है। उसकी वर्णनात्मक शक्ति तथा चरित्र-चित्रण की शक्ति दोनों ही बड़ी उल्लेखनीय थी। इसका अनुभव करने के लिए केवल उसके

१. 'एपॉस्ट्रॉफी' (संबोधन) एक अलंकार है जिसमें किसी निर्जीव वस्तु को जीवित मानकर उसे संबोधित किया जाय, जैसे--

"कविते! आया भिक्षुक द्वार।"--अनु०

२. शब्दों के प्रयोग, वाक्य-रचना आदि की जिस विशिष्ट रीति का प्रयोग कोई लेखक बार-बार करता है, यहाँ तक कि वह उसके लिए आदत जैसी बन जाय, अंग्रेजी में उसे 'मैनरिज्म' कहते हैं। यह एक प्रकार का दोष है।--अनु०

आश्चर्यजनक गद्य-महाकाव्य 'दि फ्रेंच रिव्योल्यूशन' को देखना ही पर्याप्त होगा। व्याजोक्ति, व्यंग्य एवं कटूक्तियो का प्रयोग तो वह बड़े ही प्रभावपूर्वक करता था। यद्यपि उसकी तीव्र आध्यात्मिकता एवं सुन्दर कल्पना के कारण उसको मसीहाओं और कवियों के बीच स्थान दिया जाता है, तथापि सम्पन्न और प्रचुर हास्य भी उसकी प्रतिभा का कुछ कम प्रधान लक्षण नही है। अपने दर्शन की समस्त-आधारभूत बातो में वह मौलिक रूप से प्यूरिटनो का भी प्यूरिटन (अर्थात् अति निर्बन्ध का कट्टर समर्थक व पालक) था। वास्तव मे तो वह सत्रहवी शताब्दी के प्यूरिटनवाद की उस उत्साहपूर्ण एव दृढ़निष्ठ नैतिक भावना का अतिम उद्घोषक था जो किसी भी सिद्धान्त या व्यक्ति से समझौता नही करती थी। स्वभाव से किसी भी प्रकार न झुकने वाला तथा भयंकर रूप से गंभीर होने के कारण जैसे उसको अनीति और अधर्म नही सहन होता था, उसी प्रकार नैतिक दुर्बलता को भी वह सहन नही कर सकता था। उसके मतानुसार उदासीनता और विरक्ति उस काल के सबसे भयकर दुर्गुणों मे से थी। उसकी शिक्षा की प्रधान विशेषता थी गभीरता। वह रूढ़ियों एवं अवास्तविकताओ से अत्यधिक घृणा करता था तथा उसके सदेश का मुख्य विषय यह था कि प्रवचनाओं के द्वारा हमारा उद्धार नही हो सकता, उन प्रवचनाओ के द्वारा भी नही जो प्राचीन हो जाने के कारण पूज्य और पवित्र हो गयी है; तथा समाज, राजनीति और धर्म मे हमें वास्तविकता की खोज करनी चाहिए, फिर उसका मूल्य कुछ भी चुकाना पड़े। इतिहास उसके लिए एक "विशाल बाइबिल" के समान था जिसमें ईश्वर के उस न्यायपूर्ण व्यवहार का उद्घाटन होता है जो वह मनुष्यों के साथ करता है, और अतीत मे उसने जो पाठ पढ़े उनको वर्तमान में ले जाकर उस पर लागू किया। आधुनिक ससार में उसका जो स्थान है वह इस कथन द्वारा संभवतः पर्याप्त रूप से व्यक्त किया जा सकता है कि वह इसके (अर्थात् आधुनिक संसार के) सबसे विशिष्ट आदर्शों और प्रवृत्तियों मे से सभी का पूर्ण विरोधी था। लोकतत्र में उसे जरा भी विश्वास नही था क्योंकि वह उसे राजनीतिक मूर्खता की हद मानता था, तथा इस बात पर जोर देते हुए कभी नही थकता था कि जनसमूह को "नायक" अथवा "योग्य व्यक्ति" के निर्देशन और नेतृत्व की आवश्यकता है। व्यापारिक समृद्धि के कारण लोगों में जो निश्चिन्त आशावादिता की भावना आ गयी थी उस पर उसने अपने क्रोध की बौछार-सी कर दी, तथा बिलकुल यहूदी मसीहाओं जैसे भावावेशपूर्ण उत्साह के साथ उसने "आधुनिक सभ्यता के पंकिल देवताओं" (मड-गॉड्स ऑव मॉडर्न सिविलाइज़ेशन) की मूर्ति-पूजा के गर्त में

पड़ी हुई अपनी पीढ़ी[1] के समक्ष जीवन के एक आध्यात्मिक प्रतिमान का उद्घोष किया। आधुनिक सभ्यता के साथ-साथ चलने वाले वैज्ञानिक भौतिकतावाद एवं उपयोगितावाद (अथवा "शूकर-दर्शन"—'पिग फिलॉसफ़ी') की भी उसने निन्दा की है तथा जीवन प्रदान करने वाले एकमात्र सत्यों के रूप में ईश्वर एवं आध्यात्मिक स्वातंत्र्य का उपदेश जिस शक्ति-सामर्थ्य के साथ किया है वह उसके किसी भी समकालीन लेखक की पहुँच से बाहर की चीज़ थी। अवश्य ही कार्लाइल अपने युग की धाराओं को पीछे नही मोड़ सका; परन्तु उसके युग पर उसका जो प्रभाव पड़ा उसके विषय में कुछ भी कहा जाय अतिशयोक्ति न होगी।

११०. **रस्किन**—अपने साहित्य के विस्तार एवं विविधता, अपने ओज एवं मौलिकता, कला, साहित्य व जीवन पर अपने प्रभाव तथा अपनी शैली की व्यापकता एव सौन्दर्य के कारण जॉन रस्किन ही ऐसा लेखक है जो इस युग के सामान्य गद्य मे कार्लाइल के बाद द्वितीय स्थान पाने का अधिकारी है। उसका जन्म १८१९ मे हुआ और यद्यपि उसका जन्म-स्थान लन्दन था तथापि वह स्कॉटिश वंश मे उत्पन्न हुआ था। उसके पिता धनी मदिरा-व्यापारी थे तथा बाल और युवावस्था मे उसने उन समस्त सुविधाओं का उपभोग किया जो सम्पत्ति द्वारा प्राप्त की जा सकती है। फिर भी उसका प्रारंभिक प्रशिक्षण कार्लाइल की ही भाँति कठोर रूप से प्यूरिटन था और उसके घर के वातावरण की प्रत्येक वस्तु ने उसके स्वभाव की जन्मजात गम्भीरता को और भी गहरा बनाने मे सहयोग दिया। ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय मे उसने 'साल्सेट ऐण्ड एलीफैण्टा' (१८३९) शीर्षक कविता पर न्यूडिगेट पुरस्कार प्राप्त किया। चार वर्ष उपरान्त 'मॉडर्न पेण्टर्स' का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। इस रचना का प्रधान उद्देश्य टर्नर की प्रतिभा को प्रतिस्थापित करना तथा, इस ध्येय को सामने रखते हुए, सामान्य रूप से दृश्य-चित्रण के वास्तविक सिद्धातो की व्याख्या करना था। इसके बाद समय-समय पर अन्य भाग प्रकाशित हुए जिनमे से पाँचवाँ

१. जिस प्रकार मिस्र से फ़िलस्तीन की ओर जाते हुए यहूदियों ने अपने नेता मोज़ेज़ (मूसा) के सिनाई पर्वत पर चले जाने के उपरान्त मूर्ति-पूजा प्रारंभ कर दी थी। सिनाई पर्वत पर ईश्वर से उनके दस आदेश ('टेन कमाण्डमेण्ट्स') प्राप्त करके जब मोज़ेज़ लौटकर नीचे आया तो उसने अपने अनुयायियों को इसके लिए कठोर दण्ड दिया।—अनु०

और अन्तिम भाग १८६० मे प्रकाशित हुआ। परन्तु उस समय तक यह रचना अपनी प्रारभिक योजना से बहुत आगे बढ़ चुकी थी तथा इसने सौन्दर्य-शास्त्र पर लिखे गये एक व्यापक प्रबध का रूप धारण कर लिया, यद्यपि इसमे व्यर्थ का प्रपच व विस्तार अत्यधिक है। इस बीच मे वह चित्रकला की ही भाँति वास्तुकला की ओर भी अत्यधिक आकर्षित हो चुका था, तथा उसने 'दि सेविन लैम्प्स ऑव आर्कीटेक्चर, (१८४९) और 'दि स्टोन्स ऑव वेनिस' (१८५१–५२) नामक दो पुस्तके लिखी जो 'मॉडर्न पेण्टर्स' की ही भाँति है। परन्तु जैसा हम 'दि स्टोन्स ऑव वेनिस' एव 'दि टू पाथ्स' (१८५९) से जान सकते है, कला के इतिहास के अध्ययन ने उसको सामाजिक परिस्थितियो के अध्ययन की ओर उन्मुख कर दिया। इस प्रकार स्वय अपने समय की व्यावहारिक समस्याओ मे उसकी रुचि जाग्रत हो गयी तथा कार्लाइल की, जिसको वह इस विषय मे अपना गुरु मानता था, प्रेरणा ने कला-आलोचक को लोक-हित-साधक एव सुधारक के रूप मे परिवर्तित कर दिया। जीवन के उत्तरकाल मे, विशेषकर आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में स्लेड प्रोफेसर की हैसियत से, उसने इतिहास और कला के क्षेत्र मे अपना अध्ययन जारी रखा; परन्तु अब उसका अधिकांश समय और शक्ति सामाजिक प्रोपेगैण्डा मे ही व्यतीत होते थे, यहाँ तक कि विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर की हैसियत से वह जो कुछ कहता था वह भी उसके नवीन उत्साह के गहरे रग मे रँगा होता था। उत्कृष्ट नि स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर उसने अपनी प्रतिभा, अपनी शक्ति व अपनी सम्पत्ति सब उन महान् सामाजिक कार्यों में लगा दी जिन्हे वह अपने मन मे बिठा चुका था। इस प्रकार एक ओर तो वह नाना प्रकार के व्यावहारिक उद्देश्यो की पूर्ति मे लगा था, किन्तु साथ-साथ उसने भाषणो, निबधों और पुस्तको मे अपने सामाजिक व आर्थिक सिद्धान्तो की व्याख्या करना भी जारी रखा। 'अण्टू दिस लास्ट'' (१८६१), 'मुनेरा पल्वेरिस' (१८६२), 'टाइम ऐण्ड टाइड बाइ वियर ऐण्ड टाइन' (१८६७) तथा 'फॉर्स क्लैविगरा' (१८७१–८४) शीर्षक पत्रावली मे, जो उसने "इग्लैण्ड के श्रमिको" को सम्बोधित की थी, उसने अपनी राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा अपने शैक्षिक और संस्थागत आदर्शो की व्याख्या की है, उसकी सामान्यतर नैतिक शिक्षाएँ अन्य रचनाओ मे मिलती है, उदाहरणार्थ 'सिसामी ऐण्ड लिलीज' (१८६५) तथा 'दि क्राउन ऑव

१. रस्किन की यह रचना महात्मा गाँधी की प्रिय पुस्तकों में से थी।—अनु०

वाइल्ड ऑलिव' (१८६६) मे। उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष लेक डिस्ट्रिक्ट मे कोनिस्टन वाटर मे स्थित अपने घर मे बिताये जहाँ उसका स्वास्थ्य बराबर गिरता ही रहा। यही १९०० मे उसकी मृत्यु हुई।

विचार करने पर दिखाई देगा कि रस्किन के साहित्य के, जो आकार मे बहुत बड़ा और विविध प्रकार का है, मोटे तौर से दो विभाग हो सकते हैं। पहले मे उसकी वे रचनाएँ आती है जो कला के ऊपर तथा मुख्यत. १८६० के पूर्व लिखी गयी थी, और दूसरे मे सामाजिक आर्थिक व नैतिक प्रश्नो पर १८६० के उपरात लिखी हुई पुस्तकें। परतु उसकी सक्रियता के इन दोनो पहलुओ के बीच जो सम्बन्ध है वह प्रथम दृष्टि मे जितना घनिष्ठ लगता है उससे कही अधिक घनिष्ठ है। वास्तव मे उसकी उत्तरकालीन व्यावहारिक शिक्षाएँ उसकी कला-विषयक शिक्षाओ का ही स्वाभाविक परिणाम व विकसित रूप थी। उसके सौन्दर्य-शास्त्र ने अत मे नैतिकता को ही अपना आधार बनाया। उसका दृढ विश्वास था कि सच्ची कला को केवल वही राष्ट्र जन्म दे सकता है जो उदात्त राष्ट्रीय उद्देश्यो द्वारा प्रेरित हो तथा शुद्ध, सदाचारी और सुखी जीवन व्यतीत करता हो। अतएव वह सोचता था कि उन्नीसवी शताब्दी के इग्लैण्ड को कला का उपदेश देना व्यर्थ है, क्योकि जहाँ तक सम्पन्न वर्गो का प्रश्न था, वे निकृष्ट भौतिकता में डूबे हुए थे, और जहाँ तक विशाल जन-समुदाय का सबध था, वह निर्धनता एव दु ख-दैन्य मे डूबा हुआ था। इग्लैण्ड मे कला का कोई पुनरुत्थान सम्भव हो सके इसके लिए सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का पूर्ण शुद्धीकरण—अथवा जिस प्रकार वह इसे व्यक्त करता था "एक पूर्ण हृदय-परिवर्तन" —आवश्यक था; तथा इसी तर्क के द्वारा वह इस निष्कर्ष पर पहुँचने को विवश हुआ कि कला-प्रेमी की हैसियत से भी वह फिलहाल अपना सर्वोत्तम कार्य समाज-सेवा के क्षेत्र मे ही कर सकता था।

रस्किन की सौन्दर्य-भावना का आधारभूत सिद्धात था कि समस्त महान् कला "किसी शुद्ध आत्मा द्वारा किसी कला-गुण की अभिव्यक्ति होती है।" इस सिद्धात का अपना महत्त्व तो है ही, परंतु उसके सौन्दर्यवाद का विशेष महत्त्व इस कारण है कि इसमे प्रकृति के निरन्तर, सीधे व व्यक्तिगत अध्ययन पर जोर दिया गया है। इस सबध मे वह काव्य-क्षेत्र में वर्ड्सवर्थ द्वारा निर्दिष्ट किये हुए पथ का ही कला के क्षेत्र मे अनुसरण कर रहा था, तथा वर्ड्सवर्थ की भाँति उसने भी रूढि और परम्परा के निरकुश शासन का अन्त करने एवं सजीव यथार्थ के साथ लोगों का सजीव संबंध स्थापित करने मे बड़ा योग दिया। उसका आग्रह था कि कलाकार को सम्प्रदायों

की रूढिगत औपचारिकता का पूर्ण परित्याग कर देना चाहिए तथा किसी प्रसिद्ध आचार्य—जैसे राफेल—की भाँति चित्रण करने का प्रयत्न करने के बजाय उसे स्वयं सीधे प्रकृति की ही ओर जाना चाहिए। फिर, वह जो कुछ भी वहाँ देखे उसी की अनुकृति निष्ठापूर्वक उतारनी चाहिए, उसमे से "न किसी वस्तु को अस्वीकार करे, न किसी वस्तु का चयन करे और न किसी वस्तु का तिरस्कार करे।" रस्किन के दर्शन के इसी भाग ने राफेल से पहले के कलाकारो के अनुयायियो ('प्री-रैफेलाइट्स', देखो§ १०८) को विशेष रूप से प्रेरित किया। उसने क्लासिक (अथवा मूर्ति-पूजक 'पेगन') कला के विरुद्ध 'गॉथिक'[1] (अथवा ईसाई) कला के दावों की जोरदार वकालत की तथा अपनी पीढी के लोगो मे मध्ययुग की वास्तु एवं चित्रकला के प्रति अनुराग की वृद्धि करने मे उसका प्रभाव बहुत अधिक पडा। इस स्थल पर हमे याद रखना चाहिए कि यदि एक ओर उसके चरित्र के अत्यधिक स्पष्ट 'प्यूरिटन' गुण ने उसे नॉक्स[2] और कार्लाइल जैसे लोगो का सहयोगी बना दिया, तो दूसरी ओर उसकी ऐसी ही प्रबल रोमाण्टिक भावना ने उसे स्कॉट से सबधित कर दिया। वह जीवन-भर स्कॉट का बडा उत्साही प्रशसक रहा परन्तु कार्लाइल की बात इससे भिन्न थी।

जहाँ तक उसकी सामाजिक और आर्थिक शिक्षाओ का प्रश्न है, जिनका प्रतिपादन पहले-पहल होने पर अत्यधिक मूर्खतापूर्ण एव उपहासास्पद कहकर उनका मजाक उडाया गया था, उनके विषय मे यहाँ यह कहना पर्याप्त होगा कि मूल रूप से उनमे ईसाई-धर्म के सिद्धातो को जीवन के व्यावहारिक पक्ष, राष्ट्रीय व व्यक्तिगत दोनो, पर सीधे घटित करने का प्रयत्न किया गया है। इसी कारण उसने उस समय की प्रचलित राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर कठोर आक्रमण किया। आधुनिक

१. 'गॉथ' नामक एक जाति से संबन्धित। रोमन अर्थात् क्लासिक सभ्यता' का विनाश इसी जाति के हाथों हुआ। मध्ययुग में वास्तु-कला के क्षेत्र में 'गॉथिक' शैली ही प्रचलित थी जिसकी प्रधान विशेषता है नोकदार मेहराब।—अनु०

२. जॉन नॉक्स (१५०५–७२) स्कॉटलैण्ड का प्रसिद्ध धर्म-सुधारक एवं उपदेशक था। वह १५५४ में जेनेवा में कैल्विन से भी मिला था। स्कॉटलैण्ड में धर्म-सुधार आंदोलन (और प्रिस्बिटीरियन चर्च की स्थापना) में उसका बड़ा शक्तिशाली प्रभाव पड़ा।—अनु०

व्यावसायिक इग्लैण्ड की निकृष्ट भावना तथा सम्पत्ति एवं भौतिक सफलता की पूजा की उसने जो निन्दा की है उसमे उसने कार्लाइल की ही शिक्षाओं का अनुसरण किया तथा बाद मे विलियम मॉरिस ने उसका अनुसरण किया (देखा § १०८)।

लेखक के रूप मे रस्किन मे बहुत से दोष मिल सकते है। वह सनकी तथा चचल वृत्ति वाला है; नाना विषयो पर बात करने से उत्पन्न हुई अनवस्था खीझ उत्पन्न करने वाली है; उसका स्वभाव दुराग्रहपूर्ण है; उसकी शैली प्राय. ऐसी झगडालू और आक्रामक होती है कि पाठक विद्रोह करने को उद्यत हो जाता है; तथा उसकी असगतियाँ ऐसी बहुसख्यक और सुस्पष्ट है कि उसके मत के ठोस महत्व मे हमारा विश्वास डिग जाता है। परन्तु उसकी भावना सदैव शुद्ध, उदात्त तथा दूसरो के हितार्थ बलिदान की प्रवृत्ति से पूर्ण है। सदाचार के उपदेशक के रूप मे—और यही उसका वास्तविक रूप था—उसका प्रभाव लोगो के भले के ही लिए पडा। उसकी शैली अधिकतम प्रशसा के योग्य है; तथा अपनी प्रारभिक रचनाओ के समृद्ध एवं आलकारिक गद्य और अपनी उत्तरकालीन रचनाओ की सरल, बोलचाल की भाषा दोनो मे ही वह अग्रेजी के महान्तम आचार्यो की प्रथम पक्ति मे है। उसकी शैली का एक विशेष लक्षण है उसकी शब्दचित्रण की आश्चर्यजनक शक्ति।

१११. मेकॉले—कार्लाइल और रस्किन को उस युग के महान्तम सामान्य गद्य-लेखक मानकर हम इतिहास के सशोधित निर्णय को स्वीकार कर रहे है। अन्यथा उनके समकालीनो ने तो सर्वप्रथम स्थान मेकॉले को ही दिया होता जो लोकप्रियता मे इन दोनो से आगे था। टॉमस बेबिग्टन मेकॉले का जन्म १८०० मे हुआ। कैम्ब्रिज मे शिक्षा के क्षेत्र मे शानदार सफलता प्राप्त करने के उपरात उसने अगस्त १८२५ के 'एडिनबरा रिव्यू' मे मिल्टन पर एक निबध लिखकर अपने उस साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश किया जो असाधारण एव विविध प्रकार की सफलता से पूर्ण था। उसने बैरिस्टरी करना प्रारभ किया, फिर वह हाउस ऑव कॉमन्स का सदस्य बन गया और उसने वक्ता एव राजनीतिज्ञ के रूप मे बडा नाम कमाया; परन्तु इस पूरे समय वह 'एडिनबरा रिव्यू' के लिए निरन्तर साहित्य-रचना भी करता रहा। १८३४ से १८३८ तक वह सुप्रीम कौसिल मे कानूनी सलाहकार की हैसियत से भारतवर्ष मे भी रहा। इग्लैण्ड लौटने पर उसने पुन सार्वजनिक जीवन मे प्रवेश किया तथा राजनीतिक क्षेत्र मे अनेक वर्षो तक कठोर परिश्रम-कार्य करने के उपरान्त उसे रॉथले के बैरन की पदवी प्रदान की गयी (जिससे वह लार्ड कहलाने लगा)। इस समय उसकी प्रधान साहित्यिक कृति थी 'हिस्टरी ऑव इंग्लैण्ड फ्रॉम दि ऐक्सेशन

ऑव जेम्स दि सेकिण्ड', जिसके प्रथम दो भाग १८४८ मे प्रकाशित हुए और तुरत ही ऐसे लोकप्रिय हुए कि पहले कभी कोई शुद्ध ऐतिहासिक रचना इतनी लोकप्रिय नही हुई थी। इसके बाद उसका स्वास्थ्य ऐसा बिगड गया कि वह स्थायी रूप से रोगी बन गया, परतु उसने बावजूद इसके अपनी महती योजना का परित्याग नही किया। इसके तीसरे और चौथे भाग १८५५ मे प्रकाशित हुए। पाँचवे का प्रकाशन १८५९ मे उसकी आकस्मिक मृत्यु के उपरात हुआ।

मेकॉले को पाठको के बीच जो लोकप्रियता प्राप्त हुई (और यह बात ठीक ही कही गयी है कि उसके शुद्ध साहित्यिक निबधो को भी ऐसे तमाम पाठको ने पढा है जो कभी आलोचना-साहित्य का विचार भी नही करते) उसका कारण यही हो सकता है कि उसकी प्रतिभा मे अनेक गुणो का सयोग था, जिनमे से कुछ की गणना तो सर्वोत्कृष्ट प्रकार के गुणो मे होनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर अन्य गुणो को इस मूल्याकन के प्रतिकूल पक्ष मे रखना होगा। वह चाहे जिस विषय पर लिखे, उसको रुचिकर बनाने की उसमे अद्भुत शक्ति थी, उसकी रचना का विषय चाहे जो हो उसकी चेतनता और सजीवता सदैव असीमित रहती थी तथा उसने कोई नीरस पृष्ठ शायद ही कभी लिखा हो। मात्र कथा-लेखक के रूप मे उसकी तुलना कथा-साहित्य मे उसके महान्तम समकालीनो से की जा सकती है, तथा उसकी शैली जैसी उत्साहपूर्ण, प्रफुल्ल एव सुरम्य थी वैसी ही सुस्पष्ट भी थी। परन्तु साथ ही साथ हमे याद रखना है कि प्रतिभा की जो अद्भुत देन उसमे थी उसको छोड़ दें तो वह अपनी पीढी के अग्रेजो का पूर्ण प्रतिनिधि-सा था। इसी कारण उसकी रचनाएँ औसत दर्जे के पाठक को बडा आनद प्रदान करती थी, क्योकि वह औसत दर्जे के मनुष्यो के दृष्टिकोण की आलोचना करने या उससे आगे बढने के बजाय उसको बडे जोरदार ढग से व्यक्त करता था। स्वभाव से व्यावहारिक एव निश्शक, सदेहो से पूर्णरूपेण मुक्त तथा "जीवन के रहस्य के भार" के प्रति पूर्णरूपेण उदासीन होने के कारण वह दृढ व्यावहारिक ज्ञान की साकार मूर्ति था। वह अस्पष्ट एवं रहस्यात्मक वस्तुओ से घृणा करता था तथा अपने युग की 'निश्चिन्त भौतिकता' मे उसे दृढ विश्वास था। कार्लाइल और रस्किन जिन पाठको को विक्षुब्ध कर देते थे, तथा ये महान् नैतिक शिक्षक उनके सुखदायी आशावाद को जिस अविच्छिन्नता और दृढतापूर्वक चुनौती देते थे उसके कारण उन्हें क्रोध अथवा व्याकुलता का अनुभव होता था, किन्तु अब मेकॉले के रूप मे उन्हें अपने ही जैसा व्यक्ति मिल गया जो यथार्थता एव अकुटिल सुस्पष्टता के गुणों से सम्पन्न था। उसकी पल्लवग्राही वृत्ति के

कारण—और इतिहास एव चरित्र की जो व्याख्या उसने की है उसमे वह निस्सदेह अगभीर और पल्लवग्राही ही थी—उनके लिए उसे समझना और भी आसान हो गया, जबकि उसकी उत्कृष्ट शैली—जिसकी सुस्पष्टता, उत्फुल्लता, कठोरता तथा सूक्तिमय शक्ति मे उसके व्यक्तित्व का सच्चा प्रतिबिम्ब दिखाई देता है—जो कुछ भी वह कहता है उसको आश्चर्यजनक रूप से मनमोहक बना देती है। मेकॉले कोई महान् विचारक नही था; वह कोई महान् साहित्यिक आलोचक भी नही था तथा जीवनी-लेखक और इतिहासकार के रूप मे सदैव अत्यत परिश्रमी होते हुए भी, व्यापक कथनो एव आकर्षक तुलनाओ के प्रेम के कारण वह अक्सर गल्तियाँ कर जाता था। परन्तु फिर भी उसकी कृतियाँ अत्यत महत्त्वपूर्ण थी। यह कहा जा सकता है कि उसने अपने निवन्धो के द्वारा लोगो मे साहित्य मे जैसी रुचि उत्पन्न की और उसे जैसा लोकप्रिय बनाया वैसा और किसी लेखक ने नही किया, तथा उसकी 'हिस्टरी' तो आज भी अग्रेजी भाषा के इतिहास-विषयक साहित्य की सबसे आकर्षक रचना है।

११२. **आर्नल्ड**—मैथ्यू आर्नल्ड अतिम गद्य-लेखक है जिसका विचार एक पृथक् प्रकरण मे करना आवश्यक है। वह रगबी के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूल के विख्यात हेडमास्टर टॉमस आर्नल्ड का पुत्र था। उसका जन्म १८२२ मे हुआ। ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय मे उसने बडा सम्मान प्राप्त किया, कुछ दिनो तक लार्ड लैन्सडाउन का निजी सचिव भी रहा, और फिर १८५५ से लेकर मृत्यु के दो वर्ष पूर्व तक उसने स्कूलो के इन्सपेक्टर के रूप मे बडा परिश्रम किया। १८५७ से १८६७ तक वह ऑक्सफर्ड मे काव्य का प्रोफेसर भी रहा तथा १८८३ और १८८६ मे भाषण करने के लिए उसने अमरीका का भ्रमण किया। उसकी मृत्यु १८८८ मे हुई। उसकी कविता के विषय मे, जो मुख्य रूप से उसके जीवन के पूर्वार्ध की रचना थी, हम पहले ही लिख चुके है (§ १०८)। उसके गद्य के स्वभावतः दो विभाग है; एक में उसका विषय साहित्य था, दूसरे मे जीवन। साहित्य-सबधी उसकी रचनाएँ मुख्य रूप से उसके 'एसेज इन क्रिटिसिज्म' के दो भागो (१८६५ व १८८८), 'मिक्स्ड एसेज' (१८७९) तथा ऑक्सफर्ड मे दिये गये 'लेक्चर्स ऑन ट्रान्सलेटिंग होमर' (१८६१, १८६२) मे उपलब्ध है। ये सभी रचनाएँ अतर्दृष्टि, तीक्ष्ण बुद्धि, सूक्ष्म ग्रहणशक्ति तथा सुन्दर रुचि के गुणो से सम्पन्न है। साहित्य को वह मूल रूप से "जीवन की आलोचना" ('क्रिटिसिज्म ऑव लाइफ') मानता था, तथा उसका प्रमुख उद्देश्य सम्बधित लेखको के नैतिक मूल्यों पर विचार करना था। आलोचना के विषय मे उसका मत

था कि उसमें "संसार भर में ज्ञात और विचार की जाने वाली बातों के सर्वश्रेष्ठ अश को सीखने और उसके प्रचार करने का निष्पक्ष प्रयत्न" होना चाहिए, और व्यवहार मे उसने अपना यह उद्देश्य बहुत कुछ पूरा भी किया। फिर भी उसने यूनानी साहित्य इतना अधिक पढा था कि उसके कारण उसने कला के रूप मे भी कला के दावो की उपेक्षा नही की। वह कोई महान् पण्डित नही था; न तो उसका अध्ययन गहन ही था और न व्यवस्थित ही, तथा उसका निर्णय कभी-कभी उसकी सनको द्वारा प्रभावित हो जाता था। परन्तु अपने समग्र रूप में उसकी साहित्यक आलोचना आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण, ध्वन्यात्मक, तथा प्रकाशकर है। जीवन के आलोचक के रूप में आर्नल्ड ने 'कल्चर ऐण्ड अनार्की' (१८६९) तथा 'फ्रेण्डशिप्स गार्लेण्ड' (१८७१) मे महान् अग्रेज जनता की "कठोर बुद्धिहीनता" को दूर करने तथा उसके मानसिक एव नैतिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाने का उद्देश्य अपने सामने रखा। दूसरी ओर 'लिटरेचर ऐण्ड डॉग्मा' (१८७३) तथा 'गॉड ऐण्ड दि बाइबिल' (१८७५) मे उसने धर्मशास्त्र ('थियालोजी') के क्षेत्र मे प्रवेश किया तथा शुद्ध नैसर्गिकता के आधार पर आधारभूत ईसाइयत के पुनर्निर्माण का बीड़ा उठाया। उसका गद्य अपनी सुस्पष्टता, लालित्य एव मनोहरता के कारण अत्यत प्रशसनीय है यद्यपि यदाकदा उसके शैली-निर्बन्धो ('मैनरिज्म्स') एवं पुनरुक्ति के कारण गुस्सा आने लगता है। सामान्य बोलचाल का पुट होते हुए भी उसकी शैली सदैव सुसस्कृत एवं एव शिष्ट है, फिर भी वह परिहास और व्यग्य का भयकर रूप से उपयोग करने मे सिद्धहस्त था। इसके अतिरिक्त उसमे अपने विचारो को प्रभावोत्पादक एवं स्मरणीय वाक्यांशो के माध्यम से सार रूप मे व्यक्त करने की भी असामान्य प्रतिभा थी। वह अपने समय के सबसे उत्तेजक लेखको मे से था, और यद्यपि उसका स्वभाव कार्लाइल या रस्किन के स्वभाव से भिन्न था, तथापि उसने आधुनिक जीवन की भौतिकता पर उनके द्वारा किये गये आक्रमण को अपने ढग से अपनाकर बड़ा लाभदायक कार्य किया ।

११३. **टेनिसन-युग के अन्य गद्य** लेखक—विभिन्न क्षेत्रो मे ख्याति प्राप्त करने वाले विक्टोरियन गद्य-लेखको मे से जो असख्य लेखक विचार करने से बाकी रह गये है उनमे से उल्लेख करने के लिए मैने यहाँ केवल उन्ही कतिपय लेखको को छाँट लिया है जिनकी ओर कुछ न कुछ ध्यान देना इस युग की सक्षिप्त से सक्षिप्त समीक्षा मे भी आवश्यक है।

इतिहास-रचना के क्षेत्र मे हेनरी टॉमस बकिल (१८२१–१८६२) की

'हिस्टरी ऑव सिविलाइजेशन इन इग्लैण्ड' मे भौतिक विज्ञान का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। इस रचना मे उसने मानवीय मामलो से वैयक्तिक तत्त्व का लोप कर देने तथा प्रगति की व्याख्या पूर्णतया प्राकृतिक कारणो एव सामान्य नियमो के ही आधार पर करने का प्रयत्न किया। कुछ तो युग की विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति के फलस्वरूप और कुछ मेकॉले के उदाहरण के परिणामस्वरूप विक्टोरियन युग के अनेक इतिहासकारो ने अपेक्षाकृत छोटे कालो के विषय मे बडे विस्तारपूर्वक तथा खूब ब्यौरेवार ढँग से लिखने की विधि अपनायी। इस प्रवृत्ति के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है, एडवर्ड आगस्टस फ्रीमन (१८२३—१८९२) की 'दि हिस्टरी ऑव दि नॉर्मन कॉन्क्वेस्ट' जो एक ठोस कृति है, जेम्स एन्थनी फाउड (१८१८—१८९४) की 'हिस्टरी ऑव इग्लैण्ड फ्रम दि फॉल ऑव वूल्जे टु दि डिफीट ऑव दि स्पेनिश आर्मडा' जो एक उत्कृष्ट परतु त्रुटिपूर्ण रचना है, सैमुएल रॉडन गार्डिनर (१८२९—१९०२) द्वारा स्टुअर्ट काल तथा गृह-युद्ध के ऊपर बडे परिश्रम से लिखी हुई पुस्तको की सीरीज तथा विलियम एडवर्ड हार्टपोल लेकी (१८३८–१९०३) द्वारा लिखित 'हिस्टरी ऑव इग्लैण्ड इन दि एटीन्थ सेन्चुरी' जो गार्डिनर की रचना के समान ही बड़े परिश्रम से लिखी हुई तथा ठोस है। दूसरी ओर, बहुत सी बातो को थोड़े मे एकाग्र कर देने की विधि का प्रशसनीय उदाहरण जॉन रिचर्ड ग्रीन (१८३७–१८८३) की 'शॉर्ट हिस्टरी ऑव दि इग्लिश पीपुल' मे मिलता है जो अपने ढग की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमे युग का प्रबल प्रजातात्रिक प्रभाव स्पष्ट है; यह केवल राजाओ और युद्धो का ही इतिहास नही, बल्कि जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, जनता का इतिहास है।

जॉन एडिग्टन सिमण्ड्स (१८४०–१८९३) की 'दि रेनेसान्स इन इटली' के सात भागो को हम इतिहास तथा सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के बीच संबध स्थापित करने वाली कड़ी मान सकते है। यह रचना अत्यत उच्च कोटि की है, यद्यपि वृथा विस्तार तथा भाषा की अत्यधिक आलकारिकता के कारण इसका सौन्दर्य नष्ट हो गया है। सौदर्यशास्त्रीय आलोचना के क्षेत्र मे रस्किन के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण लेखक वाल्टर होरेशियो पेटर (१८३९–१८९४) था जिसने अपनी रचनाएँ धीमे तथा असीम परिश्रम के पश्चात् प्रस्तुत की, तथा जो बडी ही सुघटित, असामान्य रूप से सुन्दर परतु कुछ कृत्रिम-सी शैली मे लिखता था। उसकी 'दि रेनेसान्स' नामक पुस्तक तथा 'ग्रीक स्टडीज़' मे उसके आलोचना साहित्य का सर्वश्रेष्ठ अश उपलब्ध है, परन्तु उसने दार्शनिक प्रेमाख्यान के क्षेत्र में भी कुछ सुन्दर

रचनाएँ प्रस्तुत की जो प्राय अपने ढग की अनोखी है, उदाहरण के लिए 'इमैजिनरी पोर्ट्रेट्स' तथा 'मैरियस दि एपिक्यूरियन' में।

इस बीच मे अनेक लेखको ने साहित्यिक आलोचना एव सामान्य निबध के क्षेत्र मे भी बडी सफल रचनाएँ प्रस्तुत की, उदाहरण के लिए फ्राउड की 'शॅर्ट स्टडीज ऑन ग्रेट सब्जेक्ट्स' तथा सर लेस्ली स्टीफेन (१८३२–१९०४) की 'आवर्स इन ए लायब्रेरी', जो ऐसे जीवनीप्रधान अध्ययनो का सग्रह है जो अपनी विद्वत्ता, सार्वलौकिकता तथा रुचि की असदिग्धता के कारण बड़े ही महत्त्वपूर्ण है। स्विनबर्न ने भी बडी मात्रा मे साहित्यिक आलोचना लिखी परतु उसके उत्साह एव पूर्वाग्रह दोनो ऐसे आवेशपूर्ण थे कि उसके निर्णय पर तनिक भी विश्वास नही किया जा सकता। इसके विपरीत उपन्यासकार स्टीवेन्सन के आलोचनात्मक एव सामान्य निबधो ('फेमीलियर स्टडीज ऑव मेन ऐण्ड बुक्स', 'मेमोरीज ऐण्ड पोर्ट्रेट्स', 'वर्जिनिबस प्यूरिस्क') की गणना हाल के साहित्य मे इस प्रकार की सबसे महत्त्वपूर्ण रचनाओ मे की जा सकती है।

ज्ञान की लोकप्रियता एव प्रसार के कारण, जिसके विषय मे मै चर्चा कर चुका हूं, स्वभावत ऐसे साहित्य का विशाल मात्रा मे सर्जन हुआ जिसमे वैज्ञानिक विषयों का वर्णन इस प्रकार हुआ था कि वे बुद्धिमान् सामान्य पाठको को भी रोचक प्रतीत हो। दो प्रसिद्ध वैज्ञानिको, जॉन टिण्डल (१८२०–१८९३) तथा टॉमस हेनरी हक्सले (१८२५–१८९५) ने अपने को विशद एव सुबोध व्याख्या मे अत्यत प्रवीण सिद्ध किया, तथा ग्राण्ट अलेन (१८४८–१८९८) ने भी इसी दिशा मे विशिष्ट ख्याति प्राप्त की। इसी प्रकार धर्मशास्त्र भी सामान्य साहित्य का अग बन गया। इसका सबसे उल्लेखनीय उदाहरण जॉन हेनरी न्यूमन (१८०१–१८९०) के भाषणों और निबधो मे मिलता है। उसका प्रभाव ऐसा व्यापक और गहरा था कि उसके बारे मे यह कहा जाता है कि वह अपने युग के साहित्य मे कार्लाइल के बाद सबसे प्रभुत्वपूर्ण व्यक्ति था। एक और लेखक का, जो पहले उल्लेख किये हुए सभी वर्गों से अलग है, उल्लेख होना आवश्यक है। वह है जॉन रिचर्ड जेफरीज (१८४८–१८८७)। अपनी 'गेमकीपर ऐट होम', 'दि अमेट्यूर पोचर' तथा इसी प्रकार की अन्य रचनाओ मे उसने प्रकृति के चित्रण मे निरीक्षण एव वर्णन की असामान्य शक्ति प्रदर्शित की है। परन्तु कदाचित् उसकी रचनाओ मे सबसे मनमोहक है 'दि स्टोरी ऑव माई हार्ट', जो उसके आन्तरिक अनुभवों एव विकास का विवरण है।

अध्याय २४

टेनिसन-युग (समाप्त)

उपन्यास

११४. **सामान्य विशेषताएँ**—अठारहवी शताब्दी मे गद्य कथा-साहित्य की जो उत्पत्ति और स्थापना हुई उसके साहित्यिक और सामाजिक महत्त्व का निर्देश पहले ही किया जा चुका है (§ ७३), तथा उस समय जो बाते कही गयी थीं उनके प्रकाश मे टेनिसन युग के साहित्य मे इसकी प्रमुखता सहज ही समझ मे आ जायगी। फिर भी इस युग मे इसने जो विशिष्ट स्थान ग्रहण कर लिया उस पर इस समय भी जोर देना आवश्यक है। केवल इस बात से कि शीघ्र ही लोगो ने यह समझ लिया कि सदा बढते हुए महान् पाठक-वर्ग मे इस साहित्यरूप की लोकप्रियता सबसे अधिक और अद्वितीय थी, माँग और पूर्ति के सुप्रसिद्ध सिद्धात के आधार पर काफी हद तक यह पता चल जायगा कि अत्यन्त भिन्न प्रकार की शक्तियों और उद्देश्यो वाले असख्य लेखक इसकी ओर क्यो इतने आकर्षित हुए। परन्तु इसकी व्यापकता, नम्यता (अर्थात् नियम-शैथिल्य) तथा इसमें प्रत्येक नये लेखक को अपने ढग से अपना कार्य करने की जो स्वतन्त्रता रहती है, उनको भी इन कारणों मे समाविष्ट करना आवश्यक है। अस्तु, युग की सर्जनात्मक शक्ति का बहुत बडा भाग उपन्यास-रचना मे ही लग गया तथा वह मनोरजन का साधन होने के साथ-साथ विचारो का माध्यम भी बन गया। विभिन्न विचारों के लेखकों ने जीवन की अपनी-अपनी सामान्य आलोचना को व्यक्त करने के लिए इसका व्यवहार किया, साथ ही यह उन लोगो के उद्देश्यो की सिद्धि के लिए भी बडा उपयुक्त था जिन्हे किसी विशेष सिद्धान्त की व्याख्या करनी थी तथा जो अधिक से अधिक सख्या मे पाठको को अपनी बात सुनाना चाहते थे। अतएव यह बात अवश्यम्भावी थी कि इस प्रकार उपन्यास मे वे सभी शक्तियाँ परिलक्षित हों जो नाना-रूपी आधुनिक ससार की सृष्टि कर रही थी। विज्ञान के प्रसार ने इसे यथार्थवादी और विश्लेषणात्मक बना दिया, प्रजातन्त्र के प्रसार ने इसे सामाजिक और लोकहित-साधक

बना दिया; धार्मिक व नैतिक अशान्ति तथा आलोचना एवं परीक्षण की भावना प्राय इसमे सर्वोपरि रहती थी; साथ ही इसमें रोमाण्टिक पुनरुत्थान के शक्तिशाली प्रभाव भी प्राय· दिखाई देते थे। अतएव केवल विषयवस्तु एव शैली की विविधता की दृष्टि से ही विक्टोरियन उपन्यास विक्टोरियन युग की बहुमुखी रुचियो तथा परस्पर-विरोधी तत्वों का सूचक है। इस स्थल पर कथा-साहित्य मे स्पष्ट दिखाई देने वाली विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति का भी उल्लेख होना चाहिए। यह सत्य है कि कभी-कभी ('टॉम जोन्स' मे फील्डिग की भाँति) उपन्यासकारो ने तत्कालीन समाज का काफी व्यापक चित्र खीचने को भी अपना ध्येय बनाया। परन्तु सामान्यत: जीवन के विभिन्न पहलुओ को पृथक् चित्रण के लिए छाँट लेना ही नियम बन गया, तथा इसका परिणाम हुआ परिश्रम एवं रुचियो का उपविभाजन। इस प्रकार उदाहरण के लिए हम समुद्र (अर्थात् नाविको के जीवन) से सबधित तथा सैनिक जीवन के उपन्यास, उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय-जीवन व अपराधी-जीवन के उपन्यास, औद्योगिक-जीवन, राजनीतिक-जीवन, कलाकारों के जीवन तथा पादरी-जीवन के उपन्यास तथा इसी भाँति अन्य अनेक प्रकार के उपन्यास देखते है। बहुधा यह उपविभाजन भौगोलिक आधार पर भी होता है, उदाहरणार्थ उस कथा-साहित्य मे जिसका सम्बन्ध आयरिश जीवन अथवा स्काटिश जीवन अथवा हो सकता है, विभिन्न अग्रेजी काउण्टियो के जीवन से होता है। मुख्य रूप से इन्ही उपविभाजक प्रवृत्तियो के स्वच्छन्द विकास के कारण गद्य कथा-साहित्य सभी दिशाओ मे प्रसारित होता गया है, यहाँ तक कि अब वह आधुनिक ससार के तमाम पहलुओं और कार्यों के समान ही व्यापक और विस्तृत बन गया है।

यहाँ विक्टोरियन उपन्यास-साहित्य पर विस्तृत विचार करना न तो आवश्यक ही है और न सम्भव ही। इसके विषय मे केवल उतनी ही बात कहने की आवश्यकता है जितने से सम्पूर्ण विक्टोरियन साहित्य का हमारा सक्षिप्त सर्वेक्षण पूरा हो जाय। अतएव मै पहले इस समय के तीन प्रमुख उपन्यासकारों—डिकेन्स, थैकरे और जार्ज ईलियट की सामान्य विशेषताओं के विषय मे कुछ कहूँगा। उसके उपरान्त मै कथा साहित्य मे उनके अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समकालीनो के साहित्य के महत्त्व का निर्देश मात्र करूँगा।

११५. डिकेन्स—चार्ल्स डिकेन्स (१८१२-१८७०) को अपने 'पिकविक पेपर्स' (१८३७) के कारण अचानक ही भारी ख्याति मिल गयी तथा पचीस वर्ष की उम्र मे ही वह सबसे लोकप्रिय अग्रेजी उपन्यासकार बन गया। आज भी अग्रेजी

मे उसका यही स्थान है। रचना-प्रविधि की दृष्टि से विचार करने पर उसके साहित्य के कालक्रमानुसार दो विभाग होते है। उसने स्मॉलेट (देखो ः ७६) की परम्परा के अनुयायी के रूप मे उपन्यास लिखना प्रारभ किया। वचपन मे उसने स्मॉलेट की रचनाएँ बडे उत्साहपूर्वक पढी थी, तथा दोनो की भावना एव प्रधान स्वर मे अतुलनीय अन्तर होने के वावजूद स्मॉलेट को उसका गुरु माना जा सकता है। उसके प्रारम्भिक उपन्यास, उदाहरणार्थ 'पिकविक पेपर्स' और 'निकोलस निकिल्बी'—स्मॉलेट के उपन्यासो की भाँति ही साहसिक कार्यो के सग्रह मात्र है जिनके वीच जो कुछ भी सबध है वह उन चरित्रो द्वारा प्रदान किया हुआ है जो उनमे भाग लेते है। 'मार्टिन चजिलविट' (१८४३)', 'डॉम्बी एण्ड सन' (१८४६-४८) तथा 'डेविड कॉपरफील्ड' (१८४९-५०) मे अपेक्षाकृत अधिक एकता लाने का प्रयास किया गया है, परन्तु ये पुस्त के भी मूल रूप से असघटित एव इतिवृत्तात्मक प्रकार की ही है। 'ब्लीक हाउस' (१८५२-५३) के विषय मे कहा जा सकता है कि उससे उसका द्वितीय काल प्रारम्भ होता है, परन्तु सर्वप्रथम इसी रचना मे उसने कथा के विभिन्न सूत्रो को एक मे पिरोकर एक सुसगठित कथानक निर्माण करने का नियमित प्रयत्न किया है। यह नही कहा जा सकता कि डिकेन्स अपने कथानको के निर्माण मे कुछ अधिक सफल रहा, यहाँ तक कि उसकी अन्तिम पुस्तको मे भी मात्र प्रासगिक सामग्री बडी मात्रा मे उपलब्ध होती है। परन्तु 'ब्लीक हाउस' के बाद के उपन्यास 'लिटिल डॉरिट' (१८५५-५७), 'ए टेल ऑव टू सिटीज' (१८५९), 'ग्रेट एक्स-पेक्टेशन्स' (१८६१), 'अवर म्युचुअल फ्रेण्ड' (१८६४-६५) तथा असमाप्त छोड़ा गया 'एडविन ड्रूड' इसी परिवर्तित सगठन-शैली मे लिखे गये है।

जो लोग साहित्य-पठन मे अनुरक्त है उन सभी को डिकेन्स के गण स्पष्ट ज्ञात है। इनमे से उसके अति विपुल एव अप्रतिहत हास्य, उसकी अद्वितीय वर्णनात्मक शक्ति तथा उसके चरित्र-चित्रण की आश्चर्यजनक सजीवता विशेष उल्लेखनीय है। हाँ, आलोचना करते समय उसके चरित्र-चित्रण के विषय मे यह तो अवश्य ही कहना पड़ेगा कि उसकी सफलता का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था। फिर, इसके अतिरिक्त यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि उसके हास्य-प्रधान चरित्र भी किसी अर्थ मे वास्त-विक ससार मे जीव है या नही (यहाँ यह बात कह देनी है कि विलक्षण एव अपरूप चरित्रो में ही उसे महान् सफलता प्राप्त हुई)। यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि उसने चरित्र-चित्रण को सामान्यतः व्यग्य-चित्र का रूप दे दिया (जिसमे सम्बन्धित व्यक्ति की किसी एक विशेषता को ही खूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रदर्शित किया जाता है)।

फिर भी यह तो निर्विवाद है कि अग्रेजी साहित्य मे शेक्सपियर को छोड़कर अन्य किसी लेखक ने कभी इतने अधिक स्त्री-पुरुषो की सृष्टि नही की जो उस हास्य-परम्परा के स्थायी तत्त्व बन गये है जिसमे जन्म लेकर हम अग्रेजी-भाषी लोग निज को गौरवान्वित अनुभव करते है। डिकेन्स का प्रमुख दोष यह है कि उसके भावपक्ष का बड़ा अश अत्यन्त अतिरेकपूर्ण है। रुचि मे परिवर्तन हो जाने से डिकेन्स की ख्याति को सबसे बड़ा धक्का इसी सबध मे पहुँचा है। प्रभावोत्पादकता की धुन मे वह सदैव अतिरेकपूर्ण अवधारणा का ही सहारा लेता था, तथा परिणामस्वरूप उसकी रचना अपरिष्कृत बन जाती थी। उसे विस्मयजनक घटनाओ, अतिरेकपूर्ण भावना एव आलकारिक भाषा से पूर्ण रचनाओ से बडा अनुराग था तथा प्रायः यह तत्त्व उसकी रचनाओ मे बडा प्रदर्शनात्मक हो जाता था; उन अनेक स्थलों मे जिनमे उसने यत्नपूर्वक भावना एव करुण रस की सृष्टि करने की चेष्टा की है, वह प्राय अतिरजित एव अरुचिकर हो गया है।

उसके उपन्यास पूर्ण रूप से विक्टोरियन-युग के लोकहितैषी आन्दोलन से ही सम्बधित है। कथा-साहित्य के क्षेत्र मे वे इस आन्दोलन की सबसे महत्त्वपूर्ण देन एव अभिव्यक्ति के समान है। आदि से अन्त तक उसने अपने उपन्यासो की रचना एक विशेष उद्देश्य को लेकर की। उसने प्राय· अपनी समस्त पुस्तको मे प्रचलित व्यवस्था के किसी विशेष दोष या दोषो पर आक्रमण किया तथा वह सदैव निर्बलो, बहिष्कृतो एव पीड़ितो का रक्षक बना रहा। वास्तव मे लोकहित की भावना उसके साहित्य की सबसे प्रधान विशेषता है, क्योकि उसकी विशाल लोकप्रियता के कारण उसका प्रभाव बडी दूर-दूर तक फैला, इसलिए उसकी गणना उस समय के महान्तम समाज-सुधारको मे की जाय तो पूर्णतया न्यायोचित होगा। परन्तु साथ ही साथ उसमे युग की आशावादी भावना पूर्णरूप से वर्तमान थी। यद्यपि ससार मे अनेक बुराइयाँ थी, जैसे कठोर-हृदयता तथा उच्च पदस्थ लोगो की स्वार्थपरता, लोभ एव पाखण्ड जो इतने व्यापक थे, विभिन्न सामाजिक वर्गो से सम्बन्धित दुष्ट पूर्वाग्रह जो मनुष्य-मनुष्य मे वैमनस्य उत्पन्न पैदा करते थे, फिर भी डिकेन्स के लिए वह बडा अच्छा ससार था, जिसमे भली भाँति रहा जा सकता था। उल्लसित स्वभाव एव अदम्य उत्साह का व्यक्ति होने के कारण उसने जो कुछ भी लिखा उसी मे अपनी दृढ आशावादिता को अभिव्यक्त किया है तथा निस्सदेह रूप से उसकी सफलता का एक कारण उसकी उत्फुल्लता भी थी जो सम्पर्क मात्र से ही दूसरे को भी प्रभावित किये बिना न रहती थी।

११६. **थैकरे**—डिकेन्स का संसार निम्न तथा निम्न मध्य वर्गो का संसार था, और जब कभी उसने इस ससार को छोड़कर दूसरे मे प्रवेश किया वह अत्यन्त असफल रहा। उसके विपरीत उसके महान् प्रतिद्वन्द्वी विलियम मेकपीस थैकरे (१८११-१८६३) का ससार कुलीन समाज का संसार था, दूसरे शब्दो मे क्लबो, ड्राइगरूमो व सम्पन्न व्यक्तियो का ससार। इस संसार को उसने अपनी वास्तविक रूप से सफल होने वाली सर्वप्रथम तथा सबसे अधिक प्रतिनिधि पुस्तक मे 'वैनिटी फेयर' (१८४७-४८) अर्थात् 'अहकार का मेला' नाम दिया है। इस शब्द को 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' से लेकर उसने इसका जो प्रयोग किया है उससे उसकी विषय-वस्तु के स्वरूप तथा उसके प्रति स्वय उसके दृष्टिकोण का कुछ सकेत मिल जाता है। इसी रचना का उप-शीर्षक 'ए नॉवेल विदआउट ए हीरो' (अर्थात् बिना नायक का उपन्यास) उसके साहित्य की भावना तथा उसकी कला के आधारभूत सिद्धातो के विषय मे और भी निर्देश करता है। मूल रूप से थैकरे सामाजिक व्यग्यकार और यथार्थवादी था। उसमे डिकेन्स के लोकहितवाद तथा सुधारार्थ प्रचण्ड उत्साह का अश मात्र भी नही था। परन्तु उच्चता की मिथ्या भावना, दम्भ एव प्रवचना पर उसने जैसे दृढ, अविच्छिन्न और प्रभावोत्पादक प्रहार किये वे कार्लाइल द्वारा मिथ्याचरण, प्रतारणाओ और अगाभीर्य की भयकर निन्दाओ के समानान्तर माने जा सकते है यद्यपि दोनो भिन्न-भिन्न स्तर की वस्तु है। उसने जान-बूझकर उपन्यास-क्षेत्र की रोमाण्टिक भावना से सबध-विच्छेद किया, वह शुद्ध कलात्मक कारणो द्वारा नही बल्कि नैतिक कारणो द्वारा प्रेरित हुआ था। उसका विश्वास था कि अतिरजित भावना एव उद्देश्य और चरित्र के विकृत चित्रणो के कारण रोमाण्टिक उपन्यास जीवन का पूर्णतया मिथ्या चित्र प्रस्तुत करता था और इस प्रकार साहित्य को अत्यधिक हानि पहुँचाता था। अपने गुरु फील्डिग की भाँति उसका भी मत था कि "सत्य सर्वोत्तम है, उसकी अभिव्यक्ति चाहे जिस मच से हो।"[1] अतएव उसने अपना उद्देश्य बना लिया कि उसने ससार को जैसा पाया था उसे वह वैसा ही चित्रित करेगा; क्योकि वह उसको जरा भी रोमाण्टिक नही प्रतीत हुआ था, इसलिए वह उसको रोमाण्टिक रंगो मे नही रंगेगा। वास्तव मे, दीर्घकाल से लोकप्रिय रोमाण्टिक परम्परा के विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप

1. "Truth is best, from whatever pulpit."

उसने कथा-साहित्य में रुचि के आकर्षण-केन्द्र को प्रायः बिलकुल ही बदल दिया तथा अपनी कहानियों का सार सद्‌गुणो को न बनाकर दुर्गुण को बनाया। अवश्य ही हमे उसकी पुस्तको के बढ़ते हुए आनन्द-उल्लास को भी स्वीकार करना है। उसने प्रायः पूर्ण रूप से जीवन के निकृष्ट एव घृणित पक्षो के चित्रण द्वारा ही अपनी साहित्य-रचना प्रारंभ की, जैसी 'बैरी लिण्डन', 'वैनिटी फेयर' मे, जो व्यापकतर चित्र खीचा गया है उसमे शुद्धता और नि स्वार्थ भाव को पहले से काफी बड़ा स्थान मिल सका; तथा 'वैनिटी फेयर' के बाद तो—अर्थात् 'पेण्डेनिस','हेनरी एसमण्ड', 'दि न्यूकम्स', 'दि वर्जिनियन्स' और 'फिलिप' में—सत् तत्त्व के प्राधान्य एव महत्त्व मे काफी वृद्धि हुई। फिर भी, यद्यपि उसके व्यग्य की उग्रता एव व्यापकता मे कमी तथा उसकी भावना की कोमलता एवं सहानुभूतिमयता में वृद्धि होती गयी, तथापि थैकरे के विचारो मे काफी बडा भाग अब भी जीवन के अशुभ पक्ष का ही रहा। लोगो ने उसे प्राय मानवद्वेषी कहा है, परन्तु वह ऐसा नही था। कारण यह कि यद्यपि उसकी मर्मभेदी आलोचना कभी-कभी इस आरोप के सत्य होने का आभास दे देती है, तथापि वह मनुष्यो की मूर्खताओ की ही भाँति उसकी दु खी और दयनीय दशा का भी अनुभव करता था जो एक मानवद्वेषी (अर्थात् 'सिनिक') कभी नही करता। परन्तु जीवन के प्रति उसका जो सामान्य दृष्टिकोण था वह डिकेन्स के दृष्टिकोण के विपरीत, अत्यन्त विषादपूर्ण था। उसकी अनेक नैतिक शिक्षाओ का सार उसके प्रिय वाक्याश मे व्यक्त किया जा सकता है, अर्थात् "सब कुछ वृथा एव निरर्थक है।"[1]

थैकरे का ध्यान सदैव चरित्र की ओर केन्द्रित रहता था; वह सरचना के प्रश्नो की ओर बहुत ही कम या बिलकुल ही नही ध्यान देता था तथा उसके उपन्यास अव्यवस्थित, असगठित प्रकार के है। परन्तु उसका चरित्र-चित्रण रचनापद्धति के समस्त दोषो का परिहार कर देता है, क्योकि यह चित्रण अद्‌भुत रूप से सूक्ष्म-दर्शी तथा स्पष्टभाषी है। वार्तालाप-शैली के गद्य-लेखक के रूप मे उसका स्थान अग्रेजी साहित्य मे प्राय. सबसे आगे है, तथा मात्र लेखक के रूप मे भी, सदैव निर्दोष न होते हुए भी, वह सदैव मनमोहक है। यद्यपि उसके सामाजिक व्यग्य का उद्देश्य तत्कालीन समाज की ही आलोचना करना था, तथापि अपनी कुछ सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ

1. "Vanitas vanitatum."

उसने अतीत से प्राप्त सामग्री के आधार पर भी लिखी। उसका 'हेनरी एसमण्ड' (१८५२) अंग्रेजी भाषा के सर्वोत्तम ऐतिहासिक उपन्यासो मे से है। इसमे उसने प्रारम्भिक अठारहवी शताब्दी के जीवन व (सामाजिक) वातावरण, और यहाँ तक कि उसके वार्तालाप की विशिष्ट ध्वनि एव शैली तक की आश्चर्यजनक अनुकृति उतार दी है।

११७. जार्ज ईलियट—इस प्रकार यदि डिकेन्स के हाथो मे उपन्यास लोकहित-निष्ठा से सबधित था तो थैकरे के हाथो मे उसका रूप व्यग्यात्मक था। मेरी एन अथवा मैरियन एवान्स, जो सदैव अपने साहित्यिक नाम जार्ज ईलियट (१८१९-१८८०) के रूप मे ही विख्यात रही है, के हाथो मे वह नैतिक और दार्शनिक बन गया। जिस प्रकार डिकेन्स का ससार लन्दन की सड़को का ससार तथा थैकरे का ससार क्लबो और ड्राइग रूमो का ससार था, उसी प्रकार उसका ससार अधिकाश मे पुरातन-पथी प्रान्तीय जीवन का ससार था, जिससे वह अपनी बाल्यावस्था मे परिचित रही थी। एक उपन्यास, 'रोमोला' मे जो पुनर्जागरण-कालीन फ्लोरेस की कथा है, अवश्य उसने अतीत को अपना विषय बनाया; परन्तु उसका सर्वश्रेष्ठ रूप हमे सदैव तभी दिखाई देता है जब उसने उन दृश्यो एव चरित्रो के चित्रण का प्रयत्न किया है जिनसे उसका परिचय जीवन के प्रारम्भ मे ही हुआ था तथा जिनसे उसको अनुराग था। उदाहरण के लिए 'ऐडम बीड' (१८५९), 'दि मिल ऑन दि फ्लॉस' (१८६०), 'साइलास मार्नर' (१८६१) तथा 'मिडिलमार्च' (१८७१) का नाम ले सकते है। इस प्रकार मोटे तौर से विचार करने पर उसका साहित्य कुछ-कुछ जेन आस्टिन (§ १०४) के साहित्य से मिलता-जुलता है तथा उसमे मिडलैण्ड के गावो और छोटे शहरो के जीवन का जो चित्र खीचा गया है उसकी उत्कृष्टता की ओर उचित ध्यान देना आवश्यक है। परन्तु जहाँ जेन आस्टिन ने सामाजिक जीवन की बाह्य वस्तुओ के विषय मे ही लिखा था, वहाँ जार्ज ईलियट का सबध असावधान दर्शक अथवा निरीक्षक को नीरस और साधारण प्रतीत होनेवाले जीवन के ऊपरी धरातल के नीचे चलने वाले महान् नैतिक सघर्षो से था। सीधी-सादी, साधारण सामग्री के आधार पर करुण रस की सृष्टि करने की सामर्थ्य मे वह वर्ड्सवर्थ के समान थी (जैसा 'ऐडम बीड' मे हेटी सॉरेल की मार्मिक कथा मे है) और उसकी करुण रस-प्रधान रचनाएँ एस्काइलस या शेक्सपियर की रचनाओ के ही समान मर्मस्पर्शी एव नैतिकता से ओतप्रोत है। 'माइकेल' मे वर्ड्सवर्थ की भाँति वह भी हमारे आधुनिक साहित्य मे प्रजातान्त्रिक आन्दोलन की समर्थिका

थी। उसकी प्रमुख विशेषताओं में मधुर एवं शिष्ट हास्य तथा कभी अस्वाभाविक न लगने वाली करुणा की गणना होनी चाहिए। यद्यपि उसकी कला का आधार जीवन के प्रति प्रकट रूप से दृढ़निष्ठ सत्य था, परन्तु उसका यथार्थवाद सर्वत्र विशालतम एवं कोमलतम सहानुभूति द्वारा प्रभावित रहा है। परन्तु जो विशेषताएँ उसके साहित्य को विशिष्टता एवं निजत्व प्रदान करती है उनकी खोज तो उस दार्शनिकता मे करनी है जिससे उसके साहित्य का इतना बड़ा अश परिपूरित है तथा जो, उसके यथार्थवाद की भाँति, उसको युग की वैज्ञानिक प्रवृत्तियों से सम्बन्धित कर देती है। जार्ज ईलियट एक महान् विचारक थी। उपन्यासकार के रूप में अपना साहित्यिक जीवन देर से प्रारम्भ करने के कारण उसने इसमे जैसी विद्वत्ता प्रदर्शित की वैसी अन्य किसी अंग्रेज कहानीकार में कभी नही रही। वह तत्कालीन समस्त अन्वेषणों एवं मीमांसाओ के घनिष्ठ सम्पर्क मे थी, और यद्यपि जिस दिव्योपदेश (बाइबिल आदि में निहित) प्रधान ईसाइयत में उसका पालन-पोषण हुआ था उसका उसने शीघ्र ही परित्याग कर दिया, तथापि अपनी गम्भीर धार्मिक प्रवृत्ति के कारण उसे आध्यात्मिक अनुभूति के समस्त रूपो में आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि प्राप्त हो गयी। अतएव उसके साहित्य का स्थान सुगम साहित्य मे नहीं बल्कि उन्नीसवी शताब्दी के गम्भीरतम साहित्य में है। उसके उपन्यास जीवन पर लिखे हुए महान् निबंध है, यद्यपि उनकी शिक्षाएँ कला के मूर्त रूपो के माध्यम से प्रस्तुत की गयी है। उसके स्वभावानुसार उसका केन्द्रीय विषय सदैव उच्च और निम्न जीवन—अर्थात् कर्तव्य और अभिरुचि के बीच होनेवाला सघर्ष होता था; और क्योकि वह इस विषय का निर्वाह प्रायः सदैव ही करुणोत्पादक ढंग से करती थी—अर्थात् कथा की प्रगति सदैव दुर्बलता से पाप की ओर तथा पाप से उसके प्रतिफल की ओर रहती है—इसलिए उसकी पुस्तके अत्यन्त विषादपूर्ण है। परन्तु जैसा सभी वस्तुतः दु.खांतो के साथ होता है, उसका विषाद निरुत्साह करनेवाला नही बल्कि परिष्कारक या शोधक है। साथ ही उसमे जो विशेषताएँ थी उनके कुछ दोष भी उसमे थे तथा ये दोष उसके निधन के उपरान्त उसकी ख्याति के लिए बड़े हानिकर सिद्ध हुए है। आरम्भ से ही उसकी प्रवृत्ति विश्लेषण और व्याख्या का अत्यधिक प्रयोग करने की ओर थी; जैसे-जैसे उसकी सर्जनात्मक शक्ति कम होती गयी, यह प्रवृत्ति जोर पकड़ती गयी तथा उसकी अन्तिम रचनाओ मे तो—उदाहरणार्थ 'डेनियल डेरोंडा' की भाँति, विज्ञान व मनोविज्ञान का इतना आधिक्य हो गया कि उनमें श्वासावरोध-सा प्रतीत होता है।

११८. टेनिसन-युग के अन्य उपन्यासकार—क्योंकि इन उपन्यासकारों की संक्षिप्त सूची में वर्गीकरण का कोई अन्य आधार सुलभ होना कठिन है, इसलिए मै यहाँ मुख्यतः उनके जन्म-क्रम के अनुसार उनका उल्लेख करूँगा तथा जहाँ सुविधा के विचार से उचित होगा वही पर इस नियम का अतिक्रमण करूँगा।

साहित्यिक कलाकारों की पक्ति मे स्थान पाने का अधिकारी न होते हुए भी कैप्टेन फ्रेडरिक मार्यट (१७९२-१८४८) का उल्लेख समुद्र (अर्थात् नाविकों के जीवन) से सबधित अग्रेजी उपन्यासकारो में सबसे रुचिकर एव मनोरजक उपन्यासकार के रूप मे होना आवश्यक है (उदाहरण के लिए 'पीटर सिम्पुल' तथा 'मिस्टर मिडशिपमैन ईजी' मे)। यद्यपि उसका जन्म अठारहवी शताब्दी के समाप्त होने के पूर्व ही हुआ था, तथापि उसका पहला उपन्यास 'फ्रैंक माइल्डमे' १८२९ में जाकर प्रकाशित हुआ। इसके एक वर्ष पूर्व एडवर्ड बलवर लिटन ने, जो बाद मे लार्ड लिटन (१८०३-७३) हुआ, 'वेल्हम' द्वारा हलचल मचा दी थी। लिटन असीम चतुरता एवं बहुमुखी प्रतिभा वाला व्यक्ति था तथा उसने कथा-साहित्य के क्षेत्र में अनेक शैलियों मे सफलता प्राप्त की, उदाहरणार्थ सभ्य समाज एव अपराध से संबधित कथाएँ (जैसे 'पॉल क्लिफर्ड', 'अर्नेस्ट माल्ट्रैवर्स', 'यूजीन ऐरम',); ऐतिहासिक प्रेमाख्यान (जैसे 'दि लास्ट डेज ऑव पॉम्पेयाई', 'हैरल्ड', 'दि लास्ट ऑव दि बैरन्स'); अलौकिक विषयों वाली कथाएँ (जैसे 'जनोनी'); सामाजिक उद्देश्य से पूर्ण कथाएँ (जैसे 'दि कमिग रेस') तथा घरेलू जीवन के उपन्यास (जैसे 'दि कैक्सटस', 'माई नावेल')। इन सभी क्षेत्रों मे उसको जो उज्ज्वल सफलता प्राप्त हुई उसे अस्वीकार नही किया जा सकता, परन्तु यह उज्ज्वलता प्रायः मिथ्या चमक-दमक का रूप धारण कर लेती है, तथा उसके साहित्य के बड़े अश का सौन्दर्य अत्यधिक काल्पनिकता एवं अस्वाभाविकता के कारण नष्ट हो गया है। यही दोष बेन्जमिन डिजरेली, अर्ल ऑव बीकन्सफील्ड (१८०४-१८८१) के उपन्यासो (उदाहरणार्थ, 'हेनरियेटा टेम्पुल', 'कोनिग्सबी' और 'टैन्क्रेड') में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। परन्तु इनमें से एक, अर्थात् 'सिविल' (१८४५) का पृथक् उल्लेख होना चाहिए, क्योंकि इसमें पूँजीपतियों और श्रमिकों के पारस्परिक सबंधों से सम्बद्ध दोषों का जो शक्तिशाली उद्घाटन हुआ है उसके कारण इसका स्थान तत्कालीन कथा-साहित्य को प्रभावित कर रहे जनहित-आन्दोलन में है। दूसरी ओर, जार्ज बॉरो (१८०३-८१) का साहित्य अत्यन्त भिन्न कोटि का है। वह अनेक सनकों वाला, विलक्षण व्यक्ति था। उसने भ्रमण

खूब किया (उदाहरणार्थ 'दि बाइबिल इन स्पेन'), बंजारों का अध्ययन किया (उदाहरणार्थ देखो 'दि जिप्सीज इन स्पेन') तथा दो अव्यवस्थित आत्मकथात्मक उपन्यासों की रचना की, अर्थात् 'लवेन्ग्रो' तथा इसी का उत्तर भाग 'दि रोमनी राई'। बॉरो से तीन साल छोटे चार्ल्स लेवर (१८०६-७२) ने अनेक पुस्तकें लिखी परन्तु आजकल उसका स्मरण प्रमुख रूप से आयरिश हास-परिहास एवं सैनिक साहसिकता से पूर्ण दो पुस्तको, 'हैरी लोरेकर' तथा 'चार्ल्स ओमैली' के कारण किया जाता है। चार्ल्स रीड (१८१४-८४) के साथ सामान्यतः सामाजिक उद्देश्य ही प्रधान रहता है (उदाहरणार्थ 'फाउल प्ले', 'पुट योर सेल्फ इन हिज प्लेस', 'हार्ड कैश') परन्तु उसकी पुस्तकों मे सर्वोत्तम है 'दि क्लाएस्टर ऐण्ड दि हार्थ' जो एक ओजपूर्ण व आवेशयुक्त ऐतिहासिक प्रेमाख्यान है। श्रीमती गैस्केल (१८१०-६५) को भी हम यहाँ लोकहितसाधक उपन्यासकारों के बीच ही रख सकते है (उदाहरणार्थ, फैक्टरी जीवन की मार्मिक कथा 'मेरी बार्टन'), परन्तु आजकल अधिकाश पाठको की स्मृति मे वह ग्राम्य जीवन की विचित्र और मोहक गाथा 'क्रैन्फर्ड' की लेखिका के रूप मे ही जीवित है। ऐण्टनी ट्रॉलप (१८१५-८२) जिसका साहित्य अत्यन्त विशालकाय है, अत्यधिक यथार्थवादी था, तथा उसने प्रारभिक विक्टोरियन कालीन प्रांतीय जीवन के जो यथार्थ चित्र खीचे है (उदाहरणार्थ 'बार्चेस्टर टॉवर्स', 'डॉक्टर थॉर्न') वे अभी से ऐतिहासिक महत्त्व से पूर्ण हो गये है। परन्तु उसने अपने सर्वोत्तम उपन्यास पादरी-जीवन के विषय में लिखे है (उदाहरणार्थ 'दि वार्डेन' तथा 'फेमिली पार्सनेज')। शॉर्लाट ब्राण्टी (१८१६-५५) ने अपने प्रथम तथा सबसे सफल उपन्यास 'जेन आयर' (१८४७) में भावना की जो तीव्रता तथा वर्णन की जो सुस्पष्टता प्रदर्शित की वह उस समय में स्त्रियों द्वारा लिखे जाने वाले कथा-साहित्य मे बिलकुल नयी थी तथा जो बहुत-से पुराने विचार वाले लोगों के लिए क्षोभ का कारण बनी। उसकी बहन एमिली (१८१८-४८) का भी ऊँचा स्थान है। उसकी प्रमुख रचना 'वुदरिग हाइट्स' एक श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। तीसरी बहन एन (१८२०-४९) इन दोनो की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण है। उसके प्रमुख उपन्यास है 'ऐग्निस ग्रे' तथा 'दि टिनेण्ट ऑव वाइल्डफेल हाल'। चार्ल्स किंग्सले (१८१९-१८७५) मे, जो कार्लाइल का उत्साही शिष्य तथा उत्कट समाज-सुधारक था, हमें एक ऐसे लेखक के दर्शन होते है जो विक्टोरियन युग के सबसे ओजपूर्ण लोकहितसाधक उपन्यासकारों में से था। उसके 'आलटन लॉक', 'यीस्ट' तथा 'टू इयर्स एगो' अपने समय के संक्षोभ

तथा जनसाधारण के हित के लिए लेखक के भावावेशपूर्ण मनोयोग से परिपूर्ण है, परन्तु साहित्यिक दृष्टि से उसकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ 'वेस्टवर्ड हो' तथा 'हाइपैशिया' नामक एतिहासिक उपन्यास है। यद्यपि उसके भाई हैनरी (१८३०-७६) की ख्याति उससे कम है, तथापि कभी-कभी उसको दोनों में श्रेष्ठतर उपन्यासकार कहा गया है। योग्य निर्णायकों ने उसके 'जेफ्री हैम्लिन को आस्ट्रेलियन जीवन का सर्वोत्तम अंग्रेजी उपन्यास घोषित किया है। विलियम विल्की कॉलिन्स (१८२४-८९) का स्थान अंग्रेजी कथा-साहित्य मे सनसनीखेज घटनाओं एव सुगठित कथानक की दृष्टि से महत्तम अंग्रेज कलाकार के रूप मे सुरक्षित है (उदाहरणार्थ 'दि वुमन इन व्हाइट' तथा 'दि मून्स्टोन'। उसके मित्र डिकेन्स ने, जैसा हम देख चुके है, अव्यवस्थित कथानक से सुसगठित प्रकार की कथा की ओर जो परिवर्तन किया वह कम से कम कुछ अशो मे तो उसी के प्रभाव के कारण था। रिचर्ड डॉड्रिज ब्लैकमोर (१८२५-१९००) ने कम से कम एक पुस्तक तो ऐसी लिखी ही जो सर्वदा जीवित रहेगी। यह है उसका उत्साहपूर्ण एक्समूर प्रेमाख्यान 'लॉर्ना डून'। 'सर वाल्टर बेसण्ट (१८३६-१९०१) को मोटे तौर से डिकेन्स के सम्प्रदाय का ही कहा जा सकता है। इसका विशेष कारण यह है कि उसकी अनेक रचनाओं में लोकहित की प्रबल भावना तथा निष्कपट सामाजिक उद्देश्य की प्रधानता है (उदाहरणार्थ 'आल सॉर्ट्स ऐण्ड कन्डीशन्स ऑव मैन' तथा 'चिल्ड्रेन ऑव गिबियन' में); परन्तु उसने डिकेन्स से भिन्न दिशाओं में भी प्रायः बड़ी सफल रचनाएँ लिखीं, उदाहरण के लिए 'दि चैप्लेन ऑव दि फ्लीट' जो अठारहवी शताब्दी से संबधित एक श्रेष्ठ कथा है। हमारे विक्टोरियन उपन्यासकारो की लम्बी सूची के सबसे महत्त्वपूर्ण नामो में से दो अन्त मे आते है, और इन्ही के साथ हमारी समीक्षा का भी अन्त होना[1] उपयुक्त होगा (क्योकि जो लेखक अभी जीवित है उनका उल्लेख यहाँ नही किया जायगा[2])। इनमे से एक है जॉर्ज मेरिडिथ (१८२८-१९०९) और दूसरा रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन (१८५०-९४)। यद्यपि मेरिडिथ को व्यापक लोकप्रियता कभी नही प्राप्त हुई, तथापि अब यह बात स्वीकार की

१. देखो टिप्पणी १. पृष्ठ सं० २६४; यह पुस्तक सर्वप्रथम १९१२ में प्रकाशित हुई थी।—अनु०

२. इन लेखकों के लिए देखो अध्याय २५ और २६।

जा रही है कि वह अंग्रेजी के महान्तम कथाकारों में से था तथा उसकी दो रचनाओं 'दि ऑडियल ऑव रिचर्ड फेवरेल' और 'दि ईगोइस्ट' ने अभी से श्रेष्ठतम रचनाओं में अपना स्थान ग्रहण कर लिया है। स्टीवेन्सन सबसे आनन्ददायक व्यक्तियों व शैलीकारो मे से था तथा उसकी भावना और कला पूर्ण रूप से उसकी निज की थी। यथार्थवाद से रोमांस की ओर बढ़ने और पथ-प्रदर्शन करने मे उसने जैसा भाग लिया वैसा उसकी पीढ़ी के अन्य किसी व्यक्ति ने नही किया। किसी भी विदग्ध पाठक के मन मे इस विषय में कोई सन्देह हो ही नही सकता कि उसके 'ट्रेजर आइलैण्ड', 'डॉक्टर जेकिल ऐण्ड मिस्टर हाइड', 'किड्नैप्ड' और 'दि मास्टर ऑव बैलण्ट्रे' निश्चय ही अमरत्व प्राप्त करेगे। उसने और मेरिडिथ ने असाधारण एवं बहुमुखी सक्रियता के इस लम्बे युग के प्राय. अत समय तक कथा-साहित्य की सर्वोत्तम परम्पराएँ जारी रखी। इस प्रकार वे यह प्रमाणित करते है कि हमारी अंग्रेजी प्रतिभा की शक्तियों का अभी किसी प्रकार भी क्षय नही हुआ है, और इसलिए अग्रेजी साहित्य के अपने संक्षिप्त इतिहास को समाप्त करते समय हम अतीत के लिए कृतज्ञ तो है ही, साथ ही भविष्य के लिए आशावान् भी हो सकते है।

(सारणी पृ० ३१०-१२ पर)

टेनिसन-युग की सारणी

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
टेनिसन की 'पोएम्स', १८३३.	कार्लाइल की 'सार्टर रिजार्टस', १८३३. ३४.	लिटन का 'पेल्हम,' १८२७.
ब्राउनिंग की 'पॉलीन', १८३३.		
		डिकेन्स के 'स्केचेज बाइ वॉज', १८३४-३६.
	कार्लाइल की 'फेच रिवोल्यूशन', १८३७.	डिकेन्स का 'पिकविक पेपर्स', १८३७.
	लॉकहार्ट की 'लाइफ ऑव स्कॉट,' १८३६-३८.	थैकरे का 'यलोप्लश पेपर्स', १८३७.
	मेकॉले के 'एसेज', १८४३.	
	रस्किन की 'मॉडर्न पेण्टर्स', १८४३–६०.	
		डिजरेली का 'सिविल', १८४५.
		थैकरे का 'वैनिटी फ़ेयर', १८४७–४८.
		शॉर्लाट ब्रॉण्टी का 'जेन आयर', १८४७.
आर्नल्ड की 'स्ट्रेड रेवेलर', १८४८.	मेकॉले की 'हिस्टरी', १८४८–६०.	
		किंग्सले का 'आल्टन लॉक', १८५०.
आर्नल्ड की 'पोएम्स', १८५५.		ट्रॉलप का 'वार्डेन', १८५५.
श्रीमती ब्राउनिग की 'आरोरा ले', १८५६.	फ़ाउड की 'हिस्टरी', १८५६–६९.	

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
	बकिल की 'सिविलाइजेशन', १८५७–६१.	
		जॉर्ज ईलियट का 'सीन्स फ़्रॉम क्लेरिकल लाइफ', १८५८.
टेनिसन की 'इडिल्स ऑव दि किंग', १८५९–१८८६.		जार्ज ईलियट का 'ऐडम बीड', १८५९.
		मेरिडिथ का 'रिचर्ड फेवरैल', १८५९.
		थैकरे की मृत्यु, १८६३.
	आर्नल्ड के 'एसेज इन क्रिटिसिज्म', १८६५, १८८८.	
स्विनबर्न की 'पोएम्स एण्ड बैलड्स', १८६६.		
ब्रांउनिग की 'दि रिंग एण्ड दि बुक', १८६८, १८६९.		
मॉरिस की 'अर्थली पैराडाइज', १८६८–७०.		
रॉसेटी की ' 'पोएम्स', १८७०–७२.		डिकेन्स की मृत्यु, १८७०.
	पेटर की 'रेनेसान्स', १८७३.	लिटन की मृत्यु, १८७३
	सिमण्ड्स की, रेनेसान्स इन इटली', १८७५–८६.	
		जॉर्ज ईलियट की मृत्यु, १८८०.
	स्टीवेन्सन की 'वर्जिनिबस प्यूरिस्क', १८८१.	
	कार्लाइल की मृत्यु, १८८१.	

पद्य	सामान्य गद्य	उपन्यास
रॉसेटी की मृत्यु, १८८२.		ट्रॉलप की मृत्यु, १८८२.
आर्नल्ड की मृत्यु, १८८८.		
ब्राउनिंग की मृत्यु, १८८९.		
टेनिसन की मृत्यु, १८९२.	रस्किन की मृत्यु, १९००.	
		स्टीवेन्सन की मृत्यु, १८९४.

अध्याय २५

हार्डी-युग

१८८७-१९२८

११९. विक्टोरियन युग का उपसंहार––यदि १८८७ में मनायी जाने वाली विक्टोरिया की प्रथम जयन्ती (स्वर्ण-जयन्ती) को ऐसा सुविधापूर्ण सीमाचिह्न माना जाय जो टेनिसन-युग के वास्तविक अत का द्योतक है, तो विक्टोरिया के शासन-काल के शेष चौदह वर्षों को नयी शताब्दी की ओर ले जाने वाली गैलरी के रूप मे माना जा सकता है। १८९२ मे टेनिसन की मृत्यु हो जाने के बाद ऐसा कोई प्रभुत्वपूर्ण व्यक्ति नही बचा जो ब्रिटिश राष्ट्र की भावनाओं की व्याख्या कर सके या रागात्मक सूत्रो मे उसकी सामान्य वाणी को प्रदर्शित कर सके। सत्य तो यह है कि शीघ्र ही ऐसी कोई सामान्य वाणी ही नही रही जिसका प्रतिनिधित्व किया जाय, क्योकि सम्पूर्ण सृष्टि मे एक भव्य सरलता तथा उद्देश्य की एकता प्रदर्शित करने की जो इच्छा टेनिसन मे थी उसकी अपेक्षा ब्राउनिंग के मानवीय अनेकता एव विविधता के विचार की ओर नयी पीढी के लोग अधिक आकर्षित हुए। पहले लोगों को जो यह आशा थी कि अंत मे एक अनन्य सार्वजनीन सत्य की खोज होकर रहेगी उसका स्थान परस्पर प्रतिद्वन्द्वी असख्य सत्यों के विचार-विमर्श ने ले लिया जो महान् सक्षोभ का कारण हुआ। मतान्धता समाप्त हो गयी। दृष्टिकोण मे यह परिवर्तन होते ही जिन प्रकटतः दृढ नीवो ने विक्टोरियन युग के भवन को साध रखा था, वे अब गिरने लगी। इसका कारण नयी पीढ़ी के अधैर्य मे तो निहित था ही, साथ ही उतनी ही मात्रा में उन दोषो में मे भी निहित था जो उन्नीसवी शताब्दी मे प्रचलित आदर्शवाद में आ गये थे। परन्तु विक्टोरियन सफलता की आभा ऐसी है कि इसमे जो बाते केवल ऊपरी चमक-दमक का काम करती थी उनको हटा देने से वह धुंधली नही होती बल्कि बढ़ती ही है। वैज्ञानिको व आविष्कर्ताओ के प्रयत्नों के फलस्वरूप विक्टोरियन युग में विचार एवं मीमांसा की सीमाएँ अत्यन्त विस्तृत हो गयीं तथा प्रकृति के ऊपर मनुष्य का नियत्रण अत्यधिक बढ़ गया। परन्तु इस विस्तार ने (औद्योगिक प्रगति, औपनिवेशिक विस्तार

तथा भौतिक सम्पत्ति की वृद्धि के साथ सयुक्त होकर) विक्टोरियन जनता के एक बड़े और प्रभावशाली वर्ग मे आत्मप्रभुत्व तथा अपरिमेय सिद्धि की अनर्थकारी अनुभूति को जन्म दिया। १८९७ में रानी विक्टोरिया की हीरक-जयन्ती के अवसर पर शान-शौकत और वागाडम्बर का जो गर्वपूर्ण प्रदर्शन हुआ उसकी तुलना आधुनिक काल के अन्य किसी भी वैभव-प्रदर्शन से की जा सकती है। बाद में इतिहास की जो व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयीं उनमे से कुछ से तो यह प्रतीत होता है कि हीरक-जयन्ती के सम्बंध में होने वाले उत्सव आदि उस अवस्था के द्योतक थे जिस पर आकर विक्टोरियन-युग की समृद्धि और निश्चिन्तता अवनति के मार्ग पर अग्रसर होते हुए धीमी पड़ने लगी। जब युग बिलकुल अपने मध्याह्न पर था, तब वह केवल एलिजबेथ-युग से ही कुछ कम था, और किसी से नही। फिर भी विक्टोरियन महानता की समाप्ति पर आवश्यकता से अधिक शोक करना इतिहास के सबसे पहले पाठ की उपेक्षा करना होगा। महानता नियतकालिक होती है। जब उसका नियत समय आता है तो मनुष्य को अपनी शक्ति का अत्यधिक व्यय करनी पडती है और इसी कारण उसके बाद विश्राति के युगों का आना आवश्यक है जिनसे प्रतिभा में सामान्यतया कुछ कमी हो जाती है। ऐसे युगो में साहित्य एव विचारो में किसी प्रमुख प्रवृत्ति का स्पष्ट होना बहुत ही कम संभव होता है। जो छोटी प्रतिभा वाले लेखक होते है उनमे परम्परा के लाभो को समझने का विवेक नही होता और न वे उसका उचित सम्मान ही कर पाते है, या तो वे उसका अन्धानुकरण करते है या फिर उद्दण्डतापूर्वक उसके विरुद्ध विद्रोह कर देते है। उनमें स्वयं तो किसी नयी परम्परा की सृष्टि करने की सामर्थ्य होती ही नही।

टेनिसन-युग के उपरान्त ऐसे ही युग और ऐसे ही कम प्रतिभावान् लेखकों का उदय हुआ, और यद्यपि वर्त्तमान अध्याय की सुविधा की दृष्टि से १८८७ तथा १९२८ के बीच के चालीस वर्षों को हार्डी-युग की सज्ञा दी गयी है तथापि इसका आशय यह व्यंजित करना नही है कि हार्डी किसी विशिष्ट अर्थ मे इस युग का आध्यात्मिक अथवा बौद्धिक संचालक था। आयु में उससे छोटे कवि एक विशिष्ट एवं असामान्य प्रतिभावान् लेखक के रूप मे उसकी बड़ी प्रशंसा करते थे, परन्तु वह जरा भी आधुनिकतावादी नही था।

१२०. उन्नीसवीं शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी (१८९०–९९)—प्रारंभ से अंत तक विक्टोरियन युग के महान् लेखक सोद्देश्य साहित्य की रचना में ही प्रवृत्त रहे थे। उन्नीसवी शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी मे लेखकों और कलाकारों का एक नया वर्ग

यह सिद्ध करने के अभियान पर आगे बढ़ा कि "समस्त कला उद्देश्यहीन" होती है, अर्थात् वह नैतिकता के विचारो एव आचार-व्यवहार के प्रतिमानो का पालन करने से सर्वथा मुक्त होती है। ऑस्कर वाइल्ड (१८५६–१९००), जो इस वर्ग में अग्रगण्य था, वाल्टर पेटर के सिद्धातों द्वारा आकर्षित हुआ था जिसको (अर्थात् पेटर को) यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि उसकी अनिच्छा होते हुए भी उसे इस सौन्दर्य-वादी आन्दोलन का गुरु मान लिया गया था। 'दि रेनेसान्स' के अन्तिम अध्याय मे पेटर ने "उत्कृष्ट भावावेग" के क्षणो के उपभोग से उत्पन्न होने वाले एक दर्शन का आभास दिया था जो बिलकुल पूर्ण न होकर प्रयोगात्मक-सा ही था। "धर्म और सस्कृति की ही भाँति दर्शन द्वारा मानव-आत्मा की जो सेवा होती है वह इस बात मे निहित होती है कि वह उसको तीव्र एव उत्साहपूर्ण निरीक्षण की ओर उद्बुद्ध करता है। प्रतिक्षण—और केवल उसी क्षण के लिए—हाथो में या मुख पर कोई रूप सर्वांगपूर्ण हो उठता है, पहाड़ियो पर या समुद्र मे कोई ध्वनि शेष समस्त ध्वनियो की अपेक्षा उत्कृष्टतर होती है; भावावेश, अन्तर्दृष्टि अथवा बौद्धिक उत्तेजना की कोई मन स्थिति हमे दुर्निवार्य रूप से यथार्थ और आकर्षक प्रतीत होती है। यह अनुभव स्वयं ही ध्येय है, न कि इस अनुभव का फल। . . . जो सिद्धान्त, विचार अथवा दर्शन किसी ऐसे स्वार्थ के विचार से, जो हमारी समझ और पकड़ के बाहर है, अथवा किसी ऐसी अमूर्त नैतिकता के विचार से, जिससे हम तादात्म्य नही स्थापित कर पाये है, अथवा जो वस्तु केवल परम्परागत है उसके विचार से हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम इस अनुभव के किसी भी अश का बलिदान कर दे, उसका हमारे ऊपर कोई वास्तविक अधिकार नही है।" विद्वानोचित शान्ति के एकान्त में रहने वाले पेटर के लिए स्वय तो यह विचार एक मनोरजक बौद्धिक कल्पना से अधिक कुछ नही था; परन्तु जब १८९०–९९ के 'अधोगामी' ('डिकेडेण्ट') युवा कलाकारो ने इसे सजीव क्रियात्मकता का रूप दे दिया तो इसने समस्त नैतिक नियन्त्रण से मुक्त, शुद्ध ऐन्द्रिक उत्तेजना के निमित्त किये जाने वाले प्रयत्न का रूप धारण कर लिया। वाइल्ड के बारे में उड़ने वाली गन्दी अफ़वाहो के कारण नाना रूपों में आत्मप्रदर्शन करने वाले इस उत्कृष्ट लेखक को बदी बना लिया गया तथा उस पर मुकदमा चलाकर १८९५ में उसे दो साल के लिए रीडिग के कारागार मे बन्द कर दिया गया। उसके बाद से उसके विषय मे लोग कभी एकमत नही हो सके; कुछ के अनुसार वह अत्यत कामुक था, और कुछ के विचार से वह एक शहीद था। इस विवाद के कारण उसकी रचनाओं का संतुलित मूल्याकन नही हो पाया। परन्तु अब हमारे लिए यह संभव है कि हम

उस पर विवादमुक्त होकर विचार कर सके। तब हम यह भी स्वीकार करेगे कि उसका तेजोमय वाग्वैदग्ध्य, उसके सूक्ष्मदर्शी विरोधाभास तथा उसकी उल्लसित प्रगल्भता हमारे समय मे भी उतने ही प्रतिबोधक एव मनोरजक है जितने वे सर्वप्रथम प्रकाशित होने के समय थे। उसकी यत्नपूर्वक आलकारिक बनायी गयी शैली अधिकाश मे अब भी वैसी ही चित्ताकर्षक है; यदि उसका तेज घटता हुआ मालूम होता है तो यह बात उसके साहित्य के केवल कुछ अशो पर ही लागू होती है। साहित्य तथा कलाओ पर लिखी गयी सवाद-सीरीज 'इण्टेन्शन्स' के परिमार्जित एव रत्नजटित गद्य से अब भी आनद प्राप्त किया जा सकता है। इसमे साहित्य और कला के अतिरिक्त असत्य भाषाण, विष एव मुख को ढकने वाले चेहरो व नकाबो ('मास्क्स') के विषय मे भी विस्तृत प्रबध दिये गये है। ये विषय ऐसे थे जिनसे परिचित होना अधोगामी लेखक मूर्खतावश अनिवार्य समझते थे। वाइल्ड का वाग्वैदग्ध्य शाब्दिक व्यायाम का प्रदर्शन मात्र नही था; प्राय. उसके कारण कोई सत्य अथवा कोई उपयोगी साहित्यिक निर्णय एक स्मरणीय वाक्याश के रूप मे घनीभूत हो जाता था। यदि यही सत्य या निर्णय किसी सामान्य अथवा पाण्डित्यपूर्ण शैली मे व्यक्त किया जाता तो वह शब्दो की कुहेलिका मे लुप्त हो जाता। जब वह अपनी वाग्विदग्धता का हास्यात्मक प्रयोग करता था तब भी उसका प्रभाव स्थायी होता था, उदाहरणार्थ 'दि इम्पॉर्टेन्स ऑव बीइग अर्नेस्ट' मे; जो शेरिडन की सर्वोत्तम रचनाओ की कोटि का ही एक आचार-सुखात नाटक ('कामेडी ऑव मैनर्स') है। 'दि हैपी प्रिस' तथा परियो की अन्य कहानियो मे यह दोष है कि उनकी बाह्य सरलता और सादगी के नीचे कृत्रिमता और ससार के प्रति श्रान्त-क्लान्त असतुष्टि का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उसकी कविताओं में से शायद ही कुछ ऐसी हो जिनको पढकर हमें यह आभास न हो कि वे मिथ्या शोभापूर्ण परन्तु दूषित और मिट्टी-कीचड़ मे सनी हुई-सी है। वाइल्ड मे बायरन का जो अश वर्तमान था उसके कारण उसने अपने क्षत-विक्षत हृदय (अर्थात् भावनाओ) की जो प्रगाढ और आत्मीय अभिव्यक्ति की है उसमें हमे गम्भीरता एवं वास्तविकता की वह दृढ़ता नही प्रतीत होती जो क्लेश और पीड़ा को अभिव्यक्त करने वाल मृत्युलेख ('टेस्टामेण्ट') से अपेक्षित होती है। 'डी प्रोफ़ंडिस' (जिसमे वाइल्ड ने अपने कार्यों का औचित्य दिखाकर अपने बचाव मे तर्क प्रस्तुत किये है) तथा 'दि बैलड ऑव रीडिग जेल' मर्मस्पर्शी अवश्य है परन्तु इससे अधिक कुछ नही; इन दोनो में से कोई भी हमारे हृदय की गहराइयों का स्पर्श नहीं करता। ऑस्कर वाइल्ड मे जो कुछ भी रचना-कौशल है उसकी सृष्टि जान-बूझकर

तथा किस प्रकार किस प्रभाव की सृष्टि होगी इस बात का विचार करते हुए हुई है; इस कारण पूर्ण गंभीरता (अर्थात् यथार्थ भावना) एव सरलता के लिए वह सक्षम ही नही था। वह सदैव ही किसी न किसी कृत्रिम रूप का अभिनय किया करता था; यहाँ तक कि मर्मान्तिक वेदना के समय भी वह अपने सच्चे रूप का प्रदर्शन नही कर पाता था।

वाइल्ड 'अधोगामी' (ह्रासोन्मुख) कलाकारो की सर्वोत्तम व निकृष्टतम दोनों ही प्रकार की विशेषताओ का प्रतीक है तथा उसके साहित्य में दोनों के ही उदाहरण मिलते है। इस संक्षिप्त समीक्षा में इस वर्ग के अन्य लेखकों के विषय मे विस्तारपूर्वक कुछ कहना संगत न होगा, यद्यपि उनमे से कई लेखको का उल्लेख करना आवश्यक है (जिनके बीच परस्पर कुछ न कुछ सबध था, कभी घनिष्ठ कभी कम)। ऑब्रे बियर्ड्सले (१८७२-९८) और चार्ल्स कॉण्डर (१८६८–१९०९) के चित्रो के बिना तो इस दशाब्दी के विशिष्ट स्वरूप के एक महत्त्वपूर्ण अश का लोप हो जाता। आर्थर सिमन्स (१८६५–१९४५) ने अपनी प्रारभिक कविताओ मे "नागरिक जीवन की पृष्ठभूमि" का व्यवहार किया तथा सड़कों पर चलने वाली साधारण मानवता के ज्वर-जैसे आवेश से पूर्ण मनोविकारों के गान गाये। इनमें उसने आधुनिक फ्रांसीसी कविता पर आधारित एक प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है। अर्नेस्ट डाउसन (१८६७–१९००) मे भी ऐसा ही आवेश दिखाई देता है। लियोनेल जान्सन (१८६७–१९०२) एक सच्चा कवि था। वह 'अधोगामी' आन्दोलन के किनारे पर है परन्तु वह इस आन्दोलन के उच्छृखल मर्यादोल्लंघन से मुक्त है।

जॉन डेविडसन (१८५७–१९०९) ने चार लम्बी कविताओं में (जो परस्पर सम्बंधित है तथा जिनमें से अतिम है 'दि टेस्टामेण्ट ऑव जॉन डेविड्सन') अपने उद्धत व अन्तर्मुखी स्वभाव की अभिव्यक्ति की है जिसके कारण बीसवी शताब्दी के प्रारभिक वर्षो में ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे दार्शनिक महत्त्व के कवियों की श्रेणी मे स्थान प्राप्त होने वाला था। परन्तु अब इतना समय बीत जाने के उपरान्त उसके 'टेस्टामेण्ट' को देखने पर उसमे गहन विचार की अपेक्षा ज्वरावेशपूर्ण आत्मनिमग्नता अधिक प्रदर्शित होती है, यथा

"····वज्र-दुर्ग दुर्भेद्य भित्ति पर
लटका एक पुरुष सूली पर,

और नही कोई, वह मैं था।"[1]

काव्य-संग्रहो मे कुछ गीतियो को छोड़कर डेविड्सन की याद अब कम ही की जाती है।

'दि यलो बुक' (१८९४–९७) तथा 'दि सेवॉय' (१८९६) नामक दो पत्रिकाएँ १८९०-९९ की शैली मे लिखी और चित्रित की हुई कलाकृतियो (साहित्यिक रचनाओं व चित्रों) के प्रकाशन के लिए स्थापित की गयी थी। जो लोग इस काल के दोष-दुर्बलताओं को समझना या इसकी भावना का कुछ अनुमान लगाना चाहते है उन्हें इन पत्रिकाओ का अध्ययन करना चाहिए। बाद के अको मे 'दि यलो बुक' एक वर्ग-विशेष की ही पत्रिका न रह गयी वरन् इसमे रचनाएँ देने वालो मे ऐसे अनेक लेखक थे जिनको अगली दशाब्दी मे अधिक व्यापक ख्याति प्राप्त हुई।

१२१. टामस हार्डी—हार्डी की ओर उन्मुख होने से पूर्व १८९०–९९ की 'साहित्यिक वनस्पतिशाला' का कुछ निरीक्षण करना आवश्यक था, क्योकि सगठित विक्टोरियन-विरोधी आन्दोलन के प्रधान लक्षण "अधोगामी" कलाकारो की रचनाओं मे ही दिखाई देते है। परन्तु असन्तोष के कुछ पूर्वगामी स्वरो के बिना किसी भी विद्रोह का आगमन नही होता। यहाँ तक कि उन्नीसवी शताब्दी की सातवी दशाब्दी (१८६०–६९) मे ही कुछ मान्य विक्टोरियन आदर्शों को यदा-कदा चुनौती दी जाने लगी थी, तथा हार्डी की रचनाओं मे प्रारंभ से ही प्रचलित परम्पराओ से एक प्रकार की अव्यक्त असहमति विद्यमान थी—उसी प्रकार जिस प्रकार सेमुएल बट्लर के 'एर्होन' (१८७२) और विशेष कर उसके 'दि वे ऑव आल फ्लॅश' मे थी। परन्तु अगले बीस वर्ष तक इन लोगो की आवाज अकेली आवाज ही रही।

युवावस्था मे लन्दन में बिताये गये कुछ काल को छोड़कर टॉमस हार्डी ने अपना जीवन डॉर्चेस्टर के निकट बिताया, जिसके समीप ही १८४० मे उसका जन्म हुआ था और १९२८ मे मृत्यु। वास्तु-कलाविद् के रूप मे उसे जो प्रशिक्षण प्रारभ में मिला उसके कारण उसे स्थानीय गिरजाघरों का गहरा ज्ञान हो गया जिससे उसने अपनी रचनाओ में लाभ उठाया। अन्य प्रकार से भी उसका वैयक्तिक अनुभव डार्सेट तथा दक्षिण-पश्चिमी इंग्लैड की समीपस्थ काउण्टियों के निवासियों, परम्पराओं एवं स्मारकों और संस्थाओ से घनिष्ठ रूप से सम्बधित था। इस प्रदेश को उसने

1. '....on he adamantine bastion hung
A figure crucified, which was myself.'

इसके प्राचीन नाम वेसेक्स के अन्तर्गत साहित्यिक नक्शे में स्थायी स्थान प्रदान कर दिया। लेखक के रूप मे हार्डी एक सजीव विरोधाभास था। स्वाभाविक रूप से कवि होते हुए भी उसकी कविता का बड़ा अंश गद्य मे है। उसमे कवि की दृष्टि की व्यापकता, सूक्ष्मता एव तीव्रता थी; यह त्रिगणात्मक शक्ति उसके समस्त उपन्यासों मे प्रदर्शित हुई है। तथापि उसकी सैकड़ो गीतियों मे से, जो उसकी काव्य-कला की प्रतीक है, मुश्किल से बीस कर्णकटु रूक्षता और कृत्रिम अनम्यता से मुक्त है। इस विरोधाभास का कारण यह है कि हार्डी की प्रतिभा पूर्ण रूपेण मूर्तिकला-जैसी थी। कठोर गद्य के भारी प्रस्तर-खण्ड को पाकर वह एक सिद्धहस्त कलाकार की भाँति उसके ऊपर अपनी छेनी चला सकता था तथा उससे न केवल अत्यधिक प्रभावोत्पादक मानव-रूपो की सृष्टि कर सकता था वरन् सुविशाल एवं सुस्पष्ट दृश्यो को भी गढ़ सकता था जो प्रकृति के नानाविध उपकरणो से सम्पन्न है, यहाँ तक कि सूर्यास्त के समय सशोभित होने वाली पत्रहीन, नगी शाखाओ की कारचोबी भी वहाँ उपस्थित है। परन्तु प्रस्तर-खण्डो से गीतियाँ नही निकाली जा सकती; या यदि ऐसा हो भी तो किसी चमत्कार के द्वारा, जैसा हार्डी के साथ दो या तीन बार हुआ जब उसने 'टेसेज लेमेण्ट', 'वेदर्स' और 'इन टाइम ऑव दि ब्रेकिग ऑव नेशन्स' की रचना की। मानव-जीवन के दु खी पक्ष पर उसका जो जोर था उसका अनुपात एव दृष्टिकोण उसके अधिकांश उपन्यासो मे सर्वथा उचित है, जहाँ वह दृश्य (अर्थात् पृष्ठभूमि) की गुरुता व उन उपन्यासों मे आने वाले स्त्री-पुरुषो के अदम्य साहस द्वारा सन्तुलित है। उपन्यास-रचना मे हार्डी को जो प्रवीणता प्राप्त थी उसने उसका साथ दो बार से अधिक शायद ही छोड़ा हो।'टेस ऑव दि डर्बर विल्स' के अन्तिम अध्याय ने १८९१ में लोगों की धार्मिक चेतना को चोट पहुँचायी थी, आजकल वह व्यवस्था एवं कल्पनात्मक पर्याप्तता की हमारी आलोचनात्मक अनुभूति को विभजित करने के कारण हमारी कलात्मक चेतना को चोट पहुँचाता है। किसी कलाकार के लिए जितना पर्याप्त या उचित हो उससे अधिक कहना उसकी कला की असफलता है। अन्तिम अध्याय प्रारंभ करने से पूर्व ही हार्डी 'टेस' में जो कह चुका था वह पर्याप्त था। अपने वर्तमान रूप मे यह उपन्यास एक श्रेष्ठ कृति है परन्तु इसके ऊपर इसी असन्तोषप्रद अन्तिम कूचिका-लेपन का धब्बा पड़ गया है।उसके अन्तिम उपन्यास 'जूड दि ऑब्स्क्योर' को उसकी निर्दयता ने जिस प्रकार आहत किया है वह और भी गम्भीर है। सू और जूड को किसी भी समय दुष्ट नियति के लम्बे हाथों से बच निकलने का अवसर नही दिया गया है। वे पराजित और क्षत-विक्षत हो जाते है। उनमे आध्यात्मिक

पुनरुज्जीवन की शक्ति का जो अभाव है, तथा सीधे खड़े रहने और नियति का साहस-पूर्वक सामना करने की, जो कि हार्डी के अनेक चरित्र बड़े शानदार ढंग से करते है, उनकी अयोग्यता के कारण 'जूड दि ऑब्सक्योर' हार्डी का महान्तम उपन्यास नहीं बन पाया। इसकी शक्ति हमे अभिभूत कर देती है, तथापि यह शक्ति ऐसी गलत दिशा में प्रयुक्त हुई है तथा ऐसी बिखरी हुई है कि महान् संभावनाओं से युक्त दुखांत उपन्यास अन्धकाराच्छन्न उन्माद के रूप मे विकृत हो गया है।

यह बात सभवतः दुर्भाग्यपूर्ण थी कि हार्डी के प्रथम उपन्यास की (जो कभी प्रकाशित नही हुआ) हस्तलिपि मेरिडिथ के हाथो मे पडी, जो उस समय प्रकाशकों के यहाँ पाठक ('रीडर')[1] का काम करता था। मेरिडिथ ने युवा लेखक को सलाह दी कि वह कथानक की ओर अधिक ध्यान दे। जान पड़ता है हार्डी ने इस सलाह को आवश्यकता से अधिक मान लिया। इसके उपरान्त उसने अपने उपन्यासों का निर्माण जिस विधि से किया उसके कारण अनेक बार सम्भाव्यता का विचार बिलकुल नही हुआ तथा दैवयोग पर अत्यधिक विश्वास किया गया है। उपन्यास-कला के अन्य विभागो में हार्डी की योग्यता जैसी असामान्य थी उससे यदि कम होती तो इस स्पष्टतः यान्त्रिक युक्ति के कारण उसके उपन्यास निम्न कोटि की क्षुद्र, वैतनिक रचनाओ की श्रेणी मे रखे जाते। उसके पात्रो मे से अनेक की सृष्टि, प्रधान और गौण दोनो की, शेक्सपियर अथवा डिकेन्स-जैसी पूर्णता, ओज एवं विश्वास के साथ हुई है। इसके अतिरिक्त स्थान की विशालता का आभास देने की जो सामर्थ्य उसमे है वह तो अद्वितीय है। चाहे वह 'दि रिटर्न ऑव दि नेटिव' मे एग्डन हीथ की कठोर विस्तीर्णता हो, या 'टेस' मे ब्लैकमूर घाटी की सुस्वादु परिपक्वता या 'दि वुडलैण्डर्स' का वृक्षाच्छादित एकान्त, हार्डी के स्थान भी उतने ही स्मरणीय है जितने उसके पात्र। एग्डन मे तो स्त्री और पुरुष बौनो के समान है—झाड़-झखाड़ से पूर्ण ऊसर स्वय ही वह देव है जो उन लोगो के जीवन का रूप निर्धारित करता है जो वहाँ रहते है और स्वय उसके जीवन के अग है। दुखात के प्रयोग में हार्डी की तुलना विश्व-साहित्य की महान् विभूतियो से की जा सकती

१. जो लोग पुस्तकें पढ़कर उन पर सम्मति देने के लिए रखे जाते हैं कि वे छपने योग्य हैं या नहीं और यदि उनमें कोई दोष हैं तो लेखक उनका परिहार किस प्रकार करे, उनको 'रीडर' या 'पाठक' कहते हैं।—अनु०

है, तथा वह उनके स्थान पर नहीं पहुँच पाया इसका कारण यही है कि वह अपने दुखी पात्रों को उन सीमाओं के भी आगे ले जाता है जहाँ कला और प्रकृति दोनों ही प्रायः सन्तुष्ट होकर रुक जाती है। परन्तु करुण रस के प्रयोग में उसको कोई पछाड़ नही सका है। अपने शयनकक्ष मे मोमबत्ती की रोशनी में टेस द्वारा अपने बच्चे का नामकरण करने का जो वर्णन किया गया है, क्या उससे बढकर सुन्दर सुकुमार भावना या दुःख का उत्कृष्टतर वर्णन साहित्य में कहीं भी मिल सकता है? इसके अन्य उदाहरणों में से है 'दि वुडलैण्डर्स' के अन्त में गाइल्स के लिए मार्टी साउथ का विलाप, तथा 'फार फ्राम दि मैडिंग क्राउड' में गैब्रियल ओक के कुत्ते का दु.खद अत, जिसके सदुद्देश्यपूर्ण उत्साह के कारण ओक की भेड़ो का विनाश हो जाता है।

आदि से अन्त तक हार्डी के उपन्यास व उसकी कविताएँ ऐसे व्यक्ति की रचनाएँ है जो अपने युग से अत्यधिक असंतुष्ट था। वह अतीत से अपना सम्बन्ध पुनः जोडना चाहता था तथा उसमे उसके प्रति एक प्रकार की टीस-सी थी—अर्थात् इग्लैण्ड का वह अतीत जब अग्रेजी पुरुषत्व व नारीत्व की मज़बूत जड़ों पर छोटी-छोटी बातो पर आवश्यकता से अधिक जोर देने वाली उस विचित्र एव सूक्ष्म रुचि की धूल नही जमा हुई थी, जिसको हार्डी के मतानुसार शिक्षा और सस्कृति की संज्ञा दी जाती है। वह आधुनिक सभ्यता को अविश्वास की दृष्टि से देखता था क्योकि उसे सन्देह था कि बहुधा इस सभ्यता का परिणाम यह होता है कि जिन लोगो को प्रकृति और प्राचीन परम्परा ने सशक्त हृदय, निर्मल बुद्धि तथा सहनशील भावना से सम्पन्न किया था उन्हें वह असभ्य और निर्बल बनाती है। उसकी रचनाओ मे प्राचीन और नवीन में सदैव संघर्ष चलता रहता है, तथा उनमें ऐसा एक भी व्यक्ति सुखी नही दिखाई देता जिस पर स्कूलो द्वारा उत्पन्न और पुष्ट किये जाने वाले परिष्कार का विघटनकारी प्रभाव पड़ चुका है। यद्यपि कुछ अंशों में हार्डी की विचारधारा का स्वरूप उत्तरकालीन जर्मन दार्शनिको के सिद्धांतों द्वारा निर्धारित हुआ था, तथापि वह उस सरल मूर्ति-पूजन के प्रति भी कृतज्ञता का भाव रखता था जो वेसेक्स मे ईसाइयत के बाहरी ढाँचे के नीचे अब भी जारी था। वेसेक्स अब भी प्राचीन इंग्लैण्ड ही था। उसके जंगल, उसके ऊसर, उसकी हस्तचालित गाड़ियाँ, उसके धान्यकोष्ठ तथा उसकी गोशालाएँ सभी एक श्रेष्ठ प्राचीनता के स्मारक थे जो आगे बढ़-बढ़कर आक्रमण करती हुई आधुनिकता का मूक विरोध कर रहे थे। हार्डी के लिए वेसेक्स का जो महत्त्व है उसका कुछ आभास 'दि रिटर्न

ऑव दि नेटिव' के प्रारंभ में होता है। यह अध्याय अंग्रेजी गद्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से है।

'टेस' और 'जूड दि ऑब्सक्योर' के कारण जो विद्वेष उत्पन्न हुआ उससे रुष्ट होकर हार्डी ने १८९६ मे उपन्यास लिखना छोड दिया तथा लगभग साठ वर्ष की अवस्था मे पुनः पद्य-रचना प्रारभ की जिसका क्रम तीस वर्ष पहले टूट चुका था। 'वेसेक्स पोएम्स' (१८९८) मे कुछ ऐसी भी कविताएँ थी जिनकी रचना १८७० के पूर्व हुई थी तथा इनमें से 'हैप' नामक कविता में विश्व की व्यवस्था के सबंध मे हार्डी का अपरिवर्तित विचार सार रूप मे घनीभूत है। इस विचार की चरम अभिव्यक्ति, जो उसकी रचनाओ मे बारबार व्यक्त हुआ है, 'दि डाइनस्ट्स' मे हुई जो नैपोलियन के युद्धो पर आधारित एक महाकाव्य-नाटक है। हार्डी का मत था कि मनुष्य के भाग्य के पीछे कोई सक्रिय चेतना, कोई न्यायी व स्नेहशील ईश्वर नही है, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि एक अचेतन यान्त्रिक शक्ति द्वारा शासित है जो दृष्टिरहित, मूक एव मस्तिष्करहित है तथा जो मानवता के सुखो व कष्टो दोनो के प्रति उदासीन है। 'दि डाइनस्ट्स' के अतिम पृष्ठ से पूर्व परिस्थिति के कुछ क्रूर पजे से मुक्ति पाने की कोई सम्भावित आशा व्यक्त नही की गयी है; और अतिम पृष्ठ मे भी केवल एक अस्पष्ट आभास-सा दिया गया है कि किसी अकल्पनीय भावी क्षण मे सभव है कि अन्धी और विवेकरहित "अतरस्थ इच्छा" मे चेतना उद्दीप्त होने लगे तथा उसे इस बात के लिए प्रेरित करे कि वह "समस्त वस्तुओं को उचित और न्यायपूर्ण ढंग से आयोजित करे।"

'दि डाइनस्ट्स' (जो १९०८ मे पूरा हुआ) हार्डी की सबसे विशाल कृति तथा अग्रेजी साहित्य की महान्तम रचनाओ मे से है। इस विशाल महाकाव्य-नाटक के लिए दो परम्परागत रूपो का व्यवहार करके उन्हे सयुक्त कर दिया गया है, तथा उनके सयोग द्वारा हार्डी ने एक नये और मौलिक रूप को जन्म दिया। आधुनिक प्रतिभा के लिए महाकाव्य एक अनुपयुक्त या अननुकूल-सी वस्तु है तथा जो अश किसी परम्परागत महाकाव्य मे कथात्मक पद्य के विस्तृत स्थल-जैसे प्रतीत होते उनको यहाँ पात्रो द्वारा बोले हुए सवादों से पूर्ण दृश्यो के बीच के स्थलों को भरने के हेतु सुस्पष्ट रगमच-निर्देशों ('स्टेज-डायरेक्शन्स') के रूप मे संक्षिप्त कर दिया गया है। साहित्यिक सामग्री का सग्रथन और नियत्रण करने की हार्डी मे जो प्रतिभा थी, 'दि डायनास्ट्स' उसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है। सैकडो पात्रो, पंद्रह वर्ष की समयावधि तथा लगभग सम्पूर्ण यूरोप को अपने मे समेटने वाली

व्यापक पृष्ठभूमि के चित्रण मे सन्तुलन, व्यवस्था, अनुपात एवं उपयुक्त दृष्टिकोण बनाये रखना सचमुच आश्चर्य की बात थी। इसमे समस्त ऐतिहासिक व्यक्तियों को तो स्थान दिया ही गया है, साथ ही वे साधारण जन भी रगमच पर आते हैं जिन्होने ही राजाओं के सघर्ष से उत्पन्न अधिकांश कष्टो को वहन किया। समस्त दु खी जीवो के प्रति हार्डी मे अत्यन्त गहरी समवेदना थी। दूसरो के कष्ट से उसे स्वयं बडी पीडा होती थी तथा वह अपने मे कभी भी कुछ-कुछ क्षमायाचनापूर्ण असंवेदनशीलता की वह रक्षात्मक भावना नही उत्पन्न कर सका जिसके द्वारा अधिकाश लोग ससार के पीड़ा-कष्ट मे स्वय भाग लेने और पीड़ित होने से अपने को बचा लेते है।

१२२. संक्रमण-काल (१८९२–१९१३) के कवि––टेनिसन की मृत्यु के चार वर्ष उपरान्त राजकवि के स्थान पर अल्फ्रेड आस्टिन (१८३५-१९१३) की नियुक्ति हुई। वह पत्रिकाओ मे राजनीतिक लेख लिखता था और एक दार्शनिक कवि बनने की आकाक्षा रखता था यद्यपि उसमे पद्य मे भावनात्मक बकवास लिखने के अतिरिक्त और कोई योग्यता न थी। परन्तु १८९२ और १९१३ के बीच देश मे वास्तविक कवि भी थे यद्यपि १९१३ से पहले नयी कविता को बहुसख्यक लोगो ने फिर से पढना नही प्रारम्भ किया। अतएव इन वीस वर्षो को सक्रमण-काल के तौर पर माना जा सकता है।

सर्वप्रथम वे कवि थे जिन्होने देशभक्ति और साम्राज्यवाद को अपना मुख्य विषय बनाया। विलियम अर्नेस्ट हेनली (१८४९-१९०३) कवि की अपेक्षा सम्पादक और आलोचक के रूप मे अधिक प्रतिभावान् था; उसके निर्देशन में 'स्कॉट्स ऑब्जर्वर' तथा 'नेशनल ऑब्जर्वर' नामक पत्रिकाओ ने बहुसंख्यक युवा लेखको की प्रतिभा को बढावा दिया। हेनली ने देशभक्ति के आदर्श की उसके अपरिष्कृत रूप मे जो सेवाएँ पद्य के माध्यम से की वे मुख्यतः उसके द्वारा सगहीत 'लायरा हीरोइका' तथा उसकी अपनी कविता-पुस्तक 'फार इग्लैण्ड्स सेक' में उपलब्ध है। 'ए लेट लार्क ट्विटर्स फ्रॉम दि क्वाएट स्काइज' शीर्षक मुक्तछद में लिखे हुए पद्याशो मे वह अपने सर्वोत्तम रूप मे दिखाई देता है, यद्यपि उसकी अधिक प्रशसा 'इन्विक्टस' के कारण हुई है जिसमे बडी गरज-तरज के साथ स्वर्ग के प्रति आक्रोश प्रकट किया गया है जिससे अपरिपक्व विधर्मिता के असस्कृत भावो की सतुष्टि होती है। टेनिसन के उपरात राजकवि के स्थान पर यदि सर विलियम वाट्सन (१८५८-१९३५) की नियुक्ति हुई होती तो राजकवि के कर्तव्य के विषय

में साधारणत: लोगों की जो कल्पना होती है उसको उसने बड़े गौरवपूर्वक निभाया होता। उसमे अच्छाई कुछ इतनी अधिक मात्रा मे है कि उसको साधारण कोटि के कवियों की श्रेणी में नही रखा जा सकता, साथ ही वह न तो इतना अच्छा ही है कि उसकी गणना महान् कवियों मे की जाय। उसकी सर्वोत्तम कविता में अतीत के भव्य स्वर सुनने को मिलते है—उदाहरणार्थ 'वर्ड्सवर्थ्स ग्रेव' तथा टेनिसन की मृत्यु पर लिखे हुए 'लैक्रिमी मुसैरम' शीर्षक शोक-गीतो में—परन्तु उनमें विशिष्ट वैयक्तिक प्रतिभा के तेज का अभाव है। फिर भी उसकी देशभक्तिपूर्ण गीतियाँ तथा उत्सवों-सस्कारो व अन्य विशेष अवसरों पर लिखी हुई कविताएँ दोनो ही वर्णन-व्यवस्था तथा अनुपात-गुणो की सूचक है। इसके अपवाद केवल वही स्थल हैं (जैसे 'दि पर्पुल ईस्ट' मे) जहाँ रोष के कारण वह शाब्दिक उन्माद का शिकार बन गया है। रडयार्ड किप्लिग के पद्य के विषय में अब भी कोई मत निश्चित रूप से स्थापित नही हो सका है (उसके गद्य का विचार § १२८ में किया गया है)। टी० एस० ईलियट समेत अनेक विदग्ध आलोचक इस बात से सहमत है कि वह एक प्रभावशाली लेखक है; दूसरे आलोचक, जो कम विदग्ध नहीं है, उसके गद्य की प्रशसा तो निर्बाध रूप से करते है, परन्तु वे जिसको किप्लिग की मुर्गे-जैसी उद्धत प्रकृति तथा ढोल और भेरी के निनाद-जैसी गीतिकाएँ कहते है उससे बडे कुपित होते है। उसकी सैनिक-कथाओ और कविताओ मे हमें ब्रिटिश सैनिक के उसी विनम्र किन्तु वीरतापूर्ण रूप के दर्शन होते है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र के एक बड़े भाग का अनुराग था। किप्लिग की अपनी विशिष्ट भाषा-शैली मे लिखी हुई कविताओं के विषय मे तो चाहे जो विचार किया जाय, परन्तु जो अन्य कविताएँ इग्लैण्ड तथा उसके विविध-मार्गों-उपमार्गो के प्रति उसके अक्षुब्ध अनुराग को व्यक्त करती है वे नियंत्रण, मौलिक कल्पना-सृष्टि तथा विविध सगीत से पूर्ण है जो श्रेष्ठ कविता के स्पष्ट चिह्न है। यद्यपि इन गुणो मे अल्फ्रेड न्वाएज (जन्म, १८८०) कम समृद्ध है, तथापि उसके काव्य मे जो सगीतात्मकता तथा चित्रमयता है उससे तुरन्त आनन्द की प्राप्ति होती है। जो आलोचक कवि के रूप में उसके उच्च स्थान से असहमत है वे इस विश्वास से प्रभावित है कि सगीत, कल्पना-सृष्टि एवं विचारधारा मे न्वाएज वह स्थायी सन्तोष प्रदान करने में असफल रहता है जिसे प्रदान करना कविता का प्रधान कर्तव्य है।

इस सक्रमण-काल के तीन कवि औरो से बिलकुल भिन्न है। ये है फ्रांसिस टॉम्प्सन, ए० ई० हाउस्मन तथा रॉबर्ट ब्रिज़ेज। फ्रांसिस टॉम्प्सन (१८५९-१९०७)

का जीवन अस्थिर इच्छाशक्ति, नशीली दवाओ, निर्धनता, बौद्धिक श्रेष्ठता एवं कल्पनात्मक वैभव का मिश्रित सुखात्मक दुखान्त था। अपने को दैनिक जीवन की सरलतम व्यावहारिक बातों के अनुकूल बनाने मे पूर्णतया असमर्थ होने के कारण एक सुसस्कृत पारिवारिक जीवन से धीरे-धीरे लन्दन की गन्दी बस्तियो में उसे दियासलाई बेचने की नौबत आ गयी। इस स्थिति से उसका उद्धार विल्फ्रिड और एलिस मीनेल ने किया (एलिस स्वय भी एक अद्वितीय गुण-सपन्न कवयित्री और निबंध-लेखिका है जो मितभाषिणी होते हुए भी गहन विचारपूर्ण है)। उन्होने उसके लिए अपने घर के द्वार उन्मुक्त कर दिये जिससे वह उनके पारिवारिक जीवन में अभिन्नता और निजत्व का अनुभव करके स्थिरता प्राप्त कर सके। मादक वस्तुओं के प्रयोग से अस्थायी रूप से छुटकारा पाकर टॉम्प्सन ने १८९३ और १८९६ के बीच अपने तीन काव्य-सग्रह प्रकाशित किये, जिनमें 'दि हाउण्ड ऑव हेवेन', 'ओड टु दि सेटिग सन' तथा 'पोएम्स ऑन चिल्ड्रेन' नामक कुछ कविताएँ भी शामिल है, जिन्होने उसको अग्रेजी कवियो मे एक उच्च स्थान दिया है। 'दि हाउण्ड ऑव हेवेन' अपने आध्यात्मिक तात्पर्य तथा अत्यन्त समृद्ध शैली दोनो ही दृष्टियों से अद्वितीय है। ईश्वर के दुर्दमनीय तथा प्राणियों का सदैव साथ देने वाले प्रेम की यह देदीप्यमान अभिव्यक्ति एक ऐसे व्यक्ति द्वारा हुई है जिसने स्वय आध्यात्मिक कष्ट सहा था और ईश्वरीय दया का अनुभव किया था। काव्यात्मक कल्पना की घरिया मे व्यक्तिगत अनुभवो को ऐसा गलाया गया है कि वह तेजी से बहती हुई हवा मे स्पष्ट दिखाई देने वाली लपट के समान हो गया। अपनी मध्ययुगीनता के कारण टॉम्प्सन ने शब्दो का ऐसे ढग से प्रयोग किया है मानो किसी गम्भीर समारोह के अवसर पर कोई खूब चमक-दमक वाले कपड़े पहने हुए हो। इस दिशा में कविता को उसने जितना आगे बढ़ाया उससे आगे वह नही जा सकती थी। दूसरी मन स्थितियो मे उसकी शैली सुकुमार और सरल भी हो सकती थी (जैसे बच्चों पर लिखी हुई कुछ कविताओ में) और साथ ही उस भावनात्मक तीव्रता मे भी कमी नही होने पाती जो उसके साहित्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती है।

ए० ई० हाउस्मन (१८५९-१९३६) ने केवल दो कविता-पुस्तकें प्रकाशित करवायी जिनके नाम है 'ए शॉपशायर लैड' और 'लास्ट पोएम्स'। अपनी रचना-शैली की उत्कृष्टता, अलकारो तथा उद्बोधन के बिना ही सौन्दर्य की सिद्धि तथा अपने दार्शनिक निराशावाद के वज्र-सदृश धैर्य व साहस के कारण वह युवक कवियों द्वारा बहुत प्रशंसित हुआ जो उसका अनुसरण तो नही कर सकते थे परन्तु उसकी

प्रशसा तो कर ही सकते थे। वास्तव में तो, क्या प्राविधिक दृष्टि से और क्या दार्शनिक दृष्टि से, हाउस्मन का अनुसरण बहुत कम लोग कर पायेगे (और इससे भी कम लोगो की ऐसा करने की इच्छा होगी)। उसकी कला उसके इस कठिनतम साहित्यिक अभ्यास मे निहित थी कि स्वछन्दतापूर्वक काट-छाँट तो हो जाय किन्तु कविता निरावरण भी न हो। उसका दर्शन आशा एव आत्म-करुणा के पूर्ण परित्याग को प्रोत्साहित करता तथा उसके स्थान पर केवल सहनशीलता पर बल देता था। उसकी कविताओं के माध्यम से देखे जाने पर हाउस्मन का आशाहीन ससार अद्भुत रूप से साफ-सुथरा और शक्तिवर्धक स्थान लगता है, तथा उसे वह प्रथम महत्त्वपूर्ण अग्रेजी कवि होने का गौरव प्राप्त है जो धार्मिक विश्वास का परित्याग करके भी न तो अपने लिए दु खी है और न उसको अपने ऊपर अभिमान ही है।

लगभग चालीस वर्ष की अवस्था तक रॉबर्ट ब्रिजेज (१८४४-१९३०) शल्य-चिकित्सक (सर्जन) का कार्य करता रहा। फिर उसने अवकाश ग्रहण कर लिया तथा एकान्त मे रहकर अपने काव्यानुराग और ज्ञान की वृद्धि करने लगा। १८८५ और १९०५ के बीच उसने पद्य-नाटको एव छद्मवेष-नृत्य नाटिकाओ की एक सीरीज लिखी (जो थियेटरो द्वारा पूर्णत उपेक्षित रही) तथा धीरे-धीरे वह दिन प्रति दिन व्यापक होते हुए जनसमुदाय मे अनेक सुन्दर गीतियो तथा वैसी ही सुन्दर कई एक लम्बी कविताओ के द्वारा (जिनमे 'दि ग्रोथ ऑव लव' और 'इरॉस ऐण्ड साइके' भी शामिल है) विख्यात हो गया। परन्तु १९१३ तक भी, जब वह राजकवि नियुक्त किया गया, ब्रिजेज की रचनाओ को केवल थोड़े-से ही पाठक जानते थे। जीवन के अन्तिम महीनों में ही जाकर कही उसे व्यापक रूप से यह सम्मान प्राप्त हो सका कि उसकी भी गणना उन थोड़े-से प्रमुख कवियों की श्रेणी मे की गयी जिनकी नियुक्ति राजकवि के रूप मे हुई थी। १९२९ के अन्त मे प्रकाशित 'दि टेस्टामेण्ट ऑव ब्यूटी' नामक लम्बी दार्शनिक कविता का स्वागत व्यापक प्रशंसा के साथ हुआ, यद्यपि यह पहले लिखी हुई उपेक्षित कविताओ की तुलना मे कही अधिक कठिन थी। जिस कविता मे कवि के मस्तिष्क एव हृदय की असाधारण जागरूकता एव सक्रियता से युक्त जीवन भर के परिपक्व ज्ञान की अभिव्यक्ति हुई है उसकी सक्षिप्त व्याख्या देने का न तो यह स्थान उपयुक्त है और न समय ही उपयुक्त है। यद्यपि 'दि टेस्टामेण्ट ऑव ब्यूटी' में कठिनाइयाँ है, तथापि इसमें सुस्पष्ट और सरल सौदर्य से पूर्ण स्थल भी है जो उन

काव्य-प्रेमियों के लिए बड़े आकर्षक है जो दार्शनिक प्रवृत्ति के नही है। प्रारम्भ में एक किवदन्ती यह उठ खडी हुई कि ब्रिजेज का काव्य भावना-रहित है और उसकी गीतियाँ भी इसका अपवाद नही है। अवश्य ही उसमे किसी अनियत्रित भावना की धड़कन तो नही है, परन्तु वह भावनाशून्य भी नही है। अग्रेजी प्रेम-काव्य की समृद्धि मे ब्रिजेज का भी अशदान रहा। उसने ऐसे काव्य-रूपो मे गहरी भावना की अभिव्यक्ति की है जो लगभग सर्वांग सुन्दर है। वह सदैव नये-नये प्रयोग करता रहा, विशेष कर क्लासिकल छन्दो को अग्रेजी के स्वदेशी छन्दों का रूप देने की दिशा मे। इनमे से अधिकाश प्रयोग असफल रहे, यद्यपि जो 'शिथिल अलेक्जैण्ड्राइन' पक्तियाँ उसने आविष्कृत करके 'दि टेस्टामेण्ट ऑव ब्यूटी' मे प्रयुक्त की, वे तर्क और मनन के लिए सुन्दर माध्यम का कार्य करती है। यदि ब्रिजेज के काव्य मे उसकी पीढी के लिए कोई स्पष्ट सन्देश होता तो निस्सदेह वह अधिक लोकप्रिय हुआ होता। उसकी अतिम कविता से स्पष्ट है कि ऐसा सन्देश उसके पास था अवश्य, परन्तु उसकी अभिव्यक्ति मे बड़ा विलम्ब हुआ, और जब उसकी अभिव्यक्ति हुई भी तो उन लोगो के लिए इसका कोई सक्षिप्त रूपान्तर नही प्रस्तुत किया जा सका जो इसके लिए पहले से तैयार नही थे।

१२३. कविता का 'पुनरुत्थान'––१९१३ मे जब ब्रिजेज की नियुक्ति राज-कवि के रूप मे हुई, उसी समय कई युवक कवियो ने तत्कालीन कविता को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयास भी आरम्भ किया। १९१३ मे ही नयी कविता का एक सग्रह 'जॉर्जियन पोएट्री' के नाम से प्रकाशित किया गया जो अधिकाश मे रूपर्ट ब्रुक (१८८७-१९१५) के प्रयासों का परिणाम था, यद्यपि इसका सम्पादन सर एडवर्ड मार्श ने किया। यह पुस्तक अत्यधिक सफल हुई तथा इसने काव्य मे एक प्रकार की तेजी ला दी जो प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ने के समय तक बढ ही रही थी और जिसको युद्ध ने और भी प्रबल बना दिया। उस समय असाधारण बोझीली परिस्थितियों मे लोगो को काव्य मे अपनी असाधारण आग्रहपूर्ण भावनाओं और विचारो की अभिव्यक्ति का उद्‌गम-द्वार मिल गया। युद्ध-काव्य (वार पोएट्री) की एक बाढ-सी आरंभ हो गयी जो शान्ति स्थापित न होने तक चलती रही। जिस समय यह काव्य लिखा और पहले-पहल पढ़ा जा रहा था उस समय इसका अधिकाश काफी रोचक और उत्साहवर्धक प्रतीत होता था, परन्तु समय की फटकन और पछोरन के उपरान्त उसका बहुत थोडा भाग ही शेष रह गया है। रूपर्ट ब्रुक स्वयं एक सच्चा कवि था यद्यपि वह महान् कवि नही था। और यह कहना युक्ति-

संगत है कि यदि युद्ध के कारण स्काईरोज द्वीप मे उसका असामयिक निधन न हुआ होता, तो भी उसका विकास महान् कवि के रूप में न होता। उसकी संगृहीत कविताओं में कुछ महत्त्वपूर्ण तथा स्मरणीय है, जैसे '१९१४' सीरीज वाली चतुर्दशपदियाँ (सॉनेट्स), 'दि ग्रेट लवर', 'दि ओल्ड विकारेज' तथा 'ग्रैन्चेस्टर'; परन्तु उसकी व्यक्तिगत मोहकता के आकर्षण, उसके उत्साहपूर्ण यौवन के मार्मिक बलिदान तथा उसकी शारीरिक सुन्दरता ने उसकी काव्यात्मक ख्याति को बहुत अधिक बढा दिया। युद्ध से संबधित विषयो पर कविता करने वाले कवियों के विशाल समूह में से जूलियन ग्रेनफेल और सीगफ़िड सैसून को हम छाँट सकते है। ग्रेनफेल ने ('इण्टू बैटिल' मे) उत्साहपूर्ण आशावाद की सबसे निष्कपट अभिव्यक्ति की है; सैसून ने ('काउण्टर अटैक' अर्थात् 'प्रत्याक्रमण' मे) मशीनगन के विरुद्ध फाउण्टेन पेन का वह युद्ध प्रारंभ किया जो पहले बिलग-बिलग, असम्बद्ध रूप से, परन्तु बाद मे (उपन्यासो, नाटकों और कविताओं के माध्यम से) सामूहिक रूप से युद्ध समाप्त हो जाने के वर्षों बाद तक चलता रहा।

जॉजियन कवियों की सूची मात्र न देनी हो तो उसका एक मात्र विकल्प यह है कि केवल उन कवियो मे से कुछ का नामोल्लेख कर दिया जाय जो सामान्य स्तर से ऊँचाई पर थे। रैल्फ हॉजसन की 'दि बुल', 'दि साँग ऑव ऑनर', 'ईव' और 'दि जिप्सी गर्ल' नामक कविताएँ सामर्थ्य, कल्पना-शक्ति, मार्मिक सगीत तथा उच्च कोटि की एकाग्रता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। राजकवि के रूप मे ब्रिजेज़ के उत्तराधिकारी जॉन मेसफील्ड (जन्म, १८७४) ने सामुद्रिक गीतो और गाथाओ से प्रारभ करके आगे चलकर ऐसी कथात्मक कविताओ की रचना की जिनमे एक प्रकार के अपरिमार्जित ओज से पूर्ण भाषा मे धार्मिक उत्साह तथा सौन्दर्य के स्वरूप से सम्बन्धित एक अपर्याप्त रूप से कठोर विचार की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। यद्यपि मेसफील्ड की सर्वोत्तम रचनाएँ प्रभावोत्पादक है, तथापि सामान्य रूप से वह कोई अधिक सावधान कलाकार नही है। 'डॉबर' के कुछ अश तथा 'रेनर्ड दि फॉक्स' के अधिक अश निस्सन्देह अच्छे बन पड़े है। इनमें से दूसरी कविता मे छन्द की गति को घोड़े की टापों की गति तथा लोमड़ी की बढती हुई थकावट के अनुकूल बनाने मे उसने बड़ी प्रशंसनीय दक्षता का परिचय दिया है, परन्तु इसकी तुलना 'दि एवरलास्टिग मर्सी', 'दि विडो इन दि बाई स्ट्रीट' और 'दि डैफोडिल फील्ड्स' से करने पर इन कविताओं की जल्दबाजी और असावधानी से पूर्ण रचनाविधि अधिक स्पष्ट हो जाती है। मेसफील्ड की

सबसे सन्तोषजनक कविताओ के नाम इस प्रकार है—'साल्टवाटर बैलड्स' (जिसमें अंग्रेजी के सामुद्रिक काव्य को समृद्ध बनानेवाली कई उल्लेखनीय रचनाएँ शामिल हैं), 'लॉलिग्डन डाउन्स' सीरीज की कुछ सॉनेटें, 'रेनर्ड दि फॉक्स', 'बायग्राफी' और 'आगस्ट, १९१४', जिसमें इंग्लैण्ड के गाँवों पर छाये हुए शान्त सौन्दर्य की मार्मिक अनुभूति बाद में महायुद्ध के कारण उत्पन्न होनेवाली दु.खद स्थिति की पूर्वपीठिका जैसा काम करती है।

१२४. संक्रमण-काल के नाटककार—उन्नीसवी शताब्दी की सातवी दशाब्दी में टी० डब्लू० रॉबर्टसन ने रंगमंच पर स्वाभाविकता लाने की दिशा मे जो कार्य किया था उसने सर ए० डब्लू० पिनेरो (१८५५-१९३४) और हेनरी आर्थर जोन्स (१८५१-१९२८) के लिए मार्ग तैयार कर दिया, जिन्होने नवी और अन्तिम दशाब्दी मे 'समस्या नाटक' ('प्रॉब्लेम प्ले') को लोकप्रिय बनाया, यद्यपि उनकी 'समस्याएँ' प्राय तलाक-न्यायालय और लेखक की रंगमचीय कल्पना की ही सन्तति रही है। वैसे, ये दोनो नाटककार नाट्य-रचना मे असाधारण रूप से सिद्धहस्त थे, तथा उन्होने अपनी सामग्री के निर्वाह मे जो दक्षता प्रदर्शित की, यदि उनकी सामग्री भी उसी कोटि की होती तो अग्रेजी रगमच एक शताब्दी पूर्व खोयी हुई अपनी प्रतिष्ठा को पहले ही पुनः प्राप्त कर लेता। पिनेरो की तुलना मे हेनरी आर्थर जोन्स कम लोकप्रिय था, परन्तु कभी-कभी उसमें श्रेष्ठतर नाट्य-कला के दर्शन होते है। जब उसकी परिस्थितियाँ पूर्ण रूप से रगमचीय लोक की होती थी, उस समय भी वह उनका ऐसा चित्रण करता था कि वे क्षण भर को उत्तेजनाप्रद और विश्वसनीय प्रतीत होने लगती थी। 'मिसेज डेन्स डिफेन्स' मे सर डेनियल कार्टरेट द्वारा फेलीशिया हाइण्डमार्श का परीक्षण हो सकता है कि पूर्णरूपेण अस्वाभाविक हो, फिर भी इस दृश्य के निर्वाह मे प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ है। प्रत्येक वाक्य अनिश्चय और सन्देह के वातावरण मे वृद्धि करता है तथा कथानक को उसकी अस्वाभाविक किन्तु लोमहर्षक चरम सीमा की ओर ले जाता है।

१२५. जॉर्ज बर्नर्ड शॉ—'सुसगठित' नाटको की रचना करने वाले इन 'निपुण' नाटककारो ने अग्रेजी नाट्य को कोई स्थायी योगदान नही दिया, क्योकि उन्होने रगमंच पर जीवन लाने की चेष्टा नही की। बर्नर्ड शॉ (१८५६-१९५०) ने बड़े अनौपचारिक ढंग से रगमंच पर बलपूर्वक जीवन लाकर नाट्य-साहित्य में क्रांति कर दी। वह इस बात से जरा भी विचलित नही हुआ कि जब उसने पहले-पहल रंगमंच पर जीवन को एक ढेर के सदृश ला पटका तो उसे यह बिलकुल

ज्ञात नही था कि वह उसके साथ और क्या व्यवहार करे। तथापि यदि उसके प्रारभिक नाटक अपरिपक्व मानवता की राशि के सदृश प्रतीत होते है तो यह राशि कम से कम सजीव तो है ही, न कि रगमचीय रूढि द्वारा ककालवत् निर्जीव बनायी हुई। १८७६ मे शॉ प्रायः परम्परात्मक निर्धनावस्था में डबलिन से लन्दन आया तथा स्थानीय राजनीति और पत्रकारता के माध्यम से उसने जनता का ध्यान बलपूर्वक आकर्षित कर लिया। फिर उसने नाट्य-क्षेत्र मे अपने लिए स्थान बनाना आरभ किया। इसका कारण यह नही था कि उसको रगमच मे कोई विशेष रुचि थी, वल्कि यह था कि उसमे सामाजिक सवधो मे सदाचार की स्थापना के लिए अदम्य नैतिक उत्साह था। अतएव जव वह जीवन को रगमच पर घसीट लाया तो तुरत उसमे (अर्थात् रगमच मे) आवास-समस्या, धर्म, अर्थव्यवस्था, वेश्यावृत्ति इत्यादि को स्थान मिलने लगा, अर्थात् ऐसी प्रत्येक वस्तु को जिसको वह कलुषित, कुव्यवस्थित और घातक समझता था। जनता को अपनी इच्छा के विरुद्ध उसकी बात सुनने के लिए विवश होना पडा, और बर्नर्ड शॉ के उद्धत वाक्चातुर्य एव हास्य, झगड़ालू प्रवृत्ति, दृढ़ाग्रह तथा जीवन के कठोर पक्ष पर जोर देने वाले भावावेश के विना कोई भी व्यक्ति उसे (अर्थात् जनता को) अपनी बात सुनने के लिए विवश नही कर सकता था। शॉ की युक्ति द्वारा रगमच आधुनिक सभ्यता के लिए वातायन या वायुमार्ग-सा बन गया, और यह वायु-शोधन व्यापार कैसा भव्य तथा आनन्दप्रद कौतुक-सा साबित हुआ! शॉ ने जल्दी ही यह सीख लिया कि जो सजीव सामग्री उसने एकत्र की थी उसको रंगमचीय प्रयोग के लिए कैसे सुसगठित किया जाय। 'विडोअर्स हाउसेज' तथा 'कैण्डिडा' और 'यू नेवर कैन टेल' के बीच केवल दो-तीन साल का अन्तर था, परन्तु इस दौरान में शॉ एक प्रचारक मात्र न रहकर वास्तविक समस्याओ और करीव-करीव वास्तविक चरित्रो का चित्रण करनेवाले नाटककार के रूप मे विकसित हो चुका था। 'मैन ऐण्ड सुपरमैन' मे उसने अपने 'जीवनी शक्ति' (अर्थात् लाइफ-फोर्स') के दार्शनिक सिद्धांत को प्रस्तुत किया। इस 'लाइफ-फोर्स' से उसका आशय एक ऐसी जीवनप्रद शक्ति से है जो मनुष्य मे इस उद्देश्य से प्रविष्ट की गयी है कि उसमे ऐसी सामर्थ्य उत्पन्न हो जिससे वह एक उच्चतर प्राणी—एक 'अति-मानव' ('सुपरमैन')—की सृष्टि कर सके जो पृथ्वी पर ईश्वर का सहायक होगा। इस दैवी योजना मे सहयोग देने के लिए पुरुप की निश्चेष्टता और असन्नद्धता देखकर 'मैन ऐण्ड सुपरमैन' मे 'जीवनी शक्ति' इस कार्य के लिए नारी को छाँटती है क्योंकि 'अति-मानव' को

विकसित करने मे प्रयुक्त होने वाले दोनों अस्त्रों मे वह अपेक्षाकृत अधिक इच्छुक है। शॉ के 'लाइफ-फोर्स' संबंधी इस मत की अभिव्यक्ति उसके अधिकांश उत्तर-कालीन नाटको मे हुई है परन्तु इसका पूर्णतर विकास 'बैक टु मिथ्यूजेला' में हुआ है जहाँ यह 'सर्जनात्मक विकास' ('क्रियेटिव इवोल्यूशन') सबधी उसके विशालतर सिद्धात का ही अभिन्न अंग बन गया है। इस सिद्धात का आधार यह विचार है कि मनुष्य पूर्ण तो तभी हो सकता है जब उसकी पूर्ण बनने की इच्छा का सचेतन विकास हो। बर्नर्ड शॉ एक अक्षय विषय है, अर्थात् उसके विषय मे कितना भी कहा जाय पर्याप्त न होगा। विरोधी आलोचको द्वारा खण्डन किये जाने के बावजूद यह बात निश्चित है कि उसने पूरे साठ वर्ष तक ब्रिटेन और विदेशो के विशाल एव निरन्तर बढते रहने वाले जनसमूह के विचारो को अत्यधिक प्रभावित किया, यद्यपि इसके पूर्व कुछ काल तक उसे विरोध के बीच से भी गुजरना पड़ा जो कुछ-कुछ उसी विरोध के समान था जिसका सामना किप्लिग को एक भिन्न राजनीतिक दिशा से करना पडा, परन्तु उसने इसका सामना बडे उल्लास के साथ किया। बर्नर्ड शॉ के विरुद्ध बारम्बार यह आरोप लगाया गया है कि वह एक पल्लवग्राही विचारक तथा मात्र विनाशकारी आलोचक था। इन आरोपो के सत्यासत्य का निर्णय आगे आने वाली पीढियो पर छोड देना चाहिए। वस्तुतः इन दोनो आरोपो के विरोध मे और शॉ के बचाव मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। नाटककार के रूप मे शॉ की अद्वितीय प्रतिभा सक्षोभ उत्पन्न करने वाले वाग्वैदग्ध्य एव शक्तिशाली सद्विवेक के सयोग, सूक्ष्म परीक्षण की भावना जिससे वह प्रवंचना की कडी से कडी खाल को, यहाँ तक कि अपने प्रशसको की प्रवचना को भी, छेद देता था और उसके असली रूप को उघाड़कर रख देता था, तथा उसकी तेजोमय तर्कशक्ति मे निहित है। शॉ की रचनाओं मे 'सेण्ट जोन' उस सामान्य विचार के निकटतम आती है जो लोगों मे सुन्दर नाटक के स्वरूप के विषय मे होता है, यद्यपि इसमे वह भविष्यदर्शी दृष्टि नही है जिसने 'हार्टब्रेक हाउस' को ऐसा स्मरणीय बना दिया है।

१२६. **आयरिश नाट्य और कविता**--विलियम बटलर येट्स (१८६५-१९३९) ने, जो एक आयरिश चित्रकार का पुत्र था, आयर्लैण्ड मे एक राष्ट्रीय रगमच को जन्म देने के लिए लगभग दस वर्ष तक, अर्थात् १८९९ तक प्रयास किया। अन्त मे जब वह सफल हुआ तो आयरिश नाट्य का एक शानदार युग प्रारम्भ हुआ जिसमे येट्स ने स्वय कई उल्लेखनीय काव्यात्मक नाटको का योगदान किया। इनमे 'दि लैण्ड ऑव हार्टस डिज़ायर' तथा 'दि काउण्टेस कैथलीन' भी

शामिल थे। परन्तु उसकी प्रतिभा काव्यात्मक अधिक और नाटकीय कम थी, तथा उसकी प्रारभिक गीतियो ने, जो उस समय जनता तथा अन्य कवियो के द्वारा समान रूप से प्रशंसित हुईं, उसे तत्कालीन काव्य मे प्रमुख स्थान प्रदान कर दिया। उसके उत्तरकालीन साहित्य का उल्लेख अगले अध्याय मे किया गया है। जॉर्ज विलियम रसेल (१८६७-१९३५) भी आधुनिक आयरिश साहित्य की एक विशिष्ट विभूति था। वह 'ए० ई०' के छद्म नाम से लिखता था, तथा कवि, नाटककार ('डीर्डर' १९०२), निबध-लेखक और सम्पादक के रूप मे अत्यन्त सम्मानित हुआ। इसके अतिरिक्त उसने कृषि-सुधार के क्षेत्र मे भी महान् सेवाएँ की तथा तत्कालीन आयर्लैण्ड पर गहरा प्रभाव डाला। इग्लैण्ड और आयर्लैण्ड दोनो में रंगमंच की महान् संरक्षिका कुमारी ए० ई० एफ० हॉर्नीमन, सी० एच०[1] की उदारता द्वारा डबलिन के एबी थियेटर में स्थापित राष्ट्रीय आयरिश रगमच ने अनेक नये प्रतिभावान् नाटककारो को आकर्षित किया। प्रथम काल मे इन नाटककारो मे से प्रमख था 'दि प्लेब्वाय ऑव दि वेस्टर्न वर्ल्ड', 'राइडर्स टु दि सी' तथा अन्य नाटको का रचयिता जे० एम० सिन्ज (१८७१-१९०९); तथा द्वितीय काल मे यह सम्मान उचित ही सीन ओ केसी (जन्म, १८८४) को अपने दो नाटकों 'जूनो ऐण्ड दि पेकॉक' (१९२५) और दि प्लाउ ऐण्ड दि स्टार्स' (१९२६) के कारण मिला। इन दोनो मे आयर्लैण्ड के तत्कालीन नगर-जीवन का चित्रण है। परन्तु जब बाद मे वह कम सुबोध प्रयोगात्मक रचनाओ की ओर मुड़ा, जैसे 'दि सिलवर टैसी' (१९२८) और 'विदिन दि गेट्स' (१९३३), तो उसको ऐसी सफलता नहीं मिली। लेडी ग्रेगरी (१८५२-१९३२) को रगमच की ओर लाने का श्रेय येट्स को था। सगठन और प्रबन्ध मे सहायता करने के अतिरिक्त उसने स्वय भी आधुनिक आयरिश जीवन और चरित्र से सबधित अनेक नाटिकाएँ प्रस्तुत की जिनका चित्रण असामान्य रूप से यथार्थ है, उदाहरणार्थ 'सेविन शॉर्ट प्लेज' (१९०९) तथा अन्य रचनाओ मे। उसने 'अवर आयरिश थियेटर' शीर्षक से आधुनिक आयरिश नाट्य का इतिहास भी लिखा।

१२७. **अन्य नाटककार**––बर्नर्ड शॉ ने अपनी पीढ़ी का ध्यान जो इतना अधिक आकर्षित किया उसका कारण यह है कि उसके नाटक तत्कालीन विषयो पर लिखी

१. 'कम्पेनियन ऑव ऑनर' की उपाधि।

हुई टीकाओं के समान है और इस दृष्टि से उनका बड़ा महत्त्व है, यद्यपि जैसे-जैसे समय बीतता जायगा उनमें उसकी अपेक्षा अधिक स्थायी विशेषताएँ भी अवश्य पायी जायँगी। इसके विपरीत, भावी पीढ़ियों के ध्यान पर सर जे० एम० बैरी (१८६०-१९३७) का जो अधिकार है वह इस कारण हो सकता है कि उसने विशिष्ट रूप से आधुनिक समस्याओं का तो त्याग कर दिया और स्त्री-पुरुषों को विचित्र कल्पनापूर्ण वातावरण में ऐसी परिस्थितियों के बीच रखकर प्रदर्शित किया है जो एक पीढ़ी को जितनी सुपरिचित या अपरिचित (पाठक के दृष्टिकोण के अनुसार) लगती है उतनी ही दूसरी पीढ़ी को भी लगती है। मनुष्य की योग्यता मे तथा अति-मानव के सर्जन-कार्य को प्रारम्भ करने के हेतु उसके अन्तिम रूप से सन्नद्ध हो जाने में शॉ को जो विश्वास था उसे उसकी अदम्य आशावादिता छोड़ने नही देती थी। बैरी का निराशावाद ऐसा दृढ था कि वह आधुनिक जीवन की कुरूपता से प्रश्रय पाने के लिए कोमल भावना एवं छद्म-कल्पना के संसार का आधार लेता था जो उसके नाटकों में पूर्णतया संगत प्रतीत होता है। केवल तभी उसका समर्थन असंभव हो जाता है जब हम बीसवी शताब्दी के दैनिक जीवन की दृष्टि से उसकी आलोचना करने लगते है जो कि उचित नही है। 'दि ऐड्मिरेबुल क्रिच्टन' में उसने एक आधुनिक समस्या उठायी अवश्य है, परन्तु बस उसके किनारे छूकर ही रह गया है तथा अन्तिम अक मे उसकी पूर्ण सम्भावनाओं का सामना न करके उनसे पलायन कर गया है। रगमंच के कुशल कलाकार के रूप में बैरी की सज्जा उस समय सक्रिय अन्य किसी भी नाटककार की सज्जा से कम नही थी। हास्यकार के रूप में उसका दृष्टिकोण कभी उल्लासपूर्ण है और मानवीय है, तो कभी वक्र और मोहनाश के आघात से पूर्ण। 'पीटरपैन' के लेखक के रूप मे तो उसने शिशुगृह मे स्थित आलोचक को पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट किया; यही एक मात्र आलोचक है जिसका निर्णय निरंकुश पूर्वाग्रहो अथवा बौद्धिक अजीर्ण द्वारा दूषित नही होता। १८६५ मे लिविस कैरॉल द्वारा 'एलिस' की सृष्टि भव्य प्रतिभा के उन चमत्कारों में से थी जो एक या दो बार से अधिक नही घटित होते; तथा यदि हम कैरॉल के अद्भुत लोक मे पीटर और एलिस की भेट की सम्भावनाओं पर विचार करे तो उससे हमे जिस आह्लाद का अनुभव होगा उससे अधिक आह्लाद का अनुभव अन्य किसी कल्पनात्मक अभ्यास द्वारा नही हो सकता।

जिन नाटककारो का उल्लेख किया जा चुका है उनकी तुलना मे बीसवी शताब्दी के अन्य नाटककार कम महत्त्वपूर्ण है। जॉन गाल्सवर्दी (१८६७-१९३३) ने

तीन उत्कृष्ट नाटको की रचना की, जिनके नाम है 'स्ट्राइफ', 'दि सिल्वर बॉक्स और 'दि स्किन गेम'। इनकी तुलना मे उसकी शेष नाटकीय रचनाएँ लोकहित से संबधित लघु निबधो-जैसी प्रतीत होती है। हेनरी ग्रैनविल-बार्कर (१८७७-१९४६) ने, जो 'दि वॉयजी इन्हेरिटेन्स' नामक एक अत्यन्त सुन्दर सामाजिक सुखान्त का लेखक था, (यह सभवत. इस युग का सर्वोत्तम नैसर्गिकतावादी नाटक है) अभिनेता और निर्माता दोनो ही रूपो मे रगमच को बहुत प्रभावित किया। आर्नल्ड बेनेट व एडवर्ड नोब्लॉक के 'माइलस्टोन्स' में प्रगति की सक्रियता तथा मानवीय दुराग्रह की स्थिरता का चित्ताकर्षक अध्ययन किया गया है। दूसरी ओर 'पॉम्पी दि ग्रेट', 'दि ट्रेजेडी ऑव मैन' और 'गुड फ्राइडे' का स्थान जॉन मेसफील्ड द्वारा आधुनिक दु खात नाट्य को दिये हुए योगदान मे है।

१२८. संक्रमण-काल के उपन्यासकार—उन्नीसवी शताब्दी के अधिकाश भाग मे अग्रेजी उपन्यास का स्वर प्रधान रूप से रोमाण्टिक था, यहाँ तक कि जब उसकी विषय-वस्तु अनाकर्षक या 'वास्तविक' होती थी, तब भी उसका स्वर रोमाण्टिक ही था। लगभग १८८५ से आगे घटती हुई रोमाण्टिकता के साथ-साथ (जिसका प्रतिनिधित्व स्टीवेन्सन तथा अन्य लेखक करते थे) कुछ ऐसे उपन्यासकार भी आगे आये जिनका उद्देश्य यथार्थ विषयो को यथार्थ विधि से, अर्थात् एक निष्पक्ष, भावनारहित और भर्त्सना-मुक्त शैली मे चित्रित करना था। इन नये यथार्थवादियो की त्रटियो व उनके भ्रामक विचारो के विषय मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन्होने स्पष्टोक्ति तथा "जीवन को अनवरत और पूर्ण रूप मे' देखने का अर्थ भ्रमवश कुरूपता और बीभत्सता से ही लगाया। परन्तु यहाँ इतना ही उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि कलात्मक यथार्थवाद की दिशा मे हो रहे इस आन्दोलन मे जॉर्ज मूर (१८५७-१९३३) का 'ईस्थर वाटर्स' एक सीमाचिह्न के समान है। यद्यपि जॉर्ज गिसिग (१८५७-१९०३), जो स्वतन्त्रतापूर्वक उसी दिशा मे कार्य कर रहा था, कोई साहित्यिक मतवादी नही था, तथापि उसने ऐसे अनेक भयावह उपन्यास लिखे जिनमे गिसिग ने जिन तथ्यो का अवलोकन किया था उनका यथार्थ वर्णन है। कभी-कभी (जैसे, उदाहरणस्वरूप, 'बॉर्न इन इग्जाइल ' मे) उसमे बहुत-सा आत्मकथात्मक अश भी आ गया है जिसके ऊपर का आवरण बहुत ही पतला है। गिसिग के साथ ससार (अर्थात् समाज) का व्यवहार ऐसा कठोर और निर्दय रहा था (यद्यपि इसमें दोष पूर्णतः ससार का ही नही था) कि इसके परिणामस्वरूप उसमे जो असन्तोष और रोष हमे मिलता है

उससे आश्चर्य नही होता। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि उसके उपन्यास भी असन्तोष और रोष से पूर्ण है। यहाँ तक कि उसके उपन्यासो मे जो साहित्यिक सत्यनिष्ठा बहुधा पायी जाती है वह भी उसके असन्तोषपूर्ण रोषभाव का परिहार नही कर पाती। यदि निर्बलतापूर्ण आत्मशोच का यही भाव उसमे न होता तो गिसिग की गणना उन्नीसवी शताब्दी के प्रमुख उपन्यासकारो मे की जाती, तथा अपने समस्त दोषो के होते हुए भी वह एक यथार्थ गुणसम्पन्न लेखक था। बाद मे आगे चलकर मुसीबतों से छुटकारा पाकर उसने 'दि प्राइवेट पेपर्स ऑव हेनरी राइक्रॉफ़्ट' की रचना की जिसमे उसने अपने विचार सुन्दर गद्य मे व्यक्त किये है।

जॉर्ज मूर ने आधुनिक यथार्थवाद से आरम्भ करके धीरे-धीरे विभिन्न अवस्थाएँ पार करते हुए ऐसे उपन्यासो की रचना प्रारभ की जो अधिकांशतः ऐतिहासिक है, उदाहरणार्थ, 'दि ब्रुक केरिथ' (यह श्रेष्ठ कृति इस किवदन्ती के विषय मे है कि ईसा 'एसीन' नामक सन्यासी जाति मे जीवित रहे, तथा इसमे सेण्ट पॉल को भी स्थान दिया गया है), 'एवलार्ड ऐण्ड हेल्वॉस' तथा 'यूलिक ऐण्ड सोराचा'। इन पुस्तको मे जिस गद्यशैली के साथ प्रयोग किये गये है वह असाधारण सुस्पष्टता, सूक्ष्मता एव शक्ति से सम्पन्न है तथा इसके द्वारा जिस सौदर्य की सृष्टि हुई है वह पूर्ण रूप से इस गद्य के ताने-बाने मे ही निहित तथा शाब्दिक आलकारिकता से मुक्त है, जिसको जॉर्ज मूर ने अपने अतिम काल मे पूर्ण रूपेण बहिष्कृत कर दिया।

परम्परात्मक प्रकार के अग्रेजी कहानी-लेखको मे रडयार्ड किप्लिग (१८६५-१९३६) अद्वितीय था। इस साहित्य रूप मे अनेक मनोदशाओ पर उसका अधिकार था। बड़ी सरलता और आत्मविश्वास के साथ वह निर्ममता से भावना-पूर्ण विचित्र कल्पना, या लोककथा से प्रहसन की ओर मुड जाता था और दोनो मे उसकी कला अत्यन्त उत्कृष्ट रूप मे दिखाई देती है। अपनी यन्त्रो और पशुओ की कहानियो द्वारा उसने कथा-साहित्य के क्षेत्र को व्यापक और विस्तृत बनाया। उसमे दक्षता एव दृढ़ निश्चय के जो गुण थे उनसे पाठको को यह विश्वास दिलाने मे बड़ी सहायता मिली कि मशीनो और जानवरों दोनो के मस्तिष्क और आत्मा होती है जिनकी प्रकृति और सूक्ष्म गतिविधि के विषय मे किप्लिग आदि से अत तक वह पूरी जानकारी रखता हुआ प्रतीत होता था। 'किम' उसका एक मात्र उपन्यास है जिसकी तुलना उसकी कहानियो से की जा सकती है। जिस प्रकार 'पिकविक' मे इग्लैण्ड का सुन्दर चित्र दिया गया है, उसी प्रकार 'किम' मे तिब्बती सीमाप्रदेश

का बड़ा शानदार चित्र प्रस्तुत किया गया है, यद्यपि 'पिकविक' की तुलना में 'किम' का हास्य कम कोलाहलपूर्ण है।

इस संक्रमण-काल के अतिम समय में ऐतिहासिक कथा-साहित्य के दो लेखकों ने कुछ उल्लेखनीय कार्य किया। ये थे स्टेनली वीमन (१८५५-१९२८) (ए जेण्टिल मैन ऑव फ्रांस', 'दि हाउस ऑव दि वुल्फ', 'चिपिज') तथा मॉरिस ह्यूलेट (१८६१-१९२३) (रिचर्ड ये-ऐण्ड-ने', 'दि क्वीन्स क्वेर')। ह्यूलेट अन्य प्रकार से भी साधारण कोटि का उपन्यासकार नही था। उसका 'ओपेन कण्ट्री' स्मरण रखे जाने योग्य है तथा 'दि फॉरेस्ट लवर्स', 'एण्टनी होप के', 'दि प्रिज़नर ऑव ज़ेण्डा' की भाँति, रोमाण्टिक कल्पना की एक सुन्दर, मनमोहक सृष्टि है। कॉनन डॉयल का शेर्लाक होम्स तो अमर हो गया है, यद्यपि जासूसी उपन्यास की जो उन्नति बाद मे हुई उसके कारण उसकी कार्यविधियाँ तथा विचार पुराने-से प्रतीत होते है।

१२९. बीसवीं शताब्दी के उपन्यासकार--डिकेन्स की मृत्यु के उपरान्त लगभग पचीस वर्ष तक अग्रेजी उपन्यास की परम्परा के निर्वाह का कार्य मेरिडिथ और हार्डी के जिम्मे रहा। १२८ वे प्रकरण में उल्लिखित लेखको मे से कोई भी इस परम्परा के भीतर नही था, और जब तक उन्नीसवी शताब्दी समाप्त होकर बीसवी प्रारभ नही हो गयी तब तक युवा लेखको ने ऐसे उपन्यास लिखने प्रारभ नही किये जिनसे यह आशा पुष्ट होती कि विक्टोरियन युग के महान् लेखकों के निधन से हुई क्षति की पूर्ति होना असंभव न होगा। यदि हम पीछे की ओर देखे तो एच० जी० वेल्स (१८६६-१९४६) के विचित्र कल्पना-पूर्ण प्रारम्भिक आख्यानों का उसके सम्पूर्ण साहित्य से जो सही संबध है उसका पता चल सकता है। यद्यपि 'दि टाइम मशीन' तथा इस विशिष्ट शैली मे इसके बाद लिखी जानेवाली अन्य रचनाएँ प्रारम्भ में असाधारण चातुर्यपूर्ण तुच्छताएँ जैसी ही प्रतीत होती थी, तथापि उनमें संस्थाओ और विधानो के आलोचक के रूप में वेल्स के विकास की प्रारम्भिक अवस्थाएँ ढूँढी जा सकती है। 'लव ऐण्ड मिस्टर ल्यूशम', 'किप्स' तथा 'दि हिस्टरी ऑव मिस्टर पॉली ' ने उसे एक उच्चकोटि के उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया जो हास्य-रचना तथा लोक-सुधार के लिए एक विशिष्ट प्रतिभा से सम्पन्न था और जो इस दृष्टि से डिकेन्स की परम्परा में था। बहुत-से लोग उसकी प्रारंभिक रचनाओं के गुणों को जानते हुए भी 'टोनो बंगे' को उसका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास मानते हैं। 'टोनो बंगे' की जो प्रशंसा हुई है उसका कारण यह

है कि इसमें चरित्र-चित्रण, कथा-निरूपण, दृश्य-वर्णन तथा साहसिक कार्य सभी का सुन्दर निर्वाह हुआ है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में लगभग १८८० से लेकर १९१० तक के अंग्रेजी सामाजिक इतिहास का गंभीर और विशद अध्ययन हुआ है। जीवन के सन्तुलन में अभिजात-वंशतन्त्र से प्रजातन्त्र और प्रवंचना के एक विचित्र मिश्रण की ओर जो राष्ट्रीय परिवर्तन हो गया था, उसका जो रूप जॉर्ज पॉण्डरीवो की समझ में आता है उसी का प्रदर्शन इसमें हुआ है। यद्यपि पॉण्डरीवो ने जो दृष्टि-कोण अपनाया है वह उस समय के लिए 'नया' था, फिर भी उसने इस विषय में सन्देह व्यक्त किया है, जो कि स्वयं लेखक में भी था, कि कोई दृढ़ से दृढ़ प्रजातन्त्रवादी भी परिवर्तित व्यवस्था को निर्विकार होकर नही देख सकता था। १९१२ से आगे एच० जी० वेल्स अपने इस सिद्धांत को अधिकाधिक व्यवहार में लाने लगा कि उप-न्यास का उद्देश्य अब मात्र मनोरंजन करना न होना चाहिए, बल्कि उसे ऐसे मंच के समान होना चाहिए जिस पर से विचारों का प्रचार तथा तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक महत्त्व के किसी भी प्रश्न पर विमर्श किया जा सके। परिणामस्वरूप वेल्स के उत्तरकालीन उपन्यास परिश्रमपूर्वक लिखे गये तथा विस्तृत तथ्यों से पूर्ण पैम्फ्लेटो के सदृश हैं जिनको उसने उपन्यासों के रूप में निरुत्साहपूर्वक ही प्रदर्शित किया है। यह अवश्य है कि उसके सारे सामाजिक और राजनीतिक उत्साह के बावजूद उसका सर्जनात्मक साहित्यिक कलाकार तथा हास्यपूर्ण आख्यान के आचार्य वाला रूप कभी-कभी पुनः दिखाई पड़ जाता है, उदाहरणार्थ 'मिस्टर ब्रिट्लिंग सीज इट थ्रू' में अथवा 'क्रिस्टिना अल्बर्टाज फ़ादर' के प्रारम्भिक अंशों में।

जोज़ेफ़ कॉन्रैड (जिसका पूरा नाम जोजेफ कॉन्रैड कॉर्जेनियाव्स्की था) (१८५७-१९२४) ने युवावस्था में अपना देश पोलैण्ड छोड़कर पहले फ्रांसीसी और फिर अंग्रेज व्यापारिक जहाजों में नौकरी की। इसी प्रकार उसने अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। फिर बीमारी के कारण समुद्री जीवन छोड़कर वह इंग्लैण्ड में ही बस गया, जहाँ उसने सामुद्रिक (अर्थात् नाविकों के) जीवन से संबंधित अनेक कथाएँ अंग्रेजी में लिखी जो हमारी भाषा में इस विषय की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ हैं (देखो 'दि निगर ऑफ दि 'नर्सिसस', 'टाइफून' तथा अन्य रचनाएँ)। उसे यह बात नापसन्द थी कि उसको प्रमुख रूप से समुद्र के विषय में लिखनेवाला लेखक ही माना जाय, तथा वह अपने सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को अधिक महत्त्व देता था (उदाहरणार्थ, 'चान्स')। वह सर्वप्रथम उपन्यासकार था जिसने अंग्रेजी

में उपन्यास को अपने पूर्ण और वास्तविक अर्थ मे एक कलाकृति का रूप देने का सफलतापूर्वक प्रयत्न किया। इस संबंध मे वह ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त किये हुए अमरीकन लेखक हेनरी जेम्स का अनुसरण कर रहा था, परन्तु जेम्स की शैली उसकी अपेक्षा कम सशक्त और ओजपूर्ण है। साहित्यिक कला की स्थापना करने में कॉन्रैड ने अपनी प्रचण्ड जीवनीशक्ति तथा आध्यात्मिक गहराई का क्षय नहीं होने दिया, और इन्ही गुणो ने उसके उपन्यासो को अद्वितीय बना दिया है। मानव-चरित्र के घनिष्ठ, आन्तरिक पहलुओ के चित्रण तथा सत्य के सूक्ष्म रूपों के प्रकटीकरण के लिए कॉन्रैड ने कथा कहने की ऐसी विधि अपनायी है जो विचित्र रूप से जटिल तथा कभी-कभी भ्रम में डालनेवाली है। परन्तु शैली की जटिलता के कारण जो कठिनाई प्रारम्भ मे होती भी है उसके निस्तार के लिए उसमे पाठक के लिए अनेक पारितोषिक है, यथा बौद्धिक उद्दीपन, तीव्रतर बोधग्राही शक्ति तथा मानव-मन के प्रेरक प्रयोजनों का गहनतर ज्ञान। काव्यात्मक दुःखान्त की पूर्ण महानता की जो सिद्धि 'लॉर्ड जिम' मे हुई है उससे अधिक की प्राप्ति किसी भी उपन्यास मे सम्भव नही है, और यदि इसी मापदण्ड से परीक्षा करने पर 'विक्टरी' को इससे नीचा दर्जा दिया जाता है तो इसका कारण यह है कि उसमे 'लॉर्ड जिम' के मित प्रसाधन का अभाव है तथा उसके स्थान पर यह ऐसी रोमाण्टिकता मे डूबा हुआ है जो अंग्रेजी के लिए अज्ञात और विदेशी है। शब्दों के चयन मे दक्ष प्रभाववादी ('इम्प्रेशनिस्ट') कलाकार के रूप मे कॉन्रैड को जो सफलता प्राप्त हुई उसका कारण यह है कि वह निरीक्षण तथा निरीक्षित वस्तु की अनुकृति दोनों की यथार्थता पर बड़ा बल देता था। उसका 'प्रभाववाद' (इम्प्रेशनिज्म') ऊन के समान निस्सार (अर्थात् ऊपर से फूला-फूला परन्तु वास्तव मे ठोस बिलकुल नही) अथवा व्यर्थ के शब्द-विस्तार से पूर्ण कभी नही रहा, बल्कि वह सदैव एक सुस्पष्ट शैली का निश्चित परिणाम रहा है। इस कला-सिद्धांत की ही भाँति एक केन्द्रीय विचार भी कॉन्रैड के समस्त उपन्यासों व कथाओं में व्याप्त दिखाई देता है जो उन संबको एकता प्रदान करता है। यह है किसी मानवीय सिद्धांत के प्रति निष्ठा की अनिवार्य आवश्यकता। समुद्र पर लोगो को आकस्मिक रूप से आनेवाले एक सामान्य संकट का सदा उपस्थित भय एक किये रहता है। यह संकट है सागर के क्रोध और विश्वासघात का। इस शत्रु के विरुद्ध मानवीय एकता और दृढ़ता को बनाये रखना आवश्यक है। यह दृढ़ एकता न तो टूटने ही पाये ओर न इसके साथ विश्वासघात ही किया जाय; यदि किसी प्रकार उसका भंग या उसके प्रति विश्वास-

घात हो ही जाय (जैसे लॉर्ड जिम ने किया था) तो क्लेश दूर हो जाने पर उसका प्रायश्चित्त करना आवश्यक है। मानवीय एकता के इस विचार पर उसके सम्पूर्ण साहित्य मे बल दिया गया है (आजकल इस वाक्यांश अर्थात् 'मानवीय एकता' का प्रयोग राजनीतिक संदर्भ में होता है जो कान्रैड पर कठिनता से ही लाग किया जा सकता है), तथा इसके साथ-साथ समस्त मानवीय सिद्धांतों में निष्ठा का आदर्श भी है जो इस विचार का पूरक है।

आर्नल्ड बेनेट (१८६७-१९३१) के 'दि ओल्ड वाइव्ज टेल', 'क्लेहैगर' और 'राइसीमैन स्टेप्स' तथा गाल्सवर्दी के 'दि फॉर्साइट सागा' के उल्लेख द्वारा इस युग के प्रमुख परम्परागत उपन्यासों की सूची समाप्त होती है। उल्लिखित पुस्तको मे इन दोनों लेखकों ने आधुनिक इंग्लैण्ड के विभिन्न सामाजिक स्तरो के बृहत् चित्र खीचे है। आर्नल्ड बेनेट व्यापार और उद्योग में लगे हुए मध्यम वर्ग का और गाल्सवर्दी ने पेशेवर और सभ्रान्त वर्गो का चित्र खीचा है। उनकी शैलियाँ भी उनके विषय के अनुसार ही है। बेनेट का गद्य दक्ष, श्रमिकोचित (अर्थात् अलकारविहीन, सादा-सरल व कामचलाऊ परन्तु व्यावहारिक व प्रभावोत्पादक), मध्यमवर्गीय गद्य था; गाल्सवर्दी का गद्य सस्कृत, ललित व सौजन्यपूर्ण है। आर्नल्ड बेनेट ने इन रचनाओं के अतिरिक्त भी अन्य बहुत-सी रचनाएँ लिखी जिनका महत्त्व कम है परन्तु उनमें से कम से कम एक, अर्थात् 'बेरीड अलाइव' उच्च-कोटि का हास्यपूर्ण उपन्यास है जिसको बाद मे 'दि ग्रेट एडवेचर' के नाम से नाटक के रूप मे भी सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया।

१३०. विविध गद्य—उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे अल्फ्रेड हार्म्सवर्थ, टी० पी० ओ कॉनर और बर्नर्ड शॉ के भिन्न-भिन्न प्रभावों के परिणामस्वरूप पत्र-कारता में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए उनके कारण समाचारपत्रो ने धीरे-धीरे पत्रिकाओ के कुछ कर्तव्य अपना लिये तथा इस प्रकार पत्रिका-निबंध ('पीरियॉडिकल एसे' अथवा सामयिक निबध) के लिए एक नया माध्यम सुलभ कर दिया। ऐसा नही है कि इस युग के सभी निबध-लेखक समाचारपत्रों और साप्ताहिक समीक्षा-पत्रों ('रिव्यूज़') में अपनी रचनाएँ लिखते रहे हों, परन्तु कम से कम दो ने —रॉबर्ट लिण्ड और ए० जी० गार्डिनर (अथवा अल्फा ऑव दि प्लाउ जो उसका साहित्यिक नाम था)—प्रेस द्वारा आरोपित सीमित लम्बाई की परिस्थितियो के अतर्गत प्रशंसनीय कार्य किया। ई० वी० लूकस (१८६८-१९३८) ने इससे जरा विस्तत क्षेत्र मे अपनी धाक जमायी, विशेष कर ऐसी पुस्तकों की रचना में

जिनमें वैयक्तिक निबंध तथा उपन्यास दोनों के गुणों का संयोग था। 'ओवर बेमर्टन्स' इन 'मनोरंजक रचनाओं' का प्रतिनिधि, तथा संभवतः सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। सर मैक्स बीरबॉम ने अपना साहित्यिक जीवन निबन्धों की एक छोटी-सी पुस्तक 'दि वर्क्स ऑव मैक्स बीरबॉम' के द्वारा प्रारम्भ किया जिसके कारण उसे उन्नीसवी शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी में अद्‌भुत लेखक माना जाता था। वह इस दशाब्द के बाद दीर्घ काल तक जीवित रहा तथा न केवल अपनी पीढ़ी के सबसे उत्कृष्ट व्यंग्यकार बल्कि एक प्रतिभावान् पैरोडी-लेखक ('ए क्रिस्मस गार्लैण्ड') के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। निबन्धकार के रूप में भी उसकी प्रतिभा में वृद्धि हुई ('ऐण्ड ईविन नाउ')। केनेथ ग्रैहम की 'दि गोल्डेन एज', 'ड्रीम डेज' और 'दि विण्ड इन दि विलोज़' नामक रचनाएँ बच्चों और बड़ों दोनों के लिए श्रेष्ठ कृतियाँ सिद्ध हुई है, तथा ए० ए० मिल्न ने 'व्हेन वी वेयर वेरी यंग' की रचना करके बच्चों के लिए लिखी गयी सुन्दर कविता पुस्तकों की संक्षिप्त सूची में एक और वृद्धि की।

सी० एम० डाउटी (१८४३-१९२६) इस युग के यात्रा-लेखकों में सर्वश्रेष्ठ है, यद्यपि इस बात में सन्देह है कि उसकी विशाल 'अरेबिया डेज़र्टा' भविष्य में थोड़े से साहसी और परिश्रमी पाठकों को छोड़कर अन्य लोगो को भी पठनीय लगेगी या नहीं। रिचर्ड जेफ़रीज़ के बाद प्रकृति-सबंधी पुस्तकों के लोकप्रिय लेखक का स्थान डब्लू० एच० हड्सन (१८४१-१९२२) ने ग्रहण किया। हड्सन में जेफ़रीज़ की शैली के गेय काव्य-जैसे हर्षातिरेक का अभाव है; उसका गद्य अपनी प्रशान्त सुस्पष्टता के लिए अधिक प्रसिद्ध है ('ए शेफ़र्डस लाइफ' और 'फ़ार अवे ऐण्ड लौंग एगो')।

लिटन स्ट्रेची (१८८०–१९३२) ने जीवनी-साहित्य में वास्तविक प्रगति की। उसकी युगान्तरकारी पुस्तको, 'एमिनेण्ट विक्टोरियन्स' और 'क्वीन विक्टोरिया' ने अंग्रेजी मे जीवनी-लेखकों की एक पूरी पीढ़ी के दृष्टिकोण को बदल दिया। स्ट्रेची ने जीवनी-साहित्य को पतित अवस्था मे पाया, परन्तु उसको एक सुन्दर कला के रूप में परिवर्तित कर दिया। यह अवश्य है कि जो लोग विक्टोरियन युग की आदर्शवादी परम्परा में पले थे उनको उसकी मूर्ति-भंजकता (परम्परा द्वारा स्थापित और मान्य आदशो का खण्डन व उनके स्थान पर सत्य की प्रतिष्ठा) अत्यन्त अप्रिय लगती थी, तथा उसके विध्वंसक व्यंग्य एवं वाक्‌चातुर्य को उसके अयोग्य अनुकरणकर्ताओं ने अरुचिकर धृष्टता का निम्न रूप दे दिया।

हार्डी-युग के अन्तिम वर्षों मे युवा लेखक नयी शैलियों के साथ प्रयोग कर रहे थे, परन्तु इनमे प्राय: उनको कोई निश्चित सफलता नही प्राप्त हुई। कभी-कभी तो जो प्रयोग इन लेखकों की अपनी-अपनी अनियत्रित सनक तथा प्राचीन रूपों को विध्वंस करने की विनाशकारी उत्सुकता के परिणाम-जैसा ही प्रतीत होता था, वह वास्तव में, अपने सर्वश्रेष्ठ रूप मे, प्रगति तथा विस्तार के लिए किया गया वास्तविक प्रयत्न होता था; परन्तु अपने निकृष्टतम रूप में वह केवल बौद्धिक चेचक की महामारी जैसा ही होता था।

हार्डी-युग की सारणी (१८८७-१९२८)

उपन्यास	पद्य	नाट्य-साहित्य
	ब्रिजेज की 'शॉर्टर पोएम्स' १८७३–८०.	
हार्डी का 'रिटर्न ऑव दि नेटिव', १८७८		
हार्डी का मेयर ऑव कास्टरब्रिज', १८८५.		
किप्लिग की 'प्लेन टेल्स फ़्रॉम दि हिल्स', १८८७.		
	जी० एम० हॉप्किन्स की मृत्यु, १८८९.	
गिसिग का 'न्यू ग्रब स्ट्रीट', १८९१.		
हार्डी का 'टेस ऑव दि डर्बरविल्स', १८९१.	किप्लिंग की 'बैरक रूम बैलड्स', १८९२.	
गिसिंग का 'बॉर्न इन इग्ज़ाइल', १८९२.	टॉम्प्सन की 'हाउण्ड ऑव हेवेन', १८९३.	पिनेरो का 'सेकिण्ड मिसेज़ टैन्क़रे', १८९३.
मूर का 'ईस्थर वाटर्स', १८९४.		

उपन्यास	पद्य	नाट्य-साहित्य
हार्डी का 'जूड दि ऑब्सक्योर', १८९५.	येट्स की 'पोएम्स', १८९५.	वाइल्ड का 'इम्पॉर्टेन्स ऑव बीग अर्नेस्ट, १८९५.
वेल्स का 'टाइम मशीन', १८९५.		
	हाउस्मन का 'श्रॉपशायर लैड', १८९६.	
कॉन्रैड का 'निगर ऑव दि 'नार्सिसस', १८९७.		एच० ए० जोन्स का 'दि लायर्स', १८९७.
		पिनेरो का 'ट्रेलॉनी ऑव दि 'वेल्स', १८९७.
	वाइल्ड की 'बैलड ऑव रीडिग जेल', १८९८.	वर्नर्ड शॉके 'प्लेज़,' प्लेजेण्ट, ऐण्ड अन-प्लेजेण्ट', १८९८.
	हार्डी की 'वेसेक्स पोएम्स' १८९८.	
कॉन्रैड का 'लार्ड जिम', १९००.		एच० ए० जोन्स 'मिसेज डेन्स डिफेन्स', १९००.
किप्लिग का 'किम', १९०१		
बट्लर का 'वे ऑव ऑल फ़्लेश', १९०३.		शॉ का 'मैन ऐण्ड सुपरमैन' १९०३.
		बैरी का 'दि ऐड्मिरेबुल क्रिच्टन', १९०३.
कान्रैड का ' नॉस्ट्रोमो', १९०४.	हार्डी का 'डाइनस्ट्स', १९०४–०६–०८.	बैरी का 'पीटर पैन', १९०४.
वेल्स का 'किप्स', १९०५.		
		सिन्ज का 'प्लेब्वाय ऑव दि वेस्टर्न वर्ल्ड', १८९७.
आर्नल्ड बेनेट का 'ओल्ड वाइव्ज टेल', १९०८.		बैरी का 'ह्वाट एवरी वूमन नोज़', १९०८.
वेल्स का 'टोनो बंगे', १९०९		गाल्सवर्दी का 'स्ट्राइफ', १९०९.

उपन्यास	पद्य	नाट्य-साहित्य
		सिन्ज की मृत्यु, १९०९.
	मेरिडिथ की मृत्यु १९०९.	ग्रैनविल बार्कर का 'वॉयजी इन्हेरिटेन्स', १९०९.
	स्विनवर्न की मृत्यु, १९०९.	
	रूपर्ट ब्रुक की 'पोएम्स', १९११.	
	मेसफील्ड की 'एवरलास्टिंग मर्सी', १९११.	
	वाल्टर डी ला मेयर की 'लिसेनर्स', १९१२.	बेनेट और नोब्लॉक का 'माइलस्टोन्स', १९१२.
	डी ला मेयर की 'पीकॉक, पाइ', १९१३.	
	'जॉजियन पोएट्री', १९११, १९१२, १९१३.	
लॉरेन्स का 'सन्स ऐण्ड लवर्स', १९१३.		
मेकेन्जी का 'सिनिस्टर स्ट्रीट', १९१३–१४.		
कॉन्रैड का 'विक्टरी', १९१५.		
जॉर्ज मूर का 'ब्रुक केरिथ', १९१६.		
वेल्स का 'मिस्टर ब्रिटलिंग सीज़ इट थ्रू', १९१६.		
डग्लस का 'साउथ विण्ड', १९१७.	रैल्फ हॉज्सन की 'पोएम्स', १९१७.	

उपन्यास	पद्य	नाट्य-साहित्य
	सीगफ़िड सैसून की 'काउण्टर अटैक', १९१८.	ड्रिंकवाटर का 'अब्राहम लिंकन', १९१८.
	हाप्किन्स की 'पोएम्स', १९१८.	
		शॉ का 'हार्टब्रेक हाउस', १९१९.
		गाल्सवर्दी का 'स्किन गेम', १९२०.
		शॉ का 'बैक टु मेथ्यूज़ेला', १९२१.
गॉल्सवर्दी का 'फ़ार्साइट सागा', १९२२.	ईलियट का 'दि वेस्ट लैण्ड', १९२२.	
ज्वाएस का 'यूलिसिस', १९२२.		
बेनेट का 'राइसीमैन स्टेप्स', १९२३.		
फ़ास्टर का 'ए पैसेज टु इण्डिया', १९२४.		
कॉन्रैड की मृत्यु, १९२४.		
		ओ, केसी का 'जूनो ऐण्ड दि पेकॉक' १९२५.
		कॉवर्ड का 'हे फ़ीवर', १९२५.
हार्डी की मृत्यु, १९२८.		
	ब्रिजेज़ की 'टेस्टामेण्ट ऑव ब्यूटी', १९२९.	
	ब्रिजेज की मृत्यु, १९३०.	

अध्याय २६

वर्तमान युग

१९३०–१९५५

१३१. प्राचीन परम्पराएँ और नवीन प्रवृत्तियाँ––अध्ययन की दृष्टि से साहित्य को सुविधाजनक युगों में विभाजित करने से सभवत. यह विचार हो सकता है कि प्रत्येक युग के लेखको को उनके पूर्वगामी एवं परवर्ती लेखको से पृथक् करके देखा जा सकता है। इस दृष्टिकोण को प्रश्रय नही देना चाहिए। हम अपने समस्त पूर्वजो के उत्तराधिकारी हैं; तथा हमारी सतति हमारे पूर्वजो और हमारी दोनो की उत्तराधिकारी होगी। जो भी चीज साहित्य मे नवीन प्रतीत होती है उसका परीक्षण करने पर उसकी जड़े न्यूनाधिक दूर अतीत मे फैली हुई पायी जाती है। जडे चाहे जितनी नयी हो अथवा पुष्प चाहे जितने अद्भुत हो, उनका पोषण उसी मिट्टी और हवा द्वारा हुआ था जिसने उन वस्तुओ को जीवन दिया था जो अब सभव है समाप्त और बिना काम की प्रतीत होती हो। इस पर यह प्रश्न उठ सकता है कि हम अणु-युग के लोगो का लगभग २५०० साल पहले के यूनानी क्लासिकल युग से क्या सबध है, या इग्लैण्ड के केवल सौ साल पहले के विक्टोरियन युग तक से हमको क्या लेना-देना है? इन प्रश्नो के उत्तर स्वय हमारे समय के साहित्य मे प्राप्त हो सकते है, क्योकि वर्तमान युग मे जो लेखक ऊपर से अत्यधिक 'प्रगतिशील' प्रतीत होते हैं वे भी उपर्युक्त दोनो युगो तथा इनके बीच के अन्य युगो के भी अत्यधिक ऋणी रहे हैं। जेम्स ज्वाएस के 'यूलिसिस' की रचना, जो शैली की दृष्टि से बीसवी शताब्दी का सबसे क्रान्तिकारी उपन्यास है, होमर की 'ऑडिसे' की योजना के आधार पर हुई है; टी० एस० ईलियट ने अपने काव्य की रचना मे (जैसा कि 'दि वेस्ट लैण्ड' मे दी हुई उसकी टिप्पणियो से प्रकट है) अनेक प्राचीन रचनाओं व लेखकों, अग्रेजी और विदेशी दोनो से सहायता ली है; दूसरी ओर ईलियट के समकालीन युवा कवियों की रचनाओं पर विक्टोरियन कवि जिरार्ड मैन्ली हॉप्किन्स का जैसा प्रभाव पड़ा है वैसा और किसी भी लेखक का नही पड़ा। वास्तव में तो हॉप्किन्स के बिना, जो अपने

जीवनकाल में प्रायः पूर्णतः अज्ञात था, वर्तमान युगीन कविता का जो रूप आजकल है उससे बहुत ही भिन्न होता। परन्तु यह अवश्य है कि कोई भी अच्छा लेखक पूर्ण-रूपेण, या मुख्य रूप तक से भी, अतीत का ही आधार नहीं लेता। अपने वैयक्तिक जीवन में तथा जिस संसार में वह रहता है उसके व्यापक सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे उसे जो वर्त्तमान अनुभव होता है वह कम महत्त्वपूर्ण नही है, तथा यदि समय अशान्तिपूर्ण हुआ तो यह अनुभव उसके साहित्य पर गहरा प्रभाव डालता है।

१९२८ मे जब टॉमस हार्डी का निधन हुआ उस समय दुनिया प्रथम विश्वयुद्ध के दुष्परिणामो से मुक्त होती हुई प्रतीत हो रही थी, यद्यपि उसकी स्थिति का सुधार बड़े धीमे और कष्टकर ढंग से हो रहा था तथा दूरदर्शी लोग जनसाधारण के सामान्य दृष्टिकोण के विषय मे अब भी चिन्तित थे। 'लीग ऑव नेशन्स'[१] के सस्थापकों ने अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री और सद्भावना की जिस स्थिति को जन्म देने की आशा की थी उसको लाने में वह असफल रही थी, तथा निर्धनता और सामाजिक अशान्ति अब भी अनेक स्थानों से दूर नही हुई थी। फिर, बीसवीं शताब्दी की चौथी दशाब्दी निकट आते-आते धनी और निर्धन सभी पर एक ऐसा विश्वव्यापी आर्थिक सकट टूट पड़ा जिसके कारण असंख्य परिवारों और व्यक्तियों को तो दुःख और अभाव का सामना करना ही पडा, समूचे राष्ट्रों तक के विनाश का भय उत्पन्न हो गया। ब्रिटेन (तथा अन्य देशों) में लाखों-करोड़ों बेरोजगारों के कारण एक गम्भीर सामाजिक समस्या उपस्थित हो गयी, तथा जो अभी तक समृद्ध औद्योगिक प्रदेश थे वे सकटग्रस्त क्षेत्र बन गये। उस समय देश की जो स्थिति थी उसका वर्णन जे० बी० प्रीस्टले की 'ऐन इग्लिश जर्नी' (१९३४) मे मिल सकता है। जर्मनी मे बेरोजगारी के कारण ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयीं जिनका प्रयोग हिटलर ने अपने लिए निरंकुश सत्ता प्राप्त करने के लिए किया। इस निरंकुश सत्ता का प्रयोग उसने राष्ट्र को पुनः शस्त्रसज्जित करने तथा इस प्रकार बेरोजगारों की भीड़ को सैनिक प्रभुत्व की अत्यंत वेगवान् तैयारियों में फिर से लगाने मे किया।

१. प्रथम महायुद्ध के उपरान्त शांति-स्थापना के लिए स्थापित की गयी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था। इसकी स्थापना का श्रेय अमरीका के तत्कालीन प्रेसीडेन्ट वुड्रो विल्सन तथा जनरल स्मट्स को था। परन्तु यह संस्था विश्व-शांति कायम रखने में असफल रही।--अनु०

१९१८ में पराजित युद्ध का देवता न केवल जर्मनी में बल्कि जापान, इटली और स्पेन में भी अपने सिहासन पर पुनः आसीन होने जा रहा था। जापान के जंगवाजों ने चीन में लड़ाई छेड़ दी थी; इटली मे मुसोलिनी एक आधुनिक रोमन साम्राज्य का स्वप्न देख रहा था और अबीसीनिया (वर्तमान इथियोपिया) और लीबिया को विजय करने की तैयारियाँ कर रहा था; और स्पेन मे भयानक बर्बरतापूर्वक गृह-युद्ध लड़ा जा रहा था।

इन परिस्थितियों में अनेक लेखकों का दृढ़ विश्वास हो गया कि यदि साहित्य किसी निश्चित सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति नही करता तो वह व्यर्थ है, तथा जो लोग इस बात मे विश्वास नही करते थे उनके बारे मे यह सोचा जाता था कि वे मात्र साहित्यिक कला के कल्पना-लोक में कर्त्तव्यविमुख होकर पडे थे। अतएव बीसवी शताब्दी की चतुर्थ दशाब्दी के काव्य और गद्य मे पुनः उसी गम्भीर भावधारा के दर्शन होते है जिसका मध्य-विक्टोरियन युग में प्राधान्य रहा था; परन्तु दोनो मे एक अन्तर था। विक्टोरियन युग में लोगों का ध्यान मुख्य रूप से 'इंग्लैण्ड की दशा' के प्रश्न पर केन्द्रित रहा था (अर्थात् निर्धनों को ऊपर उठाने की समस्या) तथा उनका साहित्य एक अहिंसक जनहितवाद से ओतप्रोत रहा था। परन्तु बीसवी शताब्दी की चौथी दशाब्दी की रचनाएँ सम्पूर्ण विश्व की दशा से इतनी ही अधिक मात्रा मे सबधित थी क्योकि हवाई यात्रा के कारण दुनिया उतनी ही छोटी मालूम होने लगी थी जितना एक शताब्दी पहले ब्रिटेन छोटा लगता था, तथा जनहितसंबधी आशावाद का स्थान पक्षपातपूर्ण प्रचार ने ले लिया था जो, यदि प्रत्यक्ष रूप से नही तो परोक्ष रूप से तो अवश्य, किसी विशेष राजनीतिक मत को विश्व के उद्धार के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करता था।

सोद्देश्य साहित्य के पक्ष में जो तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं वे स्पष्ट है, परन्तु उसके विरोध में प्रस्तुत किये जा सकने वाले तर्क इतने स्पष्ट नही है। साहित्य मात्र पैम्फ़लेट-रचना नही बल्कि उससे कही अधिक और ऊंचा है, नहीं तो वे हजारों पैम्फ़लेट जो अब विस्मृत हो चुके है अब भी इसी प्रकार पढे जा रहे होते जिस प्रकार उपन्यास और काव्य पढ़े जाते है। साहित्य एक सर्जनात्मक कला है जिसका निर्माण सर्जनात्मक साहित्यिक कलाकार करते है। कलाकारो की प्रेरक शक्ति कल्पना है जो उन्हे सत्य को उसके पूर्ण रूप में देखने और समझने की शक्ति प्रदान करती है। सत्य के दर्शन कराना ही वह विशिष्ट योगदान है जिसे मानवता को दे सकने मे कोई महान् कवि या महान् उपन्यासकार समर्थ होता है; दूसरे शब्दो मे, उस सौन्दर्य और

पूर्णता का दर्शन कराना जो मानवता का आदर्श ध्येय तथा वह प्रयोजन है जिसकी ओर समस्त वस्तुएँ गतिशील है। परन्तु वे एक-के-बाद एक कष्टकर कदम उठाते हुए, इतनी धीमी गति से चलती है कि उससे क्लश होता है; तथा राजनीतिज्ञों और समाजशास्त्रियों का सबंध इसी प्रगति से होता है जो प्रायः अलक्ष्य-सी होती है। यह कहा गया है कि राजनीति "जो संभव है उसकी कला" है (दि आर्ट ऑव दि पॉसिबुल)। इसके विपरीत यह कहा जा सकता है कि साहित्य "जो इष्ट है उसकी कला" (दि आर्ट ऑव दि डिज़ायरेबुल) है। जब कोई कवि अपनी प्रतिभा प्रचलित व्यावहारिक समस्याओ में लगाने का प्रयत्न करता है तो अधिक संभव तो यह है कि वह मानवता की सेवा करने के बजाय अपनी कल्पना को ही पगु बना लेगा, क्योकि (सच्चा) कवि महत्त्वपूर्ण तथ्यों को विरले ही महत्त्व देता है, यद्यपि वह हमको परम सत्य के दर्शन कराने मे समर्थ होता है। यदि वह अपना ध्यान तथ्यो पर ही केन्द्रित करके उसका दुरुपयोग करता तथा इस सामर्थ्य को खो देता है तो वह अपने जन्मसिद्ध अधिकार का बलिदान कर देता तथा अपने ध्येय के साथ विश्वासघात करता है। 'माडर्न लव' मे जॉर्ज मेरिडिथ द्वारा एक भिन्न प्रसंग मे प्रयुक्त की गयी पक्तियो को थोड़ा परिवर्तित करके कहें तो वह उस तीव्रगामी बाज के समान हो जाता है जिसके भाग्य मे चमगादड की तरह फड़फड़ाना ही लिखा है। जब-जब कवि लोग इस विश्वास के कायल हुए है कि यदि साहित्य मे तात्कालिक विषयो से सबधित कोई सामाजिक चेतना विकसित नहीं होती तो वह अयोग्य है, तब-तब उनका अंत इसी प्रकार हुआ है। बीसवी शताब्दी की चतुर्थ दशाब्दी का बहुत-सा साहित्य इसी चेतना से ग्रस्त था, तथा जब भावी पीढियाँ इस युग के लेखको और उनकी रचनाओ का परीक्षण करेगी तो जहाँ तक सभव है वे उनका मूल्याकन उसी सीमा के अनुपात मे करेगी जिस तक उनकी दृष्टि अपने समय के सक्षोभो से आगे जा सकेगी। यदि कोई कवि या उपन्यासकार अपने कल्पना-लोक से नीचे उतरकर राजनीतिक अखाड़े मे अपनी कारगुजारी दिखाने लगता है तो उसका दृष्टिक्षेत्र और बुद्धि दोनो संकुचित हो जाते है। कल्पना-लोक में रहकर वह देख भी अधिक सकता है तथा ऐसे ज्ञान की बात भी अधिक कर सकता है जो हमारी रक्षा कर सके।

१३२. जिरार्ड मैन्ली हॉप्किन्स—साहित्यिक इतिहास में जिरार्ड मैन्ली हॉप्किन्स (१८४४–८९) का उदाहरण अपने ढग का अनोखा है; उसकी तुलना और किसी से नही हो सकती। अपने जीवन-काल में उसने अपनी एक भी रचना नही प्रकाशित करवायी, फिर भी जब से उसकी सग्रहीत कविताएँ सर्वप्रथम १९१८

में प्रकाशित हुईं, उसके बाद से नयी पीढ़ी पर उसका इतना गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा कि वर्तमान समय तक की कविता का रूप बदल गया, तथा उसका प्रभाव अब भी निःशेष नही हुआ है। हाईगेट स्कूल मे प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करके हॉप्किन्स ने बेलियल कालेज, आक्सफर्ड मे प्रवेश किया जहाँ वह ऐग्लिकन हाई चर्च दल का अनुयायी बन गया। परन्तु १८६६ में वह रोमन कैथलिक बन गया और दो वर्ष उपरान्त 'सोसाइटी ऑव जीज़स' का सदस्य बन गया। एक धर्मनिष्ठ जेसुइट (अर्थात् 'सोसाइटी ऑव जीजस' के सदस्य) के रूप में उसने अपना यह धार्मिक कर्तव्य समझा कि वह कविता लिखना बन्द कर दे, परन्तु दिसम्बर १८७५ में एक जहाज-दुर्घटना में पाँच फ़्रांसिस्कन भिक्षुणियों की डूबने से हुई मृत्यु ने उसको अपनी उच्च कोटि की कविता 'दि रॅक ऑव दि ड्यूशलैण्ड' की रचना करने के लिए प्रेरित किया। हॉप्किन्स अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति का तो था ही, साथ ही प्रकाण्ड विद्वान् भी था तथा उसका मस्तिष्क असाधारण रूप से संयमित, सूक्ष्म और बहुमुखी था। १८८४ में उसे डबलिन विश्वविद्यालय में यूनानी भाषा का प्रोफ़ेसर नियुक्त किया गया। यद्यपि उसे प्रकृति के सौन्दर्य से अनुराग था ('पाइड ब्यूटी' में उसने लिखा है—"ईश्वर, तू धन्य है; तूने चित्तीदार वस्तुओं, दोहरे रंग वाले आकाश,—फिन्च पक्षी के पंखों तथा टुकड़ों और भूखण्डो में विभाजित दृश्यावली की सृष्टि की"),[1] तथापि उसने काव्य-रचना की रोमाण्टिक शैली का परित्याग कर दिया जिसका व्यवहार सम्पूर्ण उन्नीसवी शताब्दी में होता रहा था तथा जो प्रथम विश्वयुद्ध की अन्तिम अवस्थाओं तक प्रचलित रही। उसने पद्य-रचना की जिस प्रविधि तथा जिन छन्द-रूपों का व्यवहार किया उनके लिए कुछ अंशों में वह जॉन डन तथा सत्रहवी शताब्दी के अन्य आध्यात्मिक कवियों का ऋणी था, परंतु उसने दूसरों का अनुकरण कम और नयी-नयी प्रवृत्तियो का सूत्रपात अधिक किया। उसने अपने छन्द-विधान का वर्णन करने के लिए 'स्प्रंग रिद्म',[2] तथा विषय-वस्तु के निर्वाह मे जो ध्येय अपने सामने रखा था उसके स्पष्टीकरण के लिए

1. "Glory be to God for dappled things—For skies of couple colour—finches' wings; Landscape plotted and pieced."

२. **जिस पंक्ति में कई प्रकार के छंद मिश्रित हों तथा प्रत्येक पद में प्रथम शब्दांश दीर्घ हो उसे 'स्प्रंग रिद्म' कहते हैं ('रिद्म', अर्थात् 'लय')।—अनु०**

'अपलायन' ('इन्स्केप') शब्द का प्रयोग किया है। जब तक हम इन दोनों पदों के साथ-साथ उसकी कविताओं और उसके उन पत्रो का सूक्ष्म अध्ययन न करें जिनमें उसने अपने मित्रो को इनके विषय मे लिखा था, तब तक इन दोनो में से किसी की भी परिभाषा देना सभव न होगा। १९१८ वाले संग्रह का सम्पादन राबर्ट ब्रिजेज ने किया था जो उसके प्रमुख मित्रो मे से था, यद्यपि हॉप्किन्स की विधियों एवं विश्वासों से उसको कोई विशेष सहानुभूति नही थी। जॉन पिक द्वारा १९५३ में सगृहीत 'ए हॉप्किन्स रीडर' मे उसकी कविताओ और पत्रों का उदारतापूर्वक चयन किया गया है तथा इससे एक ऐसे दुर्बोध लेखक का अत्यंत लाभकर और प्रबोधक परिचय प्राप्त होता है जिसको उसके प्रशंसक और शिष्य महान्तम अग्रेजी कवियो में स्थान देते है।

क्योकि यह बात बड़ी विचित्र है कि १८८९ में मरे हुए किसी कवि को उसके बहुत समय बाद वाले युग से सबधित अध्याय मे स्थान दिया जाय, इसलिए सक्षेप मे इस बात के कारणो की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि हमारे समकालीनों को धार्मिक और विधार्मिक ('नॉन-रेलिजस') दोनों को—हॉप्किन्स अपने इतना अधिक अनुरूप क्यों लगता है। यह जानना तो असभव है कि यदि उसने अपनी रचनाओ को तभी प्रकाशित कराया होता जब वह जीवित था तो उसका क्या प्रभाव पड़ता, परन्तु कम से कम संभावना इसी बात की है कि उससे लोग बहुत कम प्रभावित हुए होते, क्योकि विक्टोरियन युग की भावना अधिकाश मे हॉप्किन्स की भावना के विरुद्ध ही थी, तथा 'विचारो का जलवायु' (अर्थात् बौद्धिक वातावरण) बौद्धिक विभिन्नता तथा इस प्रकार के आध्यात्मिक परीक्षण के पक्ष में नही था। यद्यपि छोटे-छोटे युद्ध भी हुए और निर्धनता भी काफी थी, फिर भी शिक्षित वर्गो ने लम्बे कालों तक शान्ति और समृद्धि का उपभोग किया था। उनके लिए जीवन सरल और सुखमय था। परन्तु १९१४ मे महायुद्ध छिड़ जाने पर यह सब कुछ बदल गया। संसार का दृढ़ और सुरक्षित आधार विलुप्त हो गया; अचानक ही जीवन न सरल रह गया और न सुखमय। पुरानी पीढ़ी तो अब भी आशापूर्वक एक सुस्थिर संसार की अपनी स्मृतियों से चिपकी हुई थी, परन्तु नयी पीढ़ी को सक्षुब्ध वर्त्तमान और सन्देहास्पद भविष्य का ज्ञान अधिक था। साहित्य के क्षेत्र में जिन मृदु रोमाण्टिक रचनाओं ने पुरानी पीढ़ी को सन्तोष प्रदान किया था तथा १९१४ तक स्वयं नयी पीढ़ी का भी मनोरंजन किया था, वे अब सारहीन और रिक्त मालूम होने लगीं। जीवन का संस्कृत और कान्तिमान् धरातल नष्ट-भ्रष्ट हो गया तथा उसके नीचे एक अंधकारमय गह्वर दिखाई पड़ने लगा। यह गह्वर कितना भी भयदायक प्रतीत हो, नयी पीढ़ी ने उसका अन्वेषण

करना अपना दृढ़ कर्तव्य बना लिया। उनके बड़ों के लिए धर्म सुख का प्रधान स्रोत रहा था, परन्तु अब ऐसे धर्म से लोगो को सन्तोष नही होता था जिसमे ईसाई धार्मिक प्रथाओं को शान्तिपूर्वक मानने से अधिक और किसी बात की आवश्यकता नही थी। जीवन खण्डित और विषम बन गया था, अब वह किसी ग्रामीण (अथवा चरागाह के) दृश्य की भाँति समतल और मनोहर न रह गया था, बल्कि कठोर पर्वतों और खाइयों का प्रदेश बन गया था।

यही वह दृश्य था जिसका चित्रण जिरार्ड मैन्ली हॉप्किन्स की कविताओं में हुआ था, तथा शीघ्र ही उन्हे एक ऐसे आध्यात्मिक अन्वेषक की रचनाओं के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी जिसकी दृष्टि जीवन के ऊपरी धरातल से नीचे तक गयी थी और जिसकी काव्यकला नयी पीढ़ी की आवश्यकताओ के अनुकूल थी। इन रचनाओं में हमे ऐसे काव्य के दर्शन हुए जो कृत्रिमताओं के धरातल पर फिसलने वाले और भूमि को चिकनी तथा समतल बनाने वाले जहाज की भाँति नही, बल्कि चट्टानों को छेदने वाले बमों की भाँति काम करता था जो बाह्य वस्तुओ को फोड़कर वास्तविकताओं तक घुसता चला जाय; और वास्तविकताएँ धार्मिक तथा अधार्मिक दोनों प्रकार के व्यक्तियों का ध्येय थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो हॉप्किन्स को एक काव्यात्मक अस्त्र प्राप्त हो गया था तथा उसने इस अस्त्र को अन्य लोगों को सौप दिया था जिसका वे अपने-अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए प्रयोग कर सकते थे, चाहे उनके विशिष्ट उद्देश्य उसके अपने उद्देश्यो के समान हों या न हों।

परन्तु किसी अस्त्र को हाथ में ले लेना तो सरल है, उसका सफलतापूर्वक प्रयोग करना उतना सरल नही है। क्योकि उसके अनुयायियो मे से बहुत-से लोग सरल, सुबोध काव्य से ऊब चुके थे और क्यों कि उन्होने उसकी कविता को इसीलिए पसन्द किया था कि वह सरल नही थी, इसलिए उन्होने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया कि स्वयं कठिनता को ही अपना ध्येय बना लेने में कोई गुण नही है। हॉप्किन्स कभी-कभी कितना भी कठिन क्यों न हो, वह सदैव कोई ऐसी बात कह रहा होता है जो कहने योग्य है, जिसको समझने के लिए पाठक का परिश्रम करना सार्थक है। १९१८ के उपरान्त हॉप्किन्स का जो व्यापक प्रभाव पड़ा वह अंग्रेजी काव्य के लिए पूर्णतया हितकर नही था, क्योंकि इसके कारण उससे कम प्रतिभा वाले व्यक्तियों मे यह मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गया कि सुस्पष्टता दुर्बोधता से निम्न कोटि की वस्तु है, तथा दुर्बोधता होने पर गहनता अपने आप आ जाती है। वास्तव में, सत्य तो यह है कि कोई अच्छा कवि कठिन चाहे कितना हो, दुर्बोध कभी नही होता, यदि

दुर्बोधता से हमारा तात्पर्य यह है कि जो बात वह कह रहा है वह उसकी भाषा सीखे हुए लोगों की समझ में भी न आये। मिल्टन तभी तक दुर्बोध लगता है जब तक उसकी भाषा पर हमारा अधिकार नहीं हो जाता; ब्राउनिंग तभी तक दुर्बोध है जब तक हम उसकी भाषा का पूर्ण ज्ञान नही प्राप्त कर लेते। इसके विपरीत हॉप्किन्स के अनुकरणकर्ताओ में से अनेक इस कारण दुर्बोध है कि उनकी अपनी कोई भाषा नही, कोई व्यक्तिगत काव्यात्मक पद्धति नही, तथा कहने के लिए उनके पास ऐसी कोई बात नही जो सादे गद्य में न कही जा सकती हो, जबकि (अर्थात् गद्य मे लिखने पर) उसकी निस्सारता अपने आप स्पष्ट हो जायगी।

क्योकि हॉप्किन्स का इतना अधिक प्रभाव पड़ा, इस कारण यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि हम उन कवियो को जिनकी रचनाएँ उसके उदाहरण द्वारा वस्तुतः आलोकित हुई है, उन दूसरे कवियों से पृथक् कर ले जिन्होने बिना सोचे-समझे हॉप्किन्स-पंथ को अगीकर कर लिया और उसके कारण ऐसी गली मे घुस गये जिसमे से बाहर निकलने के लिए मार्ग ही नही था।

१३३. टी० एस० ईलियट व अन्य कवि––किसी भी साहित्यिक पंथ की स्थापना शोचनीय है क्योंकि इसके कारण अन्य लेखको में अविवेकपूर्ण अनुकरण तथा बहुसंख्यक पाठको में अविवेकपूर्ण प्रशसा की प्रवृत्ति उत्पन्न हो सकती है; उससे स्वतंत्र सर्जन तथा स्वतन्त्र आलोचनात्मक निर्णय की शक्ति नष्ट हो जाती है। हॉप्किन्स-पथ को टी० एस० ईलियट (जन्म, १८८८) पंथ से पृथक् करना कठिन है। दोनो एक ही समय, साथ-साथ चलते रहे हैं तथा इन दोनो कवियों की रचनाओं में गहरा सादृश्य भी है। परन्तु ईलियट को केवल हॉप्किन्स का शिष्य नही समझना चाहिए। यद्यपि जिस प्रकार वर्त्तमान युग के अन्य समस्त लेखक हॉप्किन्स से प्रभावित रहे उसी प्रकार वह भी उसके प्रभाव से अछूता नही बचा, तथापि उसकी प्रथम कविता-पुस्तक ('प्रूफ्रॉक ऐण्ड अदर ऑब्जर्वेशन्स', १९१७) हॉप्किन्स की कविताओं से पहले प्रकाशित हुई थी, तथा उसका सम्पूर्ण साहित्य अत्यधिक वैयक्तिक एवं सर्जनात्मक रूप से व्यक्तिगत है। उसका जन्म १८८८ में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में हुआ तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा अमेरिका और फ्रांस में हुई। फिर वह इंग्लैण्ड में बस गया और अन्त में ब्रिटिश नागरिकता भी ग्रहण कर ली। 'दि वेस्ट 'लैण्ड' (१९२२) द्वारा उसने जो ख्याति अर्जित की उसने उसको अंग्रेजी-भाषी संसार का सर्वप्रमख जीवित कवि बना दिया, यद्यपि कुछ वर्षो तक उसने बहुत ही कम साहित्य रचा, जिसमें से पद्य में तो केवल दो छोटी रचनाएँ थी जिनके नाम हैं 'दि जर्नी ऑव दि मेजाइ' और

'ऐश वेन्सडे'। परन्तु इस अवधि में उसने गद्य में बहुत-सी आलोचनात्मक रचनाएँ लिखी जिन्होने दान्ते, मिल्टन तथा अतीत के अन्य लेखकों के अध्ययन पर वैसा ही गहरा प्रभाव डाला जैसा उसका काव्य अपने क्षेत्र मे डाल रहा था। 'दि वेस्ट लैण्ड' में, जो मुक्त छन्द मे रचित तथा विभिन्न प्रकार के साहित्यिक सन्दर्भों व उद्धरणों से परिपूर्ण है, तत्कालीन संसार की दशा का एक अशान्ति और क्षोभ पैदा करने वाला चित्र खीचा गया है। इसमे धीरे-धीरे कवि भविष्यवक्ता की-सी वाणी बोलने लगता है परन्तु उस वाणी मे ईसाई धर्म से संबधित आशा जरा भी ध्वनित नही होती। महायुद्ध के उपरान्त ईलियट ने मानव-समाज को जिस परिस्थिति मे देखा उसी का इसमे जेरिमाया का-सा नैराश्यपूर्ण चित्र खीचा गया है; इसमे मानव-समाज को भ्रमित, कलुषित, भावनाशून्य तथा कुल मिलाकर भयानक रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इसमे जान-बूझकर अनाकर्षक उपमान रखे गये है, और कही-कही पर तो जान-बूझकर कुरूप तथा शहरी जीवन के कुत्सित पक्ष से लिये हुए उपमान प्रयुक्त किये गये है। कारण यह है कि इस कविता की रचना द्वारा कवि गंभीरतापूर्वक पाठकों में क्षोभ उत्पन्न करना चाहता था, उसका उद्देश्य पाठको की भावना को ठेस पहुँचाकर उन्हे ससार की 'मरुभूमि' जैसी दशा—अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि से शुष्क तथा भौतिक दृष्टि से अस्त-व्यस्त दशा—का वास्तविक परिचय कराना था। कुछ वर्षों तक इस कविता को लोग बहुत ही कम समझ सके, तथा जिन लोगों का पालन-पोषण रोमाण्टिक कविता द्वारा ही हुआ था उन्हे यह बड़ी ही अरुचिकर लगी। इस रचना ने न केवल अपने भावो द्वारा लोगो की सौदर्य-भावना को आघात पहुँचाया, वरन् अपनी शैली द्वारा भी, क्योकि ईलियट ने इसमे ऐसे छन्द-विधान का प्रयोग किया है जो चित्र को सजाना और कोमल बनाना तो दूर रहा, उसके सक्षोभकारी उद्देश्य को ही और भी दृढ करता है। परन्तु जिस प्रकार किसी पत्रहीन वृक्ष अथवा बिलकुल श्वेत हो गये प्रस्तरीभूत आकार मे अपना एक विशिष्ट नग्न सौन्दर्य होता है, उसी प्रकार ईलियट की अनलकृत और कठोर पक्तियों मे अपना एक सयमित सौन्दर्य है। उसने अभी से छन्द-रचना के उस सिद्धात को व्यवहार मे लाना प्रारभ कर दिया था जिसको वह आगे चलकर काव्यात्मक नाट्य मे प्रयोग करके विकसित करने वाला था। इस सिद्धांत के अनुसार कविता स्वाभाविक, बोलचाल की भाषा की लय के अनुसार होनी चाहिए, तथा उसमे साहित्यिक भाषा की कृत्रिमताओं से बचना चाहिए। इस बात की प्रामाणिकता की परीक्षा ईलियट के नाटकों द्वारा की जा सकती है। प्रारंभ मे लिखे गये 'मर्डर इन दि कैथीड्रल' व 'दि फेमिली

रीयूनियन' की अपेक्षा 'दि कॉक्टेल पार्टी' और 'दि कॉन्फ़िडेन्शल क्लार्क' में इस सिद्धांत का पालन अधिक हुआ है। इन नाटकों का परीक्षण करते समय यह विचार करना चाहिए कि जिन श्रोताओं ने इनकी पक्तियों को छपे हुए कागज पर पद्य के रूप में पहले से नही देखा वे समझ पायेगे या नही कि उनमें और गद्य मे अन्तर है। धार्मिक कवि के रूप मे ईलियट के विकास का पता 'दि वेस्ट लैण्ड' के बाद लिखी गयी उसकी अधिकांश रचनाओ, नाटकीय एवं अनाटकीय काव्य, दोनो से चल सकता है। उसका अनाटकीय काव्य 'फ़ोर क्वार्टेट्स' (१९४४) के रूप मे संगृहीत कविताओ मे अपने चरम शिखर पर पहुँचा।

टी० एस० ईलियट के अधिकारपूर्ण प्रभाव के कारण जो कविता शाब्दिक समृद्धि और उल्लासपूर्ण भावना से सम्पन्न होती थी, उसके प्रति कवि लोग बड़ा भीरु दृष्टिकोण अपनाते थे। काव्यात्मक नाट्य के अभिनेताओ ने तो इस परम्परा का ऐसा पूर्ण निर्वाह किया कि शेक्सपियर के संवाद इस प्रकार बोले जाने का फैशन बन गया जिससे यह प्रतीत होता था कि उनका विचार था कि कविता को रंगमच पर एक पापपूर्ण रहस्य के रूप मे रखा जाय जिसको श्रोताओं से छिपाना आवश्यक था। लोगों का विश्वास था कि श्रोतागण कविता को पसन्द नही करते थे। परन्तु यह एक भ्रामक विचार था जो सौभाग्यवश उस समय दूर हो गया जब क्रिस्टफर फ्राई का नाटक 'दि लेडीज़ नाट फ़ॉर बर्निंग' १९४९ में बहुत दिनों तक बडी सफलतापूर्वक चलता रहा तथा इसके बाद भी अनेक 'रेपर्टरी'[१] थियेटरो और गैर पेशेवर कम्पनियो द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस नाटक की सफलता इस बात के कारण नही है कि इसमें एक घुमक्कड़ और एक विख्यात 'विच' (जादू-टोना करने वाली स्त्री, 'टोनहिन') के विचित्र प्रेम की कथा है, बल्कि इसके वेगवान् भाषा-सौन्दर्य तथा इसके शाब्दिक वाग्वैदग्ध्य के कारण है। सफल नाटककार बनने से पूर्व क्रिस्टफर फ्राई (जन्म १९०७) ने रंगमच का पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया था। उसके प्रथम प्रकाशित नाटक 'दि ब्वाय विद ए कार्ट' (१९३९) मे ईलियट का प्रभाव स्पष्ट था, परन्तु 'दि लेडीज़ नॉट फ़ॉर बर्निंग' में उसने इस प्रभाव पर काफ़ी हद तक विजय प्राप्त कर ली थी तथा स्वयं अपनी

१. 'रेपर्टरी' थियेटर उनको कहते हैं जिनके पास खेले जाने वाले नाटकों का स्टाक तैयार रहता है।—अनु०

प्रचुर शब्द-सम्पन्नता को पूरी छूट देकर उसने विभिन्न बौद्धिक एवं सामाजिक सतहो पर रहने वाले हर प्रकार और दशा के लोगों को आनद प्रदान किया। कुछ आलोचकों ने प्रचलित फ़ैशन का परित्याग करने के कारण फ़ाई की भर्त्सना की तथा उत्तरकालीन नाटकों (उदाहरणार्थ 'ए स्लीप ऑव प्रिजनर्स' और 'दि डार्क इज लाइट एनफ') में अपनी भाषा पुन· कठोर रूप से संयमित हो जाने के कारण वह उसी के अनुसार कम लोगो को आकर्षित करने लगा।

बीसवी शताब्दी की चतुर्थ दशाब्दी मे डब्लू० एच० ऑडेन व क्रिस्टफर इशरवुड ने 'दि डॉग बिनीथ दि स्किन', 'दि असेण्ट ऑव एफ० सिक्स' तथा 'ऑन दि फ्रन्टियर' में परस्पर सहयोग करते हुए तथा स्टीफन स्पेण्डर ने 'दि ट्रॉयल ऑव ए जज' मे अनेक प्रयास किये, जिनमे या तो बिलकुल ही सफलता नही मिली, या मिली भी तो केवल सीमित रूप मे। ये सभी नाटक कुछ न कुछ हद तक, प्रत्यक्ष अथवा प्रतीकात्मक रूप से, इस काल के राजनीतिक सकटों से सम्बन्धित थे, तथा उन विशिष्ट संकटों के अतीत के गर्भ मे डूब जाने के कारण इन नाटकों का महत्त्व भी कम हो गया है। इस दशाब्दी के विकासमान युवा कवियों मे डब्ल० एच० ऑडेन (जन्म, १९०७) और सी० डे लूइस (जन्म, १९०४) ने युद्ध के उपरांत भी अपनी वह ख्याति बनाये रखी जो उन्होंने पहले अर्जित की थी, यद्यपि दोनों ने पहले के अपने राजनीतिक विचारों में सुधार कर लिया। ऑडेन सयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे बस गया, और सी० डे० लूइस ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय मे काव्य का प्रोफेसर हो गया। लुई मैक्नीस (जन्म, १९०७) और स्टीफन स्पेण्डर (जन्म, १९०९) चतुर्थ दशाब्दी में जितने प्रमुख रहे उतने बाद में नहीं रहे, यद्यपि मैक्नीस ने कालान्तर मे रेडियो पर ब्रॉडकास्टिग करने के लिए कई रोचक नाटकों की रचना की।

कविता के सवेग और आकस्मिक उद्भव की, जो प्रथम विश्वयुद्ध का इतना महत्त्वपूर्ण साहित्यिक लक्षण था, पुनरावृत्ति दूसरे महायुद्ध के समय में नही हुई। जब १९३९ में द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ हुआ, तो उसके लिए जनसाधारण में कोई उत्साह अथवा कोई शौर्यपूर्ण आदर्शवाद न था, तथा अपनी अपेक्षाकृत अंधकारमय अवस्थाओ में तो उसने दृढ़ निश्चय को छोड़कर और कोई उत्कर्षकारी भाव उत्पन्न नही किया। उस वातावरण में कविता का पोषण होना कठिन ही था ; इसके अतिरिक्त सहनशीलता की शोधित मनोदशा मे उस समय जो कविता लिखी भी गयी वह अधिकांश में साधारण पाठक की समझ से परे थी। महायुद्ध से पहले

के वर्षों मे जनसाधारण के लिए काव्य-रचना करने की आवश्यकता पर बड़ा बल दिया गया, परन्तु जो लोग अपने विषय मे यह घोषित करते और समझते भी थे कि हम इस आवश्यकता को पूरा कर रहे है, उनका अपने इच्छित श्रोताओं से कोई बौद्धिक अथवा भावनात्मक सम्बन्ध न था, तथा तत्परतापूर्वक लगे रहने वाले कुछ पाठको को छोड़कर अन्य सभी पाठको से आधुनिक कविता का सम्बन्ध बिलकुल छूट गया। जब से द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ तब से यद्यपि ऐसे प्रारभिक लक्षण प्रकट हुए है जिनसे एक सरलतर तथा सामान्य रूप से अधिक समझ में आने वाली कविता की ओर प्रत्यावर्त्तन सभव प्रतीत होता है, तथापि ऐसा कोई कवि सामने नही आया जिसको व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त हुई हो, और और ऐसा तो कोई भी नही है जिसकी प्रतिभा योग्यता की साधारण अवस्था से ऊपर उठती हुई प्रतीत हो। डाइलन टॉमस ने (१९१४-५३), जिसने चौथा दशाब्दी में कविता लिखना प्रारभ किया, मुख्यतः रेडियो-ब्रॉडकास्टर के रूप मे अपनी सफलता के कारण जितने विस्तृत जन-समुदाय तक अपनी आवाज़ पहुँचायी उतना उसकी पीढी के बहुत ही कम कवि कर पाये। मृत्यु से थोड़े ही समय पूर्व समाप्त किये गये काव्यात्मक रेडियो कल्पना-नाट्य ('फैण्टसी') 'अण्डर मिल्क वुड' के कारण निधनोपरात उसकी बड़ी ख्याति हुई। इस बात का निर्णय अभी नही किया जा सकता कि उसके अन्य काव्य (अर्थात् नाटकेतर काव्य) को अग्रेजी साहित्य मे स्थान प्राप्त होगा या उसके अपेक्षाकृत अधिक उल्लेखनीय गुणो को उसके बाह्य आध्यात्मिक निर्बन्ध आत्मसात् कर लेगे।

युग की समस्त वेगवती प्रवृत्ति-धाराओं से अलग बने रहने के कारण सिट्वेल परिवार ने अपनी स्थिति अद्वितीय रूप से सुदृढ कर ली। प्रारम्भ मे उद्दण्ड और तुच्छ कह कर उनका उपहास किया गया, क्योकि अपनी युवावस्था मे उन लोगों ने प्रत्येक रूढिगत वस्तु का मजाक उड़ाया था तथा एडिथ सिट्वेल (जन्म, १८८७) का प्रारभिक काव्य प्रायः अस्वाभाविक और खिलौने-जैसा मालूम होता था, यद्यपि वह लेखिका की प्रयोग करने तथा पद्य के प्राविधिक क्षेत्र को विस्तृत करने की इच्छा द्वारा विरचित हुआ था। परतु १९३९ मे द्वितीय महायुद्ध प्रारभ हो जाने के कारण जो गम्भीरतर प्रवृत्तियाँ उसके मध्यकाल में निश्चित रूप से विकसित हो रही थी उनको बड़ा बल और प्रेरणा प्राप्त हुई। अभी तक उसने जितना साहित्य रचा है उसका समग्र रूप से विचार करने पर, तथा जो भविष्य मे आने वाला है उसका विचार न भी करे तो, उसकी गणना महान्तम अग्रेजी कवयित्रियो में करनी

होगी। यद्यपि एमिली ब्रॉण्टी और एलिस मीनेल ने कतिपय श्रेष्ठ लघु कविताएँ लिखीं, उन्होने ऐसी कोई भी चीज नही लिखी जिसकी तुलना एडिथ सिट्वेल की अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध रचनाओं से की जा सके; तथा श्रीमती ब्राउनिग, केवल 'सॉनेट्स फ्राम दि पोर्चुगीज' नामक रचना को छोडकर, प्राविधिक तथा अन्य दृष्टि से भी उससे निम्न कोटि की थी। सर ऑज्बर्ट सिट्वेल (जन्म १८९२) ने 'लेफ्टहैण्ड, राइट हैण्ड' नामक एक उल्लेखनीय आत्मकथा पाँच भागो में, जिनके नाम अलग-अलग है, १९४५-५० में प्रस्तुत की। यद्यपि इसके पहले ही वह कवि, उपन्यासकार, कहानीकार तथा यात्रा-लेखक के रूप मे सुविख्यात हो चुका था, परन्तु इस आत्म-कथा ने अन्य सब रचनाओं को पछाड दिया। इसमें उसने अपने युग का चित्र खीचा तथा इसके अतिरिक्त अनेक उत्कृष्ट जीवनियाँ दी है। अपने पिता का जो चित्र उसने प्रस्तुत किया है वह तो असाधारण रूप से सुन्दर बन पडा है। सैचीवरेल सिट्वेल (जन्म, १९००) ने कुछ काव्य भी लिखा, परन्तु मुख्य रूप से उसने कला पर ही रचनाएँ प्रस्तुत की है।

डब्लू० बी० येट्स के प्रारभिक साहित्य का उल्लेख इस पुस्तक के पिछले अध्याय मे किया जा चुका है। यहाँ उसका उल्लेख पुन. होना आवश्यक है क्योंकि उसने प्रारभ तो उत्तर-विक्टोरियन युगीन रोमाण्टिक कवि के रूप मे किया था, परन्तु अन्त बीसवी शताब्दी के आध्यात्मिक कवि के रूप मे किया जो नयी पीढ़ी के कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रहा था। यदि हम सुन्दर परन्तु सरल 'लेक आइल ऑव इनिस्फ्री' की तुलना 'बाइजैण्टियम' से करे, जो सुन्दर और गम्भीर है, तो उसकी प्रगति का पता चल सकता है। उसका जीवन विजय एव शोचनीय करुणा दोनो से पूर्ण था। उसने दो परस्पर-विरोधी युगो मे जैसी सफलतापूर्वक जीवन-यापन किया उसका अनुभव शायद ही किसी को हुआ हो। अपने प्रारभिक काव्य के कारण उसे व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई तथा अपनी उत्तरकालीन कविता के लि् गहन बौद्धिक समादर प्राप्त हुआ। यह उसकी विजय थी। परन्तु इसके साथ-साथ दु.ख की बात यह थी कि उसके वृद्ध होते हुए शरीर में ऐसी आत्मिक शक्तियाँ तथा अन्त प्रेरणा की ऐसी अविलम्बता बनी रही जिनको उसकी निरन्तर घटती हुई शारीरिक योग्यता न तो अपनी इच्छा भर पूर्ण रूप से उपयोग मे ही ला सकती थी और न उसकी अवशिष्ट शक्ति के अनुपात मे उनको घटा ही सकती थी।

वाल्टर डी ला मेयर (जन्म, १८७३) नयी प्रवृत्तियों से अपेक्षाकृत कम ही

प्रभावित हुआ है तथा दृढ़तापूर्वक अपने ही पथ पर चलता रहा है। इसी कारण वह एक ऐसा कवि है जिसको भावी पीढियाँ उन युवा 'प्रयोगवादी' कवियो मे से अधिकाश की अपेक्षा अधिक ऊँचा स्थान प्रदान कर सकती है, जिन्होने उसके साहित्यिक जीवन के अतिम वर्षों मे अधिक ध्यान आकर्षित किया। 'पीकॉक पाइ' तथा अन्य रचनाओ में उसने बच्चो के लिए अनेक आनन्ददायक कविताएँ लिखीं, तथापि बच्चों के लिए लिखी गयी समस्त उच्च कोटि की रचनाओं के समान, उनमें शुद्ध रूप से बचपन की ही बाते नही बल्कि और भी बहुत कुछ है, तथा बडे लोगों को उनमे अत्यधिक बुद्धिमानी के दर्शन होते है। डी ला मेयर सदैव इस प्रकार कविताएँ लिखता है कि उनमे शब्दो का जो वास्तविक तात्पर्य होता है उससे आगे एक गहरा आशय भी ध्वनित होता है। सभी अच्छे कवि ऐसा करते है, परतु वह बाह्य रूप से अपनी शैली को ऐसी सादगी और स्वाभाविकता से सयुक्त कर देता है कि हो सकता है जल्दबाज पाठक ऊपरी धरातल से नीचे वाली किसी चीज का पता ही न पाये। वह रहस्य, जादू तथा शान्ति की श्वासहीन अलौकिकता की ओर अत्यन्त कुशलता तथा प्रभावोत्पादकता के साथ सकेत करता है, तथा हर प्रकार से एक असाधारण कवि है जो उल्लसित-हृदय, और जिस समय गम्भीरता उपयुक्त हो उस समय, मस्तिष्क एवं स्वभाव से गभीर भी हो सकता है। अवश्य ही, बच्चो के लिए लिखी गयी कविताओ की अपेक्षा परिपक्वावस्था वाले पाठकों के लिए उसने जो कविताएँ लिखी है उनकी संख्या अधिक है तथा उसके साहित्य का अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण अंश इन्ही कविताओ का है। उसने उपन्यास (उदाहरणार्थ 'मेम्वाएर्स ऑव ए मिजेट') तथा बहुत-सी कहानियाँ भी लिखी है, परन्तु इन सब मे वातावरण विचित्रता का ही है।

१३४. **उपन्यास-साहित्य का बदलता हुआ रूप**––'मिस्टर बेनेट ऐण्ड मिसेज़ ब्राउन' शीर्षक एक निबंध में बर्जिनिया वुल्फ (१८८२-१९४१) ने आर्नल्ड बेनेट को प्राचीन ढग के उपन्यासकारों का प्रतिनिधि उदाहरण माना है जिनके विषय में उसका विचार था कि उनमें ऐसे चरित्रो की सृष्टि करने की क्षमता नही थी जो स्त्री-पुरुषो के भोडे, बाह्य रेखा-चित्रों से अधिक हों। उसने स्वयं अपना ध्येय यह बनाया कि वह किसी ऐसी सुन्दरतर वस्तु का निर्माण करे जो मानव-जीवन के सार-तत्त्वो का ज्ञान करा सके। उसने अपने उपन्यासों मे जो कार्य सम्पादित किया वह ऐसा सुन्दर और विलक्षण था कि उसकी काल्पनिक सहयात्रिणी श्रीमती ब्राउन उन्हें शायद ही वास्तविक और मानवीय कहकर स्वीकार करती। श्रीमती

वुल्फ (वर्जिनिया स्टीफेन) का जन्म एक साहित्यिक परिवार मे हुआ जहाँ उसके पिता सर लेस्ली स्टीफेन ने एक ऐसा पुस्तकालयी वातावरण निर्मित कर दिया था जिसमें विद्वत्ता और सुन्दर विचार उन तीव्र चेतनाशक्तियों एवं भावनात्मक ग्रहण-शक्तियों को बड़ा प्रोत्साहन प्रदान करते थे। इन्ही शक्तियो ने बाद में लिखे गये उसके उपन्यासों को ऐसा विशिष्ट रूप प्रदान कर दिया कि पहले इस प्रकार के ऐसे कोई भी उपन्यास नही लिखे गये थे। ल्योनर्ड वुल्फ़ से, जो स्वयं भी लेखक था, विवाह करने पर उसने एक दूसरे साहित्यिक वातावरण में प्रवेश किया जहाँ वह उस वर्ग की प्रमुख लेखिका बन गयी जो बीसवी शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दी मे 'ब्लूम्सबेरी सेट' के नाम से विख्यात था (लिटन स्ट्रेची भी इस वर्ग के सदस्यो मे से था)। ये बुद्धिजीवी आपस मे राजनीतिक और साहित्यिक विषयों पर विचार-विमर्श करते थे तथा उनकी रुचियाँ बड़ी ही व्यापक और विस्तृत थी। फिर भी वे एक ऐसे दायरे मे रहते थे जो अधिकांशतः एक ऐहलौकिक सन्यास-आश्रम के समान था जिसमे साधारण जीवन की अपेक्षा कठोर एव असस्कृत परि-स्थितियों के लिए कोई स्थान न था। परन्तु मानव-जीवन मुख्यत. कठोर और असस्कृत ही है; इस बात की उपेक्षा करने से हम ऐसी प्रवचना के शिकार हो जाते है कि ससार तथा उसमें रहने वाले लोगो के प्रति एक भ्रामक सुकुमार दृष्टिकोण अपना लेते है। वर्जिनिया वुल्फ के उपन्यास इस प्रकार की अत्यधिक सुकुमारता के सुन्दर उदाहरण है। उसने जिस काल्पनिक ससार की सृष्टि की वह वास्तविक ससार का प्रतिबिम्ब नही बल्कि मात्र ऐसा संसार था जिसकी रचना उसकी निज की उत्कृष्ट भावनाओं में बने हुए ससार के अनुसार हुई थी। सभव है वह ससार अधिक अच्छा हो, परन्तु था वह देहरहित। आर्नल्ड बेनेट तथा उसकी तरह के अन्य उपन्यासकार चरित्रो की सृष्टि अपने बाहर और अलग करते है, परन्तु वर्जि-निया वुल्फ के सभी चरित्र उसी के विभिन्न पहलू है। वह महान् लेखिका तो थी, परन्तु महान् उपन्यासकार नही थी। वह अपने आत्म-चरित्रो को रोचक परि-स्थितियो मे तो रख सकती थी परन्तु कहानी कहने की कला उसमें नही थी। आधु-निक उपन्यासकारो के मतानुसार कहानी अनावश्यक है, परन्तु उनका यह विश्वास नयी-नयी परिस्थितियों और कथाओं को गढ़ने की शक्ति मे सामान्य रूप से ह्रास हो जाने का ही परिणाम है। जिस उपन्यासकार में कहानी कहने की क्षमता होती है वह तो अवश्य ही कहता है; उसे अपनी उद्भावक शक्ति मे आनन्द आता है।

यह वीर्जिनिया वुल्फ का दुर्भाग्य था कि उसका जन्म ऐसे युग मे हुआ जब उपन्यास ही साहित्य का सबसे प्रचलित और सर्वसामान्य रूप था, जिसके माध्यम से पुस्तको का कोई लेखक बहुसख्यक श्रोताओ तक अपनी बात पहुँचाने की आशा कर सकता था। यदि कही वर्जिनिया वुल्फ सोलहवी शताब्दी मे रही होती तो उसने कविता ही लिखी होती, क्योकि उस समय काव्य ही सबसे प्रचलित रूप था। क्योकि उसने अपने को एक गद्य युग मे पाया, इसलिए उसने गद्य का ही प्रयोग किया, यद्यपि उसकी सामग्री वस्तुत. काव्यात्मक थी। उसका गद्य अत्यन्त उत्कृष्ट है, परन्तु वह उस सुन्दर पोशाक की तरह है जो किसी ऐसे आत्मिक प्राणी की देह पर पडी हुई हो जिसका अस्तित्व तो है परन्तु उसमे तत्त्व कुछ भी नही है। अधिकांश पाठकों के लिए उसकी सबसे सरल पुस्तक 'आर्लैण्डो' है जो स्पष्टतः समय एव स्थान के बन्धनो से मुक्त एक विचित्र कल्पनापूर्ण कृति है; अतएव इसमे विचित्र से विचित्र घटनाएँ बिना अस्वाभाविक प्रतीत हुए घट सकती है तथा हम बिना यह अनुभव किये कि हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए, अनेक स्थलो पर रुककर भी उनका आनद उठा सकते है। उदाहरणार्थ, तुषारपात के दिनो के लन्दन का वर्णन ऐसा ही एक स्थल है। 'दि वाएज आउट' व 'टु दि लाइट हाउस' का ढाँचा अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ है, परन्तु वर्जिनिया वुल्फ के अनेक प्रशसक 'दि वेव्ज़' और 'दि इयर्स' को इसकी सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ मानते है। उसके आलोचनात्मक निबधो (जो 'दि कॉमन रीडर' व अन्य कई पुस्तकों मे सगृहीत है) का आनन्द ऐसे बहुसख्यक पाठक उठाते है और उनकी सर्वथा न्यायोचित प्रशसा करते है जिनको उसके उपन्यास असतोषप्रद और थका देने वाले प्रतीत होते है।

वर्जिनिया वुल्फ की भाँति ई० एम० फॉर्स्टर ने भी (जन्म, १८७९) 'एबिन्जर हार्बेस्ट' तथा 'टू चियर्स फॉर डेमोक्रेसी' मे असाधारण कोटि की साहित्यिक आलोचना प्रस्तुत की है। जैसा कि दूसरी पुस्तक के शीर्षक ("धन्य प्रजातत्र!") से प्रकट है, वह सामाजिक और राजनीतिक विषयो का भी आलोचक है; ऐसा आलोचक जो निष्पक्ष है और दलबन्दी की भावना से रहित है। विक्टोरियन युग पर कोई प्रबल आघात होने के काफी पहले जन्म लेने के कारण उसने उस युग के उदार जनसे।दर्शों का प्रवेश बीसवी शताब्दी मे भी कराया; परन्तु अपने विषादपूर्ण स्वभाव के कारण वह इसके साथ-साथ इतनी ही मात्रा मे विक्टोरियन आशावाद को भी स्वीकार न कर सका। दूसरी ओर उसके उपन्यासों की विरल गद्य-शैली तथा व्यक्तिगत स्त्री-पुरुषों के आध्यात्मिक व मानसिक एकाकीपन की उसे जो

अनुभूति थी, उसके कारण वह कोई सान्त्वनादायक लोकप्रिय उपन्यासकार नहीं बन सका। उसे अपने लिए चुने हुए और निष्ठावान् पाठक मननशील लोगो के बीच मिले तथा इस युग के सभवत अन्य समस्त लेखको से भी अधिक उसे 'उपन्यास-कारो का उपन्यासकार' कहा जा सकता है। यद्यपि बीस वर्ष मे उसने केवल पाँच उपन्यासो की रचना की, तथापि अन्य लेखको पर उसका बडा व्यापक प्रभाव पडा। 'ए पैसेज टु इण्डिया' के पहले उसका सबसे लोकप्रिय उपन्यास 'हॉवर्ड्स एण्ड' था। 'ए पैसेज टु इण्डिया' ऐसे समय प्रकाशित हुआ जब ब्रिटेन मे बहुत-से लोग यह विश्वास करने की मनःस्थिति मे थे कि शाही शासन ने भारत मे ऐसे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा कर दिये थे जो बिलकुल टूटने ही वाले थे। यह एक सक्षोभकर उपन्यास है जिसमें डाक्टर अजीज़ का चरित्र-चित्रण बड़ी सूक्ष्मता के साथ हुआ है जिसके ऊपर अन्यायपूर्वक दोष लगाया जाता है। सम्पूर्ण पुस्तक दोनों जातियों (अग्रेज और भारतीय) के बीच एक ऐसी शोकजनक असगति के वातावरण से ओतप्रोत है जिसमे पारस्परिक सद्भावना के लिए कोई स्थान नही है। व्यक्तिगत अनुभव के जिस आधार ने इस उपन्यास की सामान्य विचारधारा को जन्म दिया था, वह फार्स्टर की एक अन्य पुस्तक 'दि हिल ऑव देवी' मे भी देखा जा सकता है जो इसके बहुत बाद लिखी गयी। उसने कहानियाँ भी लिखी है जो उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा के दूसरे पहलू से परिचित कराती है। (उदाहरण के लिए 'दि सिलेक्टियल ऑम्नीबस' जो उसकी 'कलेक्टेड शॉर्ट स्टोरीज' मे उपलब्ध है)। यद्यपि फॉर्स्टर के साहित्य का प्रमुख अश पिछले अध्याय की तिथियो के अन्तर्गत आता है, तथापि विचार और साहित्य पर उसका प्रभाव वर्तमान युग में विशेष रूप से दिखाई पड़ा है।

जेम्स ज्वाएस (१८८२-१९४१) की रचनाओं ने अभी से व्याख्याताओ और भाष्यकारो की छोटी-सी फौज़ आकर्षित कर ली है। यहाँ केवल इतना उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि 'यूलिसिस' की गणना, जो डबलिन मे रहने वाले नीरस लोगो के एक सामुदायिक जीवन के चौबीस घण्टो से सम्बन्धित गद्य महाकाव्य है, इस शताब्दी के महान्तम उपन्यास तथा आज तक के महान्तम उपन्यासो मे से एक के रूप में की गयी है। ज्वाएस ने भाषा मे नये-नये प्रयोग किये। उसकी मौलिकता कुछ तो उन प्रयोगो में निहित थी, कुछ उसके असाधारण पाण्डित्य में और कुछ उसके इस प्रयत्न में कि वह अपने उपन्यासों मे जीवन का सम्पूर्ण चित्रण करे, यहाँ तक कि उसकी अश्लीलताओं का भी। उसका सबसे अधिक प्रयोगात्मक उपन्यास,

'फिनेगन्स वेक' एक विशाल संगीत-प्रबन्ध के समान है जिसमें शब्दों का प्रयोग उसी भाँति हुआ है जिस प्रकार कोई संगीतकार स्वरों का प्रयोग करता है। ध्वनि के आगे अर्थ गौण हो गया है, शब्दों को तोड़-मरोड़ दिया गया है, शाब्दिक श्लेषों की भरमार है तथा सम्पूर्ण रचना किसी स्वप्नलोक की-सी प्रतीत होती है। वास्तव में, यह एच० सी० इयरवेकर नामक व्यक्ति के स्वप्नलोक की एक रात्रि है। ज्वाएस की एक प्रारंभिक रचना 'पोर्टेट ऑव दि आर्टिस्ट ऐज़ ए यंग मैन' उनकी तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सरल व स्पष्टवादी है।

पिछले अध्यायों मे सामरसेट मॉम (जन्म, १८७४) के विषय में कुछ नहीं कहा गया है, यद्यपि उसने उन्नीसवी शताब्दी की अतिम दशाब्दी में ही लिखना प्रारभ कर दिया था। लम्बे समय तक आलोचक उसकी प्रतिभा का समुचित मूल्याकन नही कर पाये क्योकि उन्होंने सामान्य पाठको के बीच उसकी लोकप्रियता के कारण भ्रमवश यह मान लिया कि कोई महत्त्वपूर्ण लेखक ऐसा तात्कालिक और सीधा प्रभाव नही डाल सकता था। परन्तु बीसवी शताब्दी की चतुर्थ दशाब्दी तक आलोचकों का विचार जनरुचि के अनुकूल हो चुका था, तथा यद्यपि कुछ लोग अब भी मॉम को साहित्यिक प्रतिभा से रहित ही मानते रहे, तथापि अपने ८०वे जन्मदिन तक उसे अनेक उत्कृष्ट एव अत्यधिक पठनीय कहानियो के लेखक के रूप में व्यापक प्रशसा और मान्यता प्राप्त हो चुकी थी (यद्यपि ये कहानियाँ कभी-कभी जनद्वेषपूर्ण तथा प्रायः कटु व्यंग्य से पूर्ण होती थी)। इसके अतिरिक्त उसने कम से कम दो उच्च कोटि के उपन्यासों, 'ऑव ह्यमन बॉण्डेज' व 'केक्स ऐण्ड एल' तथा बहुसंख्यक नाटको की भी रचना की है जिनमे उल्लेखनीय है 'दि सर्किल' तथा 'अवर बेटर्स'।

डी० एच० लॉरेन्स (१८८५-१९३०) एक विवादास्पद लेखक था। यदि वह यह न समझता कि उसका उद्देश्य अग्रेज जनता को उन नैतिक बन्धनो के प्रभाव से मुक्त करना था, जिनको न जाने कितनी पीढ़ियाँ सभ्य समाज की एकता के लिए आवश्यक मानती आयी थी, तो बिना किसी ननु-नच के उसको महान् उपन्यासकार के रूप में स्वीकार कर लिया जाता।

बीसवी शताब्दी की तीसरी दशाब्दी में आल्डस हक्सले (जन्म, १८९४) आधुनिक जॉनथन स्विफ्ट के रूप मे प्रकट हुआ तथा उसने अपने समकालीनों की अत्यन्त कटु व्यंग्यपूर्ण आलोचना बड़े ओजस्वी गद्य में की। उसकी कहानियों और उपन्यासों (जैसे 'मॉर्टल क्वाएल्स' और 'ऐण्टिक हे') ने उन लोगों तक को आनंदित किया जिनके विरुद्ध उसने अपने वाक्चातुर्य तथा जुगुप्सा के विषैले तीर छोड़े थे।

परन्तु जैसे-जैसे हक्सले का वाक्चातुर्य कम होता गया और उसकी जुगुप्सा बढती गयी, वैसे-वैसे लोगों के आनन्द का भी लोप होता गया। 'प्वाइण्ट काउण्टर प्वाइण्ट' में ऐसे लेखकों तथा अन्य लोगो के कटु व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किये गये थे जिनका नाम उनके घनिष्ठ मित्रगण जान सकते थे, परन्तु अपने व्यापक अर्थो में इस पुस्तक में उस समय के संपूर्ण बुद्धिजीवी समाज पर आक्षेप किया गया था। 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' में १९३२ में ऐसे भविष्य का चित्र खीचा गया जिसमें निरंकुश और क्रूर शासक सम्पूर्ण जनता के मस्तिष्क को परिवर्तित कर देंगे। लगभग बीस वर्ष उपरान्त जॉर्ज ऑर्वेल (१९०३-५०) ने इसी विषय-वस्तु को और भी नैराश्यपूर्ण शैली में 'नाइण्टीन एटी-फोर' (अर्थात् '१९८४ ई०') में प्रस्तुत किया। ऑर्वेल ने प्रारंभ मे कई पुस्तको की रचना की परन्तु उनमे उसे केवल सीमित सफलता ही प्राप्त हुई। फिर १९४५ मे वह एकाएक अत्यन्त विख्यात हो गया, जब उसने निरंकुश सत्तात्मक राज्य पर 'एनिमल फार्म' नामक एक लघु राजनीतिक व्यंग्य प्रस्तुत किया, जिसमे उसने लिखा—"सभी पशु समान हैं परन्तु कुछ पशु दूसरों की अपेक्षा अधिक समान है।"[1]

सर ह्यू वालपोल (१८८४-१९४१) अपनी पीढी के सर्वाधिक प्रशसित उपन्यासकारो मे से था, परन्तु जैसे-जैसे उसकी रचनाओ की संख्या में वृद्धि होती गयी, वैसे-वैसे उसकी शक्ति-सामर्थ्य में कमी होती गयी। गिनती के कुछ उपन्यासों को छोडकर अन्य सभी मे वह एक सक्षम और श्रेष्ठ लेखक से अधिक नही है। अध्यापको के दृष्टिकोण से स्कूल-जीवन के विषय मे लिखा गया एक प्रारभिक उपन्यास, 'मिस्टर पेरिन ऐण्ड मिस्टर ट्रेल' स्थायी गुणो से सम्पन्न है; 'रोग हेरीस' एक उपन्यास-सीरीज की प्रथम तथा सर्वोत्तम रचना है (वैसे यह सीरीज आवश्यकता से अधिक लम्बी हो गयी है)। शैशव तथा ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय में बिताये गये यौवन के विषय मे लिखे गये सुन्दर उपन्यास 'सिनिस्टर स्ट्रीट' ने सर कॉम्पटन मेकेन्जी (जन्म, १८८३) को बडी प्रसिद्धि प्रदान की, परन्तु इसके बाद जो बहुसंख्यक लोकप्रिय उपन्यास उसने लिखे उनमें से कोई भी इस कोटि का नही हो सका। जब जे० बी० प्रीस्टले (जन्म, १८९४) का उपन्यास 'दि गुड कम्पेनियन्स' प्रका-

1. "All animals are equal, but some are more equal than others."

शित हुआ तो ऐसी सम्भावना प्रतीत हुई कि शायद वह उन्नति करता-करता आधुनिक डिकेन्स बन जाय और भीड़भाड़-पूर्ण जीवन, चरित्र तथा साहसिकता के सशक्त उपन्यास को फिर से लोकप्रिय बना दे, परन्तु इसके बाद उसने जिन उपन्यासो की रचना की वे उसके द्वारा लिखे गये नाटको की अपेक्षा कम रुचिकर थे (देखो § १३५)।

अपेक्षाकृत युवा उपन्यासकारो मे द्वितीय महायुद्ध के समय से ग्रैहम ग्रीन (जन्म, १९०४) ने अग्रिम स्थान प्राप्त कर लिया है। द्वितीय महायुद्ध के दौरान मे विभीषिका और हिसा की जो अति हुई उसके कारण पाठको का एक बड़ा समुदाय तैयार हो गया जो ऐसे अनुभवो को उत्पीडन से बरबस उत्पन्न हुए आकर्षण, धैर्यवानो जैसी शान्तचित्तता तथा आत्म-परीक्षण की मिश्रित भावना से युक्त दृष्टिकोण से देखता था। ग्रैहम ग्रीन के उपन्यासो मे पाप और कष्ट महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है, तथा वह अपने चरित्रों को अपकर्षण की ऐसी गहराइयो मे डुबो देता है (उदाहरण के लिए, 'ब्राइटन रॉक' और 'दि हार्ट ऑव दि मैटर' मे) जिनसे उनका उद्धार केवल दैवी अनुकम्पा एव रक्षण के द्वारा ही हो सकता है। ग्रीव की भाँति ईवलिन वॉग (जन्म, १९०३) भी रोमन कैथलिक है तथा उसके उपन्यास भी धार्मिक तात्पर्यों से पूर्ण है। उसने 'डिक्लाइन ऐण्ड फाल' व 'वाइल बॉडीज' जैसी कहानियो मे उपहासपूर्ण हास्य-लेखक के रूप मे लिखना प्रारभ किया; अभी हाल मे उसने मृतक-सस्कार सम्बन्धी अमेरिकन रीति-रिवाजो को लेकर 'दि लव्ड वन' नामक एक उपहासपूर्ण कटु व्यग्य लिखा है; परन्तु उसका सर्वोत्तम उपन्यास ब्राइड्सहेड रिविजिटेड' है जो अपेक्षाकृत अधिक सयत है।

चार्ल्स मॉर्गन (जन्म, १८९४) ने कई उपन्यास लिखे है जिनको पर्याप्त समादर प्राप्त हुआ है। इन उपन्यासो की विशेषता उनकी सावधानीपूर्वक सुसज्जित शैली मे निहित है न कि गहन विचार या भावना मे। उसके उपन्यासो मे से 'दि फाउण्टेन' और 'दि जजेज स्टोरी' के विषय मे लोगो का विचार है कि वे प्रभावोत्पादक और मनोरंजक है, तथा उसके उपन्यास जिन विशिष्टताओ से सम्पन्न है वे उसके नाटको, 'दि फ्लैशिग स्ट्रीम', 'दि रिवर लाइन' और 'दि बर्निंग ग्लास' मे भी वर्तमान है।

हाल के उपन्यासकारो मे सबसे महत्वपूर्ण, ज्वाएस कैरी (जन्म, १८८८) ने अपने विषयो के चयन और वर्णन मे सबसे अधिक विविधता प्रदर्शित की है। एक ओर 'दि ऐफ्रीकन विच' और 'मिस्टर जॉन्सन' मे अफ्रीकन जीवन और स्वभाव

का अध्ययन किया गया है, तो दूसरी ओर 'चार्ली इज माई डार्लिंग' में युद्ध के समय के शरणार्थी बच्चो का हृदयद्रावक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। जहाँ एक ओर 'दि हाउस ऑव चिल्ड्रेन' मे आयरिश जीवन का संस्मरणात्मक चित्र खीचा गया है, वहाँ दूसरी ओर 'दि हॉर्सेज माउथ' में एक कुटिल कलाकार के निर्लज्ज कार्यों का वर्णन है। यद्यपि इनमे से अन्तिम उपन्यास कैरी की सर्वोत्तम रचना नही है, तथापि वह इस बात में अद्वितीय है कि इसमे लेखक पाठकों को यह विश्वास दिलाने में सफल हुआ कि गाली-गलौज करने वाला, फटे जूते पहनने वाला नायक जिम्सन वास्तव मे प्रतिभावान् व्यक्ति है।

स्त्रियो के लिए विश्वविद्यालयी शिक्षा का द्रुत विकास होने के कारण अधिकाधिक सख्या मे स्त्रियाँ साहित्यिक जीवन को अपनाती जा रही है। रोज मेकाले ने, जो काल की दृष्टि से हाल की उपन्यास-लेखिकाओ के विशाल समुदाय से कुछ आगे थी, अपने साहित्यिक जीवन के प्रारभिक भाग मे कई मनोरजक तथा वाग्वैदग्ध्यपूर्ण व्यग्यात्मक उपन्यास लिखे (उदाहरणार्थ, 'टोल्ड वाइ ऐन ईडियट' तथा अन्य रचनाएँ)। इनके उपरान्त उसने सत्रहवी शताब्दी के विषय मे 'दे वेयर डिफीटेड' नामक एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास लिखा तथा 'दि वर्ल्ड माई विल्डरनेस' में युवको पर पडने वाले युद्ध के प्रभावों का मर्मस्पर्शी अध्ययन प्रस्तुत किया। आइवी कॉम्पटन-बर्नेट की, जो एक कठिनतर परन्तु अधिक मौलिक एव सूक्ष्मदर्शी लेखिका है, उसके लगभग एक दर्जन उपन्यासो के लिए बडी प्रशसा हुई है जिनमें से 'पेरेण्ट्स ऐण्ड चिल्ड्रेन' एक प्रतिनिधि रचना है। एलिजबेथ बॉवेन के उपन्यास और कहानियाँ कुछ-कुछ वर्जिनिया वुल्फ की रचनाओ की साहित्यिक विशिष्टता से सम्पन्न है, परन्तु वे उसके उपन्यासो की अपेक्षा रूपरेखा की दृष्टि से दृढतर तथा मानव-चरित्र की परख के नियम से अधिक सन्तोषप्रद है (उदाहरणार्थ, 'डेथ ऑव दि हार्ट')। डोरोथी सेयर्स ने जासूसी उपन्यास को बौद्धिक और धार्मिक महत्त्व प्रदान कर दिया। तदुपरान्त उसने निश्चित रूप से ईसाई धर्म से सम्बन्धित रचनाएँ ही लिखनी प्रारभ कर दी, उदाहरणस्वरूप, 'दि मैन बॉर्न टु बी किंग' शीर्षक नाट्य-परम्परा जिसको रेडियो पर प्रसारित किया जा चुका है।

बीसवी शताब्दी की तीसरी दशाब्दी मे अंग्रेजी कहानी ने उपन्यास से भिन्न मार्गों का अनुसरण किया। इसका प्रमुख कारण था रूसी लेखक चेखव का प्रभाव जिसने कथानक और दृढ़ चरित्र-चित्रण पर नही बल्कि वातावरण के निर्माण पर

अपना ध्यान केन्द्रित किया। कैथरीन मैन्सफील्ड (१८८८-१९२३) के विषय मे जितना उस समय सोचा जाता था कदाचित् उससे कम ही वह चेखव की शिष्या थी, यद्यपि उसकी शैली किसी अग्रेज लेखक की अपेक्षा चेखव की शैली से अधिक मिलती-जुलती थी। उसका जन्म न्यूजीलैण्ड मे हुआ था। युवावस्था मे वह यरोप आयी तथा अपने छोटे-से जीवन का शेष भाग इग्लैण्ड और फ्रांस मे बिताया। बीच मे कुछ समय तक वह जर्मनी मे भी रही। उसकी शैली सावधानीपूर्वक सुगठित परन्तु भावनात्मक थी। इसके साथ ही उसमें बच्चों तथा दुखी और भग्न-हृदय पराजित व्यक्तियो को समझने की असाधारण क्षमता थी। इनके विषय मे उसने ('कलेक्टेड स्टोरीज ऑव कैथरीन मैन्सफील्ड' मे) बड़ी करुणा के साथ लिखा है जिसका पाठको पर बड़ा शोधक और निर्मल प्रभाव पड़ता है।

१३५. गद्य नाट्य—बर्नर्ड शॉ की मृत्यु १९५० मे ९४ वर्ष की अवस्था में हुई। वह लगभग अपनी मृत्यु-पर्यन्त लिखता रहा तथा बीसवी शताब्दी के प्रथमार्ध के सर्वप्रमख नाटककार के स्थान से कोई भी युवा लेखक उसे पदच्युत न कर सका। सामान्य मत यह है कि 'सेण्ट जोन' (१९२३) के उपरान्त उसने कोई महत्त्वपूर्ण रचना नही लिखी, परन्तु 'दि एपुलकार्ट' (१९२९) तथा 'विलेज वूइग' (१९३३) नामक एकांकी की उच्च श्रेष्ठता को अस्वीकार करना मूढता ही होगी। शॉ के आलोचको मे कम सूक्ष्मदर्शी लोग शॉ मे स्त्री-पुरुषो की जितनी जानकारी होना स्वीकार करेगे उससे कही अधिक और कही गहरी जानकारी उसने इन दोनों नाटकों मे प्रदर्शित की है। साथ ही इनमें से पहला नाटक, प्राविधिक गठन की दृष्टि से दोषपूर्ण होते हुए भी, इस बात मे आदर्श है कि बिना सकुचित पक्षसाधन किये तथा बिना नीरसता लाये कोई नाटक कैसे लिखा जा सकता है। शॉ के अन्तिम बीस वर्षों में लिखे गये अन्य नाटकों में वाग्वैदग्ध्य, विवेक, अट्टहासपूर्ण हँसी-मजाक और सूक्ष्मदर्शी सामाजिक और राजनीतिक आलोचना के अनेक उद्गार प्राप्त होते है, यद्यपि अभिनय की दृष्टि से विचार करने पर वे अव्यवस्थित और रूपहीन है। प्रचलित विषयो के लेखक के रूप मे उसका महान् गुण यह था कि वह तात्कालिक समस्याओं से आगे देखता था तथा उसने जनता के पूर्वाग्रहो द्वारा शासित होने से हमेशा इन्कार किया, फिर इस प्रकार से कम दूरदर्शी लोग चाहे जितने अप्रसन्न क्यों न हों। जो आघातकारी नाटक उसने अर्धशताब्दी पहले लिखे थे वे १९५० तक सीधे-सरल, साधारण समझदारी की वस्तु-से प्रतीत होने लगे थे, जो सूर्य के प्रातःकालीन प्रकाश की भाँति स्वच्छ परिहास से आलोकित थे।

इस शताब्दी के द्वितीय चतुर्थांश के अन्य गद्य नाटककारों में जेम्स ब्रिडी (१८८०-१९५१) ऐसा एक मात्र लेखक था जिसके नाटक छापे में पढने में उतने ही अच्छे हैं जितने थियेटर मे देखने पर। उसका जन्म स्कॉटलैण्ड मे हुआ था तथा वह लेखन की ओर मुडने के पहले डाक्टरी करता था। कुछ हद तक उसे बर्नर्ड शॉ का ही शिष्य मानना पड़ेगा, यद्यपि यह बात केवल उसके वाग्वैदग्ध्य और हास्य तथा नाटकीय वाद-विवाद और तर्क द्वारा पाठको व दर्शकों का मनोरंजन करने की क्षमता तक ही लागू होती थी। उसने अपने विषयों का चयन बर्नर्ड शॉ के क्षेत्र से भी अधिक विविधतापूर्ण क्षेत्र से किया, तथा नये-नये प्रयोग करने की आकुलता भी उसमें अधिक थी। शॉ ने एक बार जहॉ नाट्य-रचना मे अपने व्यक्तिगत ढंग और शैली की प्राप्ति कर ली, फिर वह अपनी विषय-वस्तु को सदैव अपनी प्रमाणसिद्ध क्षमता के अन्तर्गत ले आता था। इसके विपरीत ब्रिडी जो कार्य एक बार भली भॉति कर चुकता था उसी को अच्छी तरह करते चले जाने से उसको सतोष न होता था। एक दिशा मे सफलता प्राप्त कर चुकने पर उसमे उसकी रुचि समाप्त हो जाती थी और वह किसी भिन्न वस्तु की ओर मुड जाता था, यद्यपि इसका परिणाम बहुधा असन्तोषप्रद हुआ करता था। फलस्वरूप ब्रिडी ने केवल तीन ही नाटक ऐसे लिखे ('दि अनाटमिस्ट', 'टोबियस ऐण्ड दि ऐंजिल' और 'मिस्टर बाल-फ्राई') जो आदि से अन्त तक श्रेष्ठ है। इनमे से अन्तिम नाटक उन सभी लोगो को चक्कर में डाल सकता है जो स्कॉटिश अध्यात्मवाद की वह खुराक हजम नही कर सकते जो इसमें बड़े ही प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत की गयी है। उसके शेष साहित्य मे से केवल प्रतिभा के टुकड़े मात्र इधर-उधर से निकाले जा सकते है (जैसे उदाहरण के लिए, 'ए स्लीपिंग क्लर्जीमैन' और 'दैफ्ने लॉरियोला' से)। १९२८ मे निराशा-जनक होती हुई राजनीतिक परिस्थिति ने उसे 'किंग ऑव नो व्हेयर' लिखने को प्रेरित किया; तथा १९४४ में इसके बिलकुल विपरीत 'दि फॉरिगन रील' मे उसने ऐसे अनियंत्रण और स्वच्छन्दता के साथ उछल-कूद मचायी है कि उससे आश्चर्य होता है।

नाटकों की रचना रंगमंच पर अभिनय किये जाने के लिए होती है; उनके लेखक उन्हें जो भी साहित्यिक उत्कृष्टता प्रदान कर सकें, वह इस मुख्य उद्देश्य के आगे गौण होती है। अतएव बहुधा ऐसा होता है कि जो नाटक रंगमचीय अभिनय मे मनोरंजक या प्रभावोत्पादक तक भी होता है वह पढ़े जाने पर विरल प्रतीत होता है। परन्तु ऐसा नाटक उस नाटक से श्रेष्ठ है जो पढ़ने में तो अच्छा होता है परन्तु

रंगमंच पर असफल रहता है, क्योकि ऐसी दशा में लेखक ने गलत माध्यम को चुना है तथा उसको चाहिए था कि वह कोई उपन्यास, पैम्फ़लैट या अन्य किसी प्रकार की 'पठनीय सामग्री' की रचना करता। किसी नाटक की सफलता मुख्य रूप से थोड़े-से समय में बहुत-सी बात को व्यक्त करने की क्षमता पर आधारित होती है, तथा लेखक को यह याद रखना आवश्यक है कि बोले जाने वाले शब्दो को सुनते समय हम अभिनेता द्वारा कहे जाने वाली बातो को अपने दिमाग मे उलट-पुलट-कर समझने के लिए रुक नहीं सकते। हमे तो लगातार सुनते ही रहना है कि आगे क्या कहा जाने वाला है। लेखक को चाहिए कि वह अभिनेताओ के लिए ऐसा संवाद सुलभ करे जो अपना निर्दिष्ट प्रभाव एक क्षण के भीतर ही डाल सके, तथा शब्द ऐसे हों जो स्वाभाविक बोलचाल की भाषा जैसे मालूम हों, न कि किसी लिखित निबंध अथवा छपी हुई पुस्तक से लिये गये पृष्ठों के समान। नाट्यशालाएँ भ्रामक इन्द्रजाल के मन्दिर है तथा उनका कार्य है झूठा विश्वास पैदा करना। यदि कोई लेखक अपने श्रोताओं के लिए वास्तविकता के भ्रम की सृष्टि कर सकता है तो वह रंगमंच पर सफलता प्राप्त करेगा, चाहे वह ऐसी कोई वस्तु प्रस्तुत न कर सके जो साहित्य के रूप मे महत्त्वपूर्ण हो।

अधिकतर नाटक इसी प्रकार के होते हैं, तथा हाल के विशिष्ट अ-साहित्यिक नाटककारों मे से दो का उल्लेख यहाँ होना आवश्यक है, क्योकि उन्होंने हमारे समय के रंगमचीय इतिहास मे प्रमुख भाग लिया है। नोएल कॉवर्ड (जन्म, १८९९) को आरम्भ में ही रंगमंचीय प्रशिक्षण प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तथा उसने प्रथम महायुद्ध के थोडे ही समय उपरान्त 'दि वोर्टेक्स' नामक एक सक्षोभपूर्ण एवं भावनात्मक तनावपूर्ण नाटक की रचना करके बड़ी ख्याति प्राप्त की। इसके बाद उसने सामाजिक दृष्टि से तुच्छ परन्तु अवकाश और विश्रांति से पूर्ण जीवन बिताने वाले लोगो से संबधित नाटको की रचना की जिनका साहित्यिक दृष्टि से स्थायी महत्व बहुत कम है। परन्तु ये सुखान्त नाटक ऐसे ओजपूर्वक लिखे गये है तथा उनमे ऐसी चतुरतापूर्वक लोगो को उस समय प्रचलित सश्लिष्ट शैली मे बात करते तथा उस समय प्रचलित ऐसे ढग से व्यवहार करते हुए दिखाया गया है, जो प्रकट रूप से अनियमबद्ध होते हुए भी परम्परागत ही था, कि उसे अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। 'हे फीवर' में उसने साहित्यिक सीढी में एक कदम और ऊपर रखा क्योकि इस सुखांत की तुलना ऑस्कर वाइल्ड के सुखान्तों से की जा सकती है, यद्यपि यह उसके सर्वोत्तम सुखान्तो की कोटि का नही है। जैसे-जैसे कॉवर्ड

की आयु अधिक होती गयी वह अधिकाधिक गंभीर होता गया यद्यपि उसमें नीरसता नहीं आने पायी, जैसा कि 'दिस हैपी ब्रीड' से स्पष्ट है; परन्तु हल्के-फुल्के और शाब्दिक दृष्टि से साहसिक प्रगल्भतापूर्ण सुखान्त ही उसके स्वाभाविक माध्यम हैं। यद्यपि उसकी नवीनतम रचनाओ में से 'क्वाड्रील' आलोचकों द्वारा प्रशंसित नही हुई, तथापि इस नाटक ने दो महान् अभिनेताओं को उत्कृष्ट भूमिकाएँ प्रदान की और महान् अभिनेता भी तब तक सफल नही हो सकते जब तक उन्हे सुन्दर भूमिकाएँ न प्राप्त हों। फिर 'क्वाड्रील' के तृतीय अंक मे दो स्त्रियों से सबधित जो अत्यधिक वाक्चातुर्यपूर्ण तथा मनोरजक दृश्य रखा गया है, वह यदि १९५२ के किसी नाटक में न होकर पुनस्संस्थापन-काल के किसी सुखान्त नाटक में होता तो उसकी प्रशसा साहित्यिक आधार पर भी निश्चय ही होती। टेरेंस रैटिगन (जन्म, १९११) पहले तो न्होएल कॉवर्ड के ही पदचिह्नों का अनुसरण करता प्रतीत हुआ, परन्तु अब तक उसने जो साहित्य प्रस्तुत किया है वह अपने समग्र रूप मे विषय-वस्तु तथा वर्णन-शैली दोनों ही दृष्टियो से अधिक साहसिकतापूर्ण रहा है। 'दि विन्सलो ब्वाय' एक सच्ची घटना पर आधारित है जिसमें नौसेना के एक कैडेट पर झूठा अभियोग लगाया गया तथा चोरी के अपराध में दण्डित किया गया था। रैटिंगन ने उन घटनाओ के आधार पर एक मनोरंजक एवं मर्मस्पर्शी नाटक लिखा है जिनके द्वारा वह कैडेट किसी प्रकार अभियोग से बरी हो गया।

जे० बी० प्रीस्टले 'दि गुड कम्पेनियन्स' की रचना द्वारा उपन्यासकार के रूप में महान् सफलता अर्जित करके नाट्य-रचना की ओर उन्मुख हुआ। परन्तु नाटककार एवं उपन्यासकार दोनों ही रूपों से उसका साहित्य असमान और अनिर्णेय रहा है। रंगमंच को उसका सबसे मौलिक योगदान उन नाटकों के रूप में रहा जो कतिपय दार्शनिकों द्वारा स्थापित किये हुए कालविषयक मतों से संबधित थे। इनमें से प्रमुख यह मत था कि भूत, वर्तमान व भविष्य की कल्पना से संबंधित घड़ी वाला समय एक भ्रम है तथा वास्तव मे काल एक अटूट वर्तमान में ही निहित रहता है (परन्तु यह कथन एक अत्यन्त गूढ़ व जटिल सिद्धांत का भोंड़ा तथा अत्यधिक सरलीकृत रूप है)। प्रीस्टले के 'टाइम ऐण्ड दि कॉन्वेज' तथा 'आइ हैव बीन हियर बिफोर' में इन बातों को लिया गया है। 'जॉन्सन ओवर जॉर्डन' तथा अन्य नाटकों में उसने और भी गहन विषयों का अन्वेषण करने का प्रयास किया है, और जब ये प्रयास अधिक सफल नही रहे तो उसने जनता को इसलिए फटकारना प्रारभ किया कि वह उसकी ओर ध्यान नहीं दे रही थी, यद्यपि जो कुछ दोष था

वह यह था कि उसने यह बात नहीं समझी कि यदि नाट्य-क्षेत्र में कुशल और प्रभावोत्पादक रंगमंच-कला की ओर समुचित ध्यान न दिया जाय तो सदुद्देश्य कितने भी हों वे उस कमी को पूरी नही कर सकते।

लॉरेंस हाउस्मन (जन्म, १८६५) ने जो बहुसंख्यक उत्कृष्ट लघु नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं उनका भी उल्लेख होना चाहिए। ये थीं 'लिटिल प्लेज ऑव सेण्ट फ्रेंसिस' तथा 'हैपी ऐण्ड ग्लोरियस' जो रानी विक्टोरिया के जीवन से ली गयी घटनाओं पर आधारित नाटिकाओं की सीरीज है।

१३६. विविध गद्य—अंग्रेज राजनीतिज्ञ कभी-कभी विख्यात लेखक भी हुए हैं, उदाहरणस्वरूप मेकाले तथा तीन-चार प्रधान-मंत्री गण। बेन्जमिन डिजरेली, अर्ल ऑव बीकन्सफील्ड (१८०४-८१) ने उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से उपन्यास लिखे। इनमें से कुछ तो विचित्र कल्पनापूर्ण तथा अगंभीर वाक्चातुर्य से पूर्ण है, और कुछ गम्भीर राजनीतिक अध्ययनों की भाँति हैं। आर्थर जेम्स (अर्ल ऑव बाल्फोर) (१८४८-१९३०) ने दार्शनिक ग्रन्थों की रचना की ('ए डिफेन्स ऑव फिलासफिक डाउट' इत्यादि)। स्टेनली (अर्ल) बाल्डविन (१८६७-१९४७) ने उत्साहवर्धक भाषणों के कई ग्रंथ प्रकाशित करवाये ('ऑन इंग्लैण्ड' इत्यादि)। परन्तु अंग्रेजी साहित्य में जैसा ऊँचा स्थान सर विन्स्टन चर्चिल (जन्म, १८७४) का है वैसा इनमे से किसी का नही है। चर्चिल को अपने जीवनकाल में विविध अनुभव हुए—सिपाही, राजनीतिज्ञ तथा लेखक के रूप में, तथा संयोग से यह समय आधुनिक विश्व-इतिहास का सबसे संकटग्रस्त और उथल-पुथल से पूर्ण युग रहा। 'माइ अर्ली लाइफ' में उसने एक रोमांचक कथा कही है जिसमे १८९९-१९०२ के दक्षिण अफ़्रीक़ी युद्ध के दौरान में उसके बन्दी बनाये जाने और भाग निकलने का भी वर्णन शामिल है; 'लाइफ ऑव लार्ड रैण्डॉल्फ चर्चिल' (सर विन्स्टन के पिता तथा स्वय एक राजनीतिज्ञ) तथा 'लाइफ ऑव मार्लबरा' (जो उनका पूर्वज तथा महान् सैनिक था) ने जीवनी-लेखक के रूप में सर विन्स्टन को ख्याति प्रदान की; परन्तु लेखक के रूप में जो शीर्ष स्थान चर्चिल को प्राप्त हुआ वह उन दोनों विश्वयुद्धों के इतिहासों द्वारा हुआ जिनमें उसने स्वयं इतना महत्त्व-पूर्ण भाग लिया था ('दि वर्ल्ड क्राइसिस' में १९१४-१८ की घटनाओं का वर्णन है, तथा 'दि सेकिण्ड वर्ल्ड वार' मे द्वितीय विश्वयुद्ध का, जो छः भागों में प्रस्तुत किया गया एक विशाल दृश्यचित्र है)। उसकी ओजपूर्ण व भासमान साहित्यिक शैली संभव है उन संयमित मस्तिष्क वाले लोगों को कुछ अरुचिकर लगे जो भावना-

हीन, विषयमूलक गद्य को अधिक पसन्द करते है, परन्तु उसका उद्दीपक गुण उसके विषयों के बिलकुल अनुरूप है तथा उसकी व्यावहारिक दृष्टि में जो विस्तार है उसमें शीघ्रगामी सर्चलाइट जैसा गुण है जिस पर किसी ऐसे महान् इतिहासज्ञ का ही अधिकार हो सकता था जो साथ ही साथ महान् कर्मवीर भी हो। वास्तव में, इन दोनों ही गुणों में उसकी तुलना सीजर[1] के साथ की गयी है और यह पूर्णतः उचित है।

सर विन्स्टन के अतिरिक्त अन्य ऐसे ब्रिटिश इतिहासकार बहुत कम हुए हैं जिनकी रचनाएँ साहित्य के रूप में भी स्मरणीय हों। भूतकाल में गिबन और मेकाले हुए है और वर्तमान में जी० एम० ट्रेवेल्यन (जो मेकाले का ही वंशज है) व सी० वी० वेजवुड हैं। इटली को स्वतन्त्र राष्ट्र बनाने के लिए गैरीबाल्डी ने जो अभियान किया उसके ऊपर ट्रेवेल्यन ने एक ग्रंथ तीन भागों में प्रस्तुत किया। इसने उसे विख्यात कर दिया, तथा इसके बाद उसने रानी एन-कालीन इंग्लैण्ड पर स्फूर्तिदायक ग्रंथ लिखे। उसकी 'इंग्लिश सोशल हिस्टरी; ए सर्वे ऑव सिक्स सेन्चुरीज' ने तो बीसवीं शताब्दी की पंचम दशाब्दी की महायुद्धकालीन पीढ़ी को कथा-साहित्य की अपेक्षा इतिहास पढ़ने के लिए अधिक उत्सुक बना दिया। यह अध्याय लिखे जाते समय मिस वेजवुड, अपनी उत्कृष्ट कृति 'विलियम दि साइलेण्ट' के बाद एक इससे भी विशालतर ग्रंथ लिखने में व्यस्त थी। यह था अंग्रेजी गृह-युद्ध का इतिहास, जिसका प्रथम भाग (१९५५) था 'दि किंग्स पीस, १६३७-१६४१'।

लिटन स्ट्रेची के अयोग्य अनुकरणकर्ताओं के कारण अंग्रेजी का जीवनी-साहित्य जिस ज्वर से ग्रस्त था वह जब दूर हुआ तो सुन्दर समझ-बूझ से पूर्ण ऐसी पुस्तकों के लिए रास्ता खुल गया जो विषय-वस्तु की दृष्टि से भी स्वस्थ थीं तथा जिनमे साहित्यिक गुण भी प्रशंसनीय था। इनमें से कुछ के नाम निम्नलिखित है ; लार्ड डेविड सेसिल द्वारा लिखित विलियम काउपर की जीवनी 'दि स्ट्रिकेन डियर' तथा एक प्रमुख विक्टोरियन राजनीतिज्ञ पर लिखे गये उसके दो ग्रंथ

१. महान् रोमन सम्राट जूलियस सीज़र (१०२–४४ ई० पू०)। महान् सैनिक और राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ वह वक्ता, कवि और इतिहासकार भी था।––अनु०

'दि यंग मेलब्रोर्न' व 'लार्ड एम०'; डफ कूपर (वाइकाउण्ट नॉर्विच) की 'टैलीरैण्ड' तथा सर हैरल्ड निकल्सन की 'किग जॉर्ज दि फिफ्थ, हिज लाइफ ऐण्ड रेन'।

दर्शन ऐसा विषय है जिसको सामान्य पाठकों के लिए प्रस्तुत करना आसान नही है, यद्यपि जब उसे कोई प्रवीण साहित्यिक उठा लेता है तो वह अक्षय मनमोहक बन जा सकता है। बर्ट्रेण्ड रसेल (जन्म, १८७२) ने अपने बहुसंख्यक ग्रंथों में दर्शन को ऐसा ही मोहक बना दिया है। ये रचनाएँ उन पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थों की अपेक्षा अधिक आसानी से समझी जा सकने वाली है जो उसने गणित-दर्शन के विशेषज्ञों के लिए लिखी थीं। उसकी 'हिस्टरी ऑव वेस्टर्न फिलासफी' में एक विशाल विषय का प्रतिपादन ऐसी आनन्ददायक एवं प्रबोधक शैली मे हुआ है जो साधारण बुद्धि वाले लोगों की समझ में आ जाती है।

वर्तमान युग में पृथ्वी के तो ऐसे कोई भाग बचे नही जिनका अन्वेषण न हो चुका हो। इसीलिए अब लोगों का ध्यान बाह्याकाश में साहसिकता एवं अन्वेषण की संभावनाओं के संबंध में कल्पना करने की ओर मुड़ गया है। फिर भी, बहुसख्यक यात्रा-पुस्तको का लिखना जारी है तथा इस प्रकार के साहित्य की लोकप्रियता घटी नही है। ऐसी पुस्तकों मे से स्थायी महत्त्व तो कुछ का ही होता है, परन्तु हाल के यात्रियों में से, जिन्होने अपनी यात्राओं के उल्लेखनीय वर्णन प्रस्तुत किये है, पीटर फ्लेमिग ('ब्राजीलियन एडवेचर' तथा 'वन्स कम्पनी') और फ़ेया स्टार्क ('दि सदर्न गेट्स ऑव अरेबिया' इत्यादि) प्रमुख है। इससे कुछ पहले गर्ट्रूड बेल (१८६८-१९२६) ने 'दि डेजर्ट ऐण्ड दि सोन' तथा 'एम्युरथ टु एम्युरथ' लिखे; और नॉर्मन डग्लस (१८६८-१९५२) ने 'साइरेन लैण्ड' एवं 'ओल्ड कलैब्रिया' की रचना की, यद्यपि उसकी सबसे मौलिक रचना 'साउथ विण्ड' नामक अद्वितीय व्यंग्यात्मक उपन्यास है जिसकी पृष्ठभूमि कैप्रीका द्वीप है।

बीसवी शताब्दी के लेखकों में व्यक्ति के रूप में टी० ई० लॉरेन्स (१८८८-१९३५) सबसे विवादग्रस्त लेखक रहा है। ऑक्सफर्ड का विद्वान् तथा पुरातत्त्वविद होते हुए भी उसमे उस समय आश्चर्यजनक रूप से सैनिक नेतृत्व की महत्त्वपूर्ण प्रतिभा विकसित हो गयी जब उसने प्रथम महायुद्ध के दौरान में रेगिस्तानी अरबों द्वारा टर्की के विरुद्ध चलाये गये स्वातन्त्र्य-संघर्ष में उनका नेतृत्व किया। जब युद्ध समाप्त हुआ तो उसके इस विश्वास ने उसका मोह भंग कर दिया कि मित्र-राष्ट्रों ने अरबो से जो प्रतिज्ञाएँ की थी उनको पूरा करने मे वे असफल रहे थे, तथा किसी

भी कमीशन्ड अथवा नॉन-कमीशन्ड पद को ग्रहण करने से इन्कार करके और टी० ई० शॉ का नाम ग्रहण करके वह एक साधारण रँगरूट के रूप मे नभ-सेना में भरती हो गया। क्योंकि उसका उद्देश्य उस विख्याति एवं लोकप्रियता से बचना था जिसने उसको 'लॉरेन्स ऑव अरेबिया' के रूप में आवृत कर रखा था, इसलिए यदि वह ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय में जाकर पढ़ने-लिखने का शान्तिमय जीवन बिताता तो अधिक अच्छा होता, क्योंकि उसके इस सनकी व्यवहार ने (जैसा कि इसको उस समय कहा गया) लोगों का ध्यान और भी आकर्षित किया जो कि उसे पसन्द नहीं था। उसकी मृत्यु तेजी से मोटर साइकिल चलाते समय एक दुर्घटना में हुई। १९२६ में लॉरेन्स ने अपने सफल रेगिस्तानी अभियान का वर्णन 'सेविन पिलर्स ऑव विज़्डम' नाम से प्रकाशित किया जिसका मूल्य काफी अधिक था और जो निजी तौर से वितरित किया गया। इस पुस्तक ने तुरन्त ही उसको महान् लेखक का स्थान प्रदान कर दिया। सभवतः उसके प्रशंसकों ने इस संबंध में उसकी महानता की घोषणा आवश्यकता से अधिक मात्रा मे की, क्योंकि वे बिना किसी ननु-नच के उसे एक अधिनायक एवं प्रतिभावान् लेखक के रूप में स्वीकार करने को तैयार बैठे थे। उसने लेखन-कला बर्नर्ड शॉ तथा अन्य लेखकों के साथ घनिष्ठ विचार-विमर्श करके सीखी, तथा साहित्यिक शैली के इस समाहारक गुण और इसके साथ संयुक्त अरबो के स्वातन्त्र्य-संघर्ष में अपने भाग का निष्पक्ष होकर वर्णन करने की इच्छा ने उसकी पुस्तक को अवैयक्तिक और अलिप्त भाव से वर्णित रचना बना दिया है। परन्तु सचेतन एवं श्रम-साध्य लेखन की सुन्दर कृति के रूप में तथा जिन महानुभावों से लॉरेन्स का सामना हुआ था उनके शब्द-चित्रों के कारण 'सेविन पिलर्स ऑव विज़्डम' जिस उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है वहाँ वह अकेली है; तथा भविष्य में भी सम्भावना इसी बात की है कि जैसे डाउटी की 'अरेबिया डेजर्टा' में रुचि लेने वाले अधिक लोग नहीं मिले उसी प्रकार यह भी अपने ढंग की अकेली ही रचना रहेगी। डाउटी की पुस्तक दीर्घकाल तक उपेक्षित रहने के उपरान्त लॉरेन्स द्वारा ही फिर से खोज निकाली गयी। लॉरेन्स की पुस्तक का एक संक्षिप्त संस्करण 'रिवोल्ट इन दि डेजर्ट' नाम से १९२७ में प्रकाशित किया गया था; सम्पूर्ण 'सेविन पिलर्स' तो लारेन्स की मृत्यु के बाद ही सबको सुलभ हो सकी।

यह उचित ही होगा कि यह अंश हिलेयर बेलॉक (१८७०-१९५३) तथा जी० के० चेस्टर्टन (१८७२-१९३६) से समाप्त हो; क्योंकि उनकी रचनाओं

का काफी बड़ा अंश विविध गद्य के रूप में था, तथा चरित्र और स्वभाव में वे एक समाप्तप्राय आदर्शवादी युग से इतने अधिक मिलते थे कि बेलॉक को तो अन्तिम रोमाण्टिक लेखक माना जा सकता है। वह जन्म से कैथलिक था और चेस्टर्टन मतपरिवर्तन द्वारा बाद में कैथलिक बना था, तथा प्रायः उन्होंने उस निकृष्ट राज्य का विरोध एक टीम (टोली) की भाँति साथ होकर किया जिसमें नौकरशाही और निरंकुशता के आगे व्यक्ति का कुछ महत्त्व नहीं रहता। बेलॉक ने अपनी एक पुस्तक के शीर्षक में ऐसे राज्य को 'दि सर्वाइल स्टेट' (अर्थात् 'दासतामय राज्य') की संज्ञा दी है। अन्त में इन दोनों लेखकों का स्थान क्या होगा, इसका अंदाजा अभी नहीं लग सकता। संभवतः दोनों में से प्रत्येक की कुछ कविताएँ स्थायी होंगी तथा बेलॉक की यात्रा-पुस्तक 'दि पाथ टु रोम' भी स्थायित्व प्राप्त कर सकती है। चेस्टर्टन ने बहुत कुछ लिखा तथा प्रायः अत्यन्त असावधानीपूर्वक लिखा। वास्तव में वह प्रतिभावान् लेखक की अपेक्षा एक ढीला-ढाला पत्रकार अधिक था, यद्यपि उसकी 'फादर ब्राउन' सीरीज की जासूसी कथाएँ साधारण जासूसी साहित्य से इतनी श्रेष्ठ अवश्य हैं कि वे कुछ समय तक बनी रहेंगी। बेलॉक एक दृढ़ निश्चय-पूर्ण प्रचारक था और इसलिए जिन आदर्शों मे उसकी निष्ठा थी उनके लिए उसका उत्साह ऐतिहासिक यथार्थता के प्रति उसकी भावना को कुंठित कर देता था।

कथा-साहित्य	पद्य	नाट्य-साहित्य
	ऑब्बर्ट सिट्वेल की 'इंग्लैण्ड रिक्लेम्ड', १९२७.	
वर्जिनिया वुल्फ़ का 'ऑर्लैण्डो' १९२८.		
प्रीस्टले का 'दि गुड कम्पेनियन्स', १९२९.	एडिथ सिट्वेल की 'कलेक्टेड पोएम्स',	
मॉम का 'केक्स ऐण्ड एल', १९३०.	१९३०.	शॉ का 'दि एपुल कार्ट', १९३०.
बेनेट की मृत्यु, १९३१.		ब्रिडी का 'टोबियस ऐण्ड दि ऐन्जिल', १९३१.
वर्जिनिया वुल्फ़ का 'दि वेव्ज', १९३१.		
आल्डस हक्सले का 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड', १९३२.		
जॉर्ज मूर की मृत्यु, १९३३.		ईलियट का 'मर्डर इन दि कैथीड्रल', १९३५.
गाल्सवर्दी की मृत्यु, १९३३.	डे लूइस की 'कलेक्टेड पोएम्स' १९२९-३६.	
	किप्लिंग की मृत्यु, १९३६.	
	ए० ई० हाउसमैन की मृत्यु, १९३६.	
	जी० के० चेस्टर्टन की मृत्यु, १९३६.	
		प्रीस्टले का 'टाइम ऐण्ड दि कान्वेज़', १९३७.
वर्जिनिया वुल्फ़का 'दि इयर्स', १९३७.		
		बैरी की मृत्यु १९३७.
		येट्स की मृत्यु, १९३९.
ज्वाएस का 'फ़िनेगन्स वेक', १९३९.	ऑडेन की 'सेलेक्टेड पोएम्स', १९४०.	
		येट्स की 'लास्ट पोएम्स ऐण्ड प्लेज़' १९४०.

कथा-साहित्य	पद्य	नाट्य-साहित्य
जेम्स ज्वाएस की मृत्यु, १९४१.		
वर्जिनिया वुल्फ़ की मृत्यु, १९४१.	डी ला मेयर की 'कलेक्टेड पोएम्स', १९४२.	ब्रिडी का 'मिस्टर बॉलफ़ाई', १९४३.
	ईलियट की 'फोर क्वार्टेट्स', १९४४.	
कैरी का 'दि हॉर्सेज माउथ', १९४४.	डी ला मेयर की 'कलेक्टेड राइम्स ऐण्ड वर्सेज़', १९४४.	
	एडिथ सिट्वेल की 'ए साँग ऑव दि कोल्ड', १९४५.	
ऑर्वेल का 'एनिमल फ़ार्म', १९४५.		रैटिगन का 'दि विन्स्लो ब्वाय', १९४६.
एच० जी० वेल्स की मृत्यु, १९४६.	रॉबर्ट ग्रेव्ज़ की 'कलेक्टेड पोएम्स', १९४८.	ग्रैनविल-वार्कर की मृत्यु, १९४६.
ऑर्वेल का 'नाइण्टीन एटी-फ़ोर' १९४९.	एडिथ सिट्वेल की 'दि कण्टिकिल ऑव दि रोज़', १९४९.	ब्रिडी का 'दैफ्नी लॉरियोला', १९४९.
		फ़ाई का 'दि लेडीज़ नॉट फॉर बर्निंग', १९४९.
		ईलियट का 'दि कॉक्टेल पार्टी', १९५०.
		बर्नर्ड शॉ की मृत्यु, १९५०.
	ऑज़्बर्ट सिट्वेल की 'रैक ऐट राइड-सेण्ड', १९५२.	ब्रिडी की मृत्यु, १९५१.
	डाइलन टॉमस की 'कलेक्टेड पोएम्स', १९५२.	
	बेलॉक की मृत्यु, १९५३.	
	डाइलन टॉमस की मृत्यु, १९५३.	